मार्च १९६८ (चैत्र १८९०)

मूल्य : रु० ११.००

सचिव, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, २३, निज़ामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली - १३ द्वारा प्रकाशित और
सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग द्वारा मुद्रित

प्रकाशकीय

उन्नीसवी सदी के कुछ अग्रेज़ो ने भारतीय भाषाओ पर बहुत ठोस काम किया। सच बात कही जाए तो भारतीय भाषाओ के आधुनिक गद्य का निर्माण कुछ अग्रेजो की सेवा के बिना सभव न होता। ऐसे ही लोगो मे स्व० श्री एस० डब्ल्यू० फैलन का नाम लिया जा सकता है, जिन्होने यह कहावत-कोश प्रस्तुत किया है। उन्होंने इसके अलावा हिन्दुस्तानी-अग्रेजी कोश और हिन्दुस्तानी-अग्रेजी तथा अग्रेजी-हिन्दुस्तानी विधि-कोश की भी रचना की है। फैलन के पहले इस प्रकार की कोई कृति हिन्दी भाषा के सबध मे मौजूद नही थी। यह स्मरण रहे कि फैलन ने इस कोश मे मारवाडी, पजाबी, मराठी, भोजपुरी और तिरहुती कहावतो, प्रचलित वाक्य-खडो, सूत्रो, नीतिवाक्यो का सग्रह किया। इस प्रकार बहुत कुछ जो अन्यथा नष्ट होता, बच गया। कहावतो और मुहावरो मे इतिहास के बहुत से तथ्य जीते चले जाते है। जिस इलाके मे कहावत प्रचलित है, कई बार उसके इतिहास, रीति-नीति पर इन कहावतो, मुहावरो से नई रोशनी पड़ती है।

फैलन के बाद इस ग्रन्थ का सपादन और परिशोधन कप्तान आर० सी० टेम्पल, एफ० आर० जी० एस०, एम० आर० ए० एस० ने किया। उन्होने दिल्ली-निवासी लाला फकीरचन्द वैश की सहायता ली, जो बगाल सरकार के प्रथम उर्दू सहायक अनुवादक थे। यह पुस्तक बनारस मे मेडीकल हाल प्रेस मे छापी गई थी और इसे ई० जे० लजरस एड क०, बनारस तथा ट्यूबर एड क०, लन्दन ने १८८६ मे प्रकाशित किया। इसका मूल्य दस रुपए रखा गया था।

अब तक यह ग्रन्थ केवल कुछ पुस्तकालयो मे दुर्लभ पुस्तक के रूप मे मौजूद था। प्रथम बार इसे हिन्दी लिपि मे प्रकाशित किया जा रहा है। इसका अनुवाद और सपादन श्री कृष्णानन्द गुप्त ने किया है, जो लोक-साहित्य के अच्छे ज्ञाता है।

बालकृष्ण केसकर

व्यवहृत सांकेतिक अक्षरों का निर्देश

अं०	=	अंग्रेज़ी।
अ०	=	अरबी।
उप०	=	उपदेश।
ऊ० दे०	=	ऊपर देखिए।
क०	=	कहते हैं अथवा कही जाती है।
कहा०	=	कहावत।
कृ०	=	कृषि संबंधी।
ग्रा०	=	ग्रामीण।
दे०	=	देखिए।
नी० वा०	=	नीति मूलक वाक्य
पं०	=	पंजाबी।
पाठा०	=	पाठान्तर।
प्र० पा०	=	प्रचलित पाठ।
पू०	=	पूर्वी।
फा०	=	फारसी।
भो०	=	भोजपुरी।
म०	=	मराठी।
मु०	=	मुसलमानी।
मुहा०	=	मुहावरा।
रा० मा०	=	रामचरित मानस
लो० वि०	=	लोक विश्वास।
व्य०	=	व्यवसाय संबंधी।
सं०	=	संस्कृत।
समा०	=	समानता।
स्त्रि०	=	स्त्रियों में प्रचलित।
हिं०	=	हिन्दुओं की।

सूचना—कहावतों की व्याख्या में अधिकांश स्थलों पर तब, इसलिए आदि के आगे ० चिह्न लगाकर छोड़ दिया गया है, वहाँ प्रसंग के अनुसार 'तब कहते हैं, इसलिए कहते हैं; अथवा इसलिए कहा गया है,' इस प्रकार वाक्य को पूरा कर लेना चाहिए।

हिन्दुस्तानी कहावत-कोश

अंग्रेज की नौकरी और बंदर नचाना बराबर है
यह एक बहुत मुश्किल काम है।
(बंदर एक बड़ा चंचल और चिड़चिड़े स्वभाव का जानवर होता है। जरा भी नाराज हो जाए तो या तो अपना खेल दिखाना बंद कर देगा, या मदारी को नोच-खसोट लेगा। इसलिए कहावत का भाव यह है कि अंग्रेज की नौकरी में बहुत सावधान रहने की जरूरत पड़ती है। जरा चूके कि गए!)

अंग्रेज भी अक्ल के पुतले हैं
बड़े गुणी हैं।
अक्ल का पुतला=एक मुहा०, बुद्धिमान।

अंग्रेजी राज, तन को कपड़ा न पेट को नाज
टैक्सों के बोझ ने पीड़ित जनता को अच्छी तरह खाना-कपड़ा नहीं मिलता था।

अंग्रेजों ने चरसा भर जमीन से सारा हिन्दुस्तान अपना कर लिया
अर्थात वे पक्के व्यवसायी और कूटनीतिज्ञ हैं।
चरसा, (चरस) भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है।

अंडा सिखावे बच्चे को कि चीं-चीं मत कर
छोटे मुंह बड़ी बात।

अड़ुवा बैल, जी का जवाल, (ग्रा०)
स्वतंत्र और उच्छृंखल व्यक्ति के लिए क०।
अड़ुवा=बिना बधियाया हुआ बैल। सांड।

अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई
परिश्रम कोई करे, और कोई लाभ उठाए।
अंडे सेना=पक्षियों का अपने अंडों पर गर्मी पहुंचाने के लिए बैठना।

अंतड़ियां कुल्हू अल्ला पढ़ रही हैं
अर्थात भूख से आंतें कुलबुला रही हैं।
(कुल-हो-अल्लाह—कुरान के एक सूरा का प्रारंभिक अंश है, जिसे विशेष अवसरों पर पढ़ते हैं।)

अंतड़ी में रूप बकची में छब! (मु० स्त्रि०)
रूप आंतों में और छवि बक्से में बंद रहती है।
अर्थात चेहरे की सुंदरता खाने-पीने और शरीर की सुंदरता वस्त्र-आभूषणों पर निर्भर करती है।

अंत बुरे का बुरा
बुरे का अंत बुरा ही होता है। जो किसी का बुरा करता है, अंत में स्वयं उसका बुरा होता है।

अंत भले का भला
जो दूसरों के साथ भलाई करता है, अंत में उसका स्वयं भला होता है।

अंत भला सो भला
सब बातों को सोचकर अंत में जिस निर्णय पर पहुंचा जाए, उसे ही ठीक मानना चाहिए।
(इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—'अंत मता सो गता' अर्थात अंत समय जैसी मति होती है, वैसी ही मृत्यु के बाद जीव की दशा होती है।)

अंदर छूत नहीं, बाहर कहे दुरदुर, (हिं०)
मन में तो संयम नहीं, पर बाहर से सफाई रखे।
पाखंडी के लिए क०।

अंधरी गैया, धरम रखवाली, (ग्रा०)
अंधी गाय धर्म की रक्षा करनेवाली होती है, अर्थात उसकी सेवा से विशेष पुण्य मिलता है। भाव यह है कि दीन-हीन की सेवा करनी चाहिए।

अंधा कहे मैं सरग चढ़ भूतों और मुझे कोई न देखे
अनाचारी खुल्लमखुल्ला निंदित आचरण करके चाहता है कि उसके कर्मों का पता किसी को न चले, तो यह कैसे संभव है?

अंधा क्या चाहे, दो आखें

जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, वह उसी की चिन्ता करता है। अथवा किसी की इच्छित वस्तु के लिए पूछे जाने पर क०।

अंधा क्या जाने वसंत की बहार

जिसने जो वस्तु देखी ही नही, वह उसकी विशेषता क्या जाने ?

अंधा क्या जाने लाल की बहार

दे० ऊ०।

(लाल—(फा० लाल) एक फूल विशेष।)

अधा गाए, बहरा बजाए

जहा दो एक से एक मर्ख इकट्ठे हुए हो, वहा क०।

अंधा गुरु, बहरा चेला, मांगे हड दे बहेड़ा

मागता है हड तो चेला देता है बहेडा। न गुरु चेले की कुछ देखता है और न चेला गुरु की कुछ सुनता है। जहा दोनो एक दूसरे के विपरीत हो अथवा मिलकर काम न कर सकते हो, वहा क०।

अधा चूहा, थोथे धान

जो जिस वस्तु के योग्य होता है, उसे वही वस्तु मिलती है, अथवा वह उसी मे सतुष्ट हो जाता है।

अंधाधुंध मनोहरा गाय

चूंकि कोई देखने या सुननेवाला नही, इसलिए मनोहरा के मन मे जो आता है सो गाए चला जा रहा है।

जहा कोई देखनेवाला नही, वहा जो मन मे आए सो किए जाओ।

मनोहरा=किसी व्यक्ति का नाम ।

अधा बगुला कीचड़ खाय

अभागा हमेशा दुख भोगता है। अथवा कह सकते है कि अनाडी को हमेशा निकम्मी वस्तु ही मिलती है।

अंधा बाटे शीरनी, फिर-फिर अपनो ही को दे

जब कोई आदमी किसी वस्तु को घुमा-फिराकर अपने ही लोगो को देता है, तब क०। कुनबापरस्ती।

शीरनी =शीरीनी, मिठाई।

पाठा०—अधा बाटे रेवडी ।

अंधा बेईमान

अधे को चूकि दिखाई नही देता, इसलिए वह बडा शक्की होता है, और लोगो पर विश्वास नही कर पाता।

(इस पर एक कथा है—एक अधा आदमी किसी भोज मे शामिल हुआ। भोजन करते समय उसने सोचा कि यहा सभी मनुष्य दोनो हाथो से खाते होगे, इसलिए वह भी वैसा ही करने लगा। फिर उसने सोचा कि शायद ये थाली मे मुह लगाकर भी खाते होगे, इसलिए वह उसी तरह खाने भी लगा। फिर उसके दिमाग मे आया कि लोग शायद थाली भी लेकर घर चले जाते होगे। इसलिए आगे की थाली को लेकर चलने लगा। दरवाजे पर पहुचने पर नौकर ने उसके हाथ से थाली छीनकर कहा—अधा बेईमान, और इस तरह अधो के सबध मे उक्ति चल पडी।)

अंधा बेईमान, बहरा बहिश्ती

अधा धूर्त्त होता है, पर बहरा भलामानुस, क्योकि वह किसी की बुराई कानो से नही सुनता।

बहिश्ती =स्वर्ग का आदमी, देवता।

अंधा मुल्ला, टूटी मसीदा

(१) जैसे अधे मुल्ला जी वैसी ही उनकी टूटी मसजिद, दोनो एक से। अथवा

(२) जैसे को तैसा ही मिलता हे।

अंधा राजा, चौपट नगरी

जहा राजा मूर्ख या लापरवाह हो, वहा देश चौपट तो होगा ही।

जहा मालिक स्वय काम न देखे, वहा क०।

अंधा लकड़ी एक बार ही खोता है

होशियार से एक बार ही भूल होती है। अधे के हाथ से मरने पर ही लकडी छूटती है।

अधा सिपाही, कानी घोडी; बिधना ने आप मिलाई जोड़ी

जहां कोई व्यक्ति जैसा (निकम्मा या बेतुका) हो वैसा ही उसका साजबाज अथवा कोई साथी भी हो, वहा व्यग्य मे क०।

अंधा हादी, बहिरा मुर्शिद, (मु०)
दे०—अंधा गुरु.. ।
हादी = गुरु, मुर्शिद = चेला।

अंधियारी गई कि चोर
न कहीं अंधियारी गई है और न कहीं चोर ही। अर्थात अंधियारी रात आने पर चोर चोरी करने निकलेगा ही। जिसे जिस काम की आदत पड़ जाती है, मौका पाते ही वह उसे करेगा ही। जब कोई मनुष्य अपनी किसी बुरी आदत को छिपाता है, तब क०।

अंधी नाइन, आइने की तलाश
जब कोई ऐसी वस्तु चाहे, जिसके पाने के वह बिलकुल ही योग्य न हो, अथवा जिसका वह कोई उपयोग ही न जानता हो, तब क०।

अंधी पीसे, कुत्ता खाय
तब कहते हैं, जब कोई अपने परिश्रम से पैदा की गई किसी वस्तु का स्वयं उपयोग न कर सके और दूसरे उसका मजा लूटें।

अंधी मा निज पूतों का मुह कभी न देखे
जब कोई व्यक्ति दुर्भाग्यवश अपनी किसी वस्तु का पूरा लाभ उठाने से वंचित हो, तब क०।

अंधे के आगे रोये, दोनों दीदे खोये
जब कोई मूर्ख समझाने से न समझे, तब क०।
जब कोई मनुष्य किसी के दुख को सुनने के बाद कोई ध्यान न दे, तब भी क०।

अंधे का खुदा हाफिज, (मु०)
अंधे का ईश्वर रक्षक होता है।

अंधे की दाद न फरियाद, अंधा मार बैठेगा
अंधे को छेडना ठीक नही। वह अगर मार बैठे, तो उसकी किसी से कोई शिकायत नही की जा सकती।
चिढकर जब कोई व्यक्ति किसी को मारे, तो उसे और चिढ़ाने के लिए क०।

अंधे की लकडी
इकलौता लडका। जब किसी को किसी एक ही चीज़ का सहारा हो, तब क०।

अंधे के हाथ बटेर
अनायास किसी के हाथ ऐसी श्रेष्ठ वस्तु का लग जाना, जो उसे कभी मिल नही सकती।

अंधे के हिसाब दिन-रात बराबर
क्योंकि उसे कुछ दिखाई नही देता।

अंधे को जुआ मुआफ है
अनजान मे या अज्ञानवश जब किसी से कोई भूल हो जाए, तब क०।

अंधे को भागना क्या जरूर है?
जो जिस काम को कर ही नही सकता, वह उसे करने के लिए कटिबद्ध ही क्यो हो?

अंधे ने चोर पकड़ा, दौड़ियो मियां लंगडे
एक हास्यजनक बात, अंधा न तो चोर ही पकड सकता है और न लंगडा दौड ही सकता है।
जहा कोई व्यक्ति किसी काम को करने मे बिल्कुल ही असमर्थ हो, फिर भी वह उसमे चिपटा रहे, वहा उससे व्यंग्य मे क०।

अंधेर नगरी अबूझ राजा; टके सेर ककड़ी, टके सेर खाजा
जहा घोर अन्याय और अंधेरगर्दी फैली हो, वहा क०।
खाजा = घी, शक्कर और मैदे की एक मिठाई।
पाठा०—अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी ..।

अंधेर रसिया ऐना पै मरें
अंधे का मुह देखने के लिए दर्पण चाहना। एक हास्यजनक इच्छा।

अंधेरी रैन मे जेवड़ी सांप
अंधेरी रात मे रस्सी सांप जान पडती है। मन की संदिग्ध अवस्था के लिए क०।

अंधेरे घर का दीया
इकलौता लडका।

अंधेरे घर मे धींगर नाचै
जहा देखभाल करनेवाले के अभाव मे कोई उद्धत व्यक्ति मनमानी करे, वहा क०। सूने घर के लिए भी क०।
धींगर = लंबा-तडगा आदमी, भूत।

अंधेरे घर में सांप ही सांप
अंधेरे मे हमेशा इस वात का डर लगा रहता है कि न जाने क्या हो। मन की भयभीत अवस्था।
अंधे हाफिज, काने नवाव
जो अधा है वह हाफिज और जो काना है वह नवाव।
हाफिज=ऐसा व्यक्ति जिसे कुरान कठस्थ हो; पंडित।
अंधों ने गांव मारा, दौड़ियो वे लंगड़े
अधे न तो गाव लूट सकते है और न लंगडे दौडकर मदद कर सकते है। हास्यजनक वात।
अंधों ने वाजार लूटा
दे० ऊ०।
अंधो मे काना राजा
मूर्खो मे थोड़ा पढा-लिखा ही विद्वान समझा जाता है।
अइले कुल के अगरू, दीया वुतले सगरू, (पू०)
किसी अभागी स्त्री को कोसना कि यह आई कुलवतिन, जिसने घर का दीपक ही वुझा दिया, अर्थात सर्वनाश कर दिया।
अइले गइले गोड़ हलुकैले, पैले और हलुक, (भो०)
आने-जाने मे पैर टूटे और जब खाने वैठे तो पहले कौर मे ही कै हो गई। (मक्खी खा लेने से)
(१) बने-वनाए काम मे वाधा पडना।
(२) परिश्रम का पूरा लाभ नही उठा पाना।
अइले जोड़ला परखो रे, (पू०)
किसी सगे-सवधी के वहुत दिनो वाद आने पर कहते है कि 'लो भाई, ये आ गए, पहचानो इन्हे।'
अइले निहरवा खरचवे के घरवा, ना कोई चीन्हे जाने, नाही इतवरवा, (भो०)
एक ऐसे व्यक्ति का कथन जो परदेश मे है और त्यौहार के अवसर पर जिसके पास पैसा नही। कह रहा है कि यहा न तो कोई मुझे पहचानता है, और न कोई मेरा यकीन ही करता है, किससे उधार मागकर त्यौहार का काम चलाऊ?
अकाल नहीं है काल है
घोर अकाल के लिए क०।
अकाल मृत की मुक्ति नहीं
असामयिक मृत्यु अच्छी नही होती।
अकेलवा गइल मैदान फिरे, लोग कहिल कि हेराय गेले, (भो०)
कोई स्त्री वाहर शौच फिरने गई, लोगो ने समझा कि खो गई। तात्पर्य, जवान स्त्री की हमेशा मुसीवत रहती है। लोग जरा-जरा-सी वात मे उस पर सदेह करते है।
अकेला चना भाड नहीं फोड सकता
एक अकेला व्यक्ति किसी ऐसे काम को नही कर सकता, जिसके लिए वहुत से व्यक्तियो की ज़रूरत हो।
अकेला चले न वाट, झाड़ वैठे खाट, (नी० वा०)
कभी अकेले रास्ता नही चलना चाहिए; चारपाई पर बैठने के पहले उसे झाड लेना चाहिए।
(वास्तव मे यह एक लोक-कहानी का नीतिमूलक वाक्य है, जिसमे एक व्यक्ति एक राजकुमार को उपर्युक्त शिक्षा देता है।)
अकेला पूत कमाई करे, घर का करे या कचहरी करे
एक अकेला आदमी क्या-क्या कर सकता है?
अकेला हँसता भला न रोता
सुख-दुख मे जिसका कोई साथी न हो, वह किसी काम का नही। अथवा सुख-दुख मे सवको शामिल करके रहना चाहिए।
अकेला हसन रोवे कि कब्र खोदे, (मु०)
एक आदमी एक साथ दो काम नही कर सकता।
अकेली कहानी गुड़ से मीठी
एक अकेली वस्तु सवसे श्रेष्ठ तो मानी ही जाएगी, क्योकि उसकी तुलना मे कोई दूसरी अच्छी वस्तु मौजूद नही!
अकेली लकडी, न जले न वरे, न उजेरा होय, (स्त्रि०)
किसी एक अकेली वस्तु (या व्यक्ति) से सामर्थ्य से वाहर आशा नही करनी चाहिए।
अकेली लकड़ी कहां तक जले?
दे० ऊ०।
अकेले-दुकेले का अल्लाह वेली
अनाथ का ईश्वर सहायक होता है।
अक्ल का दुश्मन
यानी मूर्ख।

अक्ल की कोताही और सब कुछ
उपहास मे मूर्ख या कम समझवाले से क०।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना
वास्तविकता का विचार न करके केवल कल्पना से काम लेना।

अक्ल के तोते उड गए
होश-हवास गायब हो गए।

अक्ल के नाख़ून लो
अपनी अक्ल को दुरुस्त करो।

अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरता है
वुद्धि को तिलाजलि दे रखी है।

अक्ल चे कुत्रिस्त की पेशे मर्दा वि० आयद, (फा०)
अक्ल क्या कोई कुतिया है, जो मर्दो के पास आते ही ? अर्थात प्रत्येक व्यक्ति मे वुद्धि तो स्वाभाविक होती है, उसे जबर्दस्ती वुलाया नही जा सकता।

अक्ल ना ग्यान, यख्ख ग्याय सम्म भियान, (पू०)
मूर्ख को पिटने से ही अक्ल आती है।

अक्ल वड़ी कि वहस ?
तर्क की अपेक्षा वुद्धि से काम लेना अच्छा होता है। (यह कहा० अपने अशुद्ध रूप मे 'अक्ल वडी कि भैंस' इस तरह प्रचलित है।)

अक्लमंद को एक इशारा काफी है
समझदार इशारे मे वात समझ लेता है। उसे वहुत समझाना नही पडता।

अक्लमंदो की दूर वला
समझदारो को कष्ट नही भोगना पड़ता।

अगड़म-वगडम काठ कठंवर
फालत चीज़ो का ढेर।

अगर कोह टल्ले, न टल्ले फकीर
पहाड भले ही टल जाए पर फकीर नही टलता। वह भीख लेकर ही दरवाज़ा छोडता है। हठीला व्यक्ति।

अगर्चे गंदा, मगर ईजाद-ए-बंदा
कोई चीज वुरी है तो क्या, मगर वनाई तो अपने हाथ से गई है।

अगला करे, पिछले पर आवे
(१) किसी काम की भलाई-बुराई उन लोगो पर ही आती है, जो उसे अत मे करते है।
(२) बड़ो की भूल छोटो को भुगतनी पडती है।

अगला लीपा गया सराहा, अव का लीपा आगे आया
जब कोई आदमी अपनी किसी पिछली कारगुजारी की याद दिलाए, किन्तु वर्तमान मे उसका कार्य सतोषजनक न हो, तब क० कि तुम्हारे पिछले काम की सराहना की गई, किन्तु अव तो तुमने सब चौपट कर दिया।

अगली महली मछली, पछली परधान
घर मे जो जेठी वहू पहले से मौजूद थी, उसे कोई नही पूछता, नई वहू आकर घर की मालकिन वन वैठी। जो मुख्य था, वह तो पीछे रह गया और पीछे का मुख्य वन वैठा।

अगले को घास, न पिछले को पानी
स्वार्थी या कजूस के लिए क०, जो किसी को कुछ नही देता।

अगले पानी, पिछले कीच
काम मे शीघ्रता करनेवाले लाभ मे रहते है। जो कुए पर पानी भरने जल्दी पहुच जाते है, उन्हे साफ पानी मिलता है, वाद मे जानेवालो को तलछट हाथ लगती है।

अगहन, चूल्हे अदहन
अगहन के दिन अदहन के उवाल की तरह शीघ्र निकल जाते है, अर्थात छोटे होते है। (अथवा अगहन के दिन इतने छोटे होते है कि चौके-चूल्हे का काम करते-करते निकल जाते है)
अदहन=दाल, चावल आदि पकाने का उवलता पानी।

अगिल खेती आगे-आगे, पाछिल खेती भागे जोगे, (कृ०)
खेती मे सफलता तभी मिलती है, जव उसका सव काम समय पर किया जाए। विलव से करने पर यदि कुछ प्राप्त हो जाए, तो समझना चाहिए कि वह भाग्य से मिला।
भागे जोगे=भाग्य के योग से।

अगम बुद्धी वानिया, पच्छम बुद्धी जाट, (ग्रा०)

बनिया अक्ल मे तेज होता है, और जाट बुद्धू होता है। (मालूम होता है कि यह दृष्टिकोण उस समय कुछ लोगो मे था, पर यह कोई चिरन्तन सत्य नही।)

अघाना वगुला, पोठिया तोल

वगुले का पेट भरा है, इसलिए उसे अव सभी मछलिया कडवी लग रही हैं। भरा पेट होने पर कोई वस्तु अच्छी नही लगती।

पोठिया = एक जाति की मछली।

अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया वंदे ने

ईश्वर जो कुछ करता है, सव अच्छा ही करता है। बुरे कर्म तो मनुष्य करता है और उनका फल भोगता है। तात्पर्य यह कि किसी काम के लिए ईश्वर को दोष देना व्यर्थ है।

अच्छा किया रहमान ने, बुरा किया शैतान ने

ईश्वर के सब काम अच्छे होते है। बुरे काम तो शैतान करता है। व्यगोक्ति।

अच्छी चीज सव को पसंद है

अच्छी चीज़ सव चाहते है, अथवा अच्छी चीज़ की सव प्रशसा करते है।

अच्छी भई, गुड सत्तरह सेर

कोई वस्तु जव वहुत सस्ती या आसानी से मिल रही हो, तब क० कि बहुत अच्छा है, लूटो खाओ, मौज उडाओ।

(फैलन के जमाने मे, यानी सन १८८५ मे जव उसका यह कहावत-कोश प्रकाशित हुआ, गुड रुपये का दस सेर मिलता था, जैसा कि उसने स्वय लिखा है।)

अच्छे घर बयाना दिया

अच्छे से उलझे! जव कोई अपने से अधिक ज़बर्दस्त के साथ झगड बैठे और उलझन मे पड जाए, तव क०।

(भले भवन अव वायन दीन्हा, पावहुगे फल आपन कीन्हा। रा० मा०)

वयाना = (१) किसी काम के लिए पेशगी दी जानेवाली रकम।

(२) मिठाई, पूडी आदि की वह सौगात, जो कही बाहर से आने पर अपने सगेसवधियो और इष्ट मित्रो मे बाटी जाती है और जिसके वदले मे उसी प्रकार की सौगात पाने की वे आशा रखते है।

अच्छे वुरे में चार अंगुल का फर्क है!

आख और कान मे, यानी देखने और सुनने मे, केवल चार अगुल का अतर है। कान की सुनी हुई वात सही भी हो सकती है और गलत भी। इसलिए जब तक किसी बात को स्वय अपनी आख से देख न ले, तव तक केवल सुनकर उस पर विश्वास न करे।

अच्छे भये अटल, प्रान गये निकल

अच्छा भर-पेट भोजन किया कि प्राण ही निकल गए।

(१) जब किसी जगह मनचाहा लाभ होने के साथ ही करारी हानि भी हो जाए, तब क०।

(२) बहुत खानेवाले लालची के लिए भी क०।

अटल = तृप्त।

(यह कहावत हँसी मे मथुरा के चौबो के लिए प्रयुक्त होती है। पेट भर खा लेने के बाद भी यदि कोई उन्हे चार आने से एक मुहर तक फी लड्डू देने को कहे, तो वे और भी खा लेंगे। खिलानेवाला समझता था कि मैं अपना परलोक बना रहा हू। उस समय अन्न भी काफी था, पर अव स्थिति बदली है, किन्तु फैलन ने ऐसा ही लिखा है।)

अच्छे हैं, पर खुदा पाला न डाले

जब कोई आदमी देखने मे भला, पर व्यवहार मे बिल्कुल उसके विपरीत हो, तब उसके लिए व्यग्य मे क०।

(फैलन के अनुसार ऊपर की यह कहा० अक्सर पुलिस के कर्मचारियो के लिए कही जाती है।)

अजगर करै न चाकरी, पछी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सवके दाता राम।

चाहे कोई काम करे या न करे, पर ईश्वर सवको खाने को देता है।

आलसी और सतोषी मनुष्य की उक्ति।

आलसियो के लिए भी क०।

अजगर के दाता राम
ईश्वर अजगर जैसे प्राणी को भी भोजन देता है, जो एक स्थान पर अचल होकर पड़ा रहता है।

अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल।
छछूंदर भी डाले, चमेली का तेल।
जब किसी मनुष्य को संयोग से कोई ऐसी वस्तु काम में लाने के लिए मिल जाए, जो अपने जीवन में उसने कभी देखी न हो, अथवा जिसके वह बिल्कुल योग्य न हो, तब व्यंग्य में क०।

अजीरन को अजीरन ही ठेले, नहीं तो सिर चौहट्टे ठेले
जो जैसा है उसका मुकाबला वैसा ही आदमी कर सकता है। यदि कोई दूसरा करे, तो उसे हानि उठानी पड़ती है।
(लोगों की धारणा है कि अजीर्ण में खूब भर पेट खाने से लाभ होता है और फिर अपचे अन्न को वह बाहर निकाल देता है।)

अटकल पच्चू गैर मुकर्रर
एक अनिश्चित अथवा केवल अनुमान पर आधारित बात।
(जोड़ की दूसरी कहा०—अटकलपच्चू डेढ़ सौ या अटकल पच्चू साढ़े बाईस)

अटका बनिया सौदा दे
इसलिए देता है कि पिछला उधार वसूल करने का अन्य कोई उपाय उस के पास नहीं होता।
जब कोई आदमी विवश होकर किसी के लिए कुछ करता है, तब क०।

अटकेगा सो भटकेगा
(१) जिसकी गर्ज होती है, वह दौड़ता फिरता है।
अथवा (२) दुविधा में पड़े और गए।

अड़ते से अड़ते जाइए, चलते से दूर
जो लड़ने पर ही उतारू हो, उससे दो-दो हाथ निपट लेना चाहिए, और जो अपना रास्ता जा रहा हो, उसे छेड़ना नहीं चाहिए।

अड़सठ तीरथ कर आई तूमड़ी, तऊ न गई कड़वाई
तूमड़ी भले ही तीर्थयात्रा कर आए, किन्तु उसकी कड़वाहट नहीं जाती। जन्म जात स्वभाव नहीं मिटता।
तूमड़ी—लौकी की जाति का एक फल, जो बहुत कड़वा होता है। साधु लोग उसे पात्र बनाते हैं और साथ लिए फिरते हैं।

अड़ी पड़ी काजी के सिर पड़ी, (मु०)
किसी काम की भलाई-बुराई मुख्य आदमी के सिर जाकर पड़ती है।

अढ़ाई दिन की सक्के ने भी बादशाहत कर ली
जब कोई व्यक्ति हठात किसी ऊंचे पद पर पहुंच कर रोब दिखाता है, तब उसने क०।
(अलिफ लैला में एक किस्सा है जिसमें सक्का नाम का एक भिश्ती ढाई दिन के लिए बादशाह बन जाता है। कहा० उसी से चली।)

अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज
अनहोनी बात। दून की हांकना।

अताई नानखताई, जब जी में आई तोड़ खाई
प्राकृतिक वस्तु का मनचाहा उपयोग किया जा सकता है।

अति और नारायन से बैर है
(१) ईश्वर को अत्याचार पसंद नहीं
(२) हद से बाहर कोई काम अच्छा नहीं होता।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प।
अति किसी चीज की अच्छी नहीं होती।
धुप्प =धूप।

अदालत का बड़ा नाजुक मुआमला है
इसलिए कि हर बात में परेशानी होती है, और क्या फैसला हो, इसका भी कुछ ठीक नहीं रहता।

अधेला न दे, अधेली दे
तब कहते हैं, जब जहां देना चाहिए वहां न दे, पर व्यर्थ में अधेली दे दे।
अधेला =एक पैसे का आधा हिस्सा।
अधेली =अठन्नी।

अनकर खेती अनकर गाय, वह पापी जो मारन जाय
पराया खेत परायी गाय, हमें मतलब क्या जो भगाने जाए।

व्यर्थ दूसरे के मामले मे नही पडना चाहिए।

अनकर चुक्कर, अनकर घी, पांड़े बाप का लागा की, (पू०)

दूसरे का आटा, दूसरे का घी, रसोइये के बाप का खर्च क्या हुआ ? दूसरे के माल को बेरहमी से खर्च करना।

अनकर धन पर लछ्मी नारायन

पराये धन पर धन्ना सेठ बनना, अथवा पराया माल उडाना।

(भोजन के पहले हिन्दुओ मे लक्ष्मीनारायण कहने का रिवाज है। लक्ष्मीनारायण करना = भोजन प्रारभ करना।)

अनकर सिर कद्दू बराबर

काट भी डालो तो हर्ज नही।

अनकर सुघर बर पानी के हलकोर, अपना कुबज बर सतुआ भर कौर

दूसरे का सुघड पति तो पानी के छीटो की तरह तुच्छ और अपना निकम्मा पति सत्तू के कौर की तरह मीठा।

अपनी चीज हमेशा अच्छी होती है, क्योकि उतनी अपनी तो है।

अनकर सेंदुर देख आपन कपार फोरे, (पू०)

दूसरे का सुख देखकर ईर्ष्या करना।

यहा कपार फोडने के दो अर्थ हैं :

(१) हाय-हाय करना।

(२) सिर फोडकर रक्त निकालना, जिसमे अपना ललाट भी दूसरे की तरह लाल हो जाए।

(सेदुर स्त्रियो के लिए सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। सधवा स्त्रिया ही माग मे सेदुर भरती है।)

अनका गोड़वा धोय नाइनिया आपन धोवत लजाय, (पू०)

अपने हाथ से अपना काम करने से लज्जित होना, पर दूसरे का काम प्रसन्नतापूर्वक करना।

अनके धन पर चोर राजा

दूसरे की कमाई हुई सम्पत्ति पर मौज उडाना।

अनके पनिया मैं भरूं, मेरे भरे कहार

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के काम को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझकर नही करना चाहता, तब उसकी ओर से क०।

(तुल०—मोरे पीसे पिसनारी मैं राउर पीसन जाऊ। बुन्दे०)

अनके = दूसरे का।

अनजान की मिट्टी खराब

अज्ञान कष्ट का कारण होता है और उसका काम नही बनता।

अनजान सुजान, सदा कल्यान

मूर्ख और ज्ञानी, ये दोनो मजे मे रहते है।

मूर्ख इसलिए कि उसे भले-बुरे का कोई ज्ञान नही होता इस कारण वह किसी बात की चिन्ता नही करता (सब से भले विमूढ जिन्हे न व्यापे जगत-गति) और ज्ञानी इसलिए कि वह आगा-पीछा सोचकर हर काम करता है।

अनदेखा चोर, बाप बराबर

जिस चोर की चोरी पकडी नही गई, उसे साहूकार ही माना जाएगा।

अनदेखा चोर, साले बराबर

जिस तरह साले से कोई परदा नही होता, वह घर मे सब जगह बे-रोक-टोक आ-जा सकता है, उसी तरह जिस चोर को चोरी करते नही देखा, उससे कुछ कहा नही जा सकता, उसे घर मे पूरी आजादी रहती है।

अनदोखी को दोख, जिसकी गती ना मोख

जो व्यक्ति निरपराधी को अपराध लगाता है, ईश्वर उसे दड देता है।

गती = सद्गति।

मोख = मुक्ति।

अनविरतक विरत घमलोर बजाई

ऐसा ब्राह्मण जिसके कोई जजमानी नही होती, झूठमूठ का घटा बजाता है।

अनविरतक = जिसके कोई वृत्ति न हो, बिन जजमानी का। भूखा।

विरत=व्रती, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण।
घमलोर=व्यर्थ का शोरगुल।

अनमिले की कुशल है
भेंट न हो, सो ही अच्छा।
जब किसी व्यक्ति से हम दूर रहना चाहते हैं, तब उसके संबध मे क०।

अनमिले के त्यागी, रांड़ मिले वैरागी
कोई (औरत) न मिली तो त्यागी, मिल गई तो वैरागी।
जब जैसा अवसर देखा, तब तैसा करना।
त्यागी=विरक्त साधु।
वैरागी=वैष्णवो का एक सम्प्रदाय।
(वैरागियो मे स्त्री रखने का नियम है, त्यागी स्त्री नही रख सकते। इसलिए क०।)

अनहोत में औलाद
गरीबी मे बहुत संतान का होना (अखरता है)।

अनहोनी होती नहीं, होनी होवनहार
जो होना है वह होकर रहता है; जो नही होना वह नही होगा।
भाग्यवादियो की उक्ति।

अनाड़ी का सौदा बारा-बाट
मूर्ख का कोई काम ढग से नही हो पाता।
बाराबाट होना=मारा-मारा फिरना, नष्ट-भ्रष्ट होना।

अनाड़ी का सोना बारावानी
मूर्ख का सोना हमेशा चोखा!
क्योकि उसे खरे-खोटे की पहचान नही होती।
(सराफो की भाषा मे बारावानी सोना बहुत बढिया किस्म के सोने को कहते हैं, ऐसा सोना जो कई बार साफ किया गया हो।)

अनोखी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी भरी पड़ो री
जब किसी नीच को कोई ऐसी वस्तु मिल जाती है, जो पहले कभी उसके पास न रही हो, तो वह उसका बड़ा घमड करता है।

अनोखी जुरवा, साग में शोरवा, (मु० स्त्रि०)
शोरवा मास का ही बनता है पर उस मूर्ख स्त्री ने भाजी का ही शोरवा बना दिया।
अनाडीपन के लिए क०।
जुरवा=जोरू, स्त्री।

अनोखे गांव में ऊंट आया, लोगो ने जाना परमेसुर आया
किसी गाव के लोगो ने ऊट नही देखा था। एक बार जब वह उनके गाव मे आया, तो उन्होंने उसे परमेश्वर समझा।
मूर्ख लोग बिना देखी वस्तु के संबध मे नाना प्रकार की कल्पनाएं करते हैं।

अनोखे घर कटोरी
किसी घर मे जब कोई ऐसी वस्तु आ जाए, जो पहले न रही हो, और उसका बहुत प्रदर्शन किया जाए, तब क०।

अन्न धन अनेक धन, सोना रूपा कितेक धन
अन्न ही सबसे बड़ा धन है, सोना-चांदी उसके सामने कुछ नही।

अन्नुख घर मे नाती भतार, (पू०)
जिस घर मे नाती का पति की तरह सम्मान हो, उसे सचमुच अनोखा माना जाना चाहिए। अथवा अनोखे घर मे नाती ही पति होता है।
जहा बड़ो के स्थान पर छोटो की अधिक चले, वहां क०।

अपना-अपना खाना, अपना-अपना कमाना
एक दूसरे पर आश्रित न रहना। अपना अलग धधा करना।

अपना-अपना घोलो, अपना-अपना पिओ
(१) स्वयं अपना प्रबध करो; हम किसी की जिम्मेदारी नही ले सकते। अथवा
(२) अपनी विपत्ति स्वयं भुगतो।
(फैलन ने इसका अर्थ विस्तार से नहीं लिखा। वास्तव मे इस कहावत का निकास इस कथा से है—किसी राजस्थानी को कुसुंभा यानी अफीम का घोल पीने की आदत पड गई थी। उसने अपने

व्यर्थ दूसरे के मामले मे नही पडना चाहिए।

अनकर चुक्कर, अनकर घी, पांड़े बाप का लागा की, (पू०)

दूसरे का आटा, दूसरे का घी, रसोइये के बाप का खर्च क्या हुआ ? दूसरे के माल को वेरहमी से खर्च करना।

अनकर धन पर लछ्मी नारायन

पराये धन पर धन्ना सेठ वनना, अथवा पराया माल उडाना।

(भोजन के पहले हिन्दुओ मे लक्ष्मीनारायण कहने का रिवाज है। लक्ष्मीनारायण करना = भोजन प्रारम्भ करना।)

अनकर सिर कद्दू बरावर

काट भी डालो तो हर्ज नही।

अनकर सुघर बर पानी के हलकोर, अपना कुबज बर सतुआ भर कौर

दूसरे का सुघड पति तो पानी के छीटो की तरह तुच्छ और अपना निकम्मा पति सत्तू के कौर की तरह मीठा।

अपनी चीज हमेशा अच्छी होती है, क्योकि उतनी अपनी तो है।

अनकर सेंदुर देख आपन कपार फोरे, (पू०)

दूसरे का सुख देखकर ईर्ष्या करना।

यहा कपार फोडने के दो अर्थ हैं ·

(१) हाय-हाय करना।

(२) सिर फोडकर रक्त निकालना, जिसमे अपना ललाट भी दूसरे की तरह लाल हो जाए।

(सेंदुर स्त्रियो के लिए सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। सधवा स्त्रिया ही माग मे सेंदुर भरती है।)

अनका गोड़वा धोय नाइनियां आपन धोवत लजाय, (पू०)

अपने हाथ से अपना काम करने से लज्जित होना, पर दूसरे का काम प्रसन्नतापूर्वक करना।

अनके धन पर चोर राजा

दूसरे की कमाई हुई सम्पत्ति पर मौज उडाना।

अनके पनिया मै भरूं, मेरे भरे कहार

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के काम को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझकर नही करना चाहता, तब उसकी ओर से क०।

(तुल०---मोरे पीसे पिसनारी मैं राउर पीसन जाऊ। बुन्दे०)

अनके = दूसरे का।

अनजान की मिट्टी खराब

अज्ञान कष्ट का कारण होता है और उसका काम नही बनता।

अनजान सुजान, सदा कल्यान

मूर्ख और ज्ञानी, ये दोनो मजे मे रहते है।

मूर्ख इसलिए कि उसे भले-बुरे का कोई ज्ञान नही होता इस कारण वह किसी बात की चिन्ता नही करता (सब से भले विमूढ जिन्हे न व्यापे जगत-गति) और ज्ञानी इसलिए कि वह आगा-पीछा सोचकर हर काम करता है।

अनदेखा चोर, बाप बराबर

जिस चोर की चोरी पकडी नही गई, उसे साहूकार ही माना जाएगा।

अनदेखा चोर, साले बराबर

जिस तरह साले से कोई परदा नही होता, वह घर मे सब जगह बे-रोक-टोक आ-जा सकता है, उसी तरह जिस चोर को चोरी करते नही देखा, उससे कुछ कहा नही जा सकता, उसे घर मे पूरी आजादी रहती हे।

अनदोखी को दोख, जिसकी गती ना मोख

जो व्यक्ति निरपराधी को अपराध लगाता हे, ईश्वर उसे दड देता हे।

गती = सद्‌गति।

मोख = मुक्ति।

अनबिरतक बिरत घघलोर बजाई

ऐसा ब्राह्मण जिसके कोई जजमानी नही होती, झूठमूठ का घटा बजाता हे।

अनबिरतक = जिसके कोई वृत्ति न हो, बिन जजमानी का। भूखा।

विरत =यती, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण।
घमलोर – व्यर्थ का शोरगुल।

अनमिले की कुशल है

भेंट न हो, सो ही अच्छा।
जब किसी व्यक्ति से हम दूर रहना चाहते है, तब उसके सबध मे क०।

अनमिले के त्यागी, रांड मिले बैरागी

कोई (औरत) न मिली तो त्यागी, मिल गई तो बैरागी।
जब जैसा अवसर देखा, तब वैसा करना।
त्यागी =विरक्त साधु।
बैरागी =वैष्णवो का एक सम्प्रदाय।
(बैरागियो मे स्त्री रखने का नियम है, त्यागी स्त्री नही रख सकते। इसलिए क०।)

अनहोत में औलाद

गरीबी मे बहुत सतान का होना (अखरता है)।

अनहोनी होती नहीं, होनी होवनहार

जो होना है वह होकर रहता है, जो नही होना वह नही होगा।
भाग्यवादियो की उक्ति।

अनाड़ी का सौदा बारा-बाट

मूर्ख का कोई काम ढंग से नही हो पाता।
बाराबाट होना =मारा-मारा फिरना, नष्ट-भ्रष्ट होना।

अनाड़ी का सोना बाराबानी

मूर्ख का सोना हमेशा चोखा!
क्योकि उसे खरे-खोटे की पहचान नही होती।
(सराफो की भाषा मे बाराबानी सोना बहुत बढिया किस्म के सोने को कहते है, ऐसा सोना जो कई बार साफ किया गया हो।)

अनोखी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी भरी पड़ो री

जब किसी नीच को कोई ऐसी वस्तु मिल जाती है, जो पहले कभी उसके पास न रही हो, तो वह उसका बडा घमड करता है।

अनोखी जुरवा, साग मे शोरवा, (मु० स्त्रि०)

शोरवा मास का ही बनता है पर उस मूर्ख स्त्री ने भाजी का ही शोरवा बना दिया।
अनाडीपन के लिए क०।
जुरवा=जोरू, स्त्री।

अनोखे गाव में ऊंट आया, लोगो ने जाना परमेसुर आया

किसी गाव के लोगो ने ऊट नही देखा था। एक बार जब वह उनके गाव मे आया, तो उन्होने उसे परमेश्वर समझा।
मूर्ख लोग बिना देखी वस्तु के सबध मे नाना प्रकार की कल्पनाए करते है।

अनोखे घर कटोरी

किसी घर मे जब कोई ऐसी वस्तु आ जाए, जो पहले न रही हो, और उसका बहुत प्रदर्शन किया जाए, तब क०।

अन्न धन अनेक धन, सोना रूपा कितेक धन

अन्न ही सबसे बड़ा धन है, सोना-चादी उसके सामने कुछ नही।

अनुख घर मे नाती भतार, (पू०)

जिस घर मे नाती का पति की तरह सम्मान हो, उसे सचमुच अनोखा माना जाना चाहिए। अथवा अनोखे घर मे नाती ही पति होता है।
जहा बडो के स्थान पर छोटो की अधिक चले, वहा क०।

अपना-अपना खाना, अपना-अपना कमाना

एक दूसरे पर आश्रित न रहना। अपना अलग धधा करना।

अपना-अपना घोलो, अपना-अपना पिओ

(१) स्वय अपना प्रबध करो, हम किसी की जिम्मेदारी नही ले सकते। अथवा
(२) अपनी विपत्ति स्वय भुगतो।
(फैलन ने इसका अर्थ विस्तार से नही लिखा। वास्तव मे इस कहावत का निकास इस कथा से है—किसी राजस्थानी को कुसुभा यानी अफीम का घोल पीने की आदत पड गई थी। उसने अपने

एक पडोसी को भी उसका चस्का लगा दिया। रोज उसे बुलाकर कुसुभा पिलाता। उसके बाद जब देखा कि अफीम पूरी तरह इसके मुह लग गई है, तो एक दिन उसके आने पर उसने घर के किवाड नही खोले और उपर्युक्त वाक्य कहा।)

अपना-अपना ढंग है

हर आदमी का काम करने का अपना तरीका होता है।

अपना-अपना दुखड़ा सब रोते है

सबको अपनी-अपनी पडी है, हरेक अपने दुखो की शिकायत करता है अथवा हरेक को कोई न कोई परेशानी है। दे०—अपनी-अपनी सब　।

अपना-अपना लहनिया है

अपना-अपना भाग्य, जिसे जो मिल जाय। लहनिया =प्राप्य।

अपना-अपना ही है, पराया-पराया ही है

जहा अपना आदमी काम आ सकता है, वहा पराया नही।

अपना उल्लू कहीं नहीं गया

अर्थात हम अपना मतलब तो निकाल ही लेगे, किसी न किसी को बेवकूफ बना लेंगे।

अपना कुत्ता बरजो, हम भीख से बाज आए

जब कोई किसी के पास सहायता के लिए जाए और वहा उल्टा मुसीबत मे फसता जान पडे, तब क०।

अपना के जुरे ना, अनका के दानी, (भो०)

स्वय खाने को नही दूसरे को दान करने को तैयार।

अपना के बिड़ी-बिड़ी, दूसरे के खीर पूड़ी, (पू०)

घरवालो को पूछे नही, बाहरवालो को खीर-पूडी खिलाए।

अपना के रोटी, तीन गीत गौती, (स्त्रि०)

(१) जो खाने को दे उसी का गुणगान करने को तैयार।

(२) खाने को मिले, चाहे जो काम करा लो।

अपना कोई नहीं

ससार के सब नाते झूठे है। समय पर कोई काम नही आता।

अपना गू भोजन बराबर

(१) अपनी बुरी से बुरी वस्तु भी भली जान पडती है।

(२) अपना अवगुण भी गुण जान पडता है।

अपना घर अपना बाहर

यानी घर की चीज भी हमारी और बाहर की भी। स्वार्थी के लिए क०।

अपना घर दूर से सूझता है

(१) अपना मतलब सब देखते हैं। (२) समय पर घर की याद आती है।

अपना घर सत्तू ना, अनका घर पेड़ा

मुफ्तखोरी करना।

अपना घर संझौत ना, अनकर घर मसूर अइसन बाती

दूसरे के सहारे गुलछर्रे उडाना।

सझौत =सध्या-दीप।

अपना घर हग भर, दूसरे का घर थूकने का डर

अपने घर मे चाहे जो करो, पर दूसरे के घर मे सभल कर रहना चाहिए।

अपना टेंटर देखे नही, दूसरे की फुल्ली निहारे, (पू०)

स्वय अपने बडे दुर्गुण न देखकर दूसरो के छोटे दुर्गुण देखते फिरना।

टेंटर= रोग या चोट के कारण आख के ढेले पर का उभरा हुआ मास।

फुल्ली =आख की पुतली पर पड जानेवाला सफेद दाग।

अपना ठीक ना, अनकर नीक ना, (पू०)

(१) जिसे न अपना काम पसद आए और न दूसरे का।

(२) जो न स्वय काम करना जाने, और न दूसरे के ही काम को पसद करे।

अपना तोसा अपना भरोसा

अपनी ज़रूरतो को पूरा करने का सामान हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। उनके लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहना ठीक नही।

तोसा =(फा० तोश) पाथेय, कलेवा, खाने-पीने का सामान।

अपना दीजे, दुश्मन कीजे
किसी को कुछ उधार देना उसे अपना दुश्मन बनाना है, क्योकि मागने से वह बुरा मानता है।

अपना निकाल, मुझे डालने दे
अपना ही स्वार्थ देखना।

अपना नैना मुझे दे, तू घूम फिर के देख
अपनी चीज मुझे दे-दे, और तू हवा खा!

अपना पूत, पराया टटींगर
अपना लडका तो लडका है और पराया उठाईगीरा!
अपनी वस्तु को सराहना।
टटींगर = फालतू आदमी, उठाईगीर।

अपना विसमिल्ला, दूसरे का 'नौज विल्ला', (मु०)
अपनो की खैर मनाना और दूसरो का बुरा तकना।
विसमिल्ला = 'विस्मल्लाह रहमाननिर्रहीम' पद का पूर्वार्द्ध और सक्षिप्त पद, जिसका अर्थ होता है—ईश्वर के नाम से।
नौज विल्ला = (मौ० नऊज विल्लाह) ईश्वर हमारी रक्षा करे यानी ईश्वर हमे उससे बचाए।

अपना वैल कुल्हाड़ी नायव
अपने वैल को हम कुल्हाड़ी से नायेंगे। इसमे किसी का क्या?
अपनी वस्तु का हम चाहे जिस प्रकार उपयोग करें, तुम वीच मे वोलनेवाले कौन?
नायना = जानवर की नाक मे छेद करके रस्सी डालना।

अपना मरन, जगत की हँसी
दूसरो को विपत्ति मे फँसा देखकर दुनिया हँसती है। ससार की रीति यही है।

अपना माल अपनी छाती तले
अपने माल की स्वय हिफाजत करनी चाहिए।

अपना मीठ, अनकर तीत, (पू०)
अपनी मीठी, दूसरे की कडवी।
अपनी वस्तु की सव सराहना करते है।

अपना रख, पराया चख
अपना माल न खाकर दूसरे का उडाना चाहिए। स्वार्थी की उक्ति।

अपना लाल गवाय के, दर-दर मागे भीख
अपनी मूल्यवान वस्तु खोकर दूसरो का मोहताज वनना।
लाल = (१) पुत्र। (२) एक मूल्यवान रत्न। माणिक।

अपना लेना क्या, पराया देना क्या?
हमे दूसरो से जो लेना है, उसकी चिता क्या? वह तो मिलेगा ही।
और पराया लेकर कही दिया भी जाता है।
दूसरो का लेकर जो देना नही जानते, उनकी उक्ति अथवा उनके लिए प्रयोग करते है।

अपना वही, जो काम आवे
वक्त पर काम आनेवाले को ही अपना समझना चाहिए।

अपना-सा मुंह लेकर रह जाना
झेंप जाना, कुछ जवाव देते न वनना, कायल हो जाना।

अपना सो नवेड़ा, पराया सो घतकेड़ा
अपना काम निकाल लेना, पराए के लिए टरका देना।
नवेडा = (निवेड़ा), सुलझाया।

अपना हाथ जगन्नाथ
अपना हाथ जगन्नाथ की तरह पवित्र है। मतलब, अपने हाथ का सब काम अच्छा होता है।

अपना हारा और महरी का मारा, कौन कहता है?
अपने हारने या वेइज्जत होने और स्त्री के हाथ से पिटने की वात कोई किसी से नही कहता। मतलव, अपनी कमजोरी सव छिपाते है।

अपना ही पैसा खोटा, तो परखने वाले का क्या दोष?
जव अपनी ही कोई चीज वुरी है, तो इसमे आलोचको का क्या दोप? वे तो उसे बुरी वताएँगे ही। (प्राय उस समय कहते हैं, जव अपने घर के लडके अथवा किसी अन्य व्यक्ति की गलती से दूसरो को शिकायत का मौका मिल जाता है।)

अपना ही माल जाए और आप ही चोर कहलाए
जब किसी दूसरे की गलती से किसी का नुकसान हो जाए और लोग उसे ही उसके लिए जिम्मेदार ठहराए, तब क० ।
(पुलिसवाले चोर का पता लगाने मे असमर्थ रहने पर प्राय चोरी की शिकायत करनेवाले के सिर सारा दोष मढते है कि इसमे तुम्हारी कुछ शरारत है। फैलन के अनुसार उपर्युक्त कहा० ऐसे मौको पर ही प्रयुक्त होती है।)

अपना है ही ना, दूसरे के दानी, (पू०)
दे०—अपना के जुरे ना . . . ।

अपनी अक्ल और पराई दौलत बड़ी मालूम होती है
हर आदमी अपने को दूसरो की अपेक्षा अधिक समझदार और दूसरो को अपनी अपेक्षा अधिक मालदार समझता है।

अपनी अक्ल के आगे किसी को समझता ही नहीं
यानी बड़ा समझदार बना फिरता है।

अपनी-अपनी खाल में सब मस्त हैं
(१) हर आदमी अपनी धुन मे मस्त है।
(२) अपनी-अपनी जगह सब मौज करते हैं।

अपनी-अपनी चाल-ढाल है
अपना-अपना तर्ज-तरीका है।

अपनी-अपनी चाल है
हर जगह का अपना रीति-रिवाज होता है।

अपनी-अपनी तुनतुनी, अपना-अपना राग
अपनी धुन मे मस्त।
पाठा०—अपनी-अपनी डफली. ।

अपनी-अपनी सब गाते हैं
सब अपनी कहना चाहते हैं, कोई दूसरो की सुनना नही चाहता।

अपनी-अपनी समझ है
हर आदमी का सोचने का अपना तरीका होता है, जिसकी समझ मे जैसा आ जाए।

अपनी असल पर आ गया
अपना असली रूप प्रकट कर दिया। जब कोई क्षुद्र व्यक्ति किसी ऊचे पद पर पहुचकर कोई हलका काम कर बैठे, तब क० ।

अपनी इज्जत अपने हाथ है
अपने मान-सम्मान का ध्यान हमे स्वयं ही रखना चाहिए।
किसी ओछे के मुह न लगने के लिए क०।

अपनी ओर निबाहिए, बाकी की वह जाने
दूसरो के प्रति अपने कर्तव्य-पालन से हमे चूकना नही चाहिए। दूसरे क्या करते हैं, यह वे जाने।

अपनी करनी पार उतरनी
अपने कर्मो का फल हमे स्वय ही भोगना पडता है। जैसा करेंगे, वैसा पाएगे।

अपनी कोख का पूत नौसादर, (स्त्रि०)
अपनी चीज़ सबसे बढिया।
(नौसादर (Salammoniac) सोना साफ करने के काम आता है और सर्वसाधारण की दृष्टि मे एक कीमती चीज़ समझी जाती है।)

अपनी गरज को गधा चराते हैं
अपना मतलब साधने के लिए नीच कर्म भी करना पडता है।
(चेचक का प्रकोप होने पर गधे को उबले हुए चने खिलाने का रिवाज हिन्दुओ मे है।)

अपनी गरज को गधे को बाप बनाते हैं
अपना काम बनाने के लिए छोटे आदमी की भी खुशामद करनी पड़ती है।

अपनी गरज बावली
गरजमद को अपने काम के सिवा और कुछ नही सूझता।

अपनी गली मे कुत्ता शेर
अपने घर मे सब ज़ोर बताते है।

अपनी गुड़िया संवारो
लो, अपना काम देखो, मुझसे जितना बना, कर दिया। जब किसी से ऐसा कहने की जरूरत पडे, तब क०।
(उक्त कहा० का प्रयोग तब होता है, जब लडकी के विवाह मे उसका पिता लडकी के पहिनने के लिए कपडे और गहने आदि वर-पक्ष को सौंपता है।)

अपनी चिलम भरने को मेरा झोंपड़ा जलाते हो
अपने थोड़े से लाभ के लिए दूसरे का कोई बहुत बड़ा नुकसान करने को तैयार हो जाना।

अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता
अपनी वस्तु को कोई बुरा नही बताता।

अपनी जान सबको प्यारी है
कोई जानबूझकर मरना नही चाहता।

अपनी टाग उघारिए, आपही लाजों मरिए, (रि०)
अपने घर का भेद बाहर खोलने से अपनी ही बदनामी होती है।
पाठा०—अपनी टाग उघारिए, आपहि मरिए लाज।

अपनी तो यह देह भी नहीं
यह शरीर भी अपना नही, तब अन्य किसी वस्तु की तो बात क्या?

अपनी दाढ़ी सब बुझाते हैं
सब अपनी फिक्र पहले करते है। पहले आप फिर बाप।

अपनी नींद सोना, अपनी नींद उठना
पूर्ण स्वतन्त्र होना। किसी बात की कोई चिन्ता न होना।

अपनी पगड़ी अपने हाथ
अपनी इज्जत अपने हाथ होती है।

अपनी बला और के लिए
अपनी विपत्ति दूसरे के सिर मढना।

अपनी बेटी को ऐसा मारू कि पतोहू त्रास कर जाए
किसी नए या अपरिचित व्यक्ति पर अपना रोब जमाने के लिए उसके सामने किसी दूसरे पर गुस्सा उतारकर अपने स्वभाव की तेजी प्रकट करना। (कहावत का असली भाव यह है कि दूसरो पर अपना आतक जमाने के लिए हम निकटस्थ व्यक्तियो पर तेजी-तर्रारी दिखाते हैं; क्योकि वैसा करना आसान है। घर के लोग हमारी डाट-फटकार चुपचाप सह जो लेते हैं। थोडे से शब्द-भेद के साथ इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—
अपने बच्चे को ऐसा मारू कि पडोसन की छाती फटे।)

अपनी बेर को घोलमघाला, हमारी बेर को भूखम-भाखा, (पू०)
स्वयं तो तरमाल उडाए और हमे भूखा रखा। स्वार्थी के लिए क०।

अपनी मसलहत हर शख्स खूब जानता है
हर आदमी अपनी कमजोरिया या कठिनाइया अच्छी तरह जानता है।
मसलहत = हालचाल भेद।

अपनी राधा को याद करो
यानी जाओ, अपनी बिगडी खुद सभालो। हम कुछ नही जानते।

अपनी लिट्टी पर सब आग रखते हैं
अपनी रोटी सब सेकते है। यानी सब अपना स्वार्थ देखते हैं।
लिट्टी = एक प्रकार की मोटी रोटी।

अपनी हराई-मराई कोई नहीं भूलता
अपना भुगता सबको याद रहता है।
हराई-मराई = हार-पीट।

अपनी हाय और पर गंवाई
ऐसे आदमी को अपना दुखडा सुनाया, जिसने उस पर कोई ध्यान ही नही दिया।

अपने-अपने क़देह की सब खैर मनाते हैं
सब अपना प्याला भरा रखना चाहते हैं। सब अपना स्वार्थ तकते है।
कदह = (फा० क़दह) प्याला, भिक्षापात्र।

अपने-अपने ख्याल मे सब मस्त है
हर आदमी अपने रग मे डूबा है।

अपने ऐब सब लीपते हैं
अपने दोष सब छिपाते है।

अपने किए का क्या इलाज?
अपने कर्मों का फल स्वय ही भुगतना पडता है। उसके लिए कोई क्या कर सकता है?

अपने किए को भोगो
जैसा किया वैसा भुगतो। (कोई उसमे क्या करे?)

अपने को ना, अंते खवला खवला बांटे, (पु० स्त्रि०)
घर के लोगो को भूखा रखकर वाहरवालो को खिलाना। अपनो की इज्जत न करना।
खवला = खोवा, अजलि।

अपने घर के सव वादशाह है
(१) अपने घर मे सव वडे है।
(२) अपने घर के सव मालिक है, चाहे जो करें।

अपने घर मे आता किसको वुरा लगता है
मुफ्त का माल आ जाए, तो सव चाहते हैं।

अपने झोंपड़े की खैर मांगो
अपनी कुशल मनाओ, फिर दूसरे की फिक्र करना।

अपने ढिग पैसा तो पराया आसरा कैसा
अपने पास जव सुभीता है, तो दूसरो का आसरा क्यो ताका जाए?

अपने दिल की गवाही को सच जान
मन जैसा वोले, वैसा ही करना चाहिए।

अपने नैन गंवाय के दर-दर मागे भीख
अपनी वस्तु खोकर दूसरो से मागना। जो व्यक्ति अपनी किसी चीज की रक्षा नही कर सकता, उसे कष्ट भोगने पडते है।

अपने नैन मुझे दे, तू झुलाता फिर
दे०--अपना नैना मुझे दे . ।

अपने पांव में आप ही कुल्हाड़ी मारते है
अपने हाथो अपना नुकसान करते है।

अपने पूत कुंवारे फिरें, पड़ोसी के फेरे
अपने लडके के विवाह की फिक्र नही, पडोसियो का विवाह कराते फिरते है।
अपना काम छोडकर परोपकार करते फिरना।
फेरे = परिक्रमा, विवाह।

अपने वच्चे को ऐसा मारूं, पडोसिन की छाती फट जाए
दे०—अपनी वेटी को ।

अपने वच्छे के दात कोसों से मालूम देते है
अपनी चीज़ या अपने घर के आदमी की असलियत सव जानते हैं।

अपने वच्छे के दांत हर कोई जानता है
दे० ऊ०।

अपने वावलों रोइए, दूसरों के वावलो हँसिए
अपनी सतान वुरी होने पर आदमी रोता है, दूसरे की वुरी होने पर हँसता हे। पराए दुख को हम दुख नही मानते।
वावला = पागल, मूर्ख।

अपने मन से जानिए, पराए मन की बात
दूसरे आपसे क्या चाहते हैं अथवा कैसे व्यवहार की आशा रखते हैं, इसे स्वय अपने मन से समझ लेना चाहिए। दूसरो के साथ आप जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही व्यवहार दूसरे आपके साथ करेगे।

अपने मरे वगैर स्वर्ग नहीं दीखता
अपने हाथ से किए विना काम नही होता। अपनी मुसीबत स्वय भुगतनी पड़ती है।

अपने मियां दर-दरबार, अपने मियां चूल्हे द्वार
एक ही आदमी का सव तरह के छोटे-वडे काम करना। अथवा अकेले आदमी की मुसीवत होती है, क्या-क्या करे, राजदरवार जाए या चूल्हा फूके।

अपने मुंह धन्नाबाई
आप अपनी प्रशसा करना।

अपने मुंह मियां मिट्ठू
दे० ऊ०।

अपने मुंह शादी मुवारक
स्वय अपना ढोल पीटना।

अपने मुए राम नहीं
अपने को खपाए विना कार्य सिद्ध नही होता। मरने पर फिर राम नही मिलते, जीवित रहते उनका स्मरण करो, यह अर्थ भी हो सकता है।

अपने लगे तो देह मे, और के लगे तो भीत मे
दूसरो के कष्ट की परवाह वहुत कम की जाती है।

अपने सुई भी न जाने दो, दूसरे के भाले घुसेड दो
दे० ऊ०।

अपने से वचे तो और को दें
स्वार्थी के लिए क०। अथवा पहले हम तो अपनी जरूरत पूरी कर ले, फिर दूसरो को दें।

अपनो की आड़ कोई नहीं उठाता
अपने सगे-सबंधियो का अहसान कोई नहीं लेना चाहता।

अफयूनी जनूनी
अफीमची पागल होता है।

अफलातून के नाती (या साले) बने हैं
अपने को बड़ा अक्लमद समझते हैं।
(अफलातून या प्लेटो प्राचीन यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक हुआ है।)

अफसोस! दिल गड्ढे मे
मनचाही न कर पाना।

अफीमची तीन मजिल मे पहिचाना जाता है
अपनी सुस्त और लड़खड़ाती चाल से, वह उसे छिपा नही सकता।

अफीम या खाए अमीर या खाए फकीर
अफीम महगी होती है। साधारण आदमी खा नही सकते। अमीर खरीदकर और गरीब मागकर खा सकते हैं।

अफीमी मिठास बड़ी रग़बत से खाता है
अफीमची को मिठाई बहुत पसद होती है।
रगबत = रुचि, आग्रह।

अब की अब के साथ, जब की जब के साथ
आगे जैसा होगा देखा जाएगा, इस समय तो परि-स्थिति के अनुसार ही हमे काम करना होगा।

अब की छई की निराली बातें
वर्तमान पीढी के छोकरों की बाते समझ मे नही आती।
छई = पीढी।

अब की बार बेड़ा पार
यानी थोडी कसर और है, बस हिम्मत करो, काम बन गया।

अब की बचे तो सब घर रचे
इस बार मुसीबत टल जाए तो बडी बात समझिए, अर्थात बचना मुश्किल है।

अब के मुड़हे हो राजा? (पू०)
हे राजा! तुम्हारे बिना अब कौन लोगो के बाल बनाएगा? जब कोई आदमी यह दभ करे कि उसके बिना काम चल ही नही सकता, तब क०।
(कथा है कि किसी एक नाई के मर जाने पर उसकी स्त्री छाती पीट-पीट कर रोने और उक्त प्रकार से कहने लगी कि 'अब के मुड़हे हो राजा?')

अब के साहे हम ना ब्याहे, फिर पटे वह साहे, (हि०)
अब की सहालग मे अगर हमारा विवाह न हुआ, तो उस सहालग को धिक्कार है।
किसी ऐसे व्यक्ति की उक्ति जिसका विवाह नही हो रहा है।

अब जीने का कुछ स्वाद नहीं
जिंदगी मे अब कुछ मजा नही रह गया।

अब तो पत्थर के नीचे हाथ दबा है
ऐसी सकटापन्न स्थिति सामने आ जाना, जिसके सबध मे यकायक कुछ किया न जा सके। जैसे अपने किसी मित्र या बडे आदमी को कोई चीज उधार दे दी जाए और फिर वापिस न आने पर उससे मागी न जा सके।

अब तो रुपये की जात है
अब तो रुपया ही सब-कुछ है।

अब पछताए का होत है, जब चिड़ियां चुग गईं खेत
अवसर के निकल जाने पर बाद मे पछताना व्यर्थ है।
(आछे दिन पाछे गये, हरि सो किया न हेत।
अब पछताये होत का, (जब) चिडिया चुग गई खेत।)

अब भी मेरा मुर्दा तेरे जिन्दा पर भारी है, (मु०)
अपनी बिगडी हुई हालत मे भी मैं हर बात मे तुमसे बडा हू।

अबरा की जोरू, सब की भौजाई, (पू०)
गरीब या कमज़ोर की औरत से सब हँसी करते है।
कमजोर से सब लाभ उठाते है।
भौजाई = बडे भाई की स्त्री को भावज कहते है; उससे हँसी-दिल्लगी करने का भारत मे आम रिवाज है।

अवरे के भैंस बियाइल, सगरो गांव मटिया ले धाइल, (भो०)

किसी कमजोर आदमी की भैंस व्याई तो सारा गाव मटकी लेकर दौड पडा दूध लेने के लिए। मूर्ख से सब लाभ उठाना चाहते है। अथवा दुर्बल जानकर सब सताते है।

बियाना=बच्चा देना।

अब सतवंती होकर बैठी, लूट लिया संसार, (स्त्रि०)

आजन्म बुरे कर्म किए और अब साधु-सत वन गए। पाखडी के लिए क०।

अब से आए, घर से आए

अभी आ रहे है और घर से आ रहे हे।

(ऐसे व्यक्ति द्वारा कहावत का प्रयोग होता हे, जो परदेश से आ रहा हो, जहा उसे कोई कष्ट न हुआ हो।)

अभी एक बूंट की दो दाल नहीं हुई हैं

अभी मामला तै नही हुआ। अथवा इसका यह अर्थ भी लगाया जा सकता है कि अभी सब मिलकर ही रहते है, अलग नही हुए।

बूट=चना।

पाठा०—अभी तक चने की. ।

अभी कै दिन कै रात

उस व्यक्ति के लिए कहते है जो अधिकार पाकर इतराने लगता है और समझता है कि सदैव मेरे ऐसे ही दिन रहेगे। उसके लिए भी क०, जो किसी वस्तु का नियमानुसार अधिकारी बनने के पहले ही उस पर अपना हक़ जताने लगता है।

अभी तो तुम मां का दूध पीते हो

अभी तो तुम छोकरे हो, क्या समझो ?

अभी तो तुम्हारे दूध के दांत भी नही टूटे है

जो इतनी वढचढ कर वात करते हो।

अभी तो होठो का दूध भी नहीं सूखा है

लडके होकर वडो की तरह वात मत करो।

अभी दिल्ली दूर है

अभी तो वहुत रास्ता तै करना है। वहुत काम करने को पड़ा है।

(फा०—हनोज दिल्ली दूर अस्त।)

अभी सेर में पौनी भी नहीं कती है

अर्थात अभी तो वहुत कुछ करना है।

सेर मे=सेर भर रूई मे।

पौनी=पावभर, एक चौथाई।

अमानत में खयानत तो जमीन भी नही करती, (प्र० पा०)

धरोहर मे वेईमानी तो धरती भी नही करती। उसमे जो कुछ गाडकर रख दिया जाता है, वह ज्यो का त्यो मिल जाता हे।

अमानी अवादानी, इजारा उजाड़ा

अमानी और इजारा दोनो ब्रिटिश शासन काल मे लगान वसूली की दो पद्धतिया थी। अमानी की जमीन की मालिक सरकार होती थी और वह किसान से उसका सीधा लगान वसूल करती थी। इसके विपरीत इजारे की जमीन का मालिक जमीदार होता था और उसका लगान जमीदार वसूल करता था। उसी से कहावत का तात्पर्य यह है कि सरकार को लगान देने मे किसान को सुविधा और जमीदार को देने मे वहुत असुविधा होती है।

अमीर का उगाल गरीब का आधार

अमीर जिस वस्तु को तुच्छ समझकर फेंक देता हे, गरीब का उससे ही वहुत काम चलता है।

अमीर को जान प्यारी फकीर को एकदम भारी

क्योकि फकीर कष्ट मे रहता है।

अमीर ने पादा, सेहत हुई; गरीब ने पादा, बेअदवी हुई

वडे आदमियो के अवगुण भी गुण वन जाते है, किन्तु उन्ही अवगुणो के लिए गरीब की आलोचना की जाती हे।

अय, तेरी कुदरत

(हे ईश्वर) तेरी विचित्र लीला।

अय, मेरे अगले, मनमाने सो कर ले, (स्त्रि०)

ऐसे व्यक्ति का उद्गार जो किसी के द्वारा वहुत सताया जा रहा हो। वहुधा अपने किसी अत्याचारी पति से ऊवकर स्त्री ऐसा कहती हे।

अयां रा चे बयां? (फा०)
प्रत्यक्ष का क्या वर्णन करना।

अरहा नाइन, बांस की नहरनी, (पू०)
(नहरनी लोहे की होती है बांस की नहीं)
नई नाइन, और बांस की नहरनी।
जब कोई नौसिखिया अपनी होशियारी दिखाने के लिए बिलकुल ही अजीब ढंग से काम करे, तब क०।

अरज़ां बइल्लत, गरां ब हिकमत, (फा०)
सस्ती चीज हमेशा कष्टदायक होती है और महगी आराम देनेवाली।
तुल०—महगा रोवे एक बार सस्ता रोवे बार-बार।

अरमान भारी पोपा
पोपे को बड़ा घमड।
(छोटे आदमी का अभिमान करना।)

अरहर की टट्टी गुजराती ताला
एक बेजोड काम। अरहर की टट्टी मे जिसे आसानी से तोडा जा सकता है, कोई एक मजबूत ताला लगाना तक मूर्खता है।
(पजाब का गुजरात नामक स्थान किसी समय तालो के लिए प्रसिद्ध रहा है।)

अलकब्ज़ ओ दलील उलमुल्क (अ०)
किसी चीज़ पर कब्जे का मतलब ही है कि वह हमारी है।

अलख पुरुख की माया, कहीं धूप कहीं छाया
ईश्वर की लीला जानी नहीं जाती, कहीं धूप है तो कहीं छाया।

अलखामोशी नीम रज़ा
चुप रहना आधी रज़ामदी है।
(स०—मौन सम्मति लक्षणम्।

अल गई, बल गई, जलवे के वक्त टल गई, (मु० स्त्रि०)
प्यार और खुशामद की बाते करती है, लेकिन मौके पर गायब हो जाती है।
ऐसा व्यक्ति जो जरूरत पर काम न आये।
जलवा=(अ० जल्व) जलसा, मुसलमानो मे वधू का पहले-पहल अपने पति के सामने मुह खोलकर होना।

अलफरवः खवाहमख्वाह मर्द-ए-आदमी, (मु०)
लंबा-तगडा आदमी देखने मे हिम्मतवाला तो जान ही पडता है। (फिर चाहे वह वैसा न हो।)

अलबल खुदाबल, (मु०)
ईश्वर का बल ही सबसे बडा बल है।

अलबेली ने पकाई खीर, दूध की जगह डाला नीर, (स्त्रि०)
किसी अनोखी औरत ने खीर बनाई, और उसमे दूध की जगह पानी डाल दिया।
ऐसी स्त्री के लिए कहा जाता है, जो होशियार तो बहुत बनती हो, पर करना-धरना कुछ न जानती हो।

अल लूं, बल लूं, सहनक सरका लूं, (मु० स्त्रि०)
प्यार करू, खुशामद करू और भोजन का थाल अपने आगे खिसका लू।
मीठी बाते करके अपना उल्लू सीधा करना।
कपट भरा व्यवहार करना।
सहनक=वह थाल जिसमे मुसलमानो के यहा सुहागिनो को भोजन कराया जाता है।

अलिफ अल्ला, (मु०)
ईश्वर अलिफ है। यानी ईश्वर एक अथवा महान है।
(अलिफ फारसी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है और हमेशा अलग लिखा जाता है।)

अलिफ के नाम खुटका भी नहीं जानते
अर्थात निरे मूर्ख या अनपढ है।
खुटका=छोटी लाठी। अक्षर मे लगायी जाने वाली खडी लकीर।

अलिफ के नाम बे नही जानते
वे पढे-लिखे है।

अलील की राय अलील
बीमार की राय मानने योग्य नही होती, अथवा जिसका शरीर स्वस्थ नही, उसके विचार भी स्वस्थ नही होते।

अल्लाह-अल्लाह करो और खैर मागो, (मु०)
बस अब तो ईश्वर का नाम लो और कुशल मनाओ।

अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह, (मु०)
ईश्वर की बडी कृपा जो सब काम खैरियत से हुआ।

अल्लाह करे बांका पकड़ा जाए, लाल खां के लडके से जकड़ा जाए, (मु० स्त्रि०)
एक तरह की गाली। किसी दुष्ट को कोसना। बाका = गुडा।

अल्लाह करे सो हो
ईश्वर को जो मजर होता है, वही होता है।

अल्लाह का दिया सब-कुछ
ईश्वर ने जो दिया, वही वहुत है। अथवा जो कुछ हे वह सब ईश्वर का दिया है।

अल्लाह का दिया सिर पर
ईश्वर जो कुछ दे, सहर्ष स्वीकार है। इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि ईश्वर का दीपक अर्थात चाद हमारे सिर पर है, जो हमे रात मे प्रकाश देता है।

अल्लाह का नाम लो
ईश्वर का भय खाओ।

अल्लाह का नाम सच्चा, सब झूठा है जुनान
ईश्वर का नाम ही इस ससार मे सच्चा है और सब प्रपच है।
जुतान = भान।

अल्लाह दे, अल्लाह दिलावे, बंदा दे मुराद पावे
देता दिलाता तो ईश्वर है, मनुष्य जब कुछ देता है, तो ईश्वर उसकी मराद पूरी करता है।
(फकीरो की सदा)

अल्लाह दे, बंदा पावे
देता ईश्वर है, मनुष्य अपने सत्कर्मों का फल पाता है।

अल्लाह दो सींग देवे, तो वह भी क़बूल है
ईश्वर जो भी कष्ट सहावे सहने को तैयार है।
(परेशानियो से ऊवे हुए व्यक्ति की उक्ति)

अल्लाह यार है तो वेड़ा पार है
ईश्वर की कृपा हो तो सब काम वन जाता है।

अल्लाह रे! दीदे की सफाई
यानी कैसी आख मारती है। निर्लज्ज स्त्री के लिए क०।
दीदा = आख।

अल्लाह रे! मै!
आप अपनी पीठ ठोकना। अभिमान से फूलना।

अल्लाह ही अल्लाह है
जहा देखो, वहा ईश्वर ही ईश्वर है।

अल्लाह ही की चोरी नहीं तो बंदे का क्या डर है
जब ईश्वर सब जानता है, उससे कोई वात छिपी नही, तव आदमी से क्या डरना?
(पिला मैं आशकारा हमको किसकी साकिया चोरी
खुदा की जब नही चोरी तो फिर बदे की क्या चोरी।
जौक।)

अल्लाह है तो क्या डर है?
ईश्वर जब रक्षक है तो डर किस बात का?

अल्लाहो अकबर
ईश्वर महान हे।

अव्वल खेश, बाद हू दरवेश, (फा०)
पहले अपने को, बाद मे फकीर को।
अपनी फिक्र पहले। पहले आप फिर बाप।

अव्वल तआम, बादहू कलाम, (फा०)
पहले भोजन फिर बात। भोजन मुख्य है, वह पहले कर लेना चाहिए।

अव्वल मरना, आखिर मरना, फिर मरने से क्या है डरना?
हर हालत मे जब मरना ही है, तब मृत्यु का भय क्या?

अशरफियां लुटें और कोयलों पर छाप
अशर्फिया खर्च हो और कोयले की हिफाजत की जाए। अनावश्यक सावधानी बर्तने पर कहते हैं।

अशराफ के लड़के विगडते हैं तो भडुवे बनते हैं
भले आदमियो के लडके कुसग मे पडकर जब विगडते है तो फिर किसी काम के नही रहते।

असवाव मे असवाव, एक चग एक रवाव
बस हमारा कुल जमा यही सामान है—एक चग और एक रवाव।
(किसी फक्कड कला-प्रेमी की उक्ति।)
चग = डफ की तरह का मजीरा लगा हुआ एक वाजा।
रवाव = सारगी की तरह का एक प्रकार का वाजा।

असल असल है, नकल नकल है
नकली चीज असली की बराबरी नहीं कर सकती।

असल कहे सो दाढ़ीजार, (पू०)
जो सच कहे वही बुरा।
दाढ़ीजार=एक गाली।

असल के असल होते है
अच्छे कुल मे अच्छे ही पैदा होते हैं।

असल से खता नहीं, कम असल से वफा नहीं
जो वास्तव मे उच्च कुल का है, उससे कभी धोखा नही होता। नीच से सचाई और ईमानदारी की आशा नही करनी चाहिए।

असील की मुर्गी टके-टके
अच्छी चीज की कद्र न होना।
असील=मुर्गी की एक बढिया जाति।

अस्तबल की बला बंदर के सिर
किसी का दोष किसी के सिर मढा जाना।
अस्तबल=घुडसाल।
तबेले की बला भी कहते हैं।

अस्सी की आमद चौरासी का खर्च
आमदनी से खर्च ज्यादा।

अस्सी बरस की उमर, नाम मियां मासूम
गुण, धर्म के विरुद्ध नाम।
(मासूम छोटे बच्चे को कहते है।)

अस्सी लस्सी
अस्सी बरस का होने पर आदमी बिल्कुल ढीला-ढाला हो जाता है।

अहमक से पड़ी बात, काढो ऐंठा तोड़ो दात
मूर्ख को डडे से ही समझाया जा सकता है

अहमद की दाढी बडी या मुहम्मद की ?
किसी की भी बडी हो, हमे क्या मतलब ?
(व्यर्थ की बात)

अहमद की पगडी मुहम्मद के सिर
बेतुका काम। अथवा एक की हानि करके दूसरे को लाभ पहुचाना।

अहीर का क्या जजमान और लपसी का क्या पकवान
लपसी जैसे कोई बहुत अच्छा पकवान नही, अहीर भी वैसे ही कोई बहुत अच्छा जजमान नही; क्योकि वह अच्छी दक्षिणा नही दे सकता।

अहीर का पेट गहिर, बाम्हन का पेट मदार
अहीर का पेट गड्ढा और ब्राह्मण का ढोल होता है। (मतलब दोनो अधिक खाते है)।

अहीर की दहेड़ी मटिया सुर्खरू
अहीर की मथानी और मटकी हमेशा चिकनी-चुपडी रहती है; क्योकि घी-दूध के सपर्क मे रहती है। (ऐसे स्थान से सबद्ध व्यक्ति के लिए क०, जहा उसे खूब खाने-पीने को मिलता हो।)

अहीर गाडी जात गाड़ी, नाई गाड़ी कुजात गाड़ी
अहीर की गाडी ही सच्ची गाडी है, नाई की गाडी गाडी नही, क्योकि गाडी चलाना अहीर का ही काम है, नाई का नही।
जिसका जो काम है वह उसे ही शोभा देता है।

अहीर देख गड़रिया मस्ताना
अहीर को पिए देखकर गडरिए ने भी गहरी चढा ली। दूसरो का गलत अनुसरण करना।
(अहीर एक पशुपालक जाति है और गडरिए भेडे पालते है। उनकी आर्थिक स्थिति अहीरो से अच्छी नही होती।)

अहीर से जब गुन निकले जब बालू से घी
बालू से जिस तरह घी नही मिल सकता, उसी तरह अहीर से उसके व्यवसाय के भेद नही जाने जा सकते।

आ

आंख एकौ नहीं कजरौटी दस ठाईं
आख एक भी नही, और कजरौटी रख छोडी है दस।
झूठा आडबर दिखाना।
कजरौटी=काजल रखने की डिबिया।
ठाईं=ठौर, सख्यावाची शब्द।

तुल०—आख नही पर काजर पारे।

आंख ओझल पहाड़ ओझल

आख की ओट होने से तो पहाड भी नही दिखाई देता। किसी को तभी तक हमारा ध्यान रहता है, जब तक उसकी नज़र के सामने रहो।

(इसका एक अन्य रूप है—सीक ओट हुए पहाड ओट हुए।

मराठी मे भी है—काडी आड गेला तो पर्वता आड गेला।)

आंख का अंधा, गांठ का पूरा

ऐसा धनी पर मूर्ख व्यक्ति, जिसका पैसा आसानी से उडाया जा सके।

आंख का पानी ढल गया

लाज-शर्म खो बैठे।

आंख की बदी भौंह के सामने

बुरी नीयत छिपती नही, चेहरे पर प्रकट हो जाती है।

आख के आगे नाक, सूझे क्या खाक

(व्यग्य मे) आख पर तो परदा पडा है, दिखाई क्या दे?

(एक कहानी है कि किसी समय एक नकटे ने अपना सप्रदाय बढाने के उद्देश्य से कहना शुरू कर दिया कि मुझे ईश्वर के दर्शन होते हैं। लोग जब आपत्ति उठाते कि भाई हमारे भी तो आखे है, ईश्वर हमे क्यो नही दिखाई देता, तो वह जवाब देता 'तुम्हारी आख के आगे नाक जो लगी है।' इस पर लोगो ने अपनी नाक कटवानी शुरू कर दी। पर उन्हे ईश्वर के दर्शन नही हुए। अत मे अपने को मूर्ख बना देख उन्होने भी यही कहना प्रारभ कर दिया कि नाक की वजह से हमे ईश्वर नही दिखाई देता। और इस प्रकार नकटो की जमात बढने लगी।)

आंख गड्ड, नाक भद्द, सोहनी नाम

नाम अच्छा, पर रूप-रग उसके विपरीत।

आंख चौपट, अंधेरे नफरत

आंख है ही नही, और कहते हैं—हमे अधेरे से नफरत है।

(अपनी झूठी विशेषता दिखाकर शान बघारना।)

आंख न दीदा, काढे कशीदा, (स्त्रि०)

काम करने का शऊर नही, फिर भी करने का शौक।

कशीदा काढना=कपडे पर बेल-बूटे बनाना।

आख न नाक, बन्नो चाद-सी

शक्ल-सूरत तो भद्दी फिर भी चटक-मटक से रहना।

आख फड़के दहिनी, मैया मिले कि बहिनी,
आख फड़के बाईं, भैया मिलें कि साईं।

दाहिनी आख के फडकने पर मा या बहिन से और बाईं के फडकने पर भाई या पति से भेट होती है।

आख फूटी पीर गई

(वेदना से) आख फूटी तो फूटी पर कष्ट से छुटकारा तो मिला। अच्छी वस्तु कष्टदायक हो तो उसका जाना ही अच्छा। किसी हमेशा की झझट की वस्तु के नष्ट हो जाने पर क०।

आख फूटेगी तो क्या भौंह से देखेंगे

जिस पर सब कुछ निर्भर है, अथवा जो मुख्य वस्तु है, जब वही नही रहेगी, तब काम कैसे चलेगा? प्राय ऐसी स्त्री को क०, जो अपने पति का सदा बुरा मनाया करती है।

आख फेरे तोते की-सी, बात करै मैना की-सी

बात करने मे मीठा, पर बेमुरौवत।

आख बची माल दोस्तो का

जहा थोडी भी असावधानी से चोरी या नुकसान का डर हो, वहा क० कि भाई अपनी चीज़ की हिफाजत रखना, वरन यह जगह ऐसी है कि जरा नजर बची और माल ग़ायब।

(आख बची और नगरी लुटी भी कहते हैं।)

आख मे मैल और इसमे मैल नहीं

बहुत ही स्वच्छ वस्तु। सच्चरित्र के लिए क०।

आख मे लोर, दात निपोर

सिलबिला आदमी।

आख है जब तक तो खुश आती है भौंह।
आख ही फूटी तो कब भाती है भौंह?
आंखें जब तक बनी रहती है, तभी तक भौंह भी अच्छी लगती है। किन्तु आखो के न रहने पर भौंह अपना महत्व खो बैठती हैं।
(आशय यह कि जिस व्यक्ति को हम प्यार करते है, उनसे सबधित व्यक्ति हमे उसके जीवनकाल तक ही अच्छे लगते है। उसके मरने पर उसके मित्र या सगे-सम्बन्धी फिर हमे नही सुहाते। जैसे पत्नी के मर जाने से साले अथवा लडकी के न रहने पर दामाद से फिर हमे कोई मतलब नही रहता।)

आखें तो खुली रह गई और मर गई बकरी
अप्रत्याशित रूप से किसी घटना का घटित हो जाना।
(बकरे की गर्दन को एक ही झटके मे छुरी से अलग करने पर उसकी आखे खुली रहती हैं। उसी से कहा० बनी।)

आखें हुईं चार तो मन मे आया प्यार।
आंखें हुईं ओट तो जी मे आया खोट।
मुह देखे की प्रीति।

आंखें हैं या भैंस के चूतड
जिसे सामने की चीज़ न दिखाई दे उससे हँसी मे क०।

आंखों का देखा दूर कर, भले मानस का कहना कर।
दुराग्रह को दूर करके दूसरे भले आदमी की बात माननी चाहिए।

आखो का नूर, दिल की ठंडक
प्रिय जन के लिए क०।

आखों का काजल चुराता हे
ऐसा चालाक या धूर्त है।

आंखो का तारा
बहुत प्यारी वस्तु। प्राय लडके के लिए प्र०।

आखों का तेल निकालना
आखो से बहुत काम लेना। बहुत कजूसी करने पर भी कह सकते है।
(नोट—यह कहावत मुख्य रूप से चालाक के लिए ही प्रयक्त होती है अन्यथा वह अपना मजा ही खो बैठती है। गुजराती मे यह इसी अर्थ मे प्रयुक्त होती है।)

आखों की सुइयां निकालना बाकी हे
बस थोडा काम बाकी है।
(लोक-विश्वास है कि यदि आटे की मूर्त्ति बनाकर उसमे शत्रु का नाम ले-लेकर सुइया चुभो दी जाए, और उसके मरने की कामना की जाए, और फिर उस मूर्त्ति को मरघट मे रख दिया जाए, तो उस शत्रु के सर्वांग मे उसी तरह की सुइया चुभ जाएगी और वह तडप-तडप कर मर जाएगा। पर अगर कोई तरकीब जानता हो, तो मत्र द्वारा सुइयो को एक-एक करके अलग करके उसे जीवित भी किया जा सकता है। इस पर एक कथा भी हे कि किसी ने उपर्युक्त रीति से एक व्यक्ति को मार डाला। उस मृत पुरुष की स्त्री जादू जानती थी। पति को जीवित करने के लिए उसने एक-एक करके उसके शरीर की सारी सुइया निकाल डाली। किन्तु जब केवल आखो की सुइया निकालनी शेष रही, तब कार्यवश उसे बाहर उठ कर जाना पडा। उसी समय उसकी नौकरानी वहा पहुच गई। उसने आखो की सुइया निकाल डाली। ऐसा करते ही वह मनुष्य जीवित हो गया। यह समझकर कि इस नौकरानी ने ही मेरी प्राणरक्षा की है, वह उस पर बहुत प्रसन्न हुआ और औरत को अलग करके उसके साथ विवाह कर लिया।)

आखों के अंधे नाम नैनसुख
नाम के विपरीत गुण।

आखो के अधे नाम रोशन
दे० ऊ०।

आखों देखा भट पडे, मैंने कानों सुना थ।
आखो देखी बातो पर विश्वास न करनेवाले से व्यग्य मे क०।
भट पडे = भट्टी मे यानी भाड़ मे जाए।

आंखो देखी मानूं, कानो सुनी न मानूं।
आखो देखी बात पर ही विश्वास किया जा सकता है। कानो से सुनी हुई पर नही।

आंखों पर ठीकरी रखना
जानबूझ कर अनजान बनना।

आखो पर पलको का बोझ नहीं होता
(१) अपने घर का आदमी किसी को भारी मालूम नही देता।
(२) बड़ो को छोटो का भरण-पोपण नही अखरता।

आखो मे खाक
गाली देना, कोसना।
धोखा देना।

आखो मे घर करता है
प्यारा लगता है।

आखो मे चर्बी छाई है
अपना भला-बुरा न देख सकनेवाले के लिए क०।
बहुत अहकारी से भी क०।

आंखों मे सरसो फूलना
मदमस्त होना। किसी को कुछ न समझना।

आखों वाली अंखियां बड़ी न्यामत है
अधे भिखारियो की टेर।

आंखो सुख, कलेजे ठंडक, (स्त्रि०)
वहुत प्रिय वस्तु। पुत्रादि के लिए क०।

आखों से सुखी नाम हाफिज जी
भगवान ने आखे दी, फिर भी नाम हाफिज।
गलत नाम।
(सम्मानार्थ—मुसलमानो मे अधे को हाफिज कहते हैं।)

आत भारी तो माथ भारी
पेट ठीक न रहने से सिर भारी रहता है।

आता-तीता, दाता नोन, पेट भरन को तीन ही कोन।

आंखें पानी, काने तेल, कहे घाघ वैदाई गेल।
ताजा खाने, दातो मे नमक लगाने, पेट को एक चौथाई खाली रखने, आखो मे शीतल जल के छीटे देने, और कानो मे तेल डालते रहने से, घाघ कहते है, वैद्य की जरूरत नही पडती।

आधर कूकर वतास भूके, (पू०)
अधा कुत्ता हवा की आहट पाकर ही भयभीत हो उठता है। इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—'कनवा वैल बयारे सनके'।

आंधर कूटे, बहिर कूटे, चावल से काम
आदमी कैसा ही हो, हमे क्या ? काम होना चाहिए।

आंधर के गाय बयाइल, टहरी लेके दौरलन, (भो०)
अधे की गाय ने वच्चा दिया तो लोग मटकी लेकर दौडे दूध के लिए।
सीधे की सिधाई से सब लाभ उठाना चाहते है।

आधी आवे बैठ जाए, पानी आवे भाग जाए
आधी आने पर बैठ जाना चाहिए। पानी आने पर भाग जाना चाहिए। मतलब यह कि आधी मे दौडना नही चाहिए, और पानी मे एक जगह खडे होकर भीगना नही चाहिए।

आधी के आगे बेने की बतास
आधी मे पखा झलना व्यर्थ है।
तुल०—भूतो के आगे लोट।

आंधी के आम
अकस्मात हाथ लगी वस्तु। सस्ती वस्तु।

आसू एक नहीं, कलेजा टूक-टूक
झूठी सहानुभूति दिखाना।

आई गई पार पड़ी
किसी तरह काम पूरा हुआ। अथवा जो होना था हो चुका, उसकी चिन्ता व्यर्थ।

आई तो रमाई, नहीं तो फकत चारपाई
मजा-मौज का साधन मिल गया तो ठीक, नही तो चिन्ता नही।

आई तो रोजी, नहीं तो रोजा, (मु०)
मिला तो खा लिया, नही तो रोजे का व्रत समझो।
किसी फक्कड की कहावत।
रोजा = वह धार्मिक उपवास जो मुसलमान रमज़ान के दिनो मे करते हैं।

आई न गई, कौन नाते वहिन, (पू० स्त्रि०)
ज़बर्दस्ती रिश्ता निकालना।

आई न गई, कौले लग ग्याभिन भई, (स्त्रि०)
कही आई गई नही, तो क्या कोने से लगकर गर्भवती हुई? जब कोई अपने को बहुत भोलाभाला या

निर्दोष सावित करने की कोशिश करे, तब क०।

आई न गई, छो-छो घर ही मे रही, (मु० स्त्रि०)
जो कभी घर से बाहर न निकली हो, ऐसी स्त्री के प्रति उपेक्षा मे कही गई बात।

आई बहू आया काम, गई बहू गया काम
(१) घर मे जितने आदमी बढते है, उतना ही काम बढ जाता है। (२) बहू आई नही कि काम बढ जाता है, क्योकि घर का छोटा-बडा सब काम उसी के मत्थे मढा जाता है।

आई बात का रखना, कुद जहन होना
(१) मन मे उठे हुए विचार को प्रकट न करना मूर्खता का लक्षण है। (२) सामने आई हुई बात को निपटा देना चाहिए।

आई बात रुकती नहीं
मन मे उठा विचार प्रकट होकर ही रहता है।

आई माई को काजर नहीं, बिलाई को भर माग
मा के लिए काजल नही और बिल्ली के लिए माग भर सेंदुर।
घर के लोगो को छोडकर फालतू आदमियो का सत्कार करना।

आई मौज फकीर की, दिया झोपड़ा फूंक
विरक्त या फक्कड साधु के लिए कहते है कि मन मे आया तो झोपडा फूककर चलता बनता है।

आई है जान के साथ, जाएगी जनाजे के साथ, (मु०)
आदत से मतलब है जो जिन्दगी मे छूटती नही।

आओ जाओ घर तुम्हारा, खाना मागो दुश्मन हमारा
झूठा सत्कार करना।

आओ दुगाना चुटकी खेलें, बैठे से बेगार भली
आओ पडोसी चुटकी बजाए, बैठे रहने से तो बेगार अच्छी।
व्यर्थ मे समय नष्ट करने वाले से व्यग्य मे क०।

आओ पीर, घर का भी ले जाओ
जब कही से कुछ मिलने की आशा हो और वह न मिले, बल्कि गाठ का भी चला जाए, तब क०।

आओ पूत कुलच्छने, घर ही का ले जाव
अपने किसी दुर्व्यसनी पुत्र के प्रति पिता का उद्गार।

आकास बाधे, पाताल बाधे, घर की टट्टी खुली
दुनिया का प्रबंध करते फिरे, पर घर का इन्तजाम न कर सके।

आकिल को एक हर्फ बहुत है
अथवा समझदार थोडे मे बात समझ जाता है।

आकिला पैरवी-ए, नुक्त न कुनंद
पढे-लिखे नुक्तो की परवाह नही करते, वे बिना नुक्तो के भी पढ लेते है (फारसी लिपि मे घसीट लिखते समय नुक्ता लगाना छोड देते है,। फारसी लिपि मे नुक्ता एक खास चीज है।)

आख थू! खट्टे है
प्रयास करने पर जब कोई वस्तु न मिले तो मन को समझाने के लिए उसे बुरा बताने लगना।
(अग्रे०—Grapes are sour=अगूर खट्टे है।)

आखिर अपनी जात पर आ गया
जब कोई छोटा आदमी ऊचे पद पर पहुचकर तुच्छ काम कर बैठता है, तब क०।

आखिर मरोगे, रुपया जोड़-जोड़ क्या करोगे?
पैसे का सदुपयोग करना चाहिए।

आग और पानी को कम न समझे
आग और बाढ के पानी की उपेक्षा नही करनी चाहिए, उनसे सतर्क रहे।

आग और फूस का वैर है, (नी० वा०)
कुसग से बचने के लिए क०।

आग और वैरी को कम न समझो
आग और शत्रु, इनसे सतर्क रहे।

'आग' कहते मुंह नही जलता
किसी वस्तु का नाम लेने मात्र से उसका प्रभाव प्रकट नही हो जाता।

आग का जला आग ही से अच्छा होता है
कभी-कभी जिस वस्तु के सेवन से कष्ट हो, उसी से फिर आराम भी मिलता है।
(सं०—उष्णमुष्णेन शीतल सम. सम शमयति।)

(आग से जलने पर आग से सेंकते हैं, ठडे जल का प्रयोग नही करते।)

आग के आगे सब भस्म है

आग के आगे कोई चीज नही ठहरती। प्रवल के सामने कमजोर भाग जाते हैं।

आग को दामन से ढकना

जानबूझकर ऐसा काम करना, जिसका परिणाम भयकर हो।

(आग को अगरखे के छोर से ढकना वज्रमूर्खता है।)

आग खाएगा सो अंगार हगेगा

बुरे काम का नतीजा बुरा होता है।

आग खाए मुंह जरे, उधार खाए पेट जरे

आग खाने से मुह जलता है, पर उधार खाने से पेट जलता है।

(हमेशा ऋण चुकाने की चिन्ता रहती है, इस कारण कर्ज न ले।)

आग पानी का वैर है

दो विपरीत गुण-धर्मवाली चीज़े एक स्थान पर नही रह सकती।

आग बिन धुआं नहीं

कारण विना कोई कार्य नही होता।

आग मे मूत या मुसलमान हो

दो मे से एक बुरा काम करने के लिए विवश होना पडे, तव क०।

(कहते है मुगलो के जमाने मे हिन्दुओ को ज़बर्दस्ती मुसलमान बनाने के लिए उनसे कहा जाता था, तभी से कहावत चली। फैलन)।

आग लगते झोपड़ा जो निकले सो लाभ

सर्वस्व नष्ट होने मे से जो कुछ बच सके, उसे ही लाभ समझना चाहिए।

आग लगा तमाशा देखना

(१) दो आदमियो मे आपस मे झगडा कराकर अलग हो जाना।

(२) विवाह-शादी या ठाठवाट मे व्यर्थ पैसा खर्च करना।

आग लगा पानी को दौड़ना

दो आदमियो मे झगडा कराकर झूठमूठ मेल की बात करना। कपट का व्यवहार करना।

आग लगे तो घूर बतावे

आग की वजह से धुआ उठ रहा है, पर कहते है कि नही वह धूल है। जानबूझ कर किसी को धोखे मे रखना। अथवा स्वय धोखे मे रहना।

आग लगे पर कुआ खोदना

विपत्ति के विल्कुल सिर पर आ जाने पर उससे बचने का उपाय करना।

आग लगे पै बिल्ली का मूत ढूंढना

किसी विपत्ति के सिर पर आने पर उससे बचने का ऐसा उपाय खोजना, जिससे कोई लाभ ही न हो।

आग लगे मढ़े, वज्र पड़े बारात

मतलब, भाड मे जाए सब चीज़।

मढा = विवाह का मडप।

आग लेने आये थे, क्या आए? क्या चले?

जब कोई थोडी देर के लिए आकर चला जाए, तब क० कि आप आए ही व्यर्थ मे।

आग मीर की दाई, सब सीखी-सिखाई

प्राय वडे आदमियो के चतुर नौकर के लिए क० कि सब सीखे-सिखाए है, वडे होशियार हैं।

आगे आगरा पीछे लाहौर

पहले तो आगरा मिलेगा, वाद मे लाहौर। जो चीज़ आगे आनेवाली है, पहले उसी की चर्चा करनी चाहिए।

आगे कुआं, पीछे खाई

दोनो ओर विपत्ति।

आगे खुदा का नाम

जो कुछ किया जा सकता था सो किया, आगे ईश्वर मालिक है।

आगे चलते हैं पीछे की खबर नहीं

भविष्य की चिन्ता न करना।

आगे जाए घुटने टूटें, पीछे देखें आतें फूटें

साप-छछूदर जैसी गति होना।

आगे दौड़ पीछे चौड़

आगे बढता जाए, पर पीछे की खबर न ले। प्रायः

ऐसे लड़के के लिए प्रयुक्त, जो आगे आ न सका तो जल्दी याद कर ले, पर पीछे का भूला जाए।

आगे नाथ न पीछे पगहा, सबसे भला कुम्हार का गदहा।

ऐसे व्यक्ति के लिए क० जो बिलकुल स्वतंत्र या निश्चिन्त हो, जिसका कोई मित्र या सगा सम्बन्धी न हो, लावारिस।

नाथ = पशुओं की नाक की रस्सी ।

पगहा = पशुओं के पैर बांधने की रस्सी।

आगे पग रखे पत बढ़े, पाछे पग रखे पत जाय

मैदान मे आगे बढ़नेवालो का सम्मान बढ़ता है, पीछे हटनेवाले सम्मान खो बैठते है।

आगे-पीछे सब चल बसेंगे

देर-सबेर सब को जाना है।

आगे रोक, पीछे ठोक, ससुरा सरकै न जाए तो क्या हो ?

आगे रास्ता बद, पीछे डडे पड रहे है, ऐसी हालत मे वह ससुरा (बैल) सड़क पर आगे न बढ़े, तो मै करू क्या ?

मतलब भागने का कोई रास्ता नही।

आगे हाथ, पीछे पात, (स्त्रि०)

इतना गरीब कि तन ढकने को कपडे नही, हाथ और पत्तो की सहायता से अपनी लज्जा दूर कर रहा है।

आछे दिन पाछे गये, हरि से किया न हेत।

अब पछताये होत का, चिड़िया चुग गई खेत।

अच्छा अवसर खोकर बाद मे पछताना व्यर्थ है।

आजकल तो तुम्हारे ही नाम कमान चढी है

अर्थात आजकल तुम्हारा बोलबाला है।

आजकल रोजगार उन्का है

आजकल रोजगार नाममात्र का है।

उन्का = एक कल्पित पक्षी।

आजकल शेर बकरी एक घाट पानी पीते है

खूब अमन-चैन है।

आज का काम कल पर मत रखो

आज का काम आज ही निपटा दो।

आजकल की कन्या अपने मुह से वर मागती है, (हि०)

अर्थात आजकल की लडकिया बडी निर्लज्ज होती जा रही है। स्वय अपने विवाह की बात करती है।

आज किधर का चाँद निकला है ?

आज आप किधर भूल पड़े ?

जब कोई बहुत दिनो बाद नजर आए, तब क०।

आज की आज, आज की बरस दिन मे

आज की बात आज भी निपटाई जा सकती है, और उसमे एक वर्ष भी लगाया जा सकता है। किसी मामले को समय पर तै न करने पर क०।

(उर्दू के दो पुराने और प्रामाणिक कहावत-सग्रहो मे मैने इस कहावत का यही अर्थ पाया कि 'काम जल्द नही हो जाता'।)

आज के थापे आज नही जलते

आज के थापे उपले आज ही नही जलते (उन्हे सूखने मे समय लगता है)।

काम तुरन्त नही हो जाता (उसके लिए तैयारी करनी पड़ती है)।

तुरत का सिखाया आदमी तुरत काम करने योग्य नही बन जाता।

आज के बनिया कल के सेठ

व्यापार मे शीघ्र उन्नति होती है, जिसे आज बनिया कहते है, वह कल सेठ बन जाता है।

आज क्या घोडे बेच के सोए हो ?

जो बेफिक्री की नीद सो रहे हो ।

आज तक पड़े हौग हगते है

(१) आज तक हालत ठीक नही। अस्वस्थ है।

(२) बेकार पडे वक्त खराब करते है।

(३) अपने किए का परिणाम भोग रहे है ।

आज निपूती, कल निपूती, टेसू फूला, सदा निपूती, (स्त्रि०)

गाली देना। किसी निपूती स्त्री को कोसना कि तू हमेशा ऐसी ही रहेगी, टेसू मे फूल आया, पर तेरे पुत्र नही होने का।

टेसू = ढाक का फूल।

आज नहीं कल

टालमटोल करना।

(इसकी एक कथा है—एक मुसलमान प्रतिदिन रात मे एक पेड के नीचे जाकर ईश्वर से प्रार्थना किया

करता था कि 'ऐ खुदा ! मुझे अपनी मुहब्बत मे खेच।' उसकी यह बात किसी मसखरे ने सुन ली और एक रात पेड पर से रस्से का फदा नीचे गिराकर उसे ऊपर खीचना शुरू कर दिया। तब वह ईश्वर का भक्त चिल्लाया—'आज नही कल'।)

आज बसेरवा नियर, कल बसेरवा दूर, (पू०)

आज तो मेरा घर यही है, कल दूसरे देश मे जाकर रहना होगा। मतलब—इस लोक को छोडकर दूसरे लोक मे जाना होगा।

(यह बेटी के बिदा के समय के एक मार्मिक गीत की कडी है।)

आज मुए कल दूसरा दिन।

मरने के बाद सब भूल जाएगे। सब ज्यो के त्यो अपने-अपने काम-धधे मे लग जाएगे।

(इसका एक अन्य रूप है, आज मरे कल पितरो मे। बगला मे है—आज मरले काल दु दिन हवे, परले कुल की सगे जावे।)

आज मेरे मंगनी, कल मेरे ब्याह, परसो लौंडिया को कोई ले जाए

मतलब, किसी प्रकार काम से छुट्टी तो मिले। अथवा कोई आदमी काम से छुट्टी पाने के लिए उतावला हो रहा हो, तो उसके लिए भी क०।

आज मेरे मंगनी, कल मेरे ब्याह, टूट गई टगड़ी रह गया ब्याह

आदमी मन्सूबे बनाता है, पर भविष्य मे क्या होगा, कोई नही जानता।

आज मैं, कल तू

एक न एक दिन सब पर विपत्ति आती है। अथवा सबको एक दिन इस ससार मे जाना है, आज हम तो कल तुम।

आज मैं हूं और वह है

कुछ भी हो, आज उससे निपटकर ही रहूगा।

आज से कल नेरे है

आज के बाद कल ही आएगा। अथवा कल आते क्या देर लगती है?

आज हमारी कल तुम्हारी, देखो लोगो फेरा-फारी

देर-सवेर सबको इस दुनिया से जाना है। आज हमारी बारी है, तो कल तुम्हारी।

आज है सो कल नही

ससार परिवर्तनशील है।

आजादी खुदा की नियामत है

स्वतत्रता ईश्वर का वरदान है।

आजिज़ी सबको प्यारी है

विनम्रता सबको पसद है।

आटा नही तो दलिया तब भी हो जाएगा

(१) गेहू पीसने से आटा न बने, तो दलिया तो बन ही जाएगा।

अधिक नही तो थोडा लाभ हो ही जाएगा। हिम्मत बधाने और काम करने की प्रेरणा देने के लिए क०।

आटा निबड़ा, बूचा सटका

आटा खतम हुआ और कुत्ते ने अपना रास्ता लिया। स्वार्थी और मुफ्तखोर के लिए क०।

बूचा = कनकटे कुत्ते को कहते है।

(कुत्ते का कान फडफडाना अशुभ मानते है, इसलिए कान काट डालते है। कुत्ते के अर्थ मे यह शब्द रूढ हो गया है।)

आटे का चिराग, घर रखू तो चूहा खाय, बाहर रखू तो कौवा ले जाए

ऐसी वस्तु जिसकी रक्षा कठिन हो। अथवा जब सब तरह से मुश्किल हो, तब भी क०।

(देवी की मनौती मानने के लिए स्त्रिया आटे का दीपक बनाती है।)

आटे के साथ घुन भी पिसा

बड़े के साथ रहने से किसी एक मामले मे छोटा भी चक्कर मे आ गया।

धनवान के साथ एक गरीब भी पिस गया।

आटे मे नोन

साधारण मात्रा मे।

आठ कठौती मठा पिये, सोलह मकुनी खाय।
उसके मरे न रोइए, घर का दलिद्दर जाय।
वहुत खानेवाले का मजाक।
मकुनी=एक प्रकार की मोटी रोटी।

आठ गाव का चौधरो, बारह गाव का राव।
अपने काम न आए तो अपनी ऐसी तैसी में जाव।
कोई आदमी अगर आठ गाव का चौधरी या बारह गाव का राजा है, तो बना रहे, वक्त पर हमारे काम न आए, तो उसका वडप्पन हमारे किस काम का ?

आठ जुलाहे नौ हुक्का, जिस पर भी थुक्कम थुक्का।
आठ जुलाहो के पास नौ हुक्के, फिर भी इस बात का झगडा कि आपस मे किस प्रकार दिए जाए कि कोई वाकी न रहे। जुलाहे प्राय. सीधे और मूर्ख माने जाते थे। उसी का एक उदाहरण।
(जुलाहो के बुद्धूपन की अनेक कहानिया प्रसिद्ध है। एक कहानी है कि एक वार दस जुलाहे एक रेगिस्तान पार कर रहे थे। वहा उन्हे मरीचिका दिखाई दी, उसे नदी समझकर उन्होने पार किया। वाद मे यह देखने के लिए कि कोई डूब तो नही गया, अपने को गिनना शुरू किया। हर आदमी गिनते समय अपने को छोड जाता। इस प्रकार जिसने भी गिना उसने अपने दल मे एक आदमी कम पाया। तब सब बैठकर रोने लगे। उसी समय वहा से एक घुडसवार निकला। उसने जब उनका किस्सा सुना, तो एक-एक करके गिनकर बताया कि वे पूरे दस है और उनमे से कोई डूवा नही है। इसी प्रकार की एक दूसरी कहानी है कि घर की मुडेर पर बैठा हुआ एक कौवा एक जुलाहे के लडके के हाथ से रोटी छीन कर ले गया। यह समझकर कि कौवा अवश्य सीढियो के रास्ते नीचे उतरा होगा। उसने पहले सीढिया खोदकर अलग कर दी, वाद मे लडके को और रोटी दी। एक तीसरी कहानी है कि एक जलाहे को किसी ज्योतिषी ने बताया कि उसके भाग्य मे कुल्हाडी से उसकी नाक कटना लिखा है। जुलाहे को इसका विश्वास नही हुआ और यह देखने के लिए कि आखिर कुल्हाडी से नाक कटेगी तो किस प्रकार! उसे लेकर उसने घुमाना शुरू किया। कहता जाता—'यो करब तो गोड कटब, यो करब तो हाथ कटब, और यू करब तो ना-आ. ' और यह कहते-कहते उसकी नाक साफ हो गई।)
तुल०—आठ कनौजिया नौ चूल्हे। इसी भाव की कहावत वगला मे भी है—बार राजपूत तैरो हाडी, केऊ खाय ना कारो वाटी।

आठ वार नौ त्यौहार
हिन्दुओ मे त्यौहार बहुत होते हैं। हर महीने दो-चार व्रत या त्यौहार पड जाते है। उसी पर कहा० कही गई है। हमेशा त्यौहार मनाते रहने के लिए भी कह सकते है।

आठ मिले काठ, तुलसी मिले जाट
आठ तरह के काठ क्या मिल गए, समझ लो जाट मिल गया। जाटो पर फब्ती।
आठ काठ=आठ प्रकार की लकडी। एक मुहा० जिसका अर्थ होता हे बेमेल वस्तुओ का जमघट।

आठो गाठ कुम्भेत
सब तरफ से कुम्मेत। वहुत चालाक और वदमाश। (कुम्भेत दाखी रग के घोडे को कहते है। ऐसा घोडा बहुत तेज और फुर्तीला माना जाता है।)

आठो पहर काल का डका सिर पर बजता है
मौत हर वक्त सिर पर सवार है।

आता तो सब ही भला, थोडा बहुता, कुच्छ।
जाते तो दो ही भले, दालिद्दर और दुःख।
आती सभी वस्तुए अच्छी होती है, थोडी आवे या वहुत, पर दो वस्तुए जाती हुई अच्छी होती है—दरिद्रता और दुख।

आता हो तो उसे हाथ से न दीजे, जाता हो तो उसका गम न कीजे
आती हुई वस्तु को छोडे नही, जाती हुई की चिता न करो।

आती वहू, जन्मता पूत
घर मे वहू का आना, और पुत्र का उत्पन्न होना, ये सब को अच्छे लगते है।

आते आओ, जाते जाओ

जहा लोगो की बहुत भीड इकट्ठा हो रही हो, जैसे दावत या तमाशे मे, वहा क०।

आते का नाम सहजा, जाते का नाम मुक्ता

ससार मे आने का मतलब ही यह है कि हमे दुख सहन करने के लिए तैयार रहना चाहिए, मुक्ति तो यहा से जाने पर ही मिलती है। अथवा दुख आने पर उसे धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिए, जब वह जाए तभी समझो कि छुटकारा मिला।

आते जाते मैना ना फंसी, तू क्यो फंसा रे कौवे

मैना तो जाल मे फसी नही, कौवा फस गया।

मूर्ख की अपेक्षा सयाना आदमी ही अधिक धोखा खाता है।

आत्मा मे पड़े तो परमात्मा की सूझे

पेट भरा होने पर ही कोई काम सूझता है।

आदम आया, दम आया

आदम के साथ सृष्टि का प्रारभ हुआ।

(बाइबिल के अनुसार आदम प्रथम मानव था, जिससे मानव सृष्टि आगे बढ़ी।)

आदमी अनाज का कीड़ा है

आदमी अन्न पर ही जीवित रहता है।

आदमी अपने मतलब मे बंधा है

हर आदमी अपने मतलब की ही बात करता है।

आदमी अशरफ-उल-मखलूकात है

मनुष्य सब प्राणियो मे श्रेष्ठ है।

आदमी आदमी अतर, कोई हीरा कोई कंकर

सब आदमी एक से नही होते। कोई अच्छा होता है, कोई बुरा।

आदमी का शैतान आदमी है

मनुष्य को मनुष्य ही गड्ढे मे गिराता है।

आदमी की क़द्र मरे पर होती है

मृत्यु के बाद ही आदमी की कद्र होती है। त[illegible] याद करते है कि अमुक व्यक्ति ऐसा था।

आदमी की कसौटी मुआमला

काम पडने पर ही मनुष्य की परीक्षा होती है।

आदमी की दवा आदमी

मनुष्य को मनुष्य सुधारता है।

आदमी की पेशानी दिल का आईना है

मनुष्य के हृदय के भाव उसके चेहरे पर दिखाई पड जाते है।

(मन महीप के आचरण, दृग दिमान कह देत।)

आदमी कुछ खोकर ही सीखता है

हानि होने पर ही आदमी को अक्ल आती है।

आदमी को ढाई गज कफन काफी है

मरने पर उसके लिए ढाई गज कफन काफी होता है। वह बेकार ही अपनी जरूरते बढाता रहता है।

आदमी को ढाई गज जमीन काफी है, (मु०)

मरने पर आदमी को कब्र मे दफना दिया जाता है, कोई चीज उसके साथ नही जाती।

आदमी को आदमियत लाजिम है

मनुष्य मे मनुष्यता का होना बहुत आवश्यक है।

आदमी को आदमी से सौ दफा काम पडता है

इसलिए परस्पर हिलमिलकर रहना चाहिए। न जाने कब किससे काम पड़ जाए।

आदमी क्या है, आबनूस का कुंदा है

यानी बहुत मूर्ख है। काले आदमी के लिए भी कह सकते हैं।

(आबनूस काले रग की पहाडी लकडी होती है।)

आदमी क्या है, सराचे का बांस है

बहुत लबे और बेडौल के लिए क०।

आदमी ठोकर खा[illegible]

हानि होने पर [illegible] होश आता [illegible]

आदमी ने आखिर[illegible] [illegible] है

मनुष्य के लिए [illegible] है

उसने मा का [illegible] है!

[illegible] बुद्धि [illegible]

[illegible] क्या [illegible]

पानी [illegible]

का [illegible]

आदमी पेट का कुत्ता है
आदमी पेट का गुलाम है।

आदमी माल की खातिर पहाड़ सिर पर उठाता है
फायदे के लिए आदमी बड़े से बड़ा कष्ट उठाने को तैयार रहता है।

आदमी सा पखेरू कोई नहीं
मनुष्य सब जीवों मे अद्‌भुत है।

आदमी है कि घनचक्कर
फालतू या मूर्ख के लिए क०।

आदमी है या बिजली
बहुत फुर्तीले के लिए क०।

आदमी हो या न्दोल के बूदम
आदमी हो या उल्लू?
(फारसी मे 'बूदम' से दाल अक्षर निकाल लेने पर 'बूम' रह जाता है, जिसका अर्थ उल्लू है।)

आदमी हो या सगे बेनून
फारसी मे सग का अर्थ पत्थर है। उसमे से 'नून' अक्षर निकाल लेने पर 'सग' रह जाता है, जिसका अर्थ 'कुत्ता' है। आपस मे मजाक मे वाक्य का प्रयोग करते क०।

आदर न भाव, झूठे माल खाव
बेमन से खाना-खिलाना। दिखावटी सत्कार करना।

आदर बढल, गजाधर बहू के
जब समाज मे किसी का यकायक सम्मान बढ जाए, तब क०।
गजाधर=किसी का नाम।

आद हिन्दू बाद मुसलमान, (हिं०)
इस देश मे पहले तो हिन्दू ही रहते थे, मुसलमान तो बाद मे आए। हिन्दुओ का महत्व बताने के लिए क०।
(फैलन ने इसका यह अर्थ बताया है कि पहले लोग हिन्दू थे, बाद को उनमे से मुसलमान हो गए।)

आदी के चदन, लिलार चरचराय, (पू०)
अदरक के चदन से माथा तो चरचराएगा ही। बुरे का सग कभी लाभदायक नही होता।

आदी मिरचई का कौन साथ? (पू०)
दोनो के गुण भिन्न होते हैं।

आध सेर के पात्र में कैसे सेर समाय?
(१) किसी मूर्ख या छोटे आदमी मे अधिक योग्यता कहा से आ सकती है?
(२) छोटा आदमी थोडी विद्या-बुद्धि या सपत्ति पाकर ही इतरा उठता है।

आधा आप घर, आधा सब घर
आधा तो स्वय रख लिया और आधे मे से सब घर को दिया। स्वार्थी के लिए क०।

आधा तजे पडित, सर्वस तजे गवार
आधा खर्च करने से अगर आधा बच सकता हो, तो समझदार आदमी वैसा करता है, यानी आधा खर्च कर देता है, लेकिन मूर्ख आदमी पूरा बचाने के लोभ मे सब खो बैठता है।

आधा तीतर, आधा बटेर
बेमेल चीज। खिचडी भाषा।

आधा मियां शेख शरफुद्दीन, आधा सारा गांव
जबर्दस्त का हिस्सा सबसे ज्यादा होता है।

आधी छोड सारी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे
लालच बुरा होता है
पाठा०—आधी छोड सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे।

आधी मुर्गी, आधी बटेर
दे०—आधा तीतर ।

आधी रात को जंभाई आय, शाम से मुंह फैलाय
जमुहाई लेने की कोशिश शाम से शुरू कर दी, पर आई आधी रात को!
किसी काम की अनावश्यक रूप से बहुत पहले से तैयारी शुरू कर देना।

आधी रोटी बस, कायथ है कि पस
किसी कायस्थ सज्जन की कम खाने की आदत पर फब्ती कि बस, बस, इन्हे अधिक मत परोसो, ये कायस्थ है, पशु नही।

(कायस्थ बहुत तकल्लुफ-पसद होते थे।)
आधे असाढ तो वैरी के भी बरसे, (कृ०)
आधे असाढ मे तो वैरी के खेत मे भी पानी बरसे। यानी ईश्वर सबके साथ समान न्याय करता है। अथवा आधे असाढ तो वर्षा अवश्य होती है, यह अर्थ भी हो सकता है।
आधे काजी कुद्दू, आधे बाबा आदम, (मु०)
ऐसे व्यक्ति के लिए क० जिसका बडा परिवार हो।
(किंवदती है कि कुद्दू नाम के एक काजी थे। उनकी औरत के एक साथ २०० बच्चे पैदा हुए। ऐसी दशा मे दुनिया की आबादी मे उनके नाती-पोतो का बहुत बडा हिस्सा तो होना ही चाहिए।)
आधे गाव दिवाली, आधे गाव फाग
मनमानी करना, मिलकर काम न करना।
(दिवाली कार्तिक मे होती है, और फाग फागुन के महीने मे। ये दोनो त्यौहार एक साथ हो नही सकते।)
आधे माघे, कमली कांधे, (ग्रा०)
आधे माघ मे (जाडा कम हो जाने के कारण) कबल को कधे पर रख लेते है।
आन बनी सिर आपने, छोड़ परायी आस
विपत्ति मे कोई सहायक नही होता। स्वय ही भुगतनी पडती है।
आन से मारे, तान से मारे, फिर भी न मरे तो रान से मारे
वेश्या के लिए क०।
आप काज महा काज
अपना काम स्वय ही करने से ठीक होता है। दूसरो पर छोडकर हाथ पर हाथ धरकर न बैठो।
आप की खिजालत मेरे सिर आखो पर
आपके लिए मैं शर्मिन्दा हू। आपने जो किया, उसे मैं भुगतूगा।
खिजालत = शर्मिन्दगी।
आपकी टिक्की यहा नहीं लगने की
आपकी रोटी यहा नही सिकने की।
यानी आपका मतलब यहा हल होने का नही।
आपकी दाल यहा नही गलने की।
आपका पौवा यहा नही लगने का।
आपको फजीहत, गैर को नसीहत
स्वय बुरे काम करके दूसरो को उपदेश देना। (पर उपदेश कुशल बहुतेरे)।
आप खाय, बिलाई बताय
चालाक आदमी या लडका। स्वयं मिठाई-पूडी हडप जाए और दूसरे का नाम ले कि उसने खाया।
आप खुरादी, आप मुरादी
आप ही खानेवाले और आप ही अपनी मुराद पूरी करनेवाले।
स्वय कुछ कर लेना। दूसरो को न पूछना।
आप गये और आसपास
आप बर्बाद हुए, साथियो को भी बर्बाद किया।
आप चले भुइया, शेखी गाडी पर
शेखीबाज के लिए क०।
(पैदल चल रहे है और गाडी होने का दावा करते है।)
आप जिंदा तो जहान जिंदा
अपनी जिंदगी से ही सब कुछ लगा है।
आप डूबा तो जग डूबा
जब हम ही नही है, तो औरो से हमे क्या मतलब? जब हमारी हानि हुई है, तो दूसरो की भी होती रहे, हमे क्या?
आप डूबे बाभना, जिजमाने ले डूबे
आप भी बर्बाद हुए, यार-दोस्तो को भी बर्बाद किया।
(आप मरी तो मरी, मेरे हीरामनऊ ऐ लै मरी। ग्रा०)
आ पडोसिन मुझ-सी हो, (स्त्रि०)
मेरी तरह तू भी राड हो जा! दूसरो का बुरा तकना।
आ पडोसिन लडें, (स्त्रि०)
बेमतलब झगडा करनेवाले के लिए क०।

आप तो गर्म करके शर्बत पिलाते है
गुस्सा उठाकर मीठी-मीठी बाते करते है।

आपत्ति काले मर्यादा नास्ति, (सं०)
विपत्ति के समय धर्म-अधर्म का विचार नही किया जाता।

आपन खेत बंम लोटे, पाही जोते जाइला, (भो०)
अपना खेत तो बिन जुता पडा है, दूसरे गाव का खेत जाकर जोतता है।
अपना काम छोडकर दूसरे का करना।

आपन दे के बुडबक बने के?
ऐसा कौन है, जो अपनी चीज दूसरे को देकर मूर्ख बने? कोई नहीं।

आपन भल होयत तो जगत्तर प्रीत गारी, (भो०)
स्वय भला है, तो ससार मित्र बन जाता है।

आपन मामा मर मर गइलन, जुलहा, धुनिया, मामा भइलन; (भो०)
अपने मामा तो मर गये, कभी उनकी बात नही पूछी, और अब धुनिया जुलाहो को मामा बना लिया।
घरवालो का आदर न करके बाहर के लोगो से संबध जोडना।

आप बीती कहूँ या जग बीती?
मैं अपना दुखडा रोऊ या दूसरो का?

आप भला तो जग भला
(१) भले के लिए सब भले।
(२) भले को सब भले ही दीखते हे।

आप भूले उस्ताद को लगाम
अपनी भूल दूसरे के मत्थे मढना।

आपम धाप कड़ाकड बीते, जो मारे सो जीते
लडाई मे फिर अपनी तरफ से कसर नही छोडनी चाहिए, अपनी चोट करारी पडनी चाहिए। जो आगे बढकर मारता है, वही जीतता है।

आप मरे जग परलौ
हमारे बाद दुनिया मे कुछ भी होता रहे, हमे क्या मतलब? हम नही तो दुनिया भी नही।
(अग्रे०—me the After deluge)

आप मिया सूबेदार घर मे बोवी झोंके भाड़
घर मे खाने को नही, बाहर शान बघारते है।

आप रहें उत्तर, काम करें पच्छम
शऊर से काम न करनेवाले से क०।

आप राह राह, दुम खेत खेत
सिलबिल्ला आदमी।

आप सुने राग से, फकीर सुने भाग से
बडा आदमी पैसा खर्च करके गाना सुनता है, गरीब अपनी किस्मत से मुफ्त मे सुनता हे।

आप से आवे तो आने दे
अपने आप आ रही वस्तु के लिए मना नही करना चाहिए।
(कथा है कि किसी मुसलमान ने पक्षियो का मास न खाने की कसम खा रखी थी। एक दिन उसकी स्त्री ने बहुत-सा घी-मसाला डालकर मुर्गी पकाई। उसके पति को जब यह बात मालूम हुई तो बडा नाराज़ हुआ, किन्तु बाद मे स्त्री के बहुत कहने पर थोडा शोरबा लेने के लिए राजी हो गया। औरत ने सावधानी से बोटियो को अलग करके शोरबा परोसना शुरू किया, लेकिन परोसते समय एक बोटी नीचे गिरने लगी। औरत ने उसे रोकना चाहा। इस पर उसके पति ने कहा—आप से आवे तो आने दो, रोको मत। इसी प्रकार की एक और कथा हे—एक ब्राह्मण देवता सबको बैंगन न खाने का उपदेश दिया करते थे। एक दिन किसी जजमान ने एक टोकरी भर बैंगन लाकर उन्हे भेट किए। उन्होने लेने से इन्कार किया। लेकिन उनकी पत्नी होशियार थी। बोली—जो चीज आपसे आए, उसे स्वीकार लेना चाहिए। इस पर ब्राह्मण देवता मान गए और बैंगन घर मे रख लिए गए।)

आपसे गया तो जहान से गया
(१) जो अपनी नजरो मे गिरा, वह दुनिया की नज़रो मे भी गिरा।
(२) जो अपनी फिक्र नही करता दुनिया भी उसकी फिक्र नही करती।

आपसे भला खुदा से भला

जो अपनी निगाह मे भला है, वह ईश्वर की निगाह मे भी भला है।

आप हर फन मौला है

यानी आप हर काम मे वडे उस्ताद है। प्राय व्यग्य मे क०।

आप हारे, बहू को मारे

जुए मे पैसा हार आए, और आकर औरत को मारते है।

अपना गुस्सा दूसरो पर उतारना।

आप ही अपनी क़ब्र खोदता है

आप अपनी मौत बुलाता है। अपना सर्वनाश करता है।

आप ही की जूतियो का सदका है

यह सव आपकी ही वदौलत है।

(इस पर एक कथा है कि एक वार एक मुसलमान मसखरे ने दोस्तो को सुन्नत की दावत दी। जव सव लोग आकर भीतर वैठे तो उसने नौकर से चुपचाप उन सव के जूते वेच आने के लिए कहा। नौकर ने वैसा ही किया और दाम मालिक को लाकर दे दिए। दोस्तो ने दावत वहुत पसन्द की और कहना शुरू किया—जनाव-मन, आपने वडी तकलीफ की। इस पर मसखरे ने हाथ जोडकर कहा—यह सब आपकी ही जूतियो का सदका यानी प्रताप है। मै भला किस लायक हू।)

आप ही नाक चोटी गिरफ्तार हैं, (स्त्रि०)

खुद ही चक्कर मे पडे है।

आप ही मिया मंगते वाहर खड़े दरवेश

अपनी सहायता कर नही पाते, दूसरो की सहायता क्या करेंगे?

आ फंसे का मामला है

अर्थात अव तो चक्कर मे पड गए है, जो होगा भुगतेंगे।

आफताव पर थूकने से अपने ही मुंह पर पडे

वडो की निंदा से उनका कुछ नही विगडता, स्वय को ही हानि उठानी पडती है।

आब आब कर मर गए, सिरहाने रहा पानी

अकडकर वोलना। शान बघारने के लिए ऐसी भाषा मे वोलना जो दूसरो की समझ मे न आए। (कथा है कि कोई फारसी पढा-लिखा व्यक्ति वीमार पडा और मृत्यु के समय आव-आब चिल्लाता रहा, परतु घरवाले उसकी बोली नही समझ सके और प्यास के मारे उसके प्राण निकल गए। यह पूरी कहा० इस प्रकार है—

कावुल गये मुगल वन आये, वोलन लागे वानी।
आब आब कर मर गए, सिरहाने रहा पानी।)

आ, वडे वाप की बेटी है तो पंजा कर ले

किसी एक स्त्री का दूसरी शेखी मारनेवाली स्त्री से कथन।

पजा करना=उगलियो मे उगलिया फसाकर इस तरह मरोडना कि दूसरा आदमी ची बोल जाए।

आव न दीदह, मोज़ह कशीदह, (फा०)

पानी है नही, पर (भीगने के डर से) मोजा उतार लिया!

अकारण हाय-तोवा मचाना।

आवरू जग मे रहे, तो जान जाना पश्म है

इज्ज़त के सामने जिन्दगी कोई चीज़ नही।

पश्म=वाल, तुच्छ वस्तु।

(इस कहावत मे 'आवरू' और 'जानजाना' इन शब्दो के दोहरे अर्थ है। आवरू और जान जाना नाम के दो शायर लखनऊ मे हो गए हैं। दोनो मे आपस मे वहुत छेडछाड रहती थी। यह शेर आवरू का कहा हुआ है जिसमे जानजाना पर कटाक्ष है। पूरा शेर इस प्रकार है—

जो सती सत पर चढै तो पान खाना रस्म है।
आवरू जग मे रहे तो जान जाना पश्म है।)

आ वला, गले लग

जानवूझकर विपत्ति मोल लेना।

आ वैल, मुझे मार

दे० ऊ०।

आम इमली का साथ है
दो बेमेल व्यक्तियो का साथ। दो चालाको का इकट्ठा होना।
(आम इमली दोनो ही खट्टे होते है।)

आम के आम गुठलियो के दाम
ऐसा सौदा जिसमे सब प्रकार से लाभ हो।

आम खाने या पेड गिनने ?
सीधी काम की बात न करके व्यर्थ का प्रश्न करना।
पाठा०—आम खाने से मतलब या पेड गिनने से ?

आम झड़े पताई, लडका रोवे दाई दाई, (स्त्रि०)
आम के पत्ते झडने की आवाज हो रही है। लडका समझता है आम गिर रहे हैं और रोता है 'मा आम दो।'
अलभ्य वस्तु के लिए हठ।

आमदनी के सिर सेहरा
जिसके पास पैसा है वही वडा आदमी है।
सेहरा=श्रेय दिया जाना।

आमने-सामने घर करूं और बीच करूं मैदान, (स्त्रि०)
निर्लज्ज और उद्धत औरत के लिए क०।

आम फले तो नव चले, अरड फले इतराय
सज्जन ऊचे पद पर पहुचकर विनम्र वनता है, पर नीच इतराने लगता है।

आम वोओ आम खाओ, इमली वोओ इमली खाओ।
जैसा करोगे वैसा पाओगे।

आम मछली का साथ है
अच्छा जोड मिला है।
(कच्चे आमो के साथ प्राय मछली पकाते है।)

आय तो जाय कहां
व्यर्थ किसी एक वात के पीछे पड जाना।
जो वात होनी है वह होकर रहेगी, यह अर्थ भी हो सकता है।

आया कर, तू जाया कर, टट्टी मत खडकाया कर
यानी व्यर्थ तग मत किया करो। किसी के प्रति उपेक्षा के रूप मे कहना।

आया रा चेह बया, (फा०)
प्रत्यक्ष का क्या वर्णन करना ?
(हाथ कगन को आरसी क्या ?)

आया कातिक, उठी कुतिया
निर्लज्ज स्त्री के लिए क०।

आया कुत्ता ले गया, तू बैठी ढोल बजा।
अपनी धुन मे इतना मस्त हो जाना कि दूसरी ओर क्या हो रहा है, इसका पता न लगना।
(कथा है कि एक मिरासिन किसी दावत मे गई। वहा ढोल वजाने मे इतना तन्मय हो गई कि उसके सामने की पत्तल कुत्ता उठा ले गया और उसे इस वात का पता ही न चला। अमीर खुसरो की इस पर एक तुकवदी है। कहते है कि एक वार खुसरो प्यासे एक कुए पर गए। वहा चार औरते पानी भर रही थी। उनमे से एक उन्हे पहचान कर वोली—आप हमारी चीजो पर कुछ शायरी कर दे, तो पानी पिलाए। खुसरो ने मज़ूर कर लिया। तव एक वोली—आज मेरे घर खीर पकी है, इस पर कुछ कहिए। दूसरी वोली—मेरे चरखे पर कुछ कहिए। तीसरी वोली—सामने खड़े कुत्ते पर कुछ कहिए। चौथी ने आग्रह किया—मेरे ढोल पर कुछ कहिए। खुसरो वहुत प्यासे थे। एक साथ चारो की इच्छा पूरी करते हुए वोले—
खीर पकाई जतन से, चरखा दिया जला।
कुत्ता आया खा गया, तू वैठी ढोल वजा।
इस पर सव वहुत खुश हुई और खुसरो को पानी पिला दिया।)

आया तो नोश, नही फरामोश
मिला तो खा लिया, अन्यथा परवाह नही।

आया बंदा आई रोज़ी, गया बदा गई रोज़ी, (मु०)
दुनिया मे आदमी से ही सव काम लगा है।

आया रमज़ान, भागा शैतान, (मु०)
अच्छे के सामने वुरा नही ठहरता।
(रमज़ान के महीने मे मुसलमान रोज़ा रखते है और उसे एक पवित्र महीना मानते हैं।)

आया राजा पोह, जाड़े को चढा छोह
पूस आने पर जाडा अपना जोर दिखाता है।
छोह=क्रोध।

आये आम, जाये लबेड़ा

डडा भले ही चला जाए पर आम तो आए।

(कुछ पाने के लिए खोना भी पडता है। लबेडा या लभेडा एक फल भी होता है, जिसका अचार वनता है। तव यह अर्थ हो सकता है कि भले ही एक सामान्य वस्तु हाथ से चली जाए, पर अच्छी वस्तु तो मिले।)

आये कनागत फले कांस, बामन उछलें नौ-नौ बांस, (हिं०)

कनागत अर्थात पितृपक्ष के दिनो मे ब्राह्मणो को वहुत निमत्रण मिलते हैं, इसलिए वे बहुत प्रसन्न रहते है। लोलुप ब्राह्मणो के लिए क०।

निमत्रण=न्यौता।

आये की शादी, न गये का ग़म

सदैव प्रसन्न रहना।

गम=रज।

आयेगा कुत्ता तो पायेगा टिक्का, (स्त्रि०)

मेहनत से ही खाने को मिलता है।

आये चैत सुहावन, फहड़ मैल छुडावन, (स्त्रि०)

ऐसी सुस्त और गदी औरत, जो जाडो मे सर्दी के भय से नहाती नही और जिसका मैल गर्मियो मे पसीना आने पर ही छूटता है। अथवा जो गर्मी आने पर ही नहाती है।

(सामान्य रूप से ऐसे आदमी के लिए कहावत का प्रयोग होता है, जो कभी-कभी सफाई कर लिया करता है, अन्यथा गदा रहता है।)

आये थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास

आये थे किसी काम को, करने लगे कुछ और।

आये मीर, भागे पीर

मीर के आने पर पीर भाग जाते हैं। वड़े हुनरमद के सामने छोटे की दाल नही गलती।

(इसकी कथा है कि अमरोहे मे शेख सद्दू या मीराजी नामक एक व्यक्ति रहता था। वह विल्कुल अशिक्षित था, फिर भी अपने को इल्मे तसखीर या ज्योतिप मे निपुण वताता था। एक दिन खेत मे उसे एक दीपक मिला, जिसमे एक साथ चार वत्तिया जलती थी। उसे घर ले जाकर उसने जलाया, तो उसके सामने चार जिन्न आकर खड़े हो गए। उन्हे देखकर वह भयभीत हो गया और दीपक को बुझाने की कोशिश करने लगा। लेकिन जिन्न नही टले। बोले—हमे कुछ काम बताओ। शेख बदचलन था। उसने जिन्नो से एक खूबसूरत औरत लाने को कहा। जिन्नो ने तुरत वैसा कर दिया। किन्तु उस औरत के साथ शेख ने जब दुराचार करना चाहा तो जिन्नो ने बताया कि वे तभी तक उसकी वात मानेंगे जब तक वह सही रास्ते पर रहेगा। पर वह उस सुन्दरी को बार-बार बुलाता रहा। अन्त मे वह बेकाबू हो सुन्दरी की तरफ बढा। तब जिन्नो ने उसे मार डाला। मरकर वह बडा पीर हुआ और लोगो के सिर आने लगा। और भी वहुत से पीर हुए हैं। लेकिन जहा शेख सद्दू पहुचता है, वहा दूसरे पीर नही ठहर पाते। इस शेख सद्दू की अब भी अमरोहे मे दरगाह बनी है और लोग वहा ज़ियारत करने जाते हैं।)

आरज़ू ऐब है

लालसा बुरी वस्तु है।

आरसी मे मुंह देखो

डीग हाकनेवाले या अनुचित माग करनेवाले से कहते है कि ज़रा शीशे मे अपना मुह भी तो देखो, तुम इस योग्य हो भी कि नही।

आ लगा मुरमुरेवाला

बातूनी आदमी के लिए कहते हैं कि वह फिर आ गया वकवास करने।

(चने बेचनेवाले 'मुरमुरे चने' की आवाज सड़को पर लगाया करते है। उसी से कहा० बनी।)

आलमगीर सानी, चूल्हे आग न घडे पानी

मुगल बादशाह आलमगीर द्वितीय (ई०१७५४-५९) का शासन प्रबंध अच्छा नही बताया जाता। उसके समय मे प्रजा को बडा कष्ट था। उसी से मतलब है।

आलस, निद्रा और जंभाई, ये तीनों हैं काल के भाई

बहुत आलस्य करना, सोना और जमुहाना, ये तीनो स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होते।

आलसी सदा रोगी
आलसी हमेशा बीमार रहता है।

आला, दे निवाला, (स्त्रि०)
ऐ ताक! तू मुझे रोटी का टुकड़ा दे।
(कथा है कि एक राजा ने किसी भिखारिन की खूबसूरत लडकी पर लट्टू होकर उससे शादी कर ली। पर महलो मे आकर भी उस लडकी की भीख मागने की आदत नही छूटी और वह अपने कमरे के ताको मे रोटी रखकर भीख मागा करती। उससे कहावत का आशय यह है कि बचपन की कोई पुरानी आदत मुश्किल से छूटती है।)

आलिम वह क्या, अमल न हो जिसका किताब पर
वह पढा-लिखा ही क्या, जो सद्ग्रन्थो का उपदेश न माने।
आलिम=विद्वान।

आला हिम्मत सदा मुफलिस
हिम्मतवाला हमेशा गरीब रहता है, क्योकि मौके पर वह अपना सर्वस्व दाव पर लगा देता है।
(फैलन के अनुसार कहावत सट्टेबाजो के लिए प्रयुक्त होती है।)

आवत हा-ही, जावत संतोख
धन और सतान के लिए कहा गया है। आने पर प्रसन्नता होती है, जाने पर सतोप से काम लेना पड़ता है।

आवे न जावे, बृहस्पति कहावे
आता-जाता कुछ नही, फिर भी अपने को पडित कहते हैं। दमी पुरुप।
(बृहस्पति देवताओ के गुरु थे।)

आशनाई करना आसान, निभाना मुश्किल
प्रेम करना आसान है, पर निभाना कठिन है।

आशिक अंधा होता है
प्रेम मे मनुष्य को भला-बुरा कुछ नही सूझता।

आशिक की आबरू है गाली और मार खाना
आशिक पिटने और गाली खाने मे ही अपनी इज्जत समझता है। अथवा आशिक पिटने और गाली खाने के लिए ही बना होता है।

आशिक़ को खुदा जर दे, नहीं तो कर दे जमीं के परदे
ईश्वर प्रेमी को या तो बहुत-सा पैसा खर्च के लिए दे या फिर उसे मार ही डाले।

आशिक़ी और खाला जी का घर!
सोने मे सुगध! खाला यानी मौसी के घर जाने मे किसी प्रकार की रोक-टोक नही, किसी भी लडकी से वहा खुलकर प्रेम किया जा सकता है।
(मुसलमानो मे मामा-फूफा की लडकी से विवाह करने का रिवाज है।)

आशिक़ी और मामा जी का डर!
जब इश्क किया तो मामाजी का क्या डर? कोई और हो तो चिन्ता भी की जाए।

आशिकी खाला जी का घर नहीं
अर्थात वह आसान काम नही।

आशिक़ी न कीजिए तो क्या घास खोदिए
किसी मनचले आशिक का कहना कि दुनिया मे आकर इश्क के फदे मे न फसा जाए तो आखिर किया क्या जाए?

आश्ती! और जान जी का डर!
आश्ती होकर मरने का डर। अर्थात काम का बीडा उठाया और अब पिछड रहे हो।
(आश्ती उसे कहते है जो मुश्किल से मुश्किल काम करने को तैयार हो।)

आसक्ती गिरा कुएं मे, कहा, अभी कौन उठे
किसी घोर आलसी के लिए क०।
आसक्ती=अशक्त, आलसी।

आसक्ती गिरा कुएं मे, कहा, यहां ही भले
दे० ऊ०।

आस बिरानी जो तके, वह जीवित ही मर जाय
दूसरो के आश्रित रहने की अपेक्षा तो मर जाना अच्छा।

आस बुढ़ापा आइयां, हुआ सूत-कुसूत।
या हो पैसा गाठ का, या हो पूत सपूत।
बुढापे मे या तो पास पैसा हो, या सेवापरायण सुयोग्य पुत्र।

सूत कुसूत होना = मु०, वना वनाया काम विगडना।

आसमान का थूका मुंह पर आता है

वडो की निंदा करने से स्वयं अपनी हानि होती है।

आसमान ने डाला, धरती ने झेला

ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई खोज-खवर लेनेवाला न हो। निराश्रित।

आसमान के फटे को कहा तक थेगली लगे

थोडा विगडा काम सुधारा जा सकता है, पर वहुत विगडा कहा तक समाला जाए।

थेगली = फटे हुए कपडे का छेद वद करने के लिए लगाया जानेवाला टुकडा। पैंवद।

आसमान मे थेगली लगाती है

बड़ी चालाक है।

आसमान से गिरा, खजूर में अटका

(१) किसी काम का पूरा होते-होते रह जाना। (२) मुश्किल से मुश्किल काम तो कर लेना, पर वाद मे किसी मामूली काम से घवरा जाना। प्राय तव कहते है, जव किसी के पास से किसी को कुछ मिल रहा हो और दूसरे लोग वीच मे उसे दवा ले।

आस्तीन का साप

ऐसा व्यक्ति जो मित्र वनकर धोखा दे।

आस्तीन मे सांप पाला है

जानवूझकर ऐसे व्यक्ति को आश्रय देना, जो वाद मे शत्रु साबित हो।

आह-ए-मरदां, न ऊह-ए-ज़नां, (फा०)

न मर्दों जैसे 'आह', न औरतो जैसी 'ऊह।'

वेहद डरपोक।

आहार चूके वह गये, व्यवहार चूके वह गये। दरवार चूके वह गये, ससुरार चूके वह गये।

भोजन मे, लेन देन मे, राजदरवार मे और ससुराल मे सकोच करनेवाला व्यक्ति टोटे मे रहता है।

आहारे व्यवहारे, लज्जा न कारे

भोजन और लेनदेन मे सकोच नही करना चाहिए।

इंचा-खिचा वह फिरे, जो पराये बीच मे पडे

दूसरे के झगडे मे पडने से हमेशा परेशानी उठानी पड़ती है।

इंदर राजा गरजा, म्हारा जिया लरजा, (मार०)

वादल गरजे और गल्ले का व्यापारी घवराया, (कि वर्षा होने से खरीद कर रक्खे हुए गल्ले को मनमाने भाव नही वेच सकेगा।)

म्हारा = मेरा।

इकरारे जुर्म, इसलाहे जुर्म, (फा०)

अपराध का स्वीकार कर लेना ही उसका माफ हो जाना है।

इकलख पूत सवालख नाती, उस रावन के दीया न वाती

रावण का इतना वडा परिवार होने पर भी उसके मरते समय कोई नही वचा था। (भाव यह है कि वडे परिवार का गर्व नही करना चाहिए।)

इक्का, वकील, गधा; पटना शहर मे सदा, (पू०)

पटना मे इक्का, वकील और गधा इन तीन की अधिकता है।

इक्के चढ़के जहां जाय, पैसे दैके धक्के खाय

इक्के की सवारी मे वडे हिचकोले लगते हैं। एक मुसीवत की चीज है।

इजारा उजाडा

जमीदार की जमीन जोत पर लेने से किसान वर्वाद हो जाता है।

(यह ज़मीदारी-प्रथा के जमाने की वात है। स०)

इज्जत की आधी भली, वेइज्ज़त की सारी बुरी

सम्मान के साथ दी गई वस्तु थोडी भी अच्छी होती है।

इज्ज़त के आगे माल क्या चीज़ है?

प्रतिष्ठा के सामने धन कोई वस्तु नही।

इज्ज़तवाले की कमवख्ती है

क्योकि उसे तरह-तरह के ख़र्चे या झझटे लगी रहती हैं।

इतना खाए जितना पचे

(१) आहार मे सयम वर्तना चाहिए।

(२) रिश्वतखोरो के लिए भी क०।

इतना झूठ बोलो जितना आटे मे नमक

बोलना ही पडे, तो झूठ उतना ही बोले जितना खप सके।

इतना नफा खाओ जितना आटे मे नोन, (व्य०)

अधिक मुनाफा खाना ठीक नही।

इतना पक्का कि बासी टिक्का

इतना भोजन बना कि बासी बच रहा।

टिक्का = मोटी रोटी।

इतनी तो राई होगी जो रायते मे पडे

इतना साधन तो है कि हमारा काम चल जाए।

इतनी भी अक्ल अजीरन होती है!

क्या इतनी थोडी अक्ल से ही तुम्हारा पेट फूलने लगता है?

अर्थात तुम मे तो थोडी भी सहज बुद्धि नही।

इतनी सी जान, गज भर की जबान!

जीभ के बातूनीपन की ओर सकेत है। जब कोई लडका बडो के सामने बढ-चढकर बातें करता है, प्रायः तब क०।

इतने की तो कमाई नहीं, जितने का लंहगा फट गया, (स्त्रि०)

किसी काम मे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होना।

कोई दुश्चरित्र स्त्री कह रही है।

इत्तफाक बड़ी चीज है

एका बडी चीज है, उससे सब काम बनते है।

इत्तफाक मे ही कुव्वत है

एका मे ही बल है।

इधर काटा उधर पलट गया

दगाबाज के लिए कहते है।

(साप के विषय मे कहा जाता है कि वह काटते ही पलट जाता है, तभी उसका विष चढता है।)

इधर किबला कुतुब, उधर खदीजा, मूतूं किधर?

इधर मक्का, उधर खदीजा की कब्र, मैं पेशाब करू तो किधर?

दोनो ओर सकट।

(खदीजा मुहम्मद साहब की पत्नी का नाम था। उनकी जिस तरफ कब्र है, उस ओर और मक्का की ओर भी मुह करके मुसलमान पेशाब नही करते।)

इधर गिरूं तो कुआं, उधर गिरू तो खाई

(१) बचने की कोई सूरत नजर न आना।

(२) गहरे असमजस मे पडना।

इधर न उधर, यह बला किधर

यकायक किसी नई विपत्ति के आने पर।

इनकी नाक पर गुस्सा रखा ही रहता है

जरा-जरा-सी बात पर नाराज होते है।

इनके चाटे रूख नहीं जमते

अर्थात बहुत ही धूर्त्त है।

(टिड्डियो के आक्रमण से पेड नष्ट हो जाते है। उसी से मुहावरा लिया गया है।)

इनके यहा तो चमड़े का जहाज चलता है

वेश्याओ के लिए क०।

इनको तो पत्थर मारे मौत नहीं

अर्थात बडे निर्लज्ज है।

इनको भी लिखो

जब किसी विषय मे औरो की तरह कोई स्वय भी मूर्खता प्रकट करे, तब हँसी मे क०।

(इस पर कथा है कि एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि ससार मे अधो की सख्या अधिक है या आखवालो की। बीरबल ने जवाब दिया—जहापनाह, अधो की सख्या अधिक है। बादशाह ने कहा—साबित करो, कैसे? बीरबल तब एक मुशी को साथ लेकर निकले और एक जगह सडक पर ककड चुनने लगे। जो आदमी वहा से निकलता, वही पूछता—'आप यह क्या कर रहे हैं?' इस पर बीरबल हरेक के लिए अपने मुशी से कहते जाते, अच्छा इनका भी लिखो, यानी इनका भी नाम अधो मे लिखो। इसलिए कि ये देख रहे

है कि हम क्या कर रहे हैं। फिर भी हमसे सवाल करते है। बीरबल ने जब बादशाह को वह सूची दिखाई, तो उनकी समझदारी पर वह बडा खुश हुआ।)

इन तिलो मे तेल नहीं

अर्थात यहा से कुछ पाने की आशा मत रखो। बहुत धूर्त या कजूस के लिए क०।

इन बेचारो ने हीग कहां पाई जो बगल मे लगाई

जब कोई सीधा-सादा गरीब आदमी बदमाशो के चक्कर मे पडकर कोई जघन्य अपराध कर बैठे, तब क०।

(हीग की तेज गध बहुतो को पसद नही होती, कोई शरीर मे लगाना पसद नही करता।)

इन्शाअल्लाताला, बिल्ली का मुंह काला

प्राय मजाक मे उस समय क०, जब किसी के मुह से कोई बहुत भोडी या हास्यजनक बात निकल जाए।

इन्शाअल्लाताला = ईश्वर ने चाहा तो।

इन्सान पानी का बुलबुला है

मानव-शरीर क्षणभगुर है।

इन्सान मे क्या रखा है?

मर जाने पर उसे कोई नही पूछता। अथवा बडी आसानी से चल बसता हे।

इन्सान ही तो है

इस कारण उससे भूल होना स्वाभाविक है।

इनायते शाही किसी की मीरास नहीं

बादशाह की मेहरबानी किसी की बपौती नहीं, यानी वह किसी पर भी खुश हो सकता हे।

इब्तिदा से इन्तहा तक

आदि से अत तक।

इब्तिदाये इश्क है, रोता है क्या?
आगे आगे देखिए, होता है क्या?

किसी काम को शुरू करके जब कोई उसकी कठिनाइयो को देखकर झीकने लगे, तब क०।

इब्तिदा = प्रारभ।

इराकी पर जोर न चला, गधी के कान उमेठे

जबर्दस्त से वश न चलने पर कमजोर पर गुस्सा।

इराकी = घोडे की एक नस्ल, इराक देश का घोडा।

इल्म का पढना लोहे के चने चबाना है

विद्या सीखना एक बहुत कठिन काम है।

इल्म दर सीना, न दर सफीना, (फा०)

ज्ञान तो मनुष्य के हृदय मे रहता हे, किताबो मे नही।

इल्लत जाये धोये-धाये, आदत कहा जाये?

गदगी तो धोने से छूट सकती है, पर बुरी आदत नही छूटती।

इश्क़ के कूचे मे आशिक की हजामत होती है

इश्क मे आदमी बर्बाद हो जाता है।

इश्क़ छिपाने से नहीं छिपता

प्रेम को छिपाया नही जा सकता।

इश्क़, मुश्क़, खांसी खुश्क, खून-खराबा छुपता नहीं

प्रेम, कस्तूरी की गध, सूखी खासी और खून ये छिपते नही।

पाठा०—इश्क, मुश्क, खासी, खुशी . ।

इश्क़ मे आदमी के टाके उखड़ते हैं

यानी इतने कष्ट भोगने पडते है कि अक्ल दुरुस्त हो जाती है।

इश्क मे शाह और गदा बराबर

प्रेम के मामले मे राजा और रक सब बराबर।

इश्क या करे अमीर या करे फकीर

अमीर इसलिए कि उसके पास खर्च करने को पैसा होता है, फकीर इसलिए कि उसे किसी बात का भय नही होता।

इश्के मजाजी से इश्क़े हकीकी हासिल होता है

मानवीय प्रेम से ईश्वरीय प्रेम प्राप्त होता है।

इसका दुख दिखावे मुख

चेहरे से इसका दुख प्रकट हो रहा है।

इस कान सुनी, उस कान निकाल दी

किसी की बात पर ध्यान न देना।

इसके पेट मे दाढी है

कम उम्र का होकर भी बडा सयाना है।

इस घर का बाबा आदम ही निराला है
इस घर की सब बातें ही अनोखी है।
इस तरह कांपता है, जैसे कसाई से गाय
बुरी तरह भयभीत है।
इसमे भी कुछ भेद है
अवश्य इसमे कुछ रहस्य है।
इस हाथ लेना, उस हाथ देना, (व्य०)
नकद सौदा। किसी काम का तुरत फल मिलना।
इस्सर आए, दलिद्दर जाए
ऐश्वर्य आए और दरिद्रता भाग जाए। कामना। (दीपावली की रात को आले-कोने साफ करती हुई हिन्दू स्त्रिया उक्त वाक्य कहती हैं।)
इस्सर से भेंटा नहीं, दलिद्दर से बिगाड़
जानबूझकर हानि का काम करना।

ई

ईंट का घर मिट्टी कर दया, (स्त्रि०)
बना-बनाया काम बिगाड़ दिया।
ईंट का घर, मिट्टी का दर
बेतुका या बदनुमा काम।
दर=दरवाजा।
ईंट की देवी, झामे का परसाद
जैसी देवी वैसी पूजा। जैसे के साथ तैसा व्यवहार।
झामा=ईंटो का रोडा।
ईंट की पांत, दम मदार
जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर काम करने को तैयार हो, तब उसमे व्यग्य मे क० कि हा, बस मदार साहब की ताकत से ईंटो की कतार मे कोई करामात पैदा होनेवाली है।
(कहा जाता है कि मकनपुर मे शेख बदरुद्दीन उर्फ मदार साहब की कब्र पर एक पत्थर अधर मे लटक रहा है।)
ईंट की लेनी, पत्थर की देनी
ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाता है।

ईंट से ईंट बज गई
घमासान लडाई छिड गई।
ईतर के घर तीतर, बाहर बाधूं कि भीतर
किसी के घर जब कोई नई वस्तु आए और वह उसे सबको दिखाता फिरे, तब क०।
ईतर=इतर, क्षुद्र।
ईतर के घर तीतर, घडी बाहर घड़ी भीतर
दे० ऊ०।
ईद के चाद हो गए
अर्थात तुम्हारे तो दर्शन ही नही होते।
(मुसलमानो मे रमज़ान महीने के समाप्त होने पर उत्सुकतापूर्वक चाद देखते है, पर वह बहुत कम दिखाई देता है। चाद देखना सब चाहते है, पर उसके दर्शन विरल होते है।)
ईद पीछे चाद मुबारक
शुभ अवसर के बाद बधाई। बे-मौके का काम।
ईद पीछे टर
ईद के बाद खुशिया मनाना व्यर्थ है।
काम तो मौके पर ही करना चाहिए।
(कई जगह ईद के दूसरे दिन एक मेला लगता है, जो टर का मेला कहलाता है। फैलन ने भी अपने अग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश मे टर का अर्थ दिया है, ईद के बाद का।)
ईद पीछे टर, बरात पीछे धौंसा
ईद के बाद खुशिया मनाना और बरात के बाद बाजा बजाना दोनो ही व्यर्थ है।
ईद, बकरीद, शबरात कुटनी, दाहा करे हाय, हाय, फगुआ बिसनी
ईद, बकरीद और शबरात मे कुटनी बुलाते हे। घर मे किसी की मौत होने पर हाय-हाय करते है और होली पर रडिया नचाते हैं।
(मुसलमानो पर कटाक्ष।)
ईसा बदीने खुद, मूसा बदीने खुद, (फा०)
ईसा अपने धर्म पर चले, मूसा अपने धर्म पर। अपना धर्म ही सबसे श्रेष्ठ होता है।

उतको भूल न जा रे भाई, जित होती हो मार-पिटाई

लड़ाई-झगडे के स्थान पर भूलकर भी न जाए।

उत तू बुवा बाजरा भाई, जित होवे थल की मुकताई।

खूब जुती हुई भुरभुरी जमीन मे ही बाजरा बोना चाहिए।

मुकताई=मुकतास, खुलाव। (मुक्त से शब्द बना है।)

उत तेरा जाना मूल न सोहे, जो ताने देखत कूकर होवे

ऐसी जगह कभी नही जाना चाहिए, जहां लोग तुम्हे देखते ही कुत्ते की तरह काटने दौडे।

ताने = तुझे।

उत तेरा जाना निपट भलेरा, जित होवे तेरे मित का डेरा

जहा मित्र हो, वही जाना चाहिए।

उत दाता देवे उसे, जो ले दाता नाम।

इत भी सगरे ठीक हो, उसके करतब काम।

भगवान का नाम लेने से परलोक मे भी लाभ होता है और इस लोक मे भी।

उत भी तुम मत बैठो प्यारे, जित बैठे हो वैरी सारे

जहां तुम्हारे शत्रु बैठे हो, वहा नही जाना चाहिए।

उत मत कभी तू जा रे मीता, जित रहता हो सिंह औ चीता

जहा शेर और चीतो का वास हो, वहा कभी न जाना चाहिए।

उत मत कभी न बैठ तू, जित कुन्यायी लोग।

न्याव भूल कुन्याव का, बांधे मिलकर जोग।

जहा न्याय की जगह अन्याय हो रहा हो, वहा कभी न जाए।

उत मत गेहूं बुवा रे चेले, जित हो थल पाथर औ ढेले

जिस जमीन मे पत्थर और ढेले हो, वहा गेहू नही बोना चाहिए।

उत मत रो अपना दुख जाकर, जित आवें वैरी उमड़ाकर

ऐसी जगह, जहा शत्रु वैठे हो, जाकर अपना दुखडा नही रोना चाहिए।

उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई?

जिसकी इज्जत चली गई, उसे फिर किस बात का डर? निर्लज्ज के लिए क०।

लोई=ऊनी चादर।

लोई उतर जाना=मु० नगे हो जाना, इज्जत चली जाना।

उतरा कबीर सराय मे, गठकतरे के पास।

जस करसी तस पावसी तू, क्यों भयो उदास।

गठकतरे से भेट होने पर अगर वह जेब काट ले, तो इसमे उदास होने की क्या बात? जो जैसा करेगा, वैसा फल पाएगा।

उतरा घाटी हुआ माटी

गले के नीचे उतरकर अन्न मिट्टी हो जाता है। (मृत शरीर के लिए भी कह सकते है। श्मशान मे जाकर मिट्टी हो जाता है।)

उतरा छितरा जो हुआ, वाकी सार न होय।

साथ कहे रे बालके, लाख जतन कर लेय।

एक बार जिसकी प्रतिष्ठा चली जाती है, वह फिर नही सभलता, चाहे लाख प्रयत्न करो।

उतरा शहना, मर्दक नाम

पद से अलग हुआ कोतवाल नामर्द कहलाने लगता है।

पद से ही आदमी की प्रतिष्ठा होती है।

उतरे जी से चीज जो, वाको सार न होय।

तू ऐसा मत कीजियो, जगत विसारे तोय।

मन से उतरी चीज़ का फिर कोई मूल्य नही रहता। इसलिए तुम्हे कोई ऐसा काम नही करना चाहिए कि लोग तुम्हे भूल जाए, अर्थात तुम उनके मन से उतर जाओ।

उत से अधा आय है, इत से अधा जाय।

अधे से अंधा मिला, कौन बतावे राय।

जहा दो मूर्ख मिल जाए, वहा कौन किसे समझाए?

उत ही भला है बैठना, जित करके शुभ ज्ञान।

मुल्ला पण्डित बैठ कर, बाचे वेद पुरान।

जहा ज्ञान की बाते हो रही हो और वेद-पुराणो का पाठ हो, वही बैठना चाहिए।

उतावला सो बावला, धीरा सो गभीरा

उतावला पागल होता है। धैर्यवाला पुरुष ही गभीर कहलाता है

उती के निन्नानवे, बारह पंजे साठ
मूर्ख के लेखे निन्नानवे और साठ बराबर होते है।

उत्तम खेती मद्धम बान, निखद सेवा भीख निदान
खेती करना सबसे उत्तम है, फिर व्यापार; नौकरी बुरी चीज है और भीख मागना तो सब से बुरा है। निखद = निकृष्ट।
(मराठी मे इसका एक रोचक रूप सुनने को मिलता है—उत्तम शेती मध्यम व्यापार, कनिष्ट चाकरी; निदान भीक, न मिळे भीक तर वैद्यगिरी शीक।)

उत्तम गाना, मध्यम बजाना।
कठ सगीत सब से श्रेष्ठ, उसके बाद वाद्य।

उत्तम से उत्तम मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।
जो जैसा होता है, वह वैसे की सगत करता है।

उत्तर की ही स्त्री, दक्खिन ब्याही जाय।
भाग लगावें जोग जब, कुछ ना पार बसाय।
कोई उत्तर की स्त्री दूर देश दक्षिण मे व्याही जाए, तो इसके लिए कोई क्या कर सकता है? यह सब तो भाग्य की बात है।

उत्तर गुरु, दखन मां चेला, कैसे विद्या पढे अकेला?
गुरु कही हो और चेला कही हो, तो फिर पढाई तो हो चुकी।

उत्तर जाव कि दक्खन, वही करम के लक्खन
निकम्मे आदमी की अकर्मण्यता दूर नही होती, वह कही भी जाए।
(प्र० पा०—जाव पूत दक्खन ..।)

उत्तर रहे बतावे दक्खन, वाके आहे नाहीं लक्खन।
जो कहे कुछ और करे कुछ, ऐसे आदमी से सतर्क रहना चाहिए।

उत्तरा हार जो बरसा होवे, काल पिछोकर जाकर रोवे
उत्तरा नक्षत्र मे वर्षा होने से काल पिछवाडे बैठकर रोता है, अर्थात फसल अच्छी होती है।
(उत्तरा नक्षत्र भाद्र मास के अत मे लगता है। इन दिनो की वर्षा गेहू की फसल के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है। फैलन ने यह कहावत गलत लिखी है। उत्तरा की जगह 'उत्तर' लिखा है। और उसका अर्थ 'नार्थ' किया है। हिन्दी के कुछ कहावत सग्रहो मे उसका अधानुकरण कर दिया गया है। इसी प्रकार की एक और कहावत है—'बरस लगी ऊतरा, गेहू न खाये कूतरा'।)

उथली रकाबी, फुलफुला भात, लो पंचो हाथ ही हाथ
खिलाने-पिलाने मे जब कोई कजूसी करे, तब उसके प्रति व्यग्य मे क०।
(किसी कजूस ने विवाह के अवसर पर उथली थालियो मे फूला-फूला भात परोसा। वह इतना कम था कि लोगो का उससे पेट ही नही भरा।)

उद्यम से दलिद्दर घटे
परिश्रम या काम-धधे से दरिद्रता दूर होती है।

उधार का खाया कोई नहीं भूलता
उधार लिया सबको याद रहता है।

उधार खाना और फूस का तापना बराबर है
फूस की आग से जैसे बहुत देर तक नही तापा जा सकता, वैसे ही उधार के पैसे से भी अधिक दिनो काम नही चलाया जा सकता।

उधार खाए बैठे है
किसी काम को करने के लिए तुले बैठे है।

उधार दिया, गाहक खोया, (व्य०)
क्योकि पैसा मागने से वह नाराज होता है या फिर दुबारा आता नही।

उधार दिया गाहक खोया, सदका दिया रद बला, (व्य०)
उधार देने से गाहक हाथ से जाता है, दान देने से पुण्य होता है।
(मतलब, उधार की अपेक्षा किसी को मुफ्त मे चीज देना अच्छा।)

उधार दीजे, दुश्मन कीजे, (व्य०)
पैसा उधार देना जान बूझकर लोगो को अपना दुश्मन बनाना है, क्योकि वापस मागने से बुराई पैदा होती है।

उधार देना, लड़ाई मोल लेना, (व्य०)
दे० ऊ०।

उधार बड़ी हत्या है, (व्य०)
उधार लेना एक मुसीबत है।

उधेड़ के रोटी न खाओ, नंगी होती है, (लो० वि०)
उधेड कर रोटी खाना अच्छा नही, उससे वदनामी होती है।

उनके पेशाव में चिराग जलता है
यानी वडा रोव-दाव है।

उनईस बीस तो भइले चाहे, (भो०)
कम या ज्यादा तो हर चीज़ होती ही है। अथवा दो वस्तुओ मे थोड़ा-वहुत अतर तो होगा ही।

उन्नीस बीस का फर्क तो होता ही है
दे० ऊ०।

उपड़े झांट मदार की, शुजा चले अजमेर
कोई आदमी अगर (मकनपुर न जाकर) अजमेर जाता है, तो इसमे मदार साहव का क्या विगडता है?
(अजमेर मे मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है और मकनपुर मे मदार साहब की। दोनो ही स्थानो पर मुसलमान वड़ी सख्या मे ज़ियारत के लिए जाते है।)

उर्दू का मुहावरा दिल्ली पर खतम है
(१) वढिया मुहावरेदार उर्दू दिल्ली मे ही सुनने को मिलती है। अथवा
(२) दिल्ली मे जो (उर्दू) जवान वोली जाती है, उसे ही मुहावरेदार मानना चाहिए।

उलझ जाएगा तो सुलझ ही रहेगा
घर-गृहस्थी के धधे मे लग जाएगा, तो कुछ सुधर ही जाएगा।
(प्राय. अविवाहित आवारा लडके के लिए क०)।

उलझना आसान, सुलझना मुश्किल
किसी झगड़े मे पडना तो आसान होता है, किन्तु उससे छुटकारा पाना मुश्किल होता है।

उल्टा चोर कोतवाल डांटे
किसी की हानि करके उल्टा उसी पर रोव जमाना।
(प्र० पा०—उल्टा चोर कोतवाल को डाटे।)

उल्टी खोपड़ी औंधा ज्ञान
मूर्ख आदमी। कहा जाय कुछ, समझे कुछ।

उल्टी गंगा पहाड़ को चली
जहां जिस वस्तु की आवश्यकता नही, उसका वहा जाना, अथवा असभव घटना के लिए भी कह सकते हैं।

उल्टी गंगा बहाना
उल्टा काम करना।

उल्टी टागें गले पड़ीं
उल्टे विपत्ति मे पड़ गए।

उल्टी टोपी, गुड़ चने
वच्चो की तुकवदी, जिसका वे खेल मे प्रयोग करते है।
(उल्टी टोपी लगा रखी है, चलो गुड़-चने खिलाओ।)

उल्टी वाकी रीत है, उल्टी वाकी चाल।
जो नर औंड़ी राह मे, अपना खोवे माल।
जो आदमी गलत काम मे पैसा खर्च करे, समझना चाहिए, उसकी अक्ल मारी गई है।

उल्टी माला फेरना, (लो० वि०)
(१) किसी का बुरा चाहना। कोसना।
(२) उल्टा काम करना।

उल्टी सैफी पढ़ना, (मु०, लो०वि०)
दे० ऊ०।
(सैफी एक प्रकार का मारण-मत्र है, जिसका प्रयोग शत्रु के नाश के लिए किया जाता है। इसमे एक नगी तलवार सामने रखकर मत्र पढकर फूकते है, साथ ही शत्रु का नाम लेते जाते हैं।)

उसकी गिरह का क्या जाता है?
उसका क्या विगडता है?

उसकी जात वह दाहू-ला शरीक है
वह (ईश्वर) अद्वितीय है।

उसकी टागें उसी के गले पड़ीं
अपनी करतूत से स्वय ही विपत्ति मे फस जाना। अथवा दूसरे को फसाने जाकर स्वय फस जाना।

उसकी तूती बोल रही है
अर्थात रोवदाव है। सब उसकी इज्जत करते हैं।
(तूती बोलना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है ख्याति या प्रतिष्ठा वढ़ना।)

उसकी सीख न सीखियो, जो गुरु से फिर जाय।
विद्या सूं खाली रहे फिर पाछे पछताय।
जो गुरु को ही धोखा दे, उससे सतर्क रहना चाहिए। ऐसा आदमी विद्या नही सीख पाता और पीछे पछताता है।

उस कूकर से बचकर रहे, जाको जगत कटखना कहे
बदनाम आदमी से बचना चाहिए।

उसके आगे सीस नवावे, बड़ा बडेरा जिसको पावे
बडे का सम्मान करना चाहिए।

उसके कान पर एक जू नहीं चलती
वह किसी की बात नही सुनता।
(प्र० पा०—उसके कान पर जू नही रेंगती।)

उसके भाग बडे अलबेले, जो दौलत मे खावे खेले।
वह सचमुच भाग्यशाली है, जिसका जीवन, सुख-चैन से बीते।

उसके राज मे गायन भी गाभ डाले
गर्भवती गर्भ छोड देती है। मतलब बडा दबदबा है।

उसको तो पत्थर मारे मौत नहीं
बड़ा निर्लज्ज है।

उसको वहां मारे, जहां पानी भी न मिले
दुष्ट के लिए क०।

उसको सब की फिक्र है
भगवान सबकी खबर लेता है।

उसको सीख न दे कभी, जो हो कहर नीच।
लोह मेख नाहीं धंसे, कहूं पाथर बीच। (ग्रा०)
नीच को शिक्षा देना वैसा ही व्यर्थ है, जैसा पत्थर मे लोहे की कील ठोकने का प्रयत्न करना।

उस जातक पर प्यार जताओ, मात-पिता बिन जिसको पाओ
अनाथ पर दया करनी चाहिए।

उस जातक से करो न यारी, जिस की माता हो कलहारी
जिसकी मा झगडालू हो, उस लड़के से प्रेम नही करना चाहिए।

उस दिन भूलें चौकड़ी, वली, नबी औ पीर। (मु०)
लेखा लेवे जिस दिना, कादर पाक कदीर।
ईश्वर जिस दिन कर्मों का लेखा लेने बैठेगा उस दिन क्या संत, क्या पैगंबर और क्या पीर सभी अपनी चौकडी भूल जाएंगे। कादर, पाक, कदीर—सर्वशक्तिमान, पवित्र और समर्थ ईश्वर के विशेषण।

उस नर के भी एक दिन, पडे गले मे फांद।
जिसने चोरी लूट पर लई कमरिया बांध।
चोरी और लूट करनेवाला आदमी कभी न कभी पकडा ही जाता है।

उस नर को ना सीख सुहावे, नेह फंद मे जो फंस जावे
प्रेम-फंद मे पडे आदमी को सीख अच्छी नही लगती।

उस नर से तुम मिलो न कोई, जा को देखो कपटी धोई
कपटी और धोखेबाज का साथ नही करना चाहिए।

उस पुरखा का नाह भरोसा, जो ले चीज दिखावे ठोंसा
जो चीज लेकर न लौटावे, ऐसे आदमी का भरोसा नही करना चाहिए।

उस पुरखा की बात पर, नाह भरोसा राख।
बार बार जो बोले झूठ, दिन भर मा सो लाख।
जो हमेशा ही झूठ बोलता रहता हो, उसका विश्वास न करे।

उस बस्ती मे तू कभी, कीजो मत विश्राम।
जो हो नामी देश मे, ठग चोरो का ग्राम।
ठग और चोरो की बस्ती मे कभी नही जाना चाहिए।

उससे तू मिल दौड़ कर, जो नर ज्ञानी होय।
दाना दुश्मन भी भला, कह गये यह सब कोय।
हमेशा समझदारो के पास बैठना चाहिए। पढा-लिखा दुश्मन भी अच्छा होता है।

उसी की जूती, उसी का सिर
उसी के साधनो से उसी की हानि। किसी को मूर्ख बनाकर जब उसका पैसा खाया जाए, प्राय तब क०।

उसी घड़ी तू टार दे, जो वैरी घर आय।
ऐसा न हो धोये से, बैठे पैर जमाय।

अर्थ स्पष्ट है।

धोये से = धोखे से।

उसी राह चल तू जो गुरु तुझे बताय।
जो विद्या के थान पर तुरत ठिकाना पाय।

स्पष्ट।

उसी रूख पर है चढा, उसी की जड कटवाय।
वह मूरख तो एक दिन, गिर दबकर मर जाय।

स्पष्ट।

उसे तो धोनी भी नहीं आती

शौच के लिए पानी लेना भी नही जानता। (इतना अनाडी है।)

उस्ताद, हज्जाम, नाई, मै और मेरा भाई, घोड़ी और घोडी का बछेड़ा, और मुझको तो आप जानते ही हैं।

किसी वस्तु के बटते समय, उसे घुमा-फिराकर कई नामो से लेना।

(एक नाई किसी दावत मे गया। वहा लोगो ने पूछा—तुम कै आदमी हो ? नाई ने उपर्युक्त प्रकार से सात की सख्या बताई, जब कि वास्तव मे वह अकेला ही था।)

ऊंघते को ठेलते का बहाना

कोई स्वय ऊघ कर गिर रहा था। इतने मे दूसरे का धक्का लगा। तब उसे कहने का मौका मिल गया कि तूने मुझे पटक दिया।

(जब किसी काम के बिगड जाने का सारा दोष किसी दूसरे के मत्थे मढ दिया जाए, जब कि वह काम अधिकाश मे अपनी ही भूल से बिगडा है, प्राय तब क०।)

ऊच नीच मे बोई क्यारी, जो उपजी सो भई हमारी

ऊबड-खाबड जमीन मे खेती करने से जो मिल जाय, उसे ही बहुत समझना चाहिए।

ऊँच बडेरी, खोखर बास, ऋण लैलो बारह मास

बारहो महीने उधार के पैसे पर जीवन-निर्वाह करना वैसा ही है, जैसा कि ऊचे छप्पर मे खोखले बास लगाना, (जो शीघ्र टूट जाएगे।)

ऊंची दूकान, फीका पकवान।

दूकान की तडक-भडक तो बहुत, पर मिठाई मिष्ठता शून्य। नाम बडा, काम छोटा।

ऊंचे चढके देखा, तो घर-घर माही लेखा।

सुखी कोई नही। हर घर मे कुछ न कुछ परेशानी है।

ऊचो ऊचो सब चलें, नीचो चले न कोय।
तुलसी नीचो वह चले, जो गर्व से ऊचो होय।

सब बडे बनकर रहना चाहते हैं, अपने को छोटा समझना कोई पसद नही करता। जो गर्व से रहित है, वही अपने को छोटा समझता है।

ऊंट का पाद, न जमीन का न आसमान का

ऐसी वस्तु या ऐसा काम, जिससे कोई मतलब हल न हो। निकम्मे आदमी के लिए भी कहेगे।

ऊंट किरा कल बैठे

दे० देखें ऊट किस करवट बैठे।

ऊट की चोरी और झुके-झुके

किसी बडे काम को चुपचाप नही किया जा सकता; वह प्रकट हो ही जाएगा। जैसे ऊट की चोरी चुपचाप नही की जा सकती।

ऊंट की चोरी सिर पर खेलना

कोई बडी चोरी छिपती नही। ऊट को चुराकर कोई कहा रखेगा ?

ऊंट की पकड़, कुत्ते की झपट

ये दोनो ही खतरनाक होते हैं।

ऊंट की पकड, कुत्ते की झपट, खुदा इनसे बचाये

ईश्वर दोनो से बचाए, क्योंकि दोनो ही बुरे हैं।

ऊंट के गले मे बिल्ली

(१) दो बेजोड चीज़ो का मेल, जैसे किसी बूढे का कम उम्र लडकी से विवाह।

(२) किसी काम मे ऐसा अटगा लगा दिया जाए कि वह हो ही न सके।

(इसकी एक कथा है—किसी समय एक आदमी का ऊट खो गया। उसने मनौती की कि अगर मिल गया, तो उसे वह दो पैसे मे बेच देगा। सयोग से

ऊट घर वापस आ गया। तब ऊट के गले से उसने एक बिल्ली बाधी और उस बिल्ली के दाम इतने अधिक रख दिए जितने ऊट के भी नही थे। साथ ही यह शर्त भी लगा दी कि जो भी आदमी दो पैसे मे ऊट खरीदेगा, उसे बिल्ली भी खरीदनी पड़ेगी। उनकी इस शर्त पर कोई भी ऊट खरीदने को तैयार नही हुआ। इस तरह उसका ऊट बच गया और बात भी रह गई।)

ऊंट के मुंह मे जीरा
किसी बहुत खानेवाले को थोडी वस्तु देना।

ऊट को किसने छप्पर छाये
गरीबो की सुध भगवान लेता है।

ऊट-घोडा भस गइल, गदहा पूछे 'कितना पानी ?'
जहा बड़े-बडे हार मान बैठे हो, वहा किसी छोटे का काम करने का साहस करना।
भस गइल = धस गये।
(प्र० पा०—ऊट घोडा बहे जाए. ।)

ऊंट चढके बूट मागे
ऊट पर बैठकर चने मागता है। ऊचे स्थान पर बैठकर ज़ोर दिखाता है, अथवा तुच्छ वस्तु की माग करता है, यह अर्थ भी हो सकता है।

ऊट चढे कुत्ता काटे
दुर्भाग्य से पीछा छुडाना कठिन होता है।
(कोई आदमी ऊट पर बैठा था। वहा भी उसे कुत्ते ने काट खाया।)

ऊट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं जाता, तब तक ही जानता है 'मुझ से ऊंचा कोई नहीं'
जब तक किसी घमडी व्यक्ति की अपने से अधिक योग्य व्यक्ति से भेट नही होती, तब तक उसका गर्व चूर नही होता।

ऊंट जब भागे तब पच्छम को
ऊट रेगिस्तान का जीव है, इसलिए क०।
प्राय मूर्ख और दुराग्रही के लिए प्र० पा०।

ऊट डूबे, खच्चर थाह मांगे
जो काम बडो से न हो सके, उसे जब छोटे करने का साहस करें, तब क०।

ऊट डूबे मेढकी थाह मागे।
दे० ऊ०।

ऊट तो दगते थे, मकडी (या मेढकी) ने भी टाग फैला दी
बडो की देखादेखी कोई काम करना।
(जानवरो के बीमार होने पर गरम लोहे की सलाख उनके बदन से छुआते है। उसे ही दागना कहते हैं। जानवरो पर निशान बनाने के लिए भी उन्हे दागा जाता है।)

ऊंट बड़बड़ाता ही लदता है
ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो काम करते समय हमेशा बडबडाए।
(ऊट की आदत होती है कि लदते समय बलबलाता है।)

ऊंट बलबलाने से लड़ता है
ऊट लडते समय बलबलाता है। व्यर्थ बडबडाने वाले से क०।

ऊंट बिलाई ले गई, 'हा जी, हां जी' कीजे।
बडे आदमियो की हा मे हा मिलाना। अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी की गलत बात का समर्थन करना।
किसी ने कहा—'ऊट को बिल्ली उठा ले गई, तो दूसरे ने जवाब दिया—'हा ज़रूर उठा ले गई। मैने भी देखा।'

ऊट बुड्ढा हुआ, पर मूतना न आया
जब किसी बडी उम्र के व्यक्ति मे काम करने का शऊर न हो, तब क०।

ऊंट मक्के ही को भागता है
दे०—ऊट जब भागे तब. .।

ऊंट मक्खी को भी हांकता है
अर्थात ऊट भी मक्खी जैसे क्षुद्र जीव से अपनी रक्षा करता है।

ऊट मरा कपड़े के सिर
किसी एक मद मे हुई हानि को दूसरी मद मे अधिक मुनाफा लेकर पूरा कर लेना।
(कथा है कि किसी एक व्यापारी का ऊट मर गया।

तब उसके दाम उसने कपडे के माल पर चढा दिए और इस प्रकार क्षतिपूर्ति कर ली।)

ऊंट रे ऊंट तेरी कोन कल सीधी

ऐसे आदमी के लिए क०, जिसकी नसनस मे शरारत भरी हो।

बेडौल के लिए भी कहा जाता है।

ऊट सा कद तो बढ़ा लिया, पर शऊर जरा भी नहीं

किसी पिता का अपने वेशऊर लडके से कथन।

ऊख से गड़ेरी प्यारी, गुड़ से प्यारा गांडा।
मा बहिन से जोरू प्यारी, जिससे होय गुजारा।

स्पष्ट।

गाडा = एक प्रकार की मिठाई गट्टा, जो कन्नौज का प्रसिद्ध है।

ऊजड़ खेड़ा, नाव न वेडा

ऐसा उजाड गाव जहा कुछ भी न हो; न नाव, न वेड़ा। (फैलन ने इस कहावत को उक्त प्रकार से ही लिखा है। पर इसका शुद्ध रूप—ऊजड खेडा—नाव नवेडा जान पडता है। गाव तो उजाड है पर नाम है उसका 'नवेला'।)

ऊजड़ गांव मे मुरार महतो

जिस गाव मे कोई अन्य महत्वपूर्ण वस्तु नही होती, वहा कोल्हू को ही वडी अजीव चीज मानते है। (फैलन ने मुरार का अर्थ कोल्हू किया हे।)

ऊजड़ मे तो गूजर नाचे, ढाक देख बैरागी।
खीर देख के बामन नाचे, तन-मन होवे राजी।

गूजर एक गोपालक जाति है। वह जगल देखकर प्रसन्न होती है, क्योकि वहा उसे अपने ढोर चराने का सुभीता रहता हे। ढाक खजडी की तरह का एक वाद्ययत्र है, जिसे वैरागी वजाते है। वह ढाक देखकर खुश होता हे। (यहा ढाक से मतलव ढाक के जगल से भी हो सकता है।) ब्राह्मणो की मिष्ठान्न प्रियता तो प्रसिद्ध है ही, खीरदेखकर उनका तन-मन प्रफुल्लित हो जाता है।

ऊजड़ हो घर सास का, वैर करै हर वार।
पीहर घर सूयस वसे, जव लग है ससार। (स्त्रि०)

सास के अत्याचार से ऊवी हुई किसी वहू का कथन। पीहर = मायका। सूयस = सुयश।

ऊतर-पातर, मै मियां तू चाकर

लडको के खेल की एक तुकबदी। अपने ऊपर चढी हुई दाई को चुका देने पर उसका प्रयोग करते है।

ऊधो को लेन, न माधो का देन

किसी से कोई मतलव न होना।

ऊधो वन आये की वात, (हिं०)

किसी काम मे अप्रत्याशित रूप से सफलता मिलने पर क०।

(ऊधो कृष्ण के मित्र और सखा थे, पर यहा यह नाम साधारण व्यक्ति के नाम के रूप मे ही प्रयुक्त हुआ है।)

ऊपर का धड़ भाई और नीचे का अलखुदाई

कपटी के लिए क०, जो ऊपर से भाई जैसा व्यवहार करे, पर मन मे क्या है, ईश्वर ही जान सकता है।

ऊपर से 'राम' 'राम,' भीतर कसाई का काम

कपटी और धूर्त्त।

ऊसर खेत मे केसर

(१) मूर्खतापूर्ण कार्य, केसर की खेती ऊसर जमीन मे नही हो सकती। उसके लिए तो वढिया उपजाऊ भूमि चाहिए। अथवा

(२) ऊसर भूमि मे केसर जैसी मूल्यवान वस्तु पैदा हो गई!

एक आश्चर्य की वात।

(अयोग्य घर मे कोई योग्य लडका पैदा हो जाए, तव कहा जा सकता है।)

एक अडा वह भी गंदा

एक चीज और वह भी वेकार। प्राय निकम्मे और अकेले लडके के लिए क०।

एक अकेला, दो का मेला

एक से दो भले होते हैं। अच्छा लगता है।

एक अकेला, दो मे ग्यारह

एक आदमी तो हमेशा एक ही रहता है, पर एक

की जगह दो इकट्ठे हो जाए, तो उनमे ग्यारह की शक्ति आ जाती हे।
(एक के आगे एक की सख्या और लिखने से ग्यारह होते हैं।)

एक अनार सौ बीमार
एक वस्तु के बहुत से चाहनेवाले। किसे-किसे दी जाए ?
(समा०—अकेली हरदसिया सबरा गाव रसिया।)

एक असामी सौ अर्जिया
एक अपराधी की ओर से सौ प्रार्थना पत्र।
बेतुका काम।

एक अहीर की एक ही गाय, ना लागे तो छूछो जाय
एक अहीर की एक ही गाय है, जब कभी वह दूध नही देती, तो बर्तन खाली रहता है। मतलब, किसी वस्तु का एक या अकेला होना अच्छा नही। घर के एकमात्र कमानेवाले के लिए कह सकते है। वह कमाकर न लाए तो सबको भूखा रहना पडे।

एक अहारी सदा व्रती, एक नारी सदा जती
दिन मे एक बार भोजन करनेवाला सदैव सयमी और जिसके केवल एक स्त्री हो वह सदैव ब्रह्मचारी माना जाता है।

एक आंख फूटती है, तो दूसरी पर हाथ रखते है
इसलिए कि दूसरी न फूट जाए।
एक हानि होने पर मनुष्य दूसरे से बचने का उपाय सोचते है।

एक आख मटर का विया, वह भी आख भवानी लिया
बेचारे के मटर के बीज जितनी एक आख थी, वह भी भवानी ने ले ली, अर्थात चेचक मे मारी गई। हानि पर हानि होना।

एक आंख मे लहर-बहर, एक आख में खुदा का क़हर
मतलब काने से है। ऐसे व्यक्ति के लिए भी कहते है, जो ऊपर से तो बड़ा भला जान पडे, पर भीतर से दुष्ट हो।

एक आंख से रोवे, एक से हँसे
रोने का झूठा स्वांग करनेवाला। प्राय लडको के लिए क०।

एक आम की दो फांकें
दो सगे भाई जिनमे आपस मे बडा प्रेम हो।
दो एक-सी वस्तुओ के लिए भी क०।

एक आवे के बर्तन है
सब एक से हैं। एक ही हाथ के बने है। अथवा एक ही परिवार के है।
(आवा या अवा उस भट्ठी को कहते है, जिसमे कुम्हार अपने मिट्टी के बर्तन पकाता है।)

एक इतवार के व्रत से जनम का कोढ नहीं जाता
कोई एक पुरानी बीमारी किसी तरह की भी हो—एक-दो दिन के प्रयास से दूर नही होती।
(कथा है कि कृष्ण के पुत्र को कोढ हो गया था। वह सूर्य की पूजा से दूर हुआ। इसलिए कोढ होने पर लोग सूर्य की मानता मानते है और इतवार को व्रत रखते हैं, क्योकि वह सूर्य का दिन है।)

एक ओर चार वेद, एक ओर चतुराई
चतुराई बडी चीज है। वेद-पुराणो अथवा पुस्तको का ज्ञान उसके सामने कोई वस्तु नही।
तुल०—एक ओर चार वेद, एक ओर लवेद।
लवेद =झूठ।

एक कहो न दस सुनो
न किसी को एक गाली दो, न दस सुनो। तुम जिसके साथ जैसा व्यवहार करोगे, वैसा दूसरे भी तुम्हारे साथ करेंगे।

एक और एक ग्यारह
एक की जगह दो आदमी बडा काम कर सकते है। सघ मे बडी शक्ति है।
दे०—एक अकेला दो से ।

एक का तीते तीनो तीत
एक के कड़वे होने पर सभी कडुवे हो जाते है। एक का स्वभाव बुरा होने से दूसरे भी वैसे ही बन जाते हैं।

एक कान बहरा करो, एक कान गूंगा
कोई तुम्हारी बुराई करे, तो उस पर ध्यान मत दो।
('कान गूंगा' से यहा मतलब मुह बद रखने से ही है।)

एक कान सुनी दूसरे कान उड़ाई

किसी की बात पर ध्यान न देना।

एक का मुंह शक्कर से भरा जाता है, सौ का मुंह खाक से भी नहीं भरा जाता

थोडे आदमियो का अधिक अच्छा आदर-सत्कार किया जा सकता है।

एक की दारू दो, दो की दारू चार

एक (उद्धत आदमी) को ठीक करने के लिए दो चाहिए और दो को ठीक करने के लिए चार।)

दारू = दवा। शराब।

एक की सैर, दो का तमाशा; तीन का पिटना, चार का स्यापा

यात्रा तो अकेले ही ठीक रहती है, तमाशे मे दो, तीन मे लडाई-झगडे का डर रहता है, और जहा चार हुए, समझो वहा जनाजा निकला।

पाठा०—एक की सैर, दो का तमाशा, तीन का मेला, चार का झमेला।

एक के दूना से सौ के सवाये भल, (व्य०)

अधिक मुनाफे पर कम माल वेचने की अपेक्षा कम मुनाफे पर अधिक माल वेचना अच्छा। वह कुल मिलाकर अधिक हो जाता है।

एक को दैहै रुतवा-ए-आली, एक को दैहै खुरपा और जाली

ईश्वर किसी को ऊचा पद देता है, किसी को गरीव-मज़दूर वनाता है।

खुरपा = घास खोदने का ओजार।

जाली = मछली पकडने का जाल।

एक को साई, एक को वधाई

(१) देने का वादा करना किसी एक से और दे देना किसी दूसरे को।

(२) आश्वासन देकर किसी का काम करना, किसी का न करना।

(३) किसी को यो ही टरका देना, किसी की खातिरदारी करना।

साई = वह धन जो किसी काम के लिए पेशगी दिया जाता है। वयाना।

एक कौड़ी गाठी, चूड़ा पहनूं कि माठी, (स्त्रि०)

गाठ मे काफी पैसा न होते हुए भी तरह-तरह के काम करने या वस्तुए खरीदने की इच्छा करना।

चूडा = कलाई मे पहिनने का काच या धातु का गहना।

माठी = वाह मे पहिनने का गहना।

एक खता, दो खता, तीसरी खता मादरवख्ता

एक भूल को भूल समझा जा सकता है (वह क्षम्य होती है), दूसरी वार की भूल को भी भूल समझा जा सकता है। पर यदि कोई तीसरी वार भी वैसी ही भूल करे, तो समझना चाहिए कि यह उसका स्वभाव है।

मादरवख्ता = मा के गर्भ से प्राप्त। जन्मजात।

एक खाय दूध मलीदा, एक खाय भुस

अपना-अपना भाग्य। कोई मजा-मौज करता है, कोई कष्टो मे जीवन विताता हे।

भुस = अनाज के सूखे डठल।

एक गरीब को मारा था तो नौ मन चर्बी निकली थी

प्राय ऐसे लोग होते हैं जो टैक्स या चदा आदि देने के भय से धनी होते हुए भी गरीव वनते है, उनके प्रति व्यग्य मे क०।

एक गुरु के चेले, (हिं०)

एक उस्ताद के चेले। सव एक से चालाक।

एक घडी की 'ना', सारे दिन का उद्धार

किसी भी विपय मे सकोच छोडकर एक वार 'ना' कह देने से वार-वार की झझट मे छुट्टी मिल जाती है।

एक घड़ी की वेहयाई, सारे दिन का आधार

जो लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए वेशर्मी अख्तियार कर लेते है, और उचित अनुचित की परवाह नही करते, उनसे व्यग्य मे क०। अथवा ऐसे व्यक्ति की उक्ति, जो अपने लाभ के लिए निर्लज्ज वन जाना ठीक समझता है।

एक चना दो दाल!

एक चने की दो ही दाल होती है।

(वास्तव मे यह वच्चो के एक गीत की कडी है। एक चना दो दाल, मोरी सावन आई, इत्यादि)

एक चना वहुतेरी दाल

एक चने से वहुत-सी दाल हो सकती है। मतलव, घर के एक प्रमुख व्यक्ति के वने रहने से नौकर-चाकर या लडके तो और भी हो सकते है। मुख्य वस्तु ही रक्षणीय होती है।

एक चुप सौ को हराय

चुप रहनेवाले के सामने सौ वोलनेवाले हार मान लेते है।

एक चुप, हजार चुप

किसी वाद-विवाद के मौके पर एक आदमी अगर चुप हो जाए, तो वाकी अपने-आप चुप हो जाते हैं।

एक छौनी के आंचल मे नोंन, घड़ी-घड़ी रूठे, मनावे कौन?

वच्चो की तुकवदी। किसी साथी के रूठ जाने पर मनाने के लिए प्रयोग करते है।

एक जना घर मुरदा भेल, चार जना मिल खटिया लेल आप आपके सव ही मालुक, वार उखाड़े मुरदा हालुक

किसी के घर एक आदमी मर गया। चार आदमी उसे खटिया पर उठाने आए। पर वे सव अपने घर के वडे आदमी थे। और मुर्दा भारी था। तव उसे हलका करने के लिए उसके वाल वना दिए गए। ऊपर की इस तुकवदी का अतिम चरण 'वार उखाडे ' ही कहावत के रूप मे प्रयुक्त होता है और उसे तव कहते हैं, जव किसी वडी विपत्ति को दूर करने के लिए नाममात्र का निष्फल प्रयास किया जाए।

एक जान, दो कालिव

एक प्राण दो शरीर। दो घनिष्ठ मित्र, अथवा दो सगे भाई, जिनमे गाढा स्नेह हो।

एक जान, हज़ार अरमान

आदमी की एक जान के पीछे हजार कामनाए लगी है, कहा तक पूरी हो।

एक जोरू की जोरू, एक जोरू का खसम; एक जोरू का सीसफूल, एक जोरू का पश्म

कोई स्त्री का दास होता है, तो कोई उसका स्वामी, कोई उसके माथे का आभूषण होता है, तो कोई उसका पश्म।

पश्म=पुरुष या स्त्री के निम्न स्थान के वाल। वहुत ही तुच्छ वस्तु। (वढिया मुलायम ऊन को भी पश्म कहते है।)

एक जोरू सारे कुनवे को वस है

एक स्त्री पूरे परिवार के लिए काफी है। अथवा एक होशियार औरत पूरे घर को सभाल सकती है। (कहावत वही लागू होती है, जहा भाई के मर जाने पर उसकी विधवा को रख लेने की प्रथा प्रचलित है। मजाक मे भी कहावत का प्रयोग हो सकता है।)

एक जौ की सोलह रोटी; भगत खाय, भगतानी मोटी

वच्चो की तुकवदी, जिसमे पाखडी साधु-सन्यासियो का मज़ाक उड़ाया गया हे।

एक डर, दो तरफ

दो विरोधियो मे डर दोनो तरफ रहता है। अर्थात जितना एक व्यक्ति दूसरे से डरता है, उतना ही दूसरा भी उससे भय खाता है।

एक डूवे तो जग समझावे, सव जग डूवा जाए

एक आदमी गलती करे, तो उसे समझाया जा सकता है, पर जहा सभी गलत रास्ते पर हो, वहा कौन किसे समझाए?

एक तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत

तन्दुरुस्ती वड़ी चीज है।

एक तरकश के तीर

सभी एक से।

एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी?

दो एक-सी वस्तुओ मे छोटे-वडे का क्या भेदभाव करना?

एक तो करेला कड़वा, दूसरे नीम चढ़ा

जव कोई क्षुद्र व्यक्ति कुसग मे पड़कर अथवा अचानक मान-सम्मान पाकर और भी वुरा वन जाए, तव क०।

एक तो कानी थी ही, दूसरे पड गया कुनक

विपत्ति मे और भी विपत्ति आना।

कुनक=किरकिरी।

एक तो कानी बेटी की माई, दूसरे पूछनेवालों ने जान खाई, (स्त्रि०)

एक तो मेरी बेटी कानी है—(मेरे लिए यही दुख क्या कम है?) फिर उसके विषय मे तरह-तरह के प्रश्न करनेवालो ने और भी नाक मे दम कर रखा है।

झूठी सहानुभूति दिखानेवालो के लिए कहते है।

एक तो कानी बेटी ब्याही, दूसरे पूछनेवालो ने जान खाई

एक तो कानी लडकी के साथ अपने लडके का विवाह किया, फिर लोग उसके रूप-रग के विषय मे पूछकर मुझे और भी लज्जित करते है।

एक तो गड़ेरन, दूसरे लहसुन खाए, (पू०)

गड़ेरन एक तो स्वभाव से गदी होती है, फिर अगर लहसुन खा ले, तो उसके मुह से और भी दुर्गंध आएगी।

(जब कोई छोटा आदमी ऊची जगह पर पहुचकर इतराने लगे, तो कह सकते हैं।)

एक तो चोरी, दूसरे सीनाजोरी

अपराध करके उल्टे आख दिखाना।

एक तो डायन, दूसरे हाथ लुआठ

एक तो कोई आदमी पहले से ही बहुत दुष्ट, फिर अगर उसके हाथ मे कोई ताकत आ जाए, तो वह और भी भयकर बन जाता है।

लुआठ = जलती हुई लकड़ी, मशाल।

एक तो था ही दीवाना, तिस पर आई बहार

एक तो पहले से ही पागल था, और फिर वसत ऋतु आ गई, जिसमे पागलपन और भी बढ जाता है।

(जब किसी बिगड़े हुए आदमी को और भी बिगड़ने के अवसर मिल जाए।)

एक तो पड़ा लोटता है, दूसरा कहे जरा चोखी देना

शराब के नशे मे पडा एक लोट रहा है, फिर भी दूसरा जरा और चोखी मांगता है।

ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो किसी बुरे कार्य के परिणाम को देखकर भी उसे छोडना नही चाहता।

एक तो भालू, दूसरे काथे कुदाल

भालू एक तो पहले से ही भयंकर, फिर उसे मिल गया कुदाल।

मतलब, और भी भयकर बन गया।

एक तो भीख, दूसरे पछोर-पछोर

भीख मे साफ अनाज चाहते है। मुफ्त के माल मे ऐब नही निकालना चाहिए।

पछोर = सूप से अनाज फटकना, साफ करना।

एक तो मिया थे ही थे, दूसरे खाई भांग, तले हुआ सिर, ऊपर हुई टाग।

एक तो हजरत पहले से ही काफी तगडे थे, ऊपर से भाग खाई, जिससे हालत और भी गई-गुज़री हो गई।

जब कोई दूसरो के देखादेखी शौक करे और उससे हानि उठाए, तब क०।

एक तो मीरां थे ही, दूजे खाई भांग

एक तो मिया के सिर पहले से ही मीरा साहब (जिन्न) आते थे और अब भाग खा ली, जिससे हालत और भी बिगड गई।

(मीरा के विवरण के लिए दे०—'आये मीर, भागे पीर।')

एक तो मीठ और कठौत भर

एक तो बढिया चीज़ चाहिए और वह भी बहुत-सी! अथवा बढिया चीज भरपेट खाने को मिले, तो फिर क्या पूछना।

कठौत = कठौता, लकडी का बासन।

एक तो मुआ अनभाया था, दूसरे सई सांझ से आता था

किसी दुराचारिणी स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य प्रेमी के सबध मे कथन कि अव्वल तो वह मुझे पसद नही था और फिर शाम से ही आकर अड्डा जमाता था।

एक तो शेर, दूसरे बख्तर पहने

अत्याचारी के हाथ मे जब शक्ति भी आ जाए। शेर अगर बख्तर पहिन ले, तो क्या पूछना। और भी गजब ढाएगा।

एक दम मे हजार दम

(१) एक सास भी अगर बाकी है, तो समझो हजार सास बाकी हैं। यानी उस आदमी के जीने की आशा करनी चाहिए।

(२) एक आदमी से हजार आदमियो की गुजर बसर होती है।

एक दम, हजार उम्मेद

(१) अतिम सास तक एक आदमी के जीवित रहने की आशा रहती है।

(२) आदमी की एक दम (जान) के पीछे हजार आशाए लगी रहती हैं।

एक दर बंद, हजार दर खुले

हमारे लिए अगर एक दरवाजा बद हो गया, तो दूसरे कितने ही खुले हैं।

मतलब, हम किसी एक के आश्रित नही। कुछ न कुछ कर ही गुजरेंगे।

एक दिन का पावना, दूसरे दिन अनखावना

अतिथि तो एक ही दो दिन का होता है, उसके बाद तो लोग उससे ऊबने लगते है।

अनखावना =(१) खीझ पैदा करनेवाला, 'अनख' से बना है। अथवा (२) अन्न-खावना अर्थात भूखे रहो। (कहावत के उत्तराश का यह अर्थ भी हो सकता है कि दूसरे दिन 'अन्न न खाओ', अर्थात एक दिन के बाद दूसरे दिन अतिथि को खाने के लिए कोई नही पूछता।)

एक दिन के सौ साठ दिन

मतलब, आज नही, तो फिर देखा जाएगा, हम बदला लेकर रहेगे।

एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान, (मु०)

मेहमान एक-दो दिन के बाद ही एक मुसीबत बन जाता है।

(बगला मे भी है—माछ आर अतिथि दुई दिन परेई विष।)

एक दिन सबको मरना है

स्पष्ट।

एक न शुद दो शुद

एक ही क्या कम था, और अब दो हो गए।

किसी झगडे या बाद-विवाद के बीच मे एक के साथ अनावश्यक रूप से दूसरा भी बोल उठे, प्राय तब कहते हैं कि अभी तो एक ही बोल रहा था, अब दो बोल उठे।

(इसकी एक कथा है किसी व्यक्ति ने एक जादूगर से तीन मत्र सीखे। एक से मृत को जीवित किया जा सकता था, दूसरे से उसके मन का हाल जाना जा सकता था। और तीसरे से उसे फिर मृतक बनाया जा सकता था। इन मत्रो की परीक्षा के लिए एक दिन उसने एक मुर्दे को जीवित किया और उसका सब हाल जान लिया। किन्तु उसे फिर मृतक बनाने का मत्र वह भूल गया। नतीजा यह हुआ कि उस मुर्दे का प्रेत उसके पीछे लग गया। जहा भी वह जाता, प्रेत उसके साथ रहता। इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए उसने अपने मरे हुए गुरु को मत्र द्वारा जीवित किया, पर दुर्भाग्यवश वह इस बार दूसरा मत्र भूल गया और गुरु के पास से जीवित को फिर मृतक बनाने का मत्र नही जान सका। इस प्रकार एक के स्थान पर अब दो प्रेत उसके साथ लग गए।)

एक 'नहीं' सत्तर बला टाले

किसी व्यक्ति को यदि कोई वस्तु नही देनी है, अथवा उसका कोई काम नही करना है, तो सकोच छोडकर नाही कर देना सबसे अच्छा होता है। उससे बहुत-सी मुसीबते टल जाती है।

एक ना सौ दुख हरे

दे० ऊ०।

एक नीम सब घर सितलहा

नीम का एक ही पेड और घर भर को शीतला निकली है। कैसे काम चले?

सितलहा =शीतला रोग से ग्रस्त।

(फैलन ने इस कहावत को इस प्रकार लिखा है—'एक नीम सब घर सीतल'—जो अशुद्ध है। चेचक

निकलने पर नीम के पत्ते रोगी के सिरहाने रखने के काम आते है। उसी से कहा० चली।)

एक नीम सौ कोढी

दे०—एक अनार सौ वीमार, तथा ऊपर भी।

(नीम के पत्ते तथा निवौरी का तेल भी चर्म रोगो के लिए लाभदायक माना जाता है।)

एक नूर आदमी, हज़ार नूर कपड़ा

आदमी की अपनी जो शोभा होती है, वह तो होती ही है, पर कपडा पहिनने से वह सौगुनी हो जाती है।

एक पंथ दो काज

एक काम मे दो काम वनना। अथवा एक लाभ मे दो लाभ।

एक पानी जो वरसे स्वाती, कुरमिन पहने सोने की पाती, (कृ०)

स्वाती नक्षत्र मे पानी वरसने से कुरमिन को सोने के गहने पहिनने को मिलते हैं, अर्थात फसल वहुत अच्छी होती है।

एक पेड़ हर्रे, सगरे गाव खासी

हरड का एक ही पेड और सव गाव को खासी।

दे०—एक अनार सौ वीमार।

हर्रे=हरड, जिसका फल खासी के काम आता है।

एक फूअड फुअड़ के गई, जा कुठला-सी ठाडी भई

एक वेशऊर औरत दूसरी वेशऊर के यहा गई और ठूठ की तरह जाकर खडी हो गई। फूहड औरतो पर व्यग्य, जिन्हे वात करने का सलीका नही होता।

कुठला=अनाज रखने का मिट्टी का वडा वर्तन।

एक वखिया मोरे पल्ले, कौन पिनौते होके चल्ले

मेरी गाठ मे एक ही कुर्ती है, मैं किस रास्ते से जाऊ?

(जिसमे सवकी नज़र उस पर पड़ जाए)

अपनी किसी थोडी-सी चीज़ का घमड करना।

एक वार जोगी, दो वार भोगी, तीन वार रोगी

योगी दिन मे एक वार और भोगी दो वार शौच जाता है। इससे अधिक वार जाए, तो उसे रोगी समझना चाहिए।

एक वोली तीन काम

ऐसा होशियार आदमी जो एक काम मे तीन काम करे।

(एक पथ दो काज)

एक वोली, दो वोली, मेरी न कटी सटासट वोली, (ग्रा० स्त्रि०)

अर्थात वडी वातूनी है, जो वरावर वोलती ही चली जा रही है।

एक मछली सारे जल को गंदा करती है

एक वुरा आदमी सारे घर या समाज को वुरा वना देता है।

एक मास ऋतु आगे धावे

ऋतु का रूप एक महीना पहले से दिखाई पडने लगता है।

एक मुंह दो वात

वात कहकर वदलना।

एक मुर्गी नौ जगह हलाल नहीं होती

कोई आदमी अपने को एक साथ कई कामो मे नही खपा सकता अथवा एक साथ कई स्थानो पर काम नही कर सकता।

एक मुश्किल को हज़ार हज़ार आसान रखी हैं

कठिन से कठिन काम को करने का उपाय खोजा जा सकता है।

एक मेरे घर अन्ना, दूसरा खन्ना, (मु० स्त्रि०)

अपना वडप्पन दिखाने के लिए किसी स्त्री का कथन कि मेरे यहा दो-दो नौकर है, एक तो वच्चो को खिलाने के लिए दाई और दूसरा खवास।

एक मैं, दूसरा मेरा भाई, तीसरा हज्जाम नाई

किसी वस्तु के वटते समय अनुचित रूप से दूसरो के नाम भी हिस्सा मागने लगना।

(नाई, वारी, कहार आदि जव किसी भोज मे जाते हैं, तव अपने अलावा अपने परिवार के सव लोगो के लिए पत्तल उठवाते है, यद्यपि वे सव वहा मौजूद नही होते। उसी से कहा० वनी।)

एक म्यान मे दो छुरी
एक स्थान पर अपना-अपना स्वतन्त्र अधिकार जताने वाले दो मालिक।
(जैसे एक स्त्री के दो प्रेमी)

एक रत्ती बिन नहीं रत्ती का
प्रतिष्ठाहीन आदमी किसी काम का नही।
रत्ती के दो अर्थ है=(१) रति, शोभा, प्रतिष्ठा (२) रत्ती, आठ चावल का मान या बाट, कौडी, पैसा।

एक रोटी के दो टुकड़े
समान प्रकृति की दो वस्तुए।

एक सिर, हज़ार सोदा
एक आदमी के सिर बहुत-सा काम।

एक सुहागन, नो लौंडे
एक वस्तु के कई गाहक।

एक सुरमा चना भाड़ को नहीं फोड सकता
एक आदमी सब कुछ नही कर सकता।

एक से एक, दो से ग्यारह
एक आदमी तो हमेशा एक ही रहेगा, पर दो के मिलने से उनमे ग्यारह की शक्ति आ जाती है।

एक से दो भले
कही बाहर जाना हो, तो एक से दो अच्छे होते हैं।

एक से ले एक को दे
किसी से लेकर किसी को देना। ईश्वर के लिए कहा जा सकता है कि वह एक से लेकर दूसरे को देता है।

एक हँसे, दूसरा दुख मे
संसार मे कोई सुखी है तो कोई दुखी, अथवा एक को दुख मे देखकर दूसरा हँसता है।

एक हम्माम मे सब नगे, (मु०)
सभी मे कुछ न कुछ त्रुटिया होती हैं।
तुल०—धोती के भीतर सब नगे।

एक हाथ ज़िक्र पर, एक हाथ फ़िक्र पर, (मु०)
एक हाथ से माला जपना, दूसरे से काम की फ़िक्र करना।
पाखडी के लिए क०।
ज़िक्र=उल्लेख, यहा ईश्वर का उल्लेख यानी ईश्वर-भजन।

एक हाथ लेना, एक हाथ देना, (व्य०)
नक़द सौदा करना।

एक हाथ से ताली नही बजती
झगडा एक ही तरफ से नही होता। दोनो कुछ न कुछ ज़िम्मेदार रहते है।

एक ही लकड़ी से सबको हांकना
जो जैसा है, उसके साथ वैसा व्यवहार न करना।

एक हुनर और एक ऐब, हर आदमी मे होता है
हर आदमी मे कोई न कोई गुण और अवगुण होता है।

एक हुस्न आदमी, हज़ार हुस्न कपड़ा। लाख हुस्न ज़ेवर, करोड़ हुस्न नखड़ा।
किसी पुरुष या स्त्री का जो कुछ अपना सौन्दर्य है, वह तो होता ही है, पर कपडो से उसमे हजार गुनी, गहनो से लाख गुनी और हाव-भाव तथा कटाक्ष से उसमे करोड़ गुनी वृद्धि हो जाती है।

एक कूकर तू दूबर काहो, दस घर की आवाजाही।
किसी ने कुत्ते से पूछा तुम दुबले क्यो ?
उत्तर मिला—पेट के लिए घर-घर घूमना पडता है।
मतलब पेट की चिन्ता बुरी चीज़ है। कुत्ता भी दुबला बन जाता है।

एकै दाल, एकै चावर, करै गुन ओ बाउर
एक ही वस्तु से किसी को लाभ पहुचता है, किसी को हानि।
बाऊर=वायु पैदा करनेवाली, वादी।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय
(१) एक बार मे एक ही काम करना चाहिए, कई काम एक साथ करने से सभी बिगड जाते हैं।
(२) अपना कोई काम बनाने के लिए किसी एक आदमी को अपने अनुकूल रखना ठीक होता है, सब को अनुकूल बनाने की चेष्टा करने से सभी हाथ से निकल जाते है, और काम भी नही होता।

एवज़ मावज़ गिला नदारद
बुराई का वदला बुराई से चुका देने पर शिकायत किस वात की ?

एहसान कर और दरिया में डाल
उपकार करके भूल जाना चाहिए।

एहसान लीजे जहान का, न एहसान लीजे शाहे-जहान का
वडे आदमियो का एहसान लेना ठीक नही होता।

ऐंचन छोड़ घसीटन मे पड़े
एक मुसीवत से वचे तो दूसरी मे पडे।

ऐंतवार जव जानिए, जव हट्टी लीपें बानिए, (हिं०)
दूकानदार जव अपनी दूकान लीपें, तभी समझो इतवार है।
(दूकानदार प्राय इतवार को अपनी कच्ची दूकानें लीपतें है—उसी ओर सकेत है।)

ऐव करने को भी हुनर चाहिए
हर काम के लिए होशियारी की ज़रूरत पडती है, यहा तक कि वुरा काम करने के लिए भी।

ऐरे गैरे पचकल्यान
फालतू आदमी।
(पचकल्यान वह घोड़ा कहलाता है, जिसका सिर और चारो पैर सफेद हो और वाकी लाल या काला। ऐसा घोड़ा शुभ नही माना जाता।)

ऐरे गैरे फस्ल बहुतेरे
फसल पर अर्थात घर मे अनाज होने पर मुफ्त-खोरो की कमी नही रहती।

ऐरो के चेरो, नौआ के वराहिल
ओछे की खुशामद और नाई की टहल।
जव किसी काम के लिए छोटे की चिरौरी करनी पटे, तव क०।
चेरो=चिरौरी करना।
वराहिल=सेवा-टहल करना।

ऐसन वुड़वक कौन है, जो खात नहीं अघाय
ऐसा कौन मूर्ख होगा, जो पेट भर जाने पर भी खाने को मागे ?

ऐसन सुहाग मोरा नित उठ होला, (स्त्रि०)
ऐसा शुभ दिन नित्य आता रहे।
किसी को अपने प्रति एकाएक अनुकूल होते देखकर कहते है।

ऐसा किया दिल गुरदा, कि रुपया किया खुरदा, (मु०)
ऐसी उदारता दिखाई कि रुपया भुना डाला।
कजूस के लिए व्यग्य मे क०।

ऐसा चाटा कि धोये का चाचा
मतलव, विल्कुल मटियामेट कर दिया।

ऐसा जैसे रुपए के टके भुना लिए
किसी की चीज पर आसानी से कब्ज़ा कर लेना या सरलता से कोई काम कर लेना।

ऐसी-ऐसी छठी बलबल जाय, नौ-नौ पतरी भातें खायं, (स्त्रि०)
ऐसी छठी रोज हुआ करे, जिसमे नौ-नौ पत्तल भात खाने को मिले।
आशीर्वाद है। किसी के घर खूब अच्छा खाने को मिलने पर कहते हैं।
छठी=जन्म से छठे दिन का सस्कार।

ऐसी कही कि धोए न छूटे
किसी से वहुत चुभती हुई वात कहना।

ऐसी तेरे ही तले गंगा वहै है, (स्त्रि०)
किसी एक लटाकू स्त्री का दूसरी से कहना कि तू ही वडी पाक-साफ है (और तो सब गदे है) अथवा तू ही वडी सच्ची है (और तो झूठे है)।

ऐसी वहू सयानी कि पैंचा मागे पानी, (स्त्रि०)
वह ऐसी होशियार है कि पानी भी मागती है तो उधार।
(इसलिए कि दूसरे लोग उससे कभी कोई वस्तु मुफ्त मे न मागें, और यदि मागे भी तो तुरन्त लौटा दिया करें।)

ऐसी मेख मारी कि पार निकल गई
मन को गहरी चोट पहुंचने पर क०।

भेख=लकड़ी या लोहे की बड़ी कील।

ऐसी लटकी कि भुईं में पटकी, (स्त्रि०)

ऐसा नीचा दिखाया कि जमीन चाट रही है, अर्थात वडी लड़ाका वनती थी, सो मूह वन्द हो गया। (किसी एक लड़ाकू स्त्री का दूसरी से कहना।)

ऐसी होती कातनहारी, तो काहे फिरती मारी मारी, (स्त्रि०)

अगर तू ऐसी ही होशियार होती, तो इस प्रकार मारी-मारी क्यो फिरती ?
(ताना मारना)

ऐसे आदमी के दीदे मे साठी कि पीच पसा दीजिए

ऐसे आदमी की आख मे तो चावलो का गरम-गरम माड डाल देना चाहिए।
(किसी दुष्ट को गाली)

ऐसे ऊत रिवाड़ी जाएं, आटा वेचें गाजर खाएं

ऐसे मूर्ख भला रेवाडी जाकर क्या करेंगे, जो आटा वेचकर गाजर खाते हैं।
(रेवाडी राजस्थान मे गल्ले की एक वडी मडी है। इसका भाव यह है कि ऐसा निकम्मा व्यक्ति, जो आटे की जगह गाजर खाता है, वहा जाकर क्या व्यापार करेगा ?)

ऐसे गए जैसे गदहे के सिर से सींग

किसी जगह से चुपचाप उठकर चले आना।
(गधे के सिर पर सीग होते ही नही, इसलिए वह जगह विल्कुल साफ रहती है।)

ऐसे गए जैसे महफिल से जूता

दे० ऊ०।
(मज़ाक मे ही क०। महफिल मे जाने के पहले जूते वाहर ही उतार दिए जाते है और अक्सर चोरी चले जाते हैं।)

ऐसे चूतिया शिकारपुर मे रहते हैं

अर्थात ऐसे मूर्ख किसी और जगह देखिए, जो आपकी वातो मे आ जाए।
(पता नही क्यो और किस प्रकार मौगाव और शिकारपुर (उत्तर प्रदेश) के दो स्थान मूर्खों के लिए प्रसिद्ध है। यह कहने की वात है। मूर्ख सर्वत्र होते है।)

ऐसे पै तो ऐसी, काजल दिए पै कैसी ?

सहज मे तो इतनी सुन्दर ! फिर काजल लगाने पर न जाने कितनी सुदर लगेगी ?

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय ?

वूढे या निकम्मे आदमी के लिए क०।
(यह पूरी कहा० इस प्रकार है, जो वास्तव मे वैल पर कही गई है—
दात घिसे और खुर घिसे,
पीठ वोझ ना लेय।
ऐसे वूढे वैल को कौन वाघ भुस देय।)

ऐसे ही तुमने सोंठ वेची है

अर्थात तुम से मैने क्या कोई कर्ज ले रखा है, जो तुम से दवू।
जव कोई विना प्रयोजन किसी पर अपना रोव जमाए, तव क०।

ऐसे होते तो ईद-बकरीद को काम आते, (मु०)

जव कोई निठल्ला आदमी अपने विषय मे वहुत वढ-चढकर वातें करे, तव क० ।

ओछा पात्र उवलता है

कम भरा हुआ वर्तन छलकता है।
नीच को बडी जल्दी हर बात का घमड हो जाता है।
(अधजल गगरी छलकत जाय)

ओछी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी मरी पदोड़ी, (स्त्रि०)

जव किसी को कोई ऐसी वस्तु मिल जाए, जो उसके पास कभी न रही हो और वह उसका वहुत उपयोग करे, तव क०।

ओछी पूंजी खसमो खाय, (व्य०)

कम पूजी से व्यापार करने पर हमेशा हानि होती है।
खसम=मालिक, व्यापारी से मतलव है।

ओछी लकड़ी फरीस की, विन व्यारे फर्राय।
ओछे के संग वैठ के, सुघड़ों की पत जाय।

झाऊ की ओछी लकडी विना हवा के ही फर-फर करती है।

(यानी वहुत इतराती हैं) बुरो की सगत मे वैठने से भलो की इज्जत जाती है।

ओछे की पीत जैसे बालू की भीत

नीच की मित्रता वालू की भीत की तरह क्षण-स्थायी होती है।

ओछे के घर खाना, जनम-जनम का ताना, (स्त्रि०)

ओछे आदमी के घर कभी खाने नही जाना चाहिए, क्योकि वह वात-वात मे उसकी याद दिलाएगा। तात्पर्य छोटे आदमी का कभी एहसान नही लेना चाहिए।

ओछे के बैल गिरे

ऐसी घटना जिसकी ओर किसी का ध्यान नही जाता। जव कोई छिछोरा आदमी अपने किसी थोड़े नुकसान को वहुत वढा-चढाकर दिखाए, तव क०।

ओछे के साथ एहसान करना ऐसा है, जैसे वालू मे मूतना

ओछे के साथ एहसान करना विल्कुल व्यर्थ होता है, क्योकि वह उसका वदला चुकाना नही जानता।

ओछे संग ना वैठिए, ओछा वुरी वलाय।
पल मे हो घी खीचड़ी, पल मे विसयर भाय।

ओछे का साथ कभी न करना चाहिए। वह एक वडी विपत्ति है।

कभी तो वह वहुत चिकनी-चुपडी वातें करता है, और कभी सर्प वनकर डंसता है।

विसयर=विषधर।

ओछे से खुदा काम न डाले

भगवान ओछे से वचाए।

ओझ भरे, न रोग झरे

न पूरा पेट भरे, न रोग दूर हो।

न मन की इच्छाए कभी पूरी हो, और न चित्त को शान्ति मिले।

ओढ़नी की वतास लगी

यानी औरत का रग चढ गया।

विवाह होते ही जो औरत की वहुत फिक्र करने लगे, उसके लिए क०।

ओढ़ी चादर हुई वरावर 'मै भी शाह की खाला हूँ,' (स्त्रि०)

चादर पहिन कर सामने आ गई और कहती हे—मैं भी शाह की फूफी हू।

वहुत शेखी मारनेवाले के लिए क०।

ओनामासी न आवे 'भैया पोथी ला दे', (स्त्रि०)

पढे-लिखे हैं नही, किताव मागते हैं।

ऐसी वस्तु मागना, जिसके उपयोग की क्षमता न हो।

(ओनामासी ओ३म् नम सिद्धम् का विकृत रूप है। अक्षरारम के समय वच्चो से पाटी पर लिखवाते हैं।)

ओलती का पानी वलेंडी नहीं जाता

नियम विरुद्ध कोई काम नही होता।

(ओलती छप्पर के ढाल के उस किनारे को कहते है, जिससे वर्षा का पानी नीचे गिरता है। वलेंडी छप्पर के ऊपर की मेड होती है। वलेंडी का पानी ओलती की तरफ ही आएगा, उल्टा ऊपर नही जाएगा।)

ओलती तले का भूत, सत्तर पुरखों का नाम जाने

घर का आदमी घर के सव भेद जानता है।

ओल मे से निकलकर चूल मे पडना

एक हलकी मुसीवत से निकलकर वडी मुसीवत मे पडना।

ओल=चूल्हे के पीछे वना हुआ वह छेद, जिस पर साग-तरकारी गरम होने के लिए रख दी जाती है।

चूल=चूल्हा।

ओसों प्यास नहीं वुझती

जव किसी को कोई वस्तु इतनी कम मिले कि उससे तृप्ति न हो, तव क०। कजूसी से काम लिया जाए, तव भी कह सकते है।

औंधा खाय लौंडा
जल्दबाज़ी करनेवाला औंधा गिरता है, अर्थात हानि उठाता है।

औंधी खोपडी, उल्टी मत
मूर्ख के लिए क०।
(औंधी खोपडी एक मुहावरा है, जिसका अर्थ बुद्धिहीन होता है।)

औंधे मुंह, चिराग पाव
तू औंधे मुह गिरे, तेरे पाव तले चिराग हो, अर्थात तेरी दुर्गति हो। आवेश मे एक तरह की गाली।

औंधे मुंह दूध पीते है
अर्थात अभी बिल्कुल बच्चे हैं। कुछ जानते नही। जो बहुत सीधा-सादा बनकर दिखावे, उससे ताने मे क०।

औंधे मुंह, शैतान का धक्का
एक गाली कि तू औंधे मुह गिरे और तुझे शैतान का धक्का लगे।

औघट चले, न चौपट गिरे
न बुरे रास्ते चले, न हानि उठाए।

और की फुल्ली देखते है, अपना टेंटर नहीं
दे०—अपना टेटर देखें नही . . .।

और की बुराई अपने आगे आई
दूसरो के कर्मों का फल हमे भोगना पडा।

और की भूक न जानें, अपनी भूक आटा सानें, (स्त्रि०)
दूसरो की भूख की चिन्ता नही, अपने लिए आटा गूधते है।
स्वार्थी के लिए क०।

औरत और ककडी की बेल जल्दी बढ़ती है
लडकिया शीघ्र जवान होती है।

औरत और घोड़ा रान तले का
औरत और घोडा, इन पर यदि पर्याप्त नियत्रण न रखा जाए, तो वे बेकाबू हो जाते है।

औरत का क्या एतबार ?
स्त्री विश्वास के योग्य नही होती।

औरत का खसम मर्द, मर्द का खसम रोज़गार
स्त्री जिस प्रकार पुरुष के सहारे रहती है, उसी प्रकार पुरुष रोजगार के सहारे।

औरत का राज है
जिस घर मे स्त्री की चलती हो, वहा क०।

औरत की अक्ल गुद्दी पीछे होती है
(१) औरत को बाद मे सूझती है। उसकी बुद्धि तुरत काम नही करती। अथवा
(२) पिटने पर ही औरत को अक्ल आती है।
गुद्दी=गर्दन के पीछे का हिस्सा।

औरत की जात बेवफा होती है
औरत हमेशा पुरुष को धोखा देती है।

औरत की मत मान
औरत की सलाह से काम न करो।

औरत की सलाह पर जो चले वह चूतिया
स्त्री की बात माननेवाला बेवकूफ।

औरत के नाक न होती तो गू खाती
(१) यदि दुर्गंध न आती, तो स्त्री गू भी खा लेती।
(२) यदि नाक कटने का डर न होता, तो बुरे से बुरा काम करती।

औरत को नादारी में जाचे
स्त्री की परीक्षा आपत्तिकाल मे ही होती है।

औरत न मर्द, मुआ हिजड़ा है।
हडडी न पसली, मुआ छिछडा है।
गाली।

औरत पर हाथ उठाना ठीक नहीं
औरत को मारना नही चाहिए।

औरत पर जहां हाथ फिरा, और वह फैली
विवाह के बाद कम उम्र की लड़की भी शीघ्र जवान बन जाती है।

औरत मर्द का जोड़ा है
स्त्री की पुरुष से और पुरुष से स्त्री की शोभा है। अथवा स्त्री और पुरुष एक दूसरे के बिना नही रह सकते।

औरत रहे तो आपसे, नहीं तो जाय सगे बाप से

(१) स्त्री यदि स्वय ही सच्चरित्रा है, तब तो वह रहेगी, अन्यथा अपने बाप के साथ भी निकल जाती है।

(२) स्त्री यदि अपने आप चाहे, तो घर मे रह सकती है, नही तो उसका बाप भी उसे सम्हाल कर नही रख सकता।

और दिनों खीर पूड़ी, परब के दिन दांत निपोरी

और दिनों तो खुशी मनाना, पर खुशी के मौके पर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना।

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो अवसर के लिए पैसा बचाकर नही रखता, तथा दूसरे मौको पर व्यर्थ खर्च करता है।

और मजाक भूल गए, मेरे पीस आइयो

किसी स्त्री का अपने प्रेमी से कथन है कि बस 'मेरे यहा पीस आओ'—तुम्हे इसके सिवा और कोई मजाक नही आता।

(पीसने के बहाने उसका प्रेमी क्यो बुला रहा है, स्त्री इसे जानती है, इसीलिए हँसकर इस तरह की बात कहती है।)

और रंग का गिलहरा

रग-ढग या पोशाक-पहिनावे मे यकायक परिवर्तन होने पर क० कि यह तो दूसरे रग का गिलहरा आ गया!

गिलहरा=गिलहरी नामक जीव का पुल्लिग।

औसर का चूका आदमी और डाल का चूका बंदर नहीं संभलता

आदमी अगर किसी अवसर से लाभ उठाने से चूक जाए, और बदर भी एक डाल से दूसरी डाल पर उछलते समय ठिकाने पर न पहुच सके, तो ये दोनो फिर समलते नही, अर्थात हानि उठाकर ही रहते हैं।

पाठा०—औसर का चूका किसान।

औसर चूकी डोमनी, गावे ताल बेताल

अगर डोमनी मौके पर किसी जगह गाने-बजाने न जा पाए, तो वह बेसुरा गाने लगती है। तात्पर्य अवसर से लाभ न उठानेवाला व्यक्ति पछताता है।

(डोमनियां डोम जाति की स्त्रिया होती हैं, जो शादी-ब्याह मे लोगो के घर जाकर गाती-बजाती है और उसके लिए इनाम पाती हैं। अत. कोई डोमनी अगर मौके पर किसी के यहा न पहुच पाए, तो स्वाभाविक रूप से उसे उसका बहुत दुख होगा, और वह ठीक ढग से गा नही पाएगी।)

कोई अच्छा मौका हाथ से निकल जाने पर जब आदमी का दिमाग सही न रहे और वह अड-बड काम करने लगे, तब क०।

क

कंजा भागवान होता है

कंजी या भूरी आखोवाला भाग्यवान होता है। (एक लोक-विश्वास)

कंजूस मक्खीचूस

सूम के लिए क०।

कंथ न पूछे बात मेरा घना सुहागन नाम

पति तो बात नही पूछता और अपना नाम बतलाती है घना सुहागन!

जब कोई अपने आप ही व्यर्थ मे किसी स्थान का मालिक बना फिरे, तब क०।

('कत न पूछे बात मेरा धरा सुहागन नाम' भी कहते हैं।)

घना=नाम विशेष।

तुल०—गाठ मे कौड़ी नही, नाम धन्नासेठ।

कंद लुटें और कोयलों पर मुहर

बडे खर्चों में कमी न करके छोटे-छोटे खर्चों में साव-धानी बरतना।

ककड़ी के चोर की गर्दन नहीं मारते

किसी साधारण अपराध के लिए कडा दड नही देना चाहिए।

(मराठी मे है—काकडी ची चोरी सुळावा मार)

कचरी खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए

वाहर जाकर व्यर्थ समय नष्ट करनेवाले के लिए क०।

कोई आदमी रोजगार के लिए परदेश गया, पर लाभ के स्थान पर गाठ की पूजी खर्च करके घर वापस आ गया।

कचरी=फूट की जाति का एक फल।

कचहरी का दरवाजा खुला है

अर्थात सीधे-सीधे लडने की जरूरत नही, जाकर नालिश करो, तुम्हे कोई रोकता नही।

जव दो व्यक्तियो मे किसी विषय को लेकर, विशेषकर जमीन-जायदाद को लेकर कोई झगडा होता है, तो प्राय: वह व्यक्ति जो अधिक सवल होता है, दूसरे से इस प्रकार की वात कहा करता है।)

कच्चा दूध सबने पिया है

सव मनुष्य हैं और भूल सभी से होती है।

कच्चा दूध से मतलव मा के दूध से है।

कच्चा तो कचौडी मागे, पूरी मागे पूरा।
नोंन मिर्च तो कायथ मागे, बामन मागे बूरा।

लडके कचौडी की तरह की कुरकुरी चीज़ पसंद करते हैं, जवान मुलायम पूडी चाहते है, कायस्थो को नमकीन पसंद होता है और ब्राह्मणो को मिष्ठान्न प्रिय है।

कच्ची कली कचनार की, तोड़त मन पछताय

कोई व्यक्ति कचनार की कच्ची कली को तोड़ने जा रहा है, पर यह देखकर कि अभी उसमे मधुर रस और पराग की वहुत कमी है, उसका मन पछताता भी है। (यह एक दोहे की कडी है जो अविकसित यौवना नायिका को लक्ष्य करके कही गई है और प्रसिद्ध लोककथा 'सारगा सदावृक्ष' (सदावत्स) मे सुनने को मिलती है।)

कच्ची पेंदी, दस्तरख्वान का जरर, (मु०)

मिट्टी के कच्चे बर्तन से दस्तरख्वान के खराव होने का डर रहता है, क्योकि मिट्टी के वर्तन से पानी टपकेगा।

(अनुभवहीन के लिए कहा जाता है।)

दस्तरख्वान=वह चादर जिस पर खाना रख कर खाया जाता है।

कच्ची शीशी मत भरो, जिसमे पड़ी लकीर।
वालेपन की आशकी, गले पड़ी जंजीर।

लड़कपन मे प्रेम करना अच्छा नही होता। उससे जीवन मे कष्ट भोगने पडते है।

(ऐसा काच जिसमे लकीर पडी हो जल्दी टूट जाता है।)

कच्चे बांस को जिधर से नवाओ नव जाय, पक्का कभी न टेढ़ा होय

छुटपन मे बच्चो के स्वभाव को इच्छानुसार मोडा जा सकता है, वाद मे उनकी आदते नही वदलती।

कचौडी की बू अब तक नहीं गई

जव कोई साधारण आदमी वड़े ओहदे पर पहुचकर फिर ज्यो का त्यो हो जाए, लेकिन अपने वड़प्पन की वू-वास को न छोडे, तव क०।

कज़ा के आगे हकीम अहमक़

मौत के आगे वैद्य-हकीम की कुछ नही चलती।

कज़ा के तीर को ढाल की हाजत नहीं

क्योकि वह तीर किसी के रोके रुक ही नही सकता।

हाजत=ज़रूरत।

कज़ा से चारा नही

मौत पर किसी का वश नही।

कटेगा वटाऊ का, सीखेगा नाऊ का

किसी की हानि की परवा न करके अपना लाभ देखना।

वटाऊ=राहगीर, यात्री।

पाठा०—कटे सिर काऊ का, वेटा सीखे नाऊ का।

कटे पर नोन-मिर्च लगाना

जली-कटी बातो से किसी की मानसिक पीड़ा को और वढ़ाना।

कड़का सोहै पाली ने, विरहा सोहै माली ने, (ग्रा०)

कड़खा तो गडरियो के मुंह से अच्छे लगते हैं और विरहा मालियो के मुह से।

जिसका जो काम है, वह उसी को शोभा देता है।

कडका=कड़खा, युग के समय के गीत।

विरहा=एक प्रकार के श्रृंगार गीत।

कड़ाकड़ वाजे थोथे वांस

खोखले वासो से आवाज अधिक निकलती है। निकम्मा आदमी वहुत वात करता है।

कड़ी काट वेलन वनाना

किसी छोटी वस्तु को तैयार करने के लिए वडी वस्तु को नष्ट कर डालना ।

कडी=लकडी की लवी और मोटी धरनी होती है। जिस पर छत टिकी होती है। उसे काट कर वेलन वनाना एक मूर्खतापूर्ण कार्य है।

कड़ुआ जहर

(१) जहर की तरह कड़ुवी वस्तु।

(२) ऐसा कार्य जो अप्रिय होने पर भी करना पडे।

कड़ुआ थू-थू मीठा हपहप

अच्छे को ले लेना और वुरे को अस्वीकार कर देना कि दूसरे उसे झेलें ।

कड़ुवा स्वभाव, डूबती नाव

दोनो खतरनाक होते है।

कड़ुए से मिलिए, मीठे से डरिए

कड़ुआ वोलनेवाला खरी वात कहता है, इसलिए उससे मित्रता रखनी चाहिए। मिष्टभाषी खुशामदी होता है, उससे वचना चाहिए।

कढ़ी का-सा उवाल

जरा-जरा-सी वात मे गुस्सा आना ।

कढी =वेसन और मठे से वना एक व्यजन।

कढ़ी मे कोयला

(१) अच्छी वस्तु के साथ वुरी का मिल जाना ।

(२) भले के साथ वुरे का सग ।

कतल भूजी कव्ल अजीजा (मु० स्त्रि०)

इसका शुद्ध रूप है—क़त्लल मूजी क़व्लल ईज़ा, इसके पहले कि साप काटे, उसे मार डालना चाहिए।

कदम-ए दरवेशां रद्दे वला, (फा०)

सतो के आगमन से विपत्तियां दूर होती हैं ।

कद्र उल्लू की उल्लू जानता है। हुमा को कव चुग़द पहिचानता है ?

उल्लू की कद्र तो उल्लू ही कर सकता है, वह हुमा की कद्र करना क्या जाने ?

(हुमा एक काल्पनिक पक्षी है, जिसके विषय मे मुसल्मानो के यहा विश्वास है कि यदि वह किसी के सिर पर वैठ जाए, तो वह आदमी राजा वन जाता है।)

चुग़द=(फा०) उल्लू । मूर्ख ।

कद्रदा की जूतियां उठाइए, नाक़द्रे के पापोश मारने न जाइए

जो अपने गुणो की कद्र करे, उसकी जूतिया उठाने को तैयार रहना चाहिए। जो किसी बात को कुछ न समझे, ऐसे नाकद्रे को जूतिया मारने भी नही जाना चाहिए।

कद्र खो देता है हर वार का आना-जाना

किसी जगह वार-बार जाने से सम्मान घटता है।

(अग्रे०—Familiarity breeds contempt.)

कद्रदां के खुदा पांयते विठाए, वेकद्र के सिरहाने भी न विठाए

गुण-ग्राहक के पैरो तले भी हमे वैठना पसद है, पर जो हमारे गुणो की कद्र न जानता हो, उसके सिरहाने वैठना भी हम पसद नही करेंगे, यानी अपना झूठा सम्मान नही चाहते।

कद्रे आफियत कसे दानद कि व-मुसीवते गिरिफ़्त आयद, (फा०)

जो कभी दुख उठा चुका हो, वही सुख का मूल्य जानता है।

कद्रे आफियत मालूम होगी

सुख का मूल्य मालूम पडेगा (दुख पड़ने पर)।

कनखजूरे के कै पांव टूटेंगे

किसी वडे साधन-सपन्न व्यक्ति की कितनी हानि होगी ?

मतलव थोडी-वहुत हानि उसको नही अखरती। जैसे कनखजूरे को अपने दो-एक पावों का टूटना नही अखरता। (कनखजूरा एक पतला लवा कीडा होता है, जिसके वहुत से पैर होते हैं।)

कनात वडी दौलत है

सतोष वडा धन है।

(स०—सतोष परम सुखम्।)

कनौड़ी विल्ली चूहों से कान कटावे

कमजोर विल्ली चूहो से कान कटवाती है यानी दवती है।

(कनौडी का ठीक अर्थ काना या अधा है।)

कपटी की पीत, मरन की रीत

कपटी से प्रेम करना मौत को बुलाना है।

कपड़ा कहे तू मुझे कर तह मै तुझे करूं शह

कपडा कहता है कि तू मुझे अच्छी तरह तह करके रखे, तो मैं तेरी शान बढाऊगा।

मतलव, कपडो को सभाल कर रखना चाहिए।

कपड़ा पहनिए जगभाता, खाना खैए मनभाता

कपडा दूसरो की पसद का पहिने, भोजन अपनी पसद का करे।

कपड़े फटे ग़रीवी आई

फटे कपड़े पहिनना दरिद्रता का चिह्न है।

कपूत वेटा मरा भला

वुरे लडके का तो मर जाना ही अच्छा।

कव के वनिया, कव के सेठ

किसी के सहसा धनवान वन जाने पर क०। कल तक नोन-गुड़ वेचते थे, अब सेठ बन गए।

कव दादा मरेंगे, कब वेल वटेगी

किसी एक काम का दूसरे काम की वजह से अटका पडा रहना।

पाठा०--कव दादा मरेंगे, कव वैल वटेंगे।

वेल=एक तरह का नेग होता है, जो गमी होने पर नाई-भाटो को दिया जाता है।

कव मरै, कव कीड़े पड़ें

गाली।

कव मुआ और कव राक्षस हुआ

उसके लिए कहा जाता है, जो नीच से अचानक बडा वन जाए और रोव जमाए, अर्थात वडा आदमी कव से वन गया? व्यग्योक्ति।

कव के राजाई सुर भये, कोदो के दिन विसर गए

बडे आदमी कब से वन गए? क्या उन दिनो को भूल गए जब कोदो की रोटी खाया करते थे।

(जव कोई आदमी सहसा धन-सम्मान पाकर गरीबी के दिनो को भूल जाए और वढ-चढकर वाते करे। कोदो एक वहुत हल्की किस्म का अनाज होता है।)

कवाड़ी के छप्पर पर फूस नहीं

जो काठ-कवाड का व्यापार करे, उसके छप्पर पर फूस न हो, एक आश्चर्य की बात।

(इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि काठ-कबाड का व्यापार करनेवाले के पास कभी पैसा इकट्ठा नही होता।)

कवित सोहे भाट ने, और खेती सोहे जाट ने

कविता भाट को शोभा देती है और खेती जाट को। जिसका जो काम हे, वह उसी को अच्छा लगता है। अथवा उसे वही कर सकता है।

कबीरदास की उल्टी बानी, आंगन सूखा, घर मे पानी

यह कवीर की उलटवासी के नाम से प्रसिद्ध उनकी गूढ रचनाओ का एक नमूना है। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि मनुष्य भोग-विलास मे डूबा रहता है, किन्तु उसका मन ईश्वर-भक्ति मे सूखा ही रहता है।

कबीरदास की उल्टी बानी, वरसे कबल भीजे पानी

दे० ऊ०। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि इस ससार मे सज्जन पुरुप दुख भोगते है और असज्जन मौज उडाते है।

(वास्तव मे कवीर की इन उलट वासियो का कोई ठीक अर्थ लगाना वडा कठिन है। साधारण जनता मे वे किसी अद्भुत या अनहोनी घटना की टिप्पणी के रूप मे ही व्यवहृत होती है।)

कबूतरखाने का-सा हाल है, एक आता है, एक जाता है

किसी स्थान विशेष पर लोगो का वरावर आना-जाना।

कब्र का मुंह झांककर आए हैं

मौत के मुह से वचकर आए है।

कब्र पर कब्र नहीं बनती

(१) कब्र पर कब्र कोई नही वनाता।

(२) घर मे व्यक्तियो का मत एक नही होता।

(३) विधवा फिर विवाह करे, तो उसकी भी भर्त्सना करने के लिए क०।

(४) फिज़ूलखर्ची के लिए अथवा जव कर्ज़ पर कर्ज़ चढ़ता जाए, तव भी कहा जाता है।

कब्र मे पांव लटकाए बैठा है

मरने को बैठा है। (वृद्ध के लिए क०।)

कब्र मे भी तीन दिन भारी होते हैं

मरने के बाद भी आदमी का परेशानियो से पीछा नही छूटता।

(मुसलमानो का विश्वास है कि कब्र मे दफनाए जाने के बाद उन्हे तीन दिन तक खुदा के सामने जिन्दगी का हिसाब देना पडता है।)

क़ब्र में रख के ख़बर को न आया कोई।
मुए का कोई नहीं, जीते-जी का सब कोई।

मरने के बाद कोई ख़बर नही लेता, सब जीते-जी के ही साथी होते है, मरे का कोई नही।

कभी कुंडे के इस पार, कभी कुंडे के उस पार

भगेडी या आलसी के लिए क०।

कुडा = भग घोटने का बर्तन।

कभी के दिन बड़े, कभी की रात

(१) समय एक-सा नही रहता।

(२) आज अगर तुम्हारा मौका लगा है, तो कभी हमारा भी लगेगा।

कभी घुनघुना, कभी मुठ्ठी भर चना

कभी उबले गेहू, तो कभी चने।

(१) जब जो मिला खा लिया। सतोषी की उक्ति।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी नहीं

दे० ऊ०।

कभी न कभी टेसू फूला

जब कोई मनुष्य अप्रत्याशित रूप से कोई भला काम कर बैठता है, तब उसके लिए क०।

कभी न गाडू रन चढ़े, कभी न बाजी बम

कायर के लिए कहा गया है कि वह न तो कभी युद्ध-क्षेत्र मे ही गया, और न कभी उसके लिए जुझाऊ बाजे ही बजे।

(यह गंग कवि के नाम से प्रसिद्ध एक दोहे की अर्द्धाली है, जिसे कहा जाता है कि उन्होंने मरते समय कहा था और फिर वह हाथी के पैर तले कुचलवा डाले गए थे। पूरा दोहा इस प्रकार है—

कभी न गाडू रन चढे, कभी न बाजी बम।
सकल सभा को राम-राम, बिदा होत कवि गग।)

कभी न देखा बोरिया, सुपने आई खाट

हैसियत से बाहर के ऊचे ख्याल बांधनेवाले के लिए क०।

कभी न देखी चद्दर-चदरी

किसी स्त्री की घरवालों से शिकायत कि तुम लोगो ने मेरे लिए कभी कोई कपड़ा नही बनवाया।

कभी न सोई साथरे, सुपने आई खाट

दे०—कभी न देखा बोरिया...।

साथरा = टाट।

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर

कभी एक आदमी का दूसरे से काम पडता है, तो कभी दूसरे का भी उससे।

(गाडी को नदी पार जाने के लिए नाव की आवश्यकता पडती है। किन्तु नाव जब जमीन पर बनकर तैयार होती है, अथवा खराब हो जाती है, तब उसे गाडी पर लादकर ही नदी मे ले जाते हैं या वहा से लाते है।

कभी रंज, कभी गंज

कभी दुख तो कभी सुख। जब जैसा समय आ जाए, भोगना ही पड़ता है।

गज = ढेर राशि; बहुत-सा।

कम खर्च बालानशीन

ऐसी चीज जो कम दामो की हो, और बढ़िया तथा टिकाऊ भी हो।

कमबख्त गए हाट, न मिली तराजू न मिले बाट

बेशऊर के लिए क० कि दूकानदार ने जो कुछ दिया वही लेकर आ गए, तौलकर नही देखा कि उसने कितना दिया। अथवा अभागे के लिए भी यह कहा है कि वह जहा जाता है, वहीं उसके काम मे कुछ न कुछ बाधा पड जाती है।

कमबख्ती की निशानी, जो सूख गया कुएं का पानी

यह मेरा दुर्भाग्य है जो कुए का पानी ही सूख गया।
सहसा कोई अनिष्ट हो जाने पर भाग्य को कोसना।

तुल०—जह-जह संत मठा को जाएं।
तह तह भैंस पडा दोऊ मर जाएं।

कमर न बूता, साझे सूता, (पू०, स्त्रि०)
अपने निखट्टू पति के प्रति किसी स्त्री का कथन।
कमर मे तोसा, बड़ा भरोसा
गाठ की चीज समय पर काम आती हे
तोसा=(फा० तोश) कलेवा, नाश्ता।
क़मर दर अकरब है
चद्रमा वृश्चिक मे है। अर्थात ग्रह बुरे है।
(वृश्चिक राशिवाले के लिए चद्रमा का उक्त राशि मे होना शुम नही माना जाता।)
कमली ओढने से फकीर नहीं होता
भेप वदलने से कोई साधु नही हो जाता।
कमाई न धमाई, मोके भूंजे भूंजे खाई, (पू०, स्त्रि०)
किसी स्त्री का अपने निकम्मे पति या पुत्र से कथन।
कमाऊ आवै डरता, निखट्टू आवे लडता, (स्त्रि०)
काम करनेवाला तो विनम्र होता है और निकम्मा लडाकू।
कमाऊ खसम किसने न चाहे, (स्त्रि०)
सभी स्त्रिया चाहती है कि उन्हे कमाऊ पति मिले, अथवा कमाऊ पति को सभी स्त्रिया चाहती है।
कमाऊ पूत, कलेजे सूत, (पू०, स्त्रि०)
कमाऊ लडके को सभी चाहते है।
कलेजे सूत=कलेजे से लगकर सोता हे।
कमाऊ पूत की दूर वला
कमाऊ लडका कष्ट नही भोगता।
कमान से निकला तीर ओर मुंह से निकली बात फिर नहीं आती
मुह से जो निकला, सो निकला, वह वापस नही लिया जा सकता। (इसलिए वात सोच समझकर करे।)
कमानी न पहिया, गाड़ी जोत मेरे भैय्या, (ग्रा०)
किसी काम का पहले से कोई सवध है ही नही, फिर भी उसे करने की तैयारी करना।
कमाय न धमाय, मोको भूजे भूंजे खाय, (स्त्रि०)
अकर्मण्य पति या पुत्र।
कमावें खानखाना, उडावें मिया फहीम
किसी के कमाए धन को कोई उडावे।
(कहा जाता है मुगल सम्राट अकवर के इतिहास-प्रसिद्ध वजीर वैरामखा के पास एक फहीम नाम का गुलाम था, जो वडा उदार था और मालिक का पैसा आख मूदकर लोगो पर खर्च कर दिया करता था।)
कमावे धोतीवाला, उडावे टोपीवाला
कमावे कोई और मौजे करे कोई। 'धोतीवाला' से अभिप्राय भारतीय से है और 'टोपीवाला' से मतलव अग्रेज से। इस प्रकार कहावत का अर्थ होता है कि अगेज यहा भारतवासियो की गाढी कमाई पर मौज उडाते रहे।
करके खाना और मौज करना
परिश्रम की रोटी खाओ और मौज करो।
कर खेती परदेस को जाए, वाको जनम अकारथ जाए, (कृ०)
जो खेती करके स्वय उसकी देखभाल नही करता, वह अपना समय व्यर्थ खोता है। अर्थात खेती मे वह सफल नही होता।
करघा छोड़ जुलाहा जाए, नाहक चोट बिचारा खाए
अपना काम छोड कर, व्यर्थ दूसरो के झगडे मे पडने से हानि उठानी पडती है।
(कथा है कि एक जुलाहा अपने मित्रो के साथ तमाशा देखने गया। रास्ते मे पानी वरसने लगा। उससे वचने के लिए वह एक मकान की ओट मे खडा हो गया। सयोग से मकान पुराना था और गिर पडा, जिससे जुलाहे को चोट लग गई। यह कहा० साधारणत इस प्रकार प्रचलित है करघा छोड तमाशे जाए, नाहक चोट जुलाहा खाए।)
करघा बीच जुलाहा सोहे, हल पर सोहे हाली।
फोजन बीच सिपाही सोहे, बागन सोहे माली।
अपनी-अपनी जगह सब शोभा पाते हैं।
हाली=हल चलानेवाला, किसान।
करछी हाथ सैलाने ही को करते हैं
करछुल दाल-तरकारी चलाने के लिए ही हाथ मे लिया जाता है। अर्थात नौकर को काम करने के लिए ही रखते है।

करतब की विद्या है
कोई काम हो, करने से ही आता है।
(स०—विद्या अभ्यास सारिणी)

करता उस्ताद, ना करता शागिर्द
जो काम का अभ्यास करता रहता है, वही असली उस्ताद है, जो नही करता, वह उस्ताद होकर भी शागिर्द के समान है।

कर तो डर, न कर तो खुदा के गजब से डर
बुरा काम करे या न करे, पर हर हालत मे ईश्वर के कोप से तो डरना ही चाहिए।
(इसकी एक कथा है कि किसी जगह दो साधु थे। एक बार एक ने कहा—'कर तो डर, न कर तो भी डर'। दूसरा वोला—'मै करू नही तो डरू क्यो ?' पहला विना कुछ कहे चला गया। इसके कुछ दिनो पश्चात राजा के महल मे चोरी हुई। चोरो का नियम था कि वे चोरी के माल मे से कोई एक वस्तु किसी साधु को भेट किया करते थे। अतएव उन्होने एक सोने का हार ले जाकर उस दूसरे साधु के गले मे डाल दिया। उस समय वह आखे मूदकर ध्यान-मग्न था। इस कारण उसे इसका कुछ पता नही चला। दूसरे दिन जव उसके गले मे हार पाया गया, तो उसे चोर समझकर फासी की सजा दी गई। सिपाही जव उसे फासी देने के लिए ले जा रहे थे, तो रास्ते मे वही पहला साधु मिल गया। उसे देखते ही उसने कहा—देखो भाई, मेरी वात ठीक निकली या नही और उसने कहावत का अगला अश दुहरा दिया।)

करदनी खेश, आमदनी पेश, न की हो तो कर देख
जैसा करोगे वैसा ही पाओगे, न देखा हो तो करके देख लो।

करना चाहे आशकी और मम्मा जी का डर
जव इश्क ही करने चले तो फिर डर किस वात का ?
(मुसलमानो मे मामा-फूफा की लडकी से विवाह करना धर्म-सगत माना जाता है।)

करनी करे तो क्यो डरे, करके क्यो पछताय।
वोवे पेड़ वबूल के, आम कहा से खाय।
बुरे काम का परिणाम तो भोगना ही पडेगा। उसके लिए पछताने से क्या होता है? ववूल का पेड वोकर कोई आम कैसे खाएगा।

करनी खाक की बात लाख की
निकम्मे और वातूनी के लिए क०।

करनी ना करतूत, कहलाएं पूत सपूत
न काम के न काज के, कहलाते हैं सपूत।
निकम्मा लडका।

करनी ना करतूत, चलियो मेरे पूत
दे० ऊ०।

करनी ना करतूत, लडने को मजबूत
व्यर्थ का दगा-फसाद करनेवाला। प्राय निकम्मे लडके से क०।

करनी ना धरनी, नाम गुलबिया
नाम अच्छा, पर करनी कुछ नही।

करने को चाकरी, सोने को घर, (पू०)
जो घर मे पडा-पडा अपना समय नष्ट करता रहे और वाहर जाकर कोई काम-धधा न करना चाहे, उसके लिए व्यग्य मे क०।

कर पानी, न मुंह पानी
ऐसा गदा लड़का जो कभी न हाथ धोता है, न मुंह।

कर भला, हो भला, अत भले का भला
भला करनेवाले का अत मे भला ही होता है।

करम के वलिया, पकाई खीर हो गया दलिया
भाग्यहीन के लिए कहा जाता है कि वह जिस काम मे हाथ डालता है, वही विगड जाता है।
(भाग्यवादी कहावतो का सिलसिला नीचे भी है।)

करमरेख अमिट है
भाग्य का लिखा होकर रहता है।

करम रेख ना मिटै, करै कोई लाखो चतुराई
दे० ऊ०।

करमहीन खेती करै, बैल मरै या सूखा परै
भाग्यहीन जो काम करता है, वही गडबड हो जाता है।

करमहीन जब होत है, सभी होत हैं वाम।
छाह जान जहं बैठने, तहा होत है घाम।
भाग्य विपरीत होने पर कोई साथ नही देता।

करमहीन सागर गए, जहां रतन का ढेर।
कर छूअत घोघा भए, यही करम का फेर।
अभागे को अपने सब कामो मे निराश होना पडता है। यहा तक कि वह रत्न को भी हाथ लगा दे तो वह घोघा वन जाता है।

कर लै सो काम, भज लै सो राम
ससार मे आकर मनुष्य जितना भी काम कर ले और जितना भी राम को भज ले, उतना ही अच्छा।

कर सेवा, खा मेवा
सेवा का फल अच्छा मिलता है।

करा और कर न जाना, मै होती तो कर दिखाती, (स्त्रि०)
कोई स्त्री पर-पुरुष से प्रेम करके विपत्ति मे पड गई। उसके प्रति किसी चतुर स्त्री का कथन कि—तूने काम किया और करते न वना। मैं होती तो करके दिखाती कि यह काम कैसे किया जाता है। ऐव करना और फिर छिपा लेना, हरेक के वश का नही।

करिया वाह्मन, गोर चमार; तेकरा संग न उतरे पार
इनका विश्वास नही करना चाहिए।
तेकरा = तिन के।

करिए मन की, सुनिए सब की
वात सब की सुने, पर करे वही, जो अन्त करण कहे।

करें कल्लू भरें लल्लू, (पू०)
करे कोई, दड कोई भोगे।

करें परपंच, कहलाए पच
छल-कपट करनेवाले पचो पर व्यग्य।

करे एक, भरें सब
एक की भूल का प्रायश्चित्त पूरे समाज को करना पडता है।

करेगा सो भरेगा
जो करेगा सो भुगतेगा।
(मराठी मे भी है—करील सो भरील)

करे दाढीवाला, पकडा जाए मूछोवाला
वडो की भूल के लिए छोटे जिम्मेदार वनाए जाते है।

करो खेती और बोओ बैल, (कृ०)
खेती के काम मे बैल नष्ट हो जाते है।
अथवा खेती करना चाहते हो, तो अच्छी नस्ल के बैल पैदा करो।

करो खेती और भरो दंड, (कृ०)
किसान को लगान और सिंचाई आदि का जो रुपया देना पडता है, उससे अभिप्राय है। अथवा खेती मे वडे कष्ट उठाने पड़ते है

करो तो सवाब नहीं, न करो तो अजाब नहीं
ऐसा काम, जिसके करने या न करने से न कुछ भलाई हो न बुराई।

कर्ज काढ़ मेहमानी की, लौडों मार दिवानी की
किसी ने ऋण लेकर अतिथि-सत्कार किया। नतीजा यह हुआ कि लडको ने मार-मार कर अक्ल ठीक कर दी। मतलब यह कि पिता के कर्ज़ को लडके पसद नही करते, क्योकि उसका वोझ उन्हे वहन करना पडता है।
(स०—ऋणकर्ता पिता शत्रु।)

कर्ज की क्या मा मरी है?
अर्थात क्या मुझे कही कर्ज मिलेगा नही? तुम नही दोगे, दूसरी जगह से ले लूगा।

कर्ज़दार छाती पर सवार
जिसे किसी से अपना रुपया लेना होता है, वह हमेशा उसे परेशान करता है।

कर्जा काढ करै व्यवहार, मेहरी से जो रूठे भतार।
वे-वुलावत वोलै दरवार, ये तीनो पशम के वार।
जो कर्ज़ लेकर व्यापार करे, जो अपनी स्त्री से रूठे और जो विना पूछे राज-दरवार मे वोले, उसे महान मूर्ख समझना चाहिए।

कल का लीपा देव वहाय, आज का लीपा देखो आय, (स्त्रि०)
जो हुआ सो हुआ, अव आज का काम देखो, अर्थात वर्तमान की चिंता करो।

कल किसने देखी है?
कल क्या हो, कौन जानता है, इसलिए जो करना है, उसे आज ही कर डालो।

कलवारी की अगाड़ी और कसाई की पिछाड़ी
कलवार की दूकान के सामने का और कसाई की दूकान के पीछे रखा माल खरीदना चाहिए। (कलवार अपने ग्राहको को पहले चोखी शराब देता है, इसलिए वह उसे दूकान मे सब से आगे रखता है, और खराब या पानी मिली शराब पीछे रखता है, इसी तरह कसाई बासी मास पहले बेच देने के लिए दूकान मे सामने रखता है और ताज़ा मास पीछे।)

कलहारी कलकल करैं, दूहारी छू होय।
अपनी अपनी बान से, कभी न चूकै कोय।
लडाकू औरत हमेशा लडा करती है, और झगडा करानेवाली आपस मे झगडा कराकर चपत हो जाती है। जिसकी जो आदत होती है वह छूटती नही।

कलाल की दूकान पर पानी भी पीओ, तो शराब का गुमान होता है
बुरे स्थान पर जाने मात्र से ही लोग सदेह करने लगते है कि यह भी बुराई मे शामिल है।
(मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ)

कलाल की बेटी डूबने चली, लोग कहे मतवाली
कोई अपनी मुसीबत मे मर रहा है, लोग उसका मजाक उड़ाते है।

कलेजा टूक-टूक, आंसू एक भी नहीं
झूठी सहानुभूति दिखाना।

कल्लर का खेत, जैसे कपटी का हेत, (कृ०)
ऊसर की खेती वैसी ही है, जैसे कपटी की मित्रता। उससे कोई लाभ नही होता।

कल्ला चलै, सत्तर बला टलै
आदमी के लिए भोजन बडी चीज़ है। उसके मिलते रहने से बहुत-सी परेशानिया अपने-आप दूर होती है। कल्ला = (फा० कल्ल) जबडा, कल्ला चलना यानी भोजन मिलना।

कश्मीरी बेपीरी, लज्जत न शीरीं
बेमुरव्वत कश्मीरी। उनमे कोई लज्जत और मिठास नही होती।
यह किसी का सस्कार रहा होगा।

कश्मीरी से गोरा सो कोढ़ी
कश्मीरी बहुत गोरे होते है। उनसे कोई अधिक गोरा हो, तो उसे कोढी ही समझना चाहिए।

कसम खाने ही के लिए है
झूठी कसम खानेवालो के प्रति व्यग्योक्ति।

कसाई की घास को कटडा खा जाए?
कसाई की घास को भैसा चर जाए, यह हो नही सकता।
टेढे से सब भय खाते है।

कसाई की बेटी दस वर्ष की उम्र मे बच्चा जनती है
मतलब टेढे व्यक्ति के सब काम जल्दी होते है। अथवा उससे सब भय खाते है।

कसाई के भरोसे शिकार पालना
शिकरे को मास की ज़रूरत होती है। उसके लिए यदि स्वय मास का प्रबध न किया जाए और उसे कसाई के भरोसे छोड दिया जाए, तो वह जो भी शिकार पकड कर लाएगा, उसे कसाई के यहा ही ले जाएगा। शिकरा = बाजपक्षी, जिसे लोग पक्षियो के शिकार के लिए पालते हैं।

कहना आसान, करना मुश्किल
किसी काम के लिए मुह से कहना आसान होता है, पर करना कठिन।

कहरे दरवेश, बर जाने दरवेश, (फा०)
गरीब का गुस्सा स्वय उस पर ही उतरता है। वह किसी को हानि नही पहुचा सकता।

कहां जाऊं? चूहे का बिल नहीं मिलता
किसी का बहुत निराश और परेशान होकर क०। (इस वाक्य का प्रयोग प्राय मजाक मे ही होता है।)

कहा बीबी, कहा बादी
मालिक और नौकर की बराबरी कैसे हो सकती है?

कहा बुढिया? कहा राजकन्या?
एक बूढी गरीब औरत के साथ राजकन्या की तुलना क्या?

कहां राजा भोज, कहा गंगवा तेली?
भोज जैसे प्रतापी सम्राट के सामने एक गरीब तेली की क्या बिसात? (यह कहावत—'कहा राजा भोज [illegible]

गगू तेली' इस रूप मे ही अधिक प्रचलित है। यह गगू तेली गागेयतेलप का अपभ्रश वताया जाता है, जिसे राजा भोज ने युद्ध मे पराजित किया था।)

कहां राम-राम, कहा टें टें

एक श्रेष्ठ वस्तु के साथ निकृष्ट वस्तु की तुलना क्या? अथवा असली वस्तु तो असली ही रहेगी, कोई नकली वस्तु उसकी वरावरी कैसे कर सकती हे?

(पालतू तोतो को राम-राम कहना सिखाया जाता हे, पर वे वास्तव मे टें-टें ही किया करते है।)

कहा न अबला करि सकै, कहा न सिंधु समाय?
कहा न पावक मे जरै, कहा काल न खाय?

अर्थात अवला सव कुछ कर सकती है, समुद्र मे सव कुछ समा जाता है, अग्नि मे सव कुछ भस्म हो जाता है और काल सव को खा जाता है।

इसके उत्तर मे किसी ने कहा है—

सुत नहिं अवला करि सके, मन नहि सिंधु समाय।
धर्म न पावक मे जरै, नाम काल नहि खाय।

कहानी जैसी झूठी नहीं, वात जैसी मीठी नहीं,

कहानी सुनते समय क०।

इसके आगे प्राय इतना और जुडा रहता है 'घडी घडी का विश्राम, को जाने सीता राम'।

कहीं की ईंट, कहीं का रोडा, भानमती ने कुनवा जोड़ा

कोई विल्कुल ही वे-सिर पैर काम।

(भानुमती राजा भोज के समय की एक जादूगरनी वताई जाती है)

कहीं डूबे भी तिरे हैं?

जो एक वार विल्कुल विगड चुकता है, उसके समलने की आशा फिर नही करनी चाहिए।

कहीं तो सूहा चुनरी, और कहीं ढेले लात

कही तो किसी स्त्री को रगीन साडी पहिनने को मिलती है, और कही लाते-घूसे खाने को मिलते है।

(अपना-अपना भाग्य। अथवा समय-समय की वात।)

कहीं नाखून भी गोश्त से जुदा हुआ है

घर का आदमी हमेशा घर का ही रहेगा।

कही सूखे दरख्त भी हरे हुए हैं

विल्कुल विगडी हुई हालत नही सुधरती।

कहू तो मा मारी जाए, न कहू तो वाप कुत्ता खाए

हर प्रकार से सकट।

(कथा है—किसी स्त्री ने भूल से अपने पति के लिए वकरे के मास के स्थान पर कुत्ते का मास पका दिया। उसके पुत्र को किसी प्रकार इसका पता चल गया। पिता जव भोजन करने वैठा और मास परोस दिया गया, तो वह वडी चिंता मे पड गया। भेद खोल देने से मा पर मार पडती और चुप रहने से वाप को कुत्ते का मास खाने का पाप लगता। असमजस की इसी अवस्था मे उसने उपर्युक्त वात कही।)

कहे खेत की, सुने खलिहान की

कहा जाए कुछ और समझा जाए कुछ।

कहे जमीन की, सुने आसमान की

दे० ऊ०।

कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढत।

कोई आदमी अपनी खुशी से भले ही कोई काम करता रहे, पर कहने से न करे, तव कहा जाता है।

कहे से कोई कुए मे नहीं गिरता

हर आदमी स्वय सोच-विचार कर ही कोई काम करता है। दूसरे के कहने मात्र से कोई अपने को विपत्ति मे नही डालता।

काटा बुरा करील का, औ वदली का घाम।
सौकन बुरी हे चून की, औ साझे का काम।

करील का काटा और वदली का घाम दुखदायी होता है। सौत भी दुखदायी होती है, फिर भले ही वह चून की हो, और साझे का काम भी दुखदायी होता है।

कांधे धनुष, हाथ मे वाना, कहां चले दिल्ली सुलताना?
वन के राव विकट के राना, वड़न की वात वड़े पहचाना।

वडो की वात वडे ही समझ सकते है।

(इस तुकवदी का अतिम चौथा चरण ही कहावत के रूप मे प्रयुक्त होता है। इसकी कथा है कि कोई एक धुनकर हाथ मे धुनौटा और कधे पर धुनकी लिये जगल मे होकर जा रहा था। इतने मे एक सियार की नजर उस पर पडी। यह समझकर कि यह धनुप-वाण लिये कोई सिपाही है, वह डर गया

और उसकी खुशामद करते हुए उसने कहावत के प्रथम दो चरण कहे। धुनकर ने भी उसे जगल का राजा शेर समझा और उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए अतिम अश कहा।)

काका काहू के न भये

जब उम्र मे कोई बडा अपने को धोखा दे, तब व्यग्य मे क०।

काका की भैसी, भतीजे की तोद

सतानहीन व्यक्ति का पैसा उसके भाई-भतीजे उडाते हैं।

काका ना करे साका

चाचा से भतीजे को विशेष सहायता की आशा नही करना चाहिए, क्योकि चाचा तो अपने पुत्रो पर ही अधिक खर्च करना चाहेगा।

चाचा की बराबरी के किसी दूसरे मनष्य से किसी मामले मे निराश होने पर भी कह सकते है।

साका = यश, भलाई।

कागज की नाव (या पनगुड्डी) आज न डुब्बी, कल डुब्बी

धोखा-धडी का काम बहुत दिनो नही चलता। क्षणस्थायी वस्तु के लिए भी कह सकते है।

कागज की नाव नही चलती

दे० ऊ०।

कागज के घोड़े दौडाते हैं

कोरी कागजी कार्यवाही करना।

कागा, कौवा और खरगोश, ये तीनो नहि माने पोस।

जगली कौवा, कौवा और खरगोश, इन्हे पालतू नही बनाया जा सकता।

(जगली कौवा या काग बिल्कुल काला होता है और कौवे की गर्दन भूरी होती है, दोनो मे इतना ही अन्तर है।)

कागा बोले, पड गए रोले

कौवे सूर्योदय के होते ही बोलना शुरू कर देते है। उनके बोलते ही सारी दुनिया जाग उठती है।

कागा रौल

कौवो की तरह का शोरगुल।

कागै काग न भिखारी भीख

सूम के लिए कहावत, जो न तो कौवे को बलि देता है और न भिखारी को भीख।

काग = कागौर या काक बलि जो श्राद्ध के दिनो मे भोजन के अश के रूप मे कौवो को दी जाती है।

काजल की कोठरी

ऐसी जगह जहा जाने से अपयश के सिवा और कुछ हाथ न लगे। ऐसे काम को भी कहते है, जिसे करने से बदनामी हो।

काजल की कोठरी मे जाएगा तो धब्बा लगेगा ही

बुरे स्थान मे जाने से या बुरे की सगत करने से कुछ न कुछ बदनामी अवश्य होती है।

(काजल की कोठरी मे कैसो हू सयानो जाए
काजल की एक रेख लागिहै पै लागि है।)

काजल गया बिहार, बहुरिया निहुरे ठी है, (पू०)

वहू काजल की प्रतीक्षा मे झुकी खडी है कि अब आता है अब आता है, किन्तु काजल गया है बिहार, इतने शीघ्र क्यो आने चला?

जब नजदीक से ही आने वाली किसी वस्तु की प्रतीक्षा करते-करते कोई थक जाए, तब क०।

काजल तो सब लगाते हैं, पर चितवन भात भात (स्त्रि०)

बनाव-शृगार तो सब करते है, पर निजी सौन्दर्य एक अलग ही चीज होती है।

(वह चितवन औरै कछु जिहि बस होत सुजान।)

काजी-ए-दल्लाल

काजी का दलाल। शरारती आदमी। वह आदमी जो काजी को रिश्वत दिलाए।

काजी का प्यादा घोड़े सवार

काजी का नौकर हर काम को ऐसी [illegible] करता है, मानो घोड़े पर सवार है। [illegible] के बाद लोगो और [illegible] पर कटाक्ष, जो अपने को [illegible] से कम नही समझते।

काजी की [illegible]

जब एक बार किसी को कोई वस्तु [illegible] [illegible]

उसका एहसान वताया जाए, तव क० ।

(कथा है—किसी जिले मे नए अफसर आए। उन्हे एक दिन मूज की रस्सी की जरूरत पडी। काजी ने लाकर तुरत दे दी। माथ ही माल विभाग के रजिस्टर मे उसकी कीमत अफसर के नाम चढा दी । दाम तो कभी नही दिए गए, पर उतनी रकम अफसर के नाम प्रतिवर्ष खाते मे निकलती रही।)

काजी की लौंडी मरी, सारा शहर आया; काजी मरे कोई न आया

काजी की लौंडी के मरने पर सारा शहर मातमपुर्सी के लिए गया, लेकिन स्वय काजी के मरने पर कोई उनके दरवाजे नही गया। मतलव यह कि वहुत से काम वडे आदमियो को खुश करने के लिए ही किए जाते है। उनके मरने पर उन्हे कोई नही पूछता, क्योकि फिर उनसे कोई काम नही वनने का।

काजी के घर के चूहे भी सयाने

हाकिम के घर का छोटे-से-छोटा आदमी भी चालाक होता है।

(मुगल जमाने मे अदालत के अफसर को काजी कहते थे। कहावत मे उन अफसरो पर व्यग्य भी छिपा है।)

काजी के मूसल में नारा

काजी (पैजामे मे) मसल से इजारवद डालने को कहता है। वडा हाकिम चाहे जैसा उल्टा-सीधा काम करवाए, उससे कोई कुछ नही कह सकता।

काजी जी खाना आया, हमे क्या? तुम्हारे लिए ही है, फिर तुम्हे क्या?

वेमतलव वोलनेवाले से क०। जव कोई अपने मतलव की वात स्पष्ट न कहे, तव उससे भी क०।

काजी जी दुवले क्यो? शहर के अदेशे से

जव कोई व्यर्थ दूसरो की चिन्ता करे।

काजी न्याव न करेगा, तो घर तो आने देगा

किसी के सामने जाकर अपनी वात तो हमे स्पष्ट कहना ही चाहिए, कोई अगर नही मानता, तो उससे स्थिति मे कोई अतर नही पड़ता।

काजी बहुतेरा हारा रहे, पर बंदा न हारा

मूर्ख और ज़िद्दी।

काटने वाले को थोडा, बटोरने वाले को बहुत, (कृ०)

फसल कट चुकने के वाद खेत मे पडा अन्न वटोरने-वालो को फसल काटनेवाले मजदूरो की अपेक्षा अधिक मिल जाता है।

(जिन्होंने वास्तव मे काम किया, उन्हे कम और फालतू आदमियो को अधिक मिल जाए, तव के लिए क०।)

काटा और उलट गया

दुष्ट मनुष्य के लिए कहते हैं जो सर्प की तरह काट-कर पलट भी जाए।

(कहते है सर्प अगर काटकर पलट जाए तो उसका जहर और भी तेज़ चढता है। यहा पलट जाने के दो अर्थ है—(१) उलट जाना, और (२) किसी काम को करके मुकर जाना।)

काटे कटे, न मारे मरे

वहुत जिद्दी और धृष्ट के लिए क०। ऐसे व्यक्ति के लिए कह सकते है जिससे किसी प्रकार पिड न छूट रहा हो।

काटे वार, नाम तलवार का, लडे फौज नाम सरदार का

काम तो दूसरे लोग करते हैं, पर यश वड़ो को मिलता है।

वार = वार, आघात।

काटो तो खून नहीं

वहुत डर जाना। सन्न हो जाना।

काठ का उल्लू

वज्र मूर्ख

काठ का घोड़ा नहीं चलता

(१) पैसे के विना कुछ नही होता।

(२) वुद्धिहीन मनुष्य से कोई काम नही लिया जा सकता।

काठ का घोड़ा, लोहे की जीन, जिस पर वैठे लगड़दीन

वच्चो की तुकवंदी, जिसमे लाठी या वैसाखी के सहारे चलनेवाले लगडे से मतलव है।

काठ की हांडी वार-वार नहीं चढ़ती

छल-कपट का व्यापार हमेशा नही किया जा सकता, पहली वार मे ही लोग सचेत हो जाते हैं।

काठ के घोड़े दौड़ाते हैं

ऐसा काम करना जिसका कोई परिणाम नही निकलने का।

काठ छीलो तो चिकना, बात छीलो तो रूखी

(१) वात को वढाना ठीक नही।

(२) आपसी मामले मे बहुत वहस नही करनी चाहिए।

काढ़ में या दाढ मे

पैसा या तो दूसरो को देने मे खर्च होता है या खाने-पीने मे।

काढ = निकास।

दाढ = जवडा, मुह।

कातक कुतिया, माह बिलाई, चैत चिड़िया, सदा लुगाई

कातिक मे कुतिया, माघ मे विल्ली, चैत मे चिडिया और स्त्री हमेशा कामातुर रहती है।

कातक जो आवर तर खाय, कुटुम सहित वैकुंठे जाय

कार्तिक के महीने मे जो आवले के नीचे भोजन करे, वह कुटुम्ब सहित वैकुठ जाता है।

(कार्तिक सुदी ९ को आवला नवमी होती हे। इस दिन हिन्दुओ मे आवले के वृक्ष का पूजन और उसके नीचे जाकर भोजन करना शुभ माना जाता है।)

कातक, बात कहां तक

कातिक का महीना वात करते बीत जाता है। (क्योकि इस महीने मे त्यौहार वहुत होते है और खुशी के दिन जाते मालूम नही होते।)

काता और ले दौड़ी

किसी थोडे से काम को करके वताते फिरना कि देखो मैंने यह किया।

काता सूत परेतन को, पक्की रोटी जुड़दावे को, (स्त्रि०)

लिपटे हुए सूत को वह उकेल सकती है, और सिकी हुई रोटी को तहाकर रख सकती है। निकम्मी औरत।

कान कहत नहिं वैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं वैन

कानो मे बोलने की शक्ति [illegible] और जीभ मे सुनने की। जिसका काम उसी से होता है।

(पूरा दोहा इस प्रकार है—

व्रह्म वनाए वन रहे, ते फिर और वनैन।

कान कहत नहिं वैन ज्यो, जीभ सुनत नहिं वैन।

(वृन्द)

कान पर एक जू नहीं चलती, (ग्रा०)

किसी की वात पर बिल्कुल ही ध्यान न देना।

कान प्यारे तो वालियां, जोरू प्यारी तो सालियां

प्रिय वस्तु से सवधित सभी वस्तुए प्रिय लगती हैं।

कान मे ठेंठियां दे ली हैं

किसी की वात न सुनना।

कान में तेल डाले वैठे हैं

किसी वात की कोई खवर ही नही।

कड़ाही चाटेगा तो तेरे व्याह मे मेह वरसेगा

मा का वच्चे से कहना।

(लोगो का विश्वास है कि बच्चे के कडाही चाटने से उसके व्याह मे मेह वरसता है।)

काना कुत्ता पीच ही से आसूदा

काना कुत्ता माड से ही सतुष्ट हो जाता हे। अयोग्य या निकम्मा थोडी चीज मे ही प्रसन्न हो जाता है।

काना कौवा

एक गाली। काले और वदशकल आदमी से भी क०

काना टट्टू, बुद्धू नफर

एक तो काना घोडा, और फिर साईस भी मूर्ख दोनो एक से।

अधूरे या टूटे-फूटे साज-सरजामवाले के लिए क०।

काना मुझको भाय नहीं, काने विन सुहाय नहीं, (स्त्रि०)

कोई चीज जव पसन्द न आए और उसके विना काम भी चलता नजर न आए, तव क०।

[illegible] ना, लाड़ला, [illegible] की सान।

[illegible], कॅंघडा, [illegible]

[illegible] ना, नादान [illegible]

काना रगी

काना जिद्दी होता हे।

कानी अपना टेट न निहारे ओर की फुल्ली निहारे

दे०—अपना टेटर देखे नही ।

कानी आंख मटर का विया, वह भी आंख मटर का विया, (पू०)

दे०—एक आख ।

कानी के व्याह को सौ जोखो

जिस काम मे पहले से ही कोई त्रुटि हो, उसमे विघ्न भी वहुत आते है।

कानी को काना प्यारा, रानी को राना प्यारा

(१) अपनी वस्तु हरेक को प्रिय होती है, फिर वह कैसी ही क्यो न हो।

(२) जिसके भाग्य मे जो वदा है, वह उसमे ही सतुष्ट रहता है।

कानी को कौन सराहे, कानी का मियां

अपनी वस्तु को सव सराहते है, फिर दूसरो की दृष्टि मे वह कितनी ही वुरी क्यो न हो।

पाठा०—कानी कौ कौन सराहे, कानी की मा।

कानी गाय के अलगे वथान

कानी गाय अलग वधती है, अथवा सवसे अलग रहना चाहती है, क्योकि घास चरने मे उसे कठिनाई होती है, दूसरे ढोर उसे मारते भी है।

जव कोई व्यक्ति सवसे अलग निराला काम करना चाहता है, तव क० ।

कानी गाय वाम्हन के दान, (पू०)

निकम्मी चीज दूसरे के मत्थे मढना।

काने के एक रग सिवा होती है

काने प्राय कुटिल होते है ।

रग=नस।

कापर करूं सिंगार पिया मोर आधर, (स्त्रि०)

मेरे पति तो अधे हैं, शृगार किसके लिए करू।

(जहा कोई गुणग्राहक न हो, वहा गुणी का मन अपना करतव दिखाने मे नही लगता।)

कावुल गए मुगल वन आए, वोलन लागे वानी।
'आव' 'आव' कर मर गए, सिरहाने रहा पानी।

दे०—'आव' 'आव' कर. ।

कावुल मे क्या गधे नहीं होते?

मूर्खो की कही कमी नही ।

कावुल मे मेवा भई, वृज मे भई करील

जहा जो वस्तु होनी चाहिए, उसका वहा न होना। प्रकृति का मनमौजीपन।

(यह पूरा दोहा इस प्रकार है—

कहू कहू गोपाल की गई सिटल्ली भूल ।

कावुल मे मेवा दई, वृज मे दई करील।)

काम करे नथवाली, पकड़ी जावे चिरकुट वाली, (स्त्रि०)

वडे आदमी से कोई अपराध होने पर हमेशा गरीव पकडा जाता हे।

चिरकुटवाली=चिथड़ेवाली, गरीव।

काम का न काज का, दुश्मन अनाज का

निठल्ला आदमी।

काम का न काज का, सेर भर अनाज का

दे० ऊ०।

काम को 'अँहाँ' और खाने को 'हा'

प्राय निठल्ले लडके से कहते है ।

काम को काम सिखाता है

काम करने से ही आता है। मनुष्य अनुभव से सीखता है ।

काम कोढ़ी, मुंह वज्जुर

काम के लिए जी चुराना और खाने के लिए मुस्तैद रहना।

कोढी=आलसी से मतलव है।

वज्जुर=वज्र जैसा।

काम, क्रोध, नद, लोभ की, जौ लौं मन मे खान।
का पंडित, का मूरखा, दोऊ एक समान।

स्पप्ट।

काम चोर, निवाले हाजिर

काम से जी चुराए, खाने के वक्त आ जाए।

अकर्मण्य।

काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं है
काम से जी चुरानेवाले लडके या नौकर से कहा करते है।

काम सरा, दुख बीसरा, छाछ न देत अहीर
काम निकल जाने पर फिर कोई नही पूछता।
(कथा है कि--एक अहीर बीमार पडा। जब तक वैद्य की चिकित्सा कराता रहा, तब तक नित्य उसके घर छाछ भेजता रहा। पर नीरोग हो जाने पर छाछ देना बद कर दिया।)

कायथ का बेटा, मरा भला या पढा भला
कायस्थ का बेटा या तो पढा-लिखा हो, या फिर मर जाए सो अच्छा ।
(कायस्थो का काम पढना-लिखना माना जाता था।)

कायथ का हथियार कलम है
कायस्थ कलम से दूसरो की गर्दन काटते है।
(कायस्थ अधिकाश मे दफ्तरो मे नौकरी करते है, जहा उनसे नित्य साधारण जनता का काम पडता है।)

कायथो का छोटा, और भाडो का बडा, दोनो की खराबी
(केवल कायस्थो मे ही नही, हिन्दू घरो मे जो सबसे छोटा होता है, उसे ही सबसे अधिक काम करना पडता है। छोटा समझकर हर आदमी उससे काम के लिए कहता है। उसी तरह भाडो मे बडे को चूकि नकल करनी अच्छी आती है, इसलिए सब से अधिक श्रम उसे ही करना पडता है।)

काया कष्ट है, जान जोखो नहीं
बीमारी मे रोगी को ढाढस देने के लिए कहते है।

काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा
शरीर से भले ही पाप करे पर मन का पापी अच्छा नही।
तु०---कपटी से कोढी अच्छा।

काया माया का क्या भरोसा?
शरीर और धन का कुछ भरोसा नही, न जाने कब चले जाए।

काया रखे धर्म, पूजी रखे व्यवहार
शरीर के बने रहने से ही धर्म की रक्षा हो सकती है, और पूजी बनी रहने से ही व्यापार चल सकता है। अथवा धर्म शरीर की रक्षा करता है और व्यापार धन की।

काल, कढाऊ, किसान का खाऊ, (कृ०)
सूखा (अवर्षण) और कर्जा दोनो ही किसान के लिए दुखदायी है।

काल का साग, गरीब का भाग
मौत गरीब को ही अधिक सताती है। अथवा अकाल मे गरीबो को ही अधिक कष्ट भोगना पडता है।

काल के आगे किसी का बस नही चलता
स्पष्ट ।

काल के आगे सब लाचार है
स्पष्ट ।

काल के मुँह मे सब है
एक दिन सबको मरना है।

काल के हाथ कमान, बूढा बचे न जवान
मृत्यु किसी की रू-रिआयत नही करती।

काल कोठरी
खतरनाक जगह।

काल जुआडी
मौत से खिलवाड करनेवाला ।

काल टले, कलाल न टले
मौत टल सकती है, पर शराब नही छूटती।

काल न छोडे राजा, न छोडे रक
मौत अमीर या गरीब किसी की रियायत नही करती।

काल सबको खाए बैठा है
सब मौत के मुह मे जा चुके है।

काला कोयला
कोयले जैसा काला और बदशक्ल आदमी।

काला मुह, करील के दात
काला, बदशक्ल आदमी।
करीला=एक कटीली झाडी।

काला मुह, नीले हाथ पाव
घृणित व्यक्ति।

काली गाय बाम्हन को दान
श्रेष्ठ वस्तु दूसरे को देनी चाहिए।
(काली गाय हिन्दुओ मे शुभ मानी जाती है।)

काली घटा डरावनी और धौली दरसनहार
काले बादल केवल भय दिखाते है, बरसते भूरे या मटमैले ही है। असली और दिखावटी चीज मे बडा अतर होता है।
(जो गरजते हैं वे बरसते नही।)

काली जुमेरात का वादा करना, (मु०)
लबा वादा करना ।
(काली जुमेरात कृष्णपक्ष के आखिरी बृहस्पतिवार को कहते हैं, जो मुसलमानी महीने के अत मे पडता है।)

काली भली न सेत, दोनो मारो एक ही खेत
दो वस्तुओ मे से कौन अच्छी और कौन बुरी है, इसका जब कोई निश्चय न हो, तब दोनो को ही त्याग देना ठीक है।
(इसकी कथा है कि एक राजा के दो रानिया थी, जिनमे से वह एक को अधिक प्यार करता था। दोनो जादू जानती थी। एक दिन वे चील बनकर आपस मे लडने लगी। उनमे एक सफेद और दूसरी काली थी। राजा को जब पता चला कि ये दोनो मेरी रानिया ही है, जो लड रही है, तो उसने उनमे से एक को मार डालने का निश्चय किया। किन्तु वह यह तै नही कर सका कि इनमे से किसे खतम किया जाए ? काली को या सफेद को। मत्री से जब इस विषय मे सलाह ली, तो उसने जवाब दिया–'काली भली न सेत, दोनो मारो एक ही खेत'। इस पर राजा ने उन दोनो को मार डाला।)

काली हाड़ी पीछे
किसी अत्याचारी हाकिम के मरने या अलग होने पर कहावत ।
(कुछ छोटी जातियो मे प्रथा है कि घर मे किसी की मृत्यु होने पर घर की पुरानी हाडी फोड दी जाती है। उसी से कहावत बनी।)

काले का काटा पानी नहीं मागता
काले सर्प का काटा बचता नही।
(धूर्त के लिए कहा गया है कि उसका मारा बच नही सकता।)

काले की सी एक लहर आ जाती है
अत्याचारी के लिए कहा गया है कि काले सर्प की तरह एक लहर उसके मन मे उठती है।

काले के आगे चिराग नहीं जलता
जबर्दस्त के सामने किसी की नही चलती।
(लोगो का विश्वास है कि काले सर्प के मणि होती है, जिसके प्रकाश मे दीपक की ज्योति मद पड जाती है।)

काले के काटे का जंतर न मंतर
दे०—काले का काटा . ।

काले कोसो
बहुत दूर का स्थान।

काले सिर का एक न छोड़ा
कुलटा के लिए क० ।
(काले सिर से मतलब जवान आदमी से है।)

काले सिर का बेढब होता है
मनुष्य एक बेढब प्राणी है।

कासा दीजे, बासा न दीजे
अनजान अदमी को खिला दे, पर घर मे जगह न दे।
कासा=कासा, थाली।
बासा=निवास।

कासा भर खाना, आसा भर सोना
भरपेट खाना, और नीद भर सोना ।
आराम की जिंदगी बिताना।

काहे को गूलर का पेट फड़वाते हैं?
मुझसे क्यो सच सच सुनना चाहते है ? मैं जो कहूगा वह तुम्हे रुचेगा नही ।
(गूलर को तोडने से कीडे निकलते है, जो ग्लानि उत्पन्न करते हैं।)

किया, पर कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती, (स्त्रि०)
दे०—करा और कर न जाना . ।

किरिया और तरकारी खाने ही के वा, (भो०)
सौगंध और तरकारी खाने ही को बनी है।
जो बहुत सौगध खाता है, उससे क० ।

किसको मां ने घौंसा खाया है ?

अर्थात मेरे जन्म के अवसर पर मेरी मा ने भी सोठ खाई है, भूसी नही खाई। एक तरह की चुनौती। घौंसा=दाल को फटकने के वाद वचा हुआ अश।

किस खेत का बथुआ है ?

उपेक्षा मे कहते है कि तुम हो क्या चीज ?

किस खेत की मूली है।

दे० ऊ०।

किस वाग की मूली है ?

दे० ऊ०

किस विरते पर तत्ता पानी, (स्त्रि०)

आप किस बूते पर गरम पानी मागते है ? करनी-करतूत तो कुछ है ही नही।

(कथा है कि किसी स्त्री का पति निखट्टू था। एक दिन सुवह उठकर उसने नहाने के लिए गरम पानी मागा, तव स्त्री ने ताना मारकर उक्त वात कही।)

किसी का अवा विगडे, इनका खदाने का खदाना विगड़ गया

सर्वनाश हो गया।

अवा=वह गड्ढा, जिसमे कुम्हार मिट्टी के वर्तन पकाते है। 'अवा विगडना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है पूरी की पूरी वस्तु का विगड जाना। खदाना या खदान=वह स्थान, जहा से कुम्हार वर्तनो के लिए मिट्टी खोद कर लाता है।)

किसी का घर जले कोई तापे

किसी की हानि से कोई लाभ उठाए।

किसी का मुंह चले, किसी का हाथ

कोई गाली देता है, तो कोई मार वैठता है। कोई आदमी जव किसी से लड़ता है, तो दूसरा भी अपनी शक्ति के अनुसार उसका जवाव देता है। मार वैठने-वाला अक्सर यह कहकर अपनी सफाई देता है।

किसी का लड़का, कोई मिन्नत माने

जो काम स्वय किसी के करने का है, उसे कोई दूसरा करता फिरे।

मिन्नत मानना=दीर्घ जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना।

किसी का हाथ चले, किसी की ज़बान चले

दे०- किसी का मुह चले।

किसी की मेहनत जाया नहीं जाती

किसी का परिश्रम विफल नही होता।

किसी की साई, किसी को बधाई

बयाना किसी का लिया और बधाई किसी के यहा जाकर बजाई। वादा खिलाफी।

साई=उस पैसे को कहते हैं, जो काम या चीज के लिए किसी को पेशगी दिया जाता है।

किसी के क्या दबैल बसते हैं ?

हम क्या किसी के दबे है ?

किसी के नुकसान का रवादार न हो

किसी के नुकसान से सवध न रखे। अथवा किसी का नुकसान न चाहे।

किसी को अपना कर लो, या किसी के हो रहो

या तो किसी को अपना भक्त वनाओ, या फिर किसी के भक्त वनकर रहो। तात्पर्य यह कि दुनिया मे ऐसा आदमी किसी काम का नही, जिसके किसी से आपसी सवध न हो।

किसी को तवे मे दिखाई देता है, किसी को आरसी मे

अपनी-अपनी दृष्टि।

(प्राय व्यग्य मे ही कहते हैं।)

किसी को वैंगन वाय, किसी को पत्य

कोई एक वस्तु किसी के लिए हानिकर होती है, तो दूसरे के लिए लाभदायक।

वाय=वायुकारक।

पत्य=पथ्य, अनुकूल भोजन।

पाठा०—किसी को वैंगन वायले, किसी को पत्य वरोवर।

किसी ने यह भी नहीं पूछा कि तुम्हारे मुह मे दात हैं

किसी ने हमे टोका तक नही। हम वडे मजे मे गए और लौट भी आए।

किस्मत के लिखे को कोई नहीं मेट सकता

भाग्य का लिखा होकर रहता है।

क़िस्मत दे यारी, तो क्यों हो ख्वारी

भाग्य अगर साथ दे, तो विपत्ति क्यो भोगनी पड़े ?

किस्मत न दे यारी, तो क्योंकर करे फौजदारी
भाग्य के अनुकूल हुए विना मान-सम्मान कैसे मिल सकता है?

कुआरी को सदा बसंत
व्यग्य मे वेश्या के लिए क०।

कुंआरी खाय रोटियां, ब्याही खाय बोटिया (स्त्रि०)
कुआरी लडकी तो सिर्फ रोटिया ही खाती है, किन्तु व्याही बाप की वोटिया खा जाती है।
(क्योकि व्याह हो जाने के वाद ससुराल जाते समय तथा खुशी के अन्य मौको पर भी वाप को हमेशा उसे कुछ न कुछ देना पडता है।)

कुंजडन की अगाडी और कसाई की पिछाड़ी
कुजडिन के पास ताजी तरकारी शुरु मे ही मिलती है, और कसाई अपना अच्छा मास वाद मे वेचता है। इसलिए अगर अच्छा सौदा लेना चाहो तो कुजडिन के पास पहले और कसाई के पास बाद मे जाना चाहिए।

कुआं वेचा है, कुए का पानी नहीं वेचा
वेमतलव की वात पर झगडा। जव कुआ वेच दिया तो पानी भरना रोकने मे क्या तुक?

कुएं का ब्याह, गीत गावे मसीद का
असगत काम।
(भारत की कुछ जातियो मे अपनी किसी मनोकामना की पूर्ति के लिए कुए अथवा वागीचे का व्याह करने की आम प्रथा है।)
मसीद=मस्जिद।

कुएं की मिट्टी कुएं ही मे लगती है
किसी काम का लाभ उसी मे खर्च भी हो जाता है।

कुए झाकते है
व्यर्थ का काम करते हैं। अथवा इतने परेशान है कि कुए मे गिरकर प्राण देना चाहते है।

कुएं मे भाग पडी है
सव की वुद्धि भ्रष्ट है।
(एक जो होय, तो ज्ञान सिखाइए, कूपहि मे यहा भाग परी है।—हरिश्चन्द्र)

कुचाल सग फिरना, आप मूत में गिरना
बुरे का सग करना, जानबूझकर बुरा बनना है।

कुचाल संग हासी, जीव जान की फांसी, (स्त्रि०)
बुरे के साथ हँसी-दिल्लगी नही करनी चाहिए, क्योकि इससे वुराई ही होती है।

कुछ आंसू से पोंछते हैं
झूठी सहानुभूति दिखाते है।

कुछ खो ही के सीखते है
आदमी ठोकर खाकर ही सीखता है।

कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे
अगर तुम मेरी वात समझ गए, तो मैं भी तुम्हारी वात समझ गया।
एक-दूसरे के मन की वात ताड लेना और कुछ कहने की आवश्यकता न समझना।
(इसकी कथा है कि कोई एक राहगीर अपने माल की गठरी सिर पर रखे जा रहा था। पीछे से एक सवार आया। गठरी भारी थी और यात्री कुछ थक भी गया था। इसलिए सवार से उसने अपने वोझ को अगले मुकाम तक घोडे की पीठ पर रखकर ले चलने के लिए कहा। सवार ने इन्कार कर दिया और आगे वढ गया। वाद मे उसके मन मे आया कि उसने व्यर्थ ही हाथ मे आए माल को छोड दिया। इधर पथिक ने भी सोचा कि चलो अच्छा हुआ जो सवार ने इन्कार कर दिया, अन्यथा अगर वह गठरी लेकर चलता बनता, तो मैं उसे कहा खोजता फिरता? सयोग से आगे दोनो की फिर भेट हो गई। इस वार सवार ने जव कहा—लाओ भाई, तुम्हारी गठरी रख लू, तो पथिक ने जवाब दिया—वस भाई रहने दो, कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे।)

कुछ तो खरबूज़ा मीठा, और कुछ ऊपर से कंद
अच्छाई मे और भी अच्छाई।
कद=शक्कर।

कुछ तो खलल है कि जिससे यह खलल है
कही कुछ गडवडी तो जरूर है, जिमसे यह सव हो रहा है।

कुछ तो गेहूं गीली, कुछ जिदरी ढीली

जिससे आटा ठीक नही पिस रहा है। मतलब दोनो ओर ही कही कुछ त्रुटि है।

जिदरी=चक्की की कील। अगर वह ढीली हो तो पीसने मे दिक्कत होगी।

कुछ तो बावली, कुछ भूतो खदेड़ी, (स्त्रि०)

एक तो स्वय ही पगली, फिर मुसीवत की मारी। विपत्ति पर विपत्ति।

कुछ दाल मे काला है

कही कुछ गड़बडी है।

कुछ वसंत की भी खबर है?

जब कोई व्यक्ति किसी आगेवाली मुसीबत से वेखवर हो कर खुशिया मनाने मे लगा हो, तब प्राय उससे व्यग्य मे कहते हैं। जिसे सचमुच ही किसी शुभ अवसर के आने की खबर न हो, उससे भी कह सकते है।

'कुछ लेते हो?' कहा—'अपना काम क्या है?' 'कुछ देते हो?' कहा—'यह शरारत बंदे को नहीं आती'

चालाक और खुदगर्ज के लिए क०।

कुछ लोहा खोटा, कुछ लोहार खोटा

दोनो ओर ही त्रुटि का होना।

कुछ स्वार्थी, कुछ परमार्थी

कुछ अपना काम वनाना, कुछ दूसरो का भी हित करना।

(दोनो ओर ध्यान रखना चाहिए।)

कुतिया के छिनाले मे फंसे है

व्यर्थ की खीचातानी मे पड़ना।

कुतिया चोरो से मिल गई तो पहरा कौन दे?

जब रखवाला ही बेईमान वन जाए, तो काम कैसे चले?

कुटनी से तो राम बचावे, प्यारी होकर पत उतरावे, (स्त्रि०)

बुरी औरत से तो ईश्वर बचाए, प्रेम दिखाकर इज्जत उतरवाती है।

कुत्ता के आटा होय तो लिट्टी लगा के खाए, (पू०)

कुत्ते के पास अगर आटा हो, तो यह स्वय ही उसकी रोटी क्यो न वनाए?

(आदमी विवश होकर ही दूसरो का आश्रय लेता है।)

कुत्ता घास खाय तो सभी पाल लें

शौक मे अगर कुछ खर्च न हो, तो सभी करे।

कुत्ता चौक चढाए, चपनी चाटन जाए

कुत्ते को आदरपूर्वक चौक मे विठाला, फिर भी वह हाडी चाटने गया। जिसकी जो आदत होती है, वह नही छूटती।

(व्याह मे जब कन्या को मडप के तले लाकर विठालते और वरपक्ष की ओर से आए हुए वस्त्राभूषण उसे पहिनाते है, तो उसे चौक चढाना कहते है।)

कुत्ता न देखेगा, न भौंकेगा

कोई आदमी किसी वस्तु को यदि देखे नही, तो वह उसके पाने की इच्छा भी न करेगा।

कुत्ता पाए तो सवा मन खाए, नही तो दीया ही चाटकर रह जाए

जब जो मिल जाए, उसी मे सतोप कर लेनेवाला व्यक्ति।

कुत्ता पाले वह कुत्ता, सास घर जवाई कुत्ता, वहन घर भाई कुत्ता, सव कुत्तो का वह सरदार, जो रहवे वेटी के द्वार

स्पष्ट। जवाई—दामाद।

कुत्ता भी वैठता है, तो दुम हिलाकर बैठता है

सफाई जानवरो को भी पसद है, फिर आदमी को तो होनी ही चाहिए।

कुत्ता भौंके, काफिला सिधारे

कुत्ता भोकता ही रहता है और यात्री अपने रास्ते पर चलते ही रहते है। मतलब, समझदार आदमी चुपचाप अपने काम मे लगे रहते है, दूसरे क्या कहते हैं, इस पर ध्यान नही देते।

कुत्ता मरे अपनी पीर, मियां मागे शिकार

कुत्ता तो अपनी मुसीवत मे मर रहा है और मिया को पडी है शिकार की। दूसरो की सुविधा-असुविधा का कोई विचार न करके केवल अपना स्वार्थ देखना।

कुत्ता मुह लगाने से सिर चढे
ओछे आदमी को मुह नही लगाना चाहिए।

कुत्ते का मगज खाया है?
जो इतनी बकवास कर रहे हो?
(कुत्ता वहुत भोकता है, इसीलिए कहा गया है कि क्या तुमने उसका भेजा खाया है?)

कुत्ते की दुम बारह बरस नलवे मे रखो, तो भी टेढ़ी की टेढी
कुत्ते की टेढी पूछ किसी उपाय से भी सीधी नही की जा सकती। वुरा आदमी हमेशा वुरा ही रहता है। शिक्षा या सत्सग का कोई प्रभाव उस पर नही पडता। (यह कहवात लगभग सभी भारतीय भाषाओ मे प्रचलित मिलती है। उदाहरण के लिए वगला मे कहते है—कुकुरेर लेज घी दिए डोल्लेओ सोजा हयना। और मराठी मे भी है—कुत्र्याचे शेपुट किती ही दिवस नळकाड्यात ठेवले, तरी अखेरीस वाकडे ते वाकडे। सस्कृत लौकिक—'श्वपुच्छोन्नमन', न्याय के साथ तुलनीय। (स०)

कुत्ते की नींद
चौकन्नी नीद।

कुत्ते की मौत मरना
वहुत अधिक अपमान और कष्ट से मरना।

कुत्ते के पाव जा, और विल्ली के पाव आ
शीघ्र ही जाने और शीघ्र वापस आने के लिए क०।

कुत्ते के भोकने से हाथी नहीं डरता
गभीर और समझदार व्यक्ति निंदको की परवा नही करता।

कुत्ते को घी नही पचता
(१) ओछे के पेट मे वात नही रहती।
(२) ओछा थोडी भी सपत्ति पाने से इतरा उठता है, कुछ यह अर्थ भी लगाते है।
(घी खा लेने पर कुत्ते को वमन की वीमारी हो जाती है।)

कुत्ते को मस्जिद से क्या काम? (मु०)
किसी वुरे आदमी से अच्छे काम की आशा व्यर्थ है।

कुत्ते को मोत आवे तो मस्जिद मे मूत आवे, (मु०)
दुर्दिन आने पर मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

कुत्ते को हड्डी भली लगती है
गदे को गदी चीज ही अच्छी लगती है।

कुत्ते तेरा मुह नही, तेरे साई का मुह है
अर्थात कुत्ता अपने मालिक के वल पर ही भोकता है। (जव कोई साधारण व्यक्ति किसी वडे का सहारा पाकर उछलता-कूदता है।)

कुत्तो को दूं पर तुझे न दूं
किसी के प्रति वहुत घृणा प्रकट करना। अथवा किसी को मागने पर कोई वस्तु उसे न देकर अन्य निकृष्ट व्यक्ति को दे देना।

कुंद-ए-ना-तराश
ऐसी लकडी जो छील-काटकर डौलाई न गई हो। ठूठ। मूर्ख के लिए क०।

कुनबेवाले के चारो पल्ले कीचड मे है
परिवारवाले को हमेशा कोई न कोई मुसीवत लगी रहती है।

कुफ्र तोड़ा खुदा खुदा करके
ईश्वर का नाम ले-लेकर किसी प्रकार विपत्ति से पार पाया।
(कुफ्र का मतलव वास्तव मे इस्लाम धर्म के विरुद्ध आचरण है और 'कुफ्र तोडना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है, किसी को इस्लामधर्म मे दीक्षित करना या सन्मार्ग पर ले जाना, पर यहा मतलव दुष्ट प्रकृति के आदमी को वश मे करने से है।)

कुम्हार का गधा जिन्हो के चूतड़ मिट्टी देखे, तिन्हीं के पीछे दौडे, (पू०)
क्योकि उसी को वह अपना मालिक समझ लेता है। कुम्हार को हमेशा मिट्टी से काम पडता है और उसके पीछे मिट्टी लगा रहना स्वाभाविक है।

कुम्हार का गुस्सा उतरे गधे पर
क्योकि वह उसी को पीट सकता है।

कुम्हार कहे से गधे पर नही चढ़ता
दे०—कहे से कुम्हार ।

कुम्हार के घर चुक्के का दुख
एक आश्चर्य की बात, क्योकि कुम्हार के घर तो चुक्के (कुल्हड) बनते ही है। उसके यहा उनकी क्या कमी ?

कुम्हार के घर बासन का काल
वही भाव है जो ऊपर की कहावत का है।

कुम्हार से पार न बसाय, गधे के कान उमेठे
जिसने काम बिगाडा है, उससे कुछ न कहकर दूसरे कमजोर आदमी पर गुस्सा उतारना।

कुरयाल मे गुलेला लगा
मचान पर आराम से बैठे पक्षी को गुलेल लगी। यानी अचानक विपत्ति आ टूटी।
(कुरयाल वास्तव मे ऐसे पक्षी को कहते है, जो सुख-पूर्वक मचान पर बैठा अपने पखे सुहला रहा हो। गुलेला मिट्टी या पत्थर की वह गोली होती है, जिसको गुलेल से फेककर चिडियो का शिकार किया जाता है।)

कुरसी का अहमक
मूर्ख अफसर।
(कुर्सी अवध मे एक छोटा कस्बा भी है, जहा के लोग मूर्ख कहे जाते है।)

कुरान पर कुरान रखने का क्या मुज़ायका है
दो श्रेष्ठ वस्तुओ को किसी प्रकार भी रखो, वे तो हर हालत मे श्रेष्ठ रहेगी।

कुलेल मे गुलेल
रंग मे भग।
(कोई पक्षी आराम से मचान पर बैठा किलकोटे कर रहा था। इतने मे उसे गुलेल लगी।)

कुल्हिया मे गुड नहीं फूटता
वडे काम को छिपाकर नही किया जा सकता।
(गुड एक ठोस और मजबूत चीज होती है, कुल्हिया मे रखकर फोडने से वही फूट जाएगी।)

कुश्ता॰ कुश्ता: मीकुनद, (फा॰)
कुश्ता आदमी को मार डालता है, और कुश्ता आदमी को नया जीवन भी प्रदान करता है।
(कुश्ता धातु घटित औषधि या रसायन को कहते हैं।)

कुसुम का रंग तीन दिन, फिर बदरंग
किसी भी वस्तु का सौन्दर्य स्थायी नही होता।
कुसुम=(स॰ कुसुम) एक पौधा, जिसके फूलो से पीला रग बनता है।

कूड़े के इस पार या उस पार
आलसी आदमी, जो हमेशा चारपाई पर पडा करवटें लेता रहे।
(भगेडियो की उक्ति कि भग ऐसी छाननी चाहिए कि उसे पीने के बाद या तो कूडे के इस पार लोट जाए या उस पार।)
कूडा=भग घोटने का प्याला।

कूज़े ढलें कि माट?
पहले बूढे मरेंगे या जवान, यह कोई नही बता सकता।
कूजा=छोटा प्याला।
माट=बडा मटका।

कूटो तो चूना, नहीं, खाक से दूना
चूना गीला करके जितना ही कूटा जाए, उसमे उतना ही लस आता है, और वह मजबूत बनता है।

कूत थोड़ा, मंजिल भारी
चलने की ताकत नही, और रास्ता लबा।

कूद-कूद मछली बगुले को खाय
एक अनहोनी घटना। कमज़ोर सबल को दबा ले।

कूदते-कूदते नचनिया हो जाता है
अभ्यास बडी चीज है। अनाडी भी अभ्यास करते-करते कलावत बन जाता है।

कूद मुए कूद, तेरी नालियों मे गूद।
निकल गया गूद, तो रह गया मरदूद। (स्त्रि॰)
एक प्रकार की गाली। किसी कर्कशा का अपने पति को डाटना।
गूद=गूदा, ताकत।
मरदूद=निकम्मा, रद्दी।

कूदे फादे तोडे तान, ताका दुनिया राखे मान
जो अधिक ढोंग दिखाता है, दुनिया उसी का मान करती है।

कूवत थोडी मंजिल भारी
दे०—कूत थोडा ।

केकर केकेर धरों नांव, कमरी ओढले सारा गाव, (पू०)
किस-किसका नाम लिया जाए, सारा गाव कवल ओढे है। सभी जहा बुरे हो, वहा अलग से किसका नाम लिया जाए?

के करनी करे, केकरा सिर बीते, (पू०)
कोई तो काम बिगाडे और मुसीबत किसी की आए।

केहू के जेठ पूत, केहू के लेखे कनवा, (पू०)
किसी का तो वह जेठा पूत हे, और किसी के लिए केवल छोकडा हे। अपनी सतान सबको प्रिय होती है, फिर वह कैसी ही क्यो न हो।
(कनवा का अर्थ यहा छोटा लडका हे,' पर काना भी उसका अर्थ हो सकता हे।)

कै लड़े सूरमा, कै लड़े अनजान
लडने का काम बहादुरो का हे या फिर जो मूर्ख होता है, वही लडाई मोल लेता हे।

कै सोवै राजा का पूत, कै सोवै जोगी अवधूत
क्योकि इन्हे किसी बात की चिन्ता नही रहती।

कोइरी के गांव में धोबी पटवारी
जहा जैसे लोग होते हैं, वहा के कारिन्दा भी वैसे ही होते हैं।
(कोइरी उत्तर प्रदेश के पूर्वी अचल की एक कृषि-जीवी जाति है।)

कोई आंख का अंधा, कोई हिये का अंधा
कोई अगर आख का अधा है, तो ऐसे व्यक्ति भी होते हे जो आखो के रहते हुए भी नही देखते।

कोई आइने में देखे, कोई आरसी मे
जिसके पास जो वस्तु जैसी होती है, वह उसी से अपना काम चलाता हैं।
आरसी=(१) छोटा दर्पण। (२) शीशा जडा वह कटोरीदार छल्ला, जिसे स्त्रिया दाहिने हाथ के अगूठे मे पहिनती हैं।

कोई इल्म को दोस्त रखता है, कोई रुपए को
किसी को विद्या से प्रेम होता हे, तो किसी को धन से।

कोई कहके सुनाए, हम करके दिखाएं
दूसरे केवल बकवास करते हैं, हम काम करके दिखाते हे। चुनौती।

कोई काम करे दाम से, हम दाम करें काम से
कोई पूजी लगाकर काम-धधा करता है, हम काम-धधे से पूजी पैदा करते है, अर्थात बिना पूजी के रोजगार करते है।

कोई किसी का कुछ नहीं कर सकता
सभी को अपना-अपना बल-बूता है। अथवा सभी का ईश्वर मालिक है।

कोई किसी की कब्र मे नहीं जाता
अपने कर्मो का फल हमे स्वय ही भुगतना पडता हे। मरने पर कोई किसी का साथ नही देता।

कोई खीचे लाग लगोटी, कोई खींचे मूंछरियां।

कोठे चढके दी दुहाई, कोई मत करियो दो जनियां।
दो औरते रखनेवाले पर व्यग्य।

कोई तौलो कम, कोई मोलो कम
हर आदमी मे कोई न कोई कमी होती है, किसी मे गभीरता की, तो किसी मे भलमनसाहत की।

कोई दम का दमामा है
मानव शरीर के लिए कहा गया है। वह क्षणभगुर है।
दमामा=नगाडा, तमाशा।

कोई दम का मेहमान है
मरणासन्न है।

कोई दम मे सरसो फूलती है
अभी नशे मे गडगप्प होता है।
(सरसो फूलना एक मुहावरा है।)

कोई भी मां के पेट से तो लेकर नहीं निकला है, (स्त्रि०)
काम करने से ही आता है। कोई मा के पेट से सीखकर नही आता।

कोई मरे, कोई मल्हार गावे

कोई दुख मे पडा मरता है, तो कोई आनद के गीत गाता है। ससार की स्वार्थ-परायणता पर क०।

कोई माल मे मस्त, तो कोई ख्याल मे मस्त

सब अपने-अपने रंग मे रगे है। किसी को पैसा प्यारा है, तो किसी को कोई और धुन है।

कोई मुझको न मारे, तो मै सारे जहान को मारूं

लडाकू के लिए क०।

कोई मोल मे भारी, कोई तौल मे भारी

किसी मे सज्जनता अधिक है तो किसी मे गभीरता। अथवा कोई पैसे मे बडा है तो कोई सज्जनता मे।

कोई सुने न सुने, मै कहता हूँ

बकवादी से व्यग्य मे क०।

कोऊ को कलपाए के, कोऊ कैसे कल पाए

दूसरे को दुख देकर कोई स्वय कैसे सुखी रह सकता है?

कलपाना=सताना।

कल पाना=चैन पाना।

कोख की आंच सही जाती है, पेड़ू की आंच नहीं सही जाती, (स्त्रि०)

इसके कई अर्थ हो सकते है। (१) सतान की मृत्यु सहन हो जाती है, किन्तु पति की मृत्यु सहन नही होती।

(२) सतान की मृत्यु सही जाती है, किन्तु भूख की ज्वाला सहन नही होती।

(३) प्रसव-वेदना सहन हो जाती है, पर पेट का दर्द सहा नही जाता।

कोख मांग से ठंडी रहे, (स्त्रि०)

सतान और पति का सुख भोगे।

(आशीर्वाद)

पाठा०—कोख-माग से भरी-पूरी रहे।

कोठी-कुठले से हाथ न लगाओ, घरबार सब तुम्हारा, (स्त्रि०)

झूठा प्रेम दिखानेवाले के लिए क०। घर के ऐसे बडे व्यक्ति के लिए कह सकते हैं, जो अपने पुत्रो या बहुओ से दुराव रक्खे।

कोठी धोये कीच हाथ लगे

गरीब को तग करने से बदनामी ही हाथ लगती है। अथवा व्यर्थ के काम से हानि के सिवा कोई लाभ नही होता।

कोठी=अनाज रखने का मिट्टी का बडा कच्चा बर्तन।

कोठी मे चाउर, घर मे उपास, (पू०)

मूर्ख या कजूस के लिए कहते है कि घर मे खाने को होते हुए भी उपवास करता है।

कोठी मे से मोठी नहीं निकली

बाप-दादो की पूजी मे से अभी कुछ खर्च नही हुआ।

अनुभवहीन युवक के लिए भी कहते है, विशेषकर ऐसे युवक के लिए, जो स्त्री के सपर्क मे न आया हो।

कोठे वाला रोवे, छप्परवाला सोवे

धनी को पचास चिंताए लगी रहती है, गरीब बेफिक्र होकर सोता है।

कोठे से गिरा संभलता है, नजरो से गिरा नहीं सभलता

गई हुई प्रतिष्ठा फिर नही आती।

नजरो से गिरना=मन से उतरना। किसी की नजरो मे इज्जत खो देना।

कोढ में खाज

विपत्ति पर विपत्ति।

कोढी कटनियां, मुगरा सन आटी, आर पार बैठे गिरस्त डांटी

जो काटनेवाले आलसी हैं, उन्हे तो मोटी-मोटी आटी मिल रही है, और जिन्होने एक छोर से दूसरे छोर तक सारा खेत काट डाला है, उन्हे मालिक की डाट सहनी पडती है। मतलब, सच्चे कामवाले को कोई नही पूछता।

(देहातो मे फसल काटनेवाले मजदूरो को मजदूरी के रूप मे कटी हुई फसल के अनाज लगे जो डठल एक विशेष परिमाण मे दिए जाते है, उन्हे आटी कहते हैं।)

कटनिया=फसल काटनेवाला मजदूर।

मुगरी सन आटी=मोगरी जैसी मोटी आटी।

गिरस्त=गृहस्थ, यहा खेत के मालिक से मतलब है।

कोढ़ी के जू नहीं पडती

लोगो का विश्वास है कि कोढी के सिर मे जुए नही पडते, यानी वे भी उससे दूर रहती है।

कोढी को दाल-भात, कमासुत को फुटहा, (पू०)

आलसी को दालभात मिले, कमाऊ को ज्वार के फूले।

(एक अनुचित बात। काम करनेवाले का आदर न करना।)

कोढी डराये थूक से

कोढी अपने थूक से भयभीत करता है। नीच आदमी लोगो को तग करने के लिए घृणित उपाय काम मे लाता है, क्योकि उसके उन उपायो का कोई जवाब नही दिया जा सकता।

कोढ़ी मरे संगाती चाहे

बुरा आदमी अपने साथ दूसरो की भी हानि चाहता है।

कोता गर्दन, तग पेशानी, हरामजादे की यही निशानी

छोटी गर्दन और कम चौडे माथे का आदमी धूर्त्त होता है।

कोता गर्दन, दुम दराज

छोटी गर्दन, लबी पूछ।

धूर्त्त के लिए क०।

कोदों का भात किन भातों मे, ममिया सास किन सासो मे

कोदो का भात भी भला कोई भात है? ममिया सास की सासो मे क्या गिनती?

दूर के रिश्ते के आदमी के लिए क०।

(कोदो एक अत्यन्त साधारण अन्न होता है, जिसे गरीब ही खाते है, और ममिया सास (पति या पत्नी) के मामा की स्त्री होती है, जिससे बहुत कम काम पडता है, इसीलिए ऐसा कहा गया हे।)

कोदो दे के पढे है

मतलब, पढाई की अच्छी फीस देकर नही पढे। जब कोई पढा-लिखा व्यक्ति साधारण ज्ञान के मामलो मे भी अपनी अज्ञता प्रकट करता है, तब क०।

कोयल काले कौवे की जोरू

जब एक के साथ दूसरा भी बुरा हो, तब क०।

(कोयल कौवे की तरह ही काली होती है।)

कोयल बोली और सेहबदी डबी

कोयल बोल उठी और लगान वसूल करनेवाले का पता नही। मतलब, जिस आदमी को अबतक आ जाना चाहिए था, वह अभी तक नही आया।

(ब्रिटिश जमाने मे बहुत पहले रबी और ख़रीफ के लगान वसूली के लिए अस्थायी रूप से कर्मचारी नियुक्त होते थे और वे सेहबदी कहलाते थे। वे बसत के अवसर पर जब कोयल बोल उठती है, लगान वसूली के लिए निकल पड़ते थे।)

कोयला होय न ऊजला, सज्जी साबुन लाय

जन्म से जिसे जो आदत पडी होती है, वह नही छूटती।

सज्जी=कपडा धोने के काम आनेवाली एक क्षारयुक्त मिट्टी।

पाठा०—कोयला होय न ऊजला सौ मन ।

कोयलों की दलाली मे हाथ काले

बुरे काम से बुराई ही पैदा होती है।

कोरमा बासा भी दाल से बेहतर है, (मु०)

बढिया चीज ख़राब होकर भी मामूली से अच्छी रहती है।

कोरमा=भुना हुआ मास, जिसमे शोरबा नही होता।

(इसी भाव की कहावत गढवाली मे भी है—सडी शिकार मसुरे कि दाल बराबर के निहो।)

कोल्हू काट मोगरा बनाना

किसी एक साधारण चीज को बनाने के लिए बढिया कीमती चीज को बिगाड डालना।

मोगरा = एक प्रकार का लकडी का हथौडा, कपडे कूटने का धोबियो का मोटा डडा।

कोल्हू का बैल हो गया

जो दिन-रात काम मे जुटा रहे, उसके लिए क०।

कोल्हू के बैल की तरह रात-दिन फिरता है
वहुत श्रम करता है।

कोल्हू के बैल को घर ही कोस पचास
ऐसे मनुष्य के लिए कहते है, जिस पर काम का वहुत अधिक वोझ हो।

कोल्हू से खल उतरी, भई बैलो जोग
बूढे मनुष्य या जो मनुष्य अपने पद से हटा दिया गया हो, उसके लिए क०।
(तेल निकल जाने पर तिलहन का केवल फोक वच रहता है और वैलो के खिलाने के काम ही आता है। उसी तरह वूढे होने या अपने स्थान से हटने पर मनुष्य अपना पिछला महत्व खो वैठता है।)

कोस चली न 'वावा प्यासी', (स्त्रि०)
काम शुरू करते ही थकान की शिकायत करना।

कोसे जियें, असीसे मरें
जिसे कोसा जाता है, वह जीवित रहता है, और जिसे आशीर्वाद दिया जाता है, वह मर जाता हे। मतलब, दुनिया का सव काम ईश्वर की मर्जी से ही होता है। मनुष्य उसमे कुछ नही कर सकता।

कौड़ी के तीन-तीन हो गए
वर्वाद हो गए। इज्जत चली गई। वहुत सस्ती चीज के लिए भी क०।

कौड़ी के वास्ते मस्जिद ढाते है, (मु०)
अपने थोडे-से स्वार्थ के लिए किसी वडी चीज को नष्ट कर डालना।

कौड़ी-कौड़ी पर जान देता है
वहुत कजूस या अर्थलोलुप।

कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, कर वातें छल को।
भारी वोझ धरा सिर ऊपर, किस विव हो हलकी।
स्पष्ट।

कौड़ी गांठ की, जोरू साथ की
अपना पैसा हमेशा अपनी गाठ मे और स्त्री को अपने साथ रखना चाहिए। अथवा पैसा गाठ का ही काम आता है और स्त्री तभी कावू मे रहती है, जव अपने साथ रक्खी जाए।

कौडी न रख कफन को, बिज्जू की शक्ल वन रह
ऐसे लोगो का मजाक, जो पैसे के सग्रह मे विश्वास नही रखते।
विज्जू=विल्ली की तरह का एक जानवर जो मुर्दे खाकर रहता है।

कौड़ी नहीं गांठ मे, चले बाग की सैर
विना पर्याप्त साधन के किसी काम को करने के लिए तत्पर होना।

कौडी न हो, तो फिर कौड़ी के तीन-तीन हैं
अपने पास पैसा न हो, तो अपनी कोई कीमत नही।

कौड़ी पास नही, पडी अफीम की चाट
अफीम एक महगी चीज है। फिर उसके साथ तर माल भी खाने को चाहिए। कहा से आए?

कौडी पर खून नहीं होता
सामान्य लाभ के लिए वहुत हानि नही की जाती।

कौन कहे राजा जी नंगे हैं
वडो की वात कहकर कौन उनकी अप्रसन्नता मोल ले।
(इसकी एक प्रसिद्ध कथा है कि एक वार कुछ ठगो ने एक राजा के पास जाकर कहा कि हम ऐसी पोशाक वनाते हैं जिसे वही मनुष्य देख सकता है, जो जीवन मे कभी झूठ न वोला हो। राजा को वडा कौतूहल हुआ और वह उस पोशाक को वनवाने के लिए तैयार हो गया। उसके लिए ठगो ने जितना भी पैसा चाहा, वह भी दे दिया। इसके कुछ दिनो वाद ठग खाली वक्स लेकर राजा के पास आए और वोले कि लीजिए श्रीमान्, यह आपकी पोशाक तैयार हो गई है। अव इसे पहिनकर देखा जाए कि कैसी वनी है। कहकर उन्होंने राजा के सव कपडे उतरवा डाले और उन्हे झूठमूठ ही एक-एक कर के नए कपडे पहिनाने का नाटक किया। जव कि वास्तव मे न तो वहा किसी तरह के कोई वस्त्र ही थे और न राजा को उन्होंने कुछ पहिनाया ही। ठगो ने जव कहा कि देखिए सरकार, पोशाक कैसी वनी है, तो राजा वडा हैरान हुआ, क्योकि उसे कही भी अपने वदन पर कपडे नज़र नही आ रहे थे, लेकिन यह मानकर कि यह पोशाक उसी व्यक्ति को दिखाई देगी, जो कभी झूठ

न बोला हो, वह कुछ कह नही सका। इसके बाद ठग तो वहा से चुपचाप चलते बने और राजा अपनी पोशाक को दिखाने के लिए दरबार मे आया। दरबारियो को जब मालूम हुआ कि यह पोशाक केवल सच बोलनेवालो को ही नजर आएगी, तो वे चुप रहे और कुछ कह नही सके। किन्तु वहा एक छोटा बालक था। उससे नही रहा गया। ओर वह बोल उठा कि अरे राजा जी तो नगे हे। तब राजा को पता चला कि वास्तव मे वह नगे है और ठग उनको मूर्ख बना गए है।)

कौन किसी के आदे जावे, दानापानी खेंच लावे
अन्नजल मुख्य है।

कौन-सा दरख्त है, जिसे हवा नहीं लगी
थोडे-बहुत कष्ट सभी को भोगने पडते है।
(हवा लगना एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ होता है 'सुहवत का असर होना'। इस तरह कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि ऐसा कौन-सा मनुष्य है, जिस पर सगत का प्रभाव न पडा हो।)

कौन-सी चक्की का पीसा खाया है?
जिससे तुम बहुत मोटे हो गए हो।
हँसी मे ही कहते है।

कौन हर रोज अतालीक हो समझाने का?
हर रोज तुम्हे कौन सबक पढाए?
अतालीक=गुरु, शिक्षक।

कौन कमाई पर तेल बुकवा? (पू०, स्त्रि०)
कमाई-धमाई कुछ न करके शौकीन बने फिरना।
बुकवा=(१) बुक्का, अभ्रक का चूर्ण।
(२) बूकना लगाने के अर्थ मे भी आता है।

कौने रूप पर इतना सिंगार? (पू०, स्त्रि०)
एक स्त्री का दूसरी से ताना मारकर कहना कि रूप तो कुछ है नही, फिर इतना शृगार किस बात पर?

कौवा कान ले गया
बिना सोचे-विचारे दूसरे की बात पर विश्वास कर लेना।
(कथा है कि किसी मूर्ख से एक व्यक्ति ने कह दिया कि तेरा कान कौवा ले गया। सुनते ही वह झट से कौवे के पीछे दौड पडा। लोगो ने जब पूछा कि क्या बात है, तो उसने जवाब दिया कि मेरा कान कौवा ले गया हे। उसे छीनने के लिए मैं उसके पीछे जा रहा हू। इस पर किसी ने कहा कि कान तो तेरे दोनो लगे हे। कौवा कहा से ले जाएगा? जब उसने अपने कान टटोल कर देखे, तो वास्तव मे दोनो जहा के तहा मौजूद थे और वह बडा लज्जित हुआ।)

कौवा चला हंस की चाल, अपनी चाल भी भूल गया
अपनी चाल छोडकर बडो की नकल करने से सदैव हानि होती है।

कौवा टरटराता ही है, धान सूखते ही है, (स्त्रि०)
फालतू आदमियो के विरोध करने से किसी का कोई काम नही रुकता। वह तो यथावत चलता ही है।

कौवे की दुम में अनार की कली
(१) किसी बदशक्ल आदमी का बढिया पोशाक पहिनकर निकलना।
(२) एक निकृष्ट वस्तु के साथ बढिया वस्तु का मेल होने पर।

कौवों के कोसे से ढोर नहीं मरते
कोई आदमी अगर अपने स्वार्थवश दूसरे का बुरा चाहे, तो उससे कुछ होता-हवाता नही।

कौवों को अंगूरी बाग
अयोग्य को अच्छी वस्तु देना।

क्या आग लेने आये थे?
(१) जब कोई आकर तुरत जाना चाहे, तब क०।
(२) जब कोई अपने आने के वास्तविक उद्देश्य को न बताना चाहे, तब भी उससे व्यग्य मे क०।

क्या उधार की मां मारी गई है? (पू०)
किसी मनुष्य ने किसी को कर्ज़ देने से इन्कार कर दिया। तब उसने कहा कि कर्ज की मा नही मर गई। मुझे कही न कही रुपया मिल ही जाएगा।

क्या करेगा दौला, जिसे दे मौला
भगवान ही सब को देता है, दौला उसमे कुछ नही करता।
(पजाब के गुजरात जिले मे १७वी शताब्दी मे शाह

दौला नाम के एक पहुचे हुए फकीर हो गए हे । जव कोई उनके पास याचना करने जाता था, तव वह उससे उक्त वाक्य कह दिया करते थे।)

क्या काबुल मे गधे नहीं होते ?
मूर्ख की कही कमी नही ।

क्या काजी की गधी चुराई है ?
मैने क्या किसी का कुछ बिगाडा है, जो तुम मुझे बे-मतलब डरा-धमका रहे हो।

क्या कोयलों की नाव डूब जाएगी ?
ऐसी कौन-सी बडी हानि हो जाएगी ?

क्या खाक तेरी परवाह ! चूल्हे मे से निकल भाड़ मे जा !
तुम्हारी इच्छा की बलिहारी, जो तुम चाहते हो कि मैं चूल्हे मे से निकल कर भाड मे जाऊ, अर्थात और भी गहरी मुसीबत मे पड़ जाऊ।

क्या खूब सौदा नकद है, इस हाथ दे उस हाथ ले
कर्मो का फल तुरत मिलता है।

क्या गोमती का पानी पिया है ?
जो इतनी नजाकत दिखाते हो ?
(लखनऊवालो के लिए ताने मे क०)

क्या घास मे साप नहीं चलता ?
अर्थात क्या अच्छे स्थान मे कोई बुराई नही हो सकती ?

क्या चूड़ियां फूट जाएगी ?
हौले-हौले काम कर रहे हो।
वहुत धीमे काम करनेवाले से व्यग्य मे क०।
(यह भी वैसा ही जैसे क्या पाव मे मेहदी लगी है।)

क्या जाने गंवार, घुंघटवा का भार, (स्त्रि०)
गवार आदमी प्रेम करने चला है, पर वह मूर्ख क्या जाने उसका भेद !

क्या टोटका करने आई थी ? (स्त्रि०)
(१) जव कोई आकर तुरत जाना चाहे, तव क०।
(२) जव किसी के यहा निमत्रण मे जाकर कोई वहुत ही कम भोजन करे, तव भी कहा जाता है।

क्या तमाशे की बात है, जिसका जाए, वही चोर कहलाए
जब कोई आदमी किसी का कुछ नुकसान कर जाए और उसके लिए उसे ही जिम्मेदार ठहराया जाए, जिसका नुकसान हुआ है, तब क०।
(फैलन की उक्त कहावत पर यह टिप्पणी है—'भारतीय पुलिस का यह आम तरीका है कि वह जब चोरी का पता लगाने मे असमर्थ रहती है, तव प्राय चोरी की रपट दर्ज करानेवाले को ही पकडती है और उल्टे उस पर यह आरोप थोपती है कि इस सब मे तुम्हारी ही कोई शरारत है। उसी से कहावत चली।')

क्या दम का कुछ भरोसा है ?
जिंदगी का क्या ठिकाना।

क्या दर्जी का कुछ, क्या मुकाम ?
दर्जी का क्या तो सामान, और क्या उसके ठहरने की जगह ?
(ऐसे व्यक्ति के लिए कहते है, जिसे अपने काम-धधे के सिलसिले मे हमेशा घूमते-फिरते रहना पडे। यह कहावत उस समय की है, जब सिलाई की मशीनो का आविष्कार नही हुआ था और दर्जी घरो पर जाकर सिलाई का काम करते थे। वे प्राय अपना सुई-धागा लेकर एक गाव से दूसरे मे घूमते भी रहते थे।)

क्या दिन जाते देखे
बीते दिनो की याद मे क० ।

क्या नंगी नहायेगी, और क्या निचोडेगी ?
निर्धन और सामर्थ्यहीन व्यक्ति।

क्या परदेसी की प्रीत और क्या फूस का तापना, दिया कलेजा काढ हुआ नहीं आपना, (स्त्रि०)
स्पष्ट। किसी प्रेमिका का अपने कृतघ्न प्रेमी के प्रति उपालभ।

क्या पाव मे मेहदी लगी है ?
जो इतने धीरे चलते हो। पैरो मे मेहदी लगी होने पर स्त्रिया स्वाभाविक-रूप से बहुत धीमे चलती हैं।

क्या पानी मथने से भी घी निकलता है ?
सूम के प्रति क०। ऐसे काम के लिए भी क० जिससे कोई नतीजा न निकलनेवाला हो।

क्या पिदड़ी और क्या पिदड़ी का शोरबा
तुच्छ और उपेक्षणीय व्यक्ति के लिए क०।
(पिदडी या पिद्दी बया की जाति का एक छोटा पक्षी होता है। मुहावरे मे तुच्छ या कमज़ोर को पिद्दी कहते है।)

क्या बालू की भीत, क्या ओछे की प्रीत।
प्रीत को गभीर से, जनम जाय हे बीत।
स्पष्ट।

क्या भरोसा है जिन्दगानी का।
आदमी बुलबुला है पानी का।
जीवन का कोई भरोसा नही, पानी के बुलबुले की तरह न जाने कब नष्ट हो जाए।

क्या मक्खी ने छींक दिया ?
अर्थात क्या कोई अपशकुन हो गया ?
जब कोई व्यक्ति सहसा अपने किसी निश्चय को बदल दे, तब प्राय उससे व्यग्य मे क०।

क्या मुंह और क्या मसाला ?
जब कोई व्यक्ति ऐसी बात कहे अथवा ऐसा काम करे, जिसके कहने या करने योग्य वह न हो, तब क०।

क्या मुंह पर फिटकार बरसती है
तुम्हे धिक्कार है। तुम्हे शर्म नही आती, जो तुमने ऐसा बुरा काम किया।

क्या मुंह मे घुनघुनिया है ?
जो बोल नही पाते। जब कोई स्पष्ट अपनी बात न कहे, या सकोचवश कह न पा रहा हो, तब क०।
घुनघुनिया=नमक मिर्च पडे उबले चने।

क्या मुंह मे पंजीरी भरी है ?
जो स्पष्ट नही बोलते।

क्या मुंह से फूल झड़ते हे
जब कोई मुह से बुरे शब्द निकाल रहा हो, तब उससे व्यग्य मे क०।

क्या मे तेरी पट्टी के नीचे पैदा हुई हूं, (स्त्रि०)
जो मे तुमसे दबू।
पट्टी से मतलब चारपाई से है।

क्या ले गया शेरशाह, क्या ले गया सलीमशाह ?
धन-सपत्ति सब यही पडी रहती है। कोई अपने साथ नही ले जाता।
(शेरशाह सूर और उसका पुत्र सलीमशाह सूर ये दोनो सन १५४२ और १५५४ के बीच दिल्ली के प्रसिद्ध बादशाह हो गए है।)

क्या साप का पांव देखा है ?
असभव बात कहने पर भर्त्सना मे क०।

क्या साप सूंघ गया ?
मतलब, चुप क्यो हो ? जवाब क्यो नही देते ?
(सूघ जाना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ साप के सबध मे काटना होता है। जिसे साप काट खाता है, वह बोल नही पाता।)

क्या सौ रुपए की पूंजी, क्या एक बेटे की औलाद ?
थोडी पूजी कभी भी खर्च हो सकती है, और एक लडका मर जाए तो निसतान हो जाता है।

क्या शान मे जुफ्ते पड जाएंगे ?
अपने हाथ से कोई काम करने या अपने से छोटे की सहायता करने मे मनुष्य का कुछ बिगडता नही।
जुफ्ता=सिकुडन, शिकन।

क्या शान मे बट्टा लग जाएगा ?
दे० ऊ०।
(यह तथा ऊपर की कहावत, दोनो उस समय भी प्रयुक्त होती है, जब कोई मनुष्य किसी काम के करने मे व्यर्थ का हीला-हवाला या अनिच्छा प्रकट करता हे।)

क्या हिजडो ने राह मारी है ?
क्या हिजडो ने रास्ता रोक रखा हे ? अथवा क्या रास्ते मे हिजडे लूट लेंगे। किसी स्थान पर जाने के लिए व्यर्थ के बहाने प्रकट करने पर क०।

क्यो अंधा न्योते और क्यों दो बुलाए ?
जानबूझकर कोई विपत्ति क्यो मोल ली जाए ?

(अंधे को अगर न्यौता जाए, तो यह निश्चित है कि वह सहायता के लिए अपने साथ एक और व्यक्ति लाएगा।)

क्यों आंखों मे खाक डालते हो ?
क्यो सरासर मूर्ख बनाते हो ?

क्योंकर री, तू उतरी पार ? क्यों कर री तू चाली बाढ़ ? क्यों कर री तूने यह घर जाना ? क्यों कर री, तूने मुझे पहचाना ?
(कथा है कि कोई स्त्री अपने घर पर नित्य कढी खाते-खाते ऊब गई थी, इसलिए वह नदी पार अपने एक रिश्तेदार के यहा चलती बनी। दुर्भाग्य से वहा भी उसे कढी खाने को मिली। तब उसे सबोधित करके उसने उपर्युक्त वाक्य कहा । साराश—मनुष्य जिस बात से बचता है, प्राय वही उसके सामने आती है।)

क्यों कही, और क्यो कहाई
क्यो किसी से ऐसी बात कही जाए कि बदले मे हमे भी वैसी ही (कडी) बात सुननी पडे।

क्यों कांटों मे घसीटते हो ?
क्यो मुझे लज्जित करते हो।
(काटो मे घसीटना एक मुहावरा, हे जिसका अर्थ होता हे कि आप मेरी जितनी प्रशसा कर रहे है, मै उसका पात्र नही हू। मेरी इतनी प्रशसा करना मानो मुझे काटो मे घसीटना है।)

क्यो चबा-चबा कर बातें करते हो
अधूरी बात क्यो कहते हो ? जो कुछ कहना हो स्पष्ट कहो।

क्यों बहिश्त में लातें मारते हो ?
(१) हमेशा भोग-विलास मे डूबे रहनेवाले से क०।
(२) झूठे मे भी क०।
(३) जब कोई मनुष्य सहज मे मिली किसी सुखभोग की वस्तु को ठुकरा रहा हो, तब भी कह सकते है।

क्वार का सा झल्ला, आया, बरसा, चल्ला
(१) जब कोई सहसा आए और तडक-भडक दिखाकर चला भी जाए, तब क०।
(२) सहसा क्रोध आने और तुरत शात हो जाने पर भी क०।
(क्वारी मे प्राय एकाएक वर्षा होती है और बहुत देर नही ठहरती। उसी से कहा० की सार्थकता है।)

क्वांर जाड़े का द्वार
क्वार के महीने से जाडा आरभ होता है।

ख

खंजर तले टुक दम लिया तो उससे क्या ?
आसन्न सकट से क्षणमात्र के लिए छुटकारा मिला, तो उससे क्या ?

खग जाने खग ही की भाषा, (तु० रा०)
चालाक ही चालाक की बात समझ सकता है।

खड़ा बहिश्त मे गया
अच्छी मौत मरा।

खड़े पीर का रोज़ा रखा है क्या ?
जो आने पर अपना आसन ग्रहण न करे, उससे क०।

खड़े रस्सी, बैठे कोस, खाते-पीते तीन कोस
आदमी यात्रा मे जितनी देर खडा रहता है, उतनी देर मे एक रस्सी, जितनी देर बैठता है, उतनी देर मे एक कोस, और खाने-पीने मे जितना समय नष्ट करता हे, उतने मे तीन कोस चल सकता है। तात्पर्य—अपना समय नष्ट नही करना चाहिए।
रस्सी = जरीब, भूमि की एक माप जो गज होता हे।

खता करे बीबी, पकड़ी जाए बादी
कसूर कोई करे और दड कोई भोगे।

खत्री से गोरा सो पिंड रोगी
जब कोई अपने से अधिक चतुर को धोखा देने का प्रयत्न करे, तब क०।
पिंड रोगी = पाण्डु या पीलिया रोग से ग्रस्त।
(खत्री अपने गोरे रग और सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।)

खरब अरब लौं लच्छमी, उदै अस्त लौं राज।
तुलसी हरि की भगत बिन, यह आवे किहि काज।
स्पष्ट।
इसका रूप इस प्रकार होता है—अरब खरब लौं द्रव्य है, उदै अस्त लौं राज।)

खरबूजा चाहे धूप को और आम चाहे मेह।
नारी चाहे जोर को और बालक चाहे नेह।
स्पष्ट।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है।
समाज मे एक आदमी जैसा करता है, वैसा ही दूसरा भी करने लगता है।

खरसा प्यारा बीजना, स्याले प्यारी आग।
वर्षा प्यारी तीन चीज, कंबल, छावा, राग। (ग्रा०)
स्पष्ट।
खरसा=ग्रीष्म ऋतु। बीजना=पखा। स्याला=जाडा। छावा=छप्पर। राग=गाना।

खरा खेल फरक्कावादी
खरा मामला या खरा काम।
(किसी समय फर्रुखाबाद मे बहुत खरी चादी का रुपया बनता था। उसी से कहावत बनी।)

खरादी का काठ काटे ही कटे, (क०)
काम करने से ही होता है।
खरादी=खरादनेवाला।

खराब खस्ता, नाज सस्ता
ऐसा दुर्दशा-ग्रस्त व्यक्ति, जिसे लोग सस्ते अनाज की तरह त्याग दे। अथवा खराब और सस्ती चीज।

खरी मजूरी चोखा काम
पूरी और अच्छी मजदूरी देने से काम भी अच्छा होता है।

खर्चा घना, पैदा थोड़ी।
किस पर बाधू घोडा घोड़ी।
बिना आमदनी के कोई शौक भला कैसे किया जा सकता है?

खलक का हलक किसने बंद किया
दुनिया के मुह को कौन बद कर सकता है? लोग तो कहते ही रहेगे।

खलगुड एक ही भाव
कुशासन। जहा अच्छे-बुरे की परख न हो।

खलया सास किन सासो मे।
कोदों का भात किन भातो मे। (पू०)
ऐसे आदमी के लिए उपेक्षा मे क०, जिसकी वुकत न हो।
खलया सास=मौसेरी सास; जिससे कोई विशेष काम नही पडता।
कोदो=एक हलका अनाज।

खलीलखा फाख्ता मारते है
(मुहावरा वास्तव मे 'फाख्ता उडाना' है, और यह कहावत इस तरह प्रचलित है—वे दिन गए जब खलील खा फाख्ता उडाते या उडाया करते थे। कहा जाता हे दिल्ली मे कोई खलील खा हो गए है, जिन्होने कबूतर की जगह फाख्ता उडाई थी।)

खल्क की जबान, खुदा का नक्कारा
जनता की राय को ईश्वर का उपदेश समझना चाहिए।

खल्क खुदा की, मुल्क बादशाह का
सृष्टि ईश्वर की और जमीन बादशाह की है।
(मुगल जमाने मे डुग्गी पीटते समय कहते थे।)

खवे से खवा छिलता है
यानी बहुत भीड है।
खवा=कधा।

खस कम जहां पाक
बुरे आदमी की मृत्यु पर कहते है कि चलो अच्छा हुआ, दुनिया पाक हुई।
खस=कूडाकरकट।

खसम का खाये, भाई का गायें (स्त्री०)
किसी का खाना और किसी के गुण गाना।

खसम किया सुख सोने को कि पाटी लग के रोने को, (स्त्रि०)
अभागी लडकी का कहना, जिसका व्याह बूढे के साथ हुआ है। अथवा जिसका पति उसे नही चाहता।

खसम देवर दोनो एक सास के पूत, यह हुआ वा वह हुआ, (ग्रा०)
किसी स्त्री के प्रति व्यग्य मे कहना, जिसका देवर से प्रेम हो गया हो।
(कई जातियो मे पति के मरने पर उसके छोटे भाई से व्याह कर लेने की प्रथा प्रचलित है। कहावत मे उस ओर भी सकेत है।)
खसम से छूटे तो यारों के जाए
व्यभिचारिणी स्त्री०।
खाड़ और रांड़ का जोबन रात को
मिठाई और वेश्या का आनद रात मे ही।
खाड की रोटी, जहां तोड़ो, वहां मीठी
अच्छी वस्तु हमेशा अच्छी ही रहती है।
खाड़ खूंदेगा सो खाड़ खायेगा
जो परिश्रम करेगा, उसी को मिलेगा।
खाड बिना सब राड़ रसोई
मिठाई के बिना भोजन का आनद नही आता।
खांडा बाजै रन पड़े, दाता बाजै घर पडे
तलवार चलना लडाई के लक्षण और झगडा होना घर की बर्वादी के लक्षण।
दात बजना=(मु०) कलह होना।
खाइए मन भाता, पहनिए जग भाता
जो अपने को रुचे सो खाना चाहिए, जो सब को रुचे वही पहिनना चाहिए।
खाई करै कमाई, कप्पड़ करे सिंगार
भोजन से ही परिश्रम होता है, और कपडो से बदन सजता है।
खाई भली कि माई भली
खाना मा से प्यारा होता है।
खाई मुगल की ताहरी, कहां जाएगी बाहरी
मुगल की ताहरी का स्वाद लग गया, अब जा कहा सकती है?
ताहरी=एक प्रकार की बढिया खिचडी।
खाऊँ तो गेहूं न तो रहूं यूं ही
जीभ के लालची के लिए क०। जिद्दी के लिए भी क०।
खाक चाट के कहता हूं
अत्यधिक विनम्रता दिखाना।
खाक छानते, बेर बीनते
मारे-मारे फिरना।
खाक डाले चांद नहीं छिपता
यशस्वी पुरुषो की निंदा करने से उन के यश मे बट्टा नही लगता।
खाक न धूल, बकाइन के फूल
फालतू आदमी या ऐसा जो फालतू बात करे।
बकाइन=नीम की जाति का एक पेड।
खाकी अडे की पैदाइश
तुच्छ व्यक्ति।
खाकी अंडो मे बच्चे नहीं होते
खोखले आदमी से कोई काम नही निकल सकता।
खाके जल्दी चलिए कोस, मरिए आप दैव के दोस
खाकर तुरत नही चलना चाहिए।
खाके पछताता है नहा के नहीं पछताता।
खाने से हानि हो सकती है, पर नहाने से नही।
(नहाना हमेशा गुणकारी होता है।)
खात पड़े तो खेत, नहीं तो भूड का रेत, (कृ०)
खेत मे खाद देने से ही उपज अच्छी हो सकती है।
खाता भी जाए, और बडबडाता भी जाए
स्पष्ट। असतोपी।
खाते कमाते रहो
आशीर्वाद।
खाते पीते जग मिले, औसर मिले न कोय
सुख के सब कोई साथी होते है, दुख मे भी कोई नही आता।
खान खाना, जिनके खाने मे बताना
(खानखाना का भोजन सोने के थाल मे परोसा जाता था। खानखाना से मतलब अकबर के दोस्त और मत्री बहराम खा से है।—फ़ैलन।)
खाना और उघाना
आलसी के लिए क०।
खाना और ऐंड़ाना
निकम्मे लडके के लिए क०।

खाना और गुर्राना
कृतघ्नता दिखाना।

खाना न कपड़ा, सेंत का करना, (स्त्रि०)
भरपेट खाने को न मिलने पर क०।

खाना न कपड़ा, सेंत का भतरा, (स्त्रि०)
निकम्मा पति।

खाना पराया है, तो पेट तो पराया नहीं है
माल मुफ्त का है तो क्या हुआ, ज्यादा खाने से तो अपने को ही कष्ट होगा। लोभवश कोई ऐसा काम नही करना चाहिए, जिससे अपने को परेशानी हो।

खाना पीना गांठ का, निरी सलाम आलेक
झूठा शिष्टाचार दिखाने पर।

खाना वहा खाओ, तो पानी यहा पीना
जल्दी लौटना।

खाना शराकत, रहना फरागत
मिलजुल कर रहो, मगर हिसाव ठीक रखो।

खाने के दांत और, दिखाने के और
(१) ऊपर से प्रेम-भाव और भीतर से कपट।
(२) कहना कुछ और करना कुछ।

खाने को ऊद, कमाने को मजनूं
निकम्मा आदमी।
मजनू=दुवला-पतला, कमजोर।

खाने को न मिले, खैर, पर नशे को मिले
नशेलची का कहना।
(यहा नशा शब्द व्यापक अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है। उसमे गाजा, भाग, चरस, शराव और तमाखू आदि सभी शामिल है।)

खाने को पीछे, नहाने को पहले
खाने के पहले नहाना चाहिए।

खाने का 'विस्मिल्ला', काम को 'इस्तगफिरुल्ला', (मु०)
खाने के लिए तैयार, पर काम के लिए जी चुराना।
(मुसलमानो मे कोई कार्य आरभ करते समय 'विस्मिल्लाह' अर्थात् 'ईश्वर के नाम पर' कहने की प्रथा है, वैसे ही जैसे हिन्दुओ मे 'श्रीगणेश'। 'इस्तगफिरुल्ला' का अर्थ है 'ईश्वर वचाए'।)

खाने को महुआ, पहिनने को अमौआ
(१) खाने की फिक्र न करना, पर वढिया कपडे पहनना।
(२) झूठी तडक-भडक दिखाना।
अमौआ=मृगिया रग का एक कीमती कपडा, जिसका प्रचार अब बद हो गया है।)

खाने को शेर, कमाने को वकरी
जो खाए वहुत, पर काम कुछ न करे।

खाने मे चटनी, पलंग पर नटनी
खाने मे चटनी हो, और पलग पर नटनी हो। भोग-विलासवालो के लिए क०।
नटनी=औरत, वेश्या।

खाने मे शरम क्या, और घूसों मे उधार क्या?
खाने मे सकोच नही करना चाहिए, और मार का वदला उसी समय चुका लेना चाहिए।

खाम को काम सिखात है
काम करते अनाडी भी होशियार वन जाता है।

खाय कांसा भर, चले आसा भर
आलसी और पेटू पर क०।
कासा=थाली। आसा=(अ० असा) डडा।

खाय के वड़िया, टांग रहे खड़ियां
वडियो की प्रशसा।

खाय के जल्दी चलिये कोस, मरिये आप दैव के दोस
खाकर तुरत नही चलना चाहिए।

खाय चना, रहे वना
चने की प्रशसा।

खाय तो पछताय, न खाय तो पछताय
ऐसी वस्तु जो वास्तव मे अच्छी न हो, पर जिसे अच्छी समझ कर सव पाने के लिए लालायित भी हो।
(किसी ठग ने गुड के शीरे मे लकडी के वुरादे को पका कर लड्डू वनाए और यह कह कर वेचना शुरु कर दिया कि ये दिल्ली के लड्डू हैं। नई चीज़ देखते-देखते विक गई और ठग पैसा इकट्ठा कर के घर चला गया। वाद मे जो लोग खरीदने आए, वे लड्डू न पा सकने के कारण पछताते रहे और

जिन्होने खरीदे थे, वे ठगे जाने के कारण पछता कर रह गए।)

खाय न खिलाय, खाला दीदों आगे पाया, (स्त्रि०)

चाची न तो खाती है न खिलाती है, उसकी आख और पैर दोनो जाते रहे। (कोसना)

खाय नाना का, कहलाय नाना का

खाय किसी का, किसी और का हो कर रहे। (कृतघ्नता)

खाया-पीया अंग लगा

खाना-पीना सार्थक हुआ।

खायें तो घी से, नहीं जायें जी से

शौकीन खानेवाले पर क०।

खाये के गाल, नहाये के बाल, नही छिपते

ऐसे अवसर पर क०, जब आदमी किसी काम को करके छिपाए, पर वह उसके रग-ढग या चेहरे से प्रकट हो रहा हो।

खारिश्ती कुतिया और मखमल की झूल

असुदर वस्तु का शृगार।

खारिश्ती=जिसे खाज हो, खजैली।

खाला का दम और किवाड़ की जोडी, (मु०)

खाला के दम पर गुजर-वसर करते है, और घर मे किवाड की जोडी के सिवा कुछ नही।

डीग हाकनेवाले के लिए क०।

खाला का रुतवा मां के बराबर, (मु०)

चाची या मौसी मा के बरावर होती है।

खाला की मेहमानी, हाथ डाल पछतानी, (मु०, स्त्रि०)

कोई लडकी अपनी मौसी के यहा गई। वहा उसे वहुत काम करना पडा। तव यह कहावत कही गई।

खाला जी का घर नहीं है, (मु०)

आसान काम नही है।

(मौसी के यहा सव प्रकार की स्वतत्रता रहती है। चाहे जो करो। इसीलिए कहा गया है।)

खाली खरीती, पूरी फजीती, (स्त्रि०)

पैसा पास न होने से पूरी खरावी होती है।

खाली घर मे कलंदर बैठे

घर हमेशा बद रखे, नही तो फकीर रहने लगते हैं।

खाली वनिया क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी मे धरे

जव कोई खाली वैठा आदमी व्यर्थ का काम करे, तब क०।

खाली मवाश, कुछ किया कर

आदमी को खाली नही वैठना चाहिए। कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

खाली से बेगार भली

खाली वैठने से तो मुफ्त मे किसी का काम करना अच्छा।

खाली हाथ क्या जाऊं, एक सदेसा लेता जाऊं

स्पष्ट वात न कहना।

खाली हाथ मुंह तक नहीं जाता

आदमी को उदार होना चाहिए।

खा ले पहन ले, सो अपना

इसलिए कि पैसे का कुछ ठिकाना नही, कव रहे, कब न रहे।

खाविंद राज बुलंद राज, पूत राज दूत राज, (स्त्रि०)

पति के रहते हुए ही स्त्री को सदा सच्चा सुख मिलता है।

खावे घोडा या खावे रोडा

घोडा रखने या मकान वनवाने मे वेशुमार खर्च होता है।

खावे पान, टुकड़े को हैरान

जिसे पान खाने की लत पड जाती है, वह उसका एक टुकडा तलाश करता फिरता है। अथवा घर मे खाने को नही, फिर भी पान का शौक करते हैं।

खावे बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह

जो वहुत खाते रहने पर भी दुवला रहता है, उस पर क०।

खावे मूंग, रहे ऊंघ।

मूग खाने से आलस्य आता है।

(मूग एक हलका अनाज है। इसी से ऐसा कहा गया है। पर इसका कोई वैज्ञानिक कारण नहीं।)

खावे मोट, तोड़े कोट

मोट या मोठ की दाल पौष्टिक मानी जाती है।

खिचा-खिचा वह फिरे जो पराए बीच मे पड़े

दे०—इचा-खिचा वह...।

खिचड़ी खाते पहुचा उतर गया

जो बहुत सुकुमार बने उससे व्यग्य मे क०। कार्यारभ करते ही विघ्न पडा, यह अर्थ भी हो सकता है।

खिचड़ी चली पकावन को, चरखा तोड़ जला।
आया कुत्ता खा गया, बैठी ढोल बजा।

जो किसी एक वस्तु को पाने के लिए अपनी एक दूसरी वस्तु नष्ट कर दे या किसी को दे डाले और बाद मे उस वस्तु को न पा सके, उसके लिए क०। दे०—आया कुत्ता खा ..।

ख़िजर मिले जी ख़िजर मिले, (मु०)

इच्छित वस्तु के मिल जाने पर क०।

(मुसलमानो मे ख़िजर एक पैगबर हो गए है, जिन्हे अमर माना जाता है।)

ख़िजरी खबर सच्ची होती है

ख़िजर साहब की बात सच निकलती है।

ख़िदमत से अजमत है

सेवा से ही बडप्पन सिद्ध होता है।

खिलाए का नाम नहीं, रुलाए का नाम

पराए लडके को चाहे जितना खिलाओ-पिलाओ, उसका कोई यश नही मिलता, पर किसी वजह से वह रोने लगे, तो तुरत शिकायत की जाती है कि हमारे लड़के को रुला दिया।

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे

कमजोर की खीझ।

खील-बताशो का मेल है

दो एक-सी अच्छी वस्तुओ का मेल।

खील बताशों का मेह

अनहोनी घटना।

(कथा है कि एक बार शेख़चिल्ली कोई चीज़ चुराकर अपने घर लाए। उनकी मा को जब पता चला, तो उसे छिपाकर रख दिया। बाद मे यह सोचकर कि कही उसके पुत्र की मूर्खता की वजह से चोरी का भेद न खुल जाए, उसने चुपचाप आगन मे खील-बताशो की वर्षा की और शेख़चिल्ली को समझा दिया कि ये आसमान से बरसे है। बाद मे छानबीन होने पर शेख़चिल्ली ने मजूर कर लिया कि हा चोरी उन्होने ही की है। मा ने तब कहा कि यह तो निरा पागल है। चोरी करना क्या जाने। इससे पूछा जाए कि इसने चोरी किस दिन की। लोगो ने पूछा, तो शेख़चिल्ली ने तुरत उत्तर दिया कि जिस दिन खील-बताशे बरसे। लोग समझ गए कि यह सचमुच पागल है।)

खुटके पर सोना

लकडी पर सोना लगा है। मतलब, पैसेवाला है।

खुडका हुआ चोर उमडा

आहट हुई नही कि चोर भाग जाता है।

(अपराधी का मन बडा कमज़ोर होता है।)

खुद करदारा इलाजे नेस्त, (फा०)

अपने किए का क्या इलाज ?

खुदाई ख्वार, गधे सवार

खुदा करे तुझे गधे पर सवार होना पडे। एक गाली।

(पुराने जमाने मे दुराचारी को दड देने के लिए अक्सर गधे पर बिठाकर उसकी सवारी निकालते थे।)

खुदा का दरवाज़ा हमेशा खुला है

हमेशा उससे फरियाद की जा सकती है।

खुदा का दिया कंधे पर, पंचो का दिया सिर पर

पचो की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा से बडी है।

खुदा का दिया सिर पर

इसके दो अर्थ है—

(१) खुदा का दिया हमे मजूर है।

(२) खुदा का दीपक यानी चाद हमारे सिर पर है।

खुदा का मारा हराम, अपना मारा हलाल

जो अपने-आप मर जाता है उसे तो अपवित्र और जिसे स्वय मारते है उसे पवित्र समझते हैं।

खुदा किसी को किसी का मुहताज न करे।

ईश्वर करे हमे कभी किसी का एहसान न लेना पडे।

खुदा किसी को लाठी लेकर नहीं मारता

मनुष्य स्वय अपने किए का दड भोगता है।

खुदा की चोरी नहीं तो बंदे का क्या डर ?

ईश्वर सर्वज्ञ है। उससे जब कोई बात छिपी नही रह सकती, तब मनुष्य से क्या डरना ? यानी कोई काम छिपाकर क्यो किया जाए ?

खुदा की बातें खुदा ही जाने

ईश्वर की बाते ईश्वर ही जानता है।

पडे भटकते है लाखो पडित हजारो मुल्ला करोडो स्याने,
जो खूब देखा तो यारो, आखिर खुदा की बाते खुदा जाने।
(नजीर)

खुदा की लाठी में आवाज नहीं।

ईश्वर कब किस तरह दड देता है, इसका पता नही चलता। अथवा मनुष्य स्वय ही अपने कर्मों का फल भोगता है। ईश्वर तो उपलक्ष्य है।

खुदा के गजब से डरते रहिए

ईश्वर के कोप से डरना चाहिए।

खुदा के घर मे चोर का क्या काम ? (मु०)

स्पष्ट।

खुदा के घर मे सब कुछ, (मु०)

स्पष्ट।

खुदा के घर से फिरे हैं

(१) जो मौत से बच जाए, उसके लिए क०।
(२) जो भविष्यवक्ता होने का ढोग करे, उसके लिए व्यग्य मे क०।

खुदा के वास्ते बिल्ली भी चूहा नहीं मारती।

ईश्वर के नाम पर कोई बुरा काम नही करता।

खुदा को याद करो

ईश्वर का नाम लो।

खुदा खफा हो तो पैदल चलाए, ज्यादा खफा हो तो सिर पर बोझा रखाए, जो खुश हो तो मेंह बरसाए, ज्यादा खुश हो तो बेटा दे

स्पष्ट।

खुदा गंजे को नाखून न दे

क्योकि नाखून से सिर खुजाकर वह खून निकाल लेगा। जब कोई ओछा व्यक्ति ऊचे पद पर बैठकर बहुत अंधेर करने लगता है, तब क०।

खुदा, जालिम से पाला न पड़े

ईश्वर अत्याचारी से बचाए।

खुदा देखा नहीं तो अक्ल से तो पहिचाना है

भले ही ईश्वर को न देखा हो, पर उसे बुद्धि से तो पहिचाना जा सकता है।

खुदा देता है तो छप्पड़ फाडकर देता है

ईश्वर को जब देना होता हे, तो किसी न किसी बहाने देता ही है।

खुदा देता है तो नहीं पूछता—'तू कौन है ?'

ईश्वर को जिसे देना होता है उसे देता है, फिर वह कोई भी हो।

खुदा दो सींग भी दे, तो वह भी सहे जाते हैं

ईश्वर का दिया कष्ट भी स्वीकार है।

खुदा ने तो जवाब दे दिया है, बेहयाई से जीते हैं

निर्लज्ज के लिए क०।

खुदा भरे को भरता है

जिसके पास पैसा होता हे, ईश्वर उसी को और देता है।

खुदा भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं

ईश्वर दिन भर मे सबको भोजन देता है।

खुदा महफूज रक्खे हर बला से

ईश्वर बचाए हर विपत्ति से।

खुदा मेहरबान, तो जग मेहरबान

ईश्वर की कृपा है तो सबकी कृपा है।

खुदा मेहरबान तो कुल मेहरबान

दे० ऊ०।

खुदा रज्जाक है, बंदा कज्जाक है

ईश्वर सबका रक्षक है, मनुष्य भक्षक है।

खुदा लगती कोई नहीं कहता, मुह देखी सब कहते हैं

लोग खुशामद पसद करते हैं।

खुदा लगती = बिल्कुल सच बात।

खुदा लडने की रात दे, बिछुडने का दिन न दे, (स्त्रि०)

ईश्वर वियोग का दिन न दिखाए।

खुदा वास्ते की दुश्मनी है

व्यर्थ का झगडा।

खुदा शक्करखोरे को शक्कर ही देता है
ईश्वर सब की इच्छा पूरी करता है।

खुदा सबकी मेहनत स्वारथ करता है, अकारथ नही करता
ईश्वर सब का परिश्रम सफल करता है।

खुदा से खैर मांगो
ईश्वर से कुशल मागो।

खुदा हाज़िर व नाजिर है
ईश्वर सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है।

खुदा हथियार, और किया भतार; किसी के काम नही आता, (स्त्रि०)
मोथरा हथियार, और किया हुआ पति बेकार है।

खुदी और खुदाई मे बैर है
अहमन्यता और ईश्वर मे बैर है।

खुफ्ता रा खुफ्ता के कुनद बंदार, (फा०)
सोता आदमी सोते हुए को कैसे जगा सकता है?

खुर खांसी, तेरी दाई के गले मे फांसी
बच्चो की खासी का टोटका।

खुरचन मथुरा की और सब नकल
स्पष्ट।

खुर्दा न बुर्दा, मुफ्त दर्द गुर्दा
न खाने को न पीने को, मुफ्त मे पेट का दर्द। मतलब, व्यर्थ की परेशानी।

खुश रह पठानी, निकल गया पानी
काम सतोषजनक होने पर मालिक मजदूर से कहता है।

खुशामद से आमद है
खुशामद से ही पैसा मिलता है।

खुशामदी का मुह काला
खुशामदी का बुरा हो।

खुश्का खाओ
चावल खाओ।
(एक मुहावरा जिसका अर्थ है—ज़बान बद करो।)

खून वह जो सिर चढ़के बोले
खून छिपता नही। हत्यारे के मुह से अपने-आप प्रकट होता है।

खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो
जब एक-सी प्रकृति के दो व्यक्ति मिल जाते है, तो उनकी मजे मे कटती है।

खूब दुनिया को आजमा देखा, जिसको देखा तो बेवफा देखा
दुनिया मे सच्चे मित्र नही मिलते।

खूब ही दांत खट्टे हुए
बहुत नीचा देखना पड़ा।

खेत गये किसान, (कृ०)
किसान वही जो खेत पर जाए, अर्थात खेती स्वय देखे।

खेत बरानी जैसे नियाम राजानी, (कृ०)
बिना सीच का खेत ऐसा है जैसे राजा का इनाम, कोई भरोसा नही।
जिन खेतो मे सिंचाई का साधन नही होता, और जो केवल वृष्टि के सहारे रहते है, उनके लिए, क०।

खेत बिगाड़े खरतुआ और सभा बिगाड़े दूत, (कृ०)
घासपात और कूडाकरकट से खेत इस तरह खराब होता है, जैसे चुगलखोर से सभा।

खेती कर-कर हम मरे, बहुरे के कोठे भरे, (कृ०)
कर्जदार किसान का क० कि हम तो खेती करके मरते है और साहूकार का घर भरता है।

खेती, खसम सेती, (कृ०)
खेती मालिक के देखने से ही ठीक होती है।

खेती, पाती, बीनती, औ घोड़े का तग।
अपने हाथ सवारिये, चह लाखो हों संग।
स्पष्ट।
अपने हाथ से किया गया काम ही अच्छा होता है।
पाठा०—खेती, पाती, बीनती, और खुजावन खाज।
अपने हाथ सवारिये, जो पिय चाहो राज।

खेती राज रजाये, खेती भीख मगाये, (कृ०)
फसल अच्छी हुई तो लाभ होता है, नही तो हानि।

खेदी गिल्लो अत को पेड ही तले आती है
घूम-फिर कर आदमी अत मे घर ही लौटकर आता है।
गिल्लो = गिलहरी।

खेप हारी, जनम नही हारा

किसी मजदूर का कहना कि मैने काम की जिम्मेदारी ली है, अपनी जिंदगी नही बेच दी, अर्थात तुम्हारी गुलामी नही कर सकता।

(एक वार मे जितनी वस्तु लाई जा सके, उसे खेप कहते है।)

खेल खिलाड़ी का, पैसा मदारी का

खेलनेवाला खेल दिखाता है, पैसा मदारी को मिलता है।

काम कर्मचारी करते है, नाम अफसर का होता है।

खेल खिलाड़ी का, भगत भैय्या जी की,

दे० ऊ०।

(भगत एक शौकिया मडली होती है, जो भाडो की तरह नक्ल का तमाशा दिखाती है। तमाशा तो खिलाडी दिखाते है, नाम सचालक का होता है।

खेल न जाने मुर्गी का, उड़ाने लगा बाज

साधारण काम जानते नही, मुश्किल काम करने चले।

खेल मे रोवे सो कौवा

बच्चे खेल मे कहते है।

खैर का बेड़ापार है

भले का काम सफल होता है।

खैर की जूती, खैरात का नाड़ा, पढ़ दे मुल्ला अकद उधारा, (स्त्रि०)

मागे की जूती और मागे का ही पैजामा है, इसलिए मुल्ला तू उधार (विना कुछ लिए) व्याह भी करा दे।

खैर[1] जो हुआ सो हुआ

हो गया सो हो गया, चिन्ता न करो।

खैरात के टुकडे, वाजार मे डकार

जो मागे की वस्तु पर घमड करे, उस पर क०।

(डकार भरपेट खाने का लक्षण है। वाजार मे डकार लेने से सबको जान पडा कि खूब खाकर आए है, पर वास्तव मे भीख के टुकडे खाए हैं।)

खोगीर की भर्ती

वेकार चीजो या मनुष्यो से जगह भरना।

खोटा पैसा, खोटा बेटा, वक्त पर काम आता है

किसी वस्तु को निकम्मी समझकर मत फेको। किसी समय वह भी काम आ सकती है।

खोन पाक, खोन पोश पाक, खोल के देखो तो खाक ही खाक, (स्त्रि०)

थाली भी साफ, थाली ढकने का कपडा भी साफ, पर खोलकर देखो तो धूल ही धूल।

जहा केवल ऊपरी तडक-भडक हो, ओर असलियत कुछ न हो, वहा क०।

खोन=(फा० ख्वान) वह थाली, जिसमे भोजन परोसा जाता है।

खोन वड़ा, खोनपोश वडा, खोल के देखो तो आधा बडा, (स्त्रि०)

दे० ऊ०।

यहा वडा के दो अर्थ है—

(१) खूब लबा-चौडा।

(२) उर्द की पीठी का प्रसिद्ध पकवान।

आधा वडा=आधा टुकडा वडे का।

खोल खीसा, खा हरीसा

जेव मे पैसे हो, तो चाहे जो खाओ।

हरीसा=(अ० हरीस) खाने की इच्छा रखने वाला, लालची, पेटू।

खोल घड़ा, कर वे धडा, (व्यं०)

घडा खोल कर जल्दी सामान दे।

(ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो किसी वस्तु को लेने के लिए वहुत जल्दी मचाए, पर देने के लिए जिसके पास पूरे दाम न हो।)

धडा करना=तौलना।

ग

गंग जहा रग, (हिं०)

जहा गगा वहीं आनद।

गगा कर गोर गरीबन की, (हिं०)

गंगा से प्रार्थना।

गंगा किसकी खुदाई है

एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न। गगा को खोदने का काम कोई कर नही सकता।

गंगा के मेले में चक्की-राहे को कौन पूछे ?

गगा के मेले मे चक्की टाकनेवाले की क्या जरूरत ?

(उसकी आवश्यकता तो घर पर ही पड सकती है, जहा चक्की है।)

गंगा को आना था, भगीरथ को जस, (हिं०)

जव काम तो आप ही हो जाय और किसी दूसरे को मुफ्त मे यश मिले, तव क०।

पाठा०—गगा आवनहार भागीरथ के सिर पडी।

गंगा गए मुड़ाए सिद्ध, (हिं०)

सुयोग मिलते ही काम कर डालना चाहिए।

गंगा गए मुड़ाए सिर

गगा अथवा अन्य तीर्थस्थान मे जाने पर सिर मुडाना पडता है।

गगा नहाए क्या फल पाए,
मूंछ मुड़ाए घर को आए।

ढोग करनेवालो पर व्यग्य।

गगा नहाए मुक्त होय, तो मेढक मच्छियां।
मूड़ मुड़ाए सिद्ध होय, तो भेड़ कपछियां।

यदि गगा नहाने से मुक्ति मिलती हो, तो मेढक और मछलिया भी मुक्ति पा सकती हे। सिर मुडाने से सिद्ध वन सकता हो, तो भेडे, मेमने आदि भी सिद्धि-लाभ कर सकते है, क्योकि उनकी भी मुडाई होती है।

गंगा बही जाए, कलबारीन छाती पीटे

गगा का पानी व्यर्थ वहते हुए देखकर कलवारिन 'हाय हाय' करती है, क्योकि उसे शराव मे मिलाने के लिए पानी की वहुत आवश्यकता पडती है। निष्प्रयोजन अफसोस करनेवालो के लिए क०।

गंजफे के तीनो खिलाडी रोते है

तीनो कहते हैं कि हमारे पास वुरे पत्ते है।

गजफा=(फा० गजीफा) एक खेल जो ८ रग के ९६ पत्तो से खेला जाता हे।)

गज वेरज नही

बिना कष्ट के धन नही मिलता। अथवा विना परिश्रम के सफलता प्राप्त नही होती।

गज=(फा०) खजाना।

गंजा मरा खुजाते-खुजाते

कोई जव अपने कर्मो का फल भोगता है, तव क०।

गंजी कबूतरी और महल मे डेरा

अयोग्य आदमी को ऊचा स्थान मिलना।

गंजी पनहारी और गोखरू का हंडुवा

गजी पनहारी और सिर पर खूवसूरत कुडरी। (गोखरू गोटे वा बादले का वना एक साज होता है, जो व्याह-शादियो मे बढिया कपडो पर लगाया जाता है। हडुवा उसे कहते है, जिस पर घडा रक्खा जाता है (ऐडुरी, कुडरी)। इसके अतिरिक्त गोखरू एक जगली पौधे का वीज भी होता है, जिसमे वहुत काटे होते है। यदि गोखरू का यह अर्थ लगाया जाए, तो कहा० का अभिप्राय हो जाएगा—गजी पनहारी और सिर पर काटो की कुडरी। यानी मुसीवत मे मुसीवत)।

गंजी सत्ती, ऊत पुजारी

जैसे को तैसा।

सत्ती=देवी।

गंजे को खुदा नाखून न दे

दे०—खुदा गंजे को. . .।

गदी बोटी का गदा शोरवा, (स्त्रि०)

खराव साधनो से खराब चीज़ तो वनेगी ही।

गंदुम अज़ गंदुम बिरोयद, जौ ज़ौ जौ, (फा०)

गेहू से गेहू और जौ से जौ पैदा होते हैं।

गंवार का हांसा, तोड़े पांसा, (ग्रा०)

गवार की हँसी दुखदाई होती हे।

पासा=पसली।

गंवार को पैसा दीजे, पर अक्ल न दीजे

मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ हे, भले ही उसे पैसा दे दिया जाए।

गंवार गांड़ा न दे, भेली दे

गवार सहज मे गन्ना नही देता, पर वमकाने

से गुड़ दे देता है। आसानी से मूर्ख कोई चीज नही देता।

गवार, गौं का यार

गवार भी अपना मतलव देखता है।

गई चौधराहट फिरी है

छिना हुआ अधिकार फिर मिल गया है।

गई जवानी फिर न बहुरे, चाहे लाख मलीदा खाओ

जवानी फिर नही लौटती, चाहे जितना माल-मसाला खाओ।

गज भर का हसुआ, न निगलते बने न उगलते

दे०—गुर, भरा हसिया। 'गज भर का हसुआ, अशुद्ध है।

गठरी-बांधी धूल की, रही पवन से फूल।

गाठ जतन की खुल गई, अंत धूल की धूल।

मानवशरीर के वारे मे क०।

गठिया खुला, बिटिया पारस

पुत्रवती होने पर ही स्त्री का सम्मान होता है। गठिया खुलना एक मुहावरा है जिसका अर्थ 'गर्भ से होना, या वच्चा होना है।

गढ़ तो चित्तौरगढ़ और सब गढैयां

स्पष्ट।

(चित्तौरगढ राजपूतो का प्रसिद्ध किला था, जो सन् १५६८ मे अकवर द्वारा नष्ट किया गया। पूरी कहावत इस प्रकार है—

ताल तो भोपाल ताल और सव तलैया।

गढ तो चित्तौरगढ और सव गढैया।

गढ़ कुम्हार, भरे संसार

एक के काम से जव वहुत से लोग लाभ उठाए, तव क०।

कुम्हार गगरी वनाता है, और सव लोग उसमे पानी भरते और पीते है।

गढ़े के पानी मे मुंह धोकर आओ

जाओ अपना काम देखो। डीग हाकनेवाले से क०।

पहले अपना मुह साफ कर लो, तव कोई वात करना।

गधा के खाइल खेत, न इहलोक के, न परलोक के, (पू०)

क्षुद्र के साथ नेकी करने से कोई लाभ नही।

गधा खरसा मे मोटा होता है

(लोगो का विश्वास है कि ग्रीष्म ऋतु मे सूखा मैदान देखकर गधा समझता है कि मैंने बहुत खा लिया, इसलिए तगडा रहता है, पर वर्षा मे चारो ओर हरी घास देखकर उसे यह ज्ञान होता है कि उसने अभी कुछ नही खाया, इसलिए दुबला हो जाता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि वर्षा की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु गधे की प्रकृति के अधिक अनुकूल बैठती है, इसलिए उन दिनो तन्दुरुस्त रहता है। खरसा ग्रीष्म को कहते है।)

गधा गिरे पहाड से, मुर्गी के टूटे कान

एक असबद्ध बात।

गधा घोड़ा एक भाव

अच्छी-बुरी चीज का एक ही दामो विकना। अन्वेरखाता।

गधा घोड़ा बराबर

अच्छी बुरी चीज को एक-सा समझना।

गधा पानी पिये घंघोल के

गधा भी कूडा अलग करके पानी पीता है।

(फैलन ने इसका यही अर्थ किया है। किन्तु वास्तव मे घघोलने का मतलव होता है पानी को हिला कर मैला करना। तव कहावत का अर्थ होगा—गधा गदा पानी पीना पसद करता है।)

गधा पीटे घोड़ा नहीं होता

(१) मूर्ख को पीटकर समझदार नही वनाया जा सकता।

(२) बुरी चीज़ से किसी भी प्रकार अच्छी चीज नही वनती।

गधा बरसात मे भूखा मरे

इसलिए कि वर्षा गधे के अनुकूल नहीं बैठती, फिर कितनी ही घास क्यो न पैदा हो।

गधी भी जवानी में भली लगती है

स्पष्ट।

गधे का जीना थोड़े दिन भला

जिसे हमेशा परिश्रम करना पडे, वह मरे के तुल्य है।

गधे का मांस, कुत्ते का दांत

ये किसी काम नही आते।

गधे की आंख मे नोन दिया, उसने कहा 'मेरी आख फोड़ी'

(१) तुच्छ आदमी एहसान नही मानता।

(२) मूर्ख के साथ उपकार करने से वह समझता है कि उसका अहित किया जा रहा हैं।

गधे की भारी लात की सनसन हट

बुरे की सगत मे हानि उठानी पडती है।

गधे के खिलाए का पुन न पाप

दे०—गधा के खाइल खेत .।

गधे को अंगूरी बाग

किसी मनुष्य को ऐसी वस्तु देना, जिसके वह योग्य नही।

गधे को खुश्का

दे० ऊ०।

खुश्का=मीठे चावल।

गधे को गधा ही खुजाता है

ओछो का काम ओछे ही कर सकते हैं। अथवा ओछो की मित्रता ओछो के ही साथ होती है।

गधे को गुलकंद

अयोग्य को अच्छी वस्तु देना।

गधे को जाफरान

दे० ऊ०।

गधे को पूडी और हलवा

दे० गधे को गुलकद।

गधो से हल चले, तो बैल कौन विसाय, (कु०)

छोटे से अगर वडो का काम होने लगे, तो वडो को कौन पूछे? जब किसी मनुष्य को कोई काम दिया जाए और वह उसे न कर सके, तब क०।

गमन दारी वुज़ वखर, (फा०)

अगर तुझे कोई चिन्ता नही तो वकरी खरीद ले। जानवर रखने से वेफिक्र आदमी फिक्रमद हो जाता है।

गम पश्म, झांट शादी, या हादी! या हादी!

आवाद या रिन्द नाम के फकीरो की आवाज।

गया गांव जहां ठाकुर हंसा, गया रूख जहां बगुला वसा, गया ताल जहं उपजी काई, गया कूप जहं भई अयाई।

नष्ट हो जाता है वह गाव जहा का प्रधान हँसोड हो, नष्ट हो जाता है वह वृक्ष जिस पर वगुला निवास करे, नष्ट हो जाता है वह ताल जिसमे काई पैदा हो जाए, नष्ट हो जाता है वह कुआ जिसकी तली वैठ जाए। अथाई=अथाह।

गया गुज़रा

वीती वात। हुआ सो हुआ।

गया मर्द जिन खाई खटाई, गई रांड़ जिन खाई मिठाई

खटाई खाने से मनुष्य का पुरुषत्व जाता है और मिठाई खाने से विधवा चरित्रहीन हो जाती है।

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं

समय पर चूकना नही चाहिए।

गया सो गया, रहा सो वचा

स्पष्ट।

गये कटक, रहे अटक

जव किसी को कही काम पर भेजा जाए, और वह शीघ्र लौट कर न आए या वाहर जाने पर न लौटे।

गये जोवन, भतार

अवसर वीते काम करना।

भतार=पति।

गये थे रोज़ा छुड़ाने, नमाज़ गले पड़ी, (मु०)

एक विद् से वचने गए, दूसरी सामने आ गई। रोज़ा=वह उपवास, जो मुसलमान रमजान के महीने मे तीस दिन रखते हैं। रोज़ा खतम हो जाने पर ईद के दिन नमाज़ पढने जाते है।

गये दक्खन, वही करम के लक्खन

अकर्मण्य का कही ठिकाना नही।

गये विचारे रोजे रहे, एक कम तीस, (मु०)

तीम मे से एक रोज़ा निकल गया। उन्तीम रह गए। मुसीवत कुछ कम तो हुई।

गये वह दिन जब खलीलखां फाख्ता मारते थे
वह दिन निकल गए, जब खलील खा मौज करते थे।
पाठा०—गए वह दिन जब खलील खा फाख्ता उडाते थे।
दे०—खलीलखा फाख्ता. . . ।
गरज का बावला अपनी गावे
गरजमन्द अपनी ही कहता है।
गरजते हैं वह बरसते नहीं
डीग हाकनेवाले काम नही करते।
गरज परला से आदमी बुड़बक होला, (पू०)
गरज पड़ने पर आदमी बेवकूफ हो जाता है।
गरज बावली है
गरजमन्द को अपने काम के सिवा और कुछ नही सूझता।
गरजमंद करे या दरदमंद करे
दूसरो की सहायता या तो गरजमद करता है या दयावान।
गरजमंद बावला है
गरजमद पागल होता है। अपने ही मतलब की बात करता है।
गरब करते रावन हारे, (हिं०)
गर्व करने वाले रावण को हारना पड़ा।
गरब का सिर नीचा
अहकारी को नीचा देखना पड़ता है।
गरीब की जवानी, गरमी की धूप, जाड़े की चांदनी अकारथ जाये
स्पष्ट।
गरीब की जोरू और उम्दा खानम नाम, (मु०)
यह नाम बडे आदमियो की औरतो का होता है।
गरीब की जोरू सबकी भाभी
गरीब से सब अनुचित लाभ उठाते है।
(बडे भाई की स्त्री से हँसी करने की हिन्दुओ मे प्रथा है। गरीब को सीधा जानकर सब उनकी स्त्री से हँसी मजाक करते हैं।)
गरीब ने रोजे रक्खे, दिन बड़े हुए, (मु०)
गरीब के सभी खिलाफ जाते हैं।
(मुसलमानो के रोजे कभी गर्मियो मे और कभी जाडो मे पडते है। अब अगर वे गर्मी मे पडे, तो दिन बडे होने के कारण वे कष्टकर हो जाते है।)
गरेबां में मुंह डालो
अपनी असलियत देखो।
गर्मियों मे कश्मीर जिन्नत है
कश्मीर की प्रशसा।
गर्मी सब्जह रंगों से, और घर मे भूनी भांग नहीं
पास मे पैसा नही, और सुन्दर औरतो पर मन चले। सामर्थ्य से बाहर इच्छा रखनेवालो के लिए कही जाने वाली कहावत।
गलत-उल आम फसीह, (अ०)
जिस भूल को सभी करें, उसे भूल न समझना चाहिए। बोलचाल मे जो प्रचलित है, वह व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध होते हुए भी सही माना जाता है।
गले पड़ी बजाये सिद्ध
जब विवश होकर कोई काम करना पडे, तब क०। गले मे जब ढोलकी पडी है, तो फिर उसे बजाना ही चाहिए।
गल्ला चूं अरजां शवद, इमसाल सैय्यद मी शवद, (फा०)
इस साल अगर गल्ला सस्ता हो गया, तो मैं सैय्यद बन जाऊगा, अर्थात बडा आदमी हो जाऊगा। (सैय्यद मुहम्मद साहब के वशज है। इसलिए मुसलमानो मे बडे माने जाते है।)
गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त
सहायको का तत्पर रहना, और स्वय लापरवाही दिखाना।
गहरी लाली देखकर फूल गुमान भये।
केते बाग जहान मे लग लग सूख गये।
अपना गहरा सौन्दर्य देखकर फूल को घमड हो गया, पर वह यह नही जानता कि इस दुनिया मे कितने बाग लगे और कितने उजड गए।

गांजा पिये गुर ज्ञान घटै, और घटै तन अंदर का।
खोखत खोंखत गाड फटै, सुंह देखो जस बंदर का।
गजेडियो के लिए कहा गया है कि गाजा नही पीना चाहिए, क्योकि इसमे दुर्गण ही दुर्गण है।

गांठ का पूरा मत का हीन।
मूर्ख पैसेवाले के लिए क०।
दे०—आख का अघा .।

गांठ का पूरा आख का अंधा
दे० ऊ०।

गांठ खुले न, वहुरिया दुबरस, (पू०)
वहू इतनी दुवली है कि ककन की गाठ भी नही खोल सकती।
(हिन्दुओ के यहां विवाह मे एक नेग होता है, जिसमे वर-कन्या एक दूसरे के हाथ मे बधे ककन की गाठ खोलते है। यह ककन लाल धागे का होता है।)

गांठ गिरह में कौड़ी नहीं, मियां गट्टेवाले हों
गाठ मे पैसा नही, फिर भी गट्टेवाले को बुलाते है कि अरे भाई दे जाना।
गट्टा=एक मिठाई, जो केवल शक्कर की बनती है।

गांठ गिरह से मद पीवे, लोग कहें मतवाला
बुरे काम मे पैसा खर्च करके बदनामी मोल लेना।

गांठ न मुट्ठी, फरफराय उट्ठी, (स्त्रि०)
पास मे पैसा न हो, पर किसी चीज को खरीदने को मन चले, तब क०।

गांठ मे दाम न, पतुरिया देख रुआई आये, (पू०)
दे०—गर्मी सब्जह रंगो से ।
पतुरिया =वेश्या।

गाठ मे पैसा नहीं, वांकीपुर की सैर, (पू०)
दे०—गाठ न मुठ्ठी . . . ।

गांड़ चले मन बक्लो की
दस्त लगते है, पर चना खाने को मन चलता है।
सहनशक्ति से बाहर काम करने की इच्छा रखना।

गांड न धोये सो ओझा होय, (पू०)
हँसी मे ही क०।
ओझा=भूत-प्रेत झाडनेवाला। सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणो की एक जाति भी ओझा कहलाती है।)

गांड़ में गू नहीं और कौवे मेहमान !
झूठी शान दिखाना।

गाड मे लंगोटी, न सिर पै टोपी
आवारा के लिए क०।

गाडू का हिमायती भी हारा है
कायर की कोई सहायता नही कर सकता।

गांव के गंवेरे, मुंह पै खाक, पेट में ढेले
ग्रामीणो पर फब्ती।

गांव गया, सोता जागे
सोनेवाला कव जागे कहा नही जा सकता, उसी उसी तरह वाहर गए आदमी का भी निश्चय नही रहता कि कव लौटे।

गांव गए की बात
वाहर जाने पर क्या काम लग जाए, कव लौटे, इस तरह का भाव प्रकट करने के लिए क०।

गांव तुम्हारा, नांव हमारा
झूठमूठ की नामवरी चाहना।

गांव दहा जाये, सिवाने की लडाई
हदबदी की लडाई और पूरा गाव नष्ट हो रहा है। साधारण बात पर झगडा वढना।

गाव, नांव, ठांव
किसी का पता ठिकाना जानने के लिए क०।

गांव बसंते भूतले, शहर बसंते देव
गाव मे रहनेवाले भूतो के और शहर मे रहनेवाले देवताओ के समान है।

गांव भागे, पघिया लागे, (ग्रा०)
फसल के शुरू होते ही गाव खाली हो जाता है। लोग फसल काटने चल देते हैं।

गांव में घर न जंगल में खेती
जिसके कुछ नही उसका, कहना।

गांव मे धोबी का छैल
गाव मे धोवी का लडका ही शौकीन बना फिरता है, क्योकि उसका बाप शहरवालो के जो कपड़े

धोने लाता है, वह उन्हे पहनता है, जो गाववालो को देखने को नही मिलते।

गांव में पड़ी भरी, अपनी-अपनी सबको पड़ी

विपद् आने पर सब अपनी-अपनी फिक्र करते है।

गांव सदा गंवारन के

गाव मे गवार लोग ही रहते है।

गाऊं न, गाऊं तो बिरहा गाऊं, (स्त्रि०)

या तो कुछ करे ही नही, या फिर ऐसा काम करे, जो किसी को पसद न आए।

(विरहा एक विशेप अवसर के गीत है। हमेशा नही गाए जाते।)

गाओ वजाओ, कौड़ी न पाओ, (स्त्रि०)

सूम के लिए क०।

गाओ, वजाओ, बन्ने के लोलो ही नहीं, (स्त्री०)

जिसके लिए यह सव धूमधाम है वही नही।

(लोलो ही नही, मतलव दूल्हा नपुसक है।)

गाछ में कटहल, होठ मे तेल, (पू०)

समय के पहले ही किसी काम की तैयारी करना।

(कटहल का दूध हाथ या होठ मे लग जाने पर तेल लगाकर छुडाया जाता है। व०—गाछे काटाल गोफे तेल।)

गाजर की पूंगी, वजी तो वजी, नहीं तो तोड खाई

ऐसे काम के लिए क०, जो हो जाए, तो अच्छा, न हो तो भी अच्छा।

गाजी मियां, दममदार, खिच्चड पक्का हमतैय्यार, (मु०)

गाजी मिया और शाह मदार की कसम, मै खिचडी खाने को तैय्यार हू।

(गाजी मिया उर्फ सालार गाजी महमूद गजनवी के भतीजे थे, जिनकी सन् १०३३ मे वहराइच मे मृत्यु हुई। वह मुसलमानो के प्रसिद्ध पीर है। इसी तरह शाह मदार को भी मुसलमान अपना पीर मानते है। मकनपुर मे उनका मकवरा है। उनकी मृत्यु सन् १४३३ मे हुई।)

गाडर आनी ऊन को, बैठी चरै कपास, (ग्रा०)

जव लाभ के लिए कोई काम किया जाए, और उसमे हानि हो, तव क०।

गाडी को देख लाडी के पाव फूले

आराम सव चाहते है। गाडी को देखकर लौडी के पैर मे भी दर्द होने लगा।

(यहा लाडी का अर्थ लडैती भी हो सकता है। फैलन ने Slave girl लिखा है।)

गाते-गाते कलावत हो जाते है

अभ्यास करने से ही आदमी दक्ष वनता है।

गाना और रोना, किसको नहीं आता?

सवको आता है।

गाना उत्तम, वजाना मध्यम

गाना सबसे श्रेष्ठ कला है, उसके वाद वजाना।

गाना न वजाना, याद-याद के रिझाना

जव कोई गदी हँसी-मजाक करके समय बिताए, तव क०।

गाय का दूध सो माय का दूध

गाय का दूध माता के दूध के समान होता है।

गाय का लवारा मर गया तो खलड़ा देख पनहाय

जव किसी मनुष्य का अपने किसी प्रिय जन से वियोग हो जाता है, तो उससे मिलती-जुलती आकृति के मनुष्य को देखकर उसके मन मे प्रेम का उद्रेक हो उठता है। इसी विचार को प्रकट करने के लिए कहावत का प्रयोग होता है।

(गाय का वछडा जव मर जाता है, तो उसकी खाल मे भूसा भर के रख लेते है। दुहने के समय उसी को गाय के सामने रखते है, जिसे वह अपना जीवित वछडा समझकर दूध देने लगती है।)

पनहाना=स्तनो मे दूध उतरना।

गाय को अपने सींग भारी नहीं होते

अपने परिवार के लोगो का किसी को बोझ नही लगता।

गाय जव दूध से सलूक करे तो क्या खाय?

(१) मेहनताना मागने मे लिहाज किस बात का?

(२) जो जिस वस्तु का व्यापार करता है, उसमे मुनाफा न करे, तो उसका खर्च कैसे चले?

गाय न आवे, वछवे लाज, (पू०)

मा को बेटे की शरम नहीं होती। अथवा इसका यह

अर्थ भी हो सकता है कि मा को तो लाज नही आती, पर बेटा लज्जित हो रहा है।

गाय न बाछी, नींद आवे आछी

किसी चीज की चिता न होने पर नीद अच्छी आती है।

गाय न हो तो बैल दुहो

कुछ न कुछ धधा करते रहो।

गालवाला जीते, मालवाला हारे

बातूनी हमेशा जीतता है। उसके सामने पैसेवाले को हार माननी पडती है।

गाली और तरकारी खाने ही के वास्ते है

गाली सुनकर क्रोध न करने के लिए क०।

(खाने के यहा दो अर्थ है, भोजन करना और सहन करना।)

गाले हाथ गोपालक माय, (पू०)

गोपाल की मा का हमेशा गाल पर हाथ रहता है। जो स्त्री सदा प्रसन्न चित्त रहे, उसके लिए क०।

(स्त्रिया गाते समय प्राय गाल पर हाथ रखती है।)

गिन पोईं, सभाल खाईं, (स्त्रि०)

गिनकर रोटिया बनाना और सभालकर खाना। कमखर्ची मे जीवन व्यतीत करना। धन उडाओ मत।

गिनी गाय मे चोरी नही हो सकती

सभालकर रक्खी हुई चीज घट-बढ नही सकती।

गिनी डालिया हैं

सभालकर रक्खी गई चीज है।

गिनी बोटी, नपा शोरवा, (मु०)

(१) कठोर मितव्ययी के लिए क०।

(२) जो सदा एक से ढग से रहे, उस पर भी क०।

(३) जिसे उतनी ही तनख्वाह मिलती हो, जितने मे उसका खर्च मुश्किल से चलता हो, उस पर भी क०।

(४) जिसे तनख्वाह के अलावा कोई ऊपरी आमदनी न हो, उसे क०।

गिने गिनावें, टोटा पावे

अधविश्वास, बहुतो की ऐसी धारणा है कि रोज-रोज माल को सभालने से उसमे घाटा हो जाता है।

गिरगिट की दौड़ बिटौरे तक

जिसकी जहा तक पहुच होती है, वह वही तक जा सकता है।

गिरगिट के से रंग बदलता है

ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसकी बात का कोई ठीक न हो।

गिर पड़े ही हर गगा

जब अनायास किसी से कोई काम बन जाए, और वह कहे कि मैने जानबूझकर किया है, तब क०। यश मिलते देख समेट लेना।

पाठा०—रिपट पडे की

गिरहकट का भाई गठकट

धूर्त्त-धूर्त्त सब एक से। चोर-चोर मौसेरे भाई।

गिरह का दीजे, पर अकल न दीजे

मूर्खों को गाठ से पैसा भले दे-दे, पर अक्ल न दे।

गिरह मे कौड़ी नहीं और बाज़ार की सैर

पास मे पैसा न होते हुए भी चीजे खरीदने को मन होना।

गिरे का क्या गिरेगा

जिसकी हालत बहुत बिगडी हुई हो, उसके लिए।

गिरे खंभ पलान भारी

मकान का एक खभा गिरने से छप्पर भारी हो जाता है, वह टिक नही सकता।

समाज या परिवार के एक प्रमुख व्यक्ति के न रहने से सब पर सकट आ जाता है।

गिरे पड़े वक्त का टुकड़ा

(१) समय पर काम आने के लिए बचाकर रक्खा गया पैसा।

(२) सुयोग्य ओर कमाऊ लडका।

गिलहरी का पेड़ ठिकाना

जिसका जहा सुभीता होता है, वह वही रहता है।

गीदड़ की शामत आय तो गांव की तरफ भागे

जब कोई मनुष्य जानबूझकर अपनी हानि करे या ऐसी जगह जाए, जहा उसे कष्ट पहुचे, तब क०।

गीदड़ गिरा झिरे मे 'आज यहीं रहेंगे'

जब कोई मनुष्य अपनी किसी विपद् को छिपाना

चाहे और कहे कि 'नही, मैं तो खूब मजे मे हू।'

गीदड़ भभकी

झूठा रौब दिखाना।

गीदी गाय गुलेंदा खाय, बेर बेर महुआ तर जाय, (पू०)

जब कोई मनुष्य किसी चीज के लालच से बार-बार कही जाए, तब क०।

गीदी गाय = लपकी गाय।

गुलेंदा = महुए का फल।

गीली लकड़ी सीधी हो सकती है

बच्चे को सब सिखाया जा सकता है।

गीली-सूखी सब जलती हैं

अच्छी-बुरी सब चीज़ काम आ जाती है। अथवा आग में सब जलता है।

गुंडे चले बज़ार, बिनौले ढक रखियो

गुडे और बदमाशो से होशियार रहना चाहिए।

गुज़र गई गुजरान, क्या झोपड़ी, क्या मैदान

किसी ऐसे मनुष्य का कहना, जो जीवन के सुख-दुख भोग चुका है और जाने को तैय्यार बैठा है।

गुज़श्त ऊंचे गुज़श्त, (फा०)

बीती बात का विचार नही करना चाहिए।

गुज़श्ता रा सलवात, (फा०)

जो हुआ सो अच्छा हुआ।

गुड़ खाएं, गुलगुलो से परहेज़

कोई एक बुरा काम करके उसी तरह के दूसरे बुरे काम से बचने का ढोंग करना।

गुड़ खायें पुये मे छेद करें

दे० ऊ०।

गुड़ खायेगी तो आयेगी

बदचलन औरत के लिए क०।

गुड़ चुरावे तो पाप, तेल चुरावे तो पाप

हर हालत मे चोरी तो चोरी ही कहलाएगी।

गुड़ दिये मरे तो जहर क्यो दीजे

मिठास मे काम चल जाए तो सख्ती क्यों की जाए।

गुड़ न दे तो गुड़ की-सी बात तो करे

किसी को कुछ न दे, न सही, पर बात तो मीठी करे।

गुड़ भरा हंसिया, खाते बने न उगलते, (पू०)

जब कोई ऐसा काम सामने आ जाए, जिसे न करते बने, न छोडते, तब क०।

गुड़ से बैंगन हो गए

जब कोई सस्ती चीज महगी हो जाती है, तब क०

गुड़ियो के ब्याह मे चियों की बेल, (स्त्रि०)

जैसा काम वैसा साज-सामान।

बेल = भेंट।

गुदडी से बीबी आई, 'शेखजी किनारे हों,' (स्त्रि०)

जब कोई ओछा आदमी प्रतिष्ठा पाकर इतराने लगे तब क०।

गुदडी = वह बाज़ार, जहा पुरानी चीजे बिकती हैं

गुन सीख के औगुन सीखता है

पढे-लिखे लडके से क०, जब वह बुरे मार्ग पर चले।

गुनिया तो गुन कहे, निर्गुनियां देख घिनाय

समझदार तो समझदारी की बात कहता है, मूर्ख दूर भागता है।

गुरु कीजे जान के, पानी पीजे छान के

गुरु देखभाल कर बनाना चाहिए, पानी छानकर पीना चाहिए।

गुरु गुड़ ही रहे, चेले चीनी हो गए

चेला गुरु से भी आगे बढ गया। प्राय व्यग्य मे क०।

गुरु-गुरु विद्या, सिर-सिर ज्ञान

सबके पास न तो एक-सी विद्या होती है, और न सबकी समझ एक-सी होती है।

गुरु जी! चेले बहुत हो गए; बच्चा, भूखों मरेंगे तो आप चले जायेंगे

किसी जगह आवश्यकता से अधिक आदमी इकट्ठे हो गए हो, और वे जाना नही चाहते हो, तब क०।

गुरु तो ऐसा चाहिए, ज्यों सिकलीगर होय।
जनम जनम का मोरचा, छिन मे डारे खोय।

स्पष्ट।

सिकलीगर = लोहे पर धार रखनेवाला। पालिश करनेवाला।

गुरु बड़ा कि चेला ?

व्यंग्य मे प्रश्न।

गुरु बिन व्याकुल चेलवा, कंठ बिन बाउर गीत
गुरु के बिना चेला वैसे ही निकम्मा होता है, जैसे बिना अच्छे गले के बाउर का गीत।
बाउर=एक गायक भिक्षु सम्प्रदाय।

गुरु बिन मिले न ज्ञान, भाग बिन मिले न सम्पत्ति
गुरु के बिना ज्ञान नही मिलता, भाग्य मे लिखे बिना धन-सम्पत्ति नही मिलती।

गुरु, वैद ओर जोतसी, देव, मत्रि, अरु राज।
इन्हे भेंट बिन जो मिले, होय न पूरन काज।
गुरु, वैद्य, ज्योतिषी, देवता, मत्री और राजा इनके पास खाली हाथ नही जाना चाहिए।

गुरु, शुक्र की बादरी, रहै सनीचर छाय।
कहै घाघ सुन घाघनी, बिन बरसे नहिं जाय।
लोक-विश्वास। यदि बृहस्पति और शुक्रवार को बादल हो और वे शनिवार तक बने रहे, तो अवश्य वर्षा होती है।
(घाघ अकबर के समय मे (सन् १५४२-१६०५) हिन्दी के एक कवि हुए हे। उनकी कृषि सबधी कहावते प्रसिद्ध है।)

गुरु से कपट, मित्र से चोरी।
या हो निर्धन, या हो कोढ़ी।
स्पष्ट।

गुरु से पहले चेला मार खाए
(१) गुरु से पहले चेला माल उडाता है क्योकि वही भीख मागकर लाता है और रसोई बनाता हे।
(२) गुरु से पहले चेला पिटता है, क्योकि वही सब काम से बाहर जाता है।

गुलाम की जात से वफा नहीं
नौकर पर विश्वास नही करना चाहिए।

गुलाम साथ, तौ भी नाथ
गुलाम अक्सर भाग जाया करता हे, इसलिए साथ मे रहे, तो भी उसकी नकेल अपने हाथ मे रक्खे।
नाथ=नकेल।

गुस्सा बहुत, जोर थोड़ा, मार खाने की निशानी
स्पष्ट।
कमजोर से कहते हे, जिसे गुस्सा बहुत आता हे।

गुस्सा हराम है
क्रोध बुरी चीज़ हे।

गुस्से मे अक्ल मारी जाती है
क्रोध मे मनुष्य विवेक खो बैठता है।

गुस्से मे बुराई-भलाई नहीं सूझती
क्रोध मे बुरा-भला नही दिखाई देता।

गूगा, अधा, चुगदढ़िया और काना, कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इनको नहिं पतयाना
गूगे, अधे, छोटी दाढीवाले और काने का विश्वास नही करना चाहिए।

गूगी जोरू भली, गूंगा नारियल न भला
गूगी औरत अच्छी, पर ऐसा हुक्का जो पीने से बोले नही, किसी काम का नही।
(पहले नारियल के हुक्के बनते थे, इसलिए यह शब्द हुक्का के लिए रूढ हो गया है।)

गूगे का गुड़ खाया है?
जो बोलते नही।
जब कोई व्यक्ति किसी बात का उत्तर नही देता, या किसी विषय मे बिल्कुल चुप रहता है, तब क०।
(गुड खाने पर गूगा उसका स्वाद नही बता सकता।)

गूंगे का गुड़, खट्टा न मीठा
क्योकि गूगा मुह से बोल नही सकता। जब किसी बात की असलियत का पता न चले, तब क०। जब किसी की कोई समझ मे न आए, तब भी क०।

गूगे ने सपना देखा, मन ही मन पछताय
उसे दुख होता है कि वह अपना सपना किसी को सुना नही सकता।

गू का कीड़ा गू ही मे खुश रहता है
बुरे को बुरी सुहबत मे ही बैठना अच्छा लगता है, या गदे को गदगी ही पसद आती हे।

गू का टोकरा सिर पर उठाता है
बहुत निन्दनीय काम करनेवाले से क०।

गू का पूत नौसादर
बुरे घर मे भी सपूत पैदा हो सकता है।
(लोगो की धारणा है कि नौसादर विष्ठा को जलाकर बनाया जाता हे। उसी से कहा० बनी।

नौसादर पेट साफ करने के काम आता है। इसलिए भी उसे मल का पूत कहा जा सकता है।)

गू की दारू भूत और भूत की दारू गू

जैसे का तैसा इलाज।

गूगा वड़ा, क्या भगवान

गूगे के सामने भगवान क्या चीज।

(गूगा एक पीर हो गए हैं, जिनका नाम लेकर सर्प का जहर उतारते है। यहा 'गूगा' के स्थान पर 'गूगा' भी हो सकता है। वह अधिक ठीक जान पडता है। जो आदमी बोल ही नही सकता, वह भगवान से भी वडा है।)

गूजर से ऊजड़ भली, ऊजड़ से भली उजाड़।
जहां गूजर को देखिए, दीजे उसको मार।

स्पष्ट।

गूजर प्राय जगल उजाड डालते है। इसीलिए ऐसा कहा गया हे।

गूदड मे गिंदौड़ा

जव कोई धनी आदमी मलीन वेश मे रहे, तव क०। किसी अशिक्षित परिवार मे जव कोई पढा-लिखा और वुद्धिमान लडका हो, तव भी क०।

गिंदौड़ा=एक मिठाई।

गूदड़ मे लाल नहीं छिपता

श्रेष्ठ वस्तु वुरी जगह मे भी नही छिपती।

गू दर गू, मुर्गी का गू

वहुत ही खराव वस्तु।

गू नहीं छी-छी

वुरी वस्तु हर हालत मे वुरी ही रहेगी । नाम वदलने से उसका गुण नही वदलता। वच्चो से वात करते समय मल के लिए छी-छी या छि-छि शव्द का प्रयोग करते है।

गू मे कौड़ी गिरे, तो दांतों से उठा ले

इतना कजूस।

गू मे न ढेला डाले, न छींटे पड़ें

न वुरे काम मे हाथ लगाओ, और न वदनामी उठानी पड़े। जव कोई आदमी किसी नीच से झगडा या हँसी-दिल्लगी कर रहा हो, तव प्राय उसे मना करने के लिए क०।

गू से घिनौना कर दूंगा

वुरी हालत वना दूंगा।

गूलर का पेट क्यों फाड़ते हो ?

ढकी-मुदी वात क्यो प्रकट करवाना चाहते हो ?

गूलर का फूल, पीपल का मद, घोड़ी की जुगाली,
कभी न पावे, और पावे तो रैन दिवाली

लोगो का विश्वास है कि गूलर का फूल, पीपल का मद और घोडी की जुगाली, ये चीजे दिवाली की रात को ही देखने को मिल सकती है। पर यह कोरा अन्धविश्वास हे। गूलर का फल छोटे-छोटे फूलो का समन्वय मात्र है। मद वहुत से पेडो मे नही वहता और सभी जानवर जुगाली भी नही करते।

गृहस्थ धर्म वरावर कोई धर्म नहीं

स्पष्ट।

गैंठी संभाल, मधुरी चाल, आज न पहुचव, पहुचव काल, (पू०)

गठरी सभाले रहो, मजे की चाल चलो, आज नही तो कल पहुच ही जाएगे। किसी काम मे जल्दीवाजी नही करनी चाहिए। धैर्य्यवान को सफलता मिलती है।

गैंड़े की ढाल और विजली की तलवार

सर्वोत्तम होती है।

(तलवार वनानेवाले कहा करते है कि वे विजली मे तलवार पर पानी चढाते है।)

गैंवड़े आई वरात, वहू को लगी हगास, (स्त्रि०)

ऐन मौके पर जव कोई कहीं चला जाए, तव०।

गेवडा=गाव के वाहर का हिस्सा, गाव की सीमा।

गेंवड़े खेती, सिरा साप, भाई भयकरन, वादी वाप, (ग्रा०)

गाव के विल्कुल पास की खेती, छप्पर का साप, भयकारी भाई, और झगडालू वाप, ये अच्छे नहीं होते।

गेहू की वाल नहीं देखी

अनाडी से क०। जो वहुत भोलाभाला वने, उसे व्यग्य मे भी कह सकते है।

गेहूं की रोटी को फौलाद का पेट चाहिए
गेहू की रोटी गरीबो को नही मिलती। वही लोग खा सकते है, जिनके पास पैसा आता है। गेहू को हज़म करना एक मुश्किल काम है, यही भाव है। (साधारण जनता की हालत गिरी हुई थी। इस कहावत से यही प्रमाणित होता है।)

ग़ैब का हाल खुदा जाने
भविष्य की बाते ईश्वर ही जान सकता है।

ग़ैर का सिर कद्दू बराबर
जब दूसरे का माल ख़र्च करने मे कोई जरा भी न हिचके, तब क०।

ग़ैर के लिए कुआं खोदेगा, तो आप ही गिरेगा
दूसरे की हानि चाहनेवाला स्वय हानि उठाता है।

ग़ैर ग़ैर ही है, अपना अपना है
समय पर अपना आदमी ही काम आता है।

गोंद पंजीरी और ही खाये, जचहा रानी पड़ि करहायें, (स्त्रि०)
जिन्हे ज़रूरत है, उन्हे तो कोई चीज न मिले और दूसरे मौज उडाए, तब क०। गोद और मसाले की पजीरी बच्चा होने पर प्रसूता को दी जाती है।
जचहा रानी=जच्चा, प्रसूता।

गोज़-ए-शुतर, न जमीन का न आसमान का
दे०—ऊट का पाद ।

गोझे का घाव, रानी जाने या राव, (स्त्रि०)
मर्म की बात या मर्म का घाव कोई जान नही सकता।

गोद का खिलाया गोद मे नहीं रहता
अपना लडका भी काम नही आता। ब्याह होने पर बहू के वश मे हो जाता है।

गोद का छोड़ पेट के की आस, (स्त्रि०)
गोद के लडके को छोडकर गर्भ मे जो लडका है, उसकी आशा करना। वर्तमान छोड़कर भविष्य पर निर्भर होना।

शहर में ढिंढोरा
शहर मे ढिंढोरा पीट रहे हैं कि । जब कोई चीज़ पास ही ढूंढता फिरे, तब क०।

गोदी का लड़का मर जाए, पेट आग बुझाये, (स्त्रि०)
(१) गोद के लडके के मर जाने पर इस आशा से दुख कम हो जाता है, कि फिर लडका होगा।
(२) जब गोद का लडका मर जाता है, तो पेट उसके दुख को भुला देता है, अर्थात आदमी काम-काज मे लगकर दुख भूल जाता है।

गोदी मे बैठ के आंख में उंगली
कृतघ्न मनुष्य के लिए क०।

गोदी मे बैठ के दाढी नोंचे
दे० ऊ०।

गोधन, गजधन, कनकधन, रतनखान, बहुखान। जब आया संतोष धन, सब धन धूल समान।
स्पष्ट।
सतोष सबसे बड़ा धन है।

गोबर की सांझी भी पहरी-ओढ़ी अच्छी लगती है, (स्त्रि०)
सजावट बडी चीज़ है।
(साझी गोबर या मिट्टी की बनी उस प्रतिमा को कहते है, जिसे लडकिया क्वार के महीने मे खेल और पूजा के लिए बनाती है।)

गोबर गनेश
बुद्धू के लिए क०।

गोर चमाइन गरमे मातल, (पू०)
गोरी चमारिन अपने रूप के गर्व मे उन्मत्त रहती है।
ओछा आदमी ऐश्वर्य पाकर इतरा जाता है।

गोर में छोटे-बड़े सब बराबर
सब मिट्टी हो जाते है।
गोर=कब्र।

ग़ोर मे पांव लटकाए बैठी है
मरने को है।

गोरी का जोबन चुटकियों मे
(१) रूपवती स्त्री का यौवन छेडछाड मे ही ख़तम हुआ जा रहा है।
(२) किसी का यौवन हमेशा नही रहता। देखते-देखते समाप्त हो जाता है।
(३) अच्छी चीज़ थोड़ी-थोड़ी करके ही ख़तम हो

जाती है। (अगूठे और पास की उगली से किसी चीज को पकडना चुटकी भरना या लेना कहलाता है। सुदर लडकियो को सव कोई दुलार से चुटकी लेता है। किसी वस्तु की थोडी मात्रा को भी चुटकी कहते हैं। फिर 'चुटकियो मे' एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ होता है शीघ्र, आनन-फानन। कहावत को इन तीनो अर्थो मे देखने की आवश्यकता है।)

ोरी तेरे संग, मे, गई उमरिया बीत।
व चाली संग छोडके, यह ना रीत पिरीत।

मरणासन्न व्यक्ति का अपनी आत्मा से कहना है। शव्दार्थ स्पष्ट ही है।

ोरी मत कर गोरे रंग का गुमान,
ह है कोई दिन का मेहमान।

रूप और यौवन का गर्व नही करना चाहिए। वह क्षणभगुर है।

ोरे चमड़े पर न जा, वह ही छछूंदर से है बदतर

वेश्याओ से बचे रहने के लिए लडके को सीख।

ोयठा जले गोबर हँसे

कडे को जलता देखकर गोवर हँसता है। वह भूल जाता है कि अव उसकी भी वारी आएगी। मूर्ख के लिए क०।

ोला बारूद कहीं जाए, तलब से काम

आलसी या कृतघ्न नौकर के लिए क०।

तलव=वेतन।

(तलव के स्थान पर 'धमाका' शव्द का भी प्रयोग करते है।)

ोश्त खाये गोश्त बढ़े, घी खाये बल होय।
ाग खाये ओझ बढ़े, तो बल कहां से होय।

मास खाने से मास बढता है, घी खाने से वल बढता है और साग खाने से पेट वढता है, वल नही होता।

ोश्त खाये गोश्त बढ़े, साग खाए ओझरी

दे० ऊ०।

ोश्त खा लेते हैं हड्डियां फेंक देते हैं

जो चीज हमे अच्छी लगे वही लेना चाहिए।

ोश्त नाखून से कहीं जुदा होता है

आपस मे रिश्ते नही टूटते।

गौरा रूठेगी तो अपना सुहाग लेगी, भाग तो न लेगी

अपनी आत्मनिर्भरता प्रकट करने के लिए एक ऐसे व्यक्ति का कहना, जिसका मालिक या आश्रयदाता उससे अप्रसन्न हो गया हो, और अलग कर देने की धमकी दे रहा हो।

गौरा=पार्वती। यहा अभिप्राय देवी से है।

सुहाग=भेट।

भाग=भाग्य।

ग्रह अपना फल कर ही जाते हैं

फलित ज्योतिष मे विश्वास रखनेवाले का कथन।

ग्वार खाए गंवार

स्पष्ट।

(ग्वार की फलियो की तरकारी वनती है और दाल भी होती है।)

ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती

कोई अपनी चीज को वुरा नही वताता।

ग्वाले का दही, महतो की भेंट

गरीव की चीज वडे हडपते है।

महतो=गाव का जमीदार या वडा।

घटत छिन-छिन, बढ़त पलपल, जात न लागत वार।
कहत कवीर सुनो भाई साधो, सपना है संसार।

स्पष्ट।

घडी भर की वेशरमी, सारे दिन का आधार

(१) सकोच छोडकर किसी को किसी काम के लिए नाही कर देने से वहुत आराम रहता है।

(२) वेश्याओ के लिए भी क०।

('आधार' की जगह *'आराम' का प्रयोग भी कहा०* मे करते हैं।)

घडी में औलिया, घडी मे भूत

जिसकी मानसिक स्थिति घडी-घडी वदलती रहे, उसके लिए क०।

औलिया=सत।

घडी मे गांव जले, नौ घड़ी भद्रा, (हिं०)
गाव मे आग लग गई है, पर नौ घडी तक भद्रा नक्षत्र है, जिसमे कोई काम नही किया जाता। इसलिए अब आग कैसे बुझे ?
आवश्यक कार्य के लिए टालमटोल करनेपर क०। ज्योतिषियो पर व्यग्य भी कहावत मे है। वे हर काम शुभ घडी मे ही करने को कहते है।
पाठा०—घडी मे घर . ।

घड़ी मे घड़ियाल है
बस, घटा बजने ही वाला है। मतलब, समय तेजी से बीत रहा है। कब क्या हो, पता नही।
घडियाल लोहे या कासे के उस मोटे पत्तल को कहते है, जो समय बताने के लिए बजाया जाता है।

घडी मे तोला, घड़ी मे माशा
जिसका चित्त ठिकाने न हो, ऐसे व्यक्ति के लिए क०।

घड़े में घड़ा नहीं भरा जाता, (व्यं०)
खाली घडे को तो कुए से ही भर कर लाया जाना चाहिए, यदि एक खाली बर्तन को दूसरे बर्तन की चीज़ से भर दिया, तो उससे लाभ क्या हुआ ? एक बर्तन तो खाली रहेगा ही।

घप घोडा, रूठा चाकर, इनका इतबार नहीं
सवारी मे न निकला हुआ घोडा और नाराज नौकर, ये मौके पर धोखा देते है।

घये की मेरी, तवे की तेरी
जो आग पर नीचे सिंक रही है, वह मेरी, और तवे की तेरी। स्वार्थी के लिए क०।

घर आई लक्ष्मी को लात मारना, (हि०)
अनायास मिलते हुए धन या मिलती हुई सुख-सुविधा को छोडना।

घर आया नाग न पूजे, बाबी पूजन जाय, (हि०)
कोई काम जब बहुत आसानी से हो रहा हो, तब न करके बाद मे उसके लिए कष्ट उठाना।

घर आगे कुत्ते को भी नहीं निकालते
(१) घर आए आदमी का तिरस्कार नही करना चाहिए।
(२) मौके पर कोई आ जाए, तो उसे आश्रय देना चाहिए।

घर आए बैरी को भी न मारिए
स्पष्ट।

घर कर, बर कर, सत्तर बला सिर कर
घर-गृहस्थी एक जजाल है।

घर का आटा कौन गीला करे
घर की चीज कौन बिगाडे ?

घर का और दिल का भेद हरेक के सामने न कहे
स्पष्ट।

घर का घुरवाहा कर दिया
घर का सत्यानाश कर दिया।
घुरवाहा = घूरा।

घर काज, बहू गींदो को, (स्त्रि०)
मौके पर गायब हो जाना।
(फैलन ने गीदो का अर्थ आगन किया है। 'घर मे काम और बहू आगन मे'।)

घर का जोगी जोगना, आन गांव का सिद्ध, (हिं०)
घर के आदमी की कद्र नही होती।

घर का भेद जब ही पाया, चौक पूरन को ढकना आया, (पू०)
घर की हालत का पता उसी समय चल गया जब चौक पूरने के लिए मिट्टी के सकोरे मे आटा आया। आदमी के रहन-सहन और व्यवहार से उसकी आर्थिक स्थिति का ज्ञान हो जाता है।

घर का भेदी लंका ढावे, (हि०)
आपस की फूट से घर का नाश हो जाता है। राम ने जब लका पर चढाई की, तो रावण का भाई विभीषण उनसे जाकर मिल गया था। तभी लका का नाश हुआ।

घर की आधी भली, बाहर की सारी कुच्छ नहीं
(१) अपने पास जो कुछ हो उसी मे गुजर करनी चाहिए, दूसरे पर निर्भर रहना ठीक नही।
(२) ऐसे निकम्मे व्यक्ति का कथन भी हो सकता है, जो बाहर जाकर परिश्रम नही करना चाहता।

घर की चुटकी, बासी साग
बहुत शेखी मारनेवाले के लिए क०। घर मे चुटकी

भर आटा और वासी साग के सिवा कुछ नही, फिर भी वात वनाते है।

घर की वला घर ही में

घर की मुसीवत घर मे ही रही।

(कुछ जातियो मे वडे या छोटे भाई की विधवा से व्याह कर लेने की प्रथा प्रचलित है। उसी से मतलव हे।)

घर की विल्ली और घर ही मे शिकार

जव घर का ही कोई आदमी या अपने आश्रित रहने वाला व्यक्ति धोखा दे, तव क०।

घर की वीवी हाडनी, घर कुत्तो जोग, (स्त्रि०)

जिस घर की स्त्री हमेशा वाहर घूमती रहती है, वह घर वर्वाद हो जाता है।

घर की मुरगी दाल वरावर

घर की चीज़ की कद्र नही होती।

घर की मूंछें ही मूंछें है

किसी स्त्री का अपने निकम्मे पति के सम्वन्ध मे कहना कि 'वस शेखी मारते है, काम कुछ नही करते।'

घर के खीर खायें और देवता भला मानें, (हिं०)

देवता के नाम से हम स्वय ही खीर-पूडी खाते हैं, और चाहते यह है कि उससे देवता प्रसन्न हो जाए।

घर के जले वन गये, और वन मे लागी आग।
घर विचारा क्या करे, जो कर्मो लागी आग।

वहुत प्रयत्न करने पर भी जव कोई आदमी सफल-मनोरथ नही होता, तव०।

('घर के जले' के स्थान पर प्र० पा०—'घर के दाहे' है।)

घर के पीरो को तेल का मलीदा, (मु०)

जव घरवालो की अपेक्षा वाहर के लोगो के साथ अधिक अच्छा वर्ताव किया जाए, तव क०।

घर के रोवें, वाहर के खाएं, दुआ देत कलंदर जाएं

घर के लोगो को न पूछना, और वाहरवालो का आदर-सत्कार करना।

घर के ही मर्द हैं

ऐसे आदमी के लिए, जो काम-धधा कुछ नही करता, और व्यर्थ स्त्री पर रौव जमाया करता है।

घर खीर तो वाहर भी खीर

(१) जो घर मे अच्छा खाते हैं, उन्हे वाहर भी अच्छा खाने को मिलता है।

(२) दूसरो को जितना अच्छा खिलाओगे, उतना ही अच्छा वे तुम्हे भी खिलाएगे।

(३) घर मे अगर अच्छा खाने को मिलता हे, तो वाहर भी मिले, यह आवश्यक नही।

घर खोदे, ईंधन बहुत

घर खोदने से काठ-कवाड वहुत मिल जाता है। घर को वर्वाद करने पर ही कोई उतारू हो, तो उसके लिए खर्च की क्या कमी ?

घर घर का, साथ नर का

किराए के मकान मे न रहे, स्त्री का साथ न करे।

घर-घर के जाले बुहारती फिरती है

(१) जो औरत घर-घर फिरती रहे।

(२) जो हमेशा घर वदलती रहे।

या (३) जो हरेक की खुशामद करती फिरे, उसके लिए क०।

घर-घर पीत न कीजे तो गांव-गांव तो कीजे

अगर हर घर मे एक मित्र न हो सके, तो हर गाव मे तो एक मित्र होना ही चाहिए।

घर-घर यही मटियाले चूल्हे हैं, (स्त्रि०)

सव घरो का एक-सा हाल है। सव जगह कुछ न कुछ परेशानिया है (घरोघर मातीच्या चूला। म०)

घर घरवाली से

स्पष्ट। (स०)—गृहिणी गृहमुच्यते।

घर-घर यही लेखा, (स्त्रि०)

दे०—घर घर यही मटियाले ।

(पूरी कहावत इस प्रकार है—ऊचे चढ के देखा, घर-घर मे ही लेखा। मराठी मे भी है—घरोघरी एकच परी, न सागेल तीच वरी।)

घर-घर शादी, घर-घर ग़म

सभी घरो मे दुख-सुख लगा है।

घर-घर शादी, घर-घर चैन

सव जगह अमन-चैन।

अच्छे शासन के लिए भी क०।

घर, घोड़ा, गाड़ी, इन तीनों के दाम खड़ाखड़ी
घर, घोडा और गाडी, इन तीनो के दाम नकद ले लेना चाहिए। अथवा ये तीनो चीजे अपने स्थान पर ही विकती है, यानी जहा वे देखी जा सके।

घर घोड़ा, नखास मोल
घोडा तो घर मे है, और वाजार मे उसका मोल करते फिरते है। जव कोई विना माल दिखाए ही उसके दाम कहे, तव क०।

घर चैन तो वाहर चैन
घर मे आदमी को सुख है, तो वाहर भी मिलता है।

घर छोड़ हुलीरा कायम, (स्त्रि०)
घर छोड़ घूरे पर रहना। मूर्ख के लिए क०।

घर जल गया, तब चूड़ियां पूछीं, (स्त्रि०)
काम विगड जाने पर जव कोई सुध ले, तव क०। (कथा है कि किसी स्त्री ने नई चूडिया पहनी। वह चाहती थी कि लोग उन्हे देखे और प्रशसा करे। किसी का ध्यान उनकी ओर न जाते देख एक दिन उसने घर मे आग लगा दी। लोगो की भीड इकट्ठा हो गई। जव उसने हाथ उठाकर जलते हुए घर की ओर इशारा किया, तो किसी की नज़र चूडियो पर पड गई। उसने प्रश्न किया—अरे, चूडिया तुमने कव वनवाई। तव स्त्री ने उत्तर दिया कि 'यह प्रश्न अगर तुमने पहले ही पूछ लिया होता, तो मै अपने घर मे आग क्यो लगाती ?')

घर जले, घूर वतावे
घर तो जल रहा हे, कहता है धुआ है।
अपने-आपको या दूसरे को धोखे मे रखना।

घर जले, गुंडा तापे
किसी का नुकसान हो रहा हो, और दूसरे फालतू आदमी उससे लाभ उठाए, तव क०।

घर जले तो जले, चाल न विगडे
पुरातन पथियो के लिए क०।

घर तंग, बहू जवरजंग
(१) मोटी-ताज़ी स्त्री के लिए मजाक मे कहते हैं।
(२) जव किसी गरीव घर मे कोई खर्चीली औरत आ जाए, तव भी कह सकते है।

घर न वर, (स्त्रि०)
लड़की के लिए क० कि उसके लिए दो मे से कोई चीज अच्छी नही मिल रही है, न घर, न वर।

घर न वार, मियां मुहल्लेदार, (स्त्रि०)
शेखीवाज के लिए क०।

घर फूंककर विर्रा मारना, (पू०)
थोडे से लाभ के लिए वडा नुकसान करना। घर मे जव वर्र छत्ता वना लेती है, तो उसे भगाने के लिए छत्ते मे आग लगा देते है।

घर फूंक तमाशा देखना
(१) कोरी दिखावट के लिए किसी काम मे वेहिसाव पैसा खर्च कर देना।
(२) शान-शौकत मे औकात से वाहर खर्च करना।

घर फूटे, गंवार लूटे
घर की आपसी लडाई से दूसरे फायदा उठाते है।

घरबार तुम्हारा, कोठी-कुठले के हाथ न लगाना, (स्त्रि०)
झूठा प्रेम दिखाना। दिखावटी आदर-सत्कार।

घर वैठल आधा भला, (पू०)
घर वैठे थोडा भी मिले, तो अच्छा। क्योकि वाहर जाकर रहने से खर्च जो अधिक होता है।

घर भर हंसिया न निगलने का, न थूकने का
यह अशुद्ध है। (दे०—गुड भरा हसिया।)

घर भाड़े, हाट भाड़े, पूजी को लगे व्याज; मुनीम वैठा रोटियां झाड़े, दिवाला काढ़े काईं लाज। (व्यं०)
घर भी किराए पर, दूकान भी किराए पर, पूजी पर व्याज चढ रहा है, मुनीम मुफ्त की तनख्वाह पा रहा हे, तव दिवाला निकालने मे शर्म किस वात की ? विना पूजी के रोजगार करनेवाले के लिए क०।

घर भी वैठो, और जान भी खाओ, (स्त्रि०)
किसी स्त्री का अपने निकम्मे लडके या निखट्टू पति से क०।

घर मिलता हे तो वर नहीं मिलता; वर मिलता, तो घर नहीं मिलता, (स्त्रि०
लडकी के विवाह का कही ठीक न पड़ना।

घर मे आई जोय, टेढी पगड़ी सीधी होय, (स्त्रि०)
घर मे स्त्री के आ जाने पर सब अकड निकल जाती है, क्योकि गृहस्थी का बोझ सिर पर आ जाता है। टेढी पगडी गुडे ही बाधते है। इसलिए कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि गृहस्थ बन जाने पर आदमी की इज्जत बढ जाती है।

घर मे खरच नहीं, औंठी पहिरती पुखराज जड़ल सोख डाहाये, (पू० स्त्रि०)
घर मे खर्च के लिए पैसा नही, फिर भी पुखराज-जडी अगूठी पहिनने का शौक चर्राया हे।

घर मे खरच ना, ड्योढ़ी पर नाच, (पू०)
झूठी शान दिखाना।
(म०—घरात नाही दाणा व मला श्रीमत म्हणा।)

घर मे खाये नहीं, अटारी पर धुआं, (भो०)
घर मे खाने को नही, फिर भी अटारी पर धुआ कर रहे है, जिसमे कोई समझे कि भोजन बन रहा हे।

घर मे घर, लड़ाई का डर, (स्त्रि०)
एक ही घर मे अगर दो परिवार रहते हो, तो उनमे लडाई का डर रहता है।

घर मे चने का चून नहीं, गेहूं की दो पो लइयो
झूठी शान दिखानेवाले के लिए क०।

घर मे चिराग नहीं, बाहर मशाल
झूठी तडक-भडक दिखाना।

घर में जोरू का नाम बहू बेगम रख लो
अपने घर मे चाहे जो कर लो।

घर मे जो शहद मिले तो काहे बन को जाय
अगर घर बैठे सब चीज मिल जाए, तो उसके लिए कोई कष्ट क्यो उठाए?

घर में दवा 'हाय हम मरे'
घर मे चीज होते हुए भी उसके लिए इधर-उधर भटकते फिरना। एक मूर्खतापूर्ण काम।

घर मे दिया, तो मस्जिद मे दिया, (स्त्रि०)
पहले अपना घर सभालना चाहिए, फिर बाहर।

घर में दिया न बाती, मुंडो फिरे इतराती
झूठी शान दिखाने पर क०।
मुडो=ऐसी स्त्री, जिमका सिरघुटा हो। एक गाली।

घर मे देखो चलनी न छाज, बाहर मियां तीरदाज, (स्त्रि०)
झूठी शान दिखानेवाले पर व्यग्य।

घर मे धान न पान, बीबी को बडा गुमान, (स्त्रि०)
गरीब होते हुए भी घमड करना।

घर मे नहीं तागा, अलबेला मांगे पागा, (ग्रा०)
स्पष्ट।
पागा=पगडी।

घर मे नहीं दाने, बुढिया चली भुनाने
स्पष्ट।
(ऊपर की पाचो कहावतो का एक ही अभिप्राय हे।)

घर में नहीं बूर, बेटा मागे मोतीचूर, (स्त्रि०)
जब कोई ऐसी वस्तु मागे, जिसके देने की सामर्थ्य न हो, तब क०।
बूर=शक्कर।

घर मे पक्के चूहे और बाहर कहे 'पय'
झूठा दिखावा करना। घर मे चूहे पके हे, कह रहे हे, दूध उबल रहा है।

घर मे बिलौटा बाघ
घर मे सब शेर हो जाते हैं।

घर में भूनी भांग नहीं, और नेवते साठ, (स्त्रि०)
शक्ति से बाहर काम करना।

घर मे रहे न तीरथ गये, मूड़ मुड़ाकर जोगी भये
जीवन का कोई ध्येय पूरा न कर पाना। एक काम छोडकर दूसरा करना, उसमे भी असफल रहना।

घर मे रहे ना तीरथ गए, मूंड़ मुंडा फजीहत भये
दे० ऊ०।

घर मे हल न बल्दया, मागे ईख हल्दया, (ग्रा०)
घर मे न तो हल है न बैल, फिर भी हरवाहा खेत जुताई की मजदूरी मे ईख मागता है। जब किसी से कभी कोई काम ही न लिया गया हो, फिर भी वह आकर झूठ-मूठ टी मजदूरी मागे, तब०।

घर यार के, पूत भतार के
घर तो यारो का हे, और लडका पति का।
दुश्चरित्रा के लिए क०।

घर रहे घर को खाय, बाहर रहे बाहर को खाय
घर मे रहता है, तो घरवालो को परेशान करता है, बाहर रहता है, तो बाहरवालो को। निठल्ला आदमी।

घरवाले का एक घर, निघरे के सौ घर
घरवाले को घर की चिन्ता रहती है। घर छोड़कर जा नही सकता। पर घरहीन स्वतत्र रहता है। कही भी जाकर रह सकता है।

घर सुख तो बाहर चैन
दे०—घर चैन तो ।

घर से खोयें, तो आंखें होयें
जब आदमी का घर से कुछ जाता है, तब उसकी आखे खुलती है। नुकसान होने पर होश आता है।

घर से बाहर भला, (स्त्रि०)
(१) निकम्मे या लडाकू पति के लिए क०।
(२) घर से बाहर इसलिए भी अच्छा कि आदमी चिन्ताओ से मुक्त रहता है और काम-धधा भी कर सकता है। यह अर्थ भी हो सकता है।

घर ही मे वैद, मरे कैसे ?
घर मे होशियार आदमी के रहते हुए भी काम बिगड जाए, तब क०।

घाई की मेरी, तवे की तेरी (स्त्रि०)
स्वार्थी के लिए क०।
दे०—घये की मेरी ।

घाट-घाट का पानी पिया है
ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसने बहुत कुछ भरा-भुगता हो।

घाय-घायं तोरा, मन हा वाजे मोरा, (स्त्रि०)
भीतर से वह तेरा वना रहे, पर लोग तो उसे मेरा ही जानते है।
किसी ऐसी स्त्री का, जिसके पति का दूसरी स्त्री मे सम्बन्ध हे, उससे ताना मार कर कहना।

घायल की गत घायल जाने
जिस पर बीतती है, वही जानता है।

घास खाये दिन कटे, तो सब कोई खाय
जिस चीज की आवश्यकता होती है, उसी से वह पूरी होती हे।

घास में क्या सांप नहीं फिरता ?
अच्छी जगह क्या दुष्ट नही होते ?

घी कहा गया ? खिचड़ी मे; खिचड़ी कहां गई ? प्यारों के पेट में, (स्त्रि०)
ऐसी स्त्री के लिए कही गई है, जिसका पर पुरुष से प्रेम है और जो उसे घर का माल-टाल खिलाती रहती हे।
जब कोई वस्तु स्वय अपने काम आ जाए, तब भी क०।

घी का लड्डू टेढ़ा भी भला
(१) स्वभाव से जो वस्तु अच्छी है, वह अच्छी ही रहेगी, फिर देखने मे कैसी ही क्यो न हो।
(२) प्राय लडके के लिए क० कि वह कैसा ही हो, पर है तो अपना लडका ही।

घी के कुप्पे से जा लगा है
जब किसी पैसेवाले से किसी की मैत्री या सम्बन्ध हो जाए, तब क०।

घी-खिचड़ी मे दाव है
घर की मिल्कियत चाहते हैं। जब कोई मनुष्य, जितना उसे मिलना चाहिए, उतना पा लेने के पश्चात भी और आगे अपना अधिकार जताए, तब क०।

घी-खिचडी हो रहे हैं
दोनो एक हो रहे हैं।

घी गिर गया, मुझे रूखी भाती है
झेप मिटाने के लिए बहाना।

घी जाट का, तेल हाट का
घी गांव का और तेल दूकान का अच्छा होता हे, क्योकि गाव का घी ताजा होता हे और दूकान पर तेल कई दिन का होने के कारण साफ मिलता है।

घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो
खर्च भी करो और इज्जत भी बनाए रक्खो।

घी संवारे काम, बडी बहू का नाम, (स्त्रि०)
साधन। काम तो पैसे से ही होता है, यश करनेवाले को मिलता है।

घुटने नवेंगे तो पेट को ही
घर का आदमी घरवालो की तरफ ही झुकता है।

घूंसों मे उधार क्या ?
घूसे का वदला तुरत दिया जाता है।

घोंघे मे पकाया, सीपी मे खाया
गरीवी की हालत मे रहना।

घोड़ा और फोड़ा, जितना रोलो उतना ही वढे
घोडा और फोडा, इनको जितना ही सहलाओ उतना ही बढते हे। मतलव, फोडे को सहलाना ठीक नही। यहा घोडे के सम्वन्ध मे सहलाने का अर्थ खुजौरा करने से हे।

घोड़ा चाहिए विदायगी को, जरा फिरते से आइयो, (हि०)
दूल्हा के लिए घोडा अभी चाहिए और कहते यह है कि थोडी देर मे आकर ले जाना। जरूरत पर चीज न दी जाए और उसके लिए टाल दिया जाय, तव क०।
पाठा०—घोडा चाहिए विन्नायकी को ।

घोड़े का गिरा सभलता है, नजरो का गिरा नहीं संभलता
गई हुई प्रतिष्ठा नही लौटती।

घोडे की दुम बढेगी तो अपनी ही मक्खिया हिलायेगा
जव किसी एक व्यक्ति की उन्नति से दूसरो को कोई हित साधन होने की सभावना न हो, तव क०।

घोड़े की सवारी चलता जनाजा
(१) घोडे पर धीरे-धीरे चलना चाहिए, जैसे जनाजा चलता है।
(२) घोडे की सवारी खतरनाक है। गिरकर आदमी मर सकता है।
जनाजा=अर्थी ।

घोड़े की हँसी और बालक का दुख जान नहीं पड़ता
क्योकि ये वोल नही सकते।

घोड़े को लात, आदमी को बात
घोडे को ऐड से कावू मे किया जा सकता हे और आदमी को वात से।

घोड़े-घोड़े लड़ें, मोची का जीन टूटे
वडो की लडाई मे छोटो की हानि होती है।

घोड़े पर सिर से कफन बांध के बैठना चाहिए
इसलिए कि गिरकर मरने का डर रहता है।

घोड़े बेचकर सोये है
वेफिक्र है।

घोड़े भैंसे की लाग
दो एक-से व्यक्तियो की टक्कर।

घोड़े मर गये, गधों का राज आया
योग्य व्यक्तियो के न रहने पर मूर्खों की वन आती है।

घोड़ों को घर कितनी दूर ?
क्योकि घर की ओर वह तेजी से चलता है। काम करनेवाले को काम मे देर नही लगती।

चंचल नार की चाल छिपे नहीं, नीच छिपे न बडप्पन पाय
जोगी का भेक नीक धरो, कोई करम छिपे ना भभूत रमाय।
स्पष्ट।
भेक=भेप ।

चचल नार छैल से लडी, खन अंदर, खन वाहर खड़ी
दुश्चरित्रा के सम्वन्ध मे।
खन=क्षण ।

'चंडी, घर लीपेगी ?' 'नहीं निगोड़े, खोदूंगी।'
'चंडी, घर खोदेगी', 'नहीं, निगोड़े लीपूगी।' (स्त्रि०)
ऐसी कलह-प्रिय औरत के लिए कहा गया है, जो हमेशा उल्टा काम करती है। उससे घर लीपने को कहा गया, तो कहती है नही खोदूगी। जव कहा गया कि अच्छा खोद डाल, तो कहती हे, लीपूगी।

चद्रग्रहन में चक्कीराहे का क्या काम ?
चद्रग्रहण के मेले मे चक्की टाकने वाले की क्या आवश्यकता ? उसकी जरूरत तो घर पर ही पडती है, जहा चक्की है।

चंदन की चुटकी, ना गाडी भर काठ
अच्छी चीज थोडी ही अच्छी होती है। निकम्मी

चीज़ बहुत-सी भी हो, तो क्या लाभ ?

चंदन पड़ा चमार के, नित उठ कूटे चाम।
रो-रो चंदन महि फिरे, पड़ा नीच से काम।

स्पष्ट।

महि = पृथ्वी।

चदे आब, चंदे महताब

चद्रमा की तरह सुन्दर, सूर्य की तरह उज्ज्वल। (किसी रूपवती की प्रशसा मे)

चंपा के दस फूल, चमेली की एक कली।
मूरख की सारी रात, चातुर की एक घड़ी।

चपा के दस फूलो के मुकावले मे चमेली की एक कली वहुत है। मूर्ख का सारी रात का काम चतुर की एक घडी के काम के वरावर होता है।

चंवेली चाव में आई, बख़त्यारे साथ लाई'

चमेली लाड मे आई, तो घर भर को (दावत मे) लेकर आई। जव कोई अपने थोडे-से आदर का लाभ उठाने लगे, तव क०।

चंवेली चाल मे आई, बख्तावर रेवड़ियां वांटे, (स्त्रि०)

चमेली को चाव लगा, तो रेवडियो का प्रसाद वाटने लगी। जव कोई सूम खुशी मे आकर खर्च करने लगे, तव क०।

वख्तावर रेवडिया=मनौती की रेवडिया।

चकमक दीदा, खाय मलीदा, (स्त्रि०)

दुराचारिणी के लि क०।

चकरया चाकरी करके आप अपने हाथ विकता है

स्पष्ट।

चकरया = चाकरी करने वाला।

चकवा चकवी दो जने, इन मत मारो कोय।
यह मारे करतार के, रैन विछोहा होय।

सताए हुए को नही सताना चाहिए।

(कवियो का विश्वास है कि चकवा-चकवी का रात्रि के समय वियोग हो जाता है। एक नदी या तालाव के इस पार रहता हे तो दूसरा उस पार। वही से वे एक दूसरे को करुण स्वर मे पुकारा करते है।)

चक्की तले घर तेरा, निकल सास, घर मेरा, (स्त्रि०)

किसी उद्धत वहू का कहना।

चक्की मे कौर डालोगे तो चून पाओगे, (स्त्रि०)

पैसा खर्च करने से ही कुछ मिलता है।

चख डाल माल धन को, कौड़ी न रख कफन को;
जिसने दिया है तन को, देगा वही कफन को।

फक्कड़ का कहना।

चचा चोर, भतीजा काज़ी

(१) घर का एक आदमी अच्छा, दूसरा बुरा।

(२) न्याय मे पक्षपात का डर हो, तव कहा जाता है।

चचा बनाके छोड़ूंगा

मतलव, हम आपकी अक्ल दुरुस्त कर देगे। व्यग्य मे क०।

चचेरे, ममेरे वडतले वहुतेरे

वड़े आदमियो के वहुत रिश्तेदार वन जाते है।

चट मंगनी, पट व्याह; टूट गई टगड़ी, रह गया व्याह

होनहार के लिए क०।

चटोरा कुत्ता, अलोनी सिल

चटोरे आदमी को जो मिल जाए, वही बहुत है। अथवा चटोरे आदमी को जव कही निराश होना पडे, तव भी कह सकते है।

चटोरा खावे अपना घर, बटोरा खावे दोऊ घर

चटोरा तो अपना ही घर खाता है, पर मुफ्तखोरा अपना और पराया, दोनो ही घर खा लेता हे।

चटोरी ज़बान, दौलत की हान

चटोरा आदमी घर वर्वाद कर देता है।

चढ़ जा वेटा सूली पर, भगवान भली करेंगे

(१) वैठे-ठाले जव कोई अपने को किसी मुसीवत मे डाल दे, तव उससे व्यग्य मे क०।

(२) जव कोई आदमी किसी को ऐसी सलाह दे, जो खतरे से भरी हो, तव भी (सलाह देने वाले से) क० कि आपको क्या, 'चट जा वेटा ' मरेंगे तो हम।

चढती कला, जागती जोत

देवी की ज्योति के लिए क०। आशीर्वाद भी है।

चढती दरगाह

सत पुरुष के लिए कहते हैं कि वह चलती मस्जिद है।

चढ़ते बरसे आर्द्रा, उतरत बरसे हस्त।
कितना राजा डांड ले, रहे अनंद गृहस्त। (कृ०)
आर्द्रा नक्षत्र के आरभ मे और हस्त के अत मे यदि वर्पा हो, तो इतनी अच्छी पैदावार होती है कि राजा कितना ही दड क्यो न ले, किसान को फिर भी लाभ रहता है।
(आर्द्रा वर्पा का नक्षत्र है। आपाढ मे लगता है और हस्त क्वार मे। डाड लेने से मतलव यहा लगान से है।)

चढ़ मार, गूलर पक्के
वढो, हाथ मारो, यही मौका है।

चढ़ी कढ़ाई तेल न आया, तो कव आएगा? (स्त्रि०)
मौके पर कोई चीज न मिले तो कव मिलेगी?

चढ़ेगा सो गिरेगा
काम करने पर असफलता होती ही है।

चढ़े, पर न चढ़ आव; सिर दीखे न पांव
काम किया और कर नही जाना। अनाड़ीपन पर क०।

चना और चुगल मुंह लगा बुरा
चना खाने मे और चुगल की वात भी सुनने मे अच्छी लगती है, पर वाद मे दोनो से ही कष्ट होता है।

चना और चुगल मुंह लगा छूटता नहीं
एक वार जव चना खाने और चुगल की वात सुनने की आदत पड जाती है, तो वह छूटती नही।
(नोट—चुगलखोर खुशामदी होता है और यहा चुगल की वात सुनने से ही अभिप्राय है।)

चना कहे, मेरी ऊंची नाक, एक घर दलिए, दो घर हांक।
जो खावे मेरा एक टूक, पानी पीवे सौ-सौ घूंट।
चना खाने से प्यास वहुत लगती है।
(यहा नाक के दो अर्थ है—(१) चने मे जो नोक निकली रहती है वह। (२) इज्जत। (मेरी ऊची नाक अर्थात मेरी वडी इज्जत है।)

चना मर्द नाज है
चना वहुत पुष्टिकर होता है।

चने का मारा मरता है
आदमी की जव मौत आती है, तो अत्यन्त साधारण कारण से भी मर जाता है।

चने के साथ कहीं घुन न पिस जाए
वड़े के साथ कही गरीव की शामत न आ जाए।

चने चवाओ या शहनाई बजाओ
दो काम एक साथ नही किए जा सकते।

चने चिरौंजी हो गए, गेहूं हो गए दाख।
घर मे गहने तीन हैं, चरखा, पीढी, खाट। (स्त्रि०)
चने तो चिरौंजी की तरह अलभ्य हो गए है और गेहू किशमिश की तरह। घर मे अव तीन ही कीमती चीजे वची है—चरखा, पीढी और खाट, और सव विक गया। किसी ऐसे व्यक्ति की स्थिति का वर्णन, जो पहले अच्छी हालत मे था, किन्तु अव गरीव हो गया है।

चपनी भर पानी में डूब मरो
मतलव, तुम्हे शर्म आनी चाहिए।

चपनी लिखकर सिर पर धरी,
निकल पड़ा या निकल पड़ी। (मु०, स्त्रि०, लो० वि०)
(लोगो का विश्वास है कि उक्त तुकवदी को शेख फरीद के नाम के साथ एक चपनी पर लिखकर प्रसूति के सिर पर रख देने से शीघ्र प्रसव हो जाता है।)

चपरासी बे सताये नहीं रहते
कुछ लिए विना नही मानते।

चवोकड़ सो लवोकड़, (स्त्रि०)
वहुत वातूनी झूठा होता है।
चवोकड=मुह चलानेवाला, 'चाव' से वना हे।
लवोकड=लवरा, झूठा।

चमगीदड़ों के घर मेहमान आए, हम भी लटकें, तुम भी लटको
समाज जैसा करे, वैसा ही करो।

चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए
कजूस के लिए क०।

चमड़े की ज़बान है, भूल-चूक हो ही जाती है
जव किसी के मुह से कुछ-का-कुछ निकल जाए, तव क०।

चमार की छोकडी, चंदन नाम
गुण धर्म के अनुसार नाम न हो, तव क०।

चमार को अर्श पर भी बेगार

गरीब को सभी जगह कष्ट भोगने पडते है।

अर्श=स्वर्ग।

चमार चमड़े का यार

(१) ऐसा नीच पुरुष, जो केवल अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए किसी से प्रेम करे, स्वार्थी पुरुष।

(२) चमार की गुजर चमड़े से होती है, इसलिए उसी काम से उसे मतलब रहता है, यह अर्थ भी निकलता है।

चमारों के कोसे ढोर नहीं मरते, (ग्रा०)

किसी के चाहने मात्र से किसी का नुकसान नही हो जाता।

चरसी यार किसके, दम लगाया खिसके

नशेबाज को अपने नशे से मतलब रहता है। दम लगाई और खिसक गए।

चर्बी छाई आंखो में तो नाचन लागी आगन मे

मदाध औरतो के लिए क०।

(आखो मे चर्बी छाना, एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है, वेशर्म बन जाना या गर्वोन्मत्त होना।)

चल चकहे, मेरे मुंह मत लग, (स्त्रि०)

मुझसे वात मत कर। (फटकार)

चल छांव, मै आई हूं, जुमला पीर मनाई हूं, (स्त्रि०)

किसी वहुत नजाकत-पसद औरत का कहना, जिसे रास्ता चलने मे कठिनाई हो रही है। अपनी छाया से कहती है कि तू चल, मैं अभी आई। मैंने सव पीरो को मना रक्खा है। उनकी मदद से मैं वात की वात मे तेरे पास पहुच जाऊगी।

चलत फिरत धन पैये, वैठे देगा कौन?

उद्यम से ही धन मिलता है, वैठे रहने से नही।

चलता फिरता ना माल, वैठा ऊ मर जाय, (पू०)

(१) परिश्रमी भूखा नही मरता, आलसी ही मरता है।

(२) होनहार के लिए भी क०।

चलती का नाम गाड़ी, गाड़ी का नाम उखड़ी

दुनिया के उल्टे ढग पर क०। जो चलती है, उसे तो गाडी कहते है और जो जमीन मे गडी है, उसे उखडी।

(केवल 'चलती का नाम गाडी' भी कहते हैं जिसका अर्थ दूसरा होता है, यानी जिसकी चल जाए, वही सव कुछ है, वाकी टापा करे।)

उखडी=उखली।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना

चालू काम मे विघ्न डालना।

चलती चाकी देखकर दिया कवीरा रोय।
दो पाटन के बीच मे साबित बचा न कोय।

ससार की नश्वरता पर क०। धरती और आसमान के वीच मे जो आएगा, उसे मरना ही होगा।

चलती मे कौन कसर लगाता है?

हर आदमी अपने रोव और दवदवे से पूरा फायदा उठाता है।

चलती हवा से लड़ती है

जो हर आदमी से वात-वात मे लडे। लडाकू स्त्री के लिए क०।

चलते चोर लंगोटी लाभ

चोर को भागते समय जो मिले वही वहुत।

पाठा०—भागते चोर की लगोटी भली।

चलते बैल के चूतड़ मे लकड़ी करना

काम करते हुए आदमी को छेडना।

चलते हाथ-पांव उठा ले

ईश्वर से प्रार्थना करना, जिससे अशक्त होकर न मरे।

चलते हाथ-पांव सलूक कर लो

जीते-जी भलाई कर लो।

चल न सकूं, मेरा कूदन नाम

डीग हाकनेवाले पर क०।

चलना भला न कोस का, वेटी भली न एक।
देना भला न वाप का, जो प्रभु राखे टेक।

सवारी का न होना, अकेली वेटी और पिता का ऋण, ये तीनो अच्छे नही।

(यह वगला मे भी है—चला भाल नय एक क्रोश, वेटी भाल नय एक। भागा भाल नय वापेर काछे

यदि विधि राखे टेक।)

चलना है, रहना नहीं, चलना बिस्वे बीस।
ऐसे सहज सुहाग पर, कौन गुंधावे सीस।

ससार मे आकर जब एक दिन जाना ही है, तब सुख-भोग के साधनो को इकट्ठा करने से क्या लाभ ?

सहज सुहाग=थोडी देर का सुहाग।

चलनी चम्मा, घोड़ लगम्मा, कायथ गुलम्मा, ये तीनों नही कोई कम्मा

चलनी का चमडा, घोडे की लगाम, और नौकरी करनेवाला कायस्थ, ये तीनो किसी काम के नही होते। यानी उनसे और कोई काम नही हो सकता।

चलनी दूसे सूप को, जिसमे बहत्तर छेद

जब कोई अपने बडे ऐब न देखकर दूसरो के साधारण से ऐब देखता फिरे, तब क०।

दूसना=दोष देना, बुरा-भला कहना।

(बगला मे भी है—'चालुनी बले छूच तोरे पोदे केन छेद। आपन दोष देखे ना जार सर्व्वांगेई वेधा।')

चलनी मे गाय दुहे, करमो को क्या दोष ? (स्त्रि०)

जानबूझकर मूर्खतापूर्ण काम करके भाग्य को दोष देना। चलनी मे गाय दुहने से तो सब दूध बाहर निकल ही जाएगा।

चल बसे जो लोग थे इस्लाम के, रह गए बाकी मुसलमान नाम के

स्पष्ट।

चल मरघट को लकडिया सस्ती हैं

कजूस से हँसी मे क०।

चल मेरे चरखे चर्रखचूं, कहा की बुढिया, कहां का तू

अपने ही मन की कहे जाना, दूसरे की न सुनना।

(इसकी एक मनोरजक कहानी है, जो अक्सर बच्चो को सुनाई जाती है—किसी जगल मे एक बुढिया शेर, चीता, भालू आदि हिंसक जतुओ से घिर गई। जब वे उसे खाने को तैयार हुए, तो बुढिया बोली—अभी तो मै बहुत दुबली हू। अभी मै अपनी लडकी के यहा जा रही हू। तुम लोग कुछ दिनो ठहरो। जब मै वहा से खा-पीकर खूब मोटी-ताजी होकर आ जाऊँ, तब मुझे खा लेना। सब ने बुढिया की बात मान ली और उसे छोड दिया। बुढिया जब लौटी, तो अपने साथ एक चरखा लेती आई और उसी के अदर बैठ गई। जानवर जब उससे कहते—आ बुढिया, अपना वादा पूरा कर। तो वह चरखे के भीतर से ही जवाब देती 'चल मेरे चरखे चर्रखचू, कहा की बुढिया, कहा का तू'। यह सुनकर जानवरो ने समझा कि यह तो बुढिया नही, कुछ और मुसीबत है, और डर के मारे वहा से भाग गए। इस तरह बुढिया ने अपनी जान बचा ली। कहानी से शिक्षा यह मिलती है कि बल से बुद्धि बडी है।)

चला-चली का सौदा प्यारे, भला-भली कर लेओ

ससार मे आकर एक दिन जाना है, कुछ भलाई कर लो।

चला-चली की राह मे भला-भली कर लेओ

दे० ऊ०।

चली चली आई सौत के पीहर, (स्त्रि०)

जब कोई जानबूझकर बरबादी के रास्ते पर चले, तब क०।

(सौत के मायके जाने पर आदर-सत्कार तो दूर रहा, गालिया सुनने को मिल सकती है और मार भी पड सकती है।)

चली चली बी माखो आईं

जब कोई अफवाह उडते-उडते किसी जगह पहुचे, तब क०।

चलै न जाने, आगन टेढ़ा, (स्त्रि०)

जब किसी काम को करने की युक्ति न जानता हो, पर उसके लिए साज-सरजाम को दोष दे, तब क०।

पाठा०—नाच न जाने आगन टेढा।

चलै रांड़ का चरखा और चलै बुरे का पेट

गरीब राड पेट के लिए चरखा चलाया करती हैं और बुरे आदमी का कुपच के कारण पेट चलता रहता है। जब कोई किसी से चलने के लिए कहता है, और वह नही जाना चाहता, तब वह प्राय हँसी मे उपर्युक्त वाक्य कहकर टालता है।

चलो न जाए, गठरी मुडायछो, (पू०, स्त्रि०)

चलते बनता नही, ऊपर से गठरी सिर पर।

शक्ति से बाहर काम करने पर क०।

चलौ सखी चलिए वहां, जहां बसें ब्रजराज।
गोरस बेचत हरि मिलें, एक पथ दो काज। (स्त्रि०)
स्पष्ट।
(इस दोहे की अतिम अर्द्धाली 'एक पथ ' ही कहावत के रूप मे प्रयुक्त होती है।)

चश्म बद्दूर, आंखें मोती चूर
इन मोती जैसी सुन्दर आखो पर किसी की बुरी नजर न पडे, एक तरह की शुभकामना।

चश्मे या रोशन, दिले मा खुश, (फा०)
आखो की रोशनी, दिल की खुशी। लडके के लिए क०।

चसका लगा बुरा
किसी चीज की लत बुरी होती है।

चसका दिन दस का, पराया खसम किसका?
पराई चीज अपनी नही हो सकती।

चहार चीज अस्त तोहफ ए मुल्तान; गर्द, गरमा, गदा ओ गोरिस्तान, (फा०)
मुलतान की चार चीज़े मशहूर है—धूल, गरमी, फकीर और कब्रे।

चहार शम्बह नदारद, (फा०)
चहार शम्बह फारसी मे बुधवार को कहते है ओर हिन्दी मे बुध (बुद्धि) अक्ल को कहते है। जब किसी को व्यग्य मे मूर्ख बनाना होता है, तब क०।

चांद आसमान चढ़ा सबने देखा
वैभव पर सबकी नजर जाती है। बढते हुए को सब देखते है।

चांद का टुकड़ा
सुदर वस्तु।

चांद को गहन लग गया
जब किसी सच्चरित्र की कीर्ति मे धब्बा लगे, तब क०।
जब कोई रूपवती लडकी किसी कुरूप से व्याही जाए, तब भी क०।

चांद चढे कुल आलम देखे
चद्रमा का उदय होने पर सारा ससार देखता है। बात खुल जाने पर सबको ज्ञात हो ही जाती है।

चांदनी मार गई
घोडे के लिए कहते है, जिसकी पीठ कमजोर हो।

चांदनी मे फस्त खुलवाना मना है
नस छेदकर शरीर के दूषित रक्त को बाहर निकलवाने को फस्त खुलवाना कहते है। यह काम शुक्ल पक्ष मे नही करवाया जाना चाहिए।

चांदनी में शहद नहीं होता
शुक्ल पक्ष मे मधुमक्खिया मधु इकट्ठा नही करती। एक लोक-विश्वास।

चांद ने खेत किया
एक मुहा०,—चद्रमा उदय हुआ।

चांद पै खाक डालने से नही छिपता
सज्जनो की सज्जनता को उनकी बुराई करने से कोई आच नही आती।

चाद मे मैल नहीं!
(१) चाद एक साफ चीज है।
(२) खोपडी साफ यानी गजा है।

चांदी का चश्मा लगाते है
रिश्वत लेनेवाले के लिए क०।

चांदी का जूता सिर पर
किसी को रिश्वत देने पर क०।
(मराठी मे है—चादीचा जोडा लोखडास नरम करतो।)

चाक को तकदीर के मुमकिन नहीं करता रफू।
सूजने तदबीर सारी उम्र गो सीती रहे।
भाग्य के छेद को बद करना सभव नही। तदबीर की सुई मे तुम चाहे सारी उम्र उसे सीते रहो।

चाक-चौबद, टका नालबंद
बढिया घोडा, और नाल बधाई एक टका। गलत मितव्ययिता।

चाकर के आगे कूकर, कूकर के आगे पेशखेमा
जब नौकर से किसी काम के लिए कहा जाए, और वह उसे स्वय न करके किसी दूसरे को उसे करने के लिए भेजता है, तब क०। काम को एक दूसरे पर टालना।

पेशखेमा = वह तबू, जो पहले से आगे भेज दिया जाता है।

चाकर को उज्र नही, कूकर को उज्र है

कुत्ते को किसी काम के करने मे उज्र हो सकता है, पर नौकर को नही होता।

(भावार्थ=नौकर की अपेक्षा कुत्ता अधिक स्वतन्त्र होता है। नौकर जब नाराज़ हो, उसका दृष्टिकोण।)

चाकर से कूकर भला, जो सोवे अपनी नींद

नौकर से कुत्ता अच्छा होता है, जो अपनी नीद सोता है।

चाकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर

नौकरी करनी है तो मालिक का हुक्म मानो, हुक्म नही मानना है, तो नौकरी मत करो।

चाकरी मे आकरी क्या?

नौकरी मे हीला-बहाना क्या?

चाकी फेरी, हुई चून की ढेरी, (ग्रा०)

चक्की चलाई नही कि चून तैयार है। परिश्रम से ही काम होता है।

चातुर का क़र्ज़ मन मे निस्तार

(१) कर्ज समझदार आदमी से ही लेना चाहिए। अथवा (२) समझदार आदमी को ही कर्ज देना चाहिए।

चातुर का काम नहीं, पातुर से अटके।
चातुर का काम यही, लिया दिया सटके।

समझदार आदमी वेश्या के फदे मे नही पडते। वेश्या का काम ही लोगो को मूर्ख बनाकर पैसा खीचना है।

चातुर की चेरी भली, मूरख की नार से

मूर्ख की स्त्री होने से चतुर की दासी होना अच्छा।

चातुर को चौगुनी, मूरख को सौगुनी

(१) चतुर को दूसरे की सम्पत्ति चौगुनी और मूर्ख को सौगुनी दिखाई देती है। (२) चतुर अगर अपनी बुद्धि को चौगुना समझता है, तो मूर्ख सौगुना।

चातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत।
साध कहे है, मत करो, कोइ मूरख से प्रीत।

मूर्ख मित्र से चतुर दुश्मन अच्छा। मूर्ख से मित्रता नही करनी चाहिए।

चातुर नार नरकूढ़ से, ब्याह होय पछताय।
जैसे रोगी नीम को, आंख मींच पी जाय।

चतुर स्त्री मूर्ख के साथ ब्याह होने पर मन ही मन पछताती है, पर कुछ कह नही सकती। रोगी जैसे नीम के कडुए घूट को चुपचाप पी जाता है, उसी तरह वह भी कष्ट सहन करती है।

चापलूसी का मुंह काला

चापलूसी अच्छी चीज नही।

चाम का घर कुत्ता लिये जाता है

(१) जहा मुफ्त का खाने को मिलता है, वहा सब इकट्ठे होते है। अथवा (२) घर मजबूत बनवाना चाहिए, जिससे शीघ्र नष्ट न हो जाए। (कुत्ते को चमडा विशेष प्रिय होता है।)

चाम का चमोटा, कूकर रखवाल

चमडे की चीज की रखवाली के लिए यदि कुत्ते को छोड दिया जाए, तो वह तो उसे लेकर चम्पत हो जाएगा।

चाम के चंडू चलल पहाड, पीछल टगडी टूटल कपार

दुबले पतले आदमी ने पहाड पर चढने की कोशिश की, तो टाग पीछे हुए और सिर फट गया। (सामर्थ्य से बाहर काम नही करना चाहिए।)

चाम के दाम

चमडे के भाव अर्थात बहुत सस्ती चीज।

(मुहम्मद तुगलक ने सन् १३३० मे सोने-चादी के अभाव मे तावे का सिक्का चलाया था। कहावत मे उसी ओर सकेत है।)

चार अफीमी और तीन हुक्का

लडाई की जड। चार अफीमचियो का तीन हुक्को मे काम कैसे चल सकता है?

चार गोड़वा बांधा जाए, दो गोड़वा न बाधा जाए

चार पैर के पशु को कही भी बाध रखो, पर दो पैर के मनुष्य को नही बाधा जा सकता।

चार घर चौ भैया, तेकरा बीच मे भीखन भैया, (स्त्रि०)

चार घरो मे चार भाई रहते है और उनके बीच

मे रहते है भीखन भाई। जब कोई विरोधियो के बीच मे अकेला पड जाए, तब क०।

चार चोर चौरासी बनिया, एक-एक करके लूटा

चार चोरो ने चौरासी बनियो को एक-एक करके लूट लिया।

(कथा है कि चौरासी बनिए कही जा रहे थे। चार चारो ने उन्हे देख लिया। उन्होने जब एक बनिए को लूटा, तो बाकी उसकी मदद न करके खड़े तमाशा देखते रहे। तब चोरो ने एक-एक करके उन सब की लुजिया-पुजिया छीन ली। शिक्षा यह कि एका न होने से हानि उठानी पडती है।)

चार जात गावें हरबोग, अहीर, डफाली, धोबी, डोम

ये चार जातिया बेतुका गाती है—अहीर, डफाली, धोबी और डोम।

चार दिन का रंगबंग, छोड़ डाढ़ीजरवा मोरा संग, (स्त्रि०)

मुझे चार दिन का यह रगचग नही चाहिए, दाढीजले, मेरा साथ छोड!

अपने दुष्ट पति से किसी स्त्री का कथन।

चार दिन की आइयां, और सोंठ बिसाइन जाइयां

अभी चार दिन आए नही हुए, और सोठ खरीदने जा रही है!

जब कोई नई विवाहिता प्रौढ की तरह बात करे, तब क०।

(सोठ की आवश्यकता बच्चा होने पर ही पडती है।)

चार दिन की चमक चौदस

चार दिन की चादनी। थोडे दिनो का राग-रग।

चार दिन की चमर जोतिस

फैलन ने इसका यह अर्थ दिया है कि 'चार दिन पहले चमार था, वह अब ज्योतिषी बन गया।' किन्तु यह कहावत बुदेलखड मे भी प्रचलित है और उसका यह अर्थ लगाया जाता है कि कोई चमार यदि ज्योतिषी बन जाए, तो उसका वह ज्योतिष-ज्ञान दो-चार दिन ही चल सकता है। इस प्रकार ऊची जाति के लोगो ने ज्ञान पर अपना एकाधिकार जताया, जब कि ज्ञान सब के लिए है, यदि वह ज्ञान है तो।

चार दिना की चांदनी, फेर अंधेरा पाख

वैभव स्थायी नही रहता।

चार पांव का घोड़ा चौंकता है, दो पांव का आदमी क्या बला है?

मनुष्य से सब डरते है।

चार पाए बरो किताबे चंद, (फा०)

पशु के ऊपर किताबे लदी हुई। पढे-लिखे मूर्ख के लिए क०।

(यह 'गुलिस्ता' के वाक्य से है।)

चार वेद और पांचवां लवेद

डडे के सामने सब हार मानते है।

बहुत अफलातूनी छाटनेवाले से क०।

लवेद = लबोदा, छडी।

चार महीने हाल का, चार महीने ताल का, चार महीने पाल का

वर्षा ऋतु मे ताज़ा, जाडे मे तालाब का और गर्मियो मे घडे मे रखा पानी पीना चाहिए।

चार साल बुरा हवाल

घोडे के लिए कहा गया है कि उसके शुरू के चार साल अच्छे नही होते।

चार हाथ पांव सबके हैं

सब मे कुछ न कुछ करने का बूता है।

चारू सो भारू

जो बहुत खाते है वे अधिक बोझ भी ढो सकते हैं। बैल के लिए कहा गया है। कहा० का यह अर्थ भी हो सकता है कि जो बहुत खाता है, वह भार-स्वरूप बन जाता है।

चारो रास्ते मुंह खुले

जो करना हो करो, सब रास्ते खुले हैं।

चालीस बरस का रेज़ा

जब कोई अपनी बहुत कम उम्र बताए।

रेज़ा = लडका।

चालीस सेरा ऊन

पूरा मूर्ख।

चालीस सेरी बात कहते हैं

पक्की या नपी तुली बात क०।

चाव घटे नित के घर जाए।
भाव घटे कुछ मुख के मागे।
रोग घटे कुछ ओखद खाए।
ज्ञान घटे कुसंगत पाए।

नित्य किसी के घर जाने से प्रेम कम होता है, मुह से कुछ मागने से इज्जत कम होती हे, दवा खाने से रोग कम होता है और कुसगत मे बैठने से ज्ञान मे कमी आती हे।

चावल पचे टावल

चावल शीघ्र हजम होता हे।

चाह करूं, प्यार करूं, चूतड़ तले अंगार करूं, जल जाए तो मै क्या करूं, (स्त्रि०)

दिखावटी प्रेम जताने पर क०।

चाह करे जाकी चाकरी कीजे।
ना करे ताका नाम न लीजे।

जो तुमसे प्रेम करे, उसकी नौकरी भी कर लो, जो प्रेम न करे, उसका नाम भी न लो।

चाह चमारी चूहड़ी, सब नीचन की नीच

चाह रूपी चमारी और भगिन सव नीचो मे नीच है। लोभ वुरी चीज है।

चाहत की चाकरी कीजे।
अनचाहत का नाम न लीजे

दे०—चाह करे ।

चाहने के नाम गधी ने भी खेत खाना छोड़ दिया था

प्रेम ऐसी चीज है कि एक वार गधी ने भी उसके चक्कर मे पडकर खाना-पीना छोड दिया था।

चाहले की भैंस

ऐसे मनुष्य की स्त्री, जो उसे खूब लाड-प्यार से रखता हो। मोटी-ताजी औरत के लिए क०।

चाहे कोदो दला ले, चाहे मंड़ुवा पिसा ले, (स्त्रि०)

तू जो कहेगा, वही करुगी। अथवा एक काम कुछ भी करा ले।

कोदो और मडुवा हल्की किस्म के अनाज होते है।

चिंडाल न छोड़े मक्खे, न छोड़े वाल, (हिं०)

ऐसे मनुष्य के लिए क०, जो सव तरह की चीजे खा ले।

चिडाल = चडाल।

चिता ज्वाल सरीर, वन, दाह लगे न बुताय।
प्रकट धुआ न देखिए, अंदर ही धुंधुआय।

स्पष्ट।

चिकनयां फकीर, मख़मल का लंगोट, (स्त्रि०)

जव कोई साधारण मनुष्य हेसियत से वाहर शौक करे।

चिकना घड़ा, बूंद पडी और ढल गई

निर्लज्ज के लिए क०।

चिकना घडा हो गया है

वेशर्म वन गया है।

चिकना देख फिसल पड़े, (स्त्रि०)

(१) किसी के रूप-यौवन पर मुग्ध हो जाने पर क०।

(२) पैसे के लालच मे आ जाने के लिए भी कह सकते है।

चिकनी-चुपडी वातों से पेट नहीं भरता

कोरी वातो से काम नही चलता।

चिकनी वातें जिन पतयाओ

मीठी वातो मे मत आओ।

चिकने घड़े पर पानी

निर्लज्ज के लिए क०, जिस पर कोई वात असर नही करती।

चिकने गलवा मलवा के, (ग्रा०)

माल-टाल खानेवाले के चिकने गाल होते है।

चिकने गाल तिलनियां के और जरे-बुरे भुरजिनिया के, (स्त्रि०)

तेली की स्त्री तेल का काम करती है, इसलिए उसके गाल चिकने रहते है, और भडभूजिन चूकि भाड झोकती है, इसलिए उसके गाल काले-कलूटे रहते है।

(आदमी की चाल-ढाल पर उसके व्यवसाय का असर पडता है।)

चिकने मुंह को सब ताकते हैं

वडे आदमी की सव खुशामद करते है।

चिट्ठी न परवाना, मार खाये मुल्क बेगाना

जव कोई विना कहे-सुने किसी की चीज हथिया ले, तव क०।

वेगाना = पराया।

चिड़ा मरन, गंवार हांसी
एक का नुकसान, और दूसरा हँसता है।
चिडा = चिड़िया, नरपक्षी।

चिड़िया अपनी जान से गई, खानेवाले को स्वाद न आया
परिश्रम से किए गए काम की जव सराहना न की जाए, तव क०।

चिड़िया अपनी जान से गई, लड़का खुश न हुआ, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।

चिड़िया और दूध
असभव व्यापार। चिड़िया के दूध नही होता।

चिड़िया करे खोंचा, चिड़ा करे नोंचा
चिडिया तो एक-एक तिनका लाकर घोसला वनाती है और चिडा नोच-नोच कर फेकता है।
(जव घर का एक आदमी तो परिश्रमपूर्वक सचय करे और दूसरा वेरहमी से खर्च करे।)

चिड़िया की चोच मे चौथाई हिस्सा
कमजोर या सीधेसादे को थोडा हिस्सा ही मिलता है।

चिड़िया की जान गई, लड़के का खिलौना
किसी के दुख की परवाह न करके जव कोई उलटा उस पर हँसे।

चिड़िया को शाहीन से क्या काम ?
स्पष्ट।
शाहीन = एक प्रकार का वाज़ पक्षी।

चिडीमार टोला, भांत-भांत का पंछी बोला
जहा किसी मजमे मे हर आदमी अपनी अलग राय दे रहा हो, वहा क०।
(आगरे मे चिडीमार टोला नाम का एक वाज़ार है, जहा शाम को सव तरह के आदमी दिखाई देते है, और वहुत शोरगुल और वकझक रहती है।)

चिड़ीमार हमेशा भूखे नंगे रहते हैं
स्पष्ट।

चित भी मेरी, पट भी मेरी
हर तरह से अपना ही लाभ चाहना।

चिराग गुल, पगडी गायव
जहा ऐसे वदमाश इकट्ठे हुए हो कि थोडी-सी भी असावधानी से भले आदमियो को हानि पहुचने का डर हो। कुव्यवस्था के लिए भी क०।

चिराग जला, दांव गला
चोरो के लिए क०। चिराग जलने से उनका दाव नही लगता।

चिराग तले अंधेरा
जहा विशेष न्याय, सुरक्षा अथवा विचार की आशा हो, वहा ही जव कोई अनहोनी वात हो जाए, तव क०।
जैसे—पुलिस चौकी के पास ही चोरी हो जाना या पढे-लिखे से कोई ऐसी भूल हो जाना, धार्मिक स्थान मे दुराचार, जो नही होना चाहिए।

चिराग में बत्ती और आंख पै पट्टी, (स्त्रि०)
जो शाम से ही सोने की तैयारी करे, उसके लिए क०।

चिराग रोशन मुराद हासिल, (मु०)
(१) पीरो की दरगाह मे दीए जलाकर रखो और अपनी मनोकामना पूरी करो।
(२) नक़शवदी नाम के फकीरो की टेर, जो हाथ मे दीपक लेकर भीख मागा करते हैं। उनकी इस टेर का मतलव होता है कि हमारा दीपक जल गया। हमे भीख देकर अपनी मुराद पूरी करो।
(३) रात मे दीपक जलने के वाद ही चोर-उचक्को की मुराद पूरी होती है, तव वे चोरी कर सकते हैं। कहावत का यह मतलव भी हो सकता है।

चिल्लड़, चमोकन, चियड़ा, ये तीनो विपत का वखेडा
जुए, मार खाना और चियडे, ये तीनो गरीव के हिस्से मे पडते हैं।

चिल्लड़ चुनने से भगवा हलका होवे, (स्त्रि०)
कोरे दिखावटी प्रयास से कही सिद्धि मिलती है।
(कहावत का मतलव यह है कि कोई साधु अगर चाहे कि कपडो को चीलरो से मुक्त रखने से ही उसके पापो का वोझ हलका होगा, तो यह संभव नहीं।)
भगवा = साधुओ के गेरुए वस्त्रो को कहते हैं।

चिल्लड़ मारे, कुत्ता खाए
जुए को मार कर अलग करना और कुत्ता खा जाना। छोटी-सी चीज के विषय मे अपने को पाक-साफ बताकर बडी चीज हड़प जाना।

चिह निस्बत खाक रा ब आलमें पाक, (फा०)
पृथ्वी और आकाश मे क्या सम्बन्ध?

चींटी का बिल नहीं मिलता, कहां छिपूं
कही गुजारा नही।

चींटी की आवाज अर्श पर
निर्बल की भगवान सुनता है।
अर्श=आसमान, स्वर्ग।

चींटी की जो मौत आनी होती है, तो पर निकलते हैं
जब कोई छोटा आदमी बहुत इतराकर चलने लगता है, तब क०।

चींटी के घर नित मातम
चीटिया नित्य मरती है। साधारण आदमी को कोई न कोई कष्ट लगा ही रहता है।

चींटी के पर निकले और मौत आई
दे०—चीटी की जो मौत . . . ।

चींटी को मौत ही की बला बस है
गरीब के लिए थोडा-सा कष्ट भी बहुत होता है।

चींटी दल
बड़ी भीड़।

चींटी चाहे सागर थाह
सामर्थ्य से बाहर काम करने का धृष्ट प्रयास करना।

चींटी ससरने को जगह नहीं
बहुत सकीर्ण जगह।
ससरना=निकलना, रेंगना।

चीज न राखे आपनी, चोरों गाली देय, (स्त्रि०)
किसी विषय मे स्वय सावधान न रहकर दूसरो को दोष देना।

चीड़फाड़ के अंग्रेज डाक्टर उस्ताद हैं
स्पष्ट।

चीरा है जिसने वही नीरेगा, (हिं०)
जिसने मुह दिया है, वही भोजन भी देगा।
नीरेगा=नीर यानी पानी देगा।

चीरे चार, बघारे पांच
किसी सास का अपनी बहू के सम्बन्ध मे कहना कि यह तरकारी के चार टुकडे काटकर पाच बघारती है। (व्यग्य मे ऐसे आदमी के लिए कहते है, जो बात अधिक करे, पर काम करे थोडा।)

चील का मूत
ऐसी वस्तु जो मिल न सके।

चील के घर में पारस होता है
चील के घर मे सोना मिलता है।
(चील अक्सर सोने के गहने उठा ले जाती है। लोगो का विश्वास है कि वह ऐसा इसलिए करती है कि जब तक सोना नजदीक न हो, तब तक उसके बच्चे आखे नही खोलते।)

चील के घर मांस कहां?
चील के घोसले मे मास नही होता, क्योकि वह जो कुछ लाती है, सब खा लेती है।
जब कोई किसी के पास से ऐसी वस्तु पाने की आशा करे, जो उसके पास कभी रहती ही न हो, तब क०।

चील के घर में मांस की धरोहर
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। चील के घर मे मास होने से वह तुरत खा जाएगी।

चील बैठे तो एक खड़ ले ही उड़े
चील जहा बैठती है वहा से एक तिनका ले ही कर उडती है। कार्यशीलता का उदाहरण।

चील-सा मंडराया और कबूतर-सा बींदता फिरता है
हमेशा इस ताक मे रहता है कि जो मिले, वही उठा ले।
बीदना=फुदकना।

चुंगल भर आटा साईं का, बेटा जीवे माई का
भीख मागनेवाले फकीरो की टेर।

चुगलखोर खुदा का चोर, (मु०)
चुगलखोर ईश्वर का शत्रु होता है। मतलब—बुरा आदमी होता है।

चुगला बैठा नीम पै, दे साले के तीन सै
स्पष्ट।
बच्चो की तुकबदी।

चुटके का खैये, उकटे का न खैये
गरीब आदमी के यहा भले ही खा ले, पर ऐसे के यहा न खाए, जो खिला कर एहसान जताए।
चुटका=चुटकी माग कर पेट भरनेवाला, गरीब।
उकटा=एहसान जतानेवाला।

चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ों को जी चाहे, (स्त्रि०)
साधारण चीज के लिए पैसा नही, महगी के लिए मचलना।

चुड़ैल पर दिल आ गया तो फिर परी क्या चीज है
प्रेमी रूप-कुरूप नही देखता। प्रेम अन्धा है।

चुड़ैल पर दिल आ जाए, तो वह भी परी है
कुरूप से कुरूप स्त्री से भी अगर प्रेम हो जाए, तो वह भी फिर सुदर लगती है।

चुनिए, खुदिए, पोसलों धिया।
आइल दमदा, ले गैल धिया।
मां का वेटी के सम्वन्ध मे कहना कि मैंने उसे खिला-पिलाकर वड़ा किया, और दामाद आकर ले गया।

चुप आधी मर्जी
दे०—अल खामोशी नीम रजा।
(स०—मौन सम्मति लक्षणम्।)

चुप की दाद खुदा देगा
चुपचाप कष्ट सहन कर लेनेवाले की सहायता ईश्वर करता है।

चुपडी और दो-दो
वढिया माल और वहुत-सा।
प्राय ऐसे मनुष्य के सवध मे कहते हैं, जिसे अच्छे अधिकार प्राप्त हो और वेतन भी ऊचा मिलता हे।

चुरावे नथवाली, नाम लगे चिरकुटवाली का, (स्त्रि०)
वडे के अपराध के लिए छोटा पकडा जाए।
चिरकुट=चीथडा।

चुल्लू-चुल्लू साधेगा तो दुआरे हाथी वाधेगा
जो थोडा-थोडा सचय करेगा, वह दरवाजे पर हाथी वाध सकता है।
(भगेडी भी इसे कहा करते हे।)

चुल्लू पानी, तंग जिंदगानी
आर्थिक कष्ट मे रहनेवाले का कहना।

चुल्लू-उल्लू, लोटे मे गड़गप्प
भगेडियो का कहना।

चूका और गया
जो चूकता है, वह हानि उठाता हे।

चूका और मरा
दे० ऊ०।
(वदर एक पेड से दूसरे पेड पर छलाग मारते समय यदि चूक जाए, तो वह नीचे गिर कर मर जाता है। उसी से आशय है।)

चूचियो में हाड़ टटोलना
जो वस्तु जहा हे ही नही, वहा उसे तलाश करना।

चूतड़ से कान गांठते हैं
(१) जो आदमी दरवाजे से कान लगाकर दूसरे की वात सुने, उसके लिए क०।
(२) किसी वात के सिर-पैर को एक करने को भी क०।

चूतड़ों से सुपारी फोड़ना
सुख-चैन मे दिन काटना।

चूतिया मर गए, औलाद छोड़ गए
यानी आप जैसा मूर्ख हमने नही देखा।
जव कोई किसी को मूर्ख वनाना चाहे, तव उसकी ओर से भी क०।

चूतियो ने गांव मारा है?
मूर्खो ने भी कभी कोई काम किया है?

चून खाए मुसंड होवे, तला खाए रोगी
रोटी खाने से आदमी तगडा होता हे और तली हुई चीजे खाने से रोगी।

चूना और चमार, कूटे पर ठीक रहता हे
स्पष्ट।
(चूने को पानी मिलाकर जितना कूटा जाता हे, उतना ही उसमे लस आता और वह मजवूत वनता हे।)

चूना, चूची, दही, ये वंगाला नहीं
वगाल का चूना और दही अच्छा नही होता। वहा की स्त्रियो के स्तन भी छोटे होते हैं।

चूनी कहे 'मुझे घी से खा'
(१) चूनी कहती है कि घी के साथ खाने से ही मैं

स्वादिष्ट बन सकती है।

साधारण अन्न को भी अच्छा बनाकर खाने मे पैसा खर्च होता है।

(२) चूनी जैसे साधारण अन्न का यह दभ कि वह चाहता है कि उसे घी के साथ खाया जाए। यह अर्थ भी होता है।

चूनी=मटर का आटा।

चूमचाट के खा लिया

(१) चटोरपन मे पैसा साफ कर देना।

(२) किसी को बिल्कुल बर्बाद कर देना।

चूमा झाड़ खाओ, लड्डू न तोड़ो

ब्याज या मुनाफा खा लो, पूजी बर्बाद न करो।

चूल्हा छोड़ भंसार में जाओ

हमे कोई मतलब नही, तुम चाहे जो करो।

भसार=भनसार, भाड।

चूल्हा झोंके चांवर हाथ

चूल्हा झोक रहे है और पखा हाथ मे लिय हुए है, गर्मी से बचने के लिए। काम मे नजाकत दिखाना।

चूल्हे आग न घड़े पानी, ऊपर ही ऊपर जा गैबानी, (स्त्रि०)

एक स्त्री का दूसरी को कोसना कि तेरे चूल्हे मे न तो आग रहे, न घडे मे पानी, और तू ऊपर ही ऊपर जहन्नुम मे जा।

चूल्हे का राव लाव ही लाव पुकारे, (स्त्रि०)

चूल्हे का देवता हमेशा लाओ, लाओ, और लकडी लाओ ही पुकारता रहता है।

पेट अथवा पेटू के लिए क०।

चूल्हे को न चक्की की, (स्त्रि०)

ऐसी औरत जो गृहस्थी का कोई काम न जानती हो।

चूल्हे चक्की, सब ही काम पक्की, (स्त्रि०)

चतुर गृहिणी के लिए क०।

चूल्हे पीछे सोवें और टेहरी को टोपवें, (स्त्रि०)

चूल्हे के पीछे सोते है और मटकी टटोलते रहते हैं। आर्थिक कष्ट भोगनेवाले के लिए क०।

चूहा बजावे चपनी और जात बतावे अपनी

काम से आदमी की जात परख ली जाती है।

चूहा बिल में समाता न था, कानों बांधा छाज, (स्त्रि०)

जब कोई स्वयं अपनी देख-भाल न कर पाए, ऊपर से कोई झझट मोल ले ले, तब उसके लिए क०।

चूहा बिल्ली का शिकार है

स्पष्ट।

चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा

सहजात स्वभाव नही छूटता।

चूहे का बिल ढूंढ़ना

शर्म से कही छिपने की कोशिश करना।

चूहे हाथ लगी हल्दी की गिरह, पंसारी ही बन बैठा (स्त्रि०)

चूहे को एक हल्दी की गाठ मिल गई, उसे लेकर वह अपने को पसारी समझ बैठा।

जब कोई थोडे-से पैसे से अपने को धनी अथवा थोडी-सी विद्या से अपने को विद्वान समझ ले, तब क०।

चेना जी का लेना, चौदह पानी देना, ब्यार चले तो लेना न देना, (कृ०)

चेना की खेती के सबध मे कहा गया है कि वह एक मुसीबत की चीज है। बहुत पानी देना पडता है और अगर गरम हवा चल जाए तो मामला साफ है। (चेना एक हलकी किस्म का अनाज है। वनस्पतिशास्त्र मे उसे Panicum miliaceum कहते हैं।)

चेने के बंस में सपूत भये माड़हा, (पू०)

जब किसी निकम्मे घर मे थोडा-बहुत होशियार लडका पैदा हो जाता है, तब व्यग्य मे क०।

(माडहा या माढा चेने की तरह ही एक हल्की किस्म का अन्न होता है।)

चेरी सबके पांव धोवे, अपने धोती लजावे

अपने हाथ से अपना काम करने मे लोगो को शर्म आती है, फिर वे उसी प्रकार का दूसरो का काम भले ही करें।

चेले चीनी हो गए, गुरु गुड ही रहे

दे०—गुरु गुड ही रहे ।

चेले लावें मांगकर, बैठा खाए महंत।
राम भजन का नाम है, पेट भरन का पंथ।
महतो और साधुओ के सम्वन्ध मे लोकज्ञान का निचोड।

चोट लगी पहाड़ की, और तोड़ें घर की सिल, (स्त्रि०)
जव कोई वाहर का गुस्सा घर मे उतारता है।

चोट्टी कुतिया, जलेबियों की रखवाली
भक्षक का ही रक्षक होना।

चोर और मोट, कसके बांधे के चाहे, (पू०)
चोर और गठरी को मजबूती से वाधना चाहिए।

चोर और सांप की बड़ी धाक होती है
उनसे सव डरते है।

चोर और सांप दबे पै चोट करता है
चोर और साप को जव निकलने का रास्ता नही मिलता, तो वे चोट करते है।

चोर का कोई हिमायती नहीं
चोर का कोई साथ नही देता।

चोर का जी कितना?
चोर डरपोक होता है।

चोर का भाई गठकटा
जो जैसा होता है, उसके यार-दोस्त भी वैसे ही होते हैं।

चोर का भाई गठ्ठीचोर
दे० ऊ०।
गठ्ठीचोर=अमानत मे खयानत करनेवाला, विश्वासघाती।

चोर का मन बकचे मे
चोर की नज़र गठरी पर ही रहती हे।

चोर का माल सब कोई खाए।
चोर की जान अकारथ जाए।
चोर का माल दूसरे उडाते हैं, और चोर वेचारा मुफ्त मे फसता है।

चोर का मुंह चांद-सा
क्योकि (१) चेहरे से वह अपने को निर्दोष सावित करता है।
(२) उसके चेहरे पर चाद की तरह स्याही पुती रहती है, जिससे उसका चोर होना सावित हो जाता है।

चोर का शाहिद चिराग़
चोर की गवाही चिराग ही दे सकता है, और चोर रोशनी मे चोरी नही करता।

चोर का सिर नीचा
चोर किसी के सामने आख उठाकर नही देख सकता।

चोर का हाल, सो मेरा हाल
अपनी सफाई मे कहते है कि यदि मैंने कोई गलती की हो तो मुझे वही दड दिया जाए, जो चोर को दिया जाता है।

चोर की और सांप की धाक बड़ी होती है
दे०—चोर और साप की ।

चोर की जमानत नहीं होती
चोर की कोई जमानत नही करता। कोई उसका हिमायती नही होता।

चोर की जोरू कोने मे सिर देकर रोती है
चुपचाप रोती है। खुलकर कैसे रो सकती है? लोग यदि रोने का कारण पूछे, तो क्या वताएगी?

चोर की दाढ़ी मे तिनका
किसी भी तरह के इशारे को अपने ऊपर समझकर जव कोई व्यक्ति तिनक उठता है।
(इसकी कथा हे कि एक काज़ी किसी चोरी के मामले पर विचार कर रहा था। जिन मनुष्यो पर भी सदेह था वे सब उसके सामने खडे थे। जव असली अपराधी के सवध मे वह कुछ निर्णय नही कर सका, तो उसने कहा—'चोर वह है जिसकी दाढी मे तिनका लगा हे।' उसके ऐसा कहने पर सव ज्यो के त्यो खडे रहे, पर जो चोर था वह अपनी दाढी पर हाथ फेरकर देखने लगा कि कही मेरी ही दाढी मे तो तिनका नही है। यह देख काज़ी ने उसे ही चोर ठहराया और उसके पास से चोरी का माल भी वरामद हुआ।)

चोर की नज़र गठरी पर
चोर हमेशा चोरी की ताक मे रहता है।

चौबे गए छब्बे होने, दुबे ही रह गए
लाभ की आशा से कोई काम किया जाए और उसमे उल्टी हानि हो जाए, तब क०।

चौबे मरें तो बंदर हों, बंदर मरें तो चौबे हों
मथुरा के चौबों पर व्यंग्य मे क०। वहा चौबे और वदर दोनो ही वहुत है।

छः चावल और नौ पखाल पानी
साधारण काम के लिए वहुत आडंवर।
पखाल = मशक ।

छः महीने मिमयानी, तो एक बच्चा बियानी (ग्रा०)
शोरगुल वहुत, पर काम थोडा।

छछूंदर के सिर मे चमेली का तेल!
जव कोई वहुत क्षुद्र व्यक्ति वढ-चढ कर वाते करे। (अजव तेरी कुदरत, अजव तेरा खेल। छछूदर के सिर मे चमेली का तेल।)

छछूंदर छोड़ना
ऐसा काम करना, जिससे दो आदमियो मे झगडा हो।

छज्जू गेले छः जना, छज्जू एले नौ जना, (भो०)
छज्जू छ आदमियो के साथ गए और नौ के साथ लौटे।
(१) व्यर्थ अपने मित्रो की सख्या वढाने पर क०।
(२) किसी काम मे मुनाफे के साथ लौटने के लिए भी कह सकते है।

छज्जे की वैठक बुरी, परछावन की छांह।
दोरे का रसिया बुरा, नित उठ पकरे बाह।
छज्जे का वैठना, पराए घर की छाह, और पडौस का रसिया वुरा होता है, वह हमेशा तग करता है।

छटी का खाया-पिया सब निकल गया
वुरी तरह असफल हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।
छटी (छठी) = जन्म के छठे दिन का सस्कार।

छटी का दूध याद आ गया
वहुत परेशान हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।

छटी के पोतड़े अब तक नहीं धुले
अभी तक वच्चे ही हैं।
पोतडे = मल-मूत्र के कपडे।

छटी के रज्जा
छठी के दिन ही राजा वन गए। व्यग्य मे क०। (राजतिलक तो वडे होने पर ही होता है।)

छट्टी न चिल्ला, हराम का पिल्ला
तेरी न छठी हुई है और न चालीसा, तू हराम का वच्चा है। गाली।
चालीसा = मुसलमानो मे जन्म के चालीसवे दिन का सस्कार।

छतरपती, घटे पाप बढ़े रती, (हिं०)
वच्चो के छीकने पर क०।
रती = शोभा, यश।

छत्तीस प्रकार के भोजन मे सत्तर-दो बहत्तर रोग भरे हैं, (हिं०)
भोजन से नाना प्रकार के रोग भी होते हैं।

छत्री का भगत, न मूसल का धनुक, (हिं०)
मूसल का धनुष नही वन सकता, उसी प्रकार क्षत्रिय कभी भक्त नही वन सकता। जाति-विद्वेषमूलक न कि सत्य, पर उस समय की धारणा।

छत्री का शोहदा, कायथ का बोदा, बामन का बैल, बनिया का ऊत
क्षत्रिय शोहदा, कायस्थ वोदा, व्राह्मण मूर्ख और वनिया ऊत होता है। (कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि क्षत्री अगर शोहदा, कायस्थ वोदा, व्राह्मण मूर्ख और वनिया ऊत हो, तो ये किसी काम के नही।)

छदाम मे लड़ाई, पैसे मे सुघड़ भलाई, (स्त्रि०)
छदाम के झगडे को पैसा देकर निपटाना चाहिए।
मतलव—व्यर्थ का झगडा ठीक नही।
छदाम = पैसे का चौथाई भाग।

छप्पर पर फूंस नहीं रहा
विल्कुल दिवाला निकल गया।

छब गठरी मे, जोवन रकाबी मे, (स्त्रि०)
खूबसूरती अच्छे वस्त्रो मे होती है और यौवन अच्छे भोजन से।

(गठरी से अभिप्राय पहिनने के कपडो से है, जो गठरी मे बधे रहते है और रकाबी से अभिप्राय उसमे रखे जानेवाले भोजन से है।)

छब्वे होने गये थे, दुबे भी न रहे, (हिं०)

जब लाभ के स्थान पर उल्टी हानि हो, तब क०।

छल का फल बुरा होता है

स्पष्ट।

छल्लो, छल आई

जो स्त्री दूसरो को बहुत छला करती थी, वह स्वय ही छलकर आ गई।

छल्लो=छलनेवाली स्त्री, एक तिरस्कार-सूचक सबोधन।

छहत्तर बोर का तवा बाध कर आना

अच्छी तरह तैयार होकर आना। एक तरह की चुनौती।

(छहत्तर बोर की बदूक होती है। मतलब यह है कि तुम इतना मोटा तवा बाध कर आना, जो हमारी छहत्तर बोर की बदूक की गोली को सह सके।)

छाज बोले सो बोले, चलनी भी बोले, जिसमे बहत्तर सौ छेद, (स्त्रि०)

जब कोई स्वय अपनी त्रुटिया न देख कर दूसरे की आलोचना करे, तब क०।

चलनी=आटा छानने की चलनी।

छाज=सूप।

छाजा, बाजा, केश, तीन बंगाले वेश।
चूना, चूची, दही, तीन बंगाले नहीं।

स्पष्ट।

छाजा=छज्जा, छत।

छाती का जमा

कष्टदायक आदमी।

छाती का सौदा है

हिम्मत का काम है।

छाती छलनी होना

बहुत दुख पाना।

छाती पर मूंग दलते हैं

निकट रह कर परेशान करते है।

छाती पै कोई नहीं धर देगा

मरने पर सब यही पड़ा रहेगा।

छाती पै धर के कोई नहीं ले जाता

दे० ऊ०।

छाती पै बाल नहीं, भाल से लडाई

सामर्थ्य न होते हुए भी बडे काम का बीडा उठाना। छाती पर बाल होना बहादुरी का चिह्न माना जाता है।

भाल=भालू, रीछ।

छान का क्या घर? और मेढक का क्या डर?

स्पष्ट।

छान=छप्पर।

छानी पर फूस नहीं, ड्योढी पर नाच, (पू०)

झूठी शान।

छाया हुवा घर पाया, और बांधी पाई टट्टी।
दूसरे का जनमा लडका पाया, चुम्मा लें के चट्टी।

किसी ने ऐसी विधवा से व्याह कर लिया, जिसके पास खूब पैसा था और एक पुत्र भी था। उसी को लक्ष्य कर के कहावत कही गई है। जब किसी को मुफ्त का माल मिल जाए, तब प्रयोग।

छाया बड़ी माया है, (हिं०)

आश्रय बडी चीज है।

छावत मंड़वा, गावत गीत; पिया बिन लागत सब अनरीत (स्त्रि०)

प्रियतम के बिना घर बनाना या गीत गाना नही सुहाता।

छिटांक चून, चौवारे रसोई, (स्त्रि०)

झूठा आडबर।

चौवारा=चौपाल।

छिटांक सतुवा, मथुरा मे भंडार

गाठ मे केवल एक छटाक सतुआ, और मथुरा मे जाकर साधुओ को भोज देंगे। वही झूठा आडबर।

छिनाल का बेटा 'बबुआ रे, बबुआ!,' (स्त्रि०)

(१) छिनाल के लडके को सब दुलराते हैं, इसलिए कि उसकी मा से बात करने का मौका मिलेगा।

(२) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि

छिनाल अपने लडके को दुलराती है 'बबुआ' कह कर। देखो इसके ढग।

छिनाल लुगाई, चातुर सिपाही

ये छिपते नही।

छींकत नहाइए, छींकत खाइए, छींकत रहिए सोय।
छींकत पर घर न जाइए, चाहे सर्व सुवर्ण का होय। (हिं०)

छीक के सबध मे अन्ध-विश्वास कि छीकते नहाना, भोजन करना और सोना अच्छा होता है। पर छीक आने पर दूसरे के घर नही जाना चाहिए, चाहे वह सोने का ही क्यो न हो।

छींकते गए, छींकते आए

छीकते गए और रोते आए। फलित ज्योतिष के अनुसार छीक आने पर चलना अशुभ माना जाता है। उसी से मतलब है। पर अर्थ यह भी हो सकता कि खाली हाथ आए।

छींकते ही नाक कटी

छीकते ही काम विगडा।

(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है कि 'छीकते की नाक नही काटी जाती', जिसका अर्थ है कि छीकने से यद्यपि अशकुन होता है, किन्तु उसके लिए किसी की नाक नही अलग की जाती।)

छींके ही पै रक्खी मिलेगी

यथास्थान रक्खी मिलेगी।

छीका=रस्सियो का जाल, जो खाने-पीने की चीजे रखने के लिए छत से लटकाया जाता है।

छीली छाली टैया-सी

साफ-सुथरी, सुडौल।

(टैया वडी कौड़ी को कहते है।)

छीले चार, बघारे पांच (स्त्रि०)

दे०—चीरे चार ।

छुआ और मुआ

दुष्ट के लिए क० कि जिसे वह छू देता है, वह फिर वचता नही।

छुओं न छांव, अलगहे नांव

आज तक मैंने कभी किसी को छुआ भी नही, फिर भी मेरा नाम 'अलगहा' रख दिया गया है। अर्थात मुझे *व्यर्थ वदनाम कर रक्खा है।*

(अलगहा झाड-फूक करनेवाले को कहते है।)

छुपे रुस्तम

व्यग्य मे चालाक आदमी के लिए क०।

(यो रुस्तम फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान हो गया है।)

छुरी खरबूजे पर गिरी तो खरबूजे का जरर, खरबूजा छुरी पर गिरा तो खरबूजे का जरर

हर हालत मे जब एक की हानि हो रही हो, तब क०।

(दो आदमियो के झगडे मे निर्बल ही पिसता है, कहावत का यह भाव भी है।)

छुरी तले दम लो

अन्त तक धैर्य्य से काम लो।

छुरी पर कद्दू, कद्दू पर छुरी

हर हालत मे वात वही है। कद्दू ही कटेगा।

छुरी पाता हूं, तो आपको नहीं पाता।
आपको पाता हूं, तो छुरी नहीं पाता।

किसी के प्रति अपना तीव्र रोष और विद्वेष प्रकट करना।

छुरी भली न कटारी, (स्त्रि०)

दोनो ही प्राण-लेवा हैं।

छूंछा का संग न साथी, महल्ला दुआरे झूमले हाथी (भो०)

गरीव का कोई साथ नही देता, पर भले आदमी के दरवाजे हाथी झूमता है।

छूछी कढ़ाई, मजीर का फोरन

खाली कढाही को मोरचा ही खा लेता है।

वेकार पडे रहने से चीज खराव हो जाती है।

छूंछी हांड़ी वाजे टन-टन

खाली वर्तन अधिक आवाज करता है।

बुद्धिहीन वहुत वोलता है। अथवा कम पैसेवाला अधिक दिखावा करता है।

छूछे फटके उड़-उड़ जाए

खाली या घुने हुए अनाज मे कोई वजन नही होता। फटकने पर वह उड जाता है।

(१) मूर्ख साधनहीन से किसी प्रकार की सहायता की आशा नही करनी चाहिए।

(२) कम बुद्धिवाला मनुष्य परीक्षा मे बहुत कम खरा उतरता है।

(३) जो जितना कम जानता है, वह उतना ही दभ भी करता है।

छूट भलाई, सारे गुन, (स्त्रि०)

भलाई छोड कर और सब गुण है।

बुरे मनुष्य के लिए क०।

छूटल घोड़ा भुसौले ठाढ़, (पू०)

(१) किसी चीज को पाने की लालसा, जब आदमी घूम फिर कर फिर उसी जगह पहुच जाए, जहा वह चीज मिल रही है, तब क०। बच्चे प्राय खाने-पीने की वस्तु के लोभ से बार-बार रसोईघर का चक्कर लगाते है, तब मा कहा करती हैं।

(२) जब किसी मनुष्य का कही ठिकाना न हो और वह घूम फिर कर उसी जगह आ जाए, तब भी क०।

भुसौला =भुस रखने की जगह।

(प्र० पा०—छूटी घोड़ी भुसैले खडी।)

छूटौ बैल भुसौरी में

दे० ऊ०।

छेरी जी से गई, खानेवालों को सवाद न आया (स्त्रि०)

किसी के आतम-त्याग या परिश्रम की जब प्रशसा न की जाए, तो क०।

छैल छौंट, बगल मे ईंट

(१) ऐसा व्यक्ति जो बहुत शौकीनी से रहता हो, पर जिसके पल्ले कुछ न हो।

(२) बेतुके शौक के लिए भी कह सकते है।

छोटा घर, बड़ा समधियाना, (स्त्रि०)

जहा स्थान की सकीर्णता की वजह से कोई काम अच्छी तरह न किया जा सके, अथवा लोग बैठ न सके, वहा क०।

(समधियाना लडकी या लडके के ससुर के घर को कहते है। पर समधियाना वह दस्तूर भी कहलाता है जो समधियो या समधिनो के पहली बार मिलने पर होता है। यह बडे गाजे-बाजे के साथ किया जाता है और इस अवसर पर सभी सगे-सबधी और सजातीय स्त्रिया बुलाई जाती है। उसी से कहावत बनी। यह बुदेलखड मे 'सकरे मे समधियाना' इस रूप मे प्रचलित है।)

छोटा मुंह बडा निवाला

(१) सामर्थ्य से बाहर काम करने की चेष्टा करना।

(२) किसी की ऐसी चीज को हथियाना, जो हज़म न हो सके।

(३) बेजोड सबध के लिए भी कह सकते है।

निवाला=कौर।

छोटा मुंह बड़ी बात

बडो के सामने धृष्टता दिखाना।

छोटा सब से खोटा

छोटा सब से खराब।

(प्राय हँसी मे ही कहते है।)

छोटा सो मोटा

ठिंगना आदमी तगडा होता है।

छोटी ननद अंगिया का बद, बड़ी ननद बिजली बसत, (स्त्रि०)

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जो अपनी छोटी ननद को प्यार करती है, पर बडी से घबराती है।

छोटी बूंद बरसे चौंकाए, आलस सभी मिट ए

किसी चिताग्रस्त या उद्विग्न मनुष्य के लिए कहा गया हे कि छोटी बूद बरसने से ही वह चौक उठता हे और सतर्क हो जाता है। पति के आने की प्रतीक्षा मे बैठी विरहिणी के लिए कह सकते हैं।

छोटी-मोटी कामनी, सब हीं बिष की बेल। बैरी मारे दांव से, यह मारे हँस खेल।

स्पष्ट।

कामनी=कामिनी, स्त्री।

दाव से=मौका पाकर।

छोटी-सी गौरैय्या, बाघों से नज्जारा, (पू०)

जब कोई सामान्य मनुष्य बडों का मुकाबला करे, तब क०।

गौरैय्या = चिडिया विशेष जो घरो मे रहती है।

छोटी-सी वछिया, बड़ी-सी हत्या, (हिं०)

जो पाप वडी गाय के मारने से लगता है, वही छोटी वछिया के मारने से भी। बुरा कर्म तो हर हालत मे वुरा ही रहेगा।

छोटे मियां तो छोटे मिया, वड़े मियां सुभान अल्लाह

प्राय हँसी मे ही कहते है कि छोटे मिया जो है, सो तो है ही, पर वडे मिया उनसे भी वढ-चढ कर है।

छोटे-से गाजी मियां, वड़ी-सी दुम

यह एक तुकवदी का अश है। प्राय लडको से हँसी मे उस समय कहते है, जव वे कोई वहुत ढीला-ढाला वस्त्र पहिन लेते है।

छोड चले वजारे की सी आग

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जिसका प्रेमी उसे छोड कर चला गया हे।

वजारे घुमक्कड जाति के लोग हैं। वे जहा ठहरते है, वहा भोजन वना कर और खा पीकर फिर आगे वढ जाते है। भोजन के लिए वे जो आग सुलगाते है, वह वही पडी रहती है। उसी से कहावत मे अभिप्राय है। पर आग से मतलव यहा 'प्रेम की आग' से भी है।)

छोड जाट, पराई खाट

जव कोई मनुष्य किसी के साथ वहुत अत्याचार कर रहा हो। उदाहरण के लिए जवर्दस्ती किसी की चीज़ पर कव्जा कर लिया हो।

छोड झाड़ मुझे डूवन दे, (स्त्रि०)

ऐ झाड। मुझे मत पकड। मै तो डूव कर ही रहूगी। जव कोई आदमी गलत काम करने का इरादा करके उसे न करना चाहे और उसके लिए कोई वहाना वनाए कि अव मैं अमुक कारण से ऐसा नही कर रहा हू। (कथा है कि एक स्त्री आत्महत्या करने के इरादे से तालाव मे कूद पडी। पर वाद मे घवराई और प्राणरक्षा के लिए उसने झाडी पकड ली। लोग जव उसे वचाने दौडे तो वह चिल्लाई—'नही नही, मैं तो डूवकर ही रहूगी। छोड झाड, मुझे डूवने दे।')

छोड़े गांव का नाम क्या?

जिससे अव कुछ प्रयोजन ही नही, उसकी चर्चा से क्या लाभ?

छोड़े गांव से नाता क्या?

छोड़े हुए स्थान से अव हमे मतलव क्या?

छोड़ो, वी विल्ली, चूहा लंडूरा ही जाएगा, (स्त्रि०)

किसी विल्ली ने चूहा पकड लिया। उसकी दुम कट गई। तव कहा जा रहा है कि 'विल्ली रानी, चूहे को छोडो। उसकी दुम कट गई, कोई वात नही। वह विना दुम के ही जिएगा।' अभिप्राय यह कि—'वस वहुत हो गया, अधिक ज्यादती न करो।'

जंगल जाट न छेड़िए, हट्टी बीच किराड़।
भूखा तुर्क न छेड़िए, हो जाए जी का झाड़।

जगल मे जाट को, दूकान मे दूकानदार को और भूखे तुर्क को नही छेडना चाहिए, नही तो ये जान की आफत कर देते है।

जंगल मे खेती नहीं, बस्ती मे नहीं घर

कही कुछ न होना।

जगल मे मंगल, बस्ती मे कडाका

जगल मे भोज, नगर मे उपवास। उल्टा काम।

जगल मे मंगल, बस्ती मे वीरान।
जा घर भाग न संचरे, वह घर भूत समान।

भगेडियो का भग छानने की प्रशसा मे कहना।

जंगल मे मोती की कद्र नहीं

वहा कौन मोती की परख करे?

जंगल मे मोर नाचा, किसने जाना?

अपनी योग्यता, धन-सपत्ति या वैभव को ऐसे स्थान पर दिखाने से क्या लाभ, जहा अपना कोई परिचित मौजूद न हो अथवा जहा उसकी कोई कद्र न कर सके।

जख्मी दुश्मनो मे दम ले तो मरे, न दम ले तो मरे

दोनो तरह से सकट। शत्रुओ को अगर मालूम

हो जाए कि अभी यह जिंदा है, तो वे मार डालेगे। और सास लेना वद कर देने से तो मर ही जाएगा।

जग जला तो जलने दे, मै आप ही जलती हू, (स्त्रि०)

स्वयं मुसीवत मे हू, दूसरे की मुसीवत क्या देखू।

जग जानी देस बखानी

ऐसी वात, जिसे सब जानते हो।

जग जीता मोरी कानी, वर ठाढ़ होय तव जानी

जव एक आदमी दूसरे को धोखा दे, लेकिन दूसरे ने भी उसे धोखा दे रखा हो, तव क०।

(कथा है कि कुछ लोगो ने धोखा देकर एक कानी लडकी का व्याह एक लडके के साथ ठीक किया। वर पक्ष के लोगो को जव इसका पता चला, तो वे एक लगडे को दूल्हा वनाकर ले गए। व्याह हो जाने पर कन्यापक्ष के लोगो ने कहा—'जग जीता मोरी कानी', तव वरपक्ष की ओर से जवाब मिला 'वर ठाढ होय तव जानी।' अर्थात दूल्हा जव खडा हो, तव तुम्हे पता चलेगा कि जीत किसकी रही, तुम्हारी कानी लडकी की या हमारे लगडे वर की।)

जग दर्शन का मेला है

यह संसार मिलजुल कर ही रहने की जगह है।

जगन्नाथ का भाता, जिसमे झगडा न झासा

ऐसा काम, जिसमे शंका की गुजाइश न हो।

(जगन्नाथपुरी के मदिर मे भात का प्रसाद वटता है। उसे जात-पात का विचार किए विना सव लोग सहर्ष स्वीकार करते है। कहा० उसी पर आधारित है।)

जगन्नाथ के भात को किनने न पसारो हाथ?

ऊ० दे०।

जगन्नाथ जी के प्रसाद की महिमा मे कहा गया है।

(प्र० प्रा०—जगन्नाथ के भात को जगत पसारे हाथ।)

जग मे देखत ही का नाता

(१) ससार के सव नाते झूठे है।

(२) जव तक मनुष्य जीता है, तभी तक सब नाते है।

जच्चा और वच्चा दोनो जियें, (स्त्रि०)

आशीर्वाद।

जड काटते जायं, पानी देते जायं

(१) जव कोई आदमी किसी चीज को वनाने जाकर अपनी मूर्खता से उसे विगाड रहा हो।

(२) धोखेबाज़ मित्र के लिए भी कह सकते हैं

जड़ को पकड़ो, शाखाओ को क्या पकड़ते हो?

मूल चीज की ओर ही ध्यान देना चाहिए।

जतने के तीन रोटी, ततने की टिकड़ी।

अलग करो तीन रोटी, एने लावा टिकड़ी (पू०, स्त्रि०)

जितने (आटे) की तीन रोटिया वनी हैं, उतने की एक टिकडी वनी है। तीन रोटिया अलग करो, टिकडी ही लाओ। इसलिए कि एक मोटी रोटी खाने से तो एक ही रोटी मानी जाएगी और तीन खाने से तीन रोटियो की गिनती की जाएगी।

जनती न ढोल वजता, (स्त्रि०)

किसी स्त्री का अपने मूर्ख पुत्र के सवध मे कहना, जिसके कारण घर की वदनामी हो रही है।

(लडका पैदा होने पर ढोल वजता है। साथ ही ढोल वजने का अर्थ ढिंढोरा पिटना या वदनामी होना भी है।)

जनना और मरना वरावर है, (स्त्रि०)

प्रसव मे स्त्री को वडा कष्ट होता है।

जनम के कमवख्त, नाम वख्तावरसिंह

गुण के विरुद्ध नाम।

जनम के दुखिया, नाम सदासुख

दे० ऊ०।

जनम के दुखिया, करम के हीन, तिनका देव तिल-गवा कीन

स्पष्ट।

(फौज का सिपाही कभी घर पर नहीं रह पाता, इसलिए ऐसा कहा गया है।)

जनम के मगता, नाम दाताराम

दे० ऊ०।

(इस तरह की सव कहावतो का यह अर्थ नहीं है कि वे गुण के विरुद्ध नाम होने पर ही प्रयुक्त की जाती हो। वास्तव मे वे व्यग्य मे किसी को नीचा वनाने के लिए ही कही गई हैं।)

जनम के साथी है, करम के साथी नहीं

(१) बुरे कामों का कोई साथी नही होता।
(२) भाग्य मे कोई हिस्सा नही बटा सकता। सब अपना-अपना भोगते है।

जनम-जनम को छूट गई

(१) जन्म-जन्मान्तर के लिए छुटकारा पाया।
(२) जन्म-जन्मान्तर के लिए कलक धुल गया।

जनम न देखा बोरिया, सपने आई खाट

(१) झूठी शान दिखानेवाले के लिए क०।
(२) साधारण स्थिति मे रहकर बडी-बडी चीजो का स्वप्न देखनेवाले के लिए भी क०।
बोरिया = टाट का बोरा।

जनम पत्र सब देखते हैं, करमपत्र कोई नहीं देखता

भाग्य-लिखा कोई नही जान सकता।

जनम पत्र की विध तो मिला लो

जल्दी न करो, पहले देख तो लो कि यह काम होगा कैसे ?
(हिन्दुओ के यहा विवाह मे वर और कन्या की जन्मपत्री देखी जाती है। जब उनके गुण ज्योतिष के अनुसार परस्पर मिल जाते है, तभी विवाह पक्का होता है।)

जने-जने का मन रखते, वेश्या हो गई बाझ

सबको प्रसन्न रखना बडा कठिन है। इस तरह के प्रयास मे वेश्या का जीवन ही अकारथ जाता है।

जफ़ा क़फा राजाओं पर पड़ती आई है

विपत्ति सब पर पडती है।

जब अपना उतार लाता दूसरे की उतारते क्या लगता है?

जिस आदमी ने अपनी इज्जत की परवाह नही की, वह दूसरे की इज्ज़त की परवाह क्यो करने चला ?
(उतारने का मतलब इज्जत उतार लेने से है।)

जब आंखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है

(१) आपस मे मिलने पर प्रेम उत्पन्न हो ही जाता है। अथवा
(२) मिलने पर लिहाज़ करना ही पडता है।

जब आया देही का अत, जैसा गदहा वैसा सत

मृत्यु के लिए सब बराबर हैं।

जब आवे बरसन का चाव, पछवा गिने न पुरवा बाव, (कृ०)

बरसनेवाले बादल बरसकर ही रहते है, फिर चाहे पश्चिम की हवा चले या पूरब की।
(वैसे पश्चिम की हवा चलने पर ही वर्षा होती है।)

जब ऐसे हो, तब ऐसे हो

जब तुम्हारे ऐसे (बुरे) कर्म है, तभी तुम्हारी ऐसी (बुरी) दशा है।

जब करी आस, तब आए तेरे पास

तुमसे आशा करके ही हम आए हैं।
('जब करे आस, तब आये तेरे पास' इस प्रकार भी यह कहावत सुनी जाती है।)

जब चने थे तब दात न थे, जब दात हुए तब चने नहीं

साधनो के रहते उनका उपयोग नही किया जा सका और जब उनका उपयोग करने के योग्य हुए, तब साधन नही।

जब जैसा, तब तैसा

जब जैसा समय हो, तब तैसा ही काम करना चाहिए।

जब तक ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं आता, तब तक वह जानता है 'मुझसे ऊचा कोई नहीं'

जब तक किसी मनुष्य का अपने से अधिक योग्य व्यक्ति से मुकाबला नही पडता, तब तक वह अपने को ही सबसे बडा समझता है। अधेरे मे रहना।

जब तक करू 'बाबू, बाबू', तब तक करू अपने काबू, (स्त्रि०)

जब तक 'बाबू, बाबू' अर्थात खुशामद करती रहती हू, तब तक वह मेरे काबू मे रहता है।

जब तक गगा जमुना बहे

जब तक पृथ्वी रहे।

जब तक चांद सूरज है

जब तक यह सृष्टि है।
(ऊपर के दोनो वाक्य आशीर्वाद देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।)

जब तक जीना, तब तक सीना, (स्त्रि०)
जब तक आदमी जिंदा रहता है, तब तक उसे ससार के कामो मे लगा ही रहना पडता है।

जब तक तगदस्ती है, परहेज़गारी है
आर्थिक कठिनाई जब तक रहती है, तब तक आदमी सयम से काम लेता है।

जब तक दम है, तब तक ग़म है
जीवन मे एक न एक दुख लगा ही रहता है।

जब तक पहिया लुढ़कता है, तभी तक गाड़ी है
(१) जब तक कोई वस्तु काम मे आती रहे, तभी तक उसके नाम की सार्थकता है। अथवा (२) अवसर का उपयोग कर लेना चाहिए। (पहिए का लुढकना बद होने पर गाडी, फिर निकम्मी हो जाएगी, उससे काम नही लिया जा सकेगा।)

जब तक पहिया लुढके, लुढ़काए जाओ
जब तक भी काम चलता रहे, चलाते रहना चाहिए। बीच मे थककर मत बैठो।

जब तक बहू कुंआरी, तब तक सास बारी। बहू आई गोद में, लाड़ गया हौद में। (स्त्रि०)
जब तक बहू पुत्रवती नही होती, तभी तक सास का उस पर लाड-प्यार रहता है। पुत्रवती होने पर वह प्यार लडके पर केंद्रित हो जाता है।

जब तक रकाबी मे भात, तब तक मेरा तेरा साथ
स्वार्थमय प्रेम।

जब तक सास, तब तक आस
(१) सास जब तक रहती है, तब तक (मरणासन्न आदमी के) जीवित रहने की आशा भी रहती है। (२) आशा अन्त तक मनुष्य का साथ नही छोडती या अन्त तक आशा रखो।

जब तीर छट गया, तो फिर कमान मे नहीं आ सकता
(१) मुह से निकली बात फिर लौट नही सकती। इसलिए सोच-विचार कर बात करे।
(२) एक बार जो काम हो जाता है, वह फिर व्यर्थ नही जा सकता।

जब तू न्याय की गद्दी पर बैठे तो अपने मन से तरफ़दारी, लालच और क्रोध को दूर कर
स्पष्ट। नीति वाक्य।

जब तेरे पेट मे खुड्डिया लगे, तब मीठा ओर सलोना क्या रे?
भूख मे मीठा और नमकीन सब बराबर।
खुड्डिया=क्षुधा।

जब दात न थे, तब दूध दियो, जब दांत भये का अन्न न देयगो
गरीबी मे ईश्वर पर भरोसा रखने के लिए कहा गया है।

जब दिन आए भले, तब लड्डू मारे, चले, (पू०)
अच्छे दिन आने पर लड्डू अपने-आप खाने को मिलने लगते है। किसी भाग्यवादी का कथन। ('मारना' एक मुहा० है, जिसका अर्थ बिना परिश्रम के बहुत सी चीज प्राप्त करना होता है।)

जब दिया दिल तो फिर अन्देशा-ए रुसवाई क्या?
जब प्रेम ही किया, तो फिर बदनामी का क्या डर?

जब देखो तब नाज़िर मियां नत्थू का टाला
जब देखो तब मियां नत्थू मौजूद।
(ऐसे मुफ्तखोरे के लिए क०, जो हमेशा दरवाज़े पर आ जाया करता हो।)
टाला=आना-जाना, घूमना।

जब देना होता है, तो छप्पर फाड़कर देता है
ईश्वर को जब देना होता है, तब वह देने का रास्ता निकाल ही लेता है। भाग्यवादी की उक्ति।

जब नटनी बास पर चढ़ी, तो घूघट क्या?
जब किसी काम को करने पर उतारू ही हो गए, तो फिर उसमे सकोच से क्या लाभ?
(नटनी यानी नट की स्त्री बास पर चढकर तरह-तरह की कलाबाजिया दिखाती है। अब यदि वह घूघट में अपना मुह छिपा ले, तो फिर खेल कैसे दिखाएगी?)

जब नाचने निकली, तो घूघट क्या?
दे० ऊ०।
(इस कहावत का भाव भी लगभग ऊपर की कहावत जैसा ही है। पर मुहावरे मे नाचने का अर्थ निर्लज्ज

वनकर काम करना भी होता है। इसलिए यहा उसका यह अभिप्राय लगाना अधिक ठीक होगा कि किसी वुरे काम को भी करने का इरादा यदि किया, तो उसे अच्छी तरह ही करना चाहिए।)

जव प्रजा नहीं, तो राजा कहा ?

प्रजा से ही राजा होता है।

जव फेंको तब पाच तीन

जव पांसा फेंकते हैं, तव पाच और तीन ही पडते हैं। किसी काम मे हमेशा सफल होना।

(चौसर के खेल मे पाच और तीन के पासे अच्छे माने जाते हे। उनसे गोटो के चलने मे सुभीता होता है।)

जव विगड़े जव सुघड़ नर, क्या विगड़ेगा कूढ़।
मट्ठे का क्या विगड़ना, जव विगड़े जव दूध।

जव विगटला है, तव चतुर आदमी ही विगडता है। मूर्ख क्या विगडेगा। मट्ठा नही विगडता, जव विगडता हे, तव दूध ही विगडता है।

जव भये सौ, तव भाग गया भय, (व्य०)

कर्ज की रकम सौ पर पहुंच जाने पर अविक चिन्ता नही रहती। (तव फिर साहूकार को ही फिक्र रहती है कि वह किसी तरह वसूल हो जाए।)

जव भाजन की होय लुगाई,
तोरे कोट और फादे खाई।

दुराचारिणी को वुरे मार्ग पर जाने से कोई रोक नही सकता।

जव भी तीन और अव भी तीन, जव पाए तव तीन ही तीन

स्थिति मे कोई परिवर्तन न होना।

जव भूख लगी भड़ुवे को, तदूर की सूझी,
और पेट भरा उसका तो फिर दूर की सूझी, (स्त्रि०)

(१) स्त्री का अपने निकम्मे पति के संवध मे कहना।

(२) दिखावटी प्रेम करना।

जवर की जोय महतारी होय, निवल की जोय मेरी साली, (पू०)

जवर्दस्त की स्त्री को मा समझते हैं, और कमज़ोर की स्त्री को साली वनाते है।

निवल को सव सताते है।

जवर्दस्त का ठेंगा सिर पर

जवर्दस्त के आगे सवको दवना पडता है।

जवर्दस्त की वीसों विस्वा

जवर्दस्त की सव वात ठीक।

विस्वा=वीघे का वीसवा भाग।

'वीसो विस्वा' एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ है निश्चित, निस्सन्देह, सही।

जवर्दस्त की लाठी सिर पर

दे०—जवर्दस्त का ठेंगा ।

जवर्दस्त मारे और रोने न दे

जवर्दस्त कमजोर को हर तरह से दवाता है।

जवर्दस्त सवका जवाई

मव उससे दवते हैं।

जव लग पैसा गाठ मे, तव लग उसका भार।
साईं इस संसार मे, स्वारथ का व्यौहार।

स्पष्ट।

जव लग साकी, तव लग आस

स्पष्ट।

साकी=(१) वह जो दूसरो को शराव पिलाता है।

(२) प्रेमिका या प्रिय के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शव्द।

जव लागी चाट, तव सूझी हलवाई की हाट

चटोरे के लिए क०।

जव ले सखा के भाव आई, तव ले पूत के आखी जाई, (पू०)

जव तक ओझा के सिर देवता आएगी, है, तव तक लडके की आखे ही चली जाएगी। मतलव—जव तक सहायतार्थ प्रतीक्षा करेंगे, तव तक काम ही विगड जाएगा।

(कुछ ममय पहले तक ग्रामीण जनता अज्ञान के कारण मावारण रोगो को चिकित्मा के लिए भी झाट-फूक और टोना-टोटका की शरण लिया करती थी। ओझा या गुनिया के मिर देवता आते थे, और वह जैमा कहता था, वही किया जाता

था। कहावत उसी प्रथा पर आधारित है। किसी के लडके की आखो मे दर्द है। पर ओझा के सिर देवता आने मे देर हो रही है। तब उपर्युक्त बात उसने कही।)

जब लौं कुठला मे नाज, तब लो जलहट्टू को राज, (पू०)

साधारण आदमी के पास जब तक खाने को रहता है, तब तक वह किसी की परवाह नही करता।

जब सती सत पर चढ़े, तो पान खाना रस्म है।
आबरू जग मे रहे, तो जान जाना फ़र्ज़ है।

सती जब अपने पति के साथ चिता मे जलने लगती है, तो उसे पान खाने को मिलता है। ससार मे प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए प्राण भी देना पडे, तो कोई बात नही।

जब सब पनहारी तो पनहारी कहाई

जब और सब काम करके हार गई, तब पनहारी बनी। पनहारिन की निंदा।

जब से उगे बाल, तब से यही हवाल, (स्त्रि०)

जब से बडे हुए, तब से यही हाल है। प्राय बुरे लड़के के लिए क०।

जबान के आगे लगाम जरूर चाहिए

मुह से बात सभालकर निकालनी चाहिए।

जबान के आगे लगाम नहीं

जब कोई न कहने योग्य बात कहे, तब क०।

जबान के नीचे जबान है

दो भिन्न प्रकार की बात करना।

जबान क्या चली, दो हल चल गये

जो मन मे आए सो कह दे, उसके लिए क०।

जबान जने एक बार, मा जने बार-बार

जबान से जो बात निकली सो निकली, उसे पलटना नही चाहिए।

जबान मत फेरो

कही हुई बात की रक्षा करो।

जबान शीरीं, मुल्कगीरी, जबान टेढ़ी, मुल्क बांका

मीठी बोली से आदमी सबको वश मे कर लेता है। कडुवे वचन बोलने वाले के सब शत्रु बन जाते हैं।

ज़बान से खदक पार

डीग हाकनेवाले के लिए क०। केवल बातो से ही खदक पार।

ज़बान से बेटा-बेटी पराये होते है

जबान देकर बदलना नही चाहिए। जिसे जबान दे देते है, उसी के यहा लड़के-लड़की का सम्बन्ध करते हैं।

जबान ही हलाल है, ज़बान ही मुरदार है

जीभ ही न्याय करती है और जीभ ही अन्याय।

ज़बान ही हाथी चढावे, ज़बान ही सिर कटवावे

बातो से ही हाथी चढने को मिलता है, और बातो से ही आदमी मारा भी जाता है। इसलिए बात सोच समझकर करना चाहिए।

(बातो हाथी पाइये, बातो हाथी पाव।)

जबानी जमा खर्च बताना

कोरी बात करना।

जमना किनारे घर किया, कर्ज़ काढ के खायं।
जब आवे कोई मांगने, गडप जमुना मे जाय।

जो उधार लेकर खाए और न दे, उसके लिए क०।

जम से बुरी जनेत, (हिं०)

बराती यम से भी बुरे होते है, क्योकि लडकीवाले को उनपर खर्च करना पडता है।

जमात करामात

सगठन मे ही बल है।

जमा लगै सरकार की और मिरजा खेलें फाग

दूसरे के पैसे पर मौज करना।

जमींदार की जड़ हरी

ज़मीदार हमेशा मौज करता है।

ज़मींदार को किसान, बच्चे को मसान

ज़मीदार के लिए किसान वैसा ही है, जैसा बच्चो के लिए प्रेत।

(मसान एक प्रेत होता है।)

ज़मींदारी दूब की जड

हमेशा फलती-फूलती रहती है।

दूब=एक घास, जो बहुत फैलती है।

ज़मीन आसमान के कुलावे मिलाते हैं

बहुत बातूनी या झूठे के लिए क०।

ज़मीन सख्त और आसमान दूर है
कहा जाकर शरण लू ? किसी विपदग्रस्त का कथन।

ज़र का जायल करना जी मे जी मरना है
धन को बर्बाद करना जीते-जी मरना है।

ज़र का ज़ोर पूरा है और सब अधूरा है
पैसे का वल ही वड़ा वल है।

ज़र का तो ज़र्रा भी आफताव हे, वेज़र की मट्टी खराव है
धन का तो एक कण भी सूर्य के समान हे, धनहीन की वर्बादी होती है।

ज़र को ज़र ही खेंचता है
धन से धन पैदा होता है।

ज़र गया ज़र्दी छाई, ज़र आया सुर्खी आई
विना पैसे के आदमी उदास नजर आता है, पैसे से खुश दिखाई देता हे।

ज़र, ज़मीन, ज़न, झगडे की जड़
जव झगडा होता है, तव सपत्ति, जमीन और स्त्री को लेकर।

ज़र, ज़ोर खुदादाद है
धन और वल ईश्वर की देन है। भाग्यवादी का कथन।

ज़रदार का सौदा है, वेज़र का खुदा हाफिज़
धनी ही हर चीज खरीद सकता है, धनहीन का तो ईश्वर मालिक है।

ज़र दीजे हज़ार मगर दिल न दीजे, उलफत बुरी बला है, किसी से न कीजे
रुपया दे दे, पर दिल न दे। प्रेम बुरी चीज़ है, किसी से न करे।

ज़र नेस्त इश्क टें-टें
विना पैसे के इश्क नही होता।

ज़र फैलाया और कार वराया
पैसा खर्चा और काम वना।

ज़र वल न ज़ोर वल
(१) न धन-वल, न शरीर-वल।
(२) धन-वल ही सच्चा वल है, शरीर का वल उसके सामने कुछ नही।

ज़र हज़ार जेव लगाता है, वेज़र विगड़ा नज़र आता है
धन से हजार काम समलते हे, धनहीन विगडा नजर आता है।

ज़र है तो नर है, नही तो खडहर है
पैसे के विना कोई नही पूछता।

ज़र है तो नर है, नहीं तो पंछी वेपर है
पैसे से ही आदमी का महत्व वढता है।

ज़रा ज़रा-सा कर लिया, और अपना पल्ला भर लिया
थोडा-थोडा सचय करने से वहुत हो जाता है।

ज़रा न ज़द्दर, गाठ मेरी भरपूर
पास मे कुछ नही ? और कहते है मैं मालदार हू।
ज़द्दर=सपत्ति।

ज़रा-सा खावे बहुत वतावे, वह है वहू सुघड़ैली।
वहुत खावे कम वतलावे, वह वहू अड विगडैली।
जो वहू थोडा खाए और वहुत वताए, वही सुघड है, जो वहुत खाए और थोडा वताए, वह विगडैल है।

ज़रा-सा मुंह वडा-सा पेट
वहुत खाऊ या द्वेप रखनेवाले लडके के लिए क०।

ज़रा-सा मुंह वडी बातें
लडके के लिए क०।

जरे जायें, सूझे सुक्कर, (पु०)
मरने जा रही है, फिर भी शुक्र देख रही है। (शुक्र एक अशुभ ग्रह माना जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि पति के साथ चिता मे जलने जा रही है, किन्तु शुभ-अशुभ नक्षत्र की चिन्ता कर रही है।)

जलते की जाई, गरीव के गले लगाई
अभागे की लडकी गरीव को व्याही।
जैसे को तैसा मिलना।

जलमय भगवान है
स्पष्ट।

जल मे खडी प्यासो मरे, (स्त्रि०)
अभाव न होते हुए भी कष्ट भोगना।

जल मे बसे कमोदनी, और चंदा बसे अकास।
जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास।
स्पष्ट।

जल में मछली, नौ-नौ कुटिया बखरा
मछली अभी पानी मे है फिर भी लोग उसे नौ नौ टुकडे करके आपस मे बाट रहे है।
काम पूरा हुआ नही, फिर भी हिस्सेदार अपना हिस्सा लगा रहे है।

जल सूर बामन, रनसूर छत्री, क़लम सूर कायथ, गंड सूर खत्री
ब्राह्मण नहाने मे, क्षत्रिय लडाई मे, कायस्थ कलम चलाने मे बहादुर होता है। खत्री कायर होता है। यह सब धारणाए है, जिनका आधार तो होगा ही, पर चिर-सत्य नही।

जलाने को फूस नहीं, तापने को कोयला
ऊंचा दिमाग रखनेवाले को क०।

जले को जलाना, नमक-मिर्च लगाना
पीड़ित को और कष्ट देना।

जले घर की बलेंडी
ऐसा व्यक्ति जो परिवार मे अकेला बचा हो।
बलेंडी=वह लबी लकडी, जिसके सहारे छप्पर रखा जाता है।

जले पराई धी और हंसे बटाऊ लोग
दूसरे की हानि होते देख प्रसन्न होना।
धी=लड़की। बटाऊ=राहगीर।

जले पाव की बिल्ली, (स्त्रि०)
ऐसी स्त्री जो लडाई-झगडा करती फिरे।

जले फफोले फोड़ते है
किसी पर अपना गुस्सा उतारना, कोसना, गाली देना।

जलेबियों की रखवाली और चोट्टी कुतिया
अविश्वसनीय आदमी को किसी चीज़ की रखवाली का काम सौप देना।

जले हुए तो पत्थर मारा करते है
ईर्ष्या-द्वेष से कुढा बैठा आदमी पत्थर तो फेंकेगा ही। मतलब किसी न किसी तरह अपना गुस्सा उतारेगा ही।

जले हुए यो ही कहा करते है
स्पष्ट। दे० ऊ०।

जवान जाय पताल, बुढ़िया मांगे भतार, (पू०)
जवान तो मरी जा रही है और बुढिया ब्याह किया चाहती है। असगत बात पर क०।

जवान डरावे भागने से, बूढा डरावे मरने से
स्पष्ट।

जवान रांड, बूढे साड़
दे०—जवान जाय पताल...।

जवानी और उस पर शराब, दूनी आग लगती है
स्पष्ट।

जवानी दीवानी
जवानी मे आदमी पागल हो जाता है। उसे अच्छा-बुरा नही सूझता।

जवानी मे गधे पर भी जोबन होता है
युवावस्था मे कुरूप मनुष्य भी सुन्दर लगता है।

जवानों को चला-चली, बुढ़िया को ब्याह की पडी
उल्टा काम।

जवाब तुर्की-बतुर्की
जैसे को तैसा जवाब।

जवाबे जाहिलां बाशद खामोशी (फा०)
मूर्ख की बात का जवाब मौन है।

जस किया तस पाया
जैसा किया, वैसा फल मिला।

जस केले के पात में, पात पात मे पात।
तस ज्ञानी की बात मे, बात बात मे बात।
केले के पौधे मे पत्ते ही पत्ते होते है, उसी प्रकार बना हुआ ज्ञानी कोरी बाते करता है।

जस दूलह तस बनी बराता
जैसा आदमी वैसे ही उसके साथी भी।

जस मुकुंद तस पावल घोड़ी, विधना आन मिलावल जोडी
जैसे मुकुद है, वैसी ही उन्हे घोडी भी मिल गई। ईश्वर ने स्वयं आकर जोडी मिलाई। जैसा आदमी

वैसा ही उसका साज-सरजाम या साथी भी हो, तब क०। दे०—जस दूलह . .।

जहा का मुरदा तहां ही गोर

जहा का मुरदा होता है वही गडता है। जहा की चीज वही ठिकाने लगती है।

जहा कुत्ता होता है, वहां नेकी का फरिश्ता नहीं आता

स्पष्ट।

मुसलमानो का एक विश्वास।

जहां के मुरदे तहा ही गढते हैं

स्पष्ट।

दे०—जहा का मुरदा . . .।

जहा खर्च नहीं, वहा हर एक गाठ का पूरा

जहा पैसे की जरूरत नही, वहा हरेक की जेब भरी रहती है—जहा जरूरत होती है, वहा जेब खाली हो जाती हे।

जहां खाना, वहा सबका ठिकाना

जहा आदमी की गुजर-बसर हो, वही उसका ठिकाना भी समझना चाहिए।

जहा गंग, वहा रग

गगा-स्नान करनेवाले का कहना कि गगा के साथ रग भी है।

जहां गंज वहा रंज

जहा पैसा होता है, वहा परेशानिया भी बहुत होती है।

गज=ढेर, धनराशि।

जहां गढा होगा, वहा पानी भरेगा

अर्थात कीचड होगा। गोसाई तुलसीदास जी ने कहा हे—

अतहु कीच तहा जह पानी।

जहाँ गुड़ होगा, वहां मक्खियां आयेंगी

जहा पैसा होगा, वहा खाने-पीनेवाले भी पहुचेगे।

जहां जाय भूखा, वहा पडे सूखा

दुखिया को सब जगह दुख है।

जहा जायें बाले मिया, तहां जाये पूंछ

जब कोई हमेशा किसी के साथ लगा रहता है, तब क०।

जहा जिसके सींग समायें, वहा निकल जायें

जहा जिसकी गुजर हो, वहा चला जाए, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

जहा डर, वहा हमारा घर

निडर का कहना।

जहा ढाक वहा डाकू

ढाक के जगल मे डाकू ज्यादा रहते है।

जहा तुम्हारा पसीना गिरे, वहा हम खून गिरायें

मतलब—तुम्हारा अच्छी तरह साथ देंगे।

जहा दल, तहां बादल

जहा लोगो की भीड़ होती है, वही धूल उडती है।

जहा देखी रोटी, वहा मुडाई चोटी, (स्त्रि०)

जिससे कुछ मिलने की आशा हुई, उसी के चेला बन गए अथवा उसी की खुशामद करने लगे।

जहा देखें गुना पुड़ी, तहा जायें लुरही लुरही, (स्त्रि०)

जहा खाने-पीने का डौल देखा, वही पहुच गये। गुना=एक तरह का पकवान, जो प्राय व्याह मे बनता है।

जहा देखे तवा-परात, वहा गावे सारी रात, (स्त्रि०)

स्पष्ट।

दे० ऊ०।

जहा न जाको गुन लहे, तहा न ताको ठाव।
धोबी बमकर क्या करे, दिगबरन के गाव।

जहा अपने गुण की कद्र करनेवाला कोई न हो, वहा नही रहना चाहिए।

जहां न जाए सुई, वहा भाला घुसेड़ते हैं

(१) गुजाइश से अधिक की आशा करना।

(२) अतिशयोक्ति से काम लेने पर भी क०।

जहां पडे मूसल, वहां खेम कूसल

जहा मूसल से अनाज कुटता रहे, वही समझो क्षेम-कुशल है।

जहा बड़ी सेवा, तहा ओछे फल

जहा बहुत खुशामद करनी पडती है, वहा नतीजा भी कुछ अधिक अच्छा नही निकलता।

जहां बहू का पसीना, वहीं ससुर की खाट

एक आपत्तिजनक बात।

(हिन्दू घरो मे वहू ससुर से परदा करती हे। तव जहा ससुर लेटा है, वहा बैठकर वह पीसेगी कैसे ?)

जहा वालक तहा पेखना, जहा गोरस तह घोर।
जहां राजा मिठ बोलना, वसें घनेरे लोग।

जहा वालक होते है वही खिलौने भी होते है, जहा दही होता है, वही दही का शर्वत भी होता हे, जहा राजा मिष्टभाषी होता है, वही अधिक लोग वसते हैं।

जहा वालों का बैठना, वहा भूतो का वास

दे०—जहा वहू का पीसना ।

(कहावत का यह अभिप्राय भी हो सकता है कि जहा वालक होते हे, वही प्रेतवाधा भी अधिक होती है।)

जहा मुरगा नहीं होता, वहा क्या सवेरा नही होता ?

किसी के विना कोई काम रुका नही रहता।

जहा रुख नही, तहा अ ड रुख

जहा कोई विद्वान, गुणवान या धनी व्यक्ति नही होता, वहा वहुत कम विद्या, गुण या धनवाला व्यक्ति ही वडा माना जाता है।

जहा सेर, वहां सवैया

थोडे के लिए कोई काम क्यो विगडे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

जहा सौ, वहा सवा सौ

दे० ऊ०।

जहाज का कौवा

जिसका कही ठिकाना न हो, जो घूम-फिरकर अपनी ही जगह पर आए, उसके लिए क०।

जाओ नेपाल, साथ आये कपाल, (पू०)

(१) कही भी जाओ, भाग्य साथ नही छोडता।
(२) अकर्मण्य कही कुछ नही कर सकता।

जाओ पूत दक्खिन, वही करम के लच्छन, (स्त्रि०)

दे० ऊ०।

मा का अपने निकम्मे लडके से क०।

(गुजराती मे भी कहते है—अखण गया दख्खण गया, पण लख्खन नहि गया।

जाकी आछी सास, वाका हो घर वास।
जाकी सास नकारा, वाका नही गुजारा। (स्त्रि०)

जिसकी सास अच्छी, वही सुखी रहती है, जिसकी सास वुरी, वह दुख भोगती हे।

जाके कारन पहरी सारी, वही टाग रही उघारी (स्त्रि०)

जिस कष्ट से वचने (या लाज-शरम को ढकने) के लिए इतनी झझट मोल ली, वह ज्यो का त्यो ही बना रहा।

(साडी पहिनने से मतलव व्याह करने से है।)

जाके पास रहिए, ताही की-सी कहिए

जिसके पास रहे, उसी का पक्ष लेना चाहिए।

जाको जां स्वारथ सधे, सोई ताह सुहात।
चोर न प्यारी चांदनी, जैसे कारी रात।

जिस चीज से जिसका काम वनता हे, उसे वही अच्छी लगती हे फिर वह वुरी ही क्यो न हो।

जाको जौन स्वभाव, जाय नही ज्यू से।
नीम न मीठा होय, सीच गुड़ घ्यु से।

कितना ही उपाय क्यो न करो, किन्तु जिसका जो स्वभाव हे, वह नही मिटता।

जाको डडा ताकी गाय, मत करो कोई हाय-हाय

जमाना ताकतवाले का है, इसके लिए हाय-हाय करना व्यर्थ है।

जाको राखे साइया, मार न सक्के कोय

ईश्वर जिसका रक्षक हे, उसका कोई कुछ नही विगाड सकता।

जाको राम रच्छक, ताको कौन भच्छक, (हि०)

स्पष्ट। दे० ऊ०।

भच्छक=भक्षक। मारनेवाला।

जाको लोह, ताको सोह

(१) जिसका हथियार, उसी को शोभा देता है।
(२) जिसके हाथ मे हथियार हे, उसी का सव कुछ हे।

जाग जगन्ते पहरुवा, लाग लगन्ते और

पहरुए पहरा देते रहते है, पर काम करनेवाले तो दूसरे होते है, जो अपना मतलब गाठ ले जाते है।

ज़ामिन मत हो चोर का और सींग पकड़ मत ढोर का
स्पष्ट।

ज़ामिन होना, धन का खोना
स्पष्ट।

ज़ामिनी पोदनी की क्या
किसी छोटे आदमी की जमानत देना ठीक नही। पोदनी=एक छोटी चिडिया।

जाय ईमान, रहे सब कुछ
(१) अगर और सब बचता है, तो ईमान जाने दो।
(२) ईमान ही साथ जाता है और सब यही छूट जाता है।
(३) स्वार्थी के लिए भी कह सकते है, जो ईमान की परवा नही करता।

जाय उस्ताद खाली
उस्ताद की नजर से कोई गलती चूक जाए, यह कैसे हो सकता है? व्यग्य मे क०।

जायगा साहू का, रहेगा साहू का
नफा, नुकसान मालिक का होगा, मैं क्या करू?

जाय जान, रहे ईमान
स्पष्ट।

जाय लाख, रहे साख, (व्य०)
भले ही लाखो वर्वाद हो जाएं, पर अपनी साख वनाए रखना चाहिए।

ज़ालिम का ज़ोर सिर पर
अत्याचारी के आगे किसी की नही चलती।

ज़ालिम का पैंड़ा ही निराला है
अत्याचारी के काम समझ मे नही आते।

ज़ालिम की उम्र कोता
अत्याचारी की उम्र कम होती है, क्योकि न मालूम लोग कव उसे मार डाले।
कोता=कोताह, छोटा।

ज़ालिम की जड़ भी उखड जाती है
अत्याचारी का भी अत मे नाश हो जाता है।

ज़ालिम की रस्सी दराज़ है
अत्याचारी अधिक दिनो जीता है, क्योकि उसे मारना कठिन होता है।

जासे जाको काम, सोई ताको राम
जिसका-जिसका काम पडता रहता है, वही उसके लिए ईश्वर तुल्य है।

ज़ाहिद का क्या खुदा है, हमारा खुदा नहीं?
ईश्वर सबका है।
जाहिद=सत।

ज़ाहिर आबाद, वातीन खराब
देखने में भला, पर वातचीत मे वुरा।

ज़ाहिर रहमान का, वातीन शैतान का
देखने में ईश्वर का भक्त, पर वातो मे शैतान का चेला।

ज़ाहिल फ़क़ीर शैतान का टट्टू
मूर्ख साधु के सिर पर हमेशा शैतान सवार रहता है।

जाही ते कुछ पाइये, करिये ताकी आस
जिससे कुछ मिल सकता हो, उसी की आशा करनी चाहिए।

जिगर-जिगर है, दिगर-दिगर है
अपना-अपना है, और पराया-पराया।

जिजमान चाहे स्वर्ग को जाये, चाहे नरक को; मुझे दही-पूडी से काम
केवल अपना स्वार्थ देखना।
(हिन्दुओं मे मृतक के क्रिया-कर्म के लिए जो ब्राह्मण आता है, और जिसे विशेष रूप से दान-दक्षिणा तथा भोजन से तृप्त किया जाता है, उसका कहना कि हमे तो पकवान खाने से मतलव, मरनेवाला चाहे स्वर्ग जाए चाहे नरक। पुरोहित को पता हे कि उसे क्या मिला, वाकी किसी को कुछ भी मिले।)

जिठानी का भैंसा अगड़धोंधो
जिठानी का भैंसा भी खूब तगडा रहता है।
(क्योंकि घर मे उसी की चलती है।)

जितना ऊपर, उतना नीचे
सव तरह से चालाक, पूरा चालाक। जैसे आठो गाठ कुम्मैत।

जितना करम मे लिखा है, उतना मिलेगा
स्पष्ट।

जितना गरमायेगा, उतना ही बरसेगा (कृ०)
बादल जितना गरमाता है, उतना ही बरसता है।

जितना गुड़ डालेंगे, उतना ही मीठा होगा
(१) जितना अधिक पैसा खर्च किया जाएगा, चीज उतनी ही अच्छी मिलेगी।
(२) जितनी ज्यादा मजदूरी दी जाएगी, काम उतना ही अच्छा होगा।

जितना छानो, उतना ही किरकिरा
जितनी जाच-पडताल करोगे, उतने ही अधिक दोष निकलते आएगे।

जितना छोटा, उतना ही खोटा
स्पष्ट।

जितना तपेगा, उतना बरसेगा; (कृ०)
दे०—जितना गरमायेगा . ।

जितना देगा, उतना पाएगा
दिया व्यर्थ नही जाता ।

जितना मडवे में आवेला, उतना कोहवर मे न आवे; (पू०)
मडप के नीचे जितने लोग बैठते है, उतने कोहवर मे नही जाते।
(कोहवर=वह स्थान, जहा विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते है। इस स्थान पर घर के खास-खास सगे सबधी ही बैठते है। कहावत मे केवल एक लोकप्रथा की ओर सकेत है। फिर भी उसका यह भाव भी हो सकता है कि सब स्थान सब आदमियो के बैठने योग्य नही होते।)

जितना रला है सो चुगलो, (पं०)
जो तुम्हारा है सो ले लो और उसी मे सतोष करो।

जितना सयाना, उतना दीवाना
जो जितना चतुर होता है, वह उतना ही परेशान भी होता है।

जितना सस्ता, उतना खराब
सस्ती चीज़ खराब होती है।

जितना सांप लंबा, उतना ही गोह चोड़ी
कोई किसी बात मे बढकर है, तो कोई किसी बात मे। दोनो एक से (धूर्त)।

जितनी आमद, उतना लोभ
आमदनी के हिसाब से लोभ भी बढता जाता है।

जितनी आमदनी, उतना खर्च
स्पष्ट।

जितनी चादर देखो, उतने ही पैर पसारो
सामर्थ्य के अनुसार ही खर्च करना चाहिए।

जितनी दौलत उतनी ही मुसीबत
स्पष्ट।

जितनी मियां की लंबी दाढ़ी, उतना गाव गुलज़ार
मिया की दाढी जितनी ही बढती है, उतना ही गाव को गुलज़ार समझना चाहिए।
भाव यह कि मिया को गाव मे मुफ्त का खाने को (मिल रहा है, जिससे उनकी दाढी अब चिकनी-चुपडी हो रही है, और उससे गाव की स्थिति का पता लगाया जा सकता है।)

जितना लाभ, उतना लोभ
स्पष्ट।

जितने काले, उतने बाप के साले
जितने शातिर या बदमाश हैं, वे सब मेरे बाप के साले हैं, यानी मेरी मुट्ठी मे है।

जितने घने, उतने भले
(१) अक्षर जितने घने लिखे जाए, उतने ही अच्छे लगते हैं। कहते भी हैं—घने अक्षर बेगरी पांत, सो जाने लिखने की भात।
(२) जितने लडके हो उतना ही अच्छा, यह भाव भी निकलता है।

जितने मुंड, उतने पिंड; (हिं०)
जितने लडके होंगे, पितरो का उतना ही अच्छा श्राद्ध होगा।

जितने मुह, उतनी ही बातें
(१) किसी एक बात का नाना प्रकार से कहा जाना।
(२) अफ़वाह फैलना।

जिधर जलता देखें, तिधर तापें
दूसरे की हानि से लाभ उठाना।

जिधर मौला, उधर आसफउद्दौला

ईश्वर की मर्जी के खिलाफ तो आसफउद्दौला भी नही जा सकते।

(आसफउद्दौला लखनऊ के प्रसिद्ध नवाब हो गए हे। वह बडे दानी थे। कहते हे, एक बार किसी फकीर ने उनके पास आकर एक हजार रुपए मागे। इस पर नवाब ने उसे दस रुपए देकर कहा—'तुम्हारे भाग्य मे इतना ही बदा हे।' फकीर ने जब रुपए लेने से इन्कार किया, तब नवाब ने कहा,—'कल आना।' दूसरे दिन फकीर के आने से पहले ही नवाब ने एक रुपयो की, और एक पैसो की थैली भरवाकर रख दी। फकीर आया और रुपए मागने लगा। नवाब ने उन दो थैलियो मे से एक उठा लेने को कहा। दुर्भाग्यवश फकीर ने पैसो ही की थैली उठा ली। नवाब ने तब कहा—'तुम्हारे भाग्य मे था, सो मिल गया।' उक्त कहावत इसी घटना पर आधारित है।)

जिधर रब, उधर सब

ईश्वर जिसका साथी हे, उसके सब साथी है।

जिनका मुह नही देखते, उनका पाव छूना पडता है

गर्ज पडने पर छोटे आदमियो के भी हाथ-पैर जोड़ने पड़ते है।

जिनकी बोली मे दगा, उनके दिल मे क्या दगा नही होगी?

कुछ लोगो मे पठानो के लिए कहा जाता है; क्योकि वे 'दगा दगा' बहुत कहा करते हे, जिसका अर्थ उनकी भाषा मे होता है 'इसको' 'इसको'। साथ ही दगा का एक अर्थ धोखा तो है ही।

जिनकी यहा चाह, उनकी वहा भी चाह

सज्जन पुरुषो की मृत्यु पर कहते है कि ईश्वर भी उन्हे चाहता हे और अपने पास जल्दी बुला लेता है।

जिनको चाव घनेरा, उनको दुख बहुतेरा

जिनको जितनी अधिक आकाक्षाए होती है, उनको उतना ही अधिक दुख भी होता हे।

जिन जाये, उन्ही लजाये

जिन्होने पैदा किया, उन्हे ही शर्मिन्दा किया। अयोग्य लडके के लिए क०।

जिन ढूढा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
बक विचारा क्या करे, रहे किनारे बैठ।

लाभ तभी होता हे, जब कुछ परिश्रम किया जाए और जोखम भी उठाया जाए।

(कबीर का प्रचलित दोहा इस प्रकार हे—
जिन ढूढा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
हौ बौरी ढूढन गई, रही किनारे बैठ।)

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार।
अब अलि रही गुलाब मे, अपत कटीली डार। (बिहारी)

जिन दिनो (तूने) वे (सुन्दर तथा सुगधित) फूल देखे थे, वह बहार (वसत ऋतु) तो बीत गई। हे भ्रमर! अब तो गुलाब के वृक्ष मे बिना पत्ते की कटीली डाल रह गई है।

इसलिए तू अपना दुख छोड दे और सुख की आशा मत कर।

(यह किसी ऐसी स्त्री पर, जो अपना यौवन खो चुकी है या किसी ऐसे मनुष्य पर जिसने अपना सर्वस्व खो दिया है, अन्योक्ति है।)

जिन पायन पनही नहीं, तिन्हें देत गजराज।
बिख देते बीखा मिले, साहब गरीबनेवाज।

ईश्वर बडे दयावान है। उनकी कृपा होने से ऐसे व्यक्ति को भी, जिसके पैरो मे जूते नही, हाथी बैठने को मिलता है और विष खिलाये जाने की जगह लडकी से विवाह होता है।

(कथा है कि किसी धनाढ्य सेठ के पास एक भिखारी नित्य भीख मागने आया करता था। उससे तग आकर सेठ ने अपने आढतिये को चिट्ठी लिखी कि इसे बिख (यानी विष) दे दो। आढतिये की लडकी का नाम बीखा या विषया था। इसलिए यह समझकर कि सेठ जी ने उसे ही देने के लिए लिखा है, उसने भिखारी का बडा आदर-सत्कार किया और अपनी कन्या का उसके साथ ब्याह करके उसे हाथी पर चढाकर विदा कर दिया।)

जिन चरहा हार चरौ, सौ कैसे चरें प्वार ? (कृ०)
जिन जानवरो ने हरी-हरी घास चरी है, वे भला सूखा प्वार कैसे चरेगे।
(सुख भोग चुकने के वाद दुख मुश्किल से भोगा जाता है।)
प्वार = धान का सूखा भुस।

जियत पिता की पूछी न वात,
मरे पिता को दूध और भात।
(१) कपूत के लिए क०।
(२) हिन्दुओ के श्राद्धकर्म पर भी व्यग्य।

जिये न मानें पितृ और मुए करें श्राद्ध
दे० ऊ०।

जिसका आड़ू विके, वह वधिया क्यो करे ? (व्य०)
जो चीज़ जिस हालत मे है, उसी तरह विक जाए, तो उसमे किसी तरह का परिवर्तन करके वेचने का कष्ट क्यो उठाया जाए ?
आड़ू = विना वधिया किया गया वैल।

जिसका काम उसी को छाजे।
ओर करे तो मूरख वाजे।
जिसका जो काम है, वह उसी को शोभा देता है।

जिसका खाइये अनपानी, उसकी कीजे अवादानी, (स्त्रि०)
जिसका अन्न खाए, उसकी भलाई चाहनी चाहिए।

जिसका खाइये, उसका गाइये
जिसका अन्न खाए, उसका पक्ष ले।

जिसका खून उसी की गर्दन पर
हत्या करने का पाप हत्या करनेवाले को ही लगता है।

जिसका गुइया नहीं उसका कूकुर गुइया, (स्त्रि०)
जिसका कोई मित्र नही, उसका कुत्ता ही मित्र। अर्थात कुत्ता मनुष्य का एक अच्छा मित्र है।

जिसका चिकना देखा फिसल पड़े
जहा कुछ मिलने का डौल देखा, वही खुशामद करने वैठ गए।
स्वार्थी और मुह देखी कहनेवालो के लिए क०।
जिसका चिकना देखा = जिसका चिकना मुह देखा, अर्थात जिसे मालदार देखा।

जिसका चुन्न, उसका पुन्न
दान मे जो खर्च करता है, उसी को पुण्य मिलता है
चुन्न = आटा।

जिसका चुयेगा, सो छवा लेगा
जिसका घर (वरसात मे) टपकेगा, सो आप छवाता फिरेगा।
(जिसे जो कष्ट होता है, वह आपही उसकी चिंता करता है।)

जिसका जावें वही चोर कहाये
पुलिसवाले जब चोर का पता नही लगा पाते, तव प्राय वे जिसका माल जाता है, उसी को चोर वनाते है। कहावत मे उनकी इस आदत को लेकर ही कटाक्ष किया गया है।

जिसका डर, वही नही घर, (स्त्रि०)
जब पति घर मे नही तो चाहे जो करे। परम स्वतन्त्र।

जिसका तेज, उसका भेज, (कृ०)
जवर्दस्त ही किराया या मालगुज़ारी (अथवा कर्ज) जल्दी वसूल कर पाता है।
भेज = पावना।

जिसका पल्ला भारी, वही झुके
(१) जिसके पास पैसा है, वही दे सकता है।
(२) भले आदमी को ही दवना पडता है।
(तराजू मे भारी पलडा ही झुकता है। वही मे रूपक लिया गया है।)

जिसका पाप, उसका वाप
पाप मनुष्य का वाप हे, अर्थात वह उसके सिर पर सवार रहता हे।

जिसका फिक्र, उसका जिक्र
जिस वात की चिन्ता रहती है, उसकी चर्चा भी की जाती है।

जिसका वनिया यार, उसको दुश्मन की क्या दरकार
वनियो पर ताना।

जिसका मड़वा, उसका गीत; (स्त्रि०)
परिस्थिति के अनुसार ही काम किया जाता है।
मडवा = मडप, विवाह।

जिसका यार कोतवाल, उसे डर काहे का

पुलिसवालो पर व्यग्य। कोतवाल का, जो एक पुलिस अफसर होता है, सब जगह बडा रोब रहता है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।

जिस कारन पहनी सारी, वही टाग रही उघारी

जिस उद्देश्य से किसी काम को करने का कष्ट उठाया, वही पूरा नही हुआ। सुख से जीवन बिताने के लिए विवाह किया, पर कपडे भी पहिनने को नही मिले।

जिस कारन मूंड मुड़ाया, सो दुख आगे आया

जिस दुख से पीछा छुडाने के लिए हानि सहकर कोई काम किया, उस दुख से फिर भी पीछा नही छूटा। (कोई मनुष्य मजदूरी करके अपना पेट पालता था। पर नित्य प्रति कठिन परिश्रम करना उसे वहुत खलता था। इसलिए सिर मुडाकर साधु हो गया। उसका खयाल था कि साधु वन जाने पर कोई परिश्रम नही करना पडेगा। पर दरवाजे-दरवाज़े जाकर भीख मागना उसे और भी कठिन जान पडा और तव उसने उक्त वाक्य कहा।)

जिसकी आख मे तिल, वह बड़ा बेसिल

जिसकी आख मे तिल होता है, वह वडा वेमुरौव्वत होता है।

(यह एक विश्वास है जिसका सच होना जरूरी नही।)

बेसिल = शीलहीन, हृदयहीन।

जिसकी खइये चदिया, उसकी हूजिये बंदिया, (स्त्रि०)

जिसका खाए उसकी तावेदारी करे।

चदिया = रोटी।

जिसकी गोद मे बैठे, उसकी दाढी नोचे

कृतघ्न के लिए क०।

जिसकी जीभ चलती है, उसके नौ हर चलते हैं

लवी-चौडी हाकनेवाले की सव वात सच।

जिसकी जूती, उसी का सिर

किसी की खातिर उसी के पैसे से करना या किसी की कही वात से खुद उसी को परास्त कर देना।

जिसकी जोरू अदर, उसका नसीवा सिकंदर

अग्रेजो के जमाने मे मेहतर लोग आपस मे कहा करते थे। तात्पर्य यह कि जिस मेहतर की औरत आया वनकर अग्रेज के घर घुस गई, उसकी तकदीर खुल गई।

जिसकी तेग, उसकी देग

जिसके हाथ मे ताकत है, उसी की सव चीज।

तेग = तलवार।

देग = भोजन पकाने का वर्तन।

जिसकी देग, उसकी तेग

जिसके पास खाने को हे, उसी की फतह होती है। (सिपाही उसी की मदद करते हैं।)

जिसकी न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई ?

वह दूसरे के उस कष्ट को नही समझ सकता, जिसे स्वय वह कष्ट नही हुआ।

बिवाई=एक पीडा, जिसमे जाडे के दिनो मे पैरो के तलुए का चमडा फट जाता है।

पाठा०—पाव जाके न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।

जिसकी बीबी से काम, उसकी लौंडी से क्या काम ?

जव वडो तक पहुच है, तव छोटो की खुशामद करने की क्या जरूरत ?

(जड को ही पकड़े।)

जिसकी महल मे मैया, मागे पैसा मिले रुपैया

वडे आदमी के वेटे को किस वात की कमी ?

जिसकी लाठी, उसकी भैंस

वलवान की जीत होती है।

जिसकी सीरत अच्छी, उसकी सूरत भी अच्छी

अच्छे स्वभाव का व्यक्ति देखने मे भी अच्छा लगता है।

जिसकी सीरत अच्छी नहीं, उसकी सूरत को क्या देखना ?

जिसका स्वभाव अच्छा नही, उससे वात क्या करनी, भले ही उसकी शक्ल अच्छी हो।

जिसके कारन जोगिन भई, वह सइया परदेस, (स्त्रि०)

जिस के लिए सव छोड बैठे, वही उपलव्व नही।

जिसके घर भोज, उसको भात नहीं

क्योकि वह आदर-सत्कार मे लगा रहता है और भोजन करने का समय नही पाता।

जिसके चार पैसे लो, उन्हे हलाल करके खाओ
जिससे पैसे लो, उसका काम ईमानदारी से करो।

जिसके चार भैय्या, मारें धौल छीन लें रुपैया
जिसके चार आदमी सहायक होते है, वह सव-कुछ कर सकता है।

जिसके दिल में रहम नही, वह कसाई है
स्पष्ट।

जिसके घी नही उसकी देहली धी, (हिं०)
जिसके लडकी नही होती, वह देहली को ही लड़की समझता है, अर्थात उसे यदि कुछ देना होता है, तो दरवाज़े पर जो आता है, उसे ही देता है।
देहली=द्वार की चौखट दहलीज़।

जिसके नही पूत, वह क्या जाने माया, (स्त्रि०)
जिसके लडका नही, वह माता की ममता क्या जाने ?

जिसके पास ढिबुआ, वही हमारा बबुआ
जो खाने को दे, वही हमारा मालिक। जिसके पास पैसा है, उसकी सब खुशामद करते हैं।
ढिबुआ=(१) दाल-तरकारी परोसने का चम्मच। (२) रुपया।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा ?
पैसे से ही भलमनसाहत है। पैसा ही प्रधान है।

जिसके पेशे मे 'वान', उसका गुरु शैतान; 'हां, मेहरवान'।
ऐसे कई पेशे हैं, जिनके अन्त मे 'वान' आता है, जैसे फीलवान, कोचवान, शुतरवान वगैरह। किसी ने जब कहा कि जिनके पेशे मे 'वान' आता वे सव वडे शतान होते है तो दूसरे ने जवाव दिया 'जी हा, मेहरवान'

जिसके पैसा नही हो पास, उसको मेला लगे उदास
क्योंकि मेले मे पैसो की जरूरत पडती है।

जिसके वारह बीघा वांगा।
उसकी कमर मे नहीं तागा।
परिस्थिति की वात। अथवा कजूस के लिए भी कह सकते है।
वांगा=कपास का खेत।

जिसके मां वाप जीते हों, वह हराम का नहीं कहलाता
जव किसी के निर्दोष होने का स्पष्ट प्रमाण मौजूद हो, तव उस पर झूठा दोष लगाना ठीक नही, क्योकि वह दोष चलेगा नही।

जिसके लिए चोरी की, वही कहे चोर
जिसकी खातिर बदनामी मोल ली, वही बुराई करे।

जिसके वास्ते रोये, उसकी आखो में आंसू नहीं
जिसके लिए कष्ट उठाया, उसने कोई सहानुभूति भी नही दिखाई। कृतघ्नता।

जिसके सबब लड़ाई हो वह आदमी नहीं।
काटा है घर मे सेई का, या गुल कनेर का।
जिसके कारण घर मे लडाई हो, वह मनुष्य न होकर सेई का काटा या कनेर का फूल है।
(लोक-विश्वास है कि जिस घर मे सेई का काटा या कनेर का फूल होता है, वहा हमेशा लडाई-झगडा होता रहता है।)

जिसके सिर पर जूता रख दिया, वही वादशाह हो गया
किसी लफगे फकीर का कहना।

जिसके सिर पर पड़ती है, वही जानता है
अपनी मुसीवत आदमी आप ही जानता है।

जिसके हाथ मे डोई, उसका सव कोई
जिसके हाथ मे सत्ता होती है, उसकी सव खुशामद करते है।
डोई=लकडी का वडा चमचा।

जिसके होवें अस्सी, वह करे खस्सी
रुपए से सव को वश मे किया जा सकता है, अथवा सव काम किया जा सकता है।
खस्सी करना=वधिया करना। नपुंसक बनाना।

जिसको खुदा वचाये, उस पर कभी न आफ़त आये
ईश्वर जिसकी रक्षा करता है, उसका कोई कुछ नही विगाड सकता।

जिसको राखे साइयां, मार न सके कोय।
वाल न वांका कर सके, जो जग वैरी होय।
स्पष्ट। दे० उ०।

जिस पर नाड़ी फूड़ो, वह घर जानो कूड़ी
जिस घर मे फूहड औरत हो, वह कभी खुशहाल नही रह सकता।

जिस घर बूढ़ा न बड़ा, वह घर डिग्गम डिग्गा
बडे-बूढे के विना घर का प्रवध नही हो पाता।

जिस घर मे खायें, उसी में छेद करें
कृतघ्नता।

जिस घर मे संपत नहीं, तासूं भला विदेस
घर मे गरीबी भोगने की अपेक्षा तो विदेश मे रहना अच्छा।

जिस घर होय कुचलिया नारी, साझ, भोर हो उसकी ख्वारी।
वदचलन औरत घर का नाश कर देती है।

जिस घर होय पुरुष कुचलिया, उस घर होवे खीर का दलिया।
वदचलन आदमी से भी घर का नाश होता है।

जिस टहनी पर बैठे, उसको काटे
जिसके आश्रित रहे, उसी का अनिष्ट करना। कृतघ्नता।

जिस तन लागे, वही जाने
जिस पर बीतती है, वही जान सकता है कि कैसी वीत रही है।

जिस दरख्त के छाए मे बैठे, उसी की जड़ काटे
दे० ऊ०।

जिसने की बेहयाई, उसने खाई दूध मलाई
वेशर्म सुख-चैन से रहता है।

जिसने की शरम, उसके फूटे करम
सकोच या लिहाज करनेवालो को नुकसान उठाना पडता हे।

जिसने कोडा दिया, वह घोडा भी देगा
आलसियो या भाग्यवादियो की उक्ति।

जिसने चीरा वही नीरेगा
जिस (ईश्वर) ने मुह दिया वह नीर (अन्न-जल) भी देगा।
आलसियो का कहना। जब कोई कठिन अर्थ-सकट मे पड जाता है, तब उसे धीरज बधाने के लिए भी क०।

जिसने दिया उसने पाया
जो दूसरो को देता हे उसे मिलता भी है।

जिसने न देखा हो बाघ, वह देखे बिलाई।
जिसने न देखा हो ठग, वह देखे कसाई।
स्पष्ट। 'वह देखे नाई' भी पाठ है।

जिसने न देखी हो कन्या, वह देख ले कन्या का भाई
भाई-बहिन रूप-रग मे अक्सर एक से होते हैं, इसलिए क०।

जिसने बेटी दी, उसने क्या रखा?
अर्थात उसने सब-कुछ दिया।
विवाह मे कन्यादान से मतलब है।

जिसने बेटी दी, उसने सब कुछ दिया
स्पष्ट। दे० ऊ०।

जिसने रडी को चाहा, उसे भी जवाल और जिसको रडी ने चाहा, उसकी भी तबाही
हर हालत मे वेश्या का संग वुरा।

जिसने लगाई, वही बुझावेगा
(१) जिसने झगडा उठाया, वही उसे खत्म करेगा।
(२) दैवी विपत्ति को दैव ही दूर कर सकता है।
(३) प्राय भिक्षुक भीख मागते समय कहा करते हैं कि जिसने पेट मे भूख की ज्वाला पैदा की, वही (ईश्वर) उसे शान्त भी करेगा।

जिस वन सुआ न सायरा, वहा कागा खाय कपूर
जिस वन मे सुआ या कोयल नही होती, वहा कौए ही कपूर खाते है। जहा कोई योग्य पुरुष नही होता, वहा अयोग्यो की ही पूजा होती हे।

जिस वर्तन मे खाना, उसी मे छेद करना
कृतघ्नता।

जिस मुह से पान खाइये, उस मुह से कोयले न चबाइये
(१) एक बार जिसकी प्रशसा कर चुके, फिर उसकी वुराई नही करनी चाहिए।
(२) जहा सम्मानपूर्वक रह चुके हो, वहा अपमान सहकर नही रहना चाहिए।

जिस राह ही नहीं चलना, उसके कोस गिनने से क्या काम
जो काम करना ही नही, उसका जिक्र क्यो करना?

जिस शहर मे फूल बेचिये, वहां धूल न उड़ाइये
जिस जगह इज्जत से रहे हो, वहा बेइज्जत होकर नही रहना चाहिए।

जिस हांडी मे खायें, उसी मे छेद करे
जिसके आश्रित रहे, उसी का बुरा तकना।

जिसे खाने को मिले यों, वह कमाने जाय क्यों ?
अकर्मण्य के लिए क०।

जिसे खुदा रक्खे, उसे कौन चक्खे
जिसका ईश्वर रक्षक है, उसका कोई क्या विगाड सकता हे ?

जिसे पिया चाहे, वही सुहागन; क्या सांवरी क्या गोरी
(१) विवाहित जीवन उसी स्त्री का सफल है, जिसे उसका पति चाहे।
(२) जिस पर मालिक की नजर होती हे, वही उच्च स्थान पर पहुच जाता है, चाहे उसमे गुण न हो।

जिसे हया नहीं, उसे ईमान नही
वेशर्म बेईमान होता हे।

जी कहीं लगता नही, जब जी कहीं लग जाय हे
स्पष्ट।

'जी' कहो, 'जी' कहलाओ
दूसरो का सम्मान करो, तो दूसरे तुम्हारा सम्मान करेगे।

जी का वैरी जी
(१) जीव जीव का भक्षक हे।
(२) स्वय मनुष्य अपना शत्रु है।

जी के वदले जी
(१) जान के वदले जान।
(२) प्राय उस समय भी कहते है, जव कोई रुपया उधार लेकर माल गिरवी रख देता हे।

जी चाहे वैराग को और कुनवा फाड़ेगा
जी तो वैराग्य लेने को चाहता है, पर गृहस्थी की झझटो ने मुसीवत कर रक्खी है।

जीजा के माल पर साली मतवाली, (स्त्रि०)
एक मूर्खता की वात। जीजा के माल मे साली को कोई मतलव नही।

जी जाय, घी न जाय
कजूस के लिए क०।

जीत की हवा भी अच्छी
जीत का तो नाम भी अच्छा।

जीता सो हारा और हारा सो मुआ
अदालतो की मुकदमेवाजी के सवध मे क०। जो आदमी मुकदमा जीतता है, वह भी हारे के तुल्य हो जाता है, क्योकि मुकदमो मे वहुत पैसा और समय नष्ट होता है।

जीतों मक्खी नहीं निगली जाती
(१) जानवूझकर कोई विष नही खाता, अथवा गलत काम नही करता।
(२) स्वेच्छा से कोई विपत्ति मे नही पडता।
(३) स्पष्ट सत्य को झुठलाया नही जा सकता।

जीते आसा, मुए निरासा
जीवन के साथ आशा लगी हे। मरने पर सव समाप्त हो जाता है।

जीते का घर और मुए की गोर वता
ससार मे कही किसी का कुछ नही। जिनके घर थे, उनके घरो का पता नही, जिनकी कब्रें थी, उनकी कब्रो का पता नही।

जीते के खून से हीरा धुंधला होता हे
लोक-विश्वास हे।
इसका यह अर्थ भी हो सकता हे कि ज़िंदा आदमी के खून की गर्मी के सामने हीरे की चमक कोई चीज नही।

जीते चाव, चाव, मुए दाव-दाव
जीते जी सव चाव (प्रेम) करते है, मरने पर गाड़ने की फिक्र पडती हे।

जीते-जी का नाता है
अपने किसी आत्मीय के मरने पर जव कोई वहुत शोक करता है, तव उसे धैर्य वधाने के लिए कहते है।

जीते-जी का मेला है
आदमी जव तक जिन्दा है, तभी तक मिलना-जुलना है, फिर तो अकेले जाना है।

जीते तो हाथ काला, हारे तो मुंह काला

जुआरियो के लिए क०।

जीते न पूछे, मुए धड़धड़ पीटे

जीते-जी बात नही पूछी, मरने पर छाती पीटकर रोते है।

(१) कृतघ्न संतान।

(२) आदमी की कद्र मरने पर जानी जाती हे।

जीते रहे तो लानत कहना

किसी को कोसना, शाप देना।

जीते हे न मरते हैं, सिसक-सिसक दम भरते हैं

(१) बहुत कष्टमय जीवन बिता रहे है।

(२) मरणासन्न हे।

जीना थोड़ा, आसा बहुत

छोटे-से जीवन के साथ आशाए बहुत लगी रहती है।

जीने से दूर, मरने के नज़दीक

(१) जीवित रहते हुए भी मरे के समान हे।

(२) एक पैर कब्र मे लटकाए हे।

जी बहुत चलता है, मगर टट्टू नहीं चलता

बुढापे की अशक्त अवस्था के लिए क०।

जीभ जने एक बार, मा जने बार-बार

मुह से एक बार जो निकल गया, सो निकल गया, उसे फिर वापिस नही लिया जा सकता।

जीभ जली, न स्वाद आया

(१) कोई चीज बहुत थोडी खाने को मिले, तब क०।

(२) कष्ट उठाकर कोई काम किया जाए, पर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकले, तब भी क०।

जीवन मरन, बिधना के हाथ हैं

जीना-मरना ईश्वर के हाथ है।

जीवे मेरा भाई, गली-गली भोजाई, (स्त्रि०)

ननद का अपनी भावज से ताना मार कर कहना कि तू घमड किस बात का करती है, मेरे भाई के रहते तेरी जैसी बहुत-सी भावजे मिल जाएगी।

जी है तो जहान है

जीवन से ही सारी चीजे लगी हैं।

जुआ बड़ा व्योहार, जो इसमे हार न होती

जुआ बडी बढिया चीज थी, अगर इसमे हार न होती।

जुआरी को अपना ही दाव सूझता है

स्वार्थी के लिए क०।

(तु०—सूझ जुआरिह आपन दाऊ।)

जुआरी हमेशा मुफलिस

जुआरी हमेशा कगाल रहता है।

जुए मे बैल भी हारे है

स्पष्ट। जुए से बैल भी परेशान रहते है। यहा जुआ शब्द के दो अर्थ है (१) हल, बखर या गाडी के आगे की वह लकडी, जिसमे बैल जोते जाते है। (२) रुपए-पैसे की बाजी लगाकर खेला जाने-वाला खेल।

जुग टूटा, नर्द मरी

एका ही मे बल है, अलग हुए और पिटे।

(वाक्य चौसर के खेल से लिया गया है। चौसर मे जब दो गोटिया एक घर मे इकट्ठी हो जाती हैं, तो विपक्ष का खिलाडी उन्हे मार नही सकता, किन्तु अलग होने से पिट जाती है।

फूटे ते नर्द उठ जात बाजी चौपड की।

आपस के फूटे कहो कोन को भलो भयो। गग)

नर्द=चौसर की गोट।

जुड़ती नहीं धुर की टूटी, धरी रहे सब दारू बूटी

आयु के पूरे हो जाने पर कोई दवा काम नही करती। धुर=शीर्ष स्थान।

जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खाय तुरग, (कृ०)

(१) गरीबो के परिश्रम पर धनवान मौज करते है।

(२) कर्मचारी खटते है, अफसर बैठे खाते हैं।

(३) कुछ लोग खटते हे, कुछ मौज करते हैं।

जुमा छोड सनीचर नहाये, उसका सनीचर कभी न जाये

जो शुक्रवार को न नहाकर शनिवार को नहाता है, उसकी विपत्तिया कभी दूर नहीं होती। मुसल-मानो का लोक-विश्वास।

शुक्रवार नमाज का दिन होता है, और उस दिन नहाना आवश्यक माना जाता है।

जुलाहा चुरावे नली नली, खुदा चुरावे एक्के बेरी, (पू०)

जुलाहा थोडा-थोडा करके सूत चुराता हे, पर ईश्वर एक बार मे सब चुरा लेता है, अर्थात जुलाहे का कभी इकट्ठा नुकसान हो जाता हे और चोरी का सब नफा निकल जाता है।

ईश्वरीय न्याय।

जुलाहा जाने जौ काटे ?

जुलाहा जौ काटना क्या जाने ?

(कथा है कि किसी जुलाहे पर बहुत कर्ज़ हो गया था। ... कराकर रुपए वसूल ...ी होकर खेत मे जौ ...ा के स्थान पर वह उसकी ...प्रकार सुलझाने लगा जैसे महीन ...लाहे कहावतो मे अपने बुद्धूपन ...है। यहा उसी पर कटाक्ष है।)

... का प्रयोग करते है, जब ...झकर उपेक्षा करने से ... निकल सकता हो।

... किसी जुलाहे की जाघ मे तीर लग गया। ...ा निकाल फेकने का कोई उपाय न करके ... ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान, ऐसा कर कि इस तीर का लगना झूठ साबित हो। उसी से कहा० चली।)

पाठा०—जुलाहे को लगा था तीर खुदा भली (या झूठ) करे।

जुलाहे का बेगारी पठान

एक अनहोनी बात। पठान कभी जुलाहे जैसे साधारण या सीधे-सादे आदमी के यहा जाकर बेगार नही करेगा।

जुलाहे की जूती, सिपाही की जोय, धरी-धरी पुरानी होय

जुलाहे की जूती और सिपाही की स्त्री, दोनो काम मे न आने के कारण व्यर्थ ही जाती हैं।

(इसलिए कि जुलाहा करघे पर बैठे-बैठे ही काम करता है, जूते पहिनने की उसे कभी आवश्यकता ही नही पडती और सिपाही हमेशा फौज की नौकरी की वजह से बाहर रहता है, स्त्री के पास आ नही पाता।)

जुलाहे की तरह ईद-बकरीद को पान खा लेते है, (मु०)

(१) कभी-कभी शौक कर लेते है।

(२) कजूसी करते है।

जुलाहे की मसखरी मा-बहिन से

जुलाहे के बुद्धूपन पर क०।

जूं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती

साधारण परेशानी के डर से कोई अच्छा लाभ का काम नही छोड़ दिया जाता।

जूठा खैये मीठे के लालच

ओछा काम भी अच्छे लाभ की आशा मे करना पडता हे।

(मराठी मे है—तुपाचे आशेने उष्टे खावे।)

जूता पहने साई का, बड़ा भरोसा ब्याई का।

जूता पहने नरी का, क्या भरोसा करी का।

जूता फरमायश देकर बनवाना चाहिए, अर्थात मज़बूत जूता पहिनना चाहिए, और विवाहिता स्त्री पर ही निर्भर करना चाहिए, (क्योकि समय पर वही काम आती है।) घटिया दाम के जूते नही पहिनना चाहिए, और रखैल औरत का विश्वास नही करना चाहिए, (न जाने कब धोखा दे दे।)

नरी का=बकरी के चमडे का।

करी का—रखैल का।

जेकर पुरखा न देखल घोड़ी, तेकर घर घुरवद्दी होई

जिनके पुरखो ने कभी घोड़ी का नाम नहीं देखा, उनके घर घोडों के नाल बंध रहे हैं, अर्थात घोड़े बंधे हुए हैं।

(जो अपने पुरुषार्थ से धन कमाकर बड़ा आदमी बन गया हो अथवा जो साधारण स्थिति से ऊंची जगह पर पहुंच कर घमंड करने लगे, उसके लिए क०।)

जीते तो हाथ काला, हारे तो मुह काला
जुआरियो के लिए क०।

जीते न पूछे, मुए धड़धड पीटे
जीते-जी बात नही पूछी, मरने पर छाती पीटकर रोते है।
(१) कृतघ्न सतान।
(२) आदमी की कद्र मरने पर जानी जाती हे।

जीते रहे तो लानत कहना
किसी को कोसना, शाप देना।

जीते हैं न मरते है, सिसक-सिसक दम भरते हैं
(१) बहुत कष्टमय जीवन बिता रहे है।
(२) मरणासन्न है।

जीना थोड़ा, आसा बहुत
छोटे-से जीवन के साथ आशाए बहुत लगी रहती है।

जीने से दूर, मरने के नजदीक
(१) जीवित रहते हुए भी मरे के समान है।
(२) एक पैर कब्र मे लटकाए है।

जी बहुत चलता है, मगर टट्टू नहीं चलता
बुढापे की अशक्त अवस्था के लिए क०।

जीभ जने एक बार, मां जने बार-बार
मुह से एक बार जो निकल गया, सो निकल गया, उसे फिर वापिस नही लिया जा सकता।

जीभ जली, न स्वाद आया
(१) कोई चीज बहुत थोडी खाने को मिले, तब क०।
(२) कष्ट उठाकर कोई काम किया जाए, पर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकले, तब भी क०।

जीवन मरन, बिधना के हाथ है
जीना-मरना ईश्वर के हाथ है।

जीवे मेरा भाई, गली-गली भौजाई, (स्त्रि०)
ननद का अपनी भावज से ताना मार कर कहना कि तू घमड किस बात का करती है, मेरे भाई के रहते तेरी जैसी बहुत-सी भावजे मिल जाएगी।

जी है तो जहान है
जीवन से ही सारी चीजे लगी है।

जुआ बड़ा ब्योहार, जो इसमे हार न होती
जुआ बडी बढिया चीज थी, अगर इसमे हार न होती।

जुआरी को अपना ही दाव सूझता है
स्वार्थी के लिए क०।
(तु०—सूझ जुआरिह आपन दाऊ।)

जुआरी हमेशा मुफलिस
जुआरी हमेशा कगाल रहता है।

जुए मे बैल भी हारे हैं
स्पष्ट। जुए से बैल भी परेशान रहते है। यहां जुआ शब्द के दो अर्थ है (१) हल, बखर या गाडी के आगे की वह लकडी, जिसमे बैल जोते जाते है। (२) रुपए-पैसे की बाजी लगाकर खेला जाने-वाला खेल।

जुग टूटा, नर्द मरी
एका ही मे बल है, अलग हुए और पिटे।
(वाक्य चौसर के खेल से लिया गया है। चौसर मे जब दो गोटिया एक घर मे इकट्ठी हो जाती है, तो विपक्ष का खिलाडी उन्हे मार नही सकता, किन्तु अलग होने से पिट जाती है।
फूटे ते नर्द उठ जात बाजी चौपड की।
आपस के फूटे कहो कोन को भलो भयो। गग)
नर्द=चौसर की गोट।

जुड़ती नहीं घुर की टूटी, धरी रहे सब दारू बूटी
आयु के पूरे हो जाने पर कोई दवा काम नही करती।
घुर=शीर्ष स्थान।

जुत-जुत मरें बैलवा, बैठे खायं तुरग, (कृ०)
(१) गरीबों के परिश्रम पर धनवान मौज करते है।
(२) कर्मचारी खटते हे, अफसर बैठे खाते है।
(३) कुछ लोग खटते है, कुछ मौज करते है।

जुमा छोड़ सनीचर नहाये, उसका सनीचर कभी न जाये
जो शुक्रवार को न नहाकर शनिवार को नहाता है, उसकी विपत्तिया कभी दूर नही होतीं। मुसल-मानो का लोक-विश्वास।

शुक्रवार नमाज का दिन होता है, और उस दिन नहाना आवश्यक माना जाता है।

जुलाहा चुरावे नली नली, खुदा चुरावे एक्के बेरी, (पू०)

जुलाहा थोडा-थोडा करके सूत चुराता है, पर ईश्वर एक वार मे सब चुरा लेता है, अर्थात जुलाहे का कभी इकट्ठा नुकसान हो जाता है और चोरी का सब नफा निकल जाता हे।

ईश्वरीय न्याय।

जुलाहा जाने जौ काटे ?

जुलाहा जौ काटना क्या जाने ?

(कथा है कि किसी जुलाहे पर बहुत कर्ज हो गया था। तव महाजन ने उससे काम कराकर रुपए वसूल करने चाहे। जुलाहा राजी होकर खेत मे जौ काटने गया। पर जौ काटने के स्थान पर वह उसकी झुकी हुई वालो को इस प्रकार सुलझाने लगा जैसे महीन सूत को सुलझाते है। जुलाहे कहावतो मे अपने वुद्धूपन के लिए प्रसिद्ध माने गए है। यहा उसी पर कटाक्ष है।)

जुलाहे का तीर न हो

ऐसे अवसर पर कहावत का प्रयोग करते है, जव किसी विषय पर जानवूझकर उपेक्षा करने से उसका वुरा परिणाम निकल सकता हो।

(कथा है कि किसी जुलाहे की जाघ मे तीर लग गया। तव उसे निकाल फेकने का कोई उपाय न करके वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान, ऐसा कर कि इस तीर का लगना झूठ सावित हो। उसी से कहा० चली।)

पाठा०—जुलाहे को लगा था तीर खुदा भली (या झूठ) करे।

जुलाहे का वेगारी पठान

एक अनहोनी वात। पठान कभी जुलाहे जैसे साधारण या सीधे-सादे आदमी के यहा जाकर वेगार नही करेगा।

जुलाहे की जूती, सिपाही की जोय, घरी-घरी पुरानी होय

जुलाहे की जूती और सिपाही की स्त्री, दोनो काम मे न आने के कारण व्यर्थ ही जाती है।

(इसलिए कि जुलाहा करघे पर बैठे-बैठे ही काम करता है, जूते पहिनने की उसे कभी आवश्यकता ही नही पडती और सिपाही हमेशा फौज की नौकरी की वजह से वाहर रहता है, स्त्री के पास आ नही पाता।)

जुलाहे की तरह ईद-वकरीद को पान खा लेते हैं, (मु०)

(१) कभी-कभी शौक कर लेते है।

(२) कजूसी करते हैं।

जुलाहे की मसखरी मा-वहिन से

जुलाहे के वुद्धूपन पर क०।

जू के डर से गुदडी नहीं फेंकी जाती

साधारण परेशानी के डर से कोई अच्छा लाभ का काम नही छोड़ दिया जाता।

जूठा खैये मीठे के लालच

ओछा काम भी अच्छे लाभ की आशा से करना पडता है।

(मराठी मे है—तुपाचे आशेने उष्टे खावे।)

जूता पहने साई का, वडा भरोसा व्याई का।

जूता पहने नरी का, क्या भरोसा करी का।

जूता फरमायश देकर वनवाना चाहिए, अर्थात मजवूत जूता पहिनना चाहिए, और विवाहिता स्त्री पर ही निर्भर करना चाहिए, (क्योकि समय पर वही काम आती है।) घटिया दाम के जूते नही पहिनना चाहिए, और रखैल औरत का विश्वास नही करना चाहिए, (न जाने कव धोखा दे दे।)

नरी का—वकरी के चमडे का।

करी का—रखैल का।

जेकर पुरखा न देखल घोड़ी, तेका घर घुड़दौड़ होई

जिनके पुरखो ने कभी घोड़ी का नाम नहीं देखा, उनके घर घोड़ों के नाल बंध रहे हैं, अर्थात घोड़े बंधे हुए है।

(जो अपने पुरुषार्थ से धन कमाकर बड़ा आदमी बन गया हो, अथवा जो साधारण स्थिति से ऊंची जगह पर पहुंच कर घमंड करने लगे, उसके लिए क०।)

जेकर मैया पूआ पकावे, तेकर धिया लिलके, (भो०)
किसी गरीब ब्राह्मणी के सबध मे कहा गया है, जो रसोई बनाने का काम करती है। मोची के लडके को जिस प्रकार जूता और दर्जी के लडके को अच्छे कपडे पहिनने को नही मिल पाते, उसी प्रकार उसकी लडकी भी उन पूओ के लिए तरसती है, जिन्हे वह दूसरो के लिए बनाती है।

जेकरा बीघा भर कपास, तेकरा डांड़े डरा ना, (भो०)
जिसके पास बीघा भर कपास का खेत है, उस पर जुर्माना किया जा सकता है। (क्योकि वह दे सकता है।)

जेकरा होरी अइसन ठाकुर, तेकरा जम के डर? (पू०)
जिसके ऐसे देवता, उसे यमदूत का क्या डर? व्यग्य मे क०।

जेकरी जोय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस, (भो०)
जिसकी औरत है वह उसके पास है (अर्थात उसके कब्जे मे है), दूसरा केवल ताकता है।

जेकरे घुड़वा बैठिन, तेकरे आंड़ दागिन, (भो०)
जिसके घोडे पर बैठे, उसी के आड दागे।
जिसका खाए, उसी का नुकसान करे।

जेठ के भ ोसे पेट
दूसरो पर आश्रित रहना अथवा दूसरे के भरोसे कोई काम करना।
(कहावत किसी ऐसी गर्भवती स्त्री के सबध मे कही गई है, जिसका पति विल्कुल अकर्मण्य है, और जो प्रसव आदि की व्यवस्था के लिए अब अपने जेठ पर निर्भर करती है।

जेठ जेठे, असाढ हेटे
जेठ मे दिन बडे होते है, आषाढ मे छोटे होने लगते है।
अथवा जेठ मे मौसम अच्छा रहता है, आषाढ मे बुरा।

जेठे लड़का-लड़की की शादी जेठ मे नहीं करते
लोकमान्यता, जिसका कोई युक्तिसगत कारण नही।

जे पांडे के पत्रा मे, सो पंडयाइन के अचरा मे, (पू०)
पाडे की अपेक्षा पडयाइन अधिक चतुर है।
पत्रा=पचाग, तिथिपत्र।
अचरा=अचल।

जे पूत परदेसी भइले, देव पितर सबसे गइले, (पू०)
जो घर से बाहर जाकर रहता है, उसका नियम-धर्म सब नष्ट हो जाता है।

जेब मे नहीं खीली की डली, छैला फिरै गली-गली
कोरी शान बघारते फिरना।
खीली की डली=सुपारी का टुकडा।

जे बहुत धधला सो आगे मे पडेला, (भो०)
जो बहुत अनाचार करता हे, वह अन्त मे हानि उठाता है।
धधलाना=(१) धाधलेबाजी करना।
(२) धुआ उगलना, जलना।

जे मुंह चीरेला, से तो आहार देले चाहे, (भो०)
जिस (ईश्वर) ने पैदा किया, वह खाने को तो देगा ही।
मुह चीरेला=मुह चीरा है।

जे मोरा लाल के न, से कौना काम के, (भो०)
जो वस्तु मेरे लड़के के पास नही (वह अगर औरो के पास है) तो निकम्मी हे।
अपना या अपने लड़के का बडप्पन दिखाना।

जेरो से शेर होते हैं
छोटे कमजोर बच्चे से ही बडा ताकतवर आदमी बनता है।

जेवड़े से नाड़ा घिसना है, (स्त्रि०)
(१) जिसका कोई इलाज नही, वह तो सहन करना ही होगा। (२) व्यर्थ ही दुख भोगना है।
(गाय भैंस आदि पालतू जानवर जिस जेवरी (रस्सी) से बधे रहते हैं, उसी से अपनी गर्दन घिराते रहते है। बधन से मुक्त होने मे असमर्थ रहते हैं। उसी से रूपक लिया गया है। प्राय स्त्रियो के लिए क०।)
नाटा=गर्दन।

जैसन को तैसन, मुकटी को बैगन, (पू०)
किसी दुबली-पतली लडकी का मोटे-ताज़े लड़के

के साथ विवाह हुआ। उसी पर व्यग्य मे कहा गया है कि जोड खूब मिल गया जैसे, सूखी मछली के साथ बैंगन। सुकटी=सूखी पतली लकड़ी को भी कहते है।

जैसन देखे गांव की रीत, तैसन करे लोग से प्रीत, (पू०)

जैसी गाव की चाल-ढाल देखे, वैसा ही लोगो से व्यवहार करे।

जैसा ऊंट लंबा, वैसा गधा खवास

एक-सी जोडी मिल जाना।

(लवा आदमी मूर्ख समझा जाता है, उसी से कहावत मे भाव यह है कि ऊँट जैसा अहमक है, वैसा ही खवास भी उसे गधा मिल गया।)

खवास=नाई, नौकर।

जैसा कन भर, वैसा मन भर

जैसा किसी चीज़ का एक टुकडा, वैसी ही पूरी चीज, कोई अतर नही पडता।

जैसा करोगे, वैसा पाओगे

कर्म का यथोचित फल मिलता है।

जैसा करोगे, वैसा भरोगे

किए का दड भुगतना पडता है।

जैसा काछ काछै, तैसा नाच नाचे

जैसा वेप हो, उसी के अनुसार काम करो।

जैसा किया, वैसा पाया

बुरे काम का बुरा फल मिलता है।

जैसा तेरा खोट रुपैया, तैसा मेरा खोखर पैसा

जेसा वर्ताव तुमने मेरे साथ किया, वैसा मैंने तुम्हारे साथ किया।

जैसा तेरा घूंघर बिया, तैसी हींग हमारी

जैसी (बुरी) चीज तुमने मुझे दी, वैसी ही मैंने तुम्हे भी दी।

(किसी ठग ने एक दूसरे ठग को ऐसी हीग दी, जिसमे मिट्टी ही मिट्टी थी। तव दूसरे ने भी उनके वदले मे उसे मटर की ऐनी फलिया दी, जिनके भीतर विल्कुल घुने हुए दाने थे।)

जैसा तेरा देना-लेना, वैसा मेरा गाना-बजाना

जैसा तुगने दिया, वैसा मैने काम कर दिखाया।

जैसा तेरा नोन-पानी, वैसा मेरा काम जानी

दे० ऊ०।

जैसा दुद्ध, वैसा वुद्ध

मा का दूध जैसा पीने को मिलता है, वैसी ही वुद्धि विकसित होती है।

जैसा दूध धौला, वैसी छाछ धोली

ऊपरी दिखावट से धोखे मे पडना।

धौला=सफेद।

जैसा देवता, वैसी पूजा, (हि०)

जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

जैसा देवे वैसा पावे; पूत भतार के आगे आवे, (पू०, स्त्रि०)

जो जैसा करता हे, वैसा पाता है।

(कथा है कि किसी स्त्री ने उक्त कहावत की सत्यता की परीक्षा के लिए दो रोटियो मे विप मिलाकर किसी साधु को दे दी। उसने उन रोटियो को अपनी कुटी मे ले जाकर रख छोडा। सयोग से उसी स्त्री का पति और लडका कही से थके-हारे उस स्थान पर आ पहुचे और साधु से पानी मागा। साधु ने उन्हे भूखा जानकर वे दोनो रोटिया उन्हे खिला दी, और पानी पिला दिया। वे दोनो रोटिया खाकर मर गए।)

जैसा देस, वैसा भेस

जिस देश मे रहे, वहा जैसी रीति वरते।

जैसा बो, वैसा काट, (कृ०)

जैसा करोगे, वैसा पाओगे।

जैसा मन हराम ने, तैसा हरि मे होय।
चला जाए वैकुठ को, रोक सके ना कोय।

स्पष्ट।

जैसा भान, वैसा दान

हैसियत के अनुसार दान किया जाता है।

जैसा मुंह, वैसा थप्पड

(१) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

(२) उपयुक्त दड या मुहतोड जवाब।

जैसा राजा, वैसी प्रजा
राजा के अनुसार ही प्रजा होती हे।
जैसा सुई चोर, वैसा बज्जर चोर
चोरी-चोरी सब बरावर। जैसी छोटी चीज की वैसी ही वडी चीज की।
वज्जुर=वज्र फौलाद, यहा हथौडे से अभिप्राय है।
जैसा सूत, वैसी फे ी; जैसी मा, वैसी बेटी; (स्त्रि०)
(१) लडकी मा जैसी ही होती है, अर्थात लडकी मे मा के गुण आते है।
(२) जैसो के तैसे होते है।
फेटी=सूत या रेशम की लच्छी।
जैसा सोता, वैसी धारा
नदी का स्रोत जैसा होगा, वैसी ही नदी भी होगी। सतान अपने मा-वाप जैसी ही होती है।
जैसी करनी, वैसी भरनी
कर्मानुसार फल भोगना पडता है।
जैसी करनी वैसी भरनी; होवे न होवे, करके देख
दे० ऊ०।
जैसी गई थीं वैसी आईं, हक़ महर का वोरिया लाईं
किसी स्थान पर वहुत आशा से जाने पर कुछ न मिले, तव क०।
वदकिस्मती।
(कोई स्त्री ससुराल से मायके गई, और जव फिर ससुराल वापस आई, तो कुछ लेकर नही आई। उसी पर कहा गया है कि जैसी गई थी, वैसी ही आई, अपने साथ विवाह के हिस्से का वोरा लेकर आई, अर्थात खाली हाथ आई।)
जैसी तेरी तानी वनिये, वैसा मेरा बुनना
जैसे के वदले तैसा।
जैसी तेरी तानी, वैसी मेरी भरनी
तूने जैसी चीज़ दी, मैने वैसा ही काम कर दिया।
तानी=कपडा वुनने मे ताने का सूत।
भरना=वाना।
जैसी तेरी तिल चावलो, वैसा मेरा गीत, (स्त्रि०)
जैसी मजूरी (या भेट) वैसा काम।
(विवाह या पुत्र-जन्म जैसे शुभ अवसरो पर गाने के लिए जो स्त्रिया आती है, उन्हे तिल-चावल दिए जाते हैं।)
जैसी तेरी फाफड़ कोदों, वैसी मेरी हींग, (मु०)
दे०—जैसी तेरी तानी ।
फाफड़=घुने हुए, छूछ।
जैसी तेरी भगत, वैसा मेरा आशीर्वाद
जैसा तूने मेरा सत्कार किया, वैसा मैने आशीर्वाद भी दिया।
जैसी दाई आप छिनार, वैसी जाने सब संसार, (स्त्री०)
कोई स्त्री दूसरी को गाली देकर कह रही है। जो जैसा होता है, वह दूसरो को वैसा ही समझता है।
जैसी नीयत, वैसी वरकत
जैसी नीयत होती है, वैसा ही मिलता हे।
नीयत=इच्छा, उद्देश्य, मशा, सकल्प।
जैसी फूहड़ आप छिनार; तैसी लगावै कुल व्यौहार
दे०—जैसी दाई . ।
जैसी बंदगी, वैसा इनाम
जैसी सेवा, वैसा फल।
जैसी वहै वयार, पीठ तब तैसी दीजै, (गिरधर)
अवसर या रुख देखकर काम करना चाहिए। मौका या अवसर से लाभ उठाना भी।
जैसी माई, वैसी जाई; (स्त्रि०)
जैसी मा, वैसी वेटी।
जैसी रूह, वैसे फरिश्ते; (मु०)
जैसी रूह होती है, वैसे ही फरिश्ते उसे लेने आते हैं। (भाव यह है कि हर मनुष्य को उसके कर्मो के अनुसार ही फल मिलता हे। जव दो एक-सी वस्तुओ अथवा व्यक्तियो का जोड मिलता है, तव व्यग्य मे क०।)
जैसी होत होतव्यता, वैसी उपजे बुद्ध।
होनहार हिरदे वसे, विसर जात सब सुद्ध।
स्पष्ट।
होतव्यता=होनहार।
सुद्द=सुध, खबर।
जैसे ऊधो वैसे यान; न उनके चोटी, न उनके कान
दोनो एक मे निकम्मे।

जैसे एक बार, वैसे हजार बार

जैसे कोई (बुरा) काम एक बार किया, वैसा हजार बार किया, कोई अन्तर नही आता।

जैसे कथा घर रहे वैसे रहे विदेश।

जैसे ओढ़ी कामली, वैसा ओढा खेस। (स्त्रि०)

निकम्मे आदमी का घर और वाहर रहना एक-सा।

कथा=कत, पति।

कामली=कबल।

खेस=गाढे की मोटी चादर।

जैसे की सेवा करे, तैसी आसा पूर; (पू०)

जैसे मनुष्य की सेवा करोगे, वैसी ही इच्छा पूर्ति होगी।

जैसे को तैसा

(१) जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

(२) जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता हे।

(३) जो जैसा होता हे, उसे दूसरे भी वैसे ही दिखाई देते है।

जैसे को तैसा, परखने को पैसा

जैसे के साथ तैसा व्यवहार करे, पैसा आखिर परखने के लिए ही है। दे० ऊपर भी।

जैसे को तैसा, वाबू को भैसा

जो जैसा हो, उसका वैसा ही सम्मान करना चाहिए।

(यहा वावू से मतलव वडे आदमी से है।)

जैसे को तैसा मिले, ज्यूं बामन को नाई।
इसने कही आशीर्वाद, उन आरसी काढ़ दिखाई।

जैसे को तैसा मिल जाता है, जैसे ब्राह्मण को नाई मिल गया। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया—नाई ने भी उसके वदले मे आरसी निकाल कर दिखला दी।

(ब्राह्मण जव किसी को आशीर्वाद देता हे, तो दक्षिणा की आशा करता है, नाई भी जव विशेष अवसरो पर दर्पण दिखाता है, तो उसे इनाम दिया जाता है। कहावत मे दोनो ने एक दूसरे को सूखा टरका दिया, यही उसमे मज़ा है।)

जैसे को तैसा मिले, सुन रे राजा भील।
लोहे को चूहा खा गया, लड़का ले गई चील।

(इसकी प्रसिद्ध प्राचीन कथा है जो बौद्ध जातक मे मिलती है। एक मनुष्य अपना लोहे का कुछ सामान अपने एक मित्र को सौपकर परदेश चला गया। कुछ वर्षो वाद आया, तो मित्र से अपनी धरोहर मागी। उसने जवाव दिया—तुम्हारा सव लोहा तो चूहे खा गए। यह सुनकर वह चुप रह गया, पर इसका वदला लेने का अवसर खोजने लगा। एक दिन जव उसके उसी मित्र का छोटा लडका वाहर मैदान मे खेल रहा था, तो उसे उठाकर उसने घर मे छिपा लिया। जव उसका मित्र लडके को खोजता हुआ उसके पास आया और पूछने लगा कि तुमने मेरा लडका तो नही देखा? तो उसने उत्तर दिया—हा, उसे तो चील ले गई। मित्र ने कहा—यह कैसे हो सकता है कि लडके को चील उठा ले जाए। तव वह बोला कि यह उसी तरह समव है, जिस तरह चूहा लोहा खा गए। सुनकर वह सारी वात को ताड गया। उसने सव लोहा निकालकर दे दिया। उसे अपना लडका भी वापिस मिल गया। यह 'कूट वणिक जातक' है।)

जैसे गगा नहाये, वैसा फल पाये

श्रद्धा के अनुसार फल मिलता है।

जैसे चिड़ियों मे ढेल

क्रूर व्यक्ति।

ढेल=वाज पक्षी।

जैसे दाम, वैसा काम

जैसी मजदूरी दोगे, वैसा ही काम होगा।

जैसे नागनाथ, वैसे सापनाथ

जैसे यह वैसे वह, अर्थात दोनो एक से।

जैसे नीमनाथ, तैसे वकायन नाथ

दोनो मे कोई अन्तर नही। नीम भी कडुवा, वकायन भी कडुवा।

(नीम और वकायन एक ही समान है।)

माइश की। पर एक आदमी ने दो पैसे (टका) देकर कहा कि इसका झुनझुना ले आना। उसने जवाब दिया—'बस तेरा ही लडका खेलेगा'।)

जोड़-जोड मर जायेंगे, माल जवाई खायेंगे।
जंवाई भी न होगा, तो खालसे लग जायेंगे।

कजूस के लिए क०।

(महाराज रणजीतसिंह के शासनकाल मे जब कोई लावारिस मरता था, तो उसकी सम्पत्ति खालसा-सरकार मे ज़ब्त कर ली जाती थी। 'खालसे लग जायेंगे' का यही अभिप्राय है कि धन खालसा-सरकार मे चला जाएगा।)

जोड़ियां सयोग है

विवाह के लिए क० कि लडके-लडकी का सम्बन्ध तो भाग्य पर निर्भर है।

जोड़ी बलवान है

दे० ऊ०।

जो तिल हद से ज्यादा हुआ, सो मस्सा हुआ

हद से बाहर कोई चीज अच्छी नही लगती।

(छोटा तिल चेहरे पर अच्छा मालूम देता, है पर वही जब बढकर मस्सा हो जाता है तो चेहरे की रौनक को विगाड देता है।)

जो तैरेगा, सो डूबेगा

जो प्रयास करेगा, वह कभी-कभी असफल भी होगा। प्रयास न करनेवाले के लिए असफलता का प्रश्न ही नही।

जो दम गुजरे, सो ग़नीमत है

आनद से जितना समय बीत जाए, सो ही अच्छा।

जो देखा, सो पेखा

दोनो मे कोई अतर नही। 'देखा' का जो अर्थ है वही 'पेखा' का।

जो धन जाता देखिये तो आधा दीजे बाट

यदि पूरी सपत्ति नष्ट हो रही हो, तो आधी दूसरो को देकर यश लूट लेना चाहिए।

जो धरती पै आया, उसे धरती ने खाया

जो धरती पर जन्म लेता है, वह धरती मे ही फिर मिल भी जाता है।

जो धावे सो पावे, जो सोवे सो खोवे

जो परिश्रम करेगा, वही (धन) पाएगा, जो आलस्य करेगा, वह गाठ का भी खो बैठेगा।

जो निकले सो भाग धनी के

जो कुछ भी मिलेगा, सो मालिक का भाग्य, अर्थात हमे क्या, हम कौन कही ले जाएगे।

(प्राय खेती के काम मे सहायता करनेवाले चोट्टे और लापरवाह मजदूर कहा करते हैं।)

जो पहले मारे सो मीर

जो पहले मारता है, सो जीतता है।

(शतरज के खेल मे जो पहले मुहरा मारना शुरू कर देता है, वही फायदे मे रहता है। उसी सदर्भ मे वाक्य कहा गया है।)

जो पारस से कचन उपजे, सो पारस है काच।
जो पारस से पारस उपजे, सो पारस है साच।

सच्चा महापुरुष वही है, जो दूसरो को भी अपने जैसा बना ले।

पारस=वह प्रसिद्ध कल्पित पत्थर जिसके सबध मे कहा जाता है कि यदि लोहा उससे छुवाया जाए, तो वह सोना हो जाता है। स्पर्शमणि।

जो पूत दरबारी भये, देव पितर सबसे गये

जो सरकारी नौकरी करते हैं, वे देव-पितरो के काम के नही रहते, अर्थात अग्रेज़ी सभ्यता के प्रभाव से अपने धर्म मे निष्ठा खो बैठते हैं।

(पुरातन पथी हिन्दुओ की धारणा।)

जो प्याज काटेगा, सो आप रोयेगा

जो उपद्रव करेगा, वह उसका दड भी भोगेगा।

(प्याज काटने से उसका झाग आखो मे जाता है, और आसू निकलने लगते हैं। उसी से मतलब है।)

जो फल चक्खा नहीं, वही मीठा

जो वस्तु कभी चक्खी नहीं होती, उसके लिए मन ललचाता है, फिर वह कैसी ही क्यो न हो?

जो वदा नवाजी करे, जान उस पर फ़िदा है।
वैफ़ज अगर यूसफे सानी है, तो क्या है?

जो मेरे साथ अच्छा बर्ताव करे, उस पर जान न्यौछावर कर सकता हू, पर जिसके हृदय मे मेरे लिए

आदर नही, ऐसा दूसरा यूसुफ भी अगर मिले, तो उससे मुझे कोई सरोकार नही।
(यूसुफ हजरत याकूब के पुत्र थे, जिन पर मिस्र की जुलेखा आसक्त हो गई थी। वह बडे रूपवान थे। उन्होने मिस्र पर बहुत दिनो तक राज्य किया।)

जोवन था तब रूप था, गाहक था सब कोय।
जोवन रतन गवाय के, बात न पूछे कोय।
जब मेरे पास यौवन और रूप था, तब सब मुझे चाहते थे। पर यौवन रूपी रत्न को (अब) जब मै खो बैठी हू, तब कोई मुझसे बात नही करता।

जो बर देख ताप मुझे आवे, सोई बर मुझे ब्याहन आवे, (पू०, स्त्रि०)
(१) जिस वस्तु से अत्यधिक घृणा थी, वही पल्ले पडी,। अथवा (२) जो काम करना नही चाहते थे, वही विवश होकर करना पड रहा है।
बर=वर, दूल्हा।

जो बहुत करीब, सो ज्यादा रक़ीब
नजदीक ही के लोग दुश्मन होते है।
रकीब=प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

जो बहुत धधला, सो आगे मे पड़ेला, (भो०)
जो बहुत अनाचार करता है, वह हानि उठाता है।
धधलाना=(१) धाधली करना।
(२) धुधुआना, आग उगलना।

जो बात है सो खूब है, क्या बात है आपकी ?
व्यग्य मे क० कि आपकी क्या तारीफ की जाए ? आपकी हर बात निराली है।

जो बामन की जीभ पर, सो बामन की पोथी मे
ब्राह्मण अपने मतलब की व्यवस्था ही पत्रा देखकर देता है, अर्थात अपने यजमान को वह वैसी ही सलाह देता है, जिससे उसे दान-दक्षिणा मिल सके।

जो बामन की पोथी मे, सो यारो की जबान पर
(१) ब्राह्मण पत्रा देखकर जो कुछ बताएगा, उसे हम पहले से जानते है। अथवा
(२) ब्राह्मण जो बताएगा, वही हमारे यार लोग भी बताएगे।
(खाने-पीने की बात)।

जो बिन सहारे खेले जुआ, आज न मुआ, कल हुआ
जो बिना अनुभव के जुआ खेलता है, वह कभी न कभी दचका खाता है।

जो बोवेगा, सो काटेगा
(१) जैसा करेगा, वैसा पाएगा।
(२) जो उद्योग करेगा, वह उसका फल भी पाएगा।

जो बोले सो कुंडा खोले
पुकारने से जो बोले, वही कुडा खोले।
(घर के दरवाजे की कुडी जब भीतर से बद रहती है, तो पुकार कर खुलवाना पडती है। भीतर से जो जवाब देता है, उसी को प्राय दरवाज़ा खोलने आना पड़ता है। भलमनसाहत का नतीजा।)

जो बोले सो घी को जाय
(इस कहावत की दो विभिन्न कथाए प्रसिद्ध है, और उन दोनो के अलग-अलग दो अर्थ निकलते है। पहली कथा इस प्रकार है—
(१) एक बार चार मूर्खो ने मिलकर रसोई बनाने का इरादा किया। अब इस बात को लेकर उन चारो मे झगडा होने लगा कि घी कौन लाए। अन्त मे उन्होंने तै किया कि जो पहले बोलेगा, उसी को घी लाने जाना पडेगा। जब वे चारो मौन साधे बैठे थे, तब एक पहरेदार वहा आ गया। उसने पूछा—तुम लोग कौन हो ? यहा क्या कर रहे हो ? कहा से आए हो ? इत्यादि।
अपने प्रश्नो का कोई उत्तर न पाकर पहरेदार उन्हे पकडकर कोतवाली ले गया। वहा कोतवाल के पूछने पर भी जब उन लोगो ने कोई जवाब नही दिया, तो उन्हे कोडे लगाने का हुक्म मिला। उनमे से एक, जो कोडो की मार नही सह सका, जोर से रो उठा। तब वे तीनो बोल उठे—बस तुम्ही घी लेने जाओ। इससे कहावत का अर्थ है किसी काम मे मूर्खतापूर्ण हठ।
(२) एक दूसरी कथा है कि एक बार चार मनुष्यो ने मिलकर खिचडी पकाई। जब वे खाने बैठे तो एक ने कहा—तुम लोग खिचडी मे घी डालना

भूल गए। इस पर तीनो बोल उठे—हा हा, तुम्हीं जाकर ले आओ। इससे कहावत का मतलब यह हुआ कि जो सलाह दे, वही उस काम को करे भी।

जो भादों से बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय

भादो मे वर्षा होने से अकाल रोता है, अर्थात पैदावार अच्छी होती है।

जो भूखे को देत है, जथा शक्ति जो होय।
ता ऊपर सीतल बचन, लखे आत्मा सोय।

जो भूखे को भोजन देता है, वही सच्चा दयावान पुरुष है।

जो मन मे बसे सो सुपने दसे

मन मे जो इच्छा होती है, वह सपने मे (पूरी हुई) दिखाई देती है।

जो मां से सिवा चाहे सो डायन

मा से अधिक प्रेम कोई कर नही सकता। उचित से अधिक स्नेह कोई दिखावे, तो समझना चाहिए कि वह बनावटी है।

जो मेरे सो तेरे, काहे दात निपोरे

ईश्वर ने सबको एक-सा पैदा किया है। जैसे भीतर से हम नगे है, वैसे ही तुम भी हो , इसमे हँसने की कौन-सी बात ?

जो मेरे हैं सो राजा के नहीं

धन सम्पत्ति का अभिमान करनेवाला।

ज़ोर की लाठी सिर पर

जबर्दस्त की लाठी सिर ही पर पडती है।

ज़ोर के आगे जब्र नहीं चलती

ज़बर्दस्त को चोट से कोई हानि नही पहुचती।

ज़ोर थोड़ा, गुस्सा बहुत

कमजोर को बहुत गुस्सा आता है।

ज़ोर न जुल्म, अक्ल की कोताही

ज़ोर या जुल्म इतना कष्टदायक नही होता, जितना मूर्ख होता है।

जोरू का घघला बेचकर तंदूरी रोटी खाई है, (मु०)

स्वार्थीपन या पेटूपन की हद।
घघला =लहगा।

जोरू का मरना और जूती का टूटना बराबर है

जूती पुरानी हो जाने पर नई ख़रीदी जा सकती है, उसी तरह औरत के मरने पर दूसरी शादी भी फौरन की जा सकती है।
(पुरुष-प्रधान समाज की बौखलाहट भरी उक्ति।)

जोरू का मरना, घर का ख़राबा

स्त्री के मरने से घर बर्बाद हो जाता है।

जोरू का मुरीद

औरत का गुलाम।

जोरू खसम की लड़ाई क्या

होती ही रहती है।

जोरू खसम की लड़ाई, दूध की मलाई

पति-पत्नी का झगड़ा तो एक मजे की चीज़ है, कोई विशेष बात नही।

जोरू टटोले गठरी, और मां टटोले अंतडी

जोरु को यही फिक्र रहती हे कि मेरे पति के पास कितना धन है और मा यही देखती रहती है कि मेरे लडके का पेट अच्छी तरह भरा है या नही। आशय यह कि स्त्री धन चाहती है और मा अपने पुत्र का स्वास्थ्य।

जोरू न जाता, अल्लाह मियां से नाता

अविवाहित या फक्कड के लिए क०।

जो सादी चाल चलता है, वह हमेशा खुशहाल रहता है

सादगी से रहनेवाला सदा सुखी रहता है।

जो साधु की माने बात, रहे अनद वह दिन रात

सज्जन पुरुष की बात माननी चाहिए।

जो सिर उठाकर चलेगा, सो ठोकर खायेगा

अहकारी को नीचा देखना पडता है।

जो सेवा करे सो मेवा पावे

सेवा का मीठा फल मिलता है।

जो सोवे उसका पडवा, जो जागे उसकी पड़िया

सोनेवाले को पडवा और जागनेवाले को पडिया मिलती है, जो कीमती होती है।
सचेत रहनेवाला मुनाफे मे रहता है।
दे०—जागते की कटिया।

जो हाड़ी मे होगा सो रकावी मे आवेगा

मन की वात प्रकट होकर रहेगी। अथवा जो वात सामने आने को है, वह तो आकर ही रहेगी, उसके लिए परेशान होने की ज़रूरत क्या?

जौक में शौक, दस्तूरी में लड़का

खुशी मे शौक और मुफ्त मे लडका। जव केवल आनद के लिए कोई काम किया जाए और उसमे लाभ भी हो, तव क०।

जौक=किसी वस्तु से प्राप्त होनेवाली प्रसन्नता।

जौ के खेत कडुआ उपजे

जव किसी घर मे कोई लडका वहुत अयोग्य निकले, तव क०।

कडुआ या कुडुआ=जौ, गेहू आदि की एक वीमारी, जिसमे दाना सडकर काला पड़ जाता है।

जौ को गये, सतुआनी को आये, (पू०)

कोई दूसरे के यहा से जौ माग कर लाया, तो वह उसके यहा सत्तू खाने आ गया।

(अपनी कोई थोडी चीज देकर वदले मे वहुत चाहना।)

जौ फरोश, गंदुमनुमा, (फा०)

वेचता जौ और दिखलाता गेहू है। धूर्त्त मनुष्य।

जौ ले दलिद्दर दादा छीपा लावत, तव ले हमरा भुईं में दो

जव तक दारिद्रय देव छीपा लाते है, तव तक हमे जमीन मे ही (खाने को) दो।

वहुत गरीवी।

छीपा=वास का थालीनुमा वर्तन।

जौहर को जौहरी पहचाने

गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

ज्यादा जीकर क्या आकवत के वोरिये समेटोगे?

ज्यादा जीकर क्या और भी पाप कमाओगे?

(वूढे आदमी से, जिसे जीने की ज्यादा हविस हो, व्यग्य मे क०।)

आकवत=मरने के वाद की स्थिति, परलोक।

ज़ियारते वुज़ुर्गां कफ़ारह-ए-गुनाह

वडे-वूढों का सम्मान करने से पापो का क्षय होता है।

ज्यों-ज्यो वाव वहे पुरवाई, त्यो-त्यो घायल अति दुख पाई

पुरवाई चलने पर घाव या चोट का दर्द वढता है।

ज्यो-ज्यो भीजे कामरी, त्यो-त्यो भारी होय

(१) जव किसी आदमी पर कर्ज वहुत हो जाता है, और वह उसका व्याज भी नही दे पाता, तथा कर्ज़ का वोझ वढता ही जाता है, तव क०।

(२) ज्यो-ज्यो उम्र वढती है, त्यो-त्यो पापो का वोझ भी वढ़ता जाता है, यह अर्थ भी होता है।

ज्यों-ज्यों मुरगी मोटी हो, त्यों-त्यों दुम सुकड़े

कजूस के पास जितना धन वढता जाता है, उसकी कृपणता भी उतनी ही वढती जाती है।

ज्यो-ज्यो लिया तेरा नाम, त्यो-त्यो मारा सारा गाव

ज्यो-ज्यो मैंने आपका नाम लिया, त्यो त्यो गाव-वालो ने मुझे और भी मारा।

(किसी अत्याचारी अफसर के सवध मे कहा गया है।)

ज्यो ही कहा, त्यो ही किया

तुरत आदेश मानना।

ज्ञान वढे सोच से, रोग वढ़े भोग से

चिंतन से ज्ञान वढता है, और आहार-विहार मे असयम से रोग।

झगड़ा झूठा, कब्जा सच्चा

अधिकार ही सच्चा है। कानून की दृष्टि मे भी चीज़ जिसके अधिकार मे होती है, उसी की मानी जाती है।

झगड़े की तीन जड, जर जमीन और जोरू

दुनिया के जितने भी झगडे है, वे सब जमीन, जायदाद और स्त्री इन तीन चीजो को लेकर ही होते है।

झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी

जल्दी का काम अच्छा नही होता।

झड़बेरी का कांटा
जो ऐसा चिपटे कि उससे पीछा छुडाना मुश्किल हो जाए।
(झडवेरी का काटा वडा तेज और टेढा होता है और चुभ जाने पर बहुत कष्ट देता है।)

झड़बेरी के जंगल मे बिल्ली शेर
क्योकि काटो की वजह से उसे वहा कोई आसानी से पकड़ नही सकता।

झाट उपाड़े से मुरदा हलका नहीं होता
नाम मात्र के प्रयत्न से कोई वडी मुसीवत दूर नही होती।

झाड़ बिछाई कामली और रहे निमाने सोय
फकीरो की आवाज़।
निमाने=नीचे।

झाड़ भी बनिये का बैरी है
क्योकि वहा चोर छिपे रहते है। वनिये से सब नाराज़ रहते है।

झींगुर बैठे बगुचा पर, कहस हम ही मालिक है, (पू०)
झीगुर सूती कपडों को वडी हानि पहुचाता है। अनधिकारी ढग से कब्जा।
बगुचा=कपडे की गठरी।

झुके जो कोई उससे झुक जाइये, रुके आपसे उससे रुक जाइये
जो विनम्र बने, उसके साथ और विनम्र बन जाना चाहिए, जो झगडा करने से स्वय ही हाथ खीच ले, उसके साथ फिर झगडना नही चाहिए।

झूठ कहे सो लड्डू खाय, सांच कहे सो मारा जाय
दुनिया मे झूठो की ही कद्र है।

झूठ की नाव मझधार डूबती है
झूठ का अन्त मे भडाफोड होता है।

झूठ के पांव नहीं होते
झूठ परीक्षा मे ठहरता नही। कलई खुल जाती है।

झूठ न बोले तो अफर जाय
झूठे से क० कि क्या झूठ वोले विना तुम्हारा काम नही चलता?
अफरना=भर जाना, फूल उठना।

झूठ न बोले तो पेट फट जाये
दे० ऊ०।

झूठ बराबर पाप नहीं
स्पष्ट।

झूठ बोलना और खे खाना बराबर है
झूठ वोलना एक वहुत घृणित कार्य है।
खे=विष्ठा, मल।

झूठ बोलने मे रक्खा क्या है?
झूठ बोलना व्यर्थ है।

झूठ बोलने मे सर्फा क्या
(१) झूठ ही बोलना है, तो उसमे किफायत क्या?
(२) झूठ बोलने मे कुछ खर्चा नही होता, यह अर्थ भी होता है।
सर्फा=कम-खर्ची।

झूठ बोलनेवालो को पहले मौत आती थी, अब बुखार भी नही आता
झूठ वोलनेवाले से मज़ाक मे क०।

झूठ बोलू तेरे मुंह पर
मेरी इतनी हिम्मत नही कि तुम्हारे सामने झूठ बोलू।

झूठ से काम नहीं चलता, (व्य०)
झूठा सफल नही होता।

झूठा जूठ से बुरा जो सोने का होय
झूठ हर हालत मे बुरा।

झूठा मरे न शहर पाक होय
झूठो से ही शहर गदा रहता है।

झूठी बात बना ले, पानी मे आग लगा ले
वहुत धूर्त्त आदमी।

झूठ का मुह काला, सच्चे का बोलबाला
झूठे की हमेशा हार होती है, सच्चे की जीत।

झूठे की कुछ पत नहीं, सज्जन कुछ न बोल।
लखपती का झूठ से, दो कौडी हो मोल।
झूठे का कोई विश्वास नही करता।

झूठे की नहीं वह बढती
झूठा कभी तरक्की नही करता।

झूठे के आगे सच्चा रो मरे

झूठे के आगे सच्चा हार मान लेता है।

झूठे के मुंह मे बू आती है

झूठा घृणित जीव है।

झूठे को घर तक पहुंचाना चाहिए

(१) जिसमे उससे फिर पाला न पडे। अथवा
(२) झूठे को तभी छोडे, जब उसके मुह से सच निकलवा ले।

झूठे घर को घर कहे, सच्चे घर को गोर।
हम चाले घर आपने (और) लोग मचावें शोर।

स्पष्ट। वैराग्य की उक्ति।

झूठे जग पतयाय

(१) इस ससार मे झूठो का ही लोग विश्वास करते है। अथवा
(२) झूठे ससार को लोक पतयाते है, अर्थात सच्चा करके मानते है।
(वेदान्तियो का यह सिद्धान्त है कि ससार माया है।)

झूठे हाथ से कुत्ता भी नही मारता

कजूस के लिए कहना।
(झूठे हाथ मे भोजन का कुछ-न-कुछ अश लगा रहता हे। इसलिए भाव यह है कि भोजन के वाद हाथ मे जो अन्न लगा है, कजूस को उनके भी नष्ट होने का डर रहता है। कहावत का रूप यह भी हो सकता है कि झूठे हाथ से कुत्ता भी नही मारना चाहिए, जो ठीक जान पडता है।)

झूठो का घर नहीं वसता

झूठा कभी खुशहाल नही हो पाता।

झूठो का वादशाह

वहुत झूठा।

झोपडो मे रहे, महलो का ख्वाब देखे

अपने वूते के वाहर के ऊचे ख्याल वावना।

झोटे-झोटे टक्करें लड़े, झुडियो का नाश हो

भैंसे तो लडे, पौधो का नाश हो।
वडो की लडाई मे छोटे व्यर्थ मारे जाते है।

टंटा मत कर जव तलक विन टटे हो काम।
टंटा विस की वेल है, या का मत ले नाम।

विना झगडे के काम वन जाए, तो झगडा नही करना चाहिए। झगडा वुरी चीज़ है।

टका कराई, और गंडा दवाई

दवा कराने के लिए तो (वैद्य को) एक टका दिया, पर दवा केवल पाच ही कौडी की मगाई।
(जहा करना चाहिए, वहा खर्च न करके दूसरी मद मे अधिक खर्च करना।)

टका रोटी अब ले, चाहे तब ले

इतना कभी ले लो। इससे अधिक की आशा मत करो।

टका-सा जवाव दे दिया

साफ इन्कार कर दिया।

टका हो जिसके हाथ मे, वह वड़ा हे जात मे

पैसेवाले का ही सम्मान सव जगह होता है।

टका का सारा खेल है

दुनिया के सव काम पैसे से ही होते हैं।

टके की मुर्गी, छ॰ टके महसूल

जितने की चीज नही, उतने से अधिक उस पर खर्च हो जाना।

टके की लौंग, वाननी खाय, कहो घर रहे कि जाय?

वनियो पर ताना है। वे प्राय कजूस होते हैं। उनकी स्त्री अगर दो पैसे रोज़ की लौंग खा जाए, तो काम कैसे चलेगा?

टके तीतर गइला पर, पाच रुपैया भइला पर

गरीव को कोई चीज़ दो पैसे मे भी उतनी ही महगी जान पडती है, जितनी अमीर को पाच रुपए मे।
गइला पर=न होने पर। भइला पर=होने पर।

टट्टर खोल निखट्टू आया, (स्त्रि॰)

अकर्मण्य पति के लिए उनकी स्त्री का कहना।

टट्टी की ओट शिकार खेलते हैं

धोखा देते हैं। छिपकर वुरा काम करते हैं।

टट्टू को कोड़ा और ताजी को इशारा

मूर्ख मुश्किल से समझता है, समझदार इशारे से ही समझ जाता है।

ताजी=घोडो की एक किस्म; अरबी घोडा।

टपके का डर है

वारिश मे घर के टपकने का डर है। जव किसी के मन मे कोई ऐसा खास डर समा जाए कि जिसकी वजह से वह कोई काम न कर सके, तव क०। (इसकी कथा है कि एक बूढा सिपाही, जिसने कभी भले दिन देखे थे, अपने सड़ियल टट्टू पर सवार हो कही जा रहा था। शाम को वह एक जगल मे जहा शेर, भालू आदि हिंसक जतुओ का डर था, एक वुढिया की झोपडी मे ठहर गया और पूछने लगा कि यहा किसी बात का डर तो नही है। वुढिया वोली—सरकार, डर तो किसी बात का नही है, अगर है तो टपके का है। झोपडी के पीछे एक शेर खडा यह सब सुन रहा था। उसने समझा कि 'टपका' कोई मुझसे भी जवर्दस्त जानवर है, जिसके सामने मेरे डर की कोई परवाह ही नही की गई। सयोगवश आधी रात को पानी वरसा, जिससे सिपाही का घोडा खूटे से छूट गया। सिपाही अधेरे मे घोडा खोजने गया तो उसके हाथ शेर पड गया। वह उसे ही टट्टू समझ वाधकर झोपडी ले आया और खूटे से बाध दिया। शेर भी 'टपका' समझ उससे कुछ न वोला। सुवह होते ही यह वात तमाम मे फैल गई कि किसी ने एक शेर को रस्सी से वाध रखा है। राजा ने जव यह खवर सुनी तो वह स्वय उस दृश्य को देखने आए और सिपाही पर इतने प्रसन्न हुए कि उसे वहुत-सा इनाम देकर फौज का सरदार वना दिया।)

टहल करो फकीर की, देवे तुम्हे असीस।
रैन दिना राजी रहो, जुग में विस्वा बीस।

स्पष्ट।

टहल करो मां-बाप की, हो संपूरन आस।
या
टहल से जो फिरें नरक उन्हीं का वास।

स्पष्ट।

टहल न टकोरी, लाओ मजूरी मोरी

काम कुछ न करना, मुफ्त का मागना।

टहलिये को टहल सोहे, बहलिये को बहल सोहे

जिसका काम उसी को शोभा देता है।

टांका पाना मिल गया

समझौता हो गया, दो आदमियो मे आपस का झगडा खत्म हो गया और वे फिर मित्र वन गए। टाका पाना=कपडे का जोड़, सीवन।

टांकी बज रही है

मकान तैयार हो रहा है। किसी की उन्नति देखकर क०। (टाकी से पत्थर काटते-छाटते है और उसकी आवाज होती है।)

टाग उठे ना, चढल चाहे हाथी

शक्ति से बाहर काम करने का प्रयास करना।

टांग के नीचे से निकाल दिया

नीचा दिखा दिया, कावू मे कर लिया।

टांग पकड़ कर लाये और पूंछ पकड़ के बहा दिया

किसी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करना।

टांटे से नाटा भला, जो देवे तुरत जवाव।
वह टांटा किस काम का, जो बरसो करे खराव।

टटा (झगडा) करनेवाले से तो नट जानेवाला अच्छा। वह झगडा किस काम का जिससे समय नष्ट हो।

नाटा=वादे से पलट जानेवाला।

टाट, कामला, दोलड़ा, तीनो जात गुलाम,
जित चाहे तित बैठकार, तुरत करो विसराम। (ग्रा०)

टाट, कबल और दोहर तीनो वडे काम की चीजे है, जहा चाहे विछा लो और आराम करो। (इनके खराव होने का डर भी नही रहता।)

टाट कामले घर मां घाले, बाहर वतावे शाले दुशाले, (ग्रा०)

झूठी शेखी वघारनेवाले के लिए क०।

कामले=कवल।

घर मा घाले=घर मे खाने को नही।

टाट के अंगिया, मूज की तनी, देख मेरे देवरा मै कैसी बनी? (स्त्रि०)

(१) जव कोई औरत अपनी भद्दी पोशाक सबको दिखाती फिरे, तो उसको ताने मे. ।

(२) भद्दे ओर वेतुके काम के लिए भी व्यग्य मे कहा जा सकता है।

टायर, टट्टू, गज, गऊ, पूत, मीत, धन, माल।
कोऊ सग न जात है, जब लै जिऊ निकाल।
मरने पर कुछ भी साथ नही जाता।
टायर=घोडा।

टायर भला न लांगड़ा, रूख भला न झागड़ा
लंगड़ा घोडा अच्छा नही, और न कटीला पेड ही।

टाल न भूखे को कभी, जो दे तुझे खुदा।
आधो मे से पास जो, उसे बांट कर खा।
स्पष्ट।

टाल बजा के मागे भीख; उसका जोग रहा क्या ठीक ?
जो घटा बजाकर भीख मांगे उसकी साधना तो व्यर्थ है।
(घटा बजाकर मागनेवाले साधुओ पर व्यग्य।)

टाल बता उसको न तू, जिससे किया करार।
चाहे हो बैरी तेरा, चाहे होवे यार।
किसी के साथ वायदा करके उसे फिर धोखा नही देना चाहिए, चाहे वह शत्रु हो या मित्र।

टालमटोला मत करे, किये बचन भुगताय।
जो नर बचनो से फिरे, वह पत देत गवाय।
वचन देकर पूरा करना चाहिए, टालना ठीक नही। वादाखिलाफी करनेवाले पर से लोगो का विश्वास उठ जाता है।

'टिकटिक' समझे 'आआ' समझे; कहे सुने से रहे खड़ा।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, अस मानुस के बैल भला।
जड बुद्धि मनुष्य के लिए क०।

टिकुला सदुर गेल तो खाने मे भो वज्जुर पड़व (स्त्रि०)
कोई और आराम न मिले तो क्या भरपेट अन्न भी न मिलेगा ? स्त्री अपने अकर्मण्य पति से कह रही है, कोई नौकर भी मालिक से कह सकता है।

टिड्डी का आना काल की निशानी, (कृ०)
क्योकि टिड्डी जहां जाती है, वहां फसल नष्ट कर देती है।

टीमटाम की पगड़ी बांधी, वह भी सदका जोरू का।
नेक पाक का चोका दीना, गोबर गाय-गोरू का।
जोरू के दहेज मे से कपडा लेकर बाकी पगडी बाध रखी है, और गाय के गोबर से लीपकर जगह को पवित्र करते है।
(अ-हिन्दुओ का हिन्दुओ पर कटाक्ष।)

टुक जिया तो क्या जिया
थोडे दिनो का जीवित रहना किस काम का ?

टुक-टुक करके मन भर खावे, तनक बेगमा नाम बतावे, (स्त्रि०)
नाम तो सुकुमार बेगम है, पर थोड़ा-थोडा करके मन भर खा जाती है।

टुकड़ा तोड़ जवाब देना
(१) सक्षेप मे जवाब देना। (२) साफ इन्कार कर देना। (३) ऐसा जवाब देना कि फिर कुछ कहा ही न जा सके।

टुकड़े खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए, (स्त्रि०)
ऐसा काम करना, जिसमे केवल खाने को मिलता रहे, और कुछ लाभ ही न हो।

टुकड़े दे दे बछड़ा पाला, सींग लगे जब मारन आया
कृतघ्न व्यक्ति।

टुकड़ों का पाला है
किसी के प्रति उपेक्षा और घृणा मे क०।

टूंट न रस ले बालके, सबसे मिलकर चाल।
टूंटा ढोबर देत हैं गाव गली मे डाल।
सबसे मिलकर चलना चाहिए, बिगाड करना ठीक नही।
जो टूट (बिगाड) करता है, उसे लोग इस तरह त्याग देते है, जैसे टूटी हाडी गली मे फेंक दी जाती है।

टूटले तेली, तो कमर मे अधेली
बिगड़ी हालत मे भी तेली की कमर मे अधेली रहती है।
(तेली प्राय मालदार होते है।)

टूटा मन रह टोल सू, राह भार र बीच।
एक अकेले [illegible] को, सूझे ऊच न नीच।
यात्रा मे या [illegible] मे अपने साथियो का सग नही

छोडना चाहिए। अकेला एक आदमी सब तरह के भले-बुरे की जाच नही कर सकता।

भीर=भीड, विपत्ति, झगड़ा।

टूटी कमान से डरें नौ जने

टूटे हथियार से भी लोग डरते हैं।

टूटी का क्या जोड़ना ? गांठ पड़े और न रहे

टूटी वस्तु कभी जुडती नही। (जोड़ने से) गाठ पड जाती है और फिर जुडने के बाद भी उसकी मजबूती का क्या ठिकाना ? मित्रो मे झगडा हो जाने पर मेल फिर मुश्किल से होता है।

टूटी की क्या बूटी ?

टूटी चीज जुडती नही। मौत की दवा नही।

टूटी की बूटी बता दो, हकीम जी !

दे० ऊ०।

टूटी टांग, पांव न हाथ, कहे 'चलू घोड़ो के साथ'

ऐसा काम करने की चेष्टा करना, जिसे अविक समर्थ भी न कर सके।

टूटी बाह गले पड़े

वांह जब टूट जाती है, तो उसे डोरी व पट्टी के सहारे वाध कर गले मे लटका लेते है।

(जब कोई घर का आदमी अथवा सगा-सबधी बिल्कुल गिरी हालत मे हो जाता है, और उससे किसी तरह पिंड भी नही छूटता।)

टूटी है तो किसी से जुड़ती नहीं, और जुड़ी है तो कोई तोड़ सकता नहीं

(१) मैत्री या पारस्परिक हित-सबध के लिए कहते हैं कि दो आदमियो के बीच अगर वह टूट गया है, तो फिर जुडता नही और नही टूटा तो उसे कोई तोड नही सकता।

(२) असाध्य रोगी को धैर्य बधाने को भी कहते है कि यदि आयु शेप है, तो कोई कुछ बिगाड नही सकता।

टूम कापडे जिस घर पावें, एक छोड दस बइयर आवें

जहा पहिनने-ओढने को मिले, वहा एक क्या दस औरते आ जाती हैं।

टूम कापडा=गहना कपडा। बइयर=स्त्री।

टूम बइयर को पत बधावे, टूम बुझे धनवत कहावे

गहनो से ही स्त्री की शोभा होती है, गहनो से ही लोग धनवान कहलाते है।

टूम विना बइयर है ऐसी, बिन पानी के खेती जैसी

गहनो के बिना स्त्री ऐसी ही है, जैसे बिना पानी के खेती।

टेंट आख मे, मुंह खुरदीला, कहे 'पिया मोरा छैल छबीला'

कोई एक स्त्री दूसरी स्त्री के पति को लेकर ताना मार रही है। अपनी चीज की बहुत डीग हाकना।

टेंट, बेरवा काल के मीत, खायें किसान और गावें गीत, (कृ०)

जगली फलो की प्रशसा मे, जिनसे दुर्भिक्ष मे गरीबो का काम चलता है।

टेंट=करील नामक वृक्ष का फल, टेंटी।

बेरवा=बेर।

टेक उन्हीं की रक्खे साईं,
गरब, कपट नहिं जिनके माहीं।

भगवान उन्ही की सहायता करता है, जिनमे अहकार और कपट नही होता।

टेर-टेर के रोवे, अपनी लाज खोवे

अपने नुकसान की बात किसी से न कहे, उससे इज्जत घटती हे।

टोटा करदे मुंह नू काला, टोटे वाल जगत दा साला, (प०, व्य०)

घाटा होने से मुह काला होता है, अर्थात बदनामी होती है। जिसका दिवाला निकल जाता है, उसे सभी लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

टोटा टाला ना टले, जब लग मिटे न लेख।
साध कहे रे बालके, लाख यतन कर देख।

स्पष्ट।

टोटे मारा बानिया, भर जोगी का भेस।
हांडे भिक्षा मागता घर-घर देस-विदेस।

बनिए को जब व्यापार मे घाटा होता है, तो वह लोगो का रुपया देने के डर मे साधु बन जाता है।

टोटे से हो घर का टोवा, टोटा गया तो खुला नसीवा

टोटे से घर वर्बाद हो जाता है, जव टोटा जाता रहता है, तो समझ लो, अव अच्छे दिन आ गए।

टोना टामक, टोटरू, छाने रहै न भूल।
यू परगट हो जगत मां, ज्यूं लश्कर की धूल।

टोना-टोटका या जादू-मत्र छिपे नही रहते।

टोलन मा घर टोल भला, सब बाजन मां ढोल भला

सव मुहल्लो मे घर का मुहल्ला ही अच्छा, अर्थात जहा अपना घर है वह मुहल्ला, और सव वाजो मे ढोल अच्छा।

गाव के उन आलसी व्यक्तियो का कहना, जो घर छोडकर कही जाना पसद नही करते।

ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है

क्रोधी के सामने शान्त प्रकृतिवाले मनुष्य की हमेशा जीत होती है।

ठंडा है वरफ से भी, मीठा है जैसे ओला।
कुछ पास हे तो दे जा, नहीं पी जा राहे मौला।

पानी पिलानेवाले कहा करते हैं।

ठडी छाव जो वैठती, जल जाता वह रूख।
जलती वलती मै फिरूं, वन मे देती कूक। (स्त्रि०)

किसी वियोगिनी अथवा वहुत ही वदनसीव की उक्ति।

ठग न देखे, देखे कलवार

ठग देखना हो तो कलवार देख ले। अर्थात कलवार पक्का ठग होता है। वह शराव मे पानी मिलाता है।

कलवार =शराव वेचनेवाला।

ठग न देखे, देखे कसाई, शेर न देखे, देखे विलाई

इनकी प्रकृति एक-सी होती है। जैसा ठग वैसा कसाई, जैसा शेर वैसी विल्ली।

ठठेरे ठठेरे वदलाई, (स्पं०)

लेन-देन के मामले मे, अथवा साधारण तौर से भी जव कोई व्यक्ति दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करता है, जैसा दूसरे ने उसके साथ किया, तव यह कहना कि भाई, यह तो ठठेरे-ठठेरे वदलाई की वात है। (एक ठठेरा आवश्यकता पडने पर दूसरे को वर्तन दे देता है और वदले मे दूसरा वर्तन ले लेता है, मुनाफा नही लेता। उसी से कहा० वनी।)

ठांव गुन काजल, ठाव गुन कालख

एक ही वस्तु, किसी एक स्थान पर अच्छी और दूसरे स्थान पर वुरी जान पडती हे। जो धुआ काजल वनकर नेत्रो की शोभा वढाता है, वही घर मे जम जाने पर कालिख समझा जाता है और साफ कर दिया जाता है।

(प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा पाती है।)

ठाकुर पत्थर, माला लक्कड, गगा जमुना पानी।
जव लग मन मे साच न उपजे, चारो वेद कहानी।

अगर मन मे विश्वास न हो, तो देवता पत्थर है, माला लकडी है, और गगा-जमुना का पानी मावारण पानी हे। विना श्रद्धा के धार्मिक आस्था काम नही देती। धर्म मे आस्था प्रधान है।

ठाली वनिया क्या करे, इस कोठी के धान उस कोठी मे धरे

जव कोई केवल समय काटने के लिए व्यर्थ का काम करे, तव क०।

ठीक नहीं ठेके का काम; ठेका दो मत खोवो दाम

ठेके का काम अच्छा नहीं होता।

ठीकरा हाथ मे होगा और भीख मांगता फिरेगा

एक प्रकार का शाप। किसी को कोसना।

ठीकरा हाथ मे और उसमे वहत्तर छेद

कोसना। दे० ऊ०।

(उर्दू के मशहूर शायर मिर्ज़ा ग़ालिव ने ठीकरे के वारे मे एक रोचक घटना लिखी है। उन्होंने एक दिन अपने नौकर को ठीकरे मे से अगारे उठाकर चिलम मे रखते देखा। वह अपने मालिक के लिए तमाखू भर रहा था और वडवडाता जाता था। मिर्ज़ा साहव ने उससे पूछा कि तू ठीकरे के सामने क्या कह रहा था? नौकर वोला—यही कह

रहा था कि आठ महीने से तनख्वाह नही मिली, मैं खाऊ क्या ?
मिर्जा साहब ने फिर पूछा—ठीकरे ने तुझे क्या जवाब दिया ? नौकर बोला—ठीकरे ने मुझसे कहा कि कोई फिक्र नही, मैं तुम्हारे साथ हू। अर्थात मुझे हाथ मे लेकर भीख मागना।)

ठीकरे का सुख, खरची का दुख
रहने को जगह तो बहुत, पर पैसे की तगी।
(प्राय वेश्याए कहा करती है, जब उन्हे पूरी उजरत नही मिलती।)

ठेंगा थाम, लबेदे हजार, (पू०)
मोटे डडे को ही सभालना चाहिए, पतले बेंत तो हजारो मिल जाएगे। मज़बूत का सहारा लेना चाहिए।

ठेका ले उस काम का, जो तुझसे हो ठीक
जिस काम को ठीक तौर से किया जा सके, उसी की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

ठेके का काम फीका
स्पष्ट।

ठेस लगे, बुद्ध बढ़े
नुकसान होने पर ही अक्ल आती है।

ठैर ठैर के चालिए, जब हो दूर पडाव।
डूब जात अधियाव मे, दौड चलंती नाव।
काम सावधानी से धीरे-धीरे करना चाहिए, जल्दबाजी से हानि होती है।
अधियाव मे=आधे रास्ते मे।
(इस सबध मे कछुआ और खरगोश की कहानी प्रसिद्ध है। कछुआ धीमी चाल से चलकर बाजी जीत गया और खरगोश, जो दौडकर चला था, हार गया।)

ठेंगे मार किया सिर गंजा, कहै 'मेरे हैं हाथ न पंजा'
डडे मारकर सिर गंजा कर दिया और कहता है—मेरे हाथ और पजे ही नही है। जब कोई अपनी हरकत से किसी को नुकसान पहुचाए और यह कहकर कि मै यह काम कर ही नही सकता, अपने को निर्दोष भी साबित करे, तब क०।

ठोंट चितेरा मन मे झींके
लूला चित्रकार मन मे पछताता है कि मैं तस्वीर नही बना सकता। जब कोई आदमी कारणवश किसी ऐसे काम को करने से वचित हो जाता है, जिसे वह बहुत अच्छी तरह कर सकता है, अथवा जो उसके मन के बहुत निकट है, तब क०।

ठोक बजा ले वस्तु को, ठोक बजा दे दाम।
बिगड़त नाहीं बालके, देख भाल का काम।
हर चीज देखभाल कर लेनी चाहिए, और देखभाल कर ही दाम देना चाहिए।

ठोकर खावे, बुद्ध पावे
दे०—ठेस लगे...।

ठोकर लगी पहाड़ की, तोडें घर की सिल
जब कोई मनुष्य बाहर से चोट खाकर आए और घर मे अपनी स्त्री अथवा दूसरे लोगो पर उसका गुस्सा उतारे, तब क०।

डढ़ियाला धन, (स्त्रि०)
लबी दाढीवाले पर व्यग्य। पुत्र के लिए भी कहा जाता है।

डर न दहशत, उतार फिरी खिशतक, (स्त्रि०)
निर्लज्ज औरत।
खिशतक=(फा० खिश्तक) पायजामा।

डरा सो मरा
अक्सर छूत की बीमारिया फैलने पर लोगो को साहस बधाने के लिए क०।

डरिए, रडी, तेरे दीदे से।
गाली।
दीदा=आख।

डरें लोमड़ी से, नाम दिलेर खा
कायर आदमी।

डरें लोमड़ी से, नाम शेर खा
दे० ऊ०।

डल्लू का दहसेरा
सवसे निराली चाल।
(डल्लू नाम का कोई वनिया था, जो पसेरी की जगह दससेरा रक्खा करता था।)

डाडा सी पूंछी, वुडहाने का रास्ता
(लोमडी की) वास की तरह लवी पूछ है और वुडहाने का रास्ता वहुत ख़राव है, कैसे तै किया जा सकेगा? काम करने के अयोग्य।
(वुडहाना किसी स्थान का नाम है।)

दाढ़ी ख़ुदा का नूर है, (मु०)
मुसलमानो मे दाढी पवित्र मानी जाती है, इसी से क०।

डावर डूवे जग तिरे, जग डूवे डावर तिरे, (कृ०)
जव डावर वरसात के कारण पानी से भर जाते है, तो ससार तर जाता है, अर्थात फसल अच्छी होने से लोग सुखी होते है, और जव जग डूवता है, अर्थात अकाल पडता है, तव डावर तर जाते है; यानी उनमे फसल अच्छी होती है।
भाव यह है कि नीची जमीन के खेत ही हमेशा अच्छे होते है।

डायन को वच्चा सौंपना
महान मूर्खता है। वह तो उसका भेजा और कलेजा खा जाएगी।

डायन को भी दामाद प्यारा
अपनी लडकी के कारण। आशय यह कि मा को लड़की वहुत प्यारी होती है।

डायन खाय तो मुह लाल, न खाय तो मुह लाल
क्योकि उसके मुह से खून तो लगा ही रहता है, अथवा उसके चेहरे से भयानकता तो टपकती ही रहती है। वदनाम आदमी के लिए। चाहे वुरा काम करे या न करे, पर हर मौके पर वुराई उसे मिलती ही है।

डायन भी दस घर छोडकर खाती है, (स्त्रि०)
दुष्ट से दुष्ट आदमी भी अपने पडोसियो का लिहाज़ करता है। जव कोई अपने ही लोगो को धोखा देता है।

डाल का चूका वदर और वात का चूका आदमी, ये फिर नही सभलते
हानि उठाकर रहते है।
वात का चूका = जो वचन देकर पालन न करे।

डाल का टूटा
विल्कुल ताजा (फल)।

डालते देर नहीं, सिर पर कोतवाल
गलत काम करते ही पकडा जाना।

डील डौल गुम्वज, आवाज़ दर फिस्स
देखने मे मोटे-ताजे, पर आवाज़ वहुत धीमी।

डुग-डुग वाजे, वहुत नीकी लागे; नौआ नेग मांगे उठा वैठी लागे, (स्त्रि०)
विवाह मे जव ढोल वजता है, तव तो वहुत अच्छा लगता है, पर नाई जव अपना हक मागता है, तो वगले झाकते हैं।

डूवते को तिनके का सहारा
डूवता आदमी तिनके को भी पकड लेता है। विपद्ग्रस्त को थोड़ा भी सहारा वहुत होता है।

डूवा वंस कवीर का उपजा पूत कमाल
ऐसी सतान का उत्पन्न होना, जो अपने पूर्वजो की चालढाल या धर्म को छोड दे।
(कहते है कवीर ने अपने पुत्र कमाल को वचपन मे यह उपदेश दिया था कि सव मनुष्यो को अपना भाई और सव स्त्रियो को मा, वहिन और लडकी के समान समझना चाहिए।
जव कमाल वडे हुए, तो पिता ने उनसे विवाह करने के लिए कहा। कमाल ने उत्तर दिया—ससार मे मुझे मा, वहिन और वेटी छोडकर और कोई स्त्री नही दीखती, जिनके साथ मैं विवाह करू। उन्होने फिर विवाह नही किया और कवीर का वश लोप हो गया। यह भी कथा है कि कमाल कवीर के वचनो का वहुत खडन भी किया करते थे। इसी पर किसी ने उपर्युक्त वात कही है।)

डूवी, कंथ, भरोसे तेरे, (स्त्रि०)
जव किसी के भरोसे रहे, और उससे सहायता न मिलने के कारण हानि हो जाए, तव क०।

कथ=कत, नाथ ।

डूबेगा भाड़ का भाड़, रात समय ने देसै झाड़, (लो० वि०)

रात मे झाड़ू नही देनी चाहिए, हानि होती है।

डेढ ईंट की मस्जिद जुदी ही वनाते है, (मु०)

(१) अपने मन की करते है। अथवा

(२) निराली चाल चलते है।

डेढ़ चावल अपने जुदे ही पकाते है

दे० ऊ०।

डेढ़ पाव आटा, पुल पर रसोई, (स्त्रि०)

व्यर्थ का दिखावा।

डोम और चना, मुंह लगा बुरा

इसलिए कि डोम धृष्ट होता है और चना आदमी खाते-खाते वहुत खा जाता है, जिससे हानि होती है।

डोम के घर व्याह, मन आवे सो गा

डोम एक गाने-वजानेवाली याचक जाति है। अकसर ये लोग वडे अश्लील गीत गाते है। इसीलिए कहा गया है।

डोम डोली, पाठक प्यादा

डोम तो डोली मे और पुरोहित पैदल। एक अशोभन कार्य। उस समय भी कहा जाता है, जव किसी मूर्ख मालिक को समझदार नौकर मिल जाए।

डोमनी का पूत चपनी वजाय,
अपनी जात आप ही जताय।

किसी का जातिगत स्वभाव नही जाता। डोमनी के लडके को ढोलकी वजाने को नही मिली, तो वह मिट्टी की चपनी ही वजाने लगा।

(जातपात पर आधारित विश्वास।)

डोमनी की लौंडी

गाली ।

डोम, वनिया, पोस्ती, तीनो वेईमान

स्पष्ट। जातिवाद का ज़हर भरा वचन।

पोस्ती=अफ़ीमची।

डोली आई डोली आई, मेरे मन मे चाव;
डोली मे से निकल पडा, भोंकडा विलाव।

वच्चो की तुकवदी ।

वहू जव सयानी और कुरूप आती है, तव क०।

डोली न कहार, वीवी भई हैं तैयार, (स्त्रि०)

कोई सवारी नही आई, कोई वुलाने नही आया, फिर भी वीवी जाने को तैयार।

किसी के यहा विना वुलाए जाना ।

ढड्ढो आई वाल थुतराए

गदी और वेढगी औरत ।

ढटींगर काहे मोटा, लाहा गने न टोटा

वेफिक्र के लिए, क० ।

ढटीगर=उद्धत, आवारा ।

लाहा=लाभ।

ढलती फिरती छाह है

मनुष्य की परिवर्तनशील स्थिति के लिए क०।

ढाक तले की फूहड़, महुवे तले की सुघड़, (स्त्रि०)

जो ढाक तले जाए, वह तो फूहड हे और जो महुआ तले जाए वह सुघड, क्योकि ढाक के नीचे न तो छाया मिलती है और न कोई खाने योग्य पदार्थ, जव कि महुआ तले ये दोनो प्राप्त होते हैं।

ढाके के वगाल, कूजे के कंगाल, (पू०)

जहा जो चीज वहुतायत से होती हो, उसका अभाव होना।

एक अनहोनी वात ।

(ढाका मिट्टी के वर्तनो के लिए प्रसिद्ध है।)

कूजा=झज्झर, सुराही।

ढाल तलवार सिरहाने, और चूतड वदीखाने, (पू०)

कायर आदमी। हथियार तो पास मे, पर लडने की हिम्मत नही।

ढाल वांधूं तलवार वाधूं, कसकै वाधूं फेटा।
वीच वजार मे डाका मारूं तो वाप का वेटा।

चट आदमी।

ढूढ लाओ, वता देंगे

वेवकूफ वनाना। टालमटोल करना।

ढँढस औ कद्दू, लानत ब हर दू, (फा०)
दोनो पर लानत।
जब दो आदमी आपस मे लड रहे हो, और वे दोनो ही एक से बुरे हो, तब क०।

ढोरे मरे, न कौवा खाय
न तो ढोर ही मरे, और न कौवा उन्हे खा ही सके। व्यर्थ की आशा।

ढोल के भीतर पोल
(१) (किसी स्थान पर) ऊपरी ठाट-बाट तो अच्छा पर भीतर धाधलबाजी।
(२) ऊपरी शानशौकत बहुत, पर भीतर खोखलापन।

ढाल न डफ, हर हर गीत
बिना साज-सामान के काम।

ढोलबाज दमामे बाजे, (स्त्रि०)
किसी मनुष्य के बुरे चालचलन की पहले थोडी और बाद मे बहुत बदनामी होना।

ढोवे के टोकरी, गावे के गीत, (पू०)
(१) हैसियत से बाहर काम करना।
(२) छोटे होकर बड की बराबरी करना।

तंगी के साथ फराख़ी और फराखी के साथ तगी लगी हुई हे
दुख के साथ सुख और सुख के साथ दुख लगा हुआ है।
तगी=सकीर्णता। गरीबी।
फराखी=विस्तार। अमीरी।

तंगी गई, फराखी आई
गरीबी गई, अमीरी आई।

तई की तेरी, खपडी की मेरी
तवे की रोटी तेरी, बर्तन की मेरी।
अपना ही मतलब देखना।

तक तिरिया को आपनी, पर तिरिया मत ताक।
पर नारी के ताकने, पड़ै सीस पर ख़ाक।
पराई स्त्री को बुरी नज़र से मत देखो।

तकदीर के आगे नहीं तदबीर की चलती
भाग्य के आगे उद्योग काम नही करता।

तकदीर के लिखे को तदबीर क्या करे।
गर हाकिम ख़फा हो, वज़ीर क्या करे।
स्पष्ट।

तकदीर सीधी है तो सब कुछ है
भाग्य अनुकूल होने से सब काम बनते है।

तकदीरों बाज़ी है
(१) जिसका भाग्य प्रबल होगा उसी की जीत होगी। अथवा (२) देखे जीत किसकी होती है।

तकले का-सा बल निकल गया
जब पिटने या सजा पाने पर किसी की अक्ल ठिकाने आ जाए, तब क०।
तकला=चरखे मे लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता है।
बल=ऐठन।

तकल्लुफ मे रेल चल दी
ज्यादा तकल्लुफ से नुकसान होता है।
(इस पर चुटकुला है कि दो शरीफ आदमी कही बाहर जाने के लिए स्टेशन पर पहुचे और टिकट कटा लिये। रेल भी प्लेटफार्म पर आ पहुची। एक ने दूसरे के प्रति शिष्टाचार दिखाने के लिए कहा—हज़रत सवार हूजिए। दूसरे ने कहा—नही, किबला पहले आप। पहले ने कहा—नही, नही, पहले आप बैठिए, तब मैं बैठूगा। आपस के इस शिष्टाचार मे तब तक रेल छूट गई।)

तकल्लुफ मे है तकलीफ सरासर
स्पष्ट। दे० ऊ०।

तकाज़े का हुक्का भी नहीं पिया जाता
हुक्का भी मागकर नही पीना चाहिए। उधार की चीज बुरी होती है।

तका पराया हाथ और गया नरक
(१) दूसरे के पैसे पर नज़र डालना बुरा है। अपना

(२) दूसरे का सहारा अच्छा नही।

तख़्ती पर तख़्ती मिया जी की आई कमबख़्ती, (लो० वि०)

तुकबंदी। मकतब मे पढनेवाले लडके कहा करते हैं। पट्टी पर पट्टी रखे जाने को लडके मास्टर के लिए हानिकारक समझते है।

तजल्ली को तकरार नही

प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की जरूरत नही।

तड़के उठ कर खाट से, छोड़-छाड़ सब काम।
माला लेकर हाथ मे, जप साईं का नाम।

स्पष्ट।

तड़के का भूला साझ को आये, तो भूला नहीं कहलाता

(१) सबेरे की भूली हुई बात अगर शाम तक याद आ जाए, तो वह भूली नही कहलाती। अथवा (२) सबेरे का खोया हुआ आदमी शाम तक घर लौट आए, तो वह खोया हुआ नही कहलाता। जब कोई मनुष्य बुरे रास्ते पर जाकर बाद मे सभल जाए, तब क०।

ततड़ी ने दिया, जनम जली ने खाया, जीभ जली न सवाद पाया, (स्त्रि०)

जब दो एक से अभागे एक दूसरे की सहायता करने बैठे, तो उससे कोई लाभ नही होता।

(जब कोई बहुत कम चीज खाने को दे, तब भी क०।)

ततडी=जली हुई; दुख से पीडित।

तत्ता कौर निगलने का न उगलने का

धर्म संकट मे पडना।

तत्ती खिचडी घी न पाया, अब का सियाला यू ही गवाया

अब का जाडा यो ही बीत गया, गरम-गरम खिचडी के साथ घी खाने को नही मिला। किसी ऐसे मनुष्य का कथन जो खाने का शौकीन हो, पर पैसे से तग है।

तन उजला, मन सावला, बगुले का सा भेक।
तोसे तो कागा भला, बाहर भीतर एक।

स्पष्ट। धूर्त्त या कपटी।

तन कसरत मे, मन औरत मे

दो परस्पर विपरीत काम एक साथ नही हो सकते। अथवा नही करना चाहिए।

तन का बैरी ताप है, मन का बैरी नेह।
जिस तन में ये दो रमे, तो गये जीव अरु देह।

स्पष्ट।

ताप=ज्वर।

तन की कर ले तुनतुनी और मन के कर ले तार।
फिर जस गा हरिनाम के, जो तुरत मिले करतार।

अपने शरीर रूपी इकतारे मे मन रूपी तार लगाकर ईश्वर का गुणगान कर, तो भगवान तुझे शीघ्र मिलेगे। भक्तो का कहना।

तनकी तनक सराय मे, नेक न पावो चैन।
सास नकारा कूच का, बाजत है दिन रैन।

मौत कब आ जाए, कुछ ठीक नही।

तनक=छोटी।

नकारा=नगाडा।

तन को कपडा, न पेट को रोटी

बहुत दयनीय हालत।

तन गुदड़ी, मन धागा, कोई कुछ ही लखे, मन लागा

फक्कडो का कहना।

तन तकिया मन बिसराम, जहा पड़ रहे वहीं आराम

शरीर तो तकिया है, और तन है सराय, बस जहा लेट रहे, वही आनद है। फक्कडो का कहना।

तन ताजा तो कलदर राजा

जब पेट भरा होता है, तो फकीर भी अपने को राजा समझता है। कलदर एक प्रकार के मुसलमान फकीर होते है।

तन दे, मन ले

मेहनत से काम करो, तो दूसरा आदमी प्रसन्न होगा।

तन्दुरुस्ती हजार न्यामत है

सबसे अच्छी वस्तु है।

तन पर चीर न घर मा नाज, दद-ससुरे का रोपा काज

बदन पर कपडा नही और घर मे अनाज नहीं, फिर भी ददिया ससुर का श्राद्ध करने की ठानी है। सामर्थ्य से बाहर काम करना।

तन पर सोहे कापडा और रन सोहे रनजीत।
बीर पुरुष वो ही भला (जो) सबमे राखे प्रीत।

कपडा शरीर पर शोभा देता है, और बहादुर लडाई के

तराजू से खड़े होकर न तोलो, बरकत जाती है, (लो० वि०)

तराजू से खडे होकर नही तोलना चाहिए, हानि होती है।

तल धार, ऊपर धार

मूसलाधार पानी बरसना।

तल मुंड़िया, पताल ढुंढिया

नीचा सिर किए पाताल खोजता है।

बहुत बडे धूर्त्त के लिए क०, जो हमेशा कुछ-न-कुछ शरारत सोचा करता है।

तलवरिया वाको मत कहो, जो खांड़ा लेकर हाथ।
रन से भागे एकला, छोड़ टोल का साथ।

जो लडाई के मैदान से अपने साथियो को छोडकर भागे, उसे सिपाही नही कहना चाहिए।

तलवरिया=तलवार पकडनेवाला, योद्धा।

तलवरिया वो ही भला, जो रन मे हाथ दिखाय।
बैरी के टुकड़े करे, और आप साफ बच जाय।

स्पष्ट।

तलवार का खेत हरा नहीं होता

(१) लडाई से जो खेत नष्ट हो जाता है, वह फिर हरा नही होता।

(२) सिपाही की खेती कभी सफल नही होती। क्योकि उसे फौज मे रहना पडता है, खेत कौन देखे?

(३) पशुबल मे बरकत नही।

तलवार का घाव भरता है, बात का घाव नही भरता

कोई ऐसी बात कह दे, जो मन पर असर कर जाए, तो वह कभी नही भूलती।

तलवार की आच के सामने कोई विरला ही ठहरता है

कठिन परीक्षा का मुकाबला थोडे लोग ही कर पाते है।

तलवार मारे एक बार, अहसान मारे बार-बार

क्योकि जिसका भी अहसान लो, वह हर मौके पर अहसान जताकर दवाता हे।

तलवो की-सी कहूं या जीभ की-सी

(किस्सा है कि किसी हाकिम ने एक मुकदमे मे वादी और प्रतिवादी, दोनो ही से रिश्वत ले ली। एक ने उसे मिठाई और फल भेट किए और दूसरे ने चुपके से उसके पैर तले एक अशर्फी खिसका दी। तब वह बडी चिंता मे पड गया और ऊपर की बात सोचने लगा।)

रिश्वत या घूस खानेवाले अकसर इस तरह की कठिनाई मे पड जाते है। कहा० उसी पर लागू होती है।

तलवों से लगी, सिर मे से निकल गई

क्रोध से भडक उठना।

तलवों से लगी है

(१) बहुत गुस्से मे हैं, चैन नही पड रहा है, बात दिल पर असर कर गई है।

(२) वेश्या के लिए भी प्रयुक्त कि वह पीछा नही छोडती।

तले का दम तले रह गया, ऊपर का ऊपर

कोई बुरी खबर सुनकर स्तब्ध रह जाना।

तले के दांत तले रह गये, ऊपर के ऊपर

मुह खुला ही रह गया, आश्चर्य-चकित हो गए।

तले घेरा, ऊपर सेहरा

कोरी शान।

(घेरा से यहा मतलब साफ मैदान से हे।)

तले टाग, ऊपर मांग

बुरी हालत हो जाना।

माग=सिर, स्त्री के सिर से मतलब है, जिसमे माग कढी होती है।

तले धरती, ऊपर राम

किसी असहाय का कहना।

तले पड़ी का मोल क्या

(१) सरल स्वभाव की स्त्री का कहना।

(२) जो वस्तु अपने अधिकार मे होती है, उसका कोई मूल्य नही होता।

(३) गई-गुजरी बात की चर्चा मे समय नष्ट करना ठीक नही।

तवा चढ़ा और जीव बढा

भोजन मिलने की उम्मीद हुई, और चित्त प्रसन्न हुआ।

तवा चढा बैठी मिसरानी, घर मे नाज, अगन ना पानी

विना साज-सरजाम के ही काम की तैयारी।

मिसरानी = भोजन बनानेवाली ब्राह्मणी।

तवा, तगारी, आग, जल, अन, ईंधन जित होय।
वारा दून उजाड मे भूखे मनुख न रोय।

घने जगल मे भी यदि ये सव चीजे मिल जाए, तो वहा भी मनुष्य भूखो नही मर सकता।

तगारी = चूल्हा।

तवा न कुंडा न चुलहारी, कहै नार मै हू भटियारी, (स्त्रि०)

न तो तवा है, न कुडा है, न चूल्हा ही है, फिर भी औरत अपने को भटियारिन वताती है।

(१) कोरी शेखी,

(२) अपने विषय मे झूठी वात।

तवा न तगारी, काहे की भटियारी

स्पष्ट। दे० ऊ०।

तवायफ के विछौने पर वना है काम सोने का।
न ठहरेगा, मुलम्मा है, अवस है जर के खाने का।

वेश्या के सवध मे कहा गया है।

अवस = (अ०) व्यर्थ। ज़र = सपत्ति, धन।

तवे की तेरी, तगारी की मेरी

अपना ही मतलव देखना।

तवे की तेरी, हाथ की मेरी

दे० ऊ०।

तवे पर की वूद

क्षणस्थायी, अथवा ऐसी वस्तु जो किसी काम की न हो।

(भोजन वनाते समय स्त्रिया तवा गरम हुआ या नही, यह जानने के लिए उस पर पानी की वूद डालती है। यदि वह वूद छन्न होकर तुरत सूख जाए तो तवा गरम हुआ समझा जाता है। उसी से उक्त मुहावरा वना।)

तवेले की बला वंदर के सिर

सवकी मुसीवत किसी एक के सिर।

(लोगो का विश्वास है कि तवेले अर्थात अस्तवल मे यदि वदर वाध दिया जाए, तो घोडो के सव रोग वदर को लग जाते है, और घोडे तन्दुरुस्त रहते है। इस उद्देश्य से वडे अस्तवल मे प्राय वदर वाध देते है, उसी प्रथा पर कहा० आधारित है।)

तसवीह फेरूं, किस को घेरूं, (मु०)

माला फेर रहे है, और मन मे सोच रहे है, आज किसकी जेव तराशू? वगला भगत की उक्ति या उस पर व्यग्य।

तस मुकुंद तस पादन घोड़ी, विध ने आन मिलाई जोड़ी, (पू०)

दोनो एक से (ऐववाले)।

तसलवा तोर कि मोर,

तसला तेरा है या मेरा? जवर्दस्ती किसी की चीज पर कब्जा जमाना।

(कहते है कि किसी समय मिथिला मे घोर अकाल पडा। लोग एक दूसरे का छीनकर खाने लगे। कोई अगर भात वनाता, तो दो-चार आदमी उसके पास जाकर कहते थे कि 'तसला तोर कि मोर।' यदि वह 'तोर' अर्थात 'तेरा' कहता था, तो उसे माफ कर देते, अन्यथा ('मोर' कहने से) छीन कर खा लेते थे।)

तात बाजी, राग पाया

तार वजा और राग समझ मे आ गया।

(आदमी के मुह से वात निकलते ही उसकी योग्यता या उसके मन की स्थिति का पता चल जाता है।)

तात = सारगी का तार।

तात-सी देह, पांव न हाथ, लडन चली सूरन के साथ

शक्ति से वाहर काम करने का दुस्साहस।

तांवा देखे चीतना, मन देखे व्योपार, (व्य०)

पैसा देखकर ही सौदा तै होता है, और आदमी देखकर ही व्यापार किया जाता हे।

ताक झांककर चाल मत, यह है वुरा सुभाव।
जार कहें या चोरटा, या फिर ऊदविलाव।

स्पष्ट।

जार = परस्त्रीगामी।

ताकत कमर मे चाहिए औलाद के लिए।
रखते नहीं हैं सिर्फ भरोसा मदार का।

अपने वूते से ही सव काम करना चाहिए, किसी का भरोसा नही।

(मदार साहब मुसलमानो के एक पहुचे हुए सत हो गए है। मकनपुर मे उनकी समाधि है।)

ताक पर बैठा उल्लू, मांगे भर-भर चुल्लू

ऐसे नीच आदमी के लिए क०, जो किसी बडे ओहदे पर पहुचकर अपने से बड़ो पर हुक्म चलाए।

ताज़ी को मारा और तुरकी कांपा

एक पर रोब जमा लेने से दूसरे पर भी रोब जम जाता है।

(ताजी और तुरकी घोडो की जातिया है।)

ताजी मार खाय तुरकी आश पाय

योग्य पुरुष तो कष्ट उठाए और नालायक मौज करे। आश = (फा०) भोजन।

ताजी मे कारीगरां मुआफ, (फा०)

कारीगर अगर किसी का अदब करना भूल जाए, तो उसका ख्याल नही करना चाहिए।

ताता, तीता, आमला, तीनों धात बिनास

गरम, चरपरी और खट्टी चीजे स्वास्थ्य को हानि पहुचाती है।

घात=धातु, शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ।

ताते दूध बिलार नाचे

गरम दूध देखकर बिल्ली नाचती है। परेशान होती है, क्योकि गरम दूध पी नही सकती।

ताना बाना, सूत पुराना

ताना और बाना दोनो ही पुराने सूत के है। व्यर्थ का परिश्रम।

तानाशाह दीवाना, जिसके चिट्ठी न परवाना

(१) तानाशाह मूर्ख है, जो अपना ठीक हिसाब नही रखते, बाद मे फिर झझट मे फसते हैं। अथवा (२) तानाशाह दीवान को चिट्ठी या परवाना लिखने की ज़रूरत नही पडती। उनका ज़बानी हुक्म ही परवाना है।

तानी घाट कि बानी घाट?

ताने (के सूत) मे कमी हो गई या बाने मे?

त्रुटि किस ओर है? दोनो ओर या एक ओर?

तामझाम लगे

लाओ तामझाम। झूठी या व्यर्थ की शान दिखाना।

(कथा है कि एक मूर्ख को कही से एक पालकी मिल गई। वह हर काम के लिए उसका उपयोग करता। यहा तक कि बाजार मे सौदा लेने जाता, तो पालकी पर बैठकर। उसकी स्त्री जब कहती: 'मिर्च नही है' तो वह कहता—'तामझाम लगे।' वह जब फिर कहती—'नमक मगाना तो भूल ही गई।' तो वह तुरत कहता—'तामझाम लगे।' प्राय मूर्खतापूर्ण दभ के लिए कहावत का प्रयोग होता है।)

ताल उझल कर उझले क्यार, जब बरसा हो पूरपार, (कृ०)

खूब जोर की वर्षा होने पर तालाबो और खेतो मे पानी बह निकलता है।

अथवा तालाबो और खेतो मे जब पानी उमड पडे, तो समझो कि खूब जोर की वर्षा हुई।

ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया

भोपाल के ताल की प्रशसा मे।

(भोपाल वर्तमान मध्यप्रदेश की राजधानी है। वहा का ताल प्रसिद्ध है। उक्त कहावत पूरी इस प्रकार है—ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया। गढ तो चित्तौरगढ और सब गढैया। राजा तो छत्रसाल और सब रजैया। रानी तो कमलापत और सब रनैया।

ताल न तलैया, बोओ सिंघाडे भैया, (कृ०)

बिना साधन और सामान के काम।

ताल मे चमके ताल मछरिया रन चमके तरवार। तंबुआ चमके सैयां पगडिया, सेज पै बिंदिया हमार।

ताल मे तो मछली चमकती है, और युद्धक्षेत्र मे तलवार, (लडाई के) तबू मे तो स्वामी की पगडी चमकती है, और सेज पर मेरे माथे की बिन्दी। अपने-अपने स्थान पर सब वस्तुए शोभा पाती है।

ताल सूख पटपर भयो, हंसा कहीं न जाय। मरे पुरानी पीत को, चुन-चुन कंकड़ खाय।

स्पष्ट। सच्ची लगन का उदाहरण।

पटपर=समतल, चौरस।

ताल से तलैया गहरी, साप से सपोला जहरी

कभी-कभी बेटा बाप से भी बढकर निकलता है।

तालियां बजा ले बन्नो, ब्याह होगा

किसी बात की खुशी मनाने के लिए हँसी मे बच्चो से क०।

ताली दोऊ कर बाजे

दो के बिना लडाई नही होती।

दे०—एक हाथ...।

ताली बिन कैसा ताला, जोरू बिन कैसा साला

स्पष्ट।

तावल मत कर कार मा धीरा धीर बना।
ताता भोजन बालके देवत जीभ जला।

काम मे उतावली नही करनी चाहिए।

तावला सो बावला, धीरा सो गभीरा

उतावले को पागल समझना चाहिए। जो धैर्य्य से काम ले, वही गभीर है।

ताश पर मूंज का बखिया, (स्त्रि०)

असगत काम।

ताश=एक प्रकार का सलमे-सितारे का रेशमी कपडा।

तित्तर वित्तर हो गये, सगर डोम के काम।
निमड़ गए जजमान, जब गाठ गिरह के दाम।

पैसे के बिना सब काम गडबड हो रहा है, किसी डोम याचक का अपने जजम । से क०।

तिनका उतारे का अहसान होता है

छोटे से छोटे काम का अहसान माना जाता है। सिर पर से कोई तिनका अलग कर दे, तो उसका भी अहसान है।

तिनका गिरा गयंद मुख, नेक न घटो अहार।
सो ले चली पिपीलिका, पालन को परिवार।

हाथी के मुह से तिनका (भोजन का कण) नीचे गिरने पर उसके आहार मे कोई कमी नही हो जाती। चीटी उसे उठाकर ले जाती है, जिससे उसके परिवार का पालन होता है।

बडे आदमियो के लिए जो बेकार हो जाती है, छोटो का उसी चीज से काम चलता है।

गयद=हाथी। पिपीलिका=चीटी।

तिनका हो तो तोड़ लूं, पीत न तोडी जाय।
पीत लगत टूटत नही, जब लग मौत न आय।

स्पष्ट।

तिनके की ओट पहाड़

आख के सामने तिनका रखने से पहाड भी छिप जाता है।

(१) कभी-कभी बहुत छोटे कारण से ही बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती है।

(२) छोटी चीज़ के पीछे कोई बडा रहस्य छिपा रहता है।

तिनके की चटाई, नौ बीघा फैलाई

जितना काम किया, उससे अधिक करने का दिखावा करना।

तिरिया चरित्र और चोर की घात; पाई पडे ना, कह गये नाथ

स्पष्ट।

तिरिया चरित्र जाने नहिं कोय, खसम मार के सत्ती होय

स्त्री के चरित्र को समझना बडा कठिन है, वह अपने पति को मार कर फिर उसके साथ सती होती है, अपनी निर्दोपिता सिद्ध करने के लिए।

(यह पुरुष-प्रधान समाज की कहावत है। पुरुष भी ऐसे होते है।)

तिरिया जात कमान है, जित चाहे तित तान

स्त्रिया धनुष की तरह होती हैं, उन्हे जहा चाहो, वहा झुका लो या जितना चाहो उतना झुका लो। (यह पुरुषो का दभ सूचक है।)

तिरिया तुझ मे तीन गुन, अवगुन है लख चार।
मगल गावे, सत रचे, और कोखन उपजे लाल।

स्त्री मे तीन गुण और लाखो अवगुण भरे हैं। वह मगलगीत गाती है, पति के साथ सती होती है और उसकी कोख से वीर पुत्र उत्पन्न होते है।

तिरिया तुझसे जो कहे, मूल न तू वह मान।
तिरिया मत पर जो चले, वह नर है निरज्ञान।

स्त्री जो कुछ कहे, उसे कभी नहीं मानना चाहिए।

जो स्त्री की सलाह पर चलता है, वह मूर्ख है। पुरुषप्रधान समाज की मूर्खतापूर्ण मान्यता।
मूल=बिल्कुल।

तिरिया तेरह, मर्द अठारह
लडकी की उम्र अगर तेरह हो, तो लडके की अठारह होनी चाहिए। विवाह के लिए यह जोड ठीक रहता है।

तिरिया तो है शोभा घर की, जो हो लाज रखावा नर की
स्पष्ट।

तिरिया थिरकत जो चले, वाको भला न जान।
जैसे हाथ लिखेर का, कापत हो नुकसान।
स्पष्ट।
लिखेर=लिखनेवाला, चितेरा।

तिरिया पुरख बिन है दुखी, जैसे अन विन देह।
जले बले है जीवड़ा, ज्यों खेती बिन मेह।
स्पष्ट।
पुरख=पुरुष।
जीवडा=जी, हृदय।

तिरिया बिन तो नर है ऐसा, राहबटाऊ होवे जैसा
स्त्री के विना पुरुष वैसा ही है जैसा राह-चलता रास्ता-गीर। वह वेठिकाने का होता हे।

तिरिया बिस की बेल हे, या सू बचकर चाल।
याका नेहा खोउत है, दीन, धरम, धन माल।
स्पष्ट। (पुरुषप्रधान समाज की दभोक्ति।)

तिरिया भली वही है भाई, जो पुरुषा संग करे भलाई
स्पष्ट।

तिरिया भी नर बिन है ऐसी, बिना धनी के खेती जैसी
पुरुष के विना स्त्री वैसे ही है जैसे विना मालिक के खेती नष्ट हो जाती है।

तिरिया रोवे पुरुष बिना, खेती रोवे मेह बिना, (कृ०)
स्पष्ट।

तिल की ओझल पहाड़
दे०—तिनके की. . ।

तिल गुड़ भोजन, तुरक मिताई, आगे मीठ पाछे कड़ुवाई
तिल और गुड के भोजन और मुसलमान की मित्रता ये पहले तो अच्छे लगते है, पर बाद मे कडवाहट पैदा करते हैं। यह कहावत मुसलमान मित्र पर कोई चिरन्तन सत्य नही। हिन्दू मित्र भी धोखेबाज़ हो सकते हैं।

तिलचोर सो बज्जुर चोर
चोरी-चोरी सब बराबर। छोटी चीज चुरानेवाले को भी शातिर चोर समझना चाहिए।
बज्जुर=वज्र जैसा, अर्थात बहुत बडा।

तिल, तीखुर, दाना, घी शक्कर मे साना; खाय बूढा हो जवाना
तिल, तवाखीर और पोस्तादाना इन तीन को घी शक्कर के साथ खाने से बूढा भी जवान हो जाता है। (स्वास्थ्य का नुसखा।)

तिल रहे तो तेल निकले
तेल तो तिलो से ही निकलता है, अर्थात पूजी के सुरक्षित रहने से ही कोई व्यापार चल सकता है। (ग्राहक जब किसी चीज़ के दाम कम करना चाहता है और उसमे कमी की गुजाइश नही होती, तब प्राय दूकानदार कहा करते है।)

तीज पडे खेत मे बीज, (कृ०)
सावन की तीज को खेत मे बीज पडता है। (सावन अर्थात जुलाई के महीने मे खरीफ की बुवाई होती है।)

तीतर के मुंह लच्छमी
हाकिम की जबान मे सब कुछ हे, वह जो कहेगा, वही होगा, ऐसा भाव प्रकट करने को क०। (तीतर की बोली से शकुन विचारते है। उसी से कहावत बनी।)

तीतर बायें बोल जा तो सगर कार हो ठीक।
दाहने बोलत ना भला, सांच जान यह सीख।
(लो० वि०)
पक्षी शकुन। तीतर का बाईं ओर बोलना शुभ और दाहिनी ओर बोलना अशुभ होता है।

'तीन कचौरी, नौ बराती, खाओ चूरमचूर।'
'अये, घरबसो, तेरे ब्याह है या लूटमलूट।'
'बदो जब करती है जब ऐसा ही करते, किसी के यहा ब्याह है, मालकिन कहती है—'नौ

बराती, ओर तीन कचौडिया है, लो, खूब डटकर खाओ।' तव उसकी यह उदारता देखकर दूसरी औरत कहती है कि 'अए घरवसी ! तेरे यहा व्याह है या लूट मची है यानी तू इतना अनापसनाप खर्च कर रही है।' तब वह जवाव देती है कि 'मै तो जव करती हू, तव ऐसा ही करती हू।'
(इन पक्तियो मे किसी कजूस के घर की दावत का मजाक उडाया गया है।)

तीन का टट्टू तेरह का जीन
जितने की कोई चीज नही, उसके लवाजमे मे उससे ज्यादा का खर्च।

तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है, (मु०)
अपराध करके जव कोई माफी मागे, तव प्राय वह कहता है।
वख्शता है=माफ करता है।

तीन टाग की घोड़ी, नौ मन की लदनी
किसी अयोग्य को कोई वडा काम सौप देना।

तीन तिकट महा विकट, चार का मुह काला, पाच हों तो भाला
स्त्रियो का विश्वास। तीन और चार की सख्या वुरी होती है, पाच तो वहुत ही बुरी सख्या है।

तीन तिरहुतिया मिले, पकना रह गया
जहा तीन तिरहुतिये इकट्ठे हो जाएं, वहा भोजन नही वन पाता।
(मैथिल ब्राह्मणो मे छुआछूत वहुत मानते है, उसी पर कटाक्ष है।)

तीन तिताला, चौथे का मुह काला
वच्चो की तुकवदी।

तीन तेरह हो गये
तितर-वितर हो गए। वर्वाद हो गए।

तीन थान, चौथा मैदान
स्थान की कमी होने पर क०।
थान=ढोरो के वधने की जगह, स्थान।

तीन थान, चौथो जान, उनका अल्लाह निगहवान
तीन लडके, चौथा मैं, उनकी ईश्वर रक्षा करे। अपनी असहाय अवस्था प्रकट करने को कह रहा है।
(थान का अर्थ अदद भी होता है, जैसे कपडे के तीन थान। यहा लडको से अभिप्राय है।)

तीन दिन क़ब्र मे भी भारी होते है, (मु०)
स्पष्ट।
(मुसलमानो का विश्वास है कि मरने के बाद तीन दिन तक मृतक को ईश्वर के सामने अपनी जिन्दगी का हिसाव देना पडता है। इसलिए कहा गया है कि कब्र मे तीन दिन मुसीवत के होते है।)

तीन दिन के छोकरा, हमे सिखावत वात।
जवले वह लिहे ठीकरा, तव ले मारब लात। (भो०)
तीन दिन का छोकडा, मुझे सिखाने चला है। जव तक वह (मुझे मारने को) पत्थर उठाएगा, तव तक मैं खीचकर लात मारूगा।
(धृष्ट लडके के सबध मे बूढे की उक्ति।)

तीन दिये और तेरह पाये, कैसे लोभ व्याज का जाय
सूदखोरो पर व्यंग्य।

तीन नरी मे तेरह गज
तीन वकरियो का चमडा फैलाने से तेरह गज हुआ। एक अद्भुत वात।

तीन पाव की तीन पकाई, सवा सेर की एक।
जेठ निपूता तीनो खा गया, मै संतोखन एक।
सवसे अधिक ले लेने पर भी यह कहना कि हमने तो वहुत ही कम लिया। तीन पाव की तीन रोटियो मे से एक सवा सेर की ज्यादा भारी है ही।

तीन पाव भीतर, तो देवता और पीतर, (हिं०)
पेट भरा होने पर ही धर्म-कर्म सूझता है।

तीन बुलाये तेरह आये, देखो यहा की रीत।
बाहरवाले खा गये (और) घर के गावें गीत।
जव किसी जगह विना वुलाए बहुत से फालतू आदमी पहुच जाए, तव क०।

तीन बुलाये तेरह आये, दे दाल मे पानी
दे० ऊ०।

तीन बुलाये तेरह आये, सुनो ज्ञान की वानी।
राघव चेतन यो कहे, तुम देव दाल मे पानी।
दे० ऊ०।
(यह ऊपर की कहावत का ही पूरा रूप है।)

तीन मे न तेरह मे, न सेर भर सुतली मे, न करवा भर राई मे

ऐसा व्यक्ति जो किसी गिनती मे न हो।

(किस्सा है कि किसी वेश्या ने अपने प्रेमियो को अलग-अलग कई श्रेणियो मे बाट रक्खा था। पहली श्रेणी मे तीन व्यक्ति थे, जिन्हे वह सबसे अधिक चाहती थी, फिर तेरह थे, फिर वे थे, जिनकी गिनती उसने सुतली मे गाठे लगाकर कर रक्खी थी, सबसे अत मे थे वे साधारण व्यक्ति, जिनके नाम का राई का एक दाना वह एक करवे मे डाल दिया करती थी। एक वार उसके यहा एक व्यक्ति आया और वोला कि मै पहले भी आया करता था और तुम्हे वहुत द्रव्य मैंने दिया है। पर वेश्या ने उसे नही पहचाना और अपने नौकर से कहा कि देखो यह किसमे है। तव उसने उक्त जवाव दिया।)

तीन लोक से मथुरा न्यारी

नियम या परपरा के विरुद्ध काम करने पर क०।

तीन है साह किसान के झाद, जाल और कैर, (कृ०)

दुर्भिक्ष पडने पर झाद, जाल और कैर इन तीन से किसान अपना पेट पालते है।

झाद=एक तरह की टोकनी, जिससे मछली पकडते हैं।

जाल=चिडिया और जगली जानवर फसाने का जाल।

कैर=खैर, जगली लकडी, जो ईधन के काम आती हे और जिससे कत्था वनता है।

तीनों त्रिलोक दिखाई दे गये

वहुत आनद आ गया। कष्ट के लिए भी कह सकते है।

तीर, कव्वे, तीर

धूर्त को सावधान करने के लिए क०।

तीर जुदाई आ लगा, दिया कलेजा छेद।
पी अपना परदेश मां, किससे कहिये भेद।

किसी विरहिणी की उक्ति। स्पष्ट।

तीर, तुरमती, इसतिरी, छूटत वस ना आय।
झूठ जो माने यह वचन, वे नर कूढ़ कहायं।

तीर, वाज और स्त्री, ये हाथ से वाहर निकलने पर फिर कावू मे नही [illegible]

तीरथ गये मुड़ाये सिद्ध

तीर्थ स्थान मे जाने पर मुडन करा ही लेना चाहिए।

(१) किसी एक काम से किसी जगह जाने पर यदि दूसरा काम भी वन रहा हो, तो उसे अवश्य कर लेना चाहिए।

(२) किसी काम को अगर हाथ मे ले, तो उसे फिर अच्छी तरह पूरा करना चाहिए, खर्च का मुह नही देखना चाहिए।

तीरथ, मूरत पूजकर, मत ना उमर गवाय।
पूजा कर करतार की, जो तुरत मुक्त हो जाय।

स्पष्ट। कवीरपथी साधुओ का कहना।

तीर न कमान, काहे के पठान, (मु०)

झूठी शेखी हाकने वाले से क०।

पठान से मतलव सिपाही से है।

तीर न कमान, मिया का अल्लाह निगहबान

दे० ऊ०।

तीर न कमान, मेरे चाचा खूब लडे।

दे० ऊ०।

तीवन विन ना रोटी सोहे, गूधे विन ना चोटी सोहे

विना चटनी के रोटी अच्छी नही लगती, विना गुथी चोटी भी अच्छी नही लगती।

तीसमार खा वने फिरते हे

जो अपने को वहुत समझता और झूठी शेखी हाकता फिरता है, उससे क०।

(कथा है कि किसी स्त्री का पति वडा निकम्मा और आलसी था। वह उससे रोज कहा करती थी कि तुम घर वैठे रहते हो, कुछ काम-धधा क्यो नही करते। स्त्री की वातो से तग आकर उसने एक दिन नौकरी की तलाश मे वाहर जाने का इरादा किया। उसकी स्त्री ने एक महीने के खाने लायक उसे लड्डू [illegible] ५। पर गलती से [illegible] कोई जहरीला [illegible] गया, जिससे [illegible] जहरीले हो [illegible] ने चलकर जव [illegible] मजिल मे [illegible] चोरो ने [illegible] पर उनके [illegible] ने के सिवा [illegible] निकला। [illegible] लड्डू [illegible]

खाया। उनको खाते ही वे सब के सब मर गए। जब सिपाही ने उनको मरा देखा, तो उन सबकी नाक काटकर अपने पास रख ली। सुबह होते ही यह बात चारो ओर फैल गई कि किसी आदमी ने तीस चोरो को मार डाला है। जब उस देश के राजा ने यह बात सुनी तो, पूरे किस्से की छानवीन की। पता चला कि वही तीस चोर थे, जिन्होने बहुत दिनो से राज्य मे उपद्रव मचा रक्खा था और जो पकडाई नही दे रहे थे। जब उस व्यक्ति ने राजा के पास जाकर कहा कि इन चोरो को मैने मारा है और ये उनकी नाके हैं, जो मैंने काट ली थी, तो राजा उसकी बहादुरी से बडा खुश हुआ और उसे तीसमारखा की उपाधि देकर अपना वजीर बना लिया।)

तीसरे दिन मुरदा भी हलाल हैं, (मु०)
कहते हैं कि मुसलमानो के धार्मिक विचारो के अनुसार कोई आदमी अगर तीन दिन का भूखा हो अथवा भूख से मर रहा हो, तो वह फिर कोई भी चीज खाकर अपना पेट भर सकता है।
(स०—आपत्तिकाले धर्मोनास्ति।)

तीसी के खेत मे जुलाहा मुतलाने, (पू०)
अलसी के खेत मे जुलाहे रास्ता भूल गए। जुलाहे अपनी सिधाई के लिए प्रसिद्ध है।
(कथा है कि कुछ जुलाहे कही जा रहे थे। रास्ते मे अलसी का खेत मिला। उसे नदी समझकर वे पार करने की तैयारी करने लगे। तब तक एक घुडसवार वहा आ गया, जिसने उन्हे किसी तरह समझाया कि यह तो अलसी का खेत है, नदी नही। तब वे उस रास्ते से निकले।)

तुई तो मुई, न तुई तो मुई
(गाय का) गर्भपात हो गया तो भी मरेगी, न हुआ तो भी मरेगी। हरहालत मे खराबी।

तुख़्म तासीर, सोहबत का असर
बीज का गुण और सोहबत का असर नही जाता। खोटे की खोटी सतान होती है और भले की भली।

तुझ पर पड़े जो औदसा, दिल बिच मत घबराय।
जब साईं की हो दया, काम तुरत बन जाय। (ग्रा०)
विपत्ति मे हिम्मत नही हारनी चाहिए।

तुझे पराई क्या पड़ी, अपनी निबेड तू
अपना काम छोडकर व्यर्थ दूसरे के झगडे मे नही पडना चाहिए।

तुनतुनी बजाते मियां खाते शक्कर घी, नौकरी की ऐसी तैसी, अब के बचे जी
किसी फक्कड सिपाही का कहना, जो लडाई पर जा रहा है।

तुम अत गये, हम अत कर आयो, मड़ो चून कुत्तन ने खाओ, (पू०)
तुम एक रास्ते से गए, हम दूसरे से गए, तब तक गुधा हुआ चून कुत्तो ने खा लिया। परिवार के लोगो मे झगडा होने पर दूसरे लाभ उठाते है।
अत=दूसरी जगह।

तुम काटो मेरी नाक और कान;
मै न छोड़ूं अपनी बान, (स्त्रि०)
हठी आदमी या औरत।

तुम किस खेत के बथुए हो?
मै तुम्हे कोई चीज़ नही समझता।
(बथुआ एक बहुत साधारण साग होता है।

तुम किस खेत की मूली हो?
दे० ऊ०।

तुमको हमसी अनेक है, हमको तुम-सा एक।
रवि को कमल अनेक हैं, कमलन को रवि एक। (स्त्रि०)
प्रेमिका का कहना अपने प्रेमी के प्रति।

तुम क्यो फटे मे पांव देते हो
क्यो पराये झगडे मे पडते हो?

तुम जानो तुम्हारा काम जाने
हमारी बात नही मानते, तो चाहे जो करो।

तुम डाल-डाल, हम पात-पात
हमारे सामने तुम्हारी चालाकी नही चलने की। हम तुमसे ज्यादा होशियार हैं।

तुम तो अकल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हो
उसे भगाने के लिए। जब कोई बिना सोचे

तीन मे न तेरह मे, न सेर भर सुतली मे, न करवा भर राई मे

ऐसा व्यक्ति जो किसी गिनती मे न हो।

(किस्सा है कि किसी वेश्या ने अपने प्रेमियो को अलग-अलग कई श्रेणियो मे बाट रक्खा था। पहली श्रेणी मे तीन व्यक्ति थे, जिन्हे वह सबसे अधिक चाहती थी, फिर तेरह थे, फिर वे थे, जिनकी गिनती उसने सुतली मे गाठे लगाकर कर रक्खी थी, सबसे अत मे थे वे साधारण व्यक्ति, जिनके नाम का राई का एक दाना वह एक करवे मे डाल दिया करती थी। एक बार उसके यहा एक व्यक्ति आया और बोला कि मै पहले भी आया करता था और तुम्हे बहुत द्रव्य मैने दिया है। पर वेश्या ने उसे नही पहचाना और अपने नौकर से कहा कि देखो यह किसमे है। तब उसने उक्त जवाब दिया।)

तीन लोक से मथुरा न्यारी

नियम या परपरा के विरुद्ध काम करने पर क०।

तीन हैं साह किसान के झाद, जाल और कैर, (कृ०)

दुर्भिक्ष पडने पर झाद, जाल और कैर इन तीन से किसान अपना पेट पालते है।

झाद=एक तरह की टोकनी, जिससे मछली पकडते है।

जाल=चिडिया और जगली जानवर फसाने का जाल।

कैर=खैर, जगली लकडी, जो ईधन के काम आती है और जिससे कत्था बनता है।

तीनों त्रिलोक दिखाई दे गये

बहुत आनद आ गया। कष्ट के लिए भी कह सकते है।

तीर, कव्वे, तीर

धूर्त्त को सावधान करने के लिए क०।

तीर जुदाई आ लगा, दिया कलेजा छेद।
पी अपना परदेश मा, किससे कहिये भेद।

किसी विरहिणी की उक्ति। स्पष्ट।

तीर, तुरमती, इसतिरी, छूटत बस ना आय।
झूठ जो माने यह बचन, वे नर कूढ कहाय।

तीर, बाज और स्त्री, ये हाथ मे बाहर निकलने पर फिर काबू मे नही आते।

तीरथ गये मुडाये सिद्ध

तीर्थ स्थान मे जाने पर मुडन करा ही लेना चाहिए।

(१) किसी एक काम से किसी जगह जाने पर यदि दूसरा काम भी बन रहा हो, तो उसे अवश्य कर लेना चाहिए।

(२) किसी काम को अगर हाथ मे ले, तो उसे फिर अच्छी तरह पूरा करना चाहिए, ख़र्च का मुह नही देखना चाहिए।

तीरथ, मूरत पूजकर, मत ना उमर गवाय।
पूजा कर करतार की, जो तुरत मुक्त हो जाय।

स्पष्ट। कबीरपथी साधुओ का कहना।

तीर न कमान, काहे के पठान, (मु०)

झूठी शेखी हाकने वाले से क०।

पठान से मतलब सिपाही से है।

तीर न कमान, मिया का अल्लाह निगहबान

दे० ऊ०।

तीर न कमान, मेरे चाचा खूब लडे।

दे० ऊ०।

तीवन बिन ना रोटी सोहे, गूधे बिन ना चोटी सोहे

बिना चटनी के रोटी अच्छी नही लगती, बिना गुथी चोटी भी अच्छी नही लगती।

तीसमार खां बने फिरते हैं

जो अपने को बहुत समझता और झूठी शेखी हाकता फिरता है, उससे क०।

(कथा है कि किसी स्त्री का पति बडा निकम्मा और आलसी था। वह उससे रोज़ कहा करती थी कि तुम घर बैठे रहते हो, कुछ काम-धधा क्यो नहीं करते। स्त्री की बातो से तग आकर उसने एक दिन नौकरी की तलाश मे बाहर जाने का इरादा किया। उसकी स्त्री ने एक महीने के खाने लायक उसे लड्डू बना दिए। पर गलती से उनमे कोई जहरीला कीडा मिल गया, जिससे सब लड्डू ज़हरीले हो गए। घर से चलकर जब वह पहली ही मजिल मे ठहरा, तो तीस चोरो ने उसे घेर लिया, पर उसके पास तीस लड्डुओ के सिवाय और कुछ नही निकला। चोरो ने तीसो लड्डू आपस मे एक-एक बाट

तुम्हारे चाटे तो रूख भी नही रहे है
धूर्त्त मनुष्य। जिसके पीछे पड गया, उसे वर्बाद करके छोडा।
(टिड्डिया जिस पेड पर वैठ जाती है, उसे चाटकर साफ कर देती हैं। उसी से मुहावरा लिया गया है।)

तुम्हारे पान का उगाल, हमारे पेट का आधार
गरीव का अमीर से कहना कि हम तो आपका जूठन खाकर ही रहते है। अत्यत विनम्रता दिखाना।

तुम्हारे पेट मे चींटे की गाठ है
तुम वहुत कम खाते हो।

तुम्हारे फरिश्तो को भी खबर नहीं है, (मु०)
फिर तुम कैसे जान सकते हो? अर्थात तुम्हे किसी वात का पता ही नही।
(मुसलमानो के अनुसार हर मनुष्य के साथ दो फरिश्ते रहते है, जो उसके प्रत्येक कार्य को देखते रहते है।)

तुम्हारे बैल, हमारे भैसा, तुम्हारा हमारा फिर साथ कैसा?
बैल भैस से जल्दी चलता है, इसलिए दोनो का साथ निभ नही सकता। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्य एक साथ नही रह सकते।

तुम्हारे भतार न हमारे जोय, अस कुछ करो कि बेटवा होय, (पू०)
रडुए का खूबसूरती के साथ विधवा से कहना कि मैं तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हू।
(दो निठल्ले आदमी एक दूसरे से कह सकते है कि भाई कुछ ऐसा किया जाए, जिससे पेट का धधा चले।)

तुम्हारे मरे देस खाक, हमारे मरे देस पाक
तुम्हारे मरने से देश वर्बाद हो जायगा, हमारे मरने से धरती का वोझ कम होगा।
वहुत अधिक विनम्रता दिखाना।

तुम्हारे मरे देस पाक, हमारे मरे देस खाक
मूर्खतापूर्ण दभ।

तुम्हारे मुह का उगाल, हमारे पेट का आधार
दे०—तुम्हारे पान का उगाल ।

तुम्हारे मुह में के दात है, यह तो कोई पूछता ही नही
आप हैं कौन, कोई यह भी नही पूछता।

तुम्हारे मुंह मे घी शक्कर
जव कोई अच्छी खबर सुनाए, तव क०।

तुम्हारे लडके भी घुटनियों चलेंगे? (स्त्रि०)
तुम कभी अपना वादा भी पूरा करोगे? अथवा क्या तुम कभी सच भी वोलोगे?

तुरई कद्दू, लानत हरदू
दोनो पर लानत। दोनो ही निकम्मी।

तुरक काके मीत, सरप से का प्रीत
स्पष्ट। जातिविद्वेष भरी वात।

तुरक, ततैया, तोतरा, ना यह किसी के मीत।
भीड़ परत मुंह फेर लें, राखें ना परतीत। (ग्रा०)
मुसलमान, वर्रे और तोता ये किसी की मुरव्वत नही करते। जातिविद्वेषमूलक।

तूरक हू हुए तो भी ना, (ए०)
मुसलमान भी हुए, तो भी नाही करती है, अर्थात तो भी अभीष्ट सिद्ध नही हुआ।

तुरकी तमाम हुई
तुरकी छाटना वद हो गया। घमड दूर हो गया।

तुरकी पीटे ताजी कापे
एक को दड देने से दूसरा भी सावधान हो जाता है।

तुरकी पीटे, ताजी के कान हो
दे० ऊ०।

तुरक की पोई तुरक ही खाओ;
वासी खा मत ओझ वढ़ाओ
ताजी रोटी ही खानी चाहिए। वासी से तोद वढ़ती है।

तुरत दान महा कल्यान, (हि०)
किसी को कुछ देना हो, तो तुरत देकर छुट्टी पानी चाहिए।

तुरत दान महा पुन्न
दे० ऊ०।

तुरत फतेह हो उसके ताईं, जिसका हामी होवे साईं
भगवान जिसके सहायक होते हैं, उसकी जीत होती है।

विचारे मूर्खतापूर्ण ढग से काम करता है, तव क०।

तुम तो कुछ जानते ही नहीं, औंधे मुंह दूध पीते हो

जव कोई भोला और अनजान वने, तब क०।

तुम तो जब मा के पेट से भी नही निकले होगे

तुम तो तव पैदा भी नही हुए होगे, फिर तुम्हे क्या खबर कि उस वक्त क्या हुआ ?

तुम तो मुझे छेड़ोगे

झूठमूठ का नखरा करना। कोई व्यक्ति यदि किसी से वोलने (या किसी को छेडने) के लिए तैयार नही, तो भी प्रकारान्तर से उसके मन मे वोलने (या छेडने) की इच्छा जाग्रत करना। (कथा है कि किसी स्त्री की, जो अपने सिर पर एक खाली घडा रखे जा रही थी, एक पुरुष से भेट हो गई, जो अपने दोनो हाथो मे दो कबूतर लिये आ रहा था। स्त्री ने उसे देखते की कहा—देखो जी, मुझे छेडना नही। पुरुष ने कहा—मै यह कैसे कर सकता हू। मेरे हाथो मे तो कबूतर है। स्त्री ने जवाव दिया—उन्हे तुम मेरे घडे मे रख दोगे। और फिर मुझे छेडोगे।)

तुम थूकते हो, हम थूकते भी नहीं

किसी ने कहा—हम ऐसे काम पर थूकते है, अर्थात वहुत घृणा करते है। दूसरे ने जवाव दिया—तुम थूकते हो, हम वह भी नही करते। अर्थात हम ऐसे काम से तुमसे भी अधिक घृणा करते है।

तुम दाता दुख भंज हो, सुनो नाथ मोर गुहार।
हौं अपराधी जनम कौ, नख सिख भरो विकार।

स्पष्ट।

तुमने उडाई, हमने भून-भून खाई

तुमने (वाते) उडाई, अर्थात मेरे वारे मे झूठी वाते कही, मैंने उन्हे भून-भून कर खाया, अर्थात उनकी कतई परवाह नही की।

तुम वडा नान्हा कातती हो, (स्त्रि०)

वहुत वारीकी करती हो। जव कोई देने-लेने मे वहुत कजूमी करे, तव क०।

तुम विन ऐसी गत भई, सुन मेरी अव पीय।
जैसे खाल लुहार की, सांस लेत विन जीय।

स्पष्ट। कोई विरहिणी कहती है।

तुम भी कहोगे 'कोई मुझे जोरू करे'

जो अपने को वहुत होशियार समझे, उससे क०।

तुम भी कहोगे 'मुझे चरखा ले दे'

अर्थात तुम औरतो का ही काम कर सकते हो। मूर्ख से क०।

तुम भी कोरे चालीस सेरे ऊत हो

निरे मूर्ख हो। कोई कसर नही।

चालीस सेर=पूरा एक मन।

तुम रूठे, हम छूटे, (स्त्रि०)

जब कोई वहुत नाराज हो जाए और मनाने से भी न माने, तव क०। चलो अच्छा है, तुम नही मानते, हमने भी छुट्टी पाई।

तुम सरीखे सैकडो फिरते है

अर्थात मैं तुम्हारी कोई परवाह नही करता।

तुम्हारी जूती और तुम्हारा ही सिर

तुम जो खर्च कर रहे हो, वह तुम्हारे माथे ही जाएगा।

तुम्हारी वरावरी वह करे, जो टांग उठाकर मूते

अर्थात तुम तो कुत्ते हो। तुम से कौन वात करे ? डीग हाकनेवालो से व्यग मे क०।

तुम्हारी वरावरी वह करे, जो दौडते हिरन को पकडे

दे० ऊ०।

तुम्हारी वात उठाई जाय, न धरी जाय

अर्थात तुम्हारी वात समझ मे नही आती। तुम किसी मशरफ (उपयोगी) की वात नही करते।

तुम्हारी वात का एतवार क्या ?

वहुत झूठ वोलनेवाले से क०।

तुम्हारी वात थल की न वेड़े की

तुम्हारी वात न जमीन की, न पानी की, अर्थात वेहूदी।

तुम्हारी वात मे वद क्या ?

तुम्हारी वात का भरोसा क्या ?

वद=बाधने की चीज, अर्थात दृढता।

कधी=कभी।

(फैलन ने अधिकाश स्थलो पर कभी के स्थान पर कधी का प्रयोग किया है।)

तुलसी कर से कर्म कर, मुख से भज ले राम।
ऐसो समय न पायगो, जो लाखो खरचो दाम।

स्पष्ट।

तुलसी कलयुग के समय, देखो यह करतूत।
रामनाम को छांड के, पूजत है अब भूत।

स्पष्ट।

तुलसी कहत पुकार के, सुनो सकल दे कान।
हेमदान, गजदान से, बड़ा दान सनमान।

दूसरे का उचित सम्मान ही सबसे बडा दान है।
हेमदान=स्वर्ण का दान। गजदान=हाथी का दान।

तुलसी का पत्ता कौन छोटा कौन बडा? (हिं०)

सभी पत्ते समान रूप से पवित्र और पूजनीय होते है।
जहा कई पूज्यजन मौजूद हो, वहा क०।

तुलसी कारी कामरी, चढे न दूजा रंग

स्वाभाविक प्रवृत्ति नही बदलती।

तुलसी काहू चोर ने, चोरी जाय करी।
मूसमास के धन लियो, पूरी नाह परी।

चोरी के धन से कभी किसी का भला नही होता।
मूसमास के=चुराकर।

तुलसी चंदन विटप बस, दिन विख भयो न भुजंग।
नीच निचाई ना तजे, जो पावे सतसंग।

स्पष्ट।
बस=बसकर, रह कर।
विख=विष, ज़हर।

तुलसी छलबल छांड़के, कीजे राम सनेह।
अंतर पति से है कहा, जिन देखी सब देह।

स्पष्ट।
अतर=भेद, दुराव, छिपाव।
पति=स्वामी, परमात्मा।

तुलसी जग से आय के, औगुन तज दे चार।
चोरी, जारी, जामिनी, और पराई नार।

स्पष्ट।
जारी=जार कर्म; पर-स्त्रीगमन।
जामिनी=जमानत देना। यहा अभिप्राय झूठ की जमानत से है।

तुलसी जग से आय के, निश्चय भजिये राम।
मनुख मजूरी देत हैं, क्यों राखें भगवान।

स्पष्ट।

तुलसी जग मे आय के, सीख ऊन से लेव।
जो तुझको अनरस करे, रस वाको तू देव।

स्पष्ट।
अनरस=रस-रहित।

तुलसी जग में जस रहे, या रहे राम का नाम।

स्पष्ट।

तुलसी जपे तो राम जप, और नाम मत लेय।
राम नाम शमशीर है, जम के सिर मे देय।

स्पष्ट।
शमशीर=तलवार।

तुलसी तब ही जानिये, परमेश्वर सों प्रीत।
हरख उठे, आदर करे, आवत देख अतीत।

स्पष्ट।
अतीत=अतिथि, साधु।

तुलसी तहां न जाइये, जहां जनम का ठाव।
आवभगत जाने नहीं, धरें पाछिलो नाव।

जन्मस्थान मे नही जाना चाहिए। वहा आदर नही होता।
(तुम चाहे जितने योग्य बन जाओ, लोग वहा बचपन के नाम से ही पुकारते हैं।)

तुलसी तहां न जाइये, जहां न वर्ण विवेक।
रांग, रूप, रूआ, भुआ, सेत सेत सब एक।

जहा सफेद रग की सब चीज़े लोगो के लिए एक हो, जहा गुण-अवगुण का कोई विचार न हो, वहा नही जाना चाहिए। रागा, चादी, रूई, सेमर (या आक) का भुआ, ये सब चीज़ें सफेद होती हैं, यद्यपि इनके गुण-धर्म मे बहुत अतर है।

तुलसी तुम तो कहत हो, संगत मे सब होत।
बीच ऊख रामसर तेहि रस काह न होत।

सत्सग मे बडा प्रभाव है, फिर भी मनुष्य के जन्मजात स्वभाव को नही बदला जा सकता, ऊख के खेत मे

तुरत फुरत हो वह भी कार, मदद करे जिसकी सरकार
स्पष्ट।

तुरत फुरत हों सगरे काम, जब होवें मुट्ठी मे दाम
गाठ मे पैसा होने से सब काम जल्दी होते हैं।

तुरत भलाई वह नर पावे, जो धन दाता नाम लुटावे
जो ईश्वर के नाम पर खर्च करता हे, उसे तुरत यश मिलता।

तुरत मजूरी जो परखावे, वाका कार तुरत हो जावे
जो मजदूरी तुरत चुकाता है, उसका काम जल्दी होता है।

तुरता फुर्ती काम मे, अच्छी नाहीं जान;
साच कहा है साधने, जल्दी मां नुकसान।
काम मे जल्दबाजी ठीक नही। उससे नुकसान होता है।

तुरफतुल-एन मे
पलक मारते, फौरन।

तुलसी अच्छर करम के, मेट न सक्के कोय।
मेटे तो अचरज नहीं, पर समझ किया है जोय।
भाग्य का लिखा नही मिटता, अगर मिट भी जाए तो समझो, भगवान ने वैसा सोच-विचार कर ही किया होगा।

तुलसी अपने राम को, भजिये जैसे लूट।
यह तन घड़ा है कांच का, छिन मे जैहे टूट।
स्पष्ट।

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो कै खीज।
खेत पड़ें सब ऊपजें, उल्टे सीधे बीज।
स्पष्ट। ईश्वर का ध्यान किसी प्रकार भी करो, उस सब का फल मिलता है।

तुलसी अपनो जान के, कीनी थी परतीत।
धोखो दे न्यारे भये, भली निवाही रीत।
स्पष्ट।

तुलसी आम कुलीन है, नवे बड़प्पन जान।
ओछा पेड़ अरंड का, रहे सीस धर तान।
स्पष्ट।

तुलसी आह ग़रीब की, हरि से सही न जाय।
मरी खाल की फूंक से, लोह भसम हो जाय।
स्पष्ट।
(मरी खाल से अभिप्राय लुहार की धौकनी से है।)

तुलसी ऐसी पीत कर, जैसे भोर तला।
झोलझाल के पी लिया, फेर लगा गला।
प्रेम तो ऐसा करना चाहिए, जैसे कि सवेरे के तालाव की काई। पानी पीने के लिए लोग उसे अलग करते हैं, लेकिन वह फिर जुड जाती है।

तुलसी ऐसे जीव की, कहा करे कोई साख।
लेके दे चाहत नहीं, किरिया करत है लाख।
स्पष्ट।
किरिया=सौगध।

तुलसी ऐसे जीव क्यों, नरक कुंड ना जायं।
मन के कपटी मित्र हैं, पाग उतारे चाय।
स्पष्ट।
पाग उतारे चाय=पगडी उतारना चाहते है, इज्जत लेना चाहते हैं।

तुलसी ऐसे नरन की, कैसे गत मत होय।
बाप ने राखी पातुरी, ताके ढिग रह सोय।
स्पष्ट।
कैसे गत मत होय=कैसे मुक्ति मिल सकती है।
पातुरी=वेश्या।

तुलसी ऐसे नरन से, मन फाटे जस दूध।
नीके काम को ना चलें, बुरे को हरदम ऊध।
स्पष्ट।
ऊध=ऊर्ध्व, ऊचे, तैयार खडे।

तुलसी ऐसे पतित को, बारबार धिक्कार।
राम भजन को आलसी, खाने को तैयार।
स्पष्ट।

तुलसी ऐसे मित्र के, कोट फाद के जाय।
आवत ही तो हँस मिले और चलत रहे मुरझाय।
ऐसे मित्र के यहा तो दीवार लाघकर, अर्थात सब तरह के कष्ट उठाकर जाना चाहिए, जो आते ही हँसकर मिले, और चलते समय दुख प्रकट करे।
कोट=ऊची दीवार, परकोटा।

तुलसी कबी न छाडिये, छिमा, सील, सतोस।
ज्ञान, ग़रीबी, हरिभजन, कोमल वचन अदोस।
स्पष्ट।

तुलसी वह दोऊ गये, पंडित और गृहस्थ।
आते आदर ना कियो, जात दिया ना हस्त।
स्पष्ट।
जात दिया ना हस्त=हाथ से कुछ दिया नही।

तुलसी वेश्या देख के, करन लगे तकझाक।
आवत देखो सत को, मुंह लीन्हों झट ढाक।
स्पष्ट।

तुलसी सरन है राम की, सुन ले मेरी टेर।
गज को छुडायो ग्राह से, मेरी बार क्यों देर।
स्पष्ट।
(पुराणो मे गज-ग्राह के युद्ध की कथा प्रसिद्ध है। दोहे मे उसी का उल्लेख है।)

तुलसी हरि की भगति बिन, ये आवे किहि काज।
अरब खरब लौं लच्छमी, उदय अस्त लौं राज।
स्पष्ट।

तुलू और गुरूब के वक्त सिजदा मना है, (कौ० लि०)
ठीक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सिजदा नही करना चाहिए। मुसलमानो की मान्यता।
सिजदा=ईश्वर की प्रार्थना।

तूं किथ्यो दा खक्खा साब-एं? (पं०)
तू कहा का खा साहब है? कहा का बडा आदमी है?

तू कन के लानें फिरत क्यों मन मे पछतायो।
जिसने जैसा दियो है, तिसने तैसो पायो।
जो जैसा करता है, वैसा पाता है।
कन=अन्न। धन।
लाने=लिए।

तू कर अपना काम, तबलया भूसन दे, (पू०)
तू अपना काम देख, कुत्ते को भूकने दे।
तबलया=तबेले मे बैठा हुआ। कुत्ते से अभिप्राय है।

तू कहे सो सच है बुड्ढी, तू कहे सो सच
किसी की सच बात को भी अनसुनी करना।
(इसकी कथा है कि एक बार होली के अवसर पर कुछ चोरो ने एक बुढिया के घर का सब सामान लूट लिया और उसे एक चारपाई से बाधकर रास्ते-रास्ते घुमाते फिरे। बुढिया तो चिल्ला-चिल्ला कर कहती थी कि इन लोगो ने मुझे लूट लिया, पर चोर उसकी बात को अनसुनी करने के लिए ऊपर का वाक्य कहते जा रहे थे। होली का मौका होने की वजह से लोगो ने उसे एक स्वाग समझा और उस पर कुछ ध्यान नही दिया।)

तू खोल मेरा मकना, मै घर संभालूं अपना, (स्त्रि०)
नवविवाहिता स्त्री पहली बार ससुराल आते ही कह रही हैं कि हटाओ मेरा यह घूघट, मैं अपना घर सभालूगी। तेज तर्रार औरत के लिए क०।

तू गधी कुम्हार की तुझे राम से काम
तू कुम्हार की गधी, तुझे राम से क्या मतलब? जब कोई फालतू आदमी किसी काम मे व्यर्थ हस्तक्षेप करे, तब क०।

तुम गोर खोद मोको, मै गाड आऊ तोको
भरपूर बदला चुकाना।
ग़ोर=कब्र।

तू चाह मेरी जाई को, मै चाहू तेरी खाट के पाए को, (स्त्रि०)
सास का दामाद से कहना। यह भाव प्रकट करने के लिए कही जाती है कि तुम हमारे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो हम भी तुम्हारे साथ उतना ही अच्छा व्यवहार करेंगे।
जाई=बेटी।

तू छुए और मै मुई, (स्त्रि०)
बहुत सुकुमारता प्रकट करना।
(प्रसव वेदना से पीडित होकर कोई कह रही है।)

तूती चुगे तो ऊच चुग, नीची चुगन मत जाह।
कुले लजावे आपने, कहें अकब्बर साह।
किसी का एहसान ही लेना हो तो बडे आदमी का लेना चाहिए, ओछे का एहसान लेना ठीक नही।

तूती पालें चूतिया, और आशक पालें लाल।
कबूतर पालें चोट्टा, जो तर्के पराया माल।
तूती बेवकूफ पालते है, आशक-मिजाज़ लाल पालते है और चोर कबूतर पालते है, जो दूसरो का माल उडाने की फिक्र मे रहते हैं।

लगे सरकडे मे रस पैदा नही होता, वह रूखा का रूखा ही रहता है।

तुलसी दया न छांडिये, जब लग घट मे प्रान।
कबहुं तो दीनदयाल के, भनक परेगी कान।

दया के सम्बन्ध मे कहा गया है।

तुलसी धीरज के धरे, हाथी मन भर खाय।
टूक टूक के कारने, स्वान घरे घर जाय।

स्पष्ट।

मन भर=एक मन। जी भरकर।

तुलसी पर घर जायके, दुख न कहिये रोय।
भरम गवावे आपनो, बाट न सक्के कोय।

स्पष्ट।

भरम गवावे—भेद खुल जाता है, अपनी वात दूसरो को मालूम हो जाती है।

तुलसी पिछले पाप से, हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे जुर के अंत मे, भूख लिदा हो जाय।

स्पष्ट।

जुर=ज्वर, बुखार।

तुलसी पैसा पास का, सब से नीको होय।
होते के सब कोय है, अनहोते की जोय।

गाठ का पैसा ही काम आता है। वहिन और वाप सब लोग धन के ही साथी होते है। केवल स्त्री ही निर्धनता मे साथ देती है। (यह द्रष्टव्य है कि दूसरी कहावतो मे स्त्री की निन्दा की गई है। सत्य निकल पडा है।)

तुलसी प्रतिमा पूजिबो, ज्यो गुड़ियो का खेल।
भेट भई जब पीव से, धरो पिटारी मेल।

प्रतिमा का पूजन तो गुडियो के खेल की तरह है। जब स्वय प्रियतम से ही भेट हो गई, तो (गुडियो की) पिटारी को अलग रख देना चाहिए। (उपासना के सम्बन्ध मे।)

तुलसी बिदेस जु जात हैं, करें समान अनंत।
ना जानूं परलोक को, कैसे नर निश्चत।

स्पष्ट।

तुलसी बिरवा बाग के, सींचतहू कुम्हलाय।
राम भरोसे जो रहें, पर्वत पर हरयाय।

स्पष्ट।

बिरवा=वृक्ष।

सीचतहू=सीचने पर भी।

तुलसी बुरो न मानिये, जो गवार कह जाय।
सावन केसे नरदुआ, बुरो-भलो वह जाय।

नासमझ के कहने का बुरा नही मानना चाहिए।

नरदुआ=नावदान।

तुलसी भरोसे राम के, लिये पाप भर भोट।
ज्यों व्यभिचारी नार को, बडी खसम की ओट।

स्पष्ट।

नार=नारी, स्त्री।

ओट=आड।

तुलसी मीठा बोलिये, सबसे करके प्रीत।
करें प्रेम तासें सभी, लख कोकिल की रीत।

स्पष्ट।

तुलसी मीठे बचन से, सुख उपजे चहु ओर।
बसीकरन यह मत्र है, तज दे बचन कठोर।

स्पष्ट।

तुलसी मूढ न मानिहै, जब लग खता न खाय।
जैसे विधवा इसतिरी, गरभ रहे पछताय।

स्पष्ट।

खता=धोखा, ठोकर।

इसतिरी=स्त्री।

तुलसी या ससार मे, पाच रतन है सार।
साधु मिलन अरु हरिभजन, दया, धर्म, उपकार।

स्पष्ट।

तुलसी या ससार मे, पाखंडी को मान।
सीधों को सीधा नहीं, झूठों को पकवान।

स्पष्ट।

मान=सम्मान।

सीधा=अन्न, भोजन।

तुलसी या संसार मे, सबसे मिलिये धाय।
ना जाने किस भेष मे, नारायन मिल जाय।

स्पष्ट।

तुलसी राम की भगति बिन, धिक दाढी, धिक मूछ।
पशु गढने नर भयो, भूल्यो सीग अरु पूछ।

स्पष्ट।

तेरा है सो मेरा था, बराय खुदा टुक देखने दे, (स्त्रि०)
सास का कहना बहू के प्रति, जिसने उसके लडके को (अपने स्वामी को) पूरी तरह काबू मे कर रखा है।

तेरी आन या तेरे गुलइया की
एक स्त्री का दूसरी से कहना कि मैं तेरी सौगध खाऊ या तेरे स्वामी की।

तेरी आवाज मक्के मदीने मे, (स्त्रि०)
शुभ समाचार सुनानेवाले को आशीर्वाद।
जब कोई बहुत या चिल्लाकर बात करे।

तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे
हममे से हरेक अपने कर्मों का फल भोगेगा।
मैंने तुम्हारे साथ जो कुछ किया (अर्थात जो भलाई की) और उसके बदले मे तुमने जो कुछ किया (अर्थात मेरे साथ जो बदी की), उसे ईश्वर जानता है, ऐसा भाव प्रकट करने के लिए क०।

तेरी कुदरत के आगे कोई जोर किसी का चले नहीं, चींटी पर हाथी चढ़ बैठे तब वह चींटी मरे नहीं।
स्पष्ट। ईश्वर की लीला विचित्र है।

तेरी कुदरत के कुरबान
हे ईश्वर! तेरी अद्भुत लीला की बलिहारी।

तेरी गोद मे बैठू और तेरा ही दाढ़ी नाचू
धृष्ट और कृतघ्न आदमी के लिए क०।

तेरे जो, तेरी दराती, चाहे जैसे काट
मुझे कुछ मतलब नही।
दराती=हँसिया।

तेरे दया धरम नहि मन मे, मुखड़ा क्या देखे दरपन मे
पाखडी। निर्दयी।

तेरे बैंगन मेरी छाछ
अपनी छोडी वस्तु के बदले मे दूसरे की बहुत चाहना।
चतुराई से काम लेना।

तेरे मुह मे घी शक्कर
खुशखबरी सुनानेवाले से क०।
शुभकामना करनेवाले से भी।

तेरे मेरे सदके मे उसकी जोरू पेट से
किसी नपुंसक की स्त्री को गर्भ रह गया, तब मजाक मे कहा जा रहा है।

तेल की जलेबी मुआ दूर से दिखाय, (स्त्रि०)
आशा तो बहुत देना, पर करना कुछ नही।

तेल जल चुका
(१) जिदगी खत्म हो चुकी।
(२) पैसा उड गया, खर्च के लिए अब कुछ नही।

तेल जले घी, घी जले तेल
तेल बहुत पकने से घी जैसा हो जाता है और घी तेल जैसा।
(स्त्रियो की ऐसी धारणा है।)

तेल डाल कमली का साझा
किसी के किसी काम मे नाम मात्र की सहायता करके अपने को उसका साझीदार समझने लगना। (किसी गडरिये ने एक कबल तैयार करके उसे चिकना करने के लिए एक दूसरे आदमी से उस पर तेल मलने को कहा। जब उसने तेल से कबल को चिकना कर दिया, तो बोला कि इसमे मेरा भी साझा है और इसे बेचने से जो दाम आए, उसमे से आधा मुझे देना, क्योकि इसे चिकना मैंने ही किया है।

तेल तिलो ही मे से निकलेगा, (व्य०)
कोई अपनी गाठ से नुकसान नही देगा। मुनाफा तो लागत मे से ही निकलेगा। प्राय दूकानदार ग्राहक से कहता है।

तेल देखो, तेल की धार देखो
प्रत्येक कार्य धीरज के साथ सोच समझकर करना चाहिए।
(कथा है कि किसी राजकुमार के चार मित्र थे—सिपाही, ब्राह्मण, उटेरा और तेली। जब वह पिता के मरने पर गद्दी पर बैठा, तो उन चारो को अपना मत्री बनाया। पडोस के एक राजा ने जब उसे मूर्ख मत्रियो से घिरा और भोग-विलास मे डूबा पाया, तो उस पर चढाई कर दी। राजकुमार ने तब अपने चारो मत्रियो को बुलाया और उस बारे मे उनकी राय मागी। जो सिपाही था, उसने तुरत लड़ने को कहा। ब्राह्मण ने कहा—जैसे भी हो सुलह कर लो। उटेरे ने कहा—जल्दी किस बात की है। देखिए,

तू तेली का बैल, तुझे क्या सैर, लगा रह घानी से

तू तो तेली का बैल है, तुझे मौज-मजा से क्या मतलब। घानी पेरता रह।

(जो चौबीसो घटे काम मे जुटा रहे, उससे व्यग्य मे क०।)

तूने की रामजनी, मैने किया राम जना

स्त्री का अपने पर-स्त्रीगामी पति से गुस्से मे कहना कि तुमने अगर औरत रख ली, तो मैने भी आदमी रख लिया है।

तूने जब ऐसा किया, तो मैने भी ऐसा किया, यह भाव प्रकट करने को क०।

तूफान, शैतान, अल्लाह निगहबान

तूफान और शैतान इन दोनो से ईश्वर बचाए।

तू भी रानी, मै भी रानी; कौन भरे कुएं का पानी? (स्त्रि०)

जहा सभी आदमी अपने को बडा समझ रहे हो, और किसी कार्य को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझ कर उसे करने मे हीला-हवाला करे, वहा क०।

तू मुझको, तो मै तुझको

समान व्यवहार।

तू मेरा लड़का खिला, मै तेरी खिचडी पकाऊं, (स्त्रि०)

दे०—ऊ०।

तू मेरे बारे को चाहे, तो मै तेरे बूढ़े को चाहू

दे० तू मुझको ।

तू रह री हौं ही लखूं, चढ़ न अटा व्रज बाल।
विना समय ससि के उदय, दइहैं अरघ अकाल।

यह बिहारी का प्रसिद्ध दोहा है। नायिका ने गणेश चतुर्थी का व्रत किया है। चद्रमा को देखने के लिए वह वार-वार अटारी पर जाती है। सखी उसका श्रम बचाने के निमित्त उसको फिर चढने से रोकती है, पर यह कह कर नही कि निराहार रहने के कारण तुझे श्रम होगा, वल्कि उसके रूप की प्रशसा करती हुई यह कहकर रोकती है कि तेरा मुख चद्रमा के समान प्रकाशमान है, इसलिए उसे ही चन्द्रमा समझकर स्त्रिया चद्रमा के उदय के विना ही अकाल मे अर्घ्य दे देगी। (जो ठीक नही है।)

तूल, तेल तापना, जाड़ मास हो आपना

रूई के कपडे, तेल और तापने को मिले तो फिर जाडा अपना ही है।

तू सच्चा, तेरा गुरु सच्चा

व्यग्य मे झूठे से क०।

तेतरी बेटी राज रजावे, तेतरा बेटा भीख मगावे, (लो० वि०)

दो लडको के वाद लडकी का होना अच्छा होता है, दो लड़कियो के वाद लडका होना अच्छा नही।

तेते पाव पसारिये, जेतो लांबी सोर

धन के अनुसार ही काम करना चाहिए।

तेरहवीं सदी मे शरह की बातें कोई नहीं मानता, (मु०)

आजकल धार्मिक नियमो को कोई नही मानता। (तेरहवी सदी से यहा मतलव हिजरी सन् की तेरहवी सदी अर्थात वर्तमान समय से ही है। यह ईस्वी सन ६२२ मे चालू हुआ। हिजरी सन की १४-वी सदी चल रही है।)

तेरा किया तेरे आगे आवे

शाप देना।

तेरा ढका रहे, मेरा बिक जाय, (व्य०)

तेरी चीज रक्खी रहे, मेरी विक जाय।

अपना मतलव देखना।

तेरा पानी मै भरू, मेरे भरे कहार, (स्त्रि०)

झूठा वडप्पन दिखाना।

तेरा पी तोमे वसे, ज्यो पत्थर मे आग।
देखा चहे दीदार को, चकमक होके लाग।

स्पष्ट।

दीदार=आमने सामने। दर्शन।

चकमक=आग निकालने का चकमक पत्थर।

तेरा माल सो मेरा माल, मेरा माल सो हे हे

जो दूसरे की चीज तो हथिया ले, पर अपनी चीज न छूने दे।

तेरा हाथ और मेरा मुंह, (स्त्रि०)

कमाओ और मुझे खिलाओ।

स्वार्थी के लिए क०।

तोको लेवन मैं चाली, तू मोहे घेर लिया।
अब तू मोको छोड दे, मै तोहे छोड़ दिया। (स्त्रि०)
मैं जब तुमसे कोई मतलब नही रखना चाहता, तो तुम भी मेरा पिंड छोडो।

तोड़ डाल तागा, तू किस भडुवे के मुंह लागा, (स्त्रि०)
ऐसी स्त्री के पति से कहा जा रहा है, जो विवाह होते ही कुपथगामिनी हो गई है। दुष्ट का साथ छोडने के लिए भी। तागा से मतलव विवाह-सूत्र से है।

तोड़ने आये चारा और खेत पर इजारा
घास काटने आए और खेत पर कब्जा करने लगे। अनुचित दावा।

तोते की-सी आंखें फेर लेता है
वेमुरव्वत आदमी। तोते को चाहे जितनी अच्छी तरह से रक्खो, पर ज्यो ही मौका पाता है, उड जाता है।

तोतेचश्म आदमी है
दे० ऊ०।

तोरी बनत-बनत वन जाई, तू हरि से लागा रहु भाई
तू भगवान का भजन करता रह, धीरे-धीरे तेरा काम वनेगा।
(तुझे मुक्ति मिलेगी।)

तोरी होयलो मूली, खरपतवा भइलो साग।
अगवारे पछवारे बैठ लो, सोहो भइलो सरदार।
(पू०)
मूली तो (उसके लिए) तुरई हो गई, और खर-पतवार हो गया साग, जो आदमी इधर-उधर वैठा करता था, वह अब सरदार वन गया। किसी साधारण मनुष्य ने वडप्पन दिखाया, तव उससे कहा जा रहा है।

तोला के पेट मे घुंघची
वड़े के पेट मे छोटा समाता है।

तोला भर की आरसी, नानी वोले फारसी
लबी चौडी वात करना।

तोला भर की चार कचौड़ी खुरमा माशे ढाई का,
लाला जी ने व्याह रचवाया धवला बेच लुगाई का।
किसी कजूस के यहा के व्याह का मजाक। यह पूरी तुकबदी इस प्रकार है—
तोला भर की चार कचौडी, खुरमा माशे ढाई का,
घर मे रोवे वहिन-भानजी, वाहर रोवे नाई का,
धीरे-धीरे जीमो पचो देखो गजव खुदाई का,
लाला जी ने व्याह रचाया, लहगा वेच लुगाई का।

तोले भर की तीन चपाती, कहे जिमाने चालो हाथी
झूठी शान।

तोहरा बूते कन भूसा एकौ न छूटी, (पू०)
तुझसे कोई काम नही होने का।

तौबा कर बंदे इस गंदे रोजगार से, (मु०)
इस गदे रोजगार को मत करो, भाई।
किसी बुरे काम से रोकने के लिए क०।

तौबा का दरवाज़ा खुला है, (मु०)
अपने कसूर की आदमी हमेशा क्षमा माग सकता है।

तौबा बड़ी सिपर है गुनहगार के लिए, (मु०)
अपराधी के लिए प्रायश्चित्त वडी ढाल है।

त्रेता के बीजों को पहुच गये
त्रेता के युग मे पहुच गए, अर्थात वहुत ईमानदार और सच्चे वन गए।

थकल पैराकू फेन चोट, (पू०)
थका तैराक फेन चाटता है।
(१) मनुष्य की जव सारी सपत्ति नष्ट हो जाती है, तो वह विवश होकर थोडे पर ही सतोप करता है।
(२) परिस्थितियो से वाध्य होकर मनुष्य को ओछे से ओछा काम करना पड़ता है।

थका ऊंट सराय तकता है
(१) दिन भर के परिश्रम के वाद मनुष्य आराम से लेटने की जगह चाहता है।

ऊट किस करवट बैठता है। तेली ने तव उसी का समर्थन करते हुए कहा—घवडाइए नही, अभी तेल देखिए, तेल की धार देखिए, अर्थात उतावली मत कीजिए।

तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कढाई; (स्त्रि०)
विना साधन के काम की तैयारी।

तेलन से क्या धोबन घाट, इसके मूसल उसके लाट (स्त्रि०)
दोनो एक से विकट, कोई किसी से कम नही।
घाट=घट, कम।
मूसल=कपडे कूटने की मोगरी।
लाट=कोल्हू के वीच मे लगा मोटा लट्ठ, जिससे तेल पिरता है।

तेली का काम तमोली करे, चूल्हे मे आग उठे
जिसका काम उसी को शोभा देता है। कोई दूसरा करे, तो उसे हानि उठानी पडती है।

तेली का तेल गिरा हीना हुआ, वनिये का नोंन गिरा दूना हुआ
तेल गिरा तो जमीन सोख गई, और नोन गिरा तो उसके साथ मिट्टी मिल गई, जिससे वजन वढ गया।
किसी को अपनी हानि से ही लाभ होता है।

तेली का तेल जले, मसालची का दिल जले
एक को खर्च करते देख दूसरा परेशान हो।
पाठा०—तेली का तेल जले, मसालची के पोद फटे।

तेली का तेल, भगत भैय्या जी की
खर्च कोई करे, नाम किसी का हो। तेली ने मदिर मे जलाने के लिए तेल दिया, पर नाम पुजारी का हुआ।

तेलो का बैल ले के कुम्हारिन सत्तो होय, (स्त्रि०)
व्यर्थ की सहानुभूति।

तेली का बैल हो गया
रात-दिन काम में लगे रहनेवाले से क०।

तेली के तीनो मरें और ऊपर से टूटे लाठ
दोनों बैल और तीसरा हाकनेवाला, तेली के ये तीनो मरें, मुझसे क्या मतलब?
(किसी से कोई प्रयोजन न होना।)

तेली के बैल को घर ही कोस पचास
जिसे घर मे ही दिन-रात काम करना पडे, उसके लिए क०।

तेली क्या जाने मुश्क की सार
जिसने जो चीज कभी देखी ही नही, वह उसकी कद्र क्या जाने।

तेली खसम किया ओर रूखा खाया, (स्त्रि०)
समर्थ का आश्रय पाकर भी कष्ट मे रहना। एक मूर्खता।

तेली जोडे पली-पली रहमान उड़ावें कुप्पे
(१) घर मे जब एक आदमी तो कमानेवाला हो, और दूसरा लुटाए, प्राय तब क०।
(२) कहावत का यह भाव भी है कि मनुष्य यत्नपूर्वक जो काम करता हे, ईश्वर उस पर एक बार मे ही पानी फेर देता हे।

तेली रोवे तेल को, मकसूदन रोवे खली को
सवको अपने-अपने स्वार्थ की पडी रहती है।
मकसूदन=नाम विशेप। यहा तेली के नौकर से मतलव है।

तैराक ही डूबते हैं
कर्मठ व्यक्ति ही असफल होते है। जो कुछ काम ही नही करता, उसके लिए सफलता-असफलता का प्रश्न क्या?

तैरेगा सो डूबेगा
स्पष्ट। दे० ऊ०।

तोको न भुनाऊ, तोरा भइया और बंधाऊं, (पू०)
कजूस के प्रति व्यग्य मे, जव वह किसी काम में खर्च नही करना चाहता।
(किस्मा हे कि कोई पुरविया रुपया भुनाने के लिए वाजार गया, पर उसे भुनाने मे वडा कष्ट हो रहा था। वह कई दूकानो पर गया, पर रुपया उससे नही छोडा गया। मुट्ठी के वद रहने के कारण उसके हाथ मे जव पसीना आने लगा, तो उसने समझा कि रुपया मुझसे जुदा होने की वात सोच-कर रो रहा है। इसी पर उसने रुपये से उपर्युक्त शब्द कहे।)

जाता है। यह एक विश्वास है। अगली कहावत मे इसके विरुद्ध बात कही गई है।

थोड़ा खाना, सुखी रहना

संतोषी का कहना।

थोडा-थोडा करके ही बहुत हो जाता है

स्पष्ट।

थोडा देना, बहुत आरजू करना

मिले थोडा, पर विनती बहुत करनी पड़े।

थोडी आस मदार की, बहुत आस गुलगुलों की

कुछ मिलने की आशा से ही लोग बडे आदमियो के पास जाते है।

(शाहमदार, मुसलमानो के एक बडे पीर हो गए है, जिनकी मृत्यु सन १४३२ मे हुई। मकनपुर मे उनकी दरगाह है। प्रतिवर्ष वहा मेला लगता है और प्रसाद मे गुलगुले वटते है। उसी से कहावत का मतलब यह कि मदार साहब के दर्शनो के लिए तो लोग कम ही जाते है, पर गुलगुलो के लालच से अधिक।)

थोड़ी पूंजी खसमो खाय

थोडी पूजी दूकानदार को नष्ट कर देती है, क्योकि माल कम होने से मुनाफा थोडा होता है, और खर्च के कारण अत मे नुकसान होता है।

थोड़े धन मे खल इतराय

ओछा आदमी थोड़ा धन पाकर घमड करने लगता है।

(क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जिमि थोरे धन खल बौराई। तुलसी।)

थोड़े पानी मे उभरे फिरते है

थोडा पैसा पाकर ही जब कोई दभ से फूल उठे, तब क०।

थोथा चना, बाजे घना

अकर्मण्य बात बहुत करता है।

थोथे फटके उड-उड़ जायं

पोला या घुना अनाज फटकने से उड जाता है। (१) मूर्ख या झूटा आदमी परीक्षा करने से ठहरता नही। अथवा
(२) मूर्ख आदमी गभीर नही होता।

द

दक्खन गये न बहुरे, रहे चदेरी छाया, (स्त्रि०)

ऐसे आदमी के लिए कहते है जो घर छोडकर विदेश मे रह जाए।

(औरगजेब की फौज के सबध मे कहा जाता है कि वह १२ वर्प तक चदेरी का घेरा डाले पडी रही।)

दख़ल दर माकूलात करना

उचित काम मे हस्तक्षेप करना।

दबक शीरे के मटके मे

अनायास कोई सुयोग किसी के हाथ लग जाए, तब कहते है—जाओ लाभ उठाओ, मिठाई के मटके मे मुह मारो।

दबते को सब दबाते है

कमज़ोर पर सब रोब जमाते है।

दबा पाई गूजरी, 'गहरा बासन लाओ'

किसी को अपने अधीन जानकर जब अनुचित लाभ उठाया जाए, तब क०।

गजरी = ग्वालिन।

दबा बनिया पूरा तोले

बनिए को किसी से कोई भय हो, तो वह उसे पूरा तोलता है।

दबा हाकिम महकूम के ताबे

रिश्वतखोर हाकिम अपने अधीनस्थ कर्मचारियो से डरता है।

दबी बिल्ली चूहों से कान कटावे

किसी व्यक्ति मे यदि जब किसी प्रकार की कमजोरी हो, तो उसे अपने से छोटे आदमियो के सामने भी दबना पडता है।

दबे पर चींटी भी चोट करती है

सताने से कमजोर भी बदला लेता है।

दबे पर सब शेर है

जो दबता है उस पर सभी ज़बर्दस्त बन जाते है।

दम का क्या भरोसा है? आया, न आया?

ज़िदगी का कोई ठिकाना नही, न जाने कब प्राण निकल जाए।

दम का दमामा है

ज़िदगी का ही सारा खेल है।

(२) थके मजदूर को अपना घर याद आता है।

थके बैल, गौन भई भारी, अब क्या लादोगे व्यापारी ?

वृद्धावस्था के लिए कहा है कि शरीर शक्तिहीन हो गया, पापो का बोझ भी बढ गया है, अब ठहर कर क्या होगा ? चलना चाहिए।

गौन=एक प्रकार का दोहरा थैला, जिसमे सामान भरकर बैलो पर लादते हैं।

थाली गिरी, झनकार सबने सुनी

जब कभी कही कोई लडाई-झगडा या कोई विशेष घटना होती है, तो उसका पता पड ही जाता है।

थाली पर से भूका नहीं उठा जाता

जब कोई आदमी किसी वजह से नाराज होकर भोजन छोडे, तब क० ।

थाली फूटी न फूटी, झनकार तो सुनी

(१) किसी पर झूठा सदेह करना। किसी ने कहा कि अमुक व्यक्ति ने थाली तोड दी, पर जब उसे साबुत थाली लाकर दिखा दी गई, तो उसने कहा—थाली टूटी हो या न टूटी हो, पर गिरने की आवाज तो मैंने सुनी।

(२) दो मनुष्यो मे झगडा हो जाए, तब भी। तात्पर्य यह कि उनमे आपस मे बिगाड हुआ हो या न हुआ हो, पर यह तो सभी जानते हैं कि उनमे तू-तू मैं-मै हो गई। भाइयो के सबध मे क०।

था सोच जो कुछ अव्वल, आखिर वही पेश आया

जिस बात का पहले से सदेह था, आखिर वही सामने आई।

थूक कर चाटना

कहकर बदल जाना।

थूक दाढी, फिटे मुंह

किसी को धिक्कारना।

थूक बिलोना

बेहूदी बात करना।

थूकों सत्तू नहीं सनता

जहा अधिक पैसे की जरूरत है, वहा कम मे काम नहीं चल सकता।

थैलियां भी सिला लीं

जब कही से कोई झूठमूठ ही रुपए मिलने की आशा लगाए बैठा हो, तब उससे व्यग्य मे क०।

थैली मे रुपया, मुंह मे गुड

पास मे रुपया हो और जबान मीठी हो, तो इन दो ही से मनुष्य सुखी रहता है।

थोड मोल की कामली, करे बडो का काम।
महमूदी और बाफता, सबके रक्खे मान।

कबल बडे काम की चीज है, वह दूसरे कीमती कपडो की इज्जत रखता है, उसकी वजह से वे खराब नही हो पाते।

महमूदी=एक प्रकार की मलमल, बोलचाल की भाषा मे इसे मामद कहते हैं।

बाफता=एक प्रकार का रेशमी कपडा।

थोडा आपको, बहुत गैर को

(१) अपने लिए चाहे थोडा करे, पर दूसरो के लिए बहुत करना चाहिए, अर्थात हमेशा दूसरो का ध्यान रक्खे।

(२) जो अपने घरवालो के साथ तो कम, पर बाहर-वालो से अधिक अच्छा व्यवहार करे, उसके प्रति भी कह सकते हैं।

थोड़ा करें गाजी मियां, बहुत करें डफाली

सत-महात्माओ की अपनी शक्ति तो थोडी ही होती है, पर उनके शिष्य उसे बहुत बढा दिया करते हैं। (गाजी सालार उर्फ गाजी मिया महमूद गजनवी के भतीजे थे। सन १०३३ मे बहराइच मे इनकी मृत्यु हुई। वहा इनकी समाधि है। ये मुसलमानो के बडे पीर माने जाते हैं।)

डफाली = डफ या ढोल बजानेवाला।

थोड़ा खाना और इज्जत से रहना

फिजूलखर्ची नही करनी चाहिए।

थोडा खाना और बनारस मे रहना

प्राय ऐसे अवसर पर कहते हैं, जब कोई मनुष्य थोडी आमदनी मे सतुष्ट रहकर घर मे ही रहना पसद करे।

थोडा खाना जवानी की मौत

थोडा खाने से तो आदमी दुबला होकर जल्दी मर

दमा दम के साथ
दमा दम के साथ ही जाता है।
दमा=श्वास सबंधी एक रोग।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाडिये, जब लग घट मे प्रान।
स्पष्ट।

दया बिन संत कसाई
स्पष्ट।

दर-दर मागते फिरते हैं
किसी की गिरी हुई हालत के लिए क०।

दर-ब-दर, ख़ाक बसर फिरा है
सिर पर धूल डालकर दरवाजे-दरवाजे फिरता है।
बहुत शोचनीय स्थिति मे है।

दरया को कूज़े मे भरना
गागर मे सागर भरना।
(१) थोडे मे बहुत कह जाना।
(२) असभव को सभव बनाना।

दरया पै जाना और प्यासे आना
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। जहां आसानी से अपना कार्य सिद्ध हो रहा हो, वहा से खाली हाथ लौटना।

दरया मे रहना और मगरमच्छ से बैर
जिसके आश्रित रहे, उससे बैर करना ठीक नही।

दरवाज़े पर आई बारात, समधिन को लगी हगास, (स्त्रि०)
काम के समय गायब हो जाना।
(दरवाजे पर बरात आने पर समधिन की सबसे पहले आवश्यकता पड़ती है।)

दरे तौबा बाज़ है, (मु०)
भूल के लिए कभी भी खेद प्रकट किया जा सकता है।

दरोग को फरोग नही
झूठा फलता-फूलता नही।

दरोग गो को हाफिज़ा नहीं होता
झूठे की स्मरणशक्ति कमजोर होती है। वह भूल जाता है कि उसने कब क्या कहा।

दरोग ब गर्दने-रावी (फा०)
झूठ का पाप झूठ बोलनेवाले के सिर पडता है।

दर्जी की सुई, कभी ताश मे, कभी टाट मे
दर्जी की सुई कभी रेशम की सिलाई करती है तो कभी टाट की।
परिस्थितिया कभी एक-सी नही रहती।

दर्द को वह समझे, जो खुद दर्दमंद हो
दयावान ही दूसरे के दुख को समझ सकता है।

दर्शन के नैना लोभी
स्पष्ट।

दर्शन थोड़े नाम बहुत
जब किसी मे ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाए, तब क०। कहावत का प्रचलित पाठ—'नाम बडा दर्शन थोडे' है।
('नाम बहुत' पहले कर देने से कहावत को इस स्थान से हटाना पडेगा। इसलिए फैलन ने जैसा लिखा है वैसा ही रहने दिया।)

दर्शना मोटा, पैंड़ा खोटा, (हिं०)
दर्शन तो अच्छे, पर मार्ग बुरा।
(जैसा बद्रीनाथ की यात्रा का है।)

दलिद्दर घर मे नोंन पकवान, (स्त्रि०)
कजूस के घर मे नमक ही पकवान माना जाता है।
(बोलचाल मे दालिद्री का अर्थ कजूस होता है।)

दवा और दुआ दोनों
एक साथ सब काम साधना। दवा भी हो और ईश्वर-प्रार्थना भी हो।

दवा की दवा, गिज़ा की गिज़ा
ऐसी वस्तु, जो दवा का भी काम करे और जिससे पेट भी भरे।
गिजा=भोजन।

दवा के लिए ढूंढो तो नहीं मिलती
बहुत दुर्लभ चीज़।

दवात कलम
कोरी दवात कलम है। कागज़ मे रोकड नही है।

दस नकटो मे नाकवाला नक्कू
जैसे समाज मे रहे, वैसी ही चाल चले। दस नकटो मे अगर कोई नाकवाला पहुच जाए, तो वे 'नक्कू' कहकर उसकी खिल्ली उडाएगे।

दम=सास।

दमामा=ढोल।

दम गनीमत है

आदमी जब तक जिंदा है, तभी तक गनीमत है।

दमड़ी का पोस्ती

निकम्मे आदमी के लिए क०।

पोस्ती=(१) अफीमची।

(२) बच्चो के खेलने का गुड्डा, जिसका सिर अफीमची की तरह हिलता रहता है।

दमडी की अरहर, सारी रात खड़हर, (स्त्रि०)

ज़रा-से काम को बहुत करके दिखाना।

दमडी की गुडिया, टका डोली का, (स्त्रि०)

जितने की चीज नही, उस पर उतने से अधिक खर्च।

दमडी की घोड़ी, छः पसेरी दाना, (स्त्रि०)

दे० ऊ०।

दमड़ी की चूं-चूं

निकम्मी चीज।

दमड़ी की दाल, आप ही कुटनी, आप ही छिनाल, (स्त्रि०)

किसी वस्तु का इतना कम होना कि उससे एक आदमी का भी काम न चले।

दमड़ी की दाल 'बुआ पतली न हो', (स्त्रि०)

जो जरूरत से ज्यादा कजूसी करे, उसके लिए क०।

दमड़ी की निहारी मे टाट के टुकड़े, (स्त्रि०)

थोडे पैसो मे कोई अच्छी चीज कैसे आ सकती है?

निहारी=नाश्ता, कलेवा।

दमड़ी की पाग, अधेली का जूता

उल्टा-सीधा काम।

पाग के दाम जूते से अधिक होने चाहिए।

दमडी की बुढ़िया, टका सिर मुंड़ाई

दे०—दमड़ी की घोड़ी. . .।

दमड़ी की बुलबुल, टका छुटाई

किसी काम मे मुनाफा कम और खर्च अधिक।

छुटाई=पखो की सफाई।

दमड़ी की मुर्गी, नौ टका निकयाई, (पू०)

दे० ऊ०।

निकयाई=पखो के अलग करने की मज़दूरी।

दमड़ी की लाई बनैनी खाय, 'ये घर रहे कि जाय', (पू०)

बनियो की कृपणता पर।

दमड़ी की हाड़ी लेते हैं, तो ठोक बजा कर लेते हैं

हर चीज देखभाल कर लेनी चाहिए।

दमड़ी की हाड़ी गई, तो कुत्ते की जात पहचानी

नुकसान हुआ सो हुआ, पर किसी एक आदमी के स्वभाव का पता तो चल गया।

दमड़ी के पान बनैनी खाय, कहो 'ये घर रहे कै जाय'

दे०—दमडी की लाई ।

तथा—टके की लौंग. .।

दमदमें में दम नहीं, खैर मागो जान की

निराश अवस्था मे कहते है।

दम दरूद न होना

सास बद हो जाना। अंतिम सास लेना।

दम नहीं बदन, मे नाम जोरावर खा

बहुत दिखावा करनेवाले के लिए क०।

दम नाक मे आ गया

बहुत परेशानी की हालत मे होना।

दम बना रहे

आशीर्वाद। चिरायु होओ।

दम बना रहे, फूंक निकल जाय

जब ऊपर से कोई किसी का भला चाहे, पर भीतर से हानि पहुचाने की चेष्टा करे, तब क०।

दम भर की खबर नहीं

अगले क्षण क्या हो, ठीक नहीं।

दम मारने की जगह नहीं

जब काम से बिल्कुल फर्सत न मिले, तब क०।

दम मे हज़ार दम

एक के सहारे बहुतो की गजर होती है।

दम है, जब तक गम है

जब तक जिंदगी है, तब तक परेशानिया भी है।

दम है तो क्या गम है?

जिंदा अगर है, तो फिर चिन्ता किस बात की?

जब कोई दूसरे के कष्ट को कम करके बताए, तब क०।

(बच्चा जनाते समय दाई प्रसूता की पीडा की ओर ध्यान नही देती और उसे धैर्य बधाने के लिए यही कहा करती है कि 'अरे व्यर्थ चिल्लाती हो, क्या बात है।' कहावत मे उसी का जवाब है।)

दाई दाई ऊटनी, सवा घड़ी मुतनी

बच्चो की तुकबदी ।

दाई रो दाई! तेरे लात हो भाई

बच्चो की तुकबदी।

दाई से पेट छिपाना, (स्त्रि०)

किसी मनुष्य से ऐसी बात छिपाना, जो पहले से ही भेद जानता है।

दाई से पेट नहीं छिपता

जिस आदमी को रोज जो काम करना पडता है, उससे उस सम्बन्ध की कोई बात छिपती नही।

दाई हो मीठी, दादा हो मीठा, तो स्वर्ग कौन जाये ?

यह लूं या वह लूं। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर क०।

दाग लगाये लगोटिया यार

क्योकि वह तुम्हारा कच्चा चिट्ठा जानता है। तुम अगर उसे कोई नुकसान पहुचाओगे, तो वह तुम्हारा भेद खोल देगा।

दागे के साड तो दाग ले लोहार, (पू०)

साड को दगवाना है, तो लोहार ही दाग सकता है। जिसका जो काम है, उसे वही करता है।

दागना=लालगरम लोहे से जानवर की पीठ पर निशान बनाना।

दाता की नाव पहाड चढे

दानशील के सभी काम सफल होते है।

दाता के घर लच्छमी, ठाडी रहत हजूर।
जैसे गारा राज को, भर-भर देत मजूर।

दानशील जितना दान करता है, ईश्वर उसे उतना ही देता है।

गारा=चूने और पानी का गाढा मिश्रण, जो मकान बनाने के काम आता है।

राज=कारीगर।

दाता के तीन गुन, दे, दिलावे, छीन ले, (हि०)

ईश्वर के लिए कहा गया है कि वही देता है, वही दिलाता है। और वही छीन भी लेता है। राजा या मालिक के लिए भी कह सकते है।

दाता को राम छप्पर फाड़ के देता है

ईश्वर दाता को कही-न-कही से देता है।

दाता दाता मर गये (और) रह गये मक्खीचूस ।
देन लेन को कुच्छ नहीं लडने को मौजूद ।

किसी याचक का कहना, जिसे कुछ मिला नही।

दाता दातार, सुथनी उतार, (स्त्रि०)

(१) कोई स्त्री अपने पति की दानशीलता से ऊबी हुई है और खीझकर कहती है कि वह हजरत इतने उदार है कि मेरा पैजामा भी उतार कर दे सकते है। (२) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि दाता तो वही है, जो अपनी बीवी की सुथनी तक उतार कर दे दे।

दाता दे कंजूस झुर-झुर जाये

दाता को देते देख कजूस दुखी होता है।

दाता दे भडारी का पेट फटे

जब मालिक तो देना चाहे, पर जिसके हाथ मे कुजी है, वह देने मे आनाकानी करे, तब क०। मराठी मे भी है—खरचणाराचे खरचतें, काठा वाळ्याचे पोट दुखते ।

दाता दे, भडारी पेट पीटे

दे० ऊ०।

दाता देवे और शरमावे, बादल बरसे और गरमावे

दाता देकर शर्माता है कि मैंने कम दिया, इसी तरह बादल बरसकर शर्माता है, अर्थात और अधिक बरसना चाहता है। वर्षा मे वायुमडल का गरम होना और ज्यादा वर्षा का सूचक है।

दादा पुन्न करे, कजूस झुरझुर मरे

दे०—दाता दे कजूस ।

दाता सदा दलिद्री

क्योकि वह अपने पास कुछ नही रखता।

दादा कहने से बनिया गुड देता है

(१) हर आदमी खुशामद-पसद है। अथवा

(नक्कू के यहा दो अर्थ है 'नाकवाला' और 'वदनाम'।)

दसो उंगलियां, दसो चिराग, (मु० स्त्रि०)

सव तरह से चतुर और काम करनेवाली स्त्री के लिए क०।

दस्तरखान की बिल्ली, (मु०)

ऐसा व्यक्ति जो हर जगह दावत मे विना बुलाए खाने पहुच जाए। मुफ्तखोर, खुशामदी।

दस्तरखान की मक्खी, (मु०)

मुफ्तखोर के लिए घृणापूर्वक क०।

दस्तरखान के बिछाने मे सौ ऐब, न विछाने मे एक ऐब, (मु०)

कोई काम अगर किया जाए, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए, अन्यथा उसे न करना ही अच्छा। काम न करने पर केवल यही वदनामी होगी कि नही किया। पर उसे यदि ढग से न किया गया, तो अधिक बदनामी होने की सभावना रहती है।

दस्तार, गुफ्तार अपनी ही काम आती है

पगडी और वात अपनी ही काम आती है। किसी से कुछ कहना है, तो स्वय ही कहना चाहिए, दूसरे से कहलवाना ठीक नही।

दस्तार, गुफ्तार, रफ्तार जुदी-जुदी

पगडी वाधने, बोलने और चलने का ढग, सवका अलग-अलग होता है।

दह दर दुनिया, सद दर आखरत, (मु०)

इस लोक मे दस देने से परलोक मे सौ मिलते है। मुसलमान फकीरो की टेर।

आखरत=(आखिरत) कयामत। परलोक।

दह'पोइस' खलीता भारी

एक ओर हटो, वोझ वहुत है।

(सडक पर भारी वोझ लेकर चलनेवाले मजदूर 'पोइस' 'पोइस' चिल्लाते जाते है।)

दही की गवाही चूड़ा (पू०)

दोनो का जोड है। दही और शक्कर के साथ चूडा खाया जाता है।

दही वेचन चलीं, पीठ पिछाड़ कमोहया, (स्त्रि०)

जव कोई अपना काम करने मे शर्माए, तव क०।

(दही तो बेचने जा रही है और मटकी पीठ के पीछे छुपा रक्खी है, जिससे कोई देख न ले।)

दही भात का मूसल

हर काम मे हस्तक्षेप करनेवाला। व्यर्थ वीच मे वोलनेवाला। दही भात दोनो ही मुलायम चीजे हे। उनके लिए मूसल की आवश्यकता नही पडती। (यह कहावत 'दही भात मे मूसल' अधिकतर इस प्रकार ही प्रचलित है। दाल-भात मे मूसल या मूसलचद भी क०।)

दांड़ा बाला, जाड़ा ढाला; (ग्रा०)

लक्कड जलाने से जाडा भाग जाता है। (प्रयास करने से कार्य सिद्ध होता है।)

दात काटी रोटी है

गहरी दोस्ती के लिए क०।

दांत कुरेदने को तिनका नहीं वचा

अग्नि में सव स्वाहा हो गया। अग्निकाड की भीषणता को प्रकट करने के लिए क०।

दात गिरे और खुर घिसे, पीठ न बोझा लेय।
ऐसे बूढ़े बैल को, कौन बाध भुस देय।

(१) वहुत बूढे और कमजोर वैल के लिए कहते है, उससे कोई काम नही लिया जा सकता।

(२) निकम्मे आदमी के लिए भी व्यग्य मे क०।

दात पर मैल नहीं

वहुत गरीवी की हालत मे होना।

दाई के सिर पान फूला (मु० स्त्रि०)

पुत्र उत्पन्न होने की खुशी मे दाई से क०।

(वच्चे आख-मिचौनी के खेल मे इस वाक्य का करते प्रयोग है। वही मे लिया गया है। पान फूल एक गहना भी होता है।)

दाई चवेली के मिरजा मोगरा

जव कोई तुच्छ आदमी अपना झूठा वडप्पन दिखाए, तव व्यग्य मे क०।

(चमेली और मोगरा फूलो के नाम है। ये मनुष्यो के नाम भी होते है।)

दाई जाने अपनी हाई, (स्त्रि०)

दाई अपने जैसी ही स्थिति सवकी समझती है।

दाम करे सब काम
पैसे से ही सब काम होता है।

दाम दीजे, काम लीजे
पैसा दो और काम कराओ।

दामों ढेरी या हाडों ढेरी
या तो पैसा इकट्ठा करो या हड्डियो का ढेर बनो। यानी बिना पैसे के बेमौत मरो।

दामो रूठा, बातो से नहीं मानता
जिसे अपना पैसा लेना है, वह खाली बातो से नही मानता। उसे तो पैसा चाहिए।

दारू ये—गजब खामोशी, (फा०)
क्रोध की सबसे अच्छी दवा मौन है। अर्थात चुप रहने से क्रोध शान्त हो जाता है।

दाल-भात, खिचड़ी
किसी चीज का गड्डमगड्ड।

दाल मे काला है
कुछ गडबड है।

दावत नही, अदावत है
दावत नही, मुसीबत है।
(खिलाने-पिलाने मे खर्च होता है, इसी से क०।)

दासी करम कहार से नीचे, (हिं०)
नौकरानी का पेशा सबसे बुरा।

दाहना धोवे बायें को, और बायां धोवे दायें को
परस्पर सहयोग से ही काम चलता है।

दिन अच्छे होते हैं, तो ककड़ जवाहर हो जाते है
समय अच्छा आने पर सब काम बनते है।

दिन ईद और रात शबेबरात, (मु०)
हमेशा मौज-मजे मे रहनेवाला।

दिन को ऊनी-ऊनी, रात को चरखा पूनी, (स्त्रि०)
दिन मे अलसाती है और रात मे चरखा-पूनी लेकर बैठती है।
(समय पर काम न करके बेवक्त करे, तब क०। बगला मे है—दिन गेल हेसे खेले रात होले बउ कापास डले। यानी दिन तो हँस-खेलकर बीत जाता है, रात को वह रूई सहलाती है यानी मजे ही मज़े हैं।)

दिन को शर्म, रात को बगल गर्म
जब कोई स्त्री दिन मे अपने पति या अपने किसी प्रेमी से बहुत शर्म करे, तब क०।

दिन खसा, मजदूर हँसा
इसलिए कि काम से छुट्टी मिलेगी।

दिन जब बुरे आते हैं, तो सोने पै हाथ डालो मट्टी हो जाता है
स्पष्ट।

दिन जब भले आते है तो मट्टी मे हाथ डालो सोना होता है
स्पष्ट।

दिन जाते देर नही लगती
स्पष्ट।

दिन दस आदर पाय के, करनी आप बखान।
जो लग काग सराध पख, तौ लग तो सन्मान।
थोडे दिनो की प्रतिष्ठा मिलने पर जब कोई उसी पर अभिमान करने लगे, तब क०।

दिन दीवाली हो गये
बहुत आनद उत्सव मनाया जाना।

दिन दूनी रात चौगुनी
तेजी से वृद्धि के लिए क०। आशीर्वाद मे क०। दिन दूनी रात चौगुनी बढती हो।

दिन नीके बीते जाते है, फेर नहीं वह आते हैं
अच्छा समय फिर नही आता।

दिन भर चले अढाई कोस
आलसी आदमी।

दिन भले आयेंगे तो घर पूछते चले आयेंगे
उन्हे बुलाना नही पडता।

दिन मे सोवे, रोजी खोवे, (लो० वि०)
दिन मे सोना अच्छा नही।

दिमका के खाइल पेंड़, सोच के मारल देह कवनों काम के न रहे
दीमक का खाया पेड और चिंता का मारा शरीर किसी काम का नही रहता।

दिया तो चाद था, न दिया तो मुंह मांद था
किसी की इच्छा पूरी कर दो, तो प्रसन्न हो जाता है। न करो तो नाराज रहता है।

(२) खुशामद वडी चीज है।

दादा जान पराये वरदे आजाद करते थे

अर्थात हम ऐसे आदमी नही, जो अपनी गाठ से कुछ खर्च करेंगे। हम तो मुफ्त की वाहवाही लूटनेवाले आदमी है।

(पराये वरदे आजाद करने का अर्थ होता है, दूसरो का खर्च कराकर स्वय नेकनामी लूटना।)

दादा पडदादा के राज की वाते करता है

लंवी-चौडी हाकनेवाले के लिए क०।

दादा मरिहैं तो भोज करिहै, (पू०)

किसी काम को अनिश्चित काल के लिए टालना। अथवा उसके लिए कोई ऐसी शर्त लगाना, जिससे वह पूरा हो ही न सके।

दादा मरेंगे, जब बैल बटेंगे

दे० ऊ०।

दादा मरेंगे, जब मीरास बटेगी

दे०—दादा मरिहै...।

मीरास=सपत्ति।

दादा मरेंगे तो पोता राज करेंगे, (स्त्रि०)

स्पष्ट।

(ऊपर की चारो कहावतो का लगभग एक-सा भाव है।)

दादू दुनिया वावरी, फिर-फिर मागे दान।
लिखनहारा लिख गया, मेटनहारा कान।

दादू कहते हैं कि ईश्वर से वार-वार कोई प्रार्थना करना व्यर्थ है। भाग्य मे जो लिखा है, वही होगा।

दादे राज न खाय पान, दांत दिखावत गये प्रान, (पू०)

साधारण आदमी दिखावा करे, तव क०।

दान वित्त समान, (हिं०)

सामर्थ्य के अनुसार दान देना चाहिए।

दाना खा मोठ का, पानी पी सोंठ का

मोठ की दाल वायुकारक होती है, इसलिए उस पर सोठ का पानी पीना चाहिए।

सोठ वायुनाशक मानी जाती है।

दाना खाय न पानी पीवे, वह आदमी कैसे जीवे ?

आदमी से अगर काम लेना है, तो उसे खाने को भी मिलना चाहिए।

दाना जल्दबाजी नहीं करते

सोच-विचार कर काम करे।

दाना छितराना तहां जाना जरूर है, (पू०)

जहा अन्नजल है, वही आदमी को जाना पडता है।

दाना दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर

बुद्धिमान शत्रु मूर्ख मित्र से अच्छा।

दाना न घास, खरहरा छः-छः वार

(१) आवश्यक वस्तु न देकर व्यर्थ की चीज देने पर क०।

(२) झूठी सेवा-सुश्रूषा करने पर भी क०।

दाना न घास, घोडे तेरी आस

किसी चीज के रख-रखाव मे कुछ खर्च न करके यह आशा करे कि वह वक्त पर काम आएगी, तव क०।

दाना न घास, पानी छ-छः वार

दे०—दाना न घास खरहरा..।

दाना न घास, हिन-हिन करे

घोडे को अगर दाना और घास न दिया जाए तो वह हिनहिनाएगा। भूखा आदमी शोर मचाता है।

दानी की भाखा खाली न जाय

सज्जन पुरुष की वात खाली नही जाती।

दाने को टापे, सवारी को पादे

खाने को तैयार, पर काम से मुह चुराना।

दाने-दाने को मोहताज है

वहुत गिरी हालत मे है।

दाने-दाने पर मुहर है

विना भाग्य के एक दाना भी नही मिलता।

दाने-पानी के इख्तियार है

भाग्यवादी की उक्ति।

दाने-पानी के हाथ है

दे० ऊ०।

दाम आवे काम

पैसा वक्त पर काम आता है।

तो यह तो उसके लिए एक दुर्भाग्य की ही बात है। प्रचलित रूप—गोकुल की बेटी।

दिल्ली के दिलवाली, मुंह चिकना पेट खाली

शहर के छैल-चिकनियो के लिए। खाने को चाहे न हो, पर ऊपर साफ-शौकीन बने रहते है।

दिल्ली गदर पहले चमन बनी हुई थी

मुगलो के ज़माने की याद मे किसी का कहना।

दिल्ली दूर है

अभी रास्ता बहुत तै करना है।

दिल्ली से मैं आऊं, ख़बर कहे मेरा भाई

(१) जब कोई आदमी किसी जानी हुई बात को स्वय न कहकर किसी दूसरे से पूछने के लिए कहे, जिसे उसका कोई ज्ञान नही, तब क०। (२) जब जानी हुई बात को कोई दूसरा सुनाने आए, तब भी कह सकते है।

दिल्ली से हींग आई, तब बड़े पक्के

दिल्ली से हीग आने पर बडे तैयार हुए।

(१) व्यर्थ का आडबर।

(२) किसी काम मे आवश्यकता से अधिक विलब लगना।

दिवाल रहेगी तो लेब बहुतेरे चढ़ रहेगे, (स्त्रि०)

जान बचेगी तो शरीर पर मास भी चढ जाएगा। लेब=लेप, पलस्तर।

दिवालिये की साख पताल मे

दिवालिए की कोई साख नही होती।

दीदारबाजी और मौला राजी

खूबसूरत औरतो से नजरबाजी करने मे ईश्वर नाराज़ नही होता, यह शोहदो का कहना है।

दीन दुनिया की दम-बदम कीजे, किसकी शादी वो किसका ग़म कीजे

अपने लोक-परलोक को बनाना चाहिए, दूसरो के झगडे मे कोई कहा तक पड सकता है?

दीन व दुनिया मे उसका होय बुरा, जो किसी का कोई बुरा चीते

जो दूसरो का बुरा चाहता है, उसका लोक-परलोक दोनो जगह बुरा होता है।

दीन से दुनिया रखनी मुश्किल है

(१) धर्म-पालन करके दुनिया मे रहना मुश्किल है।

(२) ईश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है, पर दुनिया को प्रसन्न रखना कठिन है।

दीन से दुनिया है

धर्म के सहारे ही ससार टिका है।

दीवाना बकारे खुद हुशियार

(१) पागल, पर अपने काम मे होशियार।

(२) पागल भी अपने काम मे होशियार होता है।

दीवाना है व लेकिन बात कहता है ठिकाने की

दिमाग़ ठीक नही, लेकिन बात पते की कहता है।

दीवानी आदमी को दीवाना कर देती है

दीवानी के मुकदमे आदमी को पागल बना देते हैं। वे वर्षो चलते है।

दीवाने को बात बताई, उसने ले छप्पर चढाई

नासमझ से कोई भेद की बात नही कहना चाहिए।

दीवाने से आंख नहीं मिलाइये

ऊटपटाग आदमी से बात न करना ही ठीक है।

दीवानो के क्या सिर सींग होते है

जब कोई बेसिर-पैर की बात कहे।

दीवार के भी कान होते हैं

गुप्त बात को किसी से कहते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए, ऐसा न हो कोई दूसरा सुन ले।

दीवार खाई आलो ने, घर खाया सालो ने

आलो से दीवार कमज़ोर होती है। और सालो से घर नष्ट होता है, क्योकि बहिन की वजह से वे मनमाना खाते-पीते है।

दीवाली की कुल्हिया

देखने मे अच्छी, पर किसी काम की नही। (दीपावली मे रग-बिरगे कुल्हड और मिट्टी के अन्य बर्तन बनाए जाते है। वे देखने मे सुन्दर होते है, पर बाद मे किसी उपयोग मे नही आते।)

दीवाली की रात को बूटी बूटी पुकारती है, (लो० वि०)

दीवाली की रात मे लोग जडी-बूटिया खोदकर

दिया दान मागे मुसलमान, (हि०)

दिया हुआ दान मुसलमान ही वापस लेते हैं। (मुसलमानो मे यह प्रथा है कि लडकी के मरने पर दहेज मे दिए धन को फिर वापस माग लेते है। यह स्त्री के फायदे के लिए है, पर इसका उल्टा अर्थ लगाया गया।)

दिया दूर से, लागी साथ खाने, (स्त्रि०)

मागने पर किसी को कोई चीज़ दे दो, तो वह धृष्ट बन जाता है। फिर मागने लगता है।

दिया न बाती, मुडो फिरे इतराती, (स्त्रि०)

कोरा घमड।

दिया फ़ातिहा को, लगे लुटाने, (मु०)

किसी चीज़ का दुरुपयोग। फातिहा वह चढावा कहलाता है, जो मरे हुए लोगो के नाम पर दिया जाता है।

दिया वस्त अनूप है, दिया कहे सब कोय।
धरा वस्त ना पाइये, जो पाये दिया न होय।

स्पष्ट।

दिया के यहा दो अर्थ है। (१) दी हुई वस्तु, अर्थात दान, तथा (२) दीपक। पाये=पास। इस दोहे का शुद्ध रूप इस प्रकार है—

दिया वस्तु अनूप है, दिया करो सब कोय।
धरी वस्तु ना पाइये, जो कर दिया न होय।

दिया लिया ही आडी आता है

अच्छे कर्म ही अत समय काम आते है।

दिया हाथ, खाने लगा साथ

किसी को थोडा सहारा देने पर जब वह गले पड जाए, तब क०।

दिया है तो देख ले

(१) दान दिया है तो फल मिलेगा।

(२) हाथ मे दीपक हो, तो उससे सब देखा जा सकता है।

दिये की रोशनी महशर तक, (स्त्रि०)

यहा दिये के दो अर्थ हैं—

(१) दीपक और (२) दान। दीपक का प्रकाश जग मे फैलता है, पर दान का प्रकाश स्वर्ग तक।

दिये तले अधेरा

दे०—चिराग तले . ।

दिल का दिल आइना है

एक के हृदय की बात दूसरे से छुपी नही रहती।

दिल का मालिक खुदा है

वह जिससे भी जैसा काम करवा ले।

दिल की थी मैं सादी, जिसका पाती उसका खाती

किसी भोली स्त्री का कहना कि जातपात का कोई भेद मैंने नही किया, जिसका मिल जाता उसी का खा लेती।

दिल को दिल से राह है

एक हृदय से दूसरे के लिए हमेशा रास्ता रहता है। इसका शुद्ध रूप 'दिल को दिल से राहत है'। राहत=आराम।

दिल को हो करार तो सब सूझें त्यौहार

मन निश्चिन्त होने पर ही त्योहार अच्छे लगते है।

दिल में आई को रखे सो भडवा

मन मे आई बात को छिपाना न चाहिए।

दिल में नहीं डर, तो सबकी पगड़ी अपने सिर

सच्चे और ईमानदार आदमी की सब इज्जत करते है।

दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज है ?

प्रेम मे रूप-कुरूप नही दिखाई देता।

दिल लगा मेढकी से तो पद्मिनी क्या चीज है ?

दे० ऊ०।

दिल सोज़, खाना तराश

दिल की आग, घर का चाकू।

बुरा लडका या बुरी पत्नी।

दिलेरी मर्दो का गहना है

वीरता से ही मनुष्य की शोभा है।

दिल्ली की कमाई, दिल्ली ही मे गंवाई

नौकरी मे कुछ बचा न पाना।

दिल्ली की बेटी, मथुरा की गाय; करम फटे तो बाहर जाय

यदि दिल्ली जैसे बडे शहर की लडकी या मथुरा जैसे पुनीत स्थान की गाय किसी दूसरी जगह जाए,

दुनियां धुंध का पसारा है, (हि०)
संसार एक माया है, अथवा असार है।

दुनिया धोखे की टट्टी है
ससार मिथ्या है।

दुनियां बउम्मेद कायम है
संसार आशा पर टिका है।

दुनिया बेसबात है
ससार नश्वर है।
बेसबात=जिसकी स्थिरता न हो। क्षण-स्थायी।

दुनिया मुर्दा पसन्द है, (मु०)
दुनिया मरे हुओ की ही प्रशसा करती है। जीवित को कोई नही पूछता।

दुनियां मे ऐसे रहिए, जैसे साबुन में तार
अर्थात दुनिया मे उससे अलग होकर इस तरह रहना चाहिए, जैसे साबुन मे तार रहता है। साबुन को काटते समय तार उससे बिल्कुल अलग हो जाता है। साबुन से चिपकता नही।

दुनियां मे चार पैसे बडी चीज है
स्पष्ट।

दुनियां मे दो ही चीज है; बेटा, बेटी
जब किसी को लडके की आकाक्षा रही हो, और लडकी पैदा हो, तब उसे सतोष देने के लिए क०।

दुनियां मे साढे तीन दल है
चीटी, टीडी और बादल, ये तीन दल कहलाते है। आधे मे सारी दुनिया है।

दुनियां है और खुशामद
खुशामद से ही आप अपना काम बना सकते है और रह सकते है।

दुनियां हे और मतलब
मतलब के सिवा दुनिया मे कुछ नही। हर आदमी मतलब चाहता हे।

दुबला कुनबा, सराप की आस
किसी कमजोर घर के लोगो को अगर कोई सताए तो उनके पास सिवा कोसने और गाली देने के और कोई सहारा नही होता।

दुबले कलावंत की कौन सुने ?
गरीब गायक का गाना कोई नही सुनता। दुर्बल की सब उपेक्षा करते है।

दुबले मारें शाह मदार
शाह मदार भी दुर्बल को ही सताते है।
(स०—दैवो दुर्बल घातक।)
(शाहमदार मुसलमानो के एक प्रसिद्ध सत हो गए है, जिनकी मकनपुर मे कब्र है।)

दुविधा मे दोनो गये, माया मिली न राम
सशय की स्थिति मे होना। दो मे से कोई काम न कर पाना।

दुम दबा के भागना
डरपोक कुत्ते की तरह डर कर भागना।

दुम मे नमदा बांध के चादनी को सौंप दिया
किसी का मजाक उडाने के लिए क०।
नमदा=जमाए हुए कबल या कपडे का टुकडा।

दुरगी छोड दे, एक रग हो जा।
सरासर मोम हो या संग हो जा।
दुनिया मे रहकर दुहरा व्यवहार ठीक नही, या तो मोम की तरह नरम होकर रहे, या पत्थर की तरह सख्त।

दुलारी बिटिया, ईंटे का लटकन, (पू०)
बेढगा शृंगार।
लटकन=कान का एक गहना।

दुशाले मे लपेट कर मारना
मीठे शब्दो मे डांटना।

दुश्मन की निगाह जूती पर
अर्थात दुश्मन कभी चेहरे की तरफ नही देखता। (शायद इस डर से कि कही आप उसे जूता उतार कर मार तो नही रहे हैं।)

दुश्मन के दिल मे जगह करने को हुनर चाहिए
दुश्मन के दिल को जीतने के लिए बडी होशियारी चाहिए।

दुश्मन को कम न समझिए
शत्रु की उपेक्षा नही करनी चाहिए।

दुश्मन के मन का चेता हुआ
दुश्मन जो चाहते थे, वही हुआ।

लाते है। विश्वास किया जाता है कि इस दिन खोद कर लाई गई जडी-बूटी अधिक गुण दिखाती है। उसी से आशय है।

दीवाली के दिये चाटकर जायेंगे

मुफ्तखोरे के लिए क०।

दीवाली जीत, साल भर जीत, (लो० वि०)

स्पष्ट। दीवाली मे जुए मे जीतना शुभ मानते है।

दीवाली बरस मे एक दिन

शुभ दिन या उत्सव का दिन रोज-रोज नही आता।

दुआ और दवा, नित करनी चाहिए

बीमारी की हालत मे ईश्वर से नित्य प्रार्थना भी करनी चाहिए और दवा भी खानी चाहिए।

दुआर धनी के पड रहे, धका धनी का खाय

धनी के पास रहने और उसकी खुशामद करते रहने से कुछ-न-कुछ लाभ होता ही है। पूरा दोहा इस प्रकार है—

द्वार धनी के पड रहै, धका धनी के खाय।
कबहू धनी नेवाजही, जो दर छाडि न जाय।

यह दूसरी पक्ति इस प्रकार भी सुनने मे आती है—

एक दिन ऐसा होयगा आप धनी ह्वै जाए।

दुखते चोट, कनौड़े भेंट

चोट लगी, और काने से भेट। जिस आदमी से बचना चाहते हो, उसी का मिल जाना। काने का रास्ते मे मिलना अपशकुन मानते है।

दुखते दात को उखाडना ही चाहिए

जिससे निरतर कष्ट मिले, उसे अलग ही कर देना चाहिए।

दुख भरें बी फाख्ता, कौवे मेवे खायें

कोई तो मेहनत करे, और कोई उसका फल भोगे। फाख्ता=एक चिडिया।

दुख मे सुख की कदर होती है

स्पष्ट।

दुख मे हर को सब भजे, सुख में भजे न कोय।
जो सुख मे हर को भजे, तो दुख काहे को होय।

स्पष्ट।

दुख सुख निस दिन संग है, मेट सके ना कोय।
जैसे छाया देह की, न्यारी नेक न होय।

जीवन मे सुख-दुख हमेशा लगे रहते हैं। उन्हे अलग नही किया जा सकता।

नेक=ज़रा भी।

दुख सुख बहिन भाई हैं

दुख-सुख का जोडा है।

दुख सुख सबके साथ लगा हुआ है

दुनिया मे सभी सुख-दुख भोगते है।

दुखिया दुख रोवे, सुखिया जेब टोवे, (स्त्रि०)

यह देखने के लिए कि वह अपना क्या मतलब गाठ सकता है। (फैलन की टिप्पणी है कि यह वकीलो के लिए कही जाती है।)

दुखिया रोवे, सुखिया सोवे

स्पष्ट।

दुधैल गाय की दो लातें भी सही जाती है

जब किसी से कुछ मिलने की आशा होती है, तो उसके नाज-नखरे भी उठाने पडते हैं।

बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करवे बैन।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारु धैन। (वृन्द)

दुनियां खैये मक्कर से, रोटी खैये शक्कर से

दुनिया का चालाकी से लाभ उठाए और अपनी रोटी शक्कर से खाए। मतलब, दुनिया मे सीधे आदमी की गुज़र नही।

प्रचलित पाठ—'दुनिया ठगिए मक्कर से' भी है।

दुनियां चंद रोज़ा है

दुनिया कुछ दिनो की है।

दुनियां जाए उम्मेद है

दुनिया नष्ट हो जाए, पर आशा फिर भी रहती है। वह कभी नही मिटती।

दुनियां ज़ाहिरपरस्त है

दुनिया दिखावट को पसद करती है।

दुनिया दुरगी, मकारा सराय,
कहीं खैर-खूबी, कहीं हाय-हाय

स्पष्ट।

मकारा सराय=धोखेबाजो की जगह।

तुम अपनी मा को सिर मुडाकर गधे पर सवार कराके नही लाओगे तव तक मै अच्छी नही हो सकती। पति भी वडा होशियार था। वह अपनी ससुराल पहुचा और सास से वोला कि तुम्हारी लडकी वहुत वीमार है। अव अगर तुम सिर मुडाकर और गधे पर सवार होकर उसके सामने पहुचो तव तो वह अच्छी हो सकती हे, अन्यथा नही। मा वेचारी सीधी-सादी थी। लडकी की खातिर उससे जैसा कहा गया वैसा ही उसने किया। जव वह उसके दरवाजे पर आई तो लडकी यह देखकर मन-ही-मन वहुत प्रसन्न हुई कि उसकी चालाकी काम कर गई, और उसने कहावत की प्रारम की पक्ति अपने पति को सुनाई, किन्तु जव जवाव मे उसके पति ने दूसरी आधी पक्ति कही, तो वह वहुत निराश हुई और लज्जित होकर रह गई।)

कहावत का कोई विशेप अर्थ नही, सिवा इसके कि स्त्री अगर चालाक होती है तो पुरुष भी इस मामले मे उससे कम नही।

देखतो आखां मक्खी नहीं निगली जाती

देखने-सुनने मे वुरा हो, तो जानवूझकर कोई अवाछनीय काम नही किया जाता।

दे०—जीती मक्खी नही ।

देखन के अतीत है, वेस्वा से रहे फस।
माथे तिलक लगाये है, माला गल मे दस।

स्पष्ट।

अतीत=सन्यासी, यति, साधु।

देखना सो पेखना, (स्त्रि०)

दोनो एक ही वात हैं।

देखने और सुनने मे वड़ा फर्क है

सुनी हुई वात झूठ हो सकती है, पर देखी हुई नही।

देखने को वुलवुल निगलने को डुमरिया वड, (पू०)

देखने मे दुवला-पतला पर काम मे मजवूत ।

डुमरिया वड=जगली वटवृक्ष।

देखने मे न, सो चखने मे क्या ?

जो वस्तु देखने मे अच्छी नही, वह चखने मे क्या अच्छी हो सकती है ?

देख पड़ोसन जल मरी

ईर्ष्यालु के लिए क०।

देख पराई चूपडी गिर पड वेईमान।
एक घडी की बेहियाई दिन भर का आराम।

मुफ्त का माल खाने के लिए मिले तो छोडना नही चाहिए।

देख पराई चूपडी मत ललचावे जी।
मिस्सी कुस्सी खाय के ठंडा पानी पी।

स्पष्ट।

मिस्सी=चने की रोटी।

देख-भाल के पाव रखना चाहिए

स्पष्ट।

देखादेखी साधे जोग, छीजे काया बाढे रोग

दूसरो का गलत अनुकरण ठीक नही।

देखा न भाला, सदके गई खाला, (स्त्रि०)

विना देखे ही किसी की प्रशसा करने लग जाना।

सदका=न्योछावर।

सदके जाना=न्योछावर होना ।

देखा भाला तोपची ओर चपरा सैयद होय

सव जानते है कि वह एक मामूली तोपची है, पर सैयद वना फिरता है।

झूठा वडप्पन दिखाना।

देखा मीरदाद तेरा रंबा, गाजरो की रेलपेल, रोटियो का चंवा

मिया मीरदाद, तुम्हारे हल की करामात हमने देख ली। गाजरे तो वहुत हुईं, पर रोटियो का पता नही, अर्थात गेहू हुए ही नही, जिनसे पेट भरता। कहावत का भाव वहुत स्पष्ट नही। फैलन ने चवा का अर्थ 'अभाव' किया हे, जो स्पष्ट नहीं हे।

देखा शहर वगाला, दात लाल, मुह काला

वगाली पान वहुत खाते हें, शायद इसीलिए कहा गया है। पर यह कोरी तुकवदी हे, कोई विशेप अर्थ नही जान पडता।

देखा सो खाया, न मुह पाव जोगा, (पू०, स्त्रि०)

जो मिला सो खा लिया, मुह-पाव की ओर नही देखा, अर्थात उनके लिए कुछ वचाया नही।

दुश्मन कौन? कि 'मा का पेट'
सगे भाई के बराबर दुश्मन कोई नही।
(सपत्ति के लिए भाइयो मे झगडा होता है, उसी से अभिप्राय है।)

दुश्मन सोये न सोने दे
स्पष्ट।

दुश्मनो मे यूं रहिए, जैसे बत्तीस दातों मे जबान
दुश्मनो के बीच समलकर रहना चाहिए।

दुष्ट न छांडे दुष्टता, कैसी हू सिख देय।
धोये हू सौ बार के, काजर स्वेत न होय।
स्पष्ट।

दूध का जला, छाछ फूंक-फूंक कर पीता है
एक बार धोखा खाने पर मनुष्य भविष्य के लिए सावधान हो जाता है।

दूध का दूध, पानी का पानी
सही न्याय।

दूध का-सा उबाल है, आया चला गया
बहुत क्रोधी स्वभाव का होना, पर जल्दी शान्त भी हो जाना।

दूध की अभी बू आती है
अर्थात अभी तुम्हारा बचपन दूर नही हुआ।

दूध की-सी मक्खी निकाल कर फेंक दी
तिरस्कारपूर्वक अलग कर दिया, कोई सम्बन्ध नही रखा।

दूध के दात भी अभी नहीं टूटे है
अभी तुम लडके हो।

दूध पूत किस्मत से
धन और पुत्र भाग्य से मिलते हैं।

दूध भी धौला, छाछ भी धौली
दो चीजे ऊपर से देखने मे भले ही एक-सी हो, पर उनके गुण मे अतर होता है।

दूध मे की मक्खी किसने चक्खी?
घृणित की परीक्षा किसने ली? भोजन मे अगर मक्खी गिर जाए तो उस भोजन को ही फिर अलग कर देते हैं।

दूधो नहाओ, पूतों फलो, (स्त्रि०)
आशीर्वाद।

दूर के ढोल सुहावने, (स्त्रि०)
दूर की सब चीजे अच्छी लगती है अथवा अच्छी मानी जाती हैं।

दूल्हा के पत्तल न, बजनिए के थार (पू०)
वास्तव मे जिसे मिलना चाहिए, उसे कुछ न मिले और ऊपरवाले उडा ले जाए।

दूल्हा गयल बरात
दूल्हा के चलने पर ही (उसके पीछे) बरात चलती है।

दूल्हा ढाई दिन का बादशाह है
क्योकि ब्याह मे सब तरह से उसकी इज्जत होती है।

दूल्हा दुल्हिन पाय, सहबाला लातं खाय
स्पष्ट।
सहबाला=(शहबाला) वह छोटा लडका, जो दूल्हे के साथ बरात मे जाता है।

दूल्हा दुल्हिन मिल गये, झूठी पडी बरात
जब दो आदमी अपने-अपने समर्थको को लेकर आपस मे लड रहे हो, पर बाद मे उनमे तो आपस मे समझौता हो जाए और उनके साथियो को मूर्ख बनना पडे, तब क०।

दूसरी बात दूसरे कहते हैं
अर्थात दूसरे कुछ कहे, मैं हमेशा सच कहता हू।

दूसरे का सेंदुर देख अपना लिलाट फोडे, (पू०)
दूसरे की बढती देख ईर्ष्या करना।

दूसरो का ऐब बडी जल्दी देख सकते हैं
पर अपना ऐब कोई नही देखता।

देखता है सो कहता नहीं, कहता है सो देखता नहीं
आख और जीभ पर कहा गया है। आख देखती है, पर कह नहीं सकती, जीभ कह सकती है, पर देख नहीं सकती।
(तु०—गिरा अनयन नयन बिन बानी।)

देख तिरिया के चाले, सिर मुडा मुह काले।
देख मर्दों की फेरी, मा तेरी कि मेरी।
(कथा है कि कोई चालाक औरत बीमारी का बहाना करके लेट गई और अपने पति से बोली कि जब तक

तुम अपनी मा को सिर मुडाकर गधे पर सवार कराके नही लाओगे तव तक मै अच्छी नही हो सकती। पति भी वडा होशियार था। वह अपनी ससुराल पहुचा और सास से वोला कि तुम्हारी लडकी वहुत वीमार है। अव अगर तुम सिर मुडाकर और गधे पर सवार होकर उसके सामने पहुचो तव तो वह अच्छी हो सकती है, अन्यथा नही। मा वेचारी सीधी-सादी थी। लडकी की खातिर उससे जैसा कहा गया वैसा ही उसने किया। जव वह उसके दरवाजे पर आई तो लडकी यह देखकर मन-ही-मन वहुत प्रसन्न हुई कि उसकी चालाकी काम कर गई, और उसने कहावत की प्रारभ की पक्ति अपने पति को सुनाई, किन्तु जव जवाव मे उसके पति ने दूसरी आधी पक्ति कही, तो वह वहुत निराश हुई और लज्जित होकर रह गई।)

कहावत का कोई विशेष अर्थ नही, सिवा इसके कि स्त्री अगर चालाक होती है तो पुरुष भी इस मामले मे उससे कम नही।

देखतो आखो मक्खी नहीं निगली जाती।

देखने-सुनने मे वुरा हो, तो जानवूझकर कोई अवाछनीय काम नही किया जाता।

दे०—जीती मक्खी नही ।

देखन के अतीत है, वेस्वा से रहे फस।
माथे तिलक लगाये है, माला गल मे दस।

स्पष्ट।

अतीत=सन्यासी, यति, साधु।

देखना सो पेखना, (स्त्रि०)

दोनो एक ही वात हैं।

देखने और सुनने मे बड़ा फर्क है

सुनी हुई वात झूठ हो सकती है, पर देखी हुई नही।

देखने को वुलवुल निगलने को डुमरिया वड, (पू०)

देखने मे दुवला-पतला पर काम मे मजवूत ।

डुमरिया वड=जगली वटवृक्ष।

देखने मे न, सो चखने मे क्या ?

जो वस्तु देखने मे अच्छी नही, वह चखने मे क्या अच्छी हो सकती है ?

देख पड़ोसन जल मरी

ईर्ष्यालु के लिए क०।

देख पराई चूपडो गिर पड वेईमान।
एक घडो की बेहियाई दिन भर का आराम।

मुफ्त का माल खाने के लिए मिले तो छोडना नही चाहिए।

देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी।
मिस्सी कुस्सी खाय के ठंडा पानी पी।

स्पष्ट।

मिस्सी=चने की रोटी।

देख-भाल के पाव रखना चाहिए

स्पष्ट।

देखादेखी साधे जोग, छीजे काया बाढे रोग

दूसरो का गलत अनुकरण ठीक नही।

देखा न भाला, सदके गई खाला, (स्त्रि०)

बिना देखे ही किसी की प्रशसा करने लग जाना।

सदका=न्योछावर।

सदके जाना=न्योछावर होना ।

देखा भाला तोपची ओर चपरा सैयद होय

सब जानते है कि वह एक मामूली तोपची है, पर सैयद बना फिरता है।

झूठा वडप्पन दिखाना।

देखा मोरदाद तेरा रवा, गाजरो की रेलपेल, रोटियो का चंबा

मिया मीरदाद, तुम्हारे हल की करामात हमने देख ली। गाजरे तो वहुत हुई, पर रोटियो का पता नही, अर्थात गेहू हुए ही नही, जिनसे पेट भरता। कहावत का भाव वहुत स्पष्ट नही। फैलन ने चवा का अर्थ 'अभाव' किया हे, जो स्पष्ट नही है।

देखा शहर बंगाला, दात लाल, मुह काला

वंगाली पान वहुत खाते हें, शायद इसीलिए कहा गया है। पर यह कोरी तुकवदी हे, कोई विशेष अर्थ नही जान पडता।

देखा सो खाया, न मुँह पाव जोगा, (पू०, स्त्रि०)

जो मिला सो खा लिया, मुह-पांव की ओर नही देखा, अर्थात उनके लिए कुछ वचाया नही।

देखिये ऊट किस कल बैठता है ?

देखें, अंत मे क्या होता है ?

(कथा है कि किसी कुम्हार और कुजडे ने एक ऊट किराये पर किया। एक ओर कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तन लादे और दूसरी ओर कुजडे ने अपनी शाक-भाजी। रास्ते मे ऊट ने कुजडे की शाक-भाजी पर मुह मारना शुरू कर दिया। तब यह देखकर कुम्हार खुश हुआ कि उसका कुछ नुकसान नही हो सकता, क्योकि ऊट बर्तन नही खा सकता। इस पर कुजडे ने कहा—घबराओ नही, देखे कि ऊट किस करवट बैठता है। जब ठिकाने पर पहुचे तो ऊट उसी करवट बैठ गया, जिधर कुम्हार के बर्तन रखे थे। हुआ यह कि बर्तन सब दबकर चकनाचूर हो गए। इससे शिक्षा यह मिलती है कि किसी भी बात का अतिम परिणाम देखे बिना उसके सबध मे अपना फैसला नही देना चाहिए।)

देखिये कसाई की नजर और खिलाइये सोने का निवाला

बच्चो के लालन-पालन के सबध मे कहा गया है कि उनका ज्यादा लाड-प्यार नही करना चाहिए। उन्हे खूब अच्छा खिलाए-पिलाए, और पहिनाए, पर उन पर कडी नज़र भी रखनी चाहिए।

देखिये दीदार और मारिये पैजार, (स्त्रि०)

औरतो को आख से देख भले ही ले, पर उनसे दूर रहना चाहिए। वेश्याओ के लिए कहा गया है। पैज़ार=जूता।

देखी ठोक बजा के दुनिया तालिब जर की

दुनिया मे सभी धन की इच्छा रखते हैं।

देखी तेरी कालपी, बावन पुरा उजाड़

कोरा नाम असलियत कुछ नही।

(कालपी उत्तर प्रदेश मे जमुना किनारे जालौन जिले का एक पुराना नगर है। यहा मुगल जमाने के खडहर बहुत हैं। उसी से कहावत चली।)

देखी पीर तेरी करामात, (स्त्रि०)

अर्थात कोरा नाम ही नाम, करतूत कुछ नही।

देखी राम! तेरी करतूत, (स्त्रि०)

देख लिया कि तुमने क्या किया ?

देखे बौरहया आवे पाचो पीर, (स्त्रि०)

देखने मे पागल है, पर पाचो पीर सिर आते हैं, अर्थात बडी चालाक है। मुसलमानो के पाच प्रसिद्ध पीर हजरत मुहम्मद, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। पर इनके अलावा और भी कई पीर हुए हे। उनमे से किसी भी पाच से यहा आशय है।

देखे को बुड्ढ, काम को आधी, (स्त्रि०)

देखने मे कमजोर पर काम मे फुर्तीली।

देखे-भाले शेखजी और चिडियें सैय्यद होय

शेख जी को सब जानते हैं कि वे कैसे है, पर चिडियो को पकडने के लिए सत बनते है, अर्थात लोगो को अपने जाल मे फसाने के लिए भलमनसाहत का जामा पहिनते है।

देखे राही, बोले सिपाही

कही लूटमार होने पर राहगीर तो खडा-खडा तमाशा देखता है, पर बोलता तो सिपाही ही है। अर्थात सामने तो हिम्मतवाला ही आता है।

देखो मिया के छइजइ, फाटा जामा तीन बद, (स्त्रि०)

कोरे शौकीन के लिए क०।

(मिया के जामे मे सिर्फ तीन बद है, होने चाहिए आठ या नौ।)

देखो रे, अहिरिनिया के ढीठा,

छटलास चावर, परोसलल पीठा (पू०, स्त्रि०)

इस अहीरनी की ढिठाई तो देखो, चावल तो उसने अलग कर लिये और माड परोसा है। चालाक औरत के लिए।

देना भले, न लेना

एहसान करना तो अच्छा, पर किसी का एहसान लेना अच्छा नही।

देता भूले, ना लेता, (व्य०)

कर्जदार कर्ज का रुपया देना भूल जाता है, पर लेनेवाला नही भूलता।

दे दाल मे पानी, पंगत बह चले चौहानी, (पू०)

डालो दाल मे इतना पानी कि चारो तरफ धार बह चले। (१) जब खानेवाले अधिक आ गए

हो, और शाक-भाजी कम पड रही हो, तब हँसी मे। (२) कजूस के लिए भी कह सकते है।
चौहानी=चौमुहानी।

दे दिलावे, दे दे करे, सो प्रानी भव सागर तरे, (हिं०)
स्पष्ट।
दान के सबध मे कहा गया है।

दे दुआ समधियाने को, नहीं फिरती दो-दो दाने को, (स्त्रि०)
किसी औरत को समधियाने का मुफ्त का माल मिल गया, इस पर कोई दूसरी औरत मौका पाकर कहती है कि समधियाने की कुशल मनाओ कि जो तुम्हारी माली हालत सुधर गई, नही तो अभी भूखो मर जाती।
(औरते आपसी झगडो मे प्राय इस तरह की ताने-बाजी किया करती है।)

दे दे बारूद मे आग, किसकी रही और किसकी रह जायगी ?
अर्थात खूब खर्च करो, उडाओ खाओ, कजूसी किसलिए ?

देना और मरना बराबर है
किसी का देनदार होना बडे अपमान की बात है।

देना थोडा, दिलासा बहुत
जो वक्त पर मदद तो कम करे पर बात बहुत, उससे क०।

देना भला न बाप का, बेटी भली न एक।
चलना भला न कोस का, साईं राखे टेक।
किसी का भी कर्ज़दार होना अच्छा नही, बेटी एक भी अच्छी नही, और एक कोस भी पैदल चलना पडे, तो वह भी अच्छा नही।

देना लेना काम डोम-ढाढ़ियो का, मुहब्बत बड़ी चीज़ है
किसी का लेकर जो नही देते है, उनकी उक्ति मे क०।
(डोम और ढाढी राजपूताने की दो छोटी याचक जातिया है।)

देनी पडी बुनाई और घटा बतावे सूत
जब बुनाई देनी पडी, तब कहते है 'सूत कम हो गया।' देने मे जो हीला-हवाला करे, उसके लिए क०।
(कहावत उस समय की है जब लोग चरखे से सूत कात कर जुलाहो को बुनने के लिए दे दिया करते थे। किसी ने बुनने के लिए सूत दिया, पर जब मज़दूरी देने का वक्त आया, तो यह बताया कि हमारा सूत घट गया।)

देने के नाम तो दरवाज़े के किवाड भी नहीं देते
किसी कजूस या ना-देनदार के लिए कहा गया है कि वह तो देने का नाम ही नही जानता। और तो और, घर के किवाड भी नही देता। यहा देने से मतलब लगाने या भेड़ने से है।

देनेवाले से दिलानेवाले को ज्यादा सवाब है
परोपकारी की अपेक्षा परोपकार करानेवाले को अधिक पुण्य मिलता है।

देबी दिन काटें, लोग परचौ मांगें, (हिं०)
देवी दिन काट रही हैं, और लोग उनकी महिमा देखना चाहते हैं।
जब कोई स्वय विपत्ति मे हो, और उससे सहायता मागी जाए तब क०।

देबी मदार का कौन साथ ?
देवी हिन्दुओ की है और मदार साहब मुसलमानो के पीर है। दोनो अनमेल का साथ हो कैसे सकता है ?
(कट्टर लोगो का कहना है, जब कि जनता इस तरह के भेदभाव नही मानती।)

देर आये दुरुस्त आये
जो काम देर से होता है, वह ठीक होता है।
(फा०—देर आयद दुरुस्त आयद।)

देवता बासना के भूखे है, (हिं०)
देवता प्रेम और भक्ति चाहते हैं।

देव न मारे डींग से, कुमति देत चढाय
ईश्वर किसी को डंडे से नही मारता, मनुष्य की कुबुद्धि ही उसे ले डूबती है।
(डीग का अर्थ फैलन ने 'डडा' किया है, पर खुल्लम-खुल्ला अथवा 'शेखी' भी उसका अर्थ यहा हो सकता है।)

देवेगा सो पावेगा, वोवेगा सो काटेगा

स्पष्ट।

देस चोरी न, परदेस भीख

ऐसी जगह रहकर, जहा सब लोग जानते हो, चोरी करने की अपेक्षा वाहर जाकर भीख मागना अच्छा, क्योकि वहा कोई पहिचानेगा नही और उसमे शर्म की कोई वात नही होगी।

देस चोरी, परदेस भीख

ऐसे आदमी के लिए कहते है, जिसका चोरी या भीख के सिवा गुजर-वसर का और कोई ज़रिया नही। घर रहकर वह चोरी करके काम चलाता है, क्योकि यह काम चुपचाप किया जा सकता है और वाहर जाकर भीख मागता है, क्योकि वहा वैसा करने मे कोई कठिनाई नही ।

देस पर चढाव, सिर दुक्खे न पाव

घर आने के लिए कितना ही रास्ता तै करना पडे, पर न सिर दर्द करता हे, न पैर। घर की ममता का प्रमाण।

देसा-देसा चाल, कुला-कुला व्योहार

अपने-अपने देश के रीति-रिवाज और अपने-अपने कुल के व्यवहार अलग-अलग होते हैं।

देसी गधा, पजावी रेंक

अपनी रहन-सहन या भाषा छोडकर जव कोई दूसरे की रहन-सहन या भाषा वरते, तव क०।

देसी गवा, पूर्वी चाल

दे० ऊ०।

देसी घोडी मराठी चाल

दे० ऊ०।

देसी मुर्गी, विलायती वोली

दे० ऊ०।

(ऊपर की चारो कहावतो का लगभग एक ही आशय है।)

देह धरे के दंड हैं, (हिं०)

ससार मे आकर नाना प्रकार के कष्ट भोगने पडते हैं।

देह मे अनेक रोग भरे हैं, (हिं०)

स्पष्ट।

(स०—शरीर व्याधि मदिरम्।)

देह मे न लत्ता, लूटे के कलकत्ता, (पू०)

पास मे पैसा नही, फिर भी कलकत्ते को जाकर लूटेंगे। दुस्साहस ।

दै। न मारे डेंग से, कुमति देत चढाय

ईश्वर किसी को डडे से नही मारता। समय बुरा आने पर आदमी की वुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वही उसे ले डूवती है।

दो आदमियों की गवाही से तो फांसी होती है

तव फिर साधारण मामलो मे तो दो मनुष्यो की गवाही या उनकी सलाह मानी ही जानी चाहिए।

दो कसाइयों मे गाय मुरदार, (मु०)

दो कसाइयो मे तो गाय अपने-आप ही मर जाती है। फिर वह खाने के काम की नही रहती। मुसलमानों मे ज़िवह किये गए जानवर का मास ही खाते है।

दो खसम की जोरू, चौसर की गोट

जिसका दाव लगा, उसी ने कब्ज़ा कर लिया।

दो घर मुसलमानी, तिसमे भी आनाकानी

मुसलमानो के केवल दो तो घर, और वे भी आपस मे लडते रहते है। सजातीय लोग थोडे हो और वे भी लडे, तव क०।

दो चून के भी वुरे होते हैं

दो का मुकावला करना मुश्किल होना है।

दो जोरू का खसम, चौसर का पासा

कभी इधर से, कभी उधर से ढकेल दिया जाता है।

दो दिल राजी, तो क्या करेगा काजी ? (मु०)

किसी मामले मे अगर दोनो पक्ष राजी है, तो उसमें फिर कोई कुछ नही कर सकता।

दोनो खोये जोगिया, मुद्रा और आदेस; (हि०)

जोगी ने अपना तिलक-छाप भी खोया और मान-सम्मान भी। जब कोई व्यक्ति अपने धर्म व कर्तव्य से च्युत होकर वदनाम और अपमानित होता है, तव क०।

आदेस=प्रणाम, नमस्कार।

दोनो दीन से गये पाडे, हलुवा मिला न माडे

जव कोई आदमी अपने निश्चित कर्म को छोडकर

कोई दूसरा काम करने लगता है, और उसमे सफल नही हो पाता, साथ ही अपने पहले काम से भी हाथ घो बैठता है, तव क०।

माडे=मैदा की वनी एक प्रकार की वहुत पतली रोटी, जो तवे पर ही सेकी जाती है, आग पर नही सिकती।

दोनों बेर जो घूमे फिरे, तीन काल जो खाय।
सदा निरोगी चग रहे, जो प्रात उठ नहाय।

स्पष्ट। स्वास्थ्य सबधी उपदेश।

दोनो वक्त मिले नहीं सींते, सूरज की आख फूट जायगी, (लो० जि०)

एक अधविश्वास। सध्या समय सिलाई का काम नही करना चाहिए। उससे सूरज अधा हो जाता है।

दोनो हाथो ताली बजती है

दो आदमियो मे जब लडाई होती है, तो उसमे किसी एक का अपराध नही होता। दोनो दोषी होते हैं।

दोनों हाथों पगडी सभालनी पडती है

अर्थात उसे कठिन परिस्थिति का सामना करना पड रहा है।

दोनो हाथो सभाले नही सभलती

इज्जत बचाना मुश्किल हो रहा है। (कहावत मे पगडी से मतलब है।)

दो प्याले पी तो लें, हरामजदगी तो पेट मे है

दो प्याले (शराब के) पीने मे क्या हर्ज है? इस पेट के अदर तो न जाने कितने ऐब भरे हैं।

दो मुल्लों मे मुर्गी हराम (मु०)

दो आदमियो की वहस से जब कोई काम ही आगे न बढ सके, तब क०।

(मुसलमानो मे जानवर के खाने के लिए जिवह करते वक्त इस तरह उसकी गरदन पर छुरी फेरते हैं कि उसकी श्वास नली, अन्न नली और रक्त की नाडी एक साथ कट जाए। अगर इन तीन मे से एक भी कटने से रह जाए, तो उस जानवर के मास को खाना हलाल या धर्मसगत नही माना जाता। यह काम एक ही आदमी करता है। अब यदि दो मुल्ला एक साथ मुर्गी को जिबह करने बैठे, तो यह स्वाभाविक है कि उसकी गर्दन एक ही झटके मे नही कटेगी और वह खाने के योग्य नही मानी जाएगी।)

हराम=विधि विरुद्ध, निषिद्ध।

दो मे तीसरा, आखो मे ठीकरा

दो के बीच मे तीसरे की उपस्थिति खटकती है।

दो रकाबा घोडा बख्शी का दामाद

बख्शी का दो रकाबा घोडा क्या है, उनका दामाद है। मतलब, उसके भी ठाट-बाट निराले हैं। बडे आदमी की कृपादृष्टि जिस पर हो, उसके लिए क०।

दो लडेंगे तो एक गिरेगा ही

स्पष्ट।

दोस्त का दुश्मन दुश्मन, दुश्मन का दुश्मन दोस्त

स्पष्ट।

दोस्त मिले खाते, दुश्मन मिले रोते

एक सहज कामना। आशीर्वाद के रूप मे भी क०।

दोस्तो का हिसाब दिल मे

स्पष्ट।

दो ही चीज है, बेटा या बेटी

जब कोई लडका होने की उम्मीद कर रहा हो, और उसके लडकी पैदा हो, तब यह कहते है कि भई क्या किया जाए।

दो ही चीज हैं, हार या जीत

जब कोई हार जाए, तब उसके मन को तसल्ली देने के लिए क०।

दौडकर चलेगा तो गिरेगा

जल्दवाजी करनेवाला हानि उठाता है।

दौड चले न औंधा गिरे

दे० ऊ०।

दौड चले न चौपट गिरे

दे० ऊ०।

दौलत अंधी होती है
(१) धनी आदमी गरीवो का ख्याल नही करता।
(२) दौलत यह नही देखती कि वह किसके पास रहे और किसके पास न रहे।

दौलत का खेल है
पैसे से चाहे जो कर लो।

दौलत के पर लग गये
देखते-देखते गायव हो गई।

दौलत के पांव लग गये
दे० ऊ०।

दौलत खर्च के वास्ते दी गई है
उसे वद करके रखना ठीक नही।

दौलतमंद की डेवढी को सव सिजदा करते है
रुपएवाले की डेवढी पर सव सिर झुकाते है। अर्थात सव उसकी खुशामद करते है।

धडी धडी करके लूटा
अच्छी तरह लूटा, एक पैसा पास नही वचने दिया।

घडी भर का सिर हिला दिया, पैसा भर की जवान न हिलाई गई
जब कोई जवाव मे 'हा' या 'ना' करने के लिए केवल सिर हिला देता है और मुह से कुछ नही वोलता, तव क०। (कहावत का प्रयोग प्राय वच्चो के लिए उस समय होता है, जब वे रूठकर वैठ जाते है, और केवल सिर हिलाकर 'हा' 'हू' करते हैं।)

धधायगा सो वुतायगा, (स्त्रि०)
धधकती आग फौरन वुझ जाती है। जो वहुत जुल्म करता है, उसका विनाश भी जल्दी हो जाता है। अथवा दंभ वहुत दिनो नही ठहरता।

धन और गेंद खेल की, दोऊ एक सुभाव।
कर आवत छिन एक मे, छिन में कर से जाय।
धन और खेल की गेंद इन दोनो का एक स्वभाव है, कभी हाथ मे आ जाते है, कभी चले जाते हैं। तात्पर्य, पैसा चलती-फिरती चीज़ है।

धन का धन गया और मीत की मीत गई
किसी ने अपने मित्र को पैसा उधार दिया। वह वापस नही मिला। तव वह मनुष्य कहता है।
मीत=मित्रता।

धनके पद्रह, मकर के पचीस, चिल्ला जाडे दिन चालीस
पद्रह दिन धनु के और पचीस मकर के, ये चालीस दिन खूव कडाके की सर्दी पडती है। इसी को चिल्ला जाडा क०। लगभग १५ दिसवर से १० फरवरी सूर्य क्रम से धनु और मकर राशि मे रहता है।

धन चाहे तो धरम कर, मुक्त चाहे भज राम
स्पष्ट।

धन दे जी को राखिए और जी दे राखे लाज, (नी० वा०)
धन देकर प्राणो की रक्षा करे और प्राण देकर इज्जत वचाना चाहिए।

धन नाती हुक्का, पोसाक नाती जुल्फ, (पू०)
धन के नाम केवल हुक्का है और पोशाक के नाम केवल जुल्फे। (वहुत गरीव।)

धन मे धन, तीन आठी सन
नही के वरावर।

धनवती के कांटा लगा, दौडे लोग हजार।
निर्धन गिरा पहाड से, कोई न आया कार।
धनवान के सव हितैपी वनते है, निर्धन का कोई नही।

धन्ना सेठ के नाती बने हैं
अपने को वहुत वडा समझते है।

धनले मे साक
लहगे पर धूल। गाली।

धन काव पाया वनिया, धर दो डेढ सेरी
वनिए को सीधा जानकर उसने सेर की जगह डेढ सेर तुलवा लिया। किसी की सिधाई से अनुचित लाभ उठाने पर क०।

घमधूसर काहे मोटा, वज करे न आवे टोटा

घमधूसर मोटा क्यो? व्यापार नही करता, इसलिए टोटे का सवाल नही। मतलब, बेफिक्र रहता है।

घमधूसर का अर्थ ही मोटा-ताजा आदमी है।

धर चल सिर कोल्हू की लाट, मत चल साथ कुचाल के वाट

सिर पर कोल्हू की लाट रखकर भले ही चले, पर बुरे की सगत न करे।

धर जा, मर जा

ऐसे आदमी के लिए क०, जो दूसरो की रकम हजम कर लिया करता है। वह यही चाहता है कि कोई मनुष्य उसके पास धरोहर रख जाए और मर जाए, तो माल उसका हो जाए।

धरती माता बोझ सभाले

अनाचरी के लिए क०।

धरती की मा साझ, (हि०)

सध्या धरती की माता है। दिन के परिश्रम के वाद सवको उसकी गोद मे शाति मिलती है। (यहा धरती का अर्थ धैर्यवान भी हो सकता हे।)

धरम की जड़ सदा हरी, (हि०)

धर्म के मार्ग पर चलनेवाला हमेशा फलता-फूलता है।

धरम रहे तो उस्सर में जुरे

ईमानदार और सच्चे आदमी की खेती ऊसर मे भी सफल होती है।

धरम हार धन कोई खाय, (हि०)

(१) वेईमानी से कोई भी पैसा कमा सकता है।
(२) वेईमानी से कोई पैसा नही कमा सकता, यह अर्थ भी होता हे।

धाओ, जो विध लिखा सो पाओ, (हि०)

कितनी ही दौडधूप करो, मगर मिलेगा वही जो भाग्य मे लिखा है। आलसियो की उक्ति।

धाओ, धाओ, करम लिखा सो पाओ, (स्त्रि०)

स्पष्ट। दे० ऊ०।

धान का गाव पुआल से जाना जाता है, (छ०)

अगर गाव मे वहुत पुआल नजर आए, तो उससे पता चल जाता हे कि यहा धान की खेती होती है।

मनुष्य के ऊपरी व्यवहार और रहन-सहन से उसकी स्थिति जानी जाती हे।

धान, पान, पनियाव ले, नाम्ह जात लतियावले; (छ०)

धान और पान अच्छी तरह सीचने से और नीच लतियाने से ठीक रहता है।

धान, पान, पानी, कातिक सवाद जानी; (स्त्रि०)

धान, पान और पानी का सवाद कार्तिक मे ही मिलता है। कार्तिक मे धान पक जाता है, पान मे भी कुरकुरापन आ जाता है और पानी भी निर्मल वन जाता है।

धान पान हो रही है

कुम्हला रही है। सुकुमार स्त्री के लिए क०।

धान विचारे भल्ले, जो कूटा, खाया, चल्ले, (पू०)

धान वहुत अच्छी चीज है। कूटा, खाया और अपना रास्ता लिया। व्यग्य मे क०। वास्तव मे धान कूट कर भात वनाना इतना आसान नही है। कहावत अधूरी है। इसकी कथा है, जिससे कहावत का भाव स्पष्ट होता हे।

(किसी जगह दो यात्री ठहरे हुए थे। उनमे से एक के पास सत्तू और दूसरे के पास थोडे धान थे। जब परस्पर खाने की चर्चा चली, तो पहले ने कहा कि मेरे पास तो सत्तू हे, उसको चटपट खाकर यात्रा आरभ कर दूगा। दूसरे ने कहा—तुम्हे वहुत देर लगेगी। मेरे पास धान है, अभी कूटकर और खा कर चल दूगा। सत्तू मन भत्तू जव घोलो तव खाओ, धान विचारे भल्ले, कूटा खाया चल्ले। पहला आदमी वहुत सीधा था। दूसरे की वातो मे आ गया और धान के भाव अपना सत्तू वदल दिया। तव वह तो सत्तू घोलकर और खा-पीकर चलता वना और पहला विचारा धान कटता ही रह गया।)

धान सूखता है, कौवा टरटराता है, (स्त्रि०)
(१) किसी के चीखने-चिल्लाने से कोई काम नही रुकता।
(२) जहा खाने को होता है, वहा मुफ्तखोर इकट्ठे होते है।

धावेगा सो पावेगा, (हि०)
जो मेहनत करेगा उसे मिलेगा।

धिया, ताको कहू, बहुरिया, तू कान धर
कोई सास अपनी वहू पर रोव जमाने के लिए लडकी और वहू दोनो को डाट रही है कि 'धी' तुझ से भी कहती हू और वहू तू भी ध्यान से सुन । आगे के लिए सावधान रह।

धिया पूत के न गाती, विलैया के गाती, (स्त्रि०)
लडके और लडकी के लिए तो कपडे नही, विल्ली के लिए कपडे।
विल्ली से यहा मतलव रखैल औरत से है।

धींगा धींगो, वल्लू का राजा
वहुत अधेर के लिए क०।
(कहा जाता है वल्लू एक जाट राजा था, जिस के राज मे 'जिसकी लाठी उसकी भैस' वाली कहावत चरितार्थ होती थी।)

धीवर के वस परो, (स्त्रि०)
वुरे के हाथ पडी हू। पति के अत्याचार से पीडित किसी स्त्री का कथन।

धी छोड दाम द प्यारा
(१) लडकी से दामाद प्यारा। उल्टी वात। अथवा (२) यह एक सहज उक्ति भी हो सकती है कि लडकी से दामाद प्यारा होता है। वह लडके का स्थान ले लेता है।

धी, जवाई, भानजा, ये तीना नहि आपना
क्योकि विवाह के वाद लडकी पराई हो जाती है, दामाद तो पराया लडका है ही और भानजे मे कोई विशेष सम्बन्ध नही रहता।

धी न वियाना, आप ही कमाना, आप ही खाना, (स्त्रि०)
उसके न लड़की है न दामाद, जो कुछ कमाता है सो खा लेता है।
खाऊ उडाऊ के लिए क०।

धी न धींकड, अल्ला मिया का नौकर
(१) मोटे और आलसी मनुष्य के लिए क०।
(२) अलमस्त, फक्कड के लिए भी कह सकते है।

धी न बेटी, उढल गई समधेरी, (स्त्रि०)
लडकी है ही नही, फिर भी यह कहना कि लडकी की ननद घर से निकल गई। एक वेसिर-पैर की वात।

धी पराई, आख लजाई
(१) वहू जव कोई गलत काम करे, तव क०, कि पराई लडकी ने मेरी आख नीची करवाई।
(२) विवाह हो जाने पर लडकी लज्जाशील वन जाती है।
(३) विवाह कर देने पर लडकी को ससुरालवालो से दवना पडता है।

धी बेटी अपने घर भली, (स्त्रि०)
विवाह के वाद लडकी का अपने (पति के) घर रहना ही अच्छा है।

धी मारूं, पुतोह ले त्रास
लडकी को मैं इसलिए पीटती हू कि वहू पर मेरा रोव जम जाए। किसी सास का कथन।
नए आदमी को यह वताना कि हम वहुत ही टेढे स्वभाव के आदमी है।

धी मुई, जवाई चोर, (स्त्रि०)
लडकी मरने पर जवाई चोर के समान हो जाता है। उसकी फिर कोई कद्र नही रहती।

धीरज, धर्म, मित्र अरु नार।
आपत काल परखिए चार।
धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री इनकी परीक्षा विपत्ति पडने पर होती है।

धीरा काम रहमानी, शिताव काज शैतानी
धीमा काम अच्छा और जल्दी का वुरा होता है।

धीरा सो गभीरा
धैर्यवान गभीर होता है। किसी काम मे जल्दबाजी नही करता।

धूंधूं कार मेंह बरस रहा है
खूब जल बरस रहा है।

धूनी पानी का सजोग है, (हिं०)
जब दो अपरिचित व्यक्ति, खास कर दो साधु कही मिल जाते है, तब क०।

धूप पड़त जो दायं चलावे, रास नाज वह तुरत उठावे, (कृ०)
धूप पडने पर जो दाय करता हे, उसे अनाज शीघ्र मिल जाता है।
(कटी हुई फसल से दाना प्राप्त करने के लिए उसे बैलो की सहायता से कुचलने की जो क्रिया की जाती है, उसे दाय चलाना या करना कहते है।)

धूप मे बाल सफेद नहीं किये हैं
उम्र यो ही नही गवाई है। दुनिया का अनुभव है।

धूल की रस्सी बटना, (ग्रा०)
असभव कार्य करने की चेष्टा करना। हवाई-घोडे दौडाना।

धूलकोट का खरबूजा, जैसे मिस्री का कूजा
धूलकोट का खरबूजा बहुत मीठा होता है।
(यह धूलकोट दिल्ली के पास तक कछार की भूमि है।)

धेला सिर मुंडाई, टका बदलाई
सिर मुडाई का तो अधेला ही देना पडा, पर रुपए भुनाई का बट्टा दो पैसा लग गया।
मुख्य काम मे तो कम खर्च हो, पर ऊपरी अधिक खर्च हो जाए, तब क०।

धोई-धाई भेडी पंके लागी, (पू०)
भेड को धो-धाकर साफ किया, पर वह फिर कीचड मे चली गई। किया-कराया काम फिर चौपट हो गया।

धोके की टट्टी
भ्रम मे डालनेवाली वस्तु। दिखाऊ वस्तु।

धोती थी दो पाव, धोने पड़े चार पाव, (स्त्रि०)
(१) विवाहित जीवन से ऊबी हुई स्त्री का कहना। पहले तो उसे केवल दो ही पैर धोने पडते थे, पर अब दो अपने और दो पति के धोने पडते हैं।
(२) किसी ऐसी स्त्री का भी कथन हो सकता है, जिसका पति बहुत आलसी है।

धोती मे सब नगे
अदर से सब एक से। सब मे कुछ-न-कुछ दोष है।

धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का
बठिकाने का आदमी।

धोबी का छैला, एक उजला एक मैला
धोबी के लडके को अपने ग्राहको के मुफ्त के कपडे पहिनने को मिलते है। इसलिए जैसे मिले, वैसे ही पहिन लिये, उजले और मैले की कोई परवाह नही करता।

धोबी के घर ब्याह, गधे का छुट्टी भेल, (पू०)
धोबी के घर ब्याह होने पर गधे को छुट्टी मिल जाती है। वह भी खुशी मनाता है।

धोबी के ब्याह, गधे के माथे मोर
धोबी के यहा ब्याह होने पर गधे की भी इज्जत होती है।

धोबी छोड़ सक्का किया, रही खिजर के घाट, (स्त्रि०)
धोबी छोडकर भिश्ती से ब्याह किया, फिर भी पानी से पिंड न छूटा। मुसीबत ज्यो-की-त्यो रही।
(ख्वाजा खिज़र मुसलमानो मे पानी के देवता माने जाते हैं।)

धोबी पर धोबी, खेंधड़े मे साबुन
(१) कोई धोबी अगर दूसरे धोबी से अपने कपडे धुलवाए, तो वह वैसा ही जैसे गुदडी मे साबुन लगाना। अथवा
(२) धोबी पर धोबी बदलना, वैसा ही जैसे गुदडी ।
मतलब घडी-घडी नौकर बदलना ठीक नही।

धोबी पर बस न चला, गधैया के कान मरोड़े
कमज़ोर पर गुस्सा उतारना।

धोबी बेटा चांद-सा, सीटी और पटाक
धोबी का लडका अपने ग्राहको के धुले-धुलाए कपडे पहन कर चाद-सा बना रहता है। उसके पास अपनी दो ही चीजे होती हैं। 'सीटी' और 'पटाक'। धोबी कपडे धोते समय पत्थर पर पटाक

से पछाडते है, साथ ही सीटी भी बजाते जाते है। जो दूसरो के पैसे पर साफ-शौकीन बने फिरते है, उनके लिए क०।

घोबी रोवे धुलाई को, मियां रोवें कपडों को
घोवी अपनी धुलाई का तकाजा करता है और ग्राहक अपने कपडो का। दोनो ही अपनी-अपनी जगह रोते है।
(जब दो व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे को अपने नुकसान का कारण बताकर रोए।)

धौला वाल मौत की निशानी
वाल सफ़ेद होने पर वुढापा आ जाता है, और वुढापा आया तो समझ लो कि मरने के दिन नजदीक आ गए।

नंग धड़ंग
जिसे न किसी का डर हो, न किसी की लाज हो, और चाहे जिसके आडे आ जाए।
(१) विल्कुल=नगा। (२) वेशर्म।

नंगा खड़ा उजाड़ मे, है कोई कपड़े ले
जिसके पास कुछ है नही, उसकी कोई क्या हानि करेगा?

नंगा खुदा से वडा
नगे को किसी वात का भय नही होता।

नंगा नाचे फटे क्या
जिसके पास कपड़े ही नही उसका फटेगा क्या?

नंगा मादरजाद
विल्कुल नंगा, जैसा पदा हुआ था, वैसा ही।

नंगा साठ रुपये कमाये, तीन पैसे खाये
ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जिसके घर-गृहस्थी न हो, और उस वजह से आमदनी की अपेक्षा खर्च वहुत कम हो।

नंगी क्या नहायेगी और क्या निचोडेगी?
जिसके पास कुछ है ही नही, वह क्या अपने पर खर्च करेगा और क्या दूसरो पर।

नगी ने घाट रोका, नहावे न नहाने दे
दूसरो को उसके पास जाने मे शर्म लगती है, पर वह निर्लज्ज होकर नहा रही है। वेशर्म से सब घवराते है।

नंगी भली कि छींके पांव
नगी अच्छी या छीके से उल्टे पैरो लटकी अच्छी। दो वुरी चीजो मे से कम वुरी चीज़ ही पसद की जा सकती है।

नगी भली कि टेटक मचवा, (स्त्रि०)
नगी अच्छी या टटा मचाना।
इसका भाव भी ऊपर की कहावत जैसा ही है।

नगी हो के काता सूत, बुड्ढी होकर जाया पूत, (स्त्रि०)
यदि पहले ही लडका जनती तो वुढापे के लिए आराम न हो जाता। समय निकल जाने पर काम करना।

नंगो को भूखों ने लूट लिया
अनहोनी वात।

न ईंट डालो, न छींटो भरो
न किसी से वुरा कहोगे न सुनोगे।

नई घोसन और उपलों का तकिया
अटपटा शौक।

नई जवानी माझा ढीला
स्पष्ट।

नई नाइन और वास की नहरनी
नहरनी लोहे की होती है वास की नही। जव कोई नौसिखिया ऊटपटाग ढग से काम करता है।

नई नागन टगे पर फन
साप का वच्चा और फन पूछ पर।
दे० ऊ०।

नई नौ दाम, पुरानी छः दाम
नई चीज तो महगी मिलेगी ही।

नई फ़ौजदारी और मुर्गों पर नक्कारा
किसी नये नियम या कायदा-कानून के सम्बन्ध मे अपना असतोष—निरादर प्रकट करने के लिए कोई कह रहा है।

नई बहू टाट का लंहगा
दे०—नई नाइन ।

नई बस्ती और अरडी का फुलेल
नया और ऊटपटाग शौक।

नउवा के घर चोरी भेल,तीन चोंगा बार गेल, (पू०)
नाई के घर चोरी हुई, तीन चोगा वाल गए। उस के यहा ओर रखा क्या था ?

नउवा देख ले कांखे बार, (भो०)
नाई को देखकर काख मे वाल हो आए। चीज़ सामने देखकर उसके उपयोग की इच्छा हो आती है।

नकटा जीवे बुरा हवाल
सव उसकी तरफ उगली उठाते है। नकटा के यहा दो अर्थ है (१) जिसकी नाक कटी हो, और (२) जो समाज मे वदनाम हो।

नकटा बूचा सवसे ऊचा
व्यग्य मे ही क०।
बूचा=जिसका कान कटा हो।

नकटी मैया पानी पिला, 'पूता इन्हीं गुनन' (पू०, स्त्रि०)
नकटी औरत से किसी ने यह कहकर पानी मागा कि नकटी मैया पानी पिला। उसने जवाव दिया—वेटा, क्या तुम्हारी इसी तरह की बोली से ?

नकटे का खाइये, उकटे का न खाइये, (स्त्रि०)
वदनाम आदमी के यहा जाकर भले खा ले, पर ओछे के यहा जाकर न खाए। इसलिए कि वह वार-वार खिलाने का एहसान जताएगा।

नकटे की नाक कटी, सवा गज और वढ़ी
वेशर्म के लिए क०।

नकद को छोड़ नफे को न दौड़िये
किसी मुनाफ़े के लोभ से गाठ के नक़द पैसे को नही छोडना चाहिए।

नक़द हू हुरमत हू, (अ०)
नकद दो और साख रखो।

न कोई आता था घर मे, न कोई जाता था।
न कोई गोद मे लेकर मुझे सुलाता था।
(कथा है कि कोई मनुष्य अपनी स्त्री को घर पर छोड कर विदेश चला गया। उसकी अनुपस्थिति मे एक दिन उसके पुत्र ने पूछा—कौन आया था ? स्त्री ने उत्तर दिया—न कोई आया, न कोई गया। पुत्र ने यही समझा कि इसका नाम 'न कोई' है। जब कुछ दिनो वाद वह मनुष्य घर लौटा तो वह लडके को गोद मे लेकर प्यार करने लगा और थपथपाकर सुलाने लगा। लडके से जब उसने पूछा कि मेरे पीछे तुम्हे इस तरह कौन सुलाता होगा, तो उसने ऊपर की कहावत कही। वाप तो यही समझा कि मेरे लडके को प्यार करनेवाला कोई नही था। पर लडके ने तो असली वात कह ही दी थी।)

नक्कारखाने मे तूती की आवाज़ कौन सुनता है ?
वडो के आगे गरीव और असहायो की वात कोई नही सुनता।

नक्कारे वाजे दमामे बाज गये
वडे ढोल भी वज गए और छोटे भी। अर्थात दुनिया मे न जाने कितने लोग आए और अपनी तडक-भड़क दिखाकर चले गए।

नक़्ल रा चे अक़्ल, (फा०)
नकल मे अक़्ल की क्या जरूरत ?

नक़्ले कुफ़् कुफ़् न वाशद, (फा०)
काफिर की नकल करने से कोई काफिर नही होता।

नख से शिख तक
नीचे से ऊपर तक।

न खुदा ही मिला, न विसाले सनम ।
न इधर के हुए, न उधर के हुए ।
किसी निराश फकीर का कहना।
विसाले सनम=प्रेमी से भेट।

न गाड़ी भर आशनाई, न जौ भर नाता
मुझे किसी से कोई मतलव नही, अथवा मुझे किसी से कोई मतलव नही रखना।

न गाय के थन, न किसान के भांड़े
न गाय के थन हैं और न किसान के पास वर्तन। (जव किसी काम का कोई सिलसिला ही न हो, तव क०।)

न गू मे ढेला डालो, न छींटे उड़ें

न बुरा काम करो, न बुराई हाथ लगे।

न जीने की शादी, न मरने का ग़म

किसी ऐसे मनुष्य का कथन, जो दुनिया से उदास है।

नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय

जाट वडे चतुर होते है।

(इसकी कथा यो है—एक राजा ने किसी नटनी को वचन दिया कि अगर नट-विद्या मे उसे कोई नही जीत सकेगा, तो मै उसे अपना राज दे दूगा। उस जगह एक देहाती जाट खडा था। उसने नटनी के लोहे के दस्ताने हाथो मे पहिन लिये और झट वास पर चढ गया। ऊपर जाकर उसने चारो ओर घूमकर पेशाव करना शुरू कर दिया। उसका यह तमाशा देखकर नटनी ने हार मान ली और राजा का राज्य भी वच गया।)

न तेल तली, न ऊपर पली, (स्त्रि०)

न नीचे वर्तन मे तेल, न ऊपर पली।

जव किसी को वहुत थोडी चीज़ दी जाए।

नदिया, नाव, घाट वहुतेरा, कहे कवीर नाम के फेरा

चीज एक ही होती है, पर उसके नाम अनेक होते है। ईश्वर के लिए कहा गया है।

नदी किनारे रूखड़ा, जव तव होय विनास

ख़तरे का काम करनेवाला कभी भी हानि उठा सकता है।

नदी तू घरांती क्यो, मै पाव ही नही रखता

किसी का ऐसे व्यक्ति से कहना जो वहुत रोब और घमड दिखाता है।

नदी नाव सयोग

दो आदमियो का अचानक कही मिल जाना।

नदी मे जाना और प्यासे आना

साधनो के मौजूद रहते हुए अपने उद्देश्य को पूरा न कर पाना।

न दौड चलेंगे, न ठस लगेगी, (पू०)

काम धैर्यपूर्वक करना चाहिए।

ननद का ननदोई, गले लाग रोई, (स्त्रि०)

जिससे कोई सम्बन्ध ही नही, उससे प्रेम दिखाना।

न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी

जव कोई आदमी किसी काम को न करना चाहे, और अपने इस इरादे को छिपाने के लिए किसी ऐसी शर्त पर उसे करने को तैयार हो, जिसे पूरा करना लगभग असभव हो।

(कहा जाता है कि किसी जगह राधा नाम की एक वेश्या थी, जो नाचने के लिए वहुत प्रसिद्ध हो गई थी। पर वास्तव मे उसे उतना अच्छा नाचना नही आता था। वह भी इस बात को जानती थी। इसलिए जब कोई उसे नाचने के लिए बुलाता, तो वह यही कहती कि नौ मन तेल के चिराग जलाओ, तब नाचूगी। लोग न नौ मन तेल इकट्ठा कर पाते और न उसका नाच गाना ही हो पाता। कहावत मे कृष्ण की राधा से कोई मतलव नही। वह केवल एक नाम विशेष है।)

नन्हे होकर रहिये, जैसे नन्हीं दूव

आदमी को विनम्र बनकर रहना चाहिए।

नपूती का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, दरिद्री का सब कुछ सूना

स्पष्ट।

नफरी में झगडा क्या ?

जो हमे मिलना चाहिए उसमे झगडा क्या ?

नफरी = दैनिक वेतन।

नमाज छुडाने गये थे, रोजे गले पडे, (मु०)

दे०—गये थे रोज़ा छुडाने ।

(कहा जाता है कि एक बार मुसलमानो ने मूसा पैगम्बर से कहा कि खुदा से सिफारिश करो पाच वक्त की नमाज से हमारा छुटकारा हो जाए। खुदा मजहब मे उनकी ऐसी लापरवाही देखकर बडे अप्रसन्न हुए और सजा के तौर पर उन्हें साल मे एक महीने तक रोजा रखने को कहा।)

नमाजी का टका, (मु०)

(कथा है कि एक शरारती लड़के को यह आदत पड गई थी कि जब कोई मसजिद मे जाकर नमाज पढ़ता, तो वह पीछे से जाकर उसका पैर पकड कर खींच लेता। जब एक बूढ़े नमाजी के साथ उसने ऐसा

किया, तो उसने लडके को एक टका दिया। इससे लडके की हिम्मत वढ गई और उसने इस बार एक पठान की टाग पकडकर खीची। इस पर पठान ने घूमकर उसे ऐसे घूसे जमाए कि वह वही खत्म हो गया।)

न मारे मरे, न काटे कटे

घर के ऐसे उद्धत लडके के लिए क०, जिससे लोग परेशान रहते हो।

न मूद वे मूद, (फा०)

कोरी दिखावट, त व कुछ नही।

न मै कहूं तेरी, न तू कहे मेरी, (स्त्रि०)

न मै तेरी वुराई करू, न तू मेरी कर।

न मैं जलाऊं तेरी, न तू जला मेरी, (स्त्रि०)

न मैं तेरा नुकसान करू, न तू मेरा कर। यहा जलाने से मतलव लकडी जलाने से भी हो सकता है और छाती जलाने से भी।

नया अतीत, पेड़ पर अलाव, (हिं०)

जव कोई नौसिखिया ऊटपटाग ढग से काम करता है, अथवा किसी वेतुकी चीज़ से काम लेता है, तव क०। (साधु लोग सहारे के लिए काठ का एक साधन वनाकर रखते है, जिसे वैरागिन कहते है। वे उस पर हाथ रखकर एक ही आसन से दिन भर वैठे रहते है और थकते नही। अव अगर इस 'वैरागिन' को कोई पेड़ का सहारा देकर वैठे तो उससे वह और थक जाएगा।) यहा अलाव का अर्थ आग के लिए इकट्ठा किया गया ईधन भी हो सकता है। अतीत = साधु।

नया चिकनिया रेंडी का कुलेल, (स्त्रि०)

दे० ऊ०।

नया जोगी ओर गाजर का शख, (हि०)

दे०—नया अतीत ।

नया दाना, नया पानी

मालिक के वदल जाने अथवा नई नौकरी कर लेने पर क०।

नया-नया राज, ढव-ढव वाज, (पू०)

जव कोई नया हाकिम, या अविकारी नई वाते चलाता है, तव व्यग्य मे क०।

नया-नया राज भेल, गगरिल अनाज भेल

नया राज होने पर घडे अनाज से भर जाते हैं। लोगो को नई नौकरिया मिलती है।

नया नौकर मारे हिरना

वह अपनी मुस्तैदी दिखाने के लिए ऐसा करता है।

नया नौकर शेर मारे

दे० ऊ०।

नया नौ गडा, पुराना छ गडा, (पू०)

पुरानी की अपेक्षा नई चीज़ महगी होती है, अथवा नई की कद्र अविक होती है।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन

नई चीज तो थोडे दिनो ही रहती है। पुरानी पर ही निर्भर करना चाहिए।

नया मुसलमान अल्लाह ही अल्लाह पुकारे, (मु०)

नये काम मे जोश वहुत होता है।

नया हकीम, दे अफीम

अनाडी हकीम की दवा का विश्वास नही करना चाहिए। वह कभी जहर भी खाने को दे सकता है।

नये नमाज़ी, बोरिये का तहमद, (मु०)

दे०—नया जोगी ।

नये-नये हाकिम, नई-नई बातें

जव हाकिम नए होते हैं, तो नए-नए कानून भी वनते है।

नये नवाव, आसमान पर दिमाग़

नया आदमी थोडी भी प्रतिभा पाकर इतराने लगता है।

नये वावर्ची, साग में शोरवा

(१) नयापन दिखाना। अथवा
(२) फूहडपन के लिए भी कह सकते हैं।

नये सिपाही, मूंछ मे ढाटा

वेतुका काम। ढाटा दाढी मे वाधा जाता है, जिससे वह विखरती नही।

न रहेगा वास, न वजेगी बांसुरी

जिस वस्तु के रहने से कष्ट होता हो, उसे जट से ही नष्ट कर देना चाहिए।
(कहावत मे सकेत कृष्ण की वासुरी की ओर है।

गोपिया कृष्ण की वासुरी को सुनकर इतनी अधिक प्रेम-विह्वल हो उठती थी कि वे कहने लगती थी कि उस वास को ही यदि नष्ट कर दिया जाए, जिससे यह वासुरी वनती है, तो न उसका स्वर हमे सुनने को मिलेगा और न हमारे हृदय मे प्रेम की यह हूक उठेगी। गोपियो के प्रेम का वर्णन करते समय कई हिन्दी कवियो ने इस तरह की बात उनके मुख से कहलाई है।)

न रहे मान, न रहे मानी, आखिर दुनिया फानी, (मु०)

ससार की नश्वरता पर कहा गया है।

नर्म चोवरा किर्म मी खुरद, (फा०)

नर्म काठ को कीडे खा जाते हैं। बहुत सीधा होना अच्छा नही।

नल का मारा नलवा टूटे

मामूली सरकडे की चोट से पिंडली टूट जाती हे। या रक्त बहने लगता है। साधारण कारण से ही कभी-कभी भारी हानि हो जाती है।

नशा उसने पिया, खुमार तुम्हे चढ़ा

जब कोई आदमी किसी उच्च स्थान पर पहुच जाए और उसके सगे-सम्बन्धी अपने को वैसा ही बडा समझने लगें, तब क०।

न सांप मरे, न लाठी टूटे

काम भी हो जाए और दोनो ओर से कोई हानि भी न हो। आपसी समझौता।

न सूप दूसे जोग, न चलनी सराहे जोग, (स्त्रि०)

न सूप की बुराई की जा सकती है, और न चलनी की सराहना। दोनो एक से।

(सूप मे भी छेद होते हैं, और चलनी मे भी।)

नाई की बरात में सब ही ठाकुर

नाई सबकी बरात मे सेवा-टहल करते हैं, पर उनकी बरात मे यह कौन करे। जहा सभी अपने को बराबर समझे और कोई छोटा अथवा परिश्रम का काम न करना चाहे, वहा क०। यहा ठाकुर से मतलब बडे आदमी से है।

नाई, दाई, वैद, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई, (हि०)

इन चार का अशौच कभी नही जाता, क्योकि नाई का मृतक से हमेशा काम पडता है, दाई बच्चा जनाती है, वैद का कोई-न-कोई रोगी मरता रहता है और कसाई तो ढोरो का वध करता ही हे।

नाई, नाई, बाल कितने ? जिजमान आगेही आते हैं

जो बात स्वय ही सामने आनेवाली हो उसके विषय मे किसी से कुछ पूछने की क्या आवश्यकता ?

नाई सबके पांव धोये, अपने धोते लजाये

अपना काम अपने हाथ से करने मे लोगो को शर्म लगती है, उसी पर क० कही गई है।

नाऊ की-सी आरसी, हर काहू के पास

ऐसी वस्तु जिसका उपयोग हर कोई करे।

नाक कटी बला से, दुश्मन की बद-सगुनी तो हुई

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो अपना नुकसान करके इसलिए खुश होता है कि उससे दूसरो की भी हानि होनेवाली है।

नाक कटी मुबारक, कान कटे सलामत, (स्त्रि०)

निर्लज्ज के लिए क०।

नाक के बाल हो रहे हैं

घनिष्ठ मित्र बने हैं।

नाक तो कटी, पर वह खूब ही मे मरी

कोई बदनाम औरत नेकनामी के साथ मरी, उसी पर कहा गया है।

खूब ही=अच्छाई के साथ।

नाक दे, या नहरनी दे

किसी को असमंजस मे डालना।

नाक पकड़े दम निकलता है

बहुत कमजोर, अथवा सुकुमार।

नाक पर दिया बालकर आए है

अर्थात बहुत देर करके आए है। रात मे आए है।

नाक पर सुपाड़ी तोड़ती है, (स्त्रि०)

बड़ी तुनुक मिजाज है।

नाक हो तो नथिया सोभै, (स्त्रि०)
नथ पहिनने को भी अच्छी नाक चाहिए।

नाकों चने चबवाना
बहुत परेशान करना।

नाखलक बेटे से बेटी भली
अकर्मण्य लडके से तो लडकी भली।

नाचत आन भेई ना, आंगन बांकड़े,
रांधना भेई ना, ओली लांकड़े, (पू०)
नाचना आता नही, आगन टेढा। रसोई बनाना जानती नही, लकडी गीली।
(जब कोई आदमी किसी काम को करना न जाने, पर अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए साधनो को दोष दे।)

नाच न सकूं, आंगन टेढ़ा, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
प्र० पा०—नाच न जाने आगन टेढा।

नाचने निकली तो घूंघट क्या? (स्त्रि०)
जब किसी काम को करने ही बैठे, तो उसे अच्छी तरह करना चाहिए। उसमे शर्म क्या?

नाचे-कूदे तोड़े तान, वाका दुनिया राखे मान
जो बहुत उछल-कूद मचाते है, यानी आत्मविज्ञापन करते है, दुनिया उनकी ही इज्जत करती है। सीधे को कोई नही पूछता।

नाचे-कूदे बानरा, मेरे माल मदारी खायें
परिश्रम कोई करे और मजा कोई उडाये, तब क०।

नाचेगा सो पावेगा
(१) जो दौड धूप करेगा, उसे ही मिलेगा। अथवा (२) जो खुशामद करेगा, वही पाएगा।

नाचे बामन, देखे धोबी
समाज की उल्टी रीति।

नाट का बच्चा तो कलाबाजी ही करेगा
(१) वश या जाति का प्रभाव प्रकट होकर रहता है।
(२) बाप दादे जैसा करते रहे लडके भी वैसा ही करेंगे।
नाट=नट।

नाटा सबसे टाटा
(१) नाटा सबसे मजबूत होता है।
(२) नाटा सबसे टटा या झगडा करता है।

नाड़ी की कुछ सुरत नहीं है, दवा सभों की करते हैं।
बैदो का क्या जाता है, बीमार बेचारे मरते है।
स्पष्ट। अनाड़ी वैद्यो पर।

नात का न गोत का, बांटा मागे पोथ का, (ग्रा०)
न नाते का, न गोत का, फिर भी पैतृक सपत्ति मे हिस्सा बटाना चाहता है।
अनुचित या बेतुकी माग पर।

नाता न गोता, खड़ा होकर रोता, (स्त्रि०)
बे मतलब हस्तक्षेप करनेवालो पर क०।

नातिन सिखावै आजी को कि बारह ड्योढ़े आठ, (पू०, स्त्रि०)
छोटे का बडे को सीख देना।
आजी=दादी, पिता की मा।

नादान की दोस्ती जी का जियान
मूर्ख की मित्रता प्राणलेवा होती है।

नादान दोस्त से दाना दुश्मन भला
मूर्खमित्र की अपेक्षा ज्ञानवान शत्रु अच्छा।

नादान बात करे, दाना कयास करे
मूर्ख कोरी बात करता है, ज्ञानी सोचता है।

नानक नन्हा हो रहो, जैसी नन्हीं दूब।
पेड़ बड़े गिर जायेंगे, दूब खूब की खूब।
नम्र होकर रहे। बडे पेड तो गिर जाते है, पर दूब जो नीचे होती हे, हमेशा हरी बनी रहती है।

नान चुक देवता, तिलक उराय ले, (पू०)
नन्हे से देवता, तिलक लगने मे ही खत्म हो गए। किसी का झूठमूठ का आदर-सम्मान किये जाने पर कहावत।

नाना की दौलत पर नवासा ऐंड़ा फिरे
दूसरे के धन पर ऐंठना।
नवासा=बेटी का लडका।

नाना के टुकड़े खावे, दादा का पोता कहावे
किसी काम का श्रेय जिसे मिलना चाहिए, उसे न मिलकर किसी दूसरे को मिलना।

नानी के आगे ननसार की बातें, (स्त्रि०)
जो अपने से अधिक जानता है, उसके आगे ज्ञानवान बनना।

नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे, (स्त्रि०)
नानी ने खसम किया और नवासा को (बिरादरी मे) उसका दड भरना पडा। किसी की भूल का कोई प्रायश्चित्त करे।

नानी तो क्वांरी ही मर गई और नवासे के साढ़े सत्रह बान
जब कोई छोटा आदमी यकायक धनी बनकर ऐंठ दिखाने लगे, तब उसके लिए क०।
(बान विवाह के समय का एक दस्तूर होता है, जिसमे वर और कन्या को स्नान कराया जाता है। कहावत का अभिप्राय यह है कि नानी ने तो विवाह का स्नान किया ही नही और नवासे के एक-दो नही, साढे सत्रह स्नान हो रहे हैं।)

नानी मरी, नाता टूटा
नानी का दोहते पर बड़ा प्रेम होता है।

नाप न तोल, भर दे झोल
अपने मतलब की कहना, नापो-तोलो नही; हमारा झोला भर दो।

नापे सौ गज, फाड़े न एक गज
ऐसे मनुष्य के लिए क०, जो हमेशा वादा करता रहे, पर पूरा न करे।

नाम इमरत, पिलाये विष
देखने-सुनने मे अच्छा पर व्यवहार मे विपरीत।

नाम की नन्हीं, उठा ले जाय धन्नी
अर्थात देखने मे छोटी है पर बडी चालाक।
नन्ही =छोटी।
धन्नी=कडी, शहतीर।

नाम के बाबा जी, करनी छावर
नाम तो वडा, पर करनी कुछ नही।
छावर=खाक।

'नाम क्या?' "शकरपारा', 'रोटी कितनी खाई?' 'दस बारा'; 'पानी कितना पिये?' 'मटका सारा'— काम करने को लड़का विचारा; (स्त्रि०)
छोटे लडको से हँसी मे ही क०।

नाम बड़ा ऊचा, कान दोनों बूंचा, (पू०)
स्पष्ट। इसे तुकबदी ही समझनी चाहिए।

नाम बड़ा और दर्शन थोड़े
जब किसी मे उसकी ख्याति के अनुसार गुण न पाए जाए, तब क०।

नाम बडा या दाम?
धन की अपेक्षा कीर्ति बड़ी चीज है।

नाम बसंती, मुंह कूकुर-सा, (स्त्रि०)
नाम के अनुसार गुण न होना।

नाम मेरा, गाव तेरा
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जो दूसरे की सपत्ति से लाभ उठाना चाहता है।

नाम लेवा न पानी देवा
सतानहीन के लिए क०।
पानी देवा=पितरो का श्राद्ध कर्म करनेवाला।

नामी साह कमा खाये, नामी चोर मारा जाये
कही नाम हो जाने से लाभ होता है, कही हानि। अथवा जब कोई आदमी एक बार बदनाम हो जाता है, तो लोग उसे ही पकडते हैं।
(साह का नाम हो जाए, तो उसका लाभ होता है, लेकिन चोर बदनाम हो जाए तो पकडा जाता है।)

नाम हीरामल, दमक ककड-सी भी नही
नाम के विपरीत गुण।
नाम के अनुसार गुण नही।

नार ने निकाला दंत, मर्द ने ताडा अत
स्त्री हँसी नही कि पुरुष उसका मतलब समझ लेता है।

नार सुलक्खनी कुटुम छकावे, आप तले की खुरचन खावे, (स्त्रि०)
अच्छी स्त्रिया परिवार के लोगो को भरपेट खिलाती है, और स्वय बचाखुचा खाकर ही सन्तुष्ट रहती है।
सुलक्खनी=सुलक्षणी।

नारियल मे पानी, नहीं जानते खट्टा कि मीठा
सदेहजनक की स्थिति के लिए क०।

नारी के वश भये गुसाईं, नाचत है मर्कट की नाईं
स्त्रियो के वश होकर पुरुष बंदर की तरह नाचा करते हैं।
इसका शुद्ध रूप है—

नारि विवश कर सकल गुसाई।
नाचहि नर मर्कट की नाई।

नाले मुंज बगड, नाले देवी दा दर्शन, (पं०)
नाले के किनारे मूज और बगड भी मिलेगी और देवी के दर्शन भी होगे। एक पथ दो काज।
(मूज और बगड घास की किस्मे है, जो रस्सी बनाने के काम आती है। ये घासे नदी-नाले के किनारे ही होती है, जहा प्राय देवी-देवताओ के मदिर भी बने होते है।)

नालैन, तहतुलएन, (अ०)
अपने जूते अपनी नजर के सामने रखो। नही तो वे चोरी चले जाएगे।

नाव किसने डुबाई? ख्वाजा खिज्र ने
अपनी करनी का दोष दूसरे के सिर मढना। ख़्वाजा खिज़र मुसलमानो मे बाढ और जल के देवता माने जाते है।

नाहक डड, पुत्र का सोग, नित उठ पथ चलें जो लोग
जिन वृद्धा मे मर गई नारी, बिन आगी ये जर गये चारी
जिसे समाज ने निरपराध दड दिया हो, जिसे पुत्र का शोक हो, जिसे नित्य (अपने धधे से) पैदल चलना पडे और वृद्धावस्था मे जिसकी स्त्री मर गई हो, ये चारो बिना अग्नि के ही (चिन्ता की आग मे) जलते रहते हैं।

निकली हल्क़ से, चढ़ी खलक़ से
बात मुह से निकलते ही दुनिया मे फैल जाती है।

निकली होठां, चढ़ी कोठां
दे० ऊ०।

निकसो चदा, तो अधेरो भयो मदा
सच के आगे झूठ नही टिकता।

निकाह की शर्त करना
ऐसी शर्त रखना कि समझौता मुश्किल से हो पाए।

निकाही न ब्याही, मुडो बहू कहा से आई, (मु०)
न निकाह हुआ, न विवाह; फिर यह मुडी बहू कहा से आ गई? झूठ-मूठ का रिश्ता जोडना।
निकाह=मुसलमानी प्रथा से किया गया ब्याह।

निकौड़िया गये हाट, ककड़ो देखे जियरा फाट, (पू०)
इसलिए कि खरीदने के लिए पैसा नही था।
निकौडिया=बिना कौडी का, जिसकी जेब खाली हो।
जियरा=जी, हृदय।

निखट्टू आवे लड़ता, कमाऊ आवे डरता, (स्त्रि०)
निकम्मा आकर लडता है, कमाऊ शान्त और विनम्र रहता है।
स्त्रिया प्राय अपने अकर्मण्य पति के लिए कहती है।

निचट सोवे हेरू, जिसके गाय न गेरू
हेरू बेफिक्र सोता है, क्योकि उसके पास न गाय है, न वछडा।
निचट=निश्चित।

निठल्ला बनिया पत्थर तोले
बनिया कभी खाली नही बैठता, वह कुछ-न-कुछ करता रहता है। जब कोई बेमतलब का काम करता है, तब यह क० कहते है।

नित खोदना, नित पानी पीना
रोज़ कमाना, रोज खाना। कठिनाई मे जीवन व्यतीत करना।

निन्नानबे के फर मे पड़ गये
(१) घर-गृहस्थी की चिन्ता मे पड जाना।
(२) गहरे असमजस मे पडना।
(कथा है कि दो वहिने थी। एक का विवाह धनी के साथ हुआ, दूसरे का गरीब के साथ। जो गरीब थी उसने अपनी बहिन से सहायता मागी। उसने निन्नानवे रुपए उसे दिए। वह यद्यपि गरीब थी, पर अभी तक बहुत सतोषपूर्वक रहती थी। पर निन्नानवे रुपए देखकर वह पूरे सौ रुपए करने की फिक्र मे पड गई और इस प्रकार उसका कष्ट और बढ गया। उपदेश निकला कि धन से सतोष अच्छा।
(२) इसी प्रकार की एक दूसरी कहानी है। किसी शहर मे एक पुरुष और उसकी स्त्री दोनो रहते थे। वे बडे गरीब थे और चार पैसे रोज़ मे अपनी गुज़र करते थे। फिर भी वे बडे सतोपी थे, और उनका जीवन सुखपूर्वक बीतता था।

उसकी एक भावज थी, जो बहुत धनाढ्य थी। उससे उनका सुख नही देखा गया, और उनको कष्ट पहुचाने के लिए एक दिन उसने निन्नानवे रुपए एक थैली मे रखकर उनके घर मे फेक दिए। वे बेचारे कठिनाई मे तो रहते ही थे। रुपए देखकर बडे खुश हुए। गिने तो निन्नानवे थे। अब उन्हे इस बात की फिक्र हुई कि किसी प्रकार सौ पूरे करे। उन्होने अपने खर्चे मे से एक पैसा रोज बचाना शुरू कर दिया। इस प्रकार जब पूरे सौ हो गए, तो उन्होने सोचा कि अगर वे केवल दो पैसे रोज मे अपना खर्चा चलाए तो कुछ दिनो मे इसके दूने हो जाएगे। उन्होने वैसा ही करना शुरू कर दिया। ज्यो-ज्यो उनके पास पैसा बढता गया, त्यो-त्यो उनकी चिन्ता और लालच भी बढती गई। कुछ दिनो मे वे बडे दुर्बल हो गए और उनकी सुख-शाति सदा के लिए विदा हो गई।)

निपूती का घर सूना, मूरख का हिरदा सूना, दलिद्री का सब कुछ सूना

स्पष्ट।

हिरदा=हृदय।

दलिद्री=(१) दरिद्र।(२) कजूस।

निपूती के मुंह देख ले साथ उपास, (स्त्रि०)

लोक-विश्वास। बाझ का मुह सुबह-सुबह देखना बुरा समझा जाता है।

नियारे चूल्हे बलबल जाऊं, सारा खाती, आधा खाऊ, (स्त्रि०)

कोई बहू सास से अलग हो गई है, अलग अपना भोजन बनाती है और कहती है—ऐ न्यारे चूल्हे, मै तुझ पर न्योछावर हू। पहले सास जो कुछ देती थी, वह सब खा लेती थी, फिर भी पेट नहीं भरता था, पर अब मैं इतना अधिक बनाती हू कि आधा खाती हू और आधा बचाकर रख लेती हू।

निर्धन के धन गिरधारी

गरीब के सहायक भगवान है।

निस दिन खाना, काम को असकताना

कामचोर के लिए क०।

असकताना=आलस्य करना।

निहग लाडला सदा सुखी

स्वच्छन्द आदमी हमेशा ही सुखी।

(निहग लाडला ऐसे लडके को कहते हे, जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत उद्दड हो गया हो।)

निहग=अकेला।

नीक-नीक मोरे भाग, एक-एक मछलिया की दो-दो मछलिया, (स्त्रि०)

में कितना खुश-किस्मत हू, एक की जगह मुझे दो मछलिया मिल गई।

(कोई व्यक्ति आशा से अधिक मिल जाने पर अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहा है।)

नीच जात, एक न एक उदमाद

ओछे आदमी एक-न-एक उत्पात करते रहते हैं।

उदमाद=उत्पात।

नीच जातो मे अब भी बड़ा एका हे

स्पष्ट।

नीचन कूटन, देवन पूजन

(१) ओछा आदमी पिटने से और देवता पूजने से ठीक रहते है।

(२) ओछे आदमी पिटते हैं, बडो की पूजा की जाती है।

नीच न छोडे निचाई, नीम न छोडे तिताई

स्पष्ट।

नीच हँसे, हुलसे रहे, लिये गेंद को पोत।
ज्यो-ज्यों माथे मारिये, त्यों-त्यों ऊचे होत। (बिहारी)

नीच मनुष्य गेंद के स्वभाव को धारण किए हुए प्रसन्न रहते है। ज्यो-ज्यो वे माथे पर मारे जाते है (अपने सिर पर चोट खाते हैं), त्यो-त्यो ऊंचे होते है (अपने को श्रेष्ठ समझते है)।

(हँसे के स्थान पर शुद्ध पाठ 'हिये' है।)

नीचे से जड काटना, ऊपर से पानी देना

ऊपर से भले बनकर भीतर-ही-भीतर हानि पहुचाना।

नीम न मीठा होय, सींच गुड़ घी से।
जाको जौन सुभाव जाय नहिं जी से।

जब कोई बहुत समझाने पर भी बात नहीं मानता।

नीम हकीम खतरा-ए-जान।
नीम मुल्ला खतरा-ए-ईमान। (फा०)
थोडा ज्ञान बहुत हानिकर होता है।

नीयत साबित मंजिल आसान, (मु०)
जिसकी नीयत अच्छी होती है, उसके सब काम बनते है।

नीलकंठ कौड़ा भखें, मुखहिं बिराजें राम।
खोट कपट क्या देखिए, दर्शन से है काम।
स्पष्ट। नीलकंठ पक्षी के दर्शन शुभ माने जाते है। विजयादशमी के दिन प्रातःकाल विशेष रूप से लोग उसके दर्शनो के लिए बाग-बगीचे छानते फिरते है।

नील का टीका, कोढ का दाग
ये कभी नही छूटते।
नील का टीका लगना=मु०, चरित्र मे लगा धब्बा। कलंक लगना।

नील का माठ बिगड़ा है
जब कोई पूरे का पूरा काम नष्ट हो जाए तब क०। (पुराने जमाने मे जब रासायनिक रंगो का आविष्कार नही हुआ था, नीला रंग नील से बनता था। इसके लिए नील की जडो और डंठलो को काटकर हौज़ मे सडाते थे। यही नील का माठ कहलाता था। कभी-कभी बिगड जाता था, और तब डंठलो और जडो से रंग नही उतरता था।)

नीलटांस जिस सिर मंडरावे, मुकट पती सूं लाभ पावे
जिसके सिर पर नीलकण्ठ पक्षी घूम जाए, उसे राजा से धन-सम्मान मिलता है। लोक-विश्वास।

नूनवाले का नून गिरा, उसने उठा लिया।
तेलवाले का तेल गिरा, तो क्या उठा लेगा?
स्पष्ट।

नूनवाले का नून गिरा, दूना हुआ,
तेली का तेल गिरा, ऊना हुआ
नमकवाले का नमक जमीन पर गिरे, तो वह वज़न मे दुगुना हो जाएगा, क्योकि उसमे धूल मिल जाएगी। तेली का तेल गिरे, तो वह कम हो जाएगा, क्योकि सब उठाया नही जा सकेगा।

नेक अंदर बद, बद अंदर नेक, (मु०)
अच्छे आदमी मे भी कुछ-न-कुछ बुराई और बुरे मे भी कुछ-न-कुछ अच्छाई होती है।

नेक नाम बनिया, बदनाम चोर
वाणिज्य करनेवाले की साख होती है, चोर की नही।

नेक बात का पूछना क्या?
स्पष्ट।

नेकी और पूछ-पूछ
भलाई करने मे क्या पूछना। कोई भलाई करना चाहे तो उसे पूछने की क्या जरूरत है?

नेकी कर और दरिया में डाल
किसी का उपकार करके उसे भूल जाना चाहिए।

नेकी करनेवाले को नेकी का मज़ा और मूजी को टक्कर का
भले को भलाई का मजा मिलता है और बुरे को बुराई का, वह पिटता है।

नेकी करो खुदा से पाओ
भलाई का बदला ईश्वर देता है।

नेकी का बदला बदी
किसी को भलाई का बदला बुराई से दिया जाए, तब क०।

नेकी की जड़ पताल मे
भलाई का फल हमेशा मिलता रहता है।

नेकी बर्बाद, गुनाह लाज़िम, (मु०)
नेकी तो चूल्हे-भाड मे गई, उसके बदले बुराई मिली।
(दे०—व्याख्या के लिए नेकी का बदला बदी।)

नेकी ही रह जाती है
मनुष्य मर जाता हे, पर उसके अच्छे काम जीवित रहते है।

नेमी पांडे कमर मे जटा
ढोंगी के लिए क०।
नेमी=नियम से रहनेवाले।

नेवतल ब्राह्मण शत्रु बराबर, (पू०)
ब्राह्मण को न्योता दिया और मानो घर मे शत्रु बुला लिया। ब्राह्मण बहुत खाने के लिए बदनाम हैं।

पंडित भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत।
भाव भगत जानी नहीं, भये जगल के भूत।

सच्ची भक्ति के विना ईश्वर नही मिलता।

पकले गूलर, कव्वे के नींद आवा ले, (भो०)

गूलर पक रहे हैं, भला कौए को नीद कैसे आएगी ? जव किसी अच्छी लगनेवाली वस्तु को पाने के लिए कोई वेचैन हो उठे, तव क०।

(कौवे गूलर वहुत खाते है।)

पका फोड़ा हो रहा है

वहुत टीस उठ रही है।

कष्टदायक वस्तु के लिए क०।

पकाय सो खाय नहीं, खाय कोई और।
दौड़े सो पाय नहीं, पाय कोई और।

(१) जो मेहनत करे, उसे न मिले, दूसरे मजा उडाए।

(२) जो मेहनत करेगा सो पाएगा, नही तो दूसरे उसका लाभ उठाएगे।

पकी फली नहीं फोडता है

वहुत ही आलसी है। कोई काम नही करता।

पके आम के टपकने का डर है

वूढ़ा आदमी, न जाने कव चल वसे।

पक्का पान खासी न जुकाम

नया पान कफ पैदा करता है, पक्का नही।

पक्का होना चाहे तो पक्के के सग खेल, कच्ची सरसो पेर के, खली होय ना तेल

योग्य वनना चाहते हो, तो योग्य पुरुप के साथ रहो। कच्ची सरसो से तेल नही मिल सकता।

पखाल का लादना और डाक का लादना एक-सा

दोनो ही कामो मे वोझा लेकर और जल्दी चलना पडता है।

पखाल=मशक।

पगडी अटकी है

इज्जत खतरे मे है।

पगड़ी दोनों हाथों से थामी जाती है

इज्जत को वचाने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए।

पगड़ी भीतर रख

अपनी इज्जत वनाए रखो। ऐसा न हो, कोई पगडी उछाल दे।

पगड़ी रख, घी चख

इज्जत से भी रहो, और अच्छा खाओ-पीओ।

पग पवित्र तीरथ गवन, कर पवित्र कछु दान।
मुख पवित्र जब होत है, भज ले श्री भगवान।

तीर्थयात्रा से पैर पवित्र होते है, दान से हाथ पवित्र होते हैं और ईश्वर-भजन से मुख पवित्र होता है।

पग बिन कटे न पंथ

बिना चले रास्ता तय नही होता। करने से ही काम होता है।

पछवा चले, खेती फले, (कृ०)

पश्चिम की वायु खेती के लिए लाभदायक होती है।

पठान का पूत, घडी मे औलिया, घडी मे भूत

घडी-घडी मे जिसका मिजाज वदले, उसके लिए क०।

औलिया=सत।

पठानो ने गाव मारा, जुलाहो की चढ वनी

क्योकि उन्हे नौकरी मिल जाएगी। कुनवापरस्ती।

पडली पिया तोरे वस, जिन्ने चाहा तिन्ने धस, (पू०, स्त्रि०)

कोई पतिव्रता स्त्री अपने अत्याचारी पति के प्रति कह रही है।

विवश होकर किसी का अनाचार सहन करना पडे, तव क०।

पडवा गमन न कीजिये, जो सोने की होय

पडवा (प्रतिपदा) को यात्रा नहीं करनी चाहिए, चाहे कितना ही लाभ क्यो न होनेवाला हो। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार पड़वा को यात्रा के लिए अशुभ मानते है।

पडोस छोड पीत करे

पडोसियो को छोड कर दूसरों से मित्र नाना।

बुरे आदमी के लिए क०।

पड़ोसी के मेह बरसेगा तो बौछार यहा भी आवेगी

धनी के पडोस मे रहने से किसी-न-किसी तरह का लाभ होता ही।

पढ़ा न लिखा, नाम विद्याधर
वेशऊर के लिए क०।

पढ़ा न लिखा, नाम मुहम्मद फाजिल, (मु०)
दे० ऊ०।

पढ़िये भैया सोई, जामें हंडिया खुदबुद होई, (पू०)
वही विद्या पढनी चाहिए, जिससे पेट का धधा चले।

पढ़ी न, कज़ा की, (मु०)
जो पांच वक्त नमाज नही पढता, वह पाप करता है। नियत समय पर नमाज न पढने के अपराध को कजा कहते है।

पढ़े के पास बैठिये, दूना लाभ
ज्ञानी के पास वैठने से दुगुना लाभ होता है। समय का सदुपयोग होता है। अच्छी वाते सीखने को मिलती है।

पढे घर की पढी बिल्ली
शिक्षा का दूसरो पर प्रभाव पडता है। जहा एक पढा होता है, वहा दूसरा भी पढ़ जाता है।

पढ़े तोता, पढे मैना, कहीं सिपाही का पूत भी पढा है?
सिपाहियो पर फब्ती। वे प्राय अशिक्षित होते है।

पढे तो है, पर गुने नहीं
विद्या तो पढी, पर उसका मनन नही किया। अनुभवहीन पढे-लिखे।

पढ़े फारसी बेचें तेल, यह देखो कुदरत का खेल
क़िस्मत की मार से पढे-लिखे मनुष्य भी मारे-मारे फिरते है।

पढों मे अनपढा, जैसे हसो मे कौवा
स्पष्ट।
(स०—सभा मध्ये न शोभन्ते हस मध्ये वको यथा)

पढो तो पढो, नहीं तो पिंजरा खाली करो
(१) लडके जव पढते, नही तो उनसे क०।
(२) निकम्मे नौकर से भी क०।

पतुरिया का डेरा, जैसे ठगों का घेरा
क्योकि वहा भी आदमी जाकर लुटता है।
पतुरिया = वेश्या।
(एक घुमक्कड जाति के लोग होते है, उनकी स्त्रियो को भी पतुरिया कहते है। ये चोरी के लिए बदनाम है। यहा उनके डेरे से भी अभिप्राय हो सकता है।)

पतुरिया रूठी, धरम बचा
क्योकि उसके पास फिर जाएगे ही नही।
(जब कोई किसी काम के लिए इन्कार कर देता है, तव क०, कि चलो अच्छा हुआ, एहसान से वचे।)

पतोर ताको गज़ी नहीं, बेसवा ओढे खासा
(१) पतिव्रताओ को तो गाढा पहिनने को नही मिलता, और वेश्याए रेशम पहिनती हैं। अथवा
(२) ऐसे पुरुष के लिए भी कह सकते है, जो अपनी स्त्री का ख्याल न करे, और किसी दूसरे से प्रेम करे।

पत्थर को जोंक नहीं लगती
(१) निर्दयी के आगे रोने से कोई लाभ नही होता।
(२) मूर्ख को शिक्षा नही लगती।

पत्थर मारे मौत नहीं आती
(१) घर के लोग जिससे परेशान हो, ऐसे व्यक्ति के लिए क०।
(२) पत्थर मारने से कोई नही मर जाता। जब मौत आती है तभी मरता है।

पत्थर मोम नहीं होता
हृदयहीन को दया नही आती।

पदनी आइल, न पेठया लागल, (पू०)
किसी दुराचारिणी के विषय मे कहा गया है कि न वह आई, न हाट लगी, अर्थात उसके विना वाजार मे रौनक नही आई।

पद्मिनी चमारों मे होती है
चमारो मे भी सुन्दर स्त्रिया होती है।

पर आसा नित उपासा
दूसरो पर निर्भर करनेवाला हमेशा भूखो मरता है।

पर उपकारी, धरमधारी
दूसरो का भला करनेवाला ही धर्मात्मा होता है।

परकल घोड भुसौले ठाढ़, (पू०)
जहा जिसे खाने को मिलता है, वह उसी जगह वार-वार पहुचता है।
परकल = लपका हुआ।

पंडित भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत।
भाव भगत जानी नहीं, भये जंगल के भूत।
सच्ची भक्ति के बिना ईश्वर नही मिलता।

पकले गूलर, कव्वे के नीद आवा ले, (भो०)
गूलर पक रहे हैं, भला कौए को नीद कैसे आएगी ?
जब किसी अच्छी लगनेवाली वस्तु को पाने के लिए कोई बेचैन हो उठे, तब क०।
(कौवे गूलर बहुत खाते हैं।)

पका फोड़ा हो रहा है
बहुत टीस उठ रही है।
कष्टदायक वस्तु के लिए क०।

पकाय सो खाय नहीं, खाय कोई और।
दौड़े सो पाय नहीं, पाय कोई और।
(१) जो मेहनत करे, उसे न मिले, दूसरे मज़ा उड़ाए।
(२) जो मेहनत करेगा सो पाएगा, नही तो दूसरे उसका लाभ उठाएगे।

पकी फली नही फोड़ता है
बहुत ही आलसी है। कोई काम नही करता।

पके आम के टपकने का डर है
बूढ़ा आदमी, न जाने कब चल बसे।

पक्का पान खांसी न जुकाम
नया पान कफ पैदा करता है, पक्का नही।

पक्का होना चाहे तो पक्के के सग खेल, कच्ची सरसों पेर के, खली होय ना तेल
योग्य बनना चाहते हो, तो योग्य पुरुष के साथ रहो। कच्ची सरसो से तेल नही मिल सकता।

पखाल का लादना और डाक का लादना एक-सा
दोनो ही कामो मे बोझा लेकर और जल्दी चलना पडता है।
पखाल=मशक।

पगड़ी अटकी है
इज्ज़त खतरे मे है।

पगड़ी दोनों हाथो से थामी जाती है
इज्ज़त को बचाने के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए।

पगड़ी भीतर रख
अपनी इज्जत बनाए रखो। ऐसा न हो, कोई पगडी उछाल दे।

पगड़ी रख, घी चख
इज्जत से भी रहो, और अच्छा खाओ-पीओ।

पग पवित्र तीरथ गवन, कर पवित्र कछु दान।
मुख पवित्र जब होत है, भज ले श्री भगवान।
तीर्थयात्रा से पैर पवित्र होते हैं, दान से हाथ पवित्र होते हैं और ईश्वर-भजन से मुख पवित्र होता है।

पग बिन कटे न पथ
बिना चले रास्ता तय नही होता। करने से ही काम होता है।

पछवा चले, खेती फले, (कृ०)
पश्चिम की वायु खेती के लिए लाभदायक होती है।

पठान का पूत, घड़ी में औलिया, घड़ी मे भूत
घडी-घडी मे जिसका मिजाज़ बदले, उसके लिए क०।
औलिया=संत।

पठानो ने गांव मारा, जुलाहों की चढ बनी
क्योकि उन्हे नौकरी मिल जाएगी। कुनबापरस्ती।

पडलीं पिया तोरे बस, जिन्ने चाहा तिन्ने घस, (पू०, स्त्रि०)
कोई पतिव्रता स्त्री अपने अत्याचारी पति के प्रति कह रही है।
विवश होकर किसी का अनाचार सहन करना पड़े, तब क०।

पड़वा गमन न कीजिये, जो सोने की होय
पडवा (प्रतिपदा) को यात्रा नही करनी चाहिए, चाहे कितना ही लाभ क्यो न होनेवाला हो। हिन्दू ज्योतिष के अनुसार पडवा को यात्रा के लिए अशुभ मानते है।

पड़ोस छोड़ पीत करे
पडोसियो को छोड कर दूसरो को मित्र बनाना।
बुरे आदमी के लिए क०।

पड़ोसी के मेह बरसेगा तो बौछार यहा भी आयेगी
धनी के पडोस मे रहने से किसी-न-किसी तरह का लाभ होगा ही।

परहेज भी आधा इलाज है
दे० ऊ० ।

पराई जेब मे अपनी जेब से धरना मुश्किल है
दूसरे का पैसा लेना आसान नही।

पराई तोंद का घूसा
अपने को उसका कष्ट नही होता।

पराई थैली का मुंह सकरा
अपना धन कोई आसानी से नही देना चाहता।
दे०—पराई जेब से . ।

पराई घी और हँसे बटाऊ लोग
पराई लडकी को देखकर राहगीर हँसते है।
(उन्हे हँसना नही चाहिए।)

पराई नौकरी करनी और साप का खिलाना बराबर है
दोनो ही काम खतरे के है।

पराई सराय में कौन धुआं करता है ?
दूसरे के घर जाकर चूल्हा सुलगाना ठीक नही। (भोजन के लिए ।)
अपना निजी काम अपने घर ही करना चाहिए।

परा गन्दह रोजी, परा गन्दह दिल, (फा०)
जिसकी नौकरी का ठीक नहीं, उसके दिमाग का भी ठीक नही। अर्थात बेरोजगार आदमी अस्थिर चित्त रहता हे।

पराधीन सपने सुख नाहीं
जो दूसरे की नौकरी करता है, अथवा दूसरे के अधीन रहता हे, उसे कभी सुख नही मिलता।

पराया दिल परदेस बराबर
उसका हाल मालूम नही रहता।

पराया दिल समन्दर के पार
दे० ऊ० ।

पराया माल झाट का बाल
पराए माल को तुच्छ समझे।

पराया सिर कद्दू बराबर
दूसरे के माल की परवाह न करना।

पराया सिर कुरान की जगह, (मु०)
कसम खाने के लिए पराया सिर। पराई वस्तु की वुकत न करना। (मुसलमान लोग कुरान की कसम खाते है। इसके अलावा अपने अथवा पराए सिर की कसम भी खाई जाती है। लोक-विश्वास है कि किसी के सिर की झूठी कसम खाने से वह आदमी मर जाता है। इसी पर कहावत आधारित है।)

पराया सिर पसेरी बराबर
दे०—पराया सिर कद्दू ।

पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड़ डालेंगे, (स्त्रि०)
(१) पराये सौभाग्य पर ईर्ष्या करना। अथवा (२) यह एक सीधा प्रश्न भी हो सकता है कि क्या हम पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड डालेंगे, अर्थात क्या अपनी हानि कर लेंगे ? हिन्दू स्त्रिया माग मे सेंदुर भरती है, जो सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। कहावत मे उसी से मतलब है।

पराये गंडो के भरोसे न रहना
अर्थात कार्य तो पुरुषार्थ से ही सिद्ध होता है, गडे या तावीज से नही।
गडा = मत्र पढकर बनाया गया धागा, जिसे लोग अपनी किसी मनोकामना को पूरा करने अथवा रोग और भूत प्रेतादि की बाधा को दूर करने के लिए गले मे पहिनते है।

पराये धन पर झींगुर नाचे
दूसरे के धन पर ऐंठना।

परायेधन पर लक्ष्मीनारायन, (हिं०)
पराये धन पर मौज करना।
(भोज के प्रारभ मे जय लक्ष्मीनारायण कहने की प्रथा है। जिसका अर्थ होता है कि अब भोजन प्रारभ किया जाए।)

पराये बरदे औजाद करते है
दूसरे के नौकरों को छुटकारा दिलाते हैं।
पराये बूते पर परोपकार करना।
बरदे=बैल। (यहा नौकरो से ही मतलब है।)

पराये भरोसे खेला जुआ, आज न मुआ; काल मुआ
पराये भरोसे जुआ खेलनेवाला नुकसान उठाकर रहता है। (यहा सट्टा मे मतलब है।)

पर का धन गारैया मार, (पू०)
पराए धन को चिड़ियां खा जाएं, हमें क्या मतलब ?
पर की खेती, पर को गाय, वह पापी जो मारन जाय
मनुष्य का स्वभाव है कि वह दूसरे की हानि को चुपचाप देखता रहता है, हस्तक्षेप नही करता। उसी पर कहा० कही गई है।
दे०—अनकर खेती. . .।
पर के धन पर चोर रोवे
चोर मुफ्त का माल चाहता है।
पर को कुआ खोदिये और आप ही डूब-डूब मरिये
जो दूसरो को हानि पहुचाने की चेष्टा करता है, वह स्वय हानि उठाता है।
परगट आन, पीछे कह आना।
अधम न एक जग ताहि समाना।
जो मुह पर कुछ कहे और पीठ पीछे कुछ कहे, उसे बड़ा नीच समझना चाहिए।
पर घर कूदें मूसलचद
जो विना बुलाए किसी के घर जाए, अथवा विना पूछे किसी के काम मे हस्तक्षेप करता फिरे, उसके लिए क०।
पर घर नाचें तीन जने, कायथ, वैद, दलाल
क्लर्क, वैद्य, और दलाल, ये अपनी आमदनी के लिए दूसरो पर ही निर्भर करते है।
परचे परतीत है
मिलने-जुलने से ही विश्वास उत्पन्न होता है।
परजा मरन, राजा की हाँसी
राजा के सुख के लिए प्रजा मरती है। सामती जमाने मे राजा लोग अपने आराम के लिए रिआया से कर्ज़ लेते थे। उसी से मतलब है।
पर तिरिया पर धन के ऊपर जो कोई सुता धरे है,
जब छूटे है प्रान, प्यारे, जाके नरक पड़े हैं
जो पराए धन और पराई स्त्री पर दृष्टि डालता है वह नरक मे जाता है।
सुता धरे है=सुर्त करता है। सुर्त से मतलब ध्यान से है।
परदे की बीवी और चटाई का लहंगा
प्रतिष्ठा के अनुकूल पहिनावा न होना।
परदे की बीवी=पर्दानशीन औरत। परदे मे बडे आदमियो की स्त्रिया ही रहती हैं।
परदे मे जर्दा लगाती है, (स्त्रि०)
अपना नाम कलंकित करती हैं।
ज़र्दा=धब्बा।
परदेस कलेस नरेशन को, (हि०)
घर से वाहर जाने पर राजाओ को भी कष्ट होता है, फिर साधारण पुरुषो की तो बात ही क्या ?
परदेसी का जी आधा होता है
(१) अजनवी आदमी सकोचशील होता है।
(२) वाहर जाकर आदमी हिम्मत से काम नही ले पाता।
परदेसी की प्रीत को, सबका मन ललचाय।
दोइ वात की खोट है, रहे न सग ले जाय। (स्त्रि०)
स्पष्ट
खोट=कमी, त्रुटि, शका।
परदेसी बालम तेरी आस नहीं, बासी फूलों मे बास नहीं, (स्त्रि०)
परदेशी से प्रेम करना व्यर्थ है, क्योकि वह न जाने कव छोडकर चलता बने।
पर नारी पैनी छुरी, कोई मत लाओ संग।
दसों सीस रावन के ढह गए, इस नारी के संग।
स्पष्ट।
(सीता को चुराने के लिए रावण मारा गया था।)
परवत को राई करे, राई परवत मान।
ईश्वर मे बडी शक्ति है, वह असभव को भी सभव कर सकता है।
परबस मे सुख है नहीं, निसबस ही सुख भोग।
यातें परबस त्याग कें, रहे सुबस बुध लोग।
पराधीनता मे सुख नही मिलता।
पर मुई सासू, आसो आये आसू, (स्त्रि०)
सास पारसाल मरी और आसू इस साल आए।
बनावटी दुख।
परहेज बडी दवा है
खाने-पीने आदि के सयम से बहुत से रोग दूर होते हैं।

परहेज भी आधा इलाज है

दे० ऊ० ।

पराई जेब मे अपनी जेब से धरना मुश्किल है

दूसरे का पैसा लेना आसान नही।

पराई तोंद का घूसा

अपने को उसका कष्ट नही होता।

पराई थैली का मुंह सकरा

अपना धन कोई आसानी से नही देना चाहता।

दे०—पराई जेब से. ।

पराई धी और हँसे बटाऊ लोग

पराई लडकी को देखकर राहगीर हँसते है। (उन्हे हँसना नही चाहिए।)

पराई नौकरी करनी ओर साप का खिलाना बराबर है

दोनो ही काम खतरे के है।

पराई सराय में कौन धुआं करता है ?

दूसरे के घर जाकर चूल्हा सुलगाना ठीक नही। (भोजन के लिए ।)

अपना निजी काम अपने घर ही करना चाहिए।

परा गन्दह रोजी, परा गन्दह दिल, (फा०)

जिसकी नौकरी का ठीक नही, उसके दिमाग का भी ठीक नही। अर्थात बेरोजगार आदमी अस्थिर चित्त रहता है।

पराधीन सपने सुख नाहीं

जो दूसरे की नौकरी करता है, अथवा दूसरे के अधीन रहता है, उसे कभी सुख नही मिलता।

पराया दिल परदेस बराबर

उसका हाल मालूम नही रहता।

पराया दिल समन्दर के पार

दे० ऊ० ।

पराया माल झाट का बाल

पराए माल को तुच्छ समझे।

पराया सिर कद्दू बराबर

दूसरे के माल की परवाह न करना।

पराया सिर कुरान की जगह, (मु०)

कसम खाने के लिए पराया सिर। पराई वस्तु की वुकत न करना। (मुसलमान लोग कुरान की कसम खाते है। इसके अलावा अपने अथवा पराए सिर की कसम भी खाई जाती है। लोक-विश्वास हे कि किसी के सिर की झूठी कसम खाने से वह आदमी मर जाता है। इसी पर कहावत आधारित है।)

पराया सिर पसेरी बराबर

दे०—पराया सिर कद्दू ।

पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड़ डालेंगे, (स्त्रि०)

(१) पराये सौभाग्य पर ईर्ष्या करना। अथवा (२) यह एक सीधा प्रश्न भी हो सकता है कि क्या हम पराया सिर लाल देख अपना सिर फोड डालेगे, अर्थात क्या अपनी हानि कर लेगे ? हिन्दू स्त्रिया माग मे सेंदुर भरती है, जो सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। कहावत मे उसी से मतलब है।

पराये गडों के भरोसे न रहना

अर्थात कार्य तो पुरुषार्थ से ही सिद्ध होता है, गडे या तावीज से नही।

गडा = मत्र पढकर बनाया गया धागा, जिसे लोग अपनी किसी मनोकामना को पूरा करने अथवा रोग और भूत प्रेतादि की बाधा को दूर करने के लिए गले मे पहिनते हैं।

पराये धन पर झींगुर नाचे

दूसरे के धन पर ऐंठना।

परायेधन पर लक्ष्मीनारायन, (हिं०)

पराये धन पर मौज करना।

(भोज के प्रारभ मे जय लक्ष्मीनारायण कहने की प्रथा है। जिसका अर्थ होता है कि अब भोजन प्रारभ किया जाए।)

पराये बरदे औजाद करते हें

दूसरे के नौकरों को छुटकारा दिलाते हैं।

पराये बूते पर परोपकार करना।

बरदे=बैल। (यहा नौकरो मे ही मतलब है।)

पराये भरोसे खेला जुआ, आज न मुआ; काल मुआ

पराये भरोसे जुआ खेलनेवाला नुकमान उठाकर रहता है। (यहा सट्टा मे मतलब है।)

पराये माल पै, या हुसेन, (मु०)
पराया माल खाने को हमेशा तैयार।
दे०—पराये धन पर लक्ष्मीनरायन।

पराये हाथ पै शिकरा पालते हो
पराये भरोसे रहना ठीक नही। शिकरा एक प्रकार का शिकारी बाज पक्षी होता है। उसे इस प्रकार सिखाते हैं कि वह चिडियो को पकडकर मालिक के पास ले आता है।

पल पखवाड़ा, घड़ी महीना, चोघड़िये का साल।
जिसको लाला 'काल' कहत हैं, उसका कौन हवाल।
वादा खिलाफी करना। काम के लिए रोज़ टालना।
(लालाजी का एक पल एक पखवाडे के बराबर, एक घडी एक महीने के बराबर, और चार घडी एक साल के बराबर होती है। अब अगर वह 'कल' कह दे तो उसका न जाने क्या हाल होगा।)

पलास के तीन पात
सदा एक-सी हालत मे रहना।

पसू का सताना, निरा पाप कमाना
पशु को नही सताना चाहिए।

पहली बोहनी अल्ला मिया की आस, (मु० व्य०)
सुबह दुकान पर पहला ग्राहक आने पर मुसलमान दूकानदार कहा करते हैं। दूकानदार सुबह की पहली बिक्री को बडा महत्व देते है। वे उससे दिन भर की बिक्री का अनुमान लगाते है। पहले ग्राहक को वे कभी वापस नही करते।

पहले अपनी ही दाढ़ी की आग बुझाई जाती है
पहले अपना ही काम देखा जाता है।
(एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा कि अगर मेरी और तुम्हारी दाढी मे आग लग जाए, तो तुम पहले किसकी दाढी बुझाओगे। बीरबल ने जवाब दिया—पहले अपनी ही बुझाऊगा।)

पहले खाना, पीछे बात करना
पहले सामने का काम पूरा करो।
खाने के समय बहुत बोलनेवाले के लिए।

पहले घर मे तो पीछे मस्जिद मे, (मु०)
पहले घर देखो, फिर बाहर।

पहले चुम्मे गाल काटा
किसी आदमी को पहले-पहल जब कोई काम सौपा जाए, और वह उसे चौपट कर दे।

पहले पहरे सब कोई जागे, दूजे पहरे भोगी।
तीजे पहरे चोरा जागे, चौथे पहरे जोगी।
रात के पहले पहर मे सब कोई जागते हैं, दूसरे मे भोगी, तीसरे मे चोर और चौथे मे योगी जागता है।

पहले पीवे जोगी, बीच मे पीवे भोगी, पीछे पीवे रोगी
(१) तमाखू पीने के लिए।
(२) भोजन के समय पानी पीने के लिए भी कुछ लोग कहते है, पर इस सम्बन्ध मे यह कहावत कोई अन्तिम वाक्य नही।

पहले पीवे मकवा, फिर पीवें तमखवा, पीछे पीवे चिलम-चट, (पू०)
तमाखू पीनेवालो का कहना है कि पहले तो मूर्ख पीता है, फिर जो तमाखू का मजा जानता है वह पीता है, फिर सबसे बाद मे चिलमचट पीता है। शुरू मे चिलम मे केवल धुआ निकलता है, फिर तमाखू के थोडा जल उठने पर उसमे पीने का स्वाद आता है, बाद मे केवल राख रह जाती है और कोई मजा नही रहता, इसी से ऐसा कहा है।

पहले बो, पहले काट, (कृ०)
काम मे जो शीघ्रता करेगा, उसका फल भी उसे शीघ्र मिलेगा।

पहले मित्तर, तब देवता पित्तर
पहले पेट पूजा फिर देव पूजा।

पहले मारे सो मीरी
मैदान मे जो आगे बढकर हाथ मारता है, वही जीतता है।
(शतरज के खेल मे प्यादा यदि आगे बढकर दूसरे खिलाडी के वज़ीर या बादशाह के खाने मे पहुच जाए, तो वह वजीर बन जाता है।)

पहले सोच विचार, पीछे कीजे कार
काम सोच-विचार कर करना चाहिए।

पहले हा गस्से मे बाल आया
पहले ही कौर मे बाल आया, अर्थात अशकुन हुआ।

(भोजन मे वाल निकलना अशुभ मानते है, और यदि पहले ही कौर मे बाल आ जाए, तो फिर भोजन नही करते।)

पहले ही बिस्मिल्ला गलत, (मु०)

शुरू मे ही काम विगडा।

(मुसलमानो मे कोई कार्य आरम करने के समय 'बिस्मिल्लाह अर्रहमानुर्रहीम' कहने की प्रथा है। 'बिस्मिल्लाह' उसी का पूर्वार्द्ध और सक्षिप्त पद है, जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से।)

पहाड की उतराई चढ़ाई दोनों पर लानत

दोनो से कष्ट होता है।

पहाड के अठगन सिलूत, (पू०)

पहाड पत्थरो के सहारे टिका है। छोटो से ही वडो का वडप्पन है।

अठगन=अटकन, सहारा।

सिलूत=सिल, पत्थर।

पहाड़ी गधा, पूर्वी रेंक

अपनी चाल-ढाल छोडकर दूसरो की चाल-ढाल का अनुकरण करना।

पांच जूतियां और हुक्के का पानी

तुम्हे यही मिलना चाहिए।

जव कोई ऐसी माग करे, जिसके वह बिल्कुल ही योग्य न हो, तब क०।

पांच पच मिल कीजे काज, हारे-जीते नाहीं लाज

पाच आदमियो से सलाह लेकर काम करना चाहिए। उसमे अगर नुकसान भी हो जाए, तो अपने सिर वदनामी नही आती।

पांच महीना व्याह के बीते, पेट कहा से लाई? (स्त्रि०)

अप्रत्याशित वात।

पाच आम, पचासे इमली

पाच वर्ष मे आम और पचास मे इमली मे फल आता है। पूरी शुद्ध कहावत इस प्रकार है· पाँचे आम, पचीसे महुआ, तीस वरस मे इमली औ' कहुआ। फैलन ने उक्त वाक्य का अर्थ किया है—आम के पाच पेड इमली के पचास पेड के वरावर होते हैं।

पाचे मीत, पचासे ठाकुर

मित्र पाच रुपए मे और राजा या जमीदार पचास रुपए मे मान जाता है।

पाचो उगलियां घी मे, छठा सिर कढाई में

जिसकी खूब दाल गल रही हो, उसके लिए क०।

(इसका शुरू का आधा भाग ही कहावत के रूप मे प्रचलित है।)

पांचों उगलियां वरावर नहीं होतीं

(१) कोई चीज सब एक-सी नही होती।

(२) सब मनुष्य एक-से नही होते।

पांचों पंडे छठे नरायन

पाचो पाडव और छठे श्रीकृष्ण।

ऐसी जगह क०, जहा दस-पाच आदमियो के गुट मे अकस्मात ऐसा मनुष्य पहुच जाए, जो उनका नेतृत्व कर सकता हो और जहा उसकी जरूरत भी हो। (कहावत का प्रयोग प्राय व्यग्य मे ही होता है।)

पाचों सवारो में मिलना

अपने को ऐसे मनुष्यो के वरावर समझना जो योग्यता मे अपने से वहुत वडे हो।

(कथा है कि किसी समय चार शाही घुडसवार सजे-धजे और हथियारो से लैस कही जा रहे थे। उनके पीछे एक कमजोर-सा निहत्था आदमी एक सड़ियल टट्टू पर सवार हो चल रहा था। जब किसी ने उससे पूछा कि तुम कहा जा रहे हो? तो उसने उत्तर दिया—हम पाचो सवार दिल्ली से आ रहे है।)

पाडे जी पछतायेंगे, वही चने की खायेंगे

जब कोई मनुष्य बहुत समझाने पर भी किसी वात को न माने और वाद मे अपनी खुशी मे वही करे जो कहा गया था, तब कहते है।

पाडे दोऊ दीन से गये

(१) जब कोई मनुष्य एक काम को छोडकर दूसरा काम करने जाए और उसमे सफल न हो, और अपने पहले काम से भी हाथ धो बैठे।

(२) जब कोई किसी वडी चीज की आशा से छोटी चीज को छोड दे, और वाद मे उसे वडी भी न मिले, और न छोटी।

(कथा है कि कोई ब्राह्मण मुसलमान हो गया। कुछ दिनो बाद जब उसने अपने इस नए मजहब मे कोई खास तत्व न देखा, तो उसने फिर ब्राह्मण होने की इच्छा प्रकट की। परन्तु ऐसा उसके लिए समव नही हो सका, क्योंकि हिन्दू उन दिनो शुद्धि नही करते थे और वह दोनो तरफ से मारा गया।)

पाव गोर में लटकाये बैठे हैं

मरने के करीब है।

पांव तले की जमीन सरकी जाती है

(१) किसी बहुत झूठी या कुत्सित बात के सुनने पर घृणा या क्षोभ मे।

(२) भय या आश्चर्य होने पर भी।

पाव मे जूनी न सिर पर चपोटी

(१) सिलबिल्ला।

(२) बहुत गरीब।

चपोटी=टोपी।

पांव लो बिनती, सौ लो गिनती (हिं०)

जिस प्रकार सौ से अधिक गिनती नही होती, उसी प्रकार पैर पडने से अधिक कोई बिनती नही हो सकती। जब कोई अपने किसी काम को करने के लिए सब तरह से प्रार्थना करके थक जाए तब क०।

पांसा पडे, अनाडी जीते

पासा पडने से अनाडी भी जीतता है।

पासा पड़े सो दाव, हाकिम करे सो न्याव

दैववशात जो सामने आता है, वह सहना पडता है। (हाकिम की जगह राजा भी कहा जाता है।)

पाक नाम अल्लाह का, (मु०)

पवित्र नाम ईश्वर का है।

पाक रह, बेबाक रह, (मु०)

जिसका दिल साफ है, उसे कोई डर नही रहता।

पाजी तो पाजी, वह बडा पजोड़ा है

पाजी से भी बडा कमीना है।

पात-पात को आप लुटावे, काला मुंह कर जग दिखलावे, तब लालों मे लाली पावे

यह पहेली है पलास वृक्ष पर। पहले पलास अपने सब पत्ते गिरा देता है, अर्थात बिल्कुल नगा हो जाता है, फिर उसमे काले रग की कलिया लगती हैं, अर्थात ससार मे बदनाम होकर उसका मुह काला होता है, बाद मे लाल रग के फूल उसमे लगते हैं, जिससे सारा वन दमक उठता है, अर्थात अपने गुणो से वह सम्मान योग्य बनता है। तात्पर्य यह कि बिना कष्ट झेले मनुष्य को सफलता नही मिलती।

बादशाहों और दरयाओ का फेर किसने पाया है?

राजाओ और नदियो का सच्चा हाल किसने जाना है?

पान और ईमान फेरे ही से अच्छा रहता है

पान और ईमान पलटते रहने से ही ठीक रहते है। यहा पलटने के दो अर्थ है—(१) लौटना-पलटना। (२) लौट-पलट कर साफ करना।

पान पुराना घृत नया, और कुलवंती नार।
यह तीनों तब पाइये, जब प्रसन्न होय मुरार।

स्पष्ट।

पान पुराना ही अच्छा माना जाता है, जो महगा मिलता है। घी तो ताजा अच्छा होता ही है। मुरार=मुरारी, कृष्ण भगवान।

पान-सा पतला, चांद-सा चकला

केवल तुकबदी।

चकला=गोला।

पानी का-सा बुलबुला है

क्षणभगुर वस्तु। मानव शरीर के लिए क०।

पानी का हगा ऊपर आता है

बुरा कर्म छिपता नही।

पानी दें और जड काटें

ऊपर से प्रेम, भीतर से शत्रुता।

पानी पीकर जात पूछते हो

काम कर चुकने के बाद उसका विचार करना। पानी पी घर पूछनो, नाहिन भलो विचार। (वृ०)

पानी पी घर पूछना

दे० ऊ०।

पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के, (हिं०)

पानी छान कर पीना चाहिए और गुरु देखभाल कर करना चाहिए।

पानी पीवें छान के जीव मारें जान के

जैनियों के लिए क०।

पानी बाढा नाव मे, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयाना काम।

यदि तिरती नाव मे पानी भर जावे और कोई कर्ज मे दव जावे तो इनसे छुटकारा पाने मे देरी नही करनी चाहिए। मतलव, आफत का मुकाविला तुरत करे।

पानी में पत्थर नहीं सड़ता, (व्य०)

रकम किसी मातवर आदमी के पास जमा हो, तो वह डूब नही सकती।

पानी में पखान, भीगे पर छीजे नहीं।
मूरख के आगे ज्ञान, रीझे पर बूझे नहीं।

मूर्ख को शिक्षा देने से कोई लाभ नही होता।

पानी में मछली, नौ-नौ टुकड़ा हिस्सा, (पू०)

किसी चीज के हाथ मे आने के पहले ही उसका गुताडा लगाने लगना।

पानी से पतला कर डाला

वहुत जलील कर डाला।

पानी से पहले पुल बांधते हो

दे०—पानी मे मछली ।

पाप उभरे पर उभरे

वुरा काम छिपता नही।

पाप का घडा भर कर डूबता है

पापी की भले ही पहले उन्नति हो, पर अत मे विनाश होता है।

पाप छिपाये ना छिपे, जस लहसुन की वास

पाप प्रकट होकर रहता है।

पाप भी कभी छिपाये से छिपता है ?

स्पष्ट।

पापियो के मारने को पाप महावली

पापी अपने वुरे कर्मों से ही मारा जाता है।

पापी का माल अकारथ जाय

वुरी कमाई वुरे कामो मे ही खर्च होती है।

पापी का माल पिराचत जाय, दंड भरे या चोर ले जाय

पापी का माल प्रायश्चित्त मे ही खर्च हो जाता है, अर्थात वुरे कर्मो के दड मे जाता है।

पापी की नाव डूबे पर डूबे

पापी नष्ट होकर रहता है।

पापी की नाव भर के डूबे

पापी पहले सफल होता है, पर अन्त मे नष्ट हो जाता है।

पापी के मन मे पाप ही बसे

स्पष्ट।

पाबंद फंसे, आजाद हँसे

कैदी को वधा हुआ देखकर स्वाधीन मनुष्य हँसता है। ससार की रीति यही है।

पायजामे मे से क्यों निकले पडते हो ?

अर्थात क्यो इतने विगडते हो?

पार उतरूं तो बकरा दूं

जब कोई विपत्ति के समय तो देवी-देवता मनावे, पर छुटकारा पाने पर भूल जाए।

(इसकी कथा है कि कोई मुसलमान नाव मे वैठकर नदी पार कर रहा था। बीच मे पहुचा, तो वडे जोर का तूफान आया। उसने किसी पीर की मिन्नत मानी कि यदि सकुशल पार पहुच जाऊ तो वकरा चढाऊगा। तूफान जव वद हुआ, तो उसे वकरे का मोह हुआ और उसने कहा कि अगर वकरा नही चढा सका तो मुर्गी अवश्य चढाऊगा। अन्त मे जव वह राजी-खुशी पार पहुच गया, तो मुर्गी के लिए भी उसका मन अचकचाने लगा और अपने वादे को पूरा करने के लिए कपडो मे से एक चीलर निकाल कर मार डाला और वोला—जान के वदले मे जान मैंने दी।)

पार कहे सो वार है, वार कहे सो पार।
पकड़ किनारा वैठ रह, यही पार, यही वार।

नदी के इस किनारे के लोग उस किनारे को पार और अपने किनारे को वार कहते हैं। इसी तरह उस किनारे के लोग अपने किनारे को वार और इस किनारे को पार कहते है। तू इस पार या उस पार के झगडे मे मत पड। कोई एक किनारा पकडकर वैठ रह। इसी मे तेरी भलाई है।

पार गये, मोर हो आये

शेखचिल्ली की गप।

पारवाले कहे वारवाले अच्छे, वारवाले कहे पार-वाले अच्छे

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी अपेक्षा दूसरो को सुखी और अपने को दुखी समझा करता हे। (उसी पर कहा गया है।)

पारसनाथ से चक्की भली, जो आटा देवे पीस।
कूढ़ नर से मुर्गी भली, जो अंडे देवे बीस।

स्पष्ट।

पाल पाल, तेरे जी का होगा काल

जिन्हे तू पाल-पोसकर बडा कर रहा है वही तेरे शत्रु बन जाएगे।

पासंग का चोर तीन जगह दंडाय, झुकता तोले, रूंगन दे, पासंग दिखाये, (व्य०)

झूठे बाट रखनेवाला दूकानदार तीन जगह से नुकसान उठाता है। उसे ज्यादा तोलना पडता है, रूगन देना पडता है, और अपनी तराजू दिखानी पडती है कि वह ठीक है या नही।

(तराजू की दडी को वरावर करने के लिए उठे हुए पलडे पर रखा हुआ वोझ पासग कहलाता है।

पासग होना—(मु०), तराजू की डडी वरावर न होना। कहावत का अभिप्राय यह है कि जो दूकानदार तराजू मे पासग रखता है, उसे पकडे जाने के भय से कभी-कभी ज्यादा तोलना पडता है।)

पास का कुत्ता, न दूर का भाई

दूर के भाई से पास का कुत्ता अच्छा, क्योकि वह काम आता है।

पास कौड़ी, न बाजार लेखा

(१) ऐसा व्यक्ति, जिसे किसी को कुछ देना-लेना न हो।

(२) वेफिक्र आदमी।

पाहन मे कौ मारवो, चोखा तीर नसाय, (पू०)

पत्थर पर निशाना लगाने से एक अच्छा तीर खराब जाता है।

पिछली रोटी खाय, पिछली मत आय

स्त्रियो का विश्वास है कि जो सवसे अन्त की वनी रोटी खाता हे, उसकी वुद्धि कम हो जाती है। इसलिए वे वच्चो को पिछली रोटी नही देती, जान-वरो को खिला देती है।

पिटारी मे वन्द कर रखने के लायक हैं

ऐसे अजीव है, या ऐसे मोटू है। मजाक मे ही कहते हैं।

पिया की कमाई मोहे नहिं लहना,
मो पै वाजूवद नहीं और सव गहना। (स्त्रि०)

अनुचित असतोप।

पिया जिसे चाहे, वही सुहागन

(१) सुहाग उसी का सार्थक है, जिसे पति चाहे।

(२) जिस पर मालिक की कृपादृष्टि होती है, वही वडप्पन पा जाता है।

पिसनहारी के पूत को चवेना ही लाभ

गरीव को जो मिल जाए, वही वहुत।

पी कारन पीरी भई, लोग कहे पिंड रोग।
छिप छिप लंघन मै किये, पी मिलन के जोग।

विरहिणी का कहना।

पिंड रोग=पाडु रोग, पीलिया।

पी के पातन सिर धरो, धरो चरन पर सीस।
बासा हो वैकुंठ में, फिर तो बिसवे बीस। (स्त्रि०)

स्पष्ट। स्त्री को उपदेश दिया गया है।

पातन=जूता। (फैलन ने यही अर्थ किया है।)

पीच पी, नेमत खाई

माड पिया, वढिया-वढिया माल-मसाले मैंने खाए। (किसी ऐसे व्यक्ति का कथन, जो किसी दूसरे के साथ रहते-रहते अथवा नौकरी करते-करते कष्टो से ऊब गया है। कहता है—वस, वहुत हो गई, रहने दो। मुझे अव तुम्हारा कुछ न चाहिए।)

नेमत=नियामत मिली हुई कोई उत्तम वस्तु।

पीछा पीछा ही है

वर्तमान से वढ़कर नही हो सकता।

पीठ पीछे कुछ भी हो

मेरे पीछे कुछ होता रहे।

पीठ पीछे डोम राजा

पीठ पीछे डोम भी अपने को राजा समझता हे।

पीठ पीछे वादशाह को भी बुरा कहते हें

स्पष्ट।

पीत करी थी नीच से, पल्ले लागी कीच ।
सीस काट आगे धरा, अन्त नीच का नीच ।
नीच से प्रेम करने पर बदनामी के सिवा और कुछ हाथ नही लगता।

पीत की रीत निराली है
स्पष्ट ।

पीत तो ऐसी कीजिये, जैसे रुई कपास ।
जीते-जी तो संग रहे, मुये पै होवे साथ ।
स्पष्ट।
(जीते-जी शरीर सूत के कपडो से ढका रहता है और मरने पर कफन मे लपेटा जाता हे, जो सूत का ही होता है।)

पीत तो ऐसी कीजिये, ज्यों हिंदू की जोय।
जीते-जी तो संग रहे, मरे पै सत्ती होय।
स्पष्ट।
किसी मुसलमान कवि का कहना है।

पीतम तू मत जानियो, भयो दूर कौ बास।
देह, गेह कितहू रहै, प्रान तिहारे पास।
किसी विरहिणी स्त्री का अपने प्रियतम के प्रति कहना कि यह मत समझो कि तुम मुझसे दूर हो। मेरा शरीर और घर कही भी रहे, पर मेरे प्राण तो तुम्हारे ही पास हैं।

पीतम तेरी पीत को, झुक-झुक करू सलाम।
जब से तो सग नेहा करो, सुनो न सुख को नाम।
कोई स्त्री, जिसे अपने पति के पास सुख नही मिला, ताना मार कर कहती है।

पीतम बसें पहाड़ पर (और) हम जमना के तीर ।
अब का मिलना कठिन है (कि) पाव पड़ी जंजीर ।
स्पष्ट।

पीने को पानी नहीं, छिड़कने को गुलाब
झूठी शान।

पीपल काटे, पाल बिनास, भगवा भस सताव।
काया गढी मे दया न व्यापे, जरा मूर से जावे।
जो पीपल का वृक्ष काटता है, घर नष्ट करता है। साधुओं को सताता हे, मन मे दया नही रखता, ऐसे मनुष्य का सर्वनाश होता है। लोक-विश्वास।

पीपल पूजन मै चली, निगम बोध के घाट।
पीपल पूजत पी मिले, एक पथ दो काज।
एक काम मे दो काम सिद्ध हो जाना।

पी प्याला, मार भाला
मतलब यह कि सोच-विचार कुछ न करो, बस मारने मे जुट जाओ, या बस जाओ, अपना काम सिद्ध करो।
प्याले से अभिप्राय शराब के प्याले से हे।

पीर आप ही दरमादह शफाअत किसकी करेंगे
पीर साहब खुद ही बीमार पडे है, फिर इलाज किसका करेंगे? जिसकी सहायता चाहते हे, वह स्वय ही विपत्ति मे पडा है।

पीर को न शहीद को, पहले नकटे देव को, (स्त्रि०)
जो वस्तु दूसरो के लिए तैयार की गई हो, उसे जब कोई बहुत अयोग्य व्यक्ति मागे, तब क० ।

पीर जी की सगाई मीर जी के यहा, (स्त्रि०)
जो जैसा है, उसका व्यवहार वैसे के साथ ही होना।

पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर
ब्राह्मणो पर व्यग्य ।
(एक बार अकबर ने बीरबल से कहा कि लाओ बीरन ऐसा नर, पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर । बीरबल ने एक ब्राह्मण ले जाकर खडा कर दिया और कहा कि ये पडित जी चारो काम कर सकते हे।)

पीर शव, बिआयोज (फा०)
बूढे होने पर भी ज्ञान प्राप्त करते रहो।

पीरा न परद, मुरीदा पराद, (फा०)
पीरो के पख नही होते, पख तो उनके चेले लगा दिया करते हैं। अर्थात सत-महात्माओं की कीर्ति उनके चेलो पर ही निर्भर करती हे। वे बाहर जाकर उनका गुणगान कर उल्लू सीधा करते हे।

पीसने वालिया पीस ले जायेंगी, कुछ हत्या थोड़े ही उखाड़ ले जायेंगी, (स्त्रि०)
एक स्त्री ने दूसरी स्त्री की चक्की मे कुछ पीसना चाहा। उसने इन्कार कर दिया। तब तीसरी ने उक्त वाक्य पहली स्त्री से कहा कि 'पीस क्यो नही लेने देती? इसमे तुम्हारा क्या नुकसान हे? वह

तुम्हारी चक्की का डडा तो उखाड नही ले जाएगी' यह वात तीसरी स्त्री की ओर से वहुत सहज मे भी कही जा सकती है और इसलिए भी कि वह केवल उसे उपदेश दे रही है और स्वय उससे चक्की मागी जाए, तो वह देना पसद नही करेगी। कहावत का सीधा अभिप्राय यह है कि अपनी कोई हानि किए विना यदि दूसरे का कोई काम वनता हो, तो उसके लिए इन्कार नही करना चाहिए।

पीस मुई, पका मुई, आये लौठे खा गये, (स्त्रि०)
किसी स्त्री का अपने निकम्मे लडके से कहना कि मुझ से आकर कहता हे—पीस मुई, पका मुई और आकर खा जाता है, काम-धधा कुछ नही करता।

पीस लूं तो पीटूं, (स्त्रि०)
मा अपने ऊधमी लडके से कहती है, मत समझो कि तुम वच जाओगे।

पुन्न की जड़ सदा हरी
पुण्यात्मा हमेशा फलता-फूलता है।

पुरख की माया, विरछ की छाया, (स्त्रि०)
जव तक मनुष्य रहता है, तभी तक उसका नाम-धाम रहता ह।

पुरख-सा पखेरू कोई नहीं
मनुष्य जैसा (विलक्षण) जीव कोई नही।

पुरख साठा सो पाठा, स्त्री वीसी सो खीसी
मनुष्य साठ वर्ष की उम्र तक भी जवान रहता है, पर स्त्री का यौवन वीस के वाद ढलने लगता है।

पुराना ठीकरा आर कलई की भड़क
वूढी औरत और जवानी का-सा वनाव-ठनाव।

पुरवा वहल, सूखल घाव फफदल, (भोज०)
पुरवाई चलने से सूखा घाव हरा हो जाता है। (लो० वि०)
(पूरव की हवा स्वास्थ्य के लिए अच्छी नही मानी जाती।)

पुराने गुम्वद पर कलई करना
किसी पुरानी वस्तु को नई वनाने की वृथा चेष्टा।

पुराने चावलो मे मजा होता है
वूढे-पुराने लोगो की वात वडे काम की होती है।

पुराने ठीकरे पर नई कलई
दे०—पुराने गुम्वद पर...।

पुरानों को झिड़की, नयों को प्यार
ऐसा करना ठीक नही। वूढो का सम्मान करना चाहिए।

पुल वांधल जाए, वहू कजरी खेले, (पू०, स्त्रि०)
पुल वध रहा है। (सास वहां काम करने गई है।) और वहू कजरी खेल रही हे। ऐसी वहू के लिए कहा गया हे, जिसे घर के काम-धधे की फिक्र नही। (कजरी श्रावण के महीने का एक त्योहार होता है।)

पूछते-पूछते तो दिल्ली चले जाते है
स्वयं अपनी सहज वुद्धि से काम लेकर वहुत-कुछ किया जा सकता है।

पूजले देवता, छोड़ले भूत, (पू०)
पूजो तो देवता, नही तो भूत।

पूत करे, भतार के आगे आवे
लडके के दुष्कर्मों का प्रायश्चित्त वाप को करना पड़ता हे।

पूत की जात को सौ जोखों
लडके को पचास व्याधिया लगी रहती है।
(मतलव यह है कि लडकी की अपेक्षा लडके को रोग-दोख अधिक सताते हैं।)

पूत कुपूत हो जाय तो हो, पर मा कुमाता नहीं होती, (स्त्रि०)
स्पष्ट।

पूत के पाव पालने में पहचाने जाते हैं
वचपन मे ही पता लग जाता हे कि लडका कैसा वनेगा। जव किसी वात के आसार पहले से दीखने लगे।

पूत न भतार, पीछो हो टाय टाय, (स्त्रि०)
उसका न तो लड़का ही लगता है और न पति, फिर भी उसके जाने पर (अथवा उसके मरने पर) वह व्यर्थ ही चीख चिल्ला रही है। जव कोई किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति, जिससे उसका किसी प्रकार का कोई सम्वन्ध नही हे, झूठी सहानुभूति प्रकट करता है।

पूत फकीरनी का, चाल अहदिया की-सी
झूठी शान दिखाना।

अकवर के जमाने मे अहदी उन सरदारो को कहते थे, जिन्हे राज्य की ओर से वजीफा मिलता था और कोई विपत्ति पडने पर वुलाए जाते थे। ये लोग अपने को वडा मातवर समझा करते थे।

पूत भये सयाने, दुख भये विराने, (स्त्रि०)

लड़के जव कमाने योग्य हो जाते है, तो दुख दूर हो जाते है।

पूत मागे गई, भतार लेती आई (स्त्रि०)

उन स्त्रियो पर व्यग्य, जो लडका मागने के लिए प्राय फकीरो के पास जाया करती है।

भतार=खसम, पति।

पूत मीठ, भतार मीठ, किरिया केह कर खाऊं, (पू०, स्त्रि०)

लडका भी प्यारा, पति भी प्यारा, सौगध खाऊ, तो किसकी खाऊ। दो मे से कोई भी एक काम न कर पाना, अथवा दो मे से कोई एक चीज न छोड पाना। असमजस मे पडना।

पूत सपूत तो क्यो संचे, पूत कपूत तो क्यो संचे? (हिं०)

लडका होशियार होगा, तो धन संचय करने की क्या जरूरत है, वह आप ही पैदा कर लेगा और निकम्मा होगा, तो सव उडा देगा, इसलिए धन-सचय वेकार है।

पूतो रात दुलभनी, (स्त्रि०)

लडका मुश्किल से मिलता है।

दुलभनी=दुर्लभ।

पूरव जाओ या पच्छम, वही करम के लच्छन

(१) कहीर हो, भाग्य पीछा नही छोडता। अथवा (२) अकर्मण्य व्यक्ति कही कुछ नही कर सकता, चाहे जहा जाए।

पूरा तोल चाहे महंगा वेच, (व्य०)

वजन मे या नाप मे कम नही देना चाहिए, दाम चाहे ज्यादा ले ले।

पूरी पड़े तो सपूत कहावे

जो घर का अभाव दूर कर सके, वही सपूत कहलाता है।

पूरा पडना=(मु०) सामग्री न घटना, सपन्न होना।

पूरी लपसी घर मे खाय, झूठी देवी से आस लगाय

लोग पूडी-लपसी स्वय खाते हैं, और देवी से अपनी मनोकामनाओ के पूरा होने की झूठी आशा रखते है।

पूरी से पूरी पडे तो सभी न पूरी खावें

कोई आदमी हमेशा पूरी खाकर नही रह सकता। हमेशा मौज-मजा नही किया जा सकता।

पूरे गुरु घटाल है

वडे घुटे हुए हैं, वहुत चालाक है।

पूले तले गुज़रान करते है

किसी वहुत गरीव का कहना कि किसी प्रकार झोपडी मे गुजर-वसर कर रहे है।

पूले तले=फूस की छाया के नीचे।

पूले पूले आच है

घास के हर पूले मे आग मौजूद है, अथवा हर पूले मे आग लग सकती है। कष्ट सभी को होता है।

पूला=घास की वधी हुई छोटी मुट्ठी।

पूस कोने घूत

पूस मे आदमी सर्दी से वचने के लिए कोने मे जाकर वैठता है।

पेट कुई, मुंह सुई

पेट वडा, मुह छोटा। वहुत खानेवाले के लिए क०।

पेट के आगे 'ना' है

जव पेट भरा होता है, तभी 'ना' कहते है।

पेट के वास्ते परदेस जाते हैं

पेट के लिए घर छोडकर वाहर जाना पडता है।

पेट चले, मन वरुतो को

दस्त लग रहे हैं और दाल खाने का मन हो रहा है। तव कहते है जव कोई विपद्ग्रस्त आदमी ऐसा काम करने की इच्छा करे, जिससे उसकी विपत्ति और वढ जाए। (फैलन ने वरुतो का अर्थ दाल किया है।)

पेट जो चाहे, सो करावे

पेट के लिए न जाने क्या-क्या करना पडता है।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है

स्वार्थी मनुष्य के लिए कहा०, जो दूसरो को खिलाना नही जानता।

पेट पिटारी, मुंह सुपारी

(१) जिस लडके का पेट वडा हो, उसके लिए।

(२) वहुत खानेवाले के लिए भी कहा०।

पेट विच्च पड़ी रोटिया, ता सभी गल्लां भोटियां, (पं०)

पेट भरा होने पर सभी को वडी-वडी वाते सूझती है।

पेट वुरी वला है

पेट के लिए सव कुछ करना पडता है।

पेट भर और पीठ लाव

खाओ और मेहनत करो।

पेट भरा हो तभी मेहनत हो सकती है।

पेट भरे की वातें

जव कोई आदमी काम के प्रति उपेक्षा दिखाए और किसी काम को करने के लिए उचित से अधिक मजदूरी मागे। तात्पर्य यह हे कि आदमी का जव पेट भरा होता है, तो वह काम नही करना चाहता, और सौ तरह की वाते वनाता है।

पेट भरे के खोटे चाले

(१) पेट भरा होने पर वदमाशी सूझती है।

(२) वडे आदमियो का पैसा प्राय वुरे कामो मे खर्च होता है।

पेट भरे के गुन

(१) किसी आदमी को जव किसी तरह खुश ही न किया जा सके, तव कहा०।

(२) प्राय उस समय लडको से कहते है, जव खाना खा लेने के वाद वे काम मे हीला-हवाला करते है।

पेट भरे रिजाले और भूखे भलेमानस से डरिये

नीच का पेट भरा हो तो उससे, और शरीफ भूखा हो, तो उससे डरना चाहिए। क्योकि नीच आदमी धनवान वन कर दुष्टता कर सकता है और इसी तरह भला आदमी गरीव वन जाने पर कष्टप्रद सिद्ध हो सकता है।

पेट भी खाली, गोद भी खाली, (स्त्रि०)

(१) न खाने को है, न वाल-वच्चा ही है।

(२) न वच्चा पेट मे है, न गोद मे है।

पेट में आत, न मुंह मे दात

वूढे आदमी का कहना कि पेट तो भरना ही पडता है और खा नही पाते।

पेट मे घुसे तो भेद मिले

किसी के मन की वात जानना वहुत मुश्किल है, अथवा किसी के मन की वात उसके घनिष्ठ सपर्क मे आने से ही जानी जा सकती हे।

पेट में चूहे कलावाजिया खा रहे है

वहुत भूख लगी है।

पेट भेंट, कार समेट

किसी ऐसे व्यक्ति का कहना, जिसे वेतन तो थोडा ही मिलता है, पर काम वहुत करना पड रहा है। कह रहा है कि यह खूव रहे, जो मुझसे चाहते हैं कि अपना पेट अलग कर दू और काम करता रहू।

पेट में पड़ा चारा, कूदने लगा विचारा, (स्त्रि०)

खाने को मिल जाने पर आदमी को उछल-कूद सूझती हे।

पेट मे पड़ी वूंद, नाम रखा महमूद, (स्त्रि०)

गर्भ रहते ही निश्चय कर लिया कि लडका होगा। काम होने के पहले ही उसका गुताडा लगाना।

पेट मे पाव है

खाना मिलने पर ही आदमी काम कर सकता है।

पेट सव रखते है

खाने के लिए सबको चाहिए।

पेट से पाव काढ़े हैं

ऐसा व्यक्ति, जो देखने मे सीधासादा पर वास्तव मे धृष्ट हो।

पेटहा चाकर, घसहा घोड़; खाय वहुत काम करे थोड़, (पू०)

वडे पेट का नौकर और मोटा घोडा, खाता तो वहुत, पर काम कम करता है।

पेट है या कुठार ?

वहुत खानेवाले के लिए क०।

कुठार=अनाज रखने का मिट्टी का वडा वर्तन।

पेट है या बेईमान की क़व्र

वडे पेटवाले के लिए क०।

पेटू मरे पेट को, नामी मरे नाम को

पेटू केवल खाने की चिन्ता करता है और महत्वाकाक्षी यश की।

पेड़ चढ़े यों ही दिखाई देता है
यदि तुम मेरी जगह होते तो तुम भी वैसा ही करते, जैसा मैं करता हू।

पेड़ बोये बबूल के तो आम कहां से खाय ?
बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।

पेश-ए-तबीब मराओ, पेश-ए-कार आज़मूदा बिराओ, (फा०)
वैद्य के पास मत जाओ, अनुभवी के पास जाओ। ज्ञान से अनुभव वडा होता है।

पेशा हबीबुल्लाह, जो न करे सो लानतुल्लाह, (मु०)
ईश्वर काम करनेवालो से प्रसन्न और न करनेवालो से अप्रसन्न रहता है।

पैदल और सवार का क्या साथ
स्पष्ट।

पैदा हुआ नापैद के वास्ते
जन्म होता है मरने के लिए।

पैसा कभी नहीं टिकता
भाग्य एक-सा नही रहता।
लक्ष्मी स्थिर नही रहती।

पैसा गांठ का, जोरू साथ की
वक्त पर यही काम आते है।

पैसा न कौड़ी, बाजार मे दौड़ी
व्यर्थ की उछल-कूद। साधन हैं नही, फिर भी काम करने की हविस।

पैसा न कौड़ी, बांकीपुर की सैर, (स्त्रि०)
छैल-चिकनियो के लिए क०।
पैसा है नही, फिर भी शौक करना चाहते है।

पैसा नहीं पास, तो कैसे सूंघें बास
जब पैसा ही नही, तो इत्र कहा से लगाए ?

पैसा नहीं हाथ, चले नवाब के साथ
बडो की नक़ल करना।

पैसा पास का, घोड़ी रान की
व त पडे पर काम आते है।
(रान की घोडी से मतलब है ऐसी घोडी, जिस पर बराबर सवारी की जाती हो।)
रान=जाघ।

पैसे पै घर के बोटियां उड़ाऊं, तौ भी दर्द न आवे, (स्त्रि०)
मा-बाप का ऊधमी लडके से क०।
पैसा=चक्की का पाट, सिल।

पोथी तो थोथी भई, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।
स्पष्ट।

पोस्ती की आंच ऊपर को नहीं जाने की
अफीम का धुआ ऊपर नही जाता। कमरे मे ही भरा रहता है।
(मतलब यह कि दुखिया की आह व्यर्थ नही जाती।)

पौ-बारह हो गए
काम बन गया, जीत हो गई।
(चौपड के खेल मे पौ-बारह अर्थात एक और बारह का पासा बहुत अच्छा माना जाता है।)

प्यासा कुएं के पास जाता है, कुआं प्यासे के पास नहीं आता
जिसकी गरज़ होती है, वही जाता है।

प्रातःकाल करो असनाना, रोग-दोष तुमको नहिं आना
स्पष्ट।

प्रीत करें से बावरे, करके तोड़ें छैल।
गल में रस्सा डाल के, और निबाहवें बैल।
जो प्रेम करे, वह पागल है, कर के तोडे, वह गभीर पुरुष नही, गले मे जब रस्सी पड जाती है, तो बैल भी अत तक अपने कर्तव्य का पालन करता है।

प्रीत जो कीजे ईख से, जामें रस की खान।
गांठ-गांठ मे रस नहीं, यही प्रीत की हान।
प्रेम तो ईख से करना चाहिए, जिसमे रस ही रस भरा होता है। बस कमी इतनी है कि उसकी गाठो मे रस नही होता।

प्रीत डगर जब पग रखा, होनी होय सो होय।
नेह नगर की रीत है, तन-मन दोनों खोय।
स्पष्ट।

प्रीत न जाने जात कुजात।
नींद न जाने टूटी खाट।
भूख न जाने बासी भात।
प्यास न जाने धोबी घाट।

प्रीत जात-कुजात नही देखती, नीद टूटी खाट नही देखती, भूख वासी भात नही देखती और प्यास भी अच्छा-बुरा पानी नही देखती।
(स०—क्षुधातुराणा न वल न वुद्धि
तृष्णातुराणा न च पात्र शुद्धि।
कामातुराणा न भय न लज्जा,
निद्रातुराणा न च भूमिशय्या।)

प्रीत न टूटे अनमिले,
उत्तम मन की लाग।
सौ जुग पानी मे रहे,
चकमक तजे न आग।
सच्ची प्रीति कभी छूटती नही।

प्रीतम, हर से नेह कर, जैसे खेत किसान।
घाटा दे उर डंड भरे, फेर खेत से ध्यान।
ईश्वर से उसी तरह प्रेम करना चाहिए, जैसे किसान अपने खेत से करता हे। हानि उठाता है, लगान भी देता हे, फिर भी अपने खेत को नही छोडता।

प्रीतम प्रीतम सब कहें,
प्रीतम जाने नहिं कोय।
एक बार जो प्रीतम मिलें,
सदा अनंदी होय।
स्पष्ट।

प्रेम कहानी कहत हूं, सुनो सखी री आय।
पी ढूंढ़न को मैं गई, आई आप हिराय।
ऐ सखी! मेरी प्रेम कहानी सुन। मै प्रियतम को ढूढने गई थी, किन्तु अपने-आपको खोकर आ गई।

प्रेम पियाला वह पिये, जो सीस दच्छना देइ।
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेम का लेइ।
प्रेम तो वही कर सकता है, जो सिर काट कर दे सके। वह क्या प्रेम करेगा, जिसे अपने प्राणो का मोह हो।

प्रेम पीत की रीत मे, यह अनरीत सुहाय।
बरसें आंखें, सूखे हिया, आग लगे जिय माह।
प्रेम की रीति मे सब से वडी उल्टी वात यह है कि आखे तो वरसती है (आसू निकलते है), हृदय सूखता है और छाती (विरह से) जलती है।

फ़कत तावीज से ही काम नहीं निकलता, कुछ कमर में भी वूता चाहिए
कोई आदमी फकीर से लडका मागने गया। उसने मत्र पढ कर तावीज दिया, साथ ही उक्त वात कही।
(केवल दैव के भरोसे रहने से काम नही चलता, कुछ अपना पुरुषार्थ भी करना चाहिए।)

फकीर अपनी कमली मे ही खुश है
जो है, उसी मे सतोष करता है।

फकीर, कर्जदार, लड़का, तीनों नहीं समझते
तीनो ही हठी होते है।

फकीर की ज़बान किसने कोली है
फकीर के मुह को कोई वद नही कर सकता। कीलना=मेख जडना, कील ठोक कर वद करना, मत्र पढकर किसी चीज के प्रभाव को नष्ट करना।

फकीर की झोली में सब कुछ
फकीर सव कुछ दे सकता है।

फकीर की सूरत ही सवाल है
फकीर को मागने की जरूरत नही पडती। देखने से ही मालूम हो जाता है कि वह कुछ चाहता है।

फकीर को कंबल ही दुशाला
थोडे मे ही सतोष करता है।

फकीर को जहां रात हो गई, वहीं सराय है
उसके रहने का कोई ठिकाना नही होता।

फकीर को तीन चीज चाहिए फका, कनात और रियाज
स्पष्ट।
(फारसी मे फकीर शब्द तीन अक्षरो से लिखा जाता है—फे, काफ और रे जो कि क्रम से फाका (व्रत), कनात (सतोष) और रियाज (अभ्यास) इन तीन शब्दो के प्रथमाक्षर है।)

फकीर रा व मुजादला चे कार? (फा०)
फकीर को लडने से क्या मतलव?

फकीरी शेर का वुरका है
फकीरो मे वडी शक्ति होती है।
वुरका=(अ० वुर्क) एक प्रकार का आच्छादन या

पहिनावा जिससे मुसलमान स्त्रिया सिर से पैर तक अपने को ढके रहती है। आवरण।

फजर फजर की 'नाह' कुछ नहीं

सुवह-सुवह कोई ग्राहक जब सौदा लेने से इन्कार कर देता है, तव दूकानदार कहा करता है।

(दूकान खुलते ही कोई ग्राहक सौदा लेने आए और यो ही वापिस चला जाए, तो दूकानदार इसे अपशकुन मानते हे।)

फजर फजर 'न हां' मत करो

दे० ऊ०।

फज़ल करे तां छुट्टियां, अदल करे तां लुट्टियां, (पं०)

दया करने से तो मै छूट सकता हू, पर न्याय से तो मेरा सर्वनाश हो जाएगा।

(अपराधी दोप को स्वीकार करता हुआ क्षमा याचना के रूप मे कहता है।)

फटाहा तिलक और मधुरी बानी,
दग़ाबाज़ की यही निशानी

पाखडियो के लिए क०।

तिलक साधु लोग ही लगाया करते है।

फटाहा=चौडा।

फटे को न सिये और रूठे को न मनाए, तो क्यों कर गुज़ारा होय ? (स्त्रि०)

दे०—रूठे को मनाइए नही ।

फटे न फूटे, जिउ जान न छूटे

किसी चीज से जी ऊव जाए, तव क०।

फटे मे पाव, दफ़्तर मे नाव

झगडे मे पडने ही से अदालत मे नाम लिखा जाता है। (गवाही के वास्ते।)

फतह और शिकस्त खुदा के हाथ है

हार-जीत ईश्वर के अधीन है।

फतह तो खुदा के हाथ है, पर भार भार तो किये जाओ

होगा वही, जो ईश्वर को करना है, पर अपना उद्योग तो किए जाओ।

फतह दाद इलाही है

जीत तो ईश्वर की देन है।

फरज़ंद वह जो पंद माने, और बाप का कहना फ़र्ज़ जाने

लडका तो वही, जो उपदेश माने और बाप के कहने पर चले।

फरज़ंद वही, जो खलफ हो

आज्ञाकारी लडका ही लडका है।

फर न फरी, बगीचा के नांव, (पू०)

फल न फली नाम वगीचा।

कोरा दिखावा।

फरिया ना सारी, बड़ी सोभा हमारी, (पू०, स्त्रि०)

झूठी शेखी वघारनेवाला।

फरिश्तों के भी पर जलते है

ऐसी जगह जहा (काम करने या पहुचने मे) बडे-वडे भी घवराते है।

फरिश्तों को भी खबर नहीं

वहुत ही गुप्त वात।

फ़रीद शकरगंज

मरतुल्ले टट्टू पर जव कोई वूढा आदमी वैठा जा रहा हो, तो लडके उसे चिढाने के लिए कहा करते हैं। (फरीद शकरगज के लिए दे० नीचे।)

फरीद शकरगंज, न रहे दुख न रहे रंज

फरीद शकरगज करे कि तुम्हे कोई दुख और शोक न हो।

फरीद शकरगज मुसलमानो के कोई औलिया हो गए है।

फ़र्ज़ से अदा हो गये

अपना कर्तव्य-पालन कर चुके।

(लडके-लडकियो का विवाह कर चुकने के वाद प्राय मा-वाप कहा करते है।)

फल खाना आसान नहीं

फल मुश्किल से खाने को मिलते हैं। पहले पेड लगाना पडता हे, वह वढता है, तव उसमे फल आते हैं।

विना परिश्रम के कोई काम नही होता।

फलसा टूटा, गांव लूटा

फाटक टूटने पर गाव आसानी से लूटा जा सकता है।

फलाने की मां ने खसम किया, 'बहुत बुरा किया'; 'कर के छोड दिया' और भी बुरा किया

(१) अव्वल तो कोई काम करना नही चाहिए, और यदि करे, तो उसका परिणाम देखे विना अधूरा छोडना नही चाहिए। जो कर लिया सो कर लिया।

(२) एक भूल सुधारने के लिए दूसरी भूल कर वैठना।

फलाने की=अमुक की।

फाकाकशी की नौबत पहुंची

माली हालत वहुत खराव हो गई।

फाकामस्ती

जो मिले वही खाकर मस्त रहना।

फाटक टूटा, गढ़ लूटा

फाटक टूटने से किला फतह हो सकता है। मोरचा मारा और काम वना।

फाटे से जुड़ते नहीं, कोटन करो उपाय। मन, मोती और दूध रस, इनका यही सुभाव।

एक वार फटने पर फिर नही जुडते, चाहे जितना उपाय करो, मन, मोती और दूध का यही स्वभाव है।

फटना=दरार पडना।

मन फटना=विरक्ति हो जाना, सवध रखने को जी न चाहना।

दूध फटना=उसका इस तरह विगड जाना जिससे पानी और सार-भाग अलग-अलग हो जाए।

फातिहा न दरूद, खा गये मरदूद!

निकम्मे कही के, विना फातिहा पढे ही खा गए? फालतू आदमी के लिए क०।

फातिहा=प्रार्थना। भोजन के पहले मुसलमानो मे ईश्वर की प्रार्थना करने का नियम हे।

फातिहा न दरूद, खाने को मौजूद

स्पष्ट। दे० ऊ०।

फारखती लिखवाना

कर्ज से छुटकारा पाने के लिए कागज लिखवाने को फारखती लिखवाना कहते है।

'जो हमने दिया था, सो सव मिल गया, अव हमारी जान छोडो'—ऐसा भाव प्रकट करने के लिए कहावत।

(इस पर एक कहानी है—किसी कर्ज़दार ने अपने महाजन को कर्ज़ा चुकाने के लिए अपने घर वुलाया जव वह कागज़-पत्र लेकर अपना हिसाव चुकाने आया, तव कर्ज़दार ने अपने दरवाज़े पर वाजा वजाने का हुक्म दिया। वाजा जव ज़ोर से वजने लगा, तव कर्जदार ने महाजन को पीटना शुरू कर दिया और तव छोडा जव उससे फारखती लिखवा ली। वाजो के कारण महाजन का चिल्लाना कोई नही सुन सका।)

फारसी रा टंग तोड़य, ताकि ऊ लंगड़ी शवद

फारसी की टाग तोड दूगा, जिससे कि वह लगडी हो जाए।

(कम पढे-लिखे फारसीदा के लिए व्यग्य मे क०।)

फाल की कौड़ियां मुल्ला को हलाल

हक का पैसा सव को पचता है।

(पासा या कौडिया फेककर शुभ-अशुभ वताने की क्रिया को फाल कहते है।)

फाल ज़बान या फ़ाल कुरान

शुभ-अशुभ या तो (फकीर की) ज़वान से या कुरान से जाना जा सकता है, कोई और उपाय नही।

फालूदा खाते दांत टूटें तो बला से

फालूदा खाने से दात तभी टूटेगा, जव वह पहले से ही विल्कुल सड गया हो।

(ऐसी विपत्ति के लिए खेद करना वृथा है, जिससे वचना मुश्किल रहा हो।

फालूदा=गेहू के सत की वनी एक प्रकार की वस्तु।

फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार, (क्रु०)

झूठी शेखी वघारना।

फावड़े का नाम गुलसफा

जव किसी आदमी के पीछे वहुत दिनो तक घूमना और खुशामद करना व्यर्थ सिद्ध हो और कोई लाभ की आशा न हो, तव क०।

(कथा है कि कोई आदमी एक फकीर की प्रशसा सुनकर उसका चेला वन गया। किन्तु वारह वर्ष

तक उसके साथ रहने पर भी उसे कोई वात सीखने को नही मिली। इस बीच उसने एक दिन फावडे के लिए दूसरा शब्द पूछा। इस पर गुरु ने ऊपर लिखा जवाव दिया। वास्तव मे गुलसफ्फा का कुछ भी अर्थ नही होता।)

फिक्र और जिक्र दोनों चाहिए

फकीरो को ध्यान और आराधना दोनो ही करनी चाहिए।

फिक्र करे क्या होता है, होना था सो हो गया

वीती बात की चिन्ता नही करनी चाहिए।

फिक्र बुरा फाका भला, फिकर फकीरा खाये

चिन्ता बुरी चीज है, फकीरो को भी बीमार बना देती है, इससे फाका अच्छा।

फिट वाका जीना, जो तके पराई आस

स्पष्ट।

फिरनी फालूदा एक भाव नहीं होता

अच्छी-बुरी सब चीज एक भाव नही मिलती।

(फिरनी चावल और दूध से बनती है और फालूदा गेहू तथा दूध से, जो फिरनी से श्रेष्ठ मानी जाती है।)

फिर वे घोड़े यहीं से

किसी को डाट वताकर मगाना।

फिर भी मोची के मोची रहे

जैसे थे वैसे ही रहे, कोई उन्नति नही कर सके।

फिर मुड़ली बेल तले, (पू०)

फिर जोखिम मे पडे।

(वेल तले सिर मुडवाने से सिर फूटने का डर है, क्योकि वेल का फल वहुत सख्त होता है।)

फूंक-फूंक के कदम रखते है

होशियारी से चलते हैं।

फूक मशाल, उठा चौपाला

मशाल जलाओ और उठाओ पालकी। अर्थात जल्दी करो।

फूके के न फाके के, टाग उठा के तापे के, (पू०, स्त्री०)

आग को न फूकना न फाकना, केवल पैर उटाकर तापना।

(स्वार्थी और आलसी आदमी को क०।)

फूई-फूई कर के तालाब भरता है

थोडा-थोडा इकट्ठा होने से ही वहुत हो जाता है।

फूई-फूई=बद-बूद।

फूटी आंख का तारा

विधवा का इकलौता लडका।

फूटी देगची, कलई की भड़क

दिखावटी चीज।

फूटी सही, आंजी न सही

आंख जाती रही, वह मंजूर हुआ, मगर अजन की जलन सहना मजूर नही हुआ।

(ऐसे कजूस के लिए क०, जो अपनी किसी कीमती चीज की रक्षा के लिए थोडा भी खर्च न करना चाहे।)

फूफी मिस लेना, भतीजे मिस देना

एक रिश्ते से लेना, दूसरे से देना। व्यवहार चुका देना।

फूल आये है तो फल भी लगेंगे, (स्त्रि०)

यहा फूल से मतलव स्त्रियो के ऋतुधर्म से है और फल से मतलव वच्चो से। अभिप्राय यह कि जब स्त्री ऋतुमती होने लगी है, तो उसके वच्चा भी होगा।

फूल की डाल नीचे को झुके

भला आदमी सदैव विनम्र होता है।

फूल की वैरन धूप, घी का वैरी कूप

फूल धूप मे सूख जाता है और घी कुप्पे मे रखा-रखा खराव हो जाता है।

फूल झड़े तो फल लगे

(१) फूल गिरता है, तो फल लगता है।

(२) स्त्री ऋतुमती होगी, तो वाल-वच्चा भी होगा।

फूल टहनी मे ही अच्छा लगता है

हर चीज अपने स्थान पर ही शोभा देती है।

फूल-फूल कर के चंगेर भरती है

थोडा-थोडा कर के वहुत हो जाता है।

फूल नहीं, पखुड़ी ही सही

(१) वहुत नही, तो थोडा ही सही।

(२) जो मिला, वही वहुत।

फूल सूंघ कर रहते हो

वहुत थोडा खानेवाले से क०।

फूला वदन मे नहीं समाता

वहुत प्रसन्न है।

फूलो-फूली गोने को, ठसक निकल गई रोने को, (स्त्रि०)

विवाह के वाद स्त्रियो को ससुराल आने की वडी प्रसन्नता होती है, पर वाद मे वहा जब कष्ट होते है, तो अपनी सब शान भूल जाती है।

फूले-फूले फिरत हैं, आज हमारो व्याव।
तुलसी गाय वजाय के, देत काठ में पाव।

गृहस्थ-जीवन मे फसना जानवझकर एक मुसीवत मोल लेना है।

फूहड़ करे सिंगार, मांग ईंटों से फोड़े, (स्त्रि०)

फूहड का सिंगार भी अजीव होता है। वह सेंदुर की जगह ईट घिसकर माग भरती है। ईंट घिसने से खून निकल आता है।

फूहड़ का माल सराह-सराह खाइये

मूर्ख का माल खुशामद से खाया जाता है। उसकी प्रशसा करते जाओ और उससे चाहे जो चीज झटक लो।

फूहड़ का माल हँस हँस खाइए

स्पष्ट।

दे० ऊ०।

फूहड़ के घर उगी चमेली, गोवर मांड़ उसी पर गेरी, (स्त्रि०)

मूर्ख अच्छी चीज की कद्र करना नही जानता।

फूहड़ के घर खिड़की लगी, सव कुत्तों को चिंता पड़ी, बंडा कुत्ता बांचे सौन, लगी तो है पर देगा कौन।

फूहड के घर मे खिडकी लगी देखकर सव कुत्तो को चिंता हुई कि अब हम भीतर कैसे जा सकेगे? इस पर एक दुमकटा कुत्ता वोला कि खिडकी लगी तो है, पर उसे वद कौन करेगा? अर्थात हम लोग आसानी से भीतर जा सकेंगे। मूर्ख अपनी सुविधाओ से पूरा लाभ नही उठाता।

सौन वाचना=शकुन वाचना, सोच-विचार कर बात कहना।

फूहड़ चाले, नो घर हाले, (स्त्रि०)

फूहड वाहर जाती है, तो नौ घर हिल जाते है। अर्थात वहुत गवारू ढग से चलती है। अथवा, वह जहा जाएगी वहा कुछ-न-कुछ झगडा-फसाद खडा करेगी।

फूहड़ जोरुआ, साग मे शोरुआ, (मु०, स्त्रि०)

फूहड के सव काम वेतुके होते हैं, वह हरी साग-भाजी का शोरुवा वनाती है।

(सागभाजी सूखी ही वनती है, रसेदार नही।)

फूहड़ सीने वैठे, तव सुई तोड़े, (स्त्रि०)

वेशऊर हमेशा भोडे ढग से काम करता है, सीने वैठता है, तो सुई तोड देता है।

फेरो की गुनहगार है, (हिं०)

उसका अपराध यही है कि वह उसकी भावर पड गई। हिन्दू घर की वाल-विधवा के लिए क०। वेचारी अपना दूसरा विवाह नही कर सकती।

फोज की अगाड़ी, आंधी की पिछाड़ी

इनको संभालना मुश्किल होता है।

फौज वे वकील, साहब वे फील

विना दूत की फौज और विना हाथी का सरदार, ये जचते नही।

बंगाला जादू का घर है

प्राचीन काल मे वगाल और कामरूप जादू-टोने के लिए प्रसिद्ध रहे है, इसी से कहावत वनी।

बंगाली जो आदमी, तो प्रेत कहो किसको?

स्पष्ट।

बंगाले को वगालिन जादू भरी

दे०—वगाला जादू ।

बंद के जाये वद मे नहीं रहते, (स्त्रि०)

जो परावीनता मे पैदा हुआ हो, वह हमेशा परावीन नही रहता। किसी के सदा दिन एक से नही रहते।

बदगी ऐसी और इनाम ऐसा

इतनी सेवा की और वदले मे यह मामूली इनाम!

वंदगी वेचारगी
नौकरी विवश होकर करनी पडती है।

वदर एक निसाचरी लाया कर अपनी अर्द्धगी।
लालदास रघुनाथ दया से उत्पन्न हुए फिरंगी।
अंग्रेजो के लिए क०।
किंवदती हे कि भगवान राम ने हनुमानजी की सेवाओ के लिए उन्हे यह वरदान दिया था कि उनके वशज कलियुग मे भारत मे राज्य करेगे। उसी के आधार पर किसी ने उक्त तुकवदी गढी।)

वंदर का ज़ख़म (या घाव)
जो जल्दी नही भरता।
जो मनुष्य अपने घाव या फोडे को हमेशा खुजाया या नोचा करता है और उसे जल्दी सूखने नही देता, उसके लिए क०।

वंदर का हाल मुछंदर जाने
मुछदर वदरो के सरदार को कहते हैं। उनका हाल वही जान सकता है।
किसी का हाल उसका साथी ही अच्छी तरह जानता है।

वंदर की आशनाई क्या?
किसी मामूली आदमी या धूर्त से क्या मित्रता करना?

वंदर की आशनाई घर मे आग लगाई
धूर्त से मित्रता करने मे हानि उठानी पडती हे।

वंदर की टोपी
ऐसा आदमी जो क्षण भर के लिए भी शान्त न वैठे।

वदर की तुरत, फुरत, सुरत मशहूर है
वदर वडा चंचल, फुर्तीला और समझदार होता है।

वंदर की दोस्ती, जी का जिआन
मूर्ख या नटखट से मित्रता करना अपने लिए एक आफत मोल लेना हे।
(यह कहावत प्राय वच्चो के लिए ही प्रयुक्त होती है।)

वंदर की सेना
शैतान लडको का झुड।

वंदर के गले मे मोतियों की माला
अयोग्य या मूर्ख को ऐसी चीज, जो उसकी कद्र न जाने।

वदर के हाथ आइना
व्यर्थ है, अव्वल तो वह कुरूप होता है, अपना चेहरा क्या देखेगा? फिर वह उसे फोड डालेगा।

वंदर के हाथ नारियल
वह क्या समझे कि यह क्या वस्तु है। उसे वह फेक देगा।

वंदर क्या जाने आदी का सवाद, (पू०)
मूर्ख किसी अच्छी वस्तु की कद्र नही कर सकता।
आदी=अदरक।

वंदर नाचे, ऊंट जल मरे
वदर को नाचते देखकर ऊट ईर्ष्या से जलता है क्योकि वह स्वय नही नाच सकता।
(दूसरो की प्रसन्नता को न देख सकना।)

वंदर भवकी (या घुड़की)
कोरा डर दिखाना।

वंदा आजिज़ है, (मु०)
(१) मनुष्य एक दुर्वल प्राणी हे। अथवा
(२) मैं दुखी हू।
आजिज=(१) दीन, विनम्र। (२) तग, परेशान।

वंदा जोड़े पली पली, रहमान उड़ाये कुप्पे
जव किसी का वहुत परिश्रम और कजूसी से इकट्ठा किया गया धन एकदम नष्ट हो जाए, तव क०।

वदा वशर है
आदमी आखिर आदमी ही तो है।
जव किसी मे भूल होती है, तव क०।

वंदी जव शादी करती है, तव ऐसी ही करती है, (स्त्रि०)
किसी के शादी-व्याह के असतोपजनक प्रवव पर चुटकी।

वदे का चाहा कुछ नहीं होता, अल्लाह का चाहा सव कुछ होता है
ईश्वर की इच्छा ही सव कुछ ह।

वधी मुट्ठी लाख वरावर
(१) मुट्ठी वाव कर किसी को जो दान या इनाम दिया जाता हे, उनके विपय मे इसका अदाज लगाना कि कितना क्या दिया गया, कठिन है।

लेनेवाला उसे चाहे जितना बढा कर बता सकता है कि मुझे इतना इनाम मिला।

(२) साधारण आदमी की आर्थिक स्थिति का जब तक लोगो को असली पता नही चलता, तब तक लोग धनवान ही समझते रहते हे। पर एक बार भेद खुल जाने पर वह बात नही रहती।

बंधी रहे, न टके बिकाय

(१) चीज रखी भले ही रहे, पर सस्ती नही देंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०। अथवा

(२) चीज अगर बहुत दिनो रखी रहे, तो बाद मे उसे कोई टके मे भी नही पूछता, यह अर्थ भी हो सकता है।

बकरा मुटाय, तब लकड़ी खाय

बकरा मोटा होता है, तब मार खाता हे, क्योकि वह लडाका हो जाता है।

लालची कर्मचारी के लिए क०।

बकरी करे घास से यारी तो चरने कहां जाय ?

कोई आदमी अगर मेहनताना मागने मे लिहाज करे या जो जिस काम को करता है, उसमे मुनाफा न ले, तो उसका खर्च कैसे चले ?

बकरी का-सा मुंह चलता ही रहता है

दिन-रात खाया करता है।

बकरी के नसीबों छुरी है

बकरी के भाग्य मे तो मरना ही बदा है। अच्छा काम कर के भी उसका फल न मिलना।

बकरी जान से गई, खानेवाले को मजा न आया

जब कोई दूसरे के लिए मर मिटे, पर वह उसका एहसान न माने, तब क०।

बकरी ने दूध दिया, मेंगनी भरा

जब कोई रो-झीककर एहसान करे, तब क०।

बकरी या सस्से की तीन ही टांगें

सरासर झूठ बोलना। जब कोई झूठ भी बोले ओर उसे सच साबित करने के लिए कटिबद्ध भी रहे, तब क०।

दे—०मुरगी की एक ही ।

बकरी से हल चलता तो बैल कौन रखता ?

जिसका जो काम हे, वह उसी से निकलता है।

बकरे की मां कब तक खैर मनाये

एक-न-एक दिन मारा ही जाएगा।

बख़्त उड़ गये, बुलंदी रह गई

अच्छे दिन निकल गए, केवल नाम रह गया।

बख़्त दें मारी तो कर घोड़े असवारी।
बख़्त न दें मारी तो कर खा चरवेदारी।

भाग्य से ही सब होता है।

बख़्त=वक्त; समय, भाग्य।

चरवेदारी=साईसी।

बख़्तावर का आटा गीला, कमबख़्त की दाल गीली

पर इसमे पहले की कोई हानि नही होती, दूसरे की मुसीबत आ जाती है।

बख़्तावर=भाग्यवान, धन-सम्पन्न।

बख़्तो के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया

भाग्य के ऐसे बली कि पकाई तो खीर, बन गया दलिया। बदकिस्मत के लिए क०।

बख़्शी के धगगड़

बख़्शी का यार।

व्यर्थ का रोब दिखानेवाले से अवज्ञापूर्वक कहना, जैसे 'लाट का साला'।

बख़्शो बी बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जियेगा

(कथा है कि एक बार एक बिल्ली ने किसी चहे को पकड लिया। बिल्ली से छूट कर चूहा बिल मे घुस गया, पर उसकी पूछ टूट कर बिल्ली के मुह मे रह गई। किंतु बिल्ली तो समूचे चूहे को खाने पर तुली हुई थी। इसलिए चूहे से बोली—'खैर, अब तुम बाहर निकल आओ, मैं तुम्हारी पूछ जोड दगी।' इस पर चूहे ने उक्त वाक्य कहा कि 'बस, अब रहने दो, मै बिना दुम के ही जिऊगा।'

बगड़ मे बगड़ तीन घर, तेली, धोबी, नाई

बुरा पडोस ।

बगड=घिरा हुआ मैदान; आगन, ढोरो के खडे होने की जगह।

बगल में ईमान दाब कर बात करते हैं

धोखेबाजी की बात करते हैं।

बगल में छुरी, मुंह में राम-राम, (हिं०)
धूर्त ।

बगल में तूती का पींजड़ा, 'नबी जी भेजो'
तोते को कोई पढा रहा है कि हे भगवान, भेजो किसी का मुफ्त का माल।
धूर्त या लोभी।

बगल मे मुंह डालो
अपनी तरफ देखो। जो बुराई तुम मुझ मे देख रहे हो, वह तुम मे भी है ।

बगल मे लड़का, शहर में ढिंढोरा
चीज तो बगल मे रखी है, पर उसे इधर-उधर ढूढना।

बगल में सोंटा, नाम गरीबदास
कहने को सीधे-सादे, पर हैं तेज-तर्रार ।
सोटा=छडी ।

बगला भगत
(१) धर्म का ढोग करनेवाला।
(२) कपटी, दगाबाज़ ।
(स०––वक परमधार्मिक (रामायण) ।)
(बगला मछली पकडने के लिए तालाब या नदी के किनारे एक पाव उठा कर खडा रहता है, मानो तपस्या कर रहा है, पर ज्यो ही मछली सामने आई, उसे पकड लेता है । उसी से मुहा० बना ।)

बगला भी धोबी का भाई है
क्योकि वह भी पानी मे खडा रहता है।

बगला मारे पंख हाथ
किसी को नुकसान भी पहुचाया और उससे कुछ लाभ भी नही हुआ ।
(बगुले मे पर ही पर होते है, मास बहुत थोडा होता है।)

बगली घूंसा
(१) छिपा हुआ दुश्मन ।
(२) धोखे की मार।

बगैर सीखे कुछ नहीं आता
सब काम सीखना पड़ता है।

बचनों का बांधा खड़ा है आसमान
वचन बडी चीज़ है। किसी को वचन दे कर तोडना नही चाहिए।

बच, बे जुम्मा, आंधी आई
आती विपत्ति से सावधान होने के लिए क० ।

बचे नर, हज़ार घर
एक अच्छे आदमी की रक्षा होने से हज़ार घरो की रक्षा होती है ।

बच्चे ते खिला दें दूध ते भात, बड़े हुए तो मार दे लात, (पं०)
बच्चे को दूध-भात खिला कर पालो, पर बडा होने पर वह लात मारता है। कृतघ्न लडको के लिए क० ।

बछड़ा खूंटी ही के बल कूदता है
छोटा आदमी बडे का सहारा पाकर ही अकड दिखाता है

बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो ।
आवाज़े ख़लक को नक्कारे ख़ुदा समझो ।
जिस बात को दुनिया ठीक कहे, उसे ही ठीक मानना चाहिए। दुनिया की आवाज ईश्वर की ही आवाज है।
नक्कारे ख़ुदा=ईश्वर का डका।

बजाज की गठरी पर झींगुर राजा
क्योकि वह कपडो को खा डालता है। दूसरो की वस्तु पर घमड करना।

बजाज बदज़ात
क्योकि वे अक्सर ठगते है ।

बजा दे, खनिया ढोलकी, मियां खैर से आये
शायद कोई आदमी किसी कठिन काम को करने का बीडा लेकर गया था, पर वह उसे नही कर सका, और असफल हो कर लौट रहा है। उसी का मज़ाक उडाया जा रहा है।
खनिया=खना की स्त्री। गाने-बजानेवाली एक याचक जाति।

बजा नक्कारा कूच का उखड़न लागी मेख।
चलनेहारे चल बसे, खडा हुआ तू देख।
स्पष्ट।
मेख=खूटी।

बटिया आऊ, बटिया जाऊं; खेतक चराऊं, न बाली खाऊ, (स्त्रि०)
रास्ते से आती हू, रास्ते से जाती हू, खेत चराती हू, बाली नही खाती।

दूसरे का सरासर नुकसान कर के अपनी सफाई दे रही है कि मै किसी का कुछ बिगाडती नही। सचमुच ईमानदार।

बटिया की राह, बेनिर्बाह
पगडडी का रास्ता आदमी को कही-का-कही ले जाता है।

बटुर हाथ दुश्मनवें लागो, (भो०)
दुश्मन को छोडना नही चाहिए। जब भी मौका लगे, कडी मार मारे।
बटुर हाथ=हाथ बटोर कर मट्ठी बाध कर।

बड़ तले का भूत
ऐसा व्यक्ति, जिससे आसानी से पीछा न छुडाया जा सके।
(भूत-प्रेत श्मशान, नदियो के घाटो तथा बडे वृक्षो पर रहते हुए माने जाते है। उनमे वटवृक्ष का भूत बहुत विकट समझा जाता है। इसीलिए कहा गया है।)

बड़ रोवे बड़ाई के, छोट रोवे पेट के
बडा आदमी नाम के लिए रोता है और छोटा भूखो मरता है, इसलिए रोता है। रोने से किसी को छुटकारा नही।

बड़ा जाने किया, बालक जाने हिया
सयाना आदमी काम से खुश होता है और बच्चा प्यार से।
हिया=हृदय।

बड़ा निवाला खाइये, बड़ा बोल न बोलिये
बडे आदमी बनकर रहो, पर बडी बात किसी से न कहो।
निवाला=कौर।
बडा बोल=अप्रिय या कठोर बात।

बड़ा बोल काजी का प्यादा
कडी बात कहनेवाला काजी का प्यादा है, क्योकि वही उद्दडता से बोलता है।

बडा ही पांच है
बडा शातिर है।

बड़ी कमाई पर नोंन बिकवा
(१) बहुत कमाई की तो नमक बेचा। अथवा
(२) बहुत कमाकर भी नमक बेचना।
(नमक बेचना साधारण पसारियो का काम समझा जाता है।)

बडी टेढ़ी खीर है
मामला बडा मुश्किल है।
(कथा है कि एक बार किसी मनुष्य ने एक जन्म के अधे फकीर को खीर खिलानी चाही। अधे तो शक्की मिजाज़ के होते ही है। इसलिए फकीर ने पूछा—'बाबा, यह खीर कैसी होती है?' जवाब मिला—सफेद रग की'। फकीर ने फिर पूछा—सफेद रग कैसा होता है? जवाब मिला—जैसे बगुला। फकीर ने पूछा—बगुला कैसा होता है? इस पर उस मनुष्य ने बकरे की गर्दन को बताने के लिए अपना हाथ टेढा कर के कहा—देखो ऐसा होता है। फकीर ने उसके टेढे हाथ को जो टटोला तो बडा घबराया और बोला—नही बाबा, मै ऐसी टेढी खीर नही खाऊगा, यह तो मेरे गले मे ही फस जाएगी। इसी से उक्त मुहावरे का जन्म हुआ।)

बड़ी ननद शैतान की छड़ी, जब देखो तब तीर-सी खड़ी?
भावज का कहना ननद के बारे मे।
(बडी ननद हमेशा भावज पर रोब जमाती है, और उसे डाटने-डपटने से भी नही चूकती। इसीलिए भावज ऐसा क०।)

बड़ी नाकवाले, (हिं०)
बडी इज्जतवाले। व्यग्य मे ही क०।

बडी फजर, चूल्हे पर नजर
सवेरा हुआ और खाने की फिक्र पडी।

बड़ी बहू को बुलाओ जो खीर मे नून डाले, (हिं०)
जब घर की किसी सयानी स्त्री से कोई भूल हो जाए या जब कोई अपने को बहुत चतुर समझे, तब उससे व्यग्य मे क०।

बड़ी बहू, बड़ा भाग, (हिं०)
बहू की उम्र जब वर से अधिक होती है, तब वरपक्ष के लोगो को तसल्ली देने के लिए क०।

बड़ी भाभी मां के थान का, (हिं०)
वड़ी भावज मा के वरावर होती है।

बड़ी भैंस पर महराई
वड़ी भैंस मे अधिक मक्खन होता है।

बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है
(१) वलवान निर्वल को सताता है।
(२) एक जीव दूसरे पर आश्रित है।
मत्स्य न्याय।

बड़े अन्नपूरना बने हैं
वड़े दानी वने हैं। व्यग्य मे क०।

बड़े कड़ाही में तले जाते हैं
किसी ने किसी से कहा कि वडे का अपमान नही करना चाहिए, तो उत्तर मे उसने उक्त वाक्य कहा। यहा वडा शब्द के दो अर्थ है (१) उडद की पीठी के वडे, जो कडाही मे तले जाते है,
(२) उम्र या प्रतिष्ठा मे वडा।

बड़े की वड़ाई, न छोटे की छुटाई
ऐसे व्यक्ति को क०, जो बडे-छोटो का उचित ध्यान नही रखता, न वडो का सम्मान करता है, और न छोटो से स्नेह।

वड़े घर पडिये, पत्थर ढो-ढो मरिये
यदि ऐसे घर मे व्याह हो, जहा वडा परिवार हो, तो स्त्री को काम वहुत करना पडता है। इसीलिए क०।

बड़े चोर का हिस्सा नहीं
क्योकि उसे जो लेना होता है, वह पहले ही ले लेता है।

बड़े तो थे ही, छोटे सुभान अल्ला
वाक्य का प्रयोग बुरे अर्थ मे ही होता है। यह प्रकट करने के लिए कि एक तो धूर्त था ही, पर दूसरा उससे भी वढ कर धूर्त है। जव वाप से वेटा या वडे भाई से छोटा भाई वढ कर हो, प्राय तव क०।

बड़े न वूड़न देत हैं, जाकी पकड़ें बांह।
जैसे लोहा नाव मे, तिरत फिरे जल मांह।
वडे आदमी जिसे सहारा दे देते है, उसे वे फिर छोडते नही।

बड़े-बडे बहे जायें, गदहा पूछे कितना पानी ?
जव किसी काम को एक सामर्थ्यवान पुरुष भी नही कर सके, और उसे एक असमर्थ मनुष्य करने का साहस करे, तव क०।

बड़े-बड़े ढह गये, बढ़ई कहे कितना पानी ?
दे० ऊ०।

बड़े वर्तन की खुर्चन भी वहुत है
आर्थिक स्थिति विगड जाने पर भी वडे आदमी के घर मे जो निकलता है, वही बहुत होता है।

बड़े वोल का सिर नीचा
अहकारी नीचा देखता है।

बड़े मियां सो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान अल्ला
दे०—वडे तो थे ही .।

बड़े शहर का वड़ा ही चांद
(१) वडे शहर की सव वाते वडी होती हे। अथवा (२) वडे शहर मे वडे ठग भी रहते है। व्यग्य मे क०।

बड़ो का वड़ा ही भाग, (स्त्रि०)
वडो का भाग्य भी वड़ा ही होता हे।

बड़ों का वड़ा ही मुंह
वडो की माग भी वडी ही होती हे।

बड़ो की वड़ी वात
(१) वडो की वाते (या ख्याल) भी वडे होते हैं।
(२) जव कोई वडा आदमी कोई ओछा काम कर वैठता है, तव व्यग्य मे क०।

बड़ों की वात वड़े पहचानें
वडे आदमी ही वडो की वात समझ सकते हैं।

बड़ों के कहे का और आंवलों के खाये का पीछे स्वाद आता है
इनकी अच्छाई वाद मे प्रकट होती है, पहले तो ये कड़ुवे लगते हैं।

बड़ों से रक्खे आस, न जाये पास
वडे आदमियो से आशा रखे, पर उनके पास न रहे।

बड़ौ विखो विखधर कौ, चलत सीस नवाय।
थोड़ो विखो विच्छू को, चालत दुम अलगाय।
सर्प मे अधिक विष होता है, पर वह सिर नवा कर

चलता है, विच्छू मे कम विप होता है, पर वह पूछ उठा कर चलता हे। छोटा दमी होता हे।

बढ़ें तो अमीर, घटें तो फकीर, मरें तो पीर

मुसलमानो के सबध मे हिन्दू कहा करते है। भाव यह कि वे जीवन की हर स्थिति से लाभ उठाते है।

वत्तीस दांत की भाखा खाली नहीं जाती, (स्त्रि०)

(१) किसी भी व्यक्ति का कोसना (अथवा आशीर्वाद देना) व्यर्थ नही जाता।

(२) किसी की प्रार्थना भी व्यर्थ नही जाती।

वद अच्छा, वदनाम बुरा

इसलिए कि वदनाम आदमी कोई बुराई न भी करे, तो भी लोगो का ध्यान उसी की ओर जाता है।

वद घोड़े की मेख

वदमाश घोडे का खूटा।

वहुत वदमाश आदमी।

वदन मे दम नहीं, नाम जोरावरखा

नाम तो वडा, पर काम कुछ नही।

वदन में नहीं लत्ता, पान खायं अलवत्ता

छैल चिकनिया के लिए क०, जिसके पल्ले कुछ नही होता।

वद वदी से न जाये, तो नेक नेकी से भी न जाये

(१) बुरा बुराई नही छोडता तो अच्छा भी भलमनसाहत नही छोडता।

अथवा (२) वुरा अगर वुराई न छोडे तो अच्छे को अपनी अच्छाई भी नही छोडनी चाहिए।

बदली की छाव क्या?

क्षणस्थायी होती है।

बदली की धूप, जब निकले तब तेज

वादलो के वाद की धूप हमेशा तेज होती है।

बदली मे दिन न दीसे, फूहड़ बैठी पीसे

वदली के कारण दिन निकल आया या नही, इसका पता नही चलता, इसलिए फूहड दिन को रात जानकर ही चक्की पीस रही है।

वदाऊं के लाला

सिलविल्ला आदमी।

वदायूवालो पर व्यग्य।

बधिया मरी तो मरी, आगरा तो देखा

नुकसान हुआ सो हुआ, पर कुछ नया अनुभव तो हुआ। व्यग्य मे ही क०।

(कथा है कि कोई वजारा माल वेचने आगरे गया। वहा उसका माल कुछ न विका, साथ ही वैल मर गया, तव उसने उक्त वाक्य कहा।

वन आई कुत्ते की, जो पालकी वैठा जाय

नीच को सम्मान मिलने पर क०।

वन आये की फकीरी भी भली!

अगर करते वने तो, अथवा अगर सफलता मिल जाए तो, फकीरी का पेशा भी अच्छा।

बन आए की वात रे ऊधो

(१) सफलता वडी चीज है, ऊधो! अथवा

(२) सव भाग्य की वात है, ऊधो!

(ऊधो कृष्ण के सखा थे। पर यहा इस शब्द का प्रयोग साधारण नाम के रूप मे ही हुआ मानना चाहिए।)

वन के पात वनहि के खड़िका, केलि करत बारी के लड़िका, (भो०)

जो जगलो मे रहते है, उनके लडके जगली पत्तो और खडिको से ही खेला करते है, जगल मे और रक्खा ही क्या?

खडिका=पतली लकडी।

बनज करेंगे वानिये और करेंगे रीस।

वनज करा था भाट ने, सौ के रह गये तीस।

(१) व्यापार तो वनिए ही कर सकते हैं।

(२) जिसका जो काम है, वही उसे अच्छी तरह कर सकता है।

बनज करे तो टोटा आवे, वैठ खाय धन छीजे।

कहे कबीर सुनो भई सतो, माग खाय सो जीते।

व्यापार के झगडे मे पडने या वैठे-वैठे खाने और धन खर्च करने की अपेक्षा माग कर खाना कहीं अधिक अच्छा।

छीजे=घटता है।

बनज मे भाई-वंदी क्या?

व्यापार मे मुलाहिजा नही करना चाहिए।

बन परलीन बिलारी, मुसा कहली 'जे हमरी जोय', (पू०)

बिल्ली कही जगल की सैर को चली गई, (तव) चूहा उसे अपनी औरत वनाने लगा।

(१) बडो के वाहर रहने पर छोटो को मौज हो जाती है।

(२) पीठ पीछे बडो को गाली देना आसान होता है।

बन, बालक और भैंस, उखारी, जेठ मास मे चार दुखारी, (कृ०)

गरमी मे ये चारो कष्ट पाते है, सूखते या विकल होते है।

वन=कपास का खेत।

उखारी=ऊख का खेत।

बन मे उपजे सब कोई खाय, घर मे उपजे घर ही खाय

फूट को क०। फूट (ककडी की जाति का फल) खेत मे पैदा होता है, तो उसे सब कोई खाते है, पर यदि फूट (लडाई-झगडा) घर मे हो, तो वह घर ही खा जाती है, अर्थात उससे घर का नाश हो जाता है।

प्र० पा०—खेत मे उपजे सब कोई खाय, घर मे उपजे घर वह जाय।

बनिया के सुखरज, रजवा के हीन;
वैद के पूत व्याध ना चीन्ह,
भटवा के चुप चुप, बेस्वा के मइल
कहे घाघ पांचो घर गइल।

वनिए का लडका यदि खर्चीला हो, राजा तेजहीन हो, वैद का लडका रोग न पहचानता हो, भाट चुप्पा हो और वेश्या मैली हो, तो घाघ कहते है कि ये पाचो अपने घर का नाश कर देते है।

बनियां जिसका यार, उसको दुश्मन क्या दरकार ?

वनियो पर ताना। विद्वेषमूलक कहावत।

बनियां देता ही नहीं, कहे 'जरा पूरा तौलियो

ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसकी किसी माग के लिए उसे एकदम इन्कार कर दिया गया हो, पर वह उसकी परवा न करके अपनी उस माग से भी अधिक पाने की इच्छा प्रकट करता जाए।

बनियां भी अपना गुड़ छिपाकर खाता है

(१) अपने घर का भेद किसी को वताना नही चाहिए।

(२) जब कोई स्पष्ट रूप से कोई बुरा काम करे, तब भी क०।

बनियां मारे जान, ठग मारे अनजान

वनिया जान पहिचानवाले को ही ठगता है, ठग तो अनजान को ठगता है।

बनियां मीत, न बेस्वा सती

वनिया किसी का मित्र नही होता, और वेश्या चरित्रवान नही होती।

बनियां रीझे हर्रे दे

उसके पास और रखा ही क्या ?

वनियो की कृपणता पर क०।

हर्रे=हर्रे वृक्ष का फल, जो दवा मे काम आता है।

बनिये का उल्लू

कोई भी निकम्मी चीज जो वहुत यत्न से रखी जाए। निकम्मे मनुष्य के लिए भी क०।

(कथा है कि किसी मूर्ख वनिए ने वाज़ के धोखे मे एक उल्लू खरीद लिया था और उसे वह वाज़ कह कर सव को दिखाता फिरता था।)

बनिये का जी धनिये बराबर

वहुत छोटा होता है।

बनिये का बहकाया और जोगी का फिटकारा

वनिए के वहकावे और जोगी के शाप से वचना मुश्किल है।

(वनिया किस तरह वहकाता है, इस पर एक कहानी है—किसी मनुष्य के पास एक अशर्फी थी, जिसे वह वेचना चाहता था। एक वनिए ने उसे सस्ते दामो मे खरीदना चाहा। उसने अशर्फी का दाम पाच रुपया लगा दिया। जब वह इतने दाम पर देने को राज़ी न हुआ, तब वनिए ने बढते-बढते उसके दाम चौदह रुपए तक लगा दिए। उस मनुष्य को तब सदेह हुआ कि यह अवश्य अधिक दामो की चीज़ है, तभी तो इसने चौदह रुपए तक इसके दाम लगा दिए। यह सोच कर उसने बनिए से कहा कि मैं

इसे सराफ को दिखाए वगैर नही वेचूगा। वनिए ने उसका यह रुख देख कर उसके प्रति आत्मीयता दिखाते हुए कहा—यह तीस रुपए का माल है। इससे कम मे इसे न वेचना। वह सारे वाजार मे उसे लिये फिरा और सब से तीस रुपए दाम कहता, पर इतने मे किसी ने उसे नही खरीदा। तब अन्त मे निराश हो कर उसने उसी वनिए को चौदह रुपए मे वह अशर्फी दे दी।)

बनिये का बेटा कुछ देख ही के गिरता है
वनिया हर काम मतलब से ही करता है।
(कथा है कि एक वनिए का लडका सिर पर तेल का घडा लिये जा रहा था। रास्ते मे एक जगह फिसलकर वह गिर पडा, साथ ही घडा भी गिर पडा। किसी ने उसके वाप को जव इस घटना की खबर दी, तो उत्तर मे उसने कहा कि मेरा लडका वेमतलव नही गिरा होगा, सडक पर जरूर उसे कोई चीज पडी दिखाई दी होगी। वात ठीक थी। लडके को एक अशर्फी पडी मिली थी।)

बनिये का मुंह ग्राह और पेट मोम
वनिया पेट काट कर रुपया जमा करता है।
ग्राह = मगर।

बनिये का सलाम वेगरज नहीं होता
वनिया विना मतलव के किसी को 'राम राम' भी नही करता।

बनिये का साह भड़भुंजा
वनिए पर व्यग्य।

बनिये की उचापत और घोड़े की दौड़ बराबर
वनिए का (उधार का) हिसाव वहुत जल्दी वढता है।

बनिये के पेशाब मे विच्छू पैदा होता है
वनिया वहुत ही चालाक होता है।
(यहा विच्छू से मतलव धूर्त या चालाक से है।)

बनिये से सयाना सो दीवाना
वनिए से अधिक चतुर कोई नही होता।

बनी के सब यार हैं
अवसर के सव साथी है।

बनी के सौ साले, बिगड़ी का एक बहनोई भी नहीं
पास मे अगर पैसा हो, तो सब कोई अपनी वहिन व्याहने को तैयार होते है, पर गरीब की वहिन से कोई व्याह नही करना चाहता।

बनी तो बनी, नहीं दाऊदखा पनी
अगर एक जगह काम करते नही बना, तो दूसरी जगह चला जाऊगा, मुझे किसी वात की चिन्ता नही, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।
दाऊद खा पनी=नाम विशेष।

बनी तो भाई, नहीं दुश्मनयाई
आपस मे निभ सके तो भाई, नही तो दुश्मनी वनी बनाई।

बनी फिर बेसवा, खोले फिर केसवा, (स्त्रि०)
फिर तू वेश्या वन गई है, फिर तू वाल खोले फिर रही है। वहू को सास की ताडना।
(पुराने हिन्दू घरो मे वाल खोलकर फिरना अच्छा नही मानते।)

बनें सब ही सराहें, बिगड़े कहे कमबख्त
(काम मे) सफलता मिलने पर सभी सराहना करते है, पर असफल होने पर मूर्ख और अभागा बनाते हैं।

बर के न मिले भूसा, बराती मागें चूंडा, (पू०)
ऐसी माग, जो पूरी न की जा सके।

बरधा एक, गांव दुई जोत, कइल बटिया लागल पोत
वैल एक है और दो गाव मे जोत है, किस तरह काम चलाया जाएगा। साधन की कमी।

बर मरे, पटवासी न टूटे
खसम भले ही मर जाए (अथवा भले ही मर गया हो) पर माग पट्टी काढना नही छूटता।
(माग पट्टी सधवा स्त्रिया ही काढती है, इसलिए वदचलन विधवा (अथवा वदचलन औरत) के लिए कहा० का प्रयोग होता है।)

बरमे का काम छिदना नहीं होता
वरमे से दूसरी चीज मे छेद होता है, वह आप नही छिदता। ठग को कोई ठग नही मकता।

बरस भर मे सखी सूम बराबर हो जाते हैं
सूम का किसी-न-किसी तरह नुकसान होता रहता

है और दाता को आय होती है, इसीलिए क०।

वरसात वर के साथ, (स्त्रि०)

वर्षा ऋतु तो पति के साथ ही अच्छी तरह कटती है।

वरसात में कढ़ाही घर-घर

वरसात मे त्योहार वहुत होते हैं, इसलिए घर-घर पकवान वनते है।

वरसा थोड़ी, भभरौटी बहुत

उछलकूद वहुत, पर काम थोडा।

भभरौटी=गरज-तरज (वादलो की)।

वरसे असौज, हो नाज की मौज, (कृ०)

क्वार मे पानी वरसने से फसल वहुत अच्छी होती है।

वरसेगा, वरसावेगा, पैसे सेर लगावेगा, (कृ०)

वरसात मे वच्चे कहा करते हैं।

वरसेगा मेह होंगे अनन्द; तुम साह के साह, हम नंग के नंग

पानी वरसने से अनाज खूव उपजेगा, सवको आराम होगा, किन्तु तुम साहूकार हो सो साहूकार रहोगे, और हम नगे-के-नगे ही रहेंगे। गरीव किसान का व्यवसायियो के प्रति कहना।

वरसे साढ़ तो वन जा ठाट, (कृ०)

आषाढ मे वर्षा हो, तो मौज हो जाती है।

(क्योकि ग्रीष्म से सभी आकुल वने हुए होते हैं।)

वरसे सावन, तो हों पांच के वावन, (कृ०)

सावन मे वर्षा होने से कृषि को वहुत लाभ होता है।

वरसो राम धड़ाके से, वुढ़िया मर गई फाके से

वर्षा मे वच्चों की तुकवदी।

वरात का छैला, सावन का खैला

वरात मे नौजवान लडके वैसी ही खुशी मनाते हैं (या खुश नजर आते ह), जैसे सावन के महीने मे अल्हड वछडा।

वरात की सोभा वाजा, अर्थी की सोभा स्यापा

वरात मे वाजे शोभा देते हैं और मृतक के शोक मे रोना।

अर्थी=जनाजा।

स्यापा=मरे हुए के शोक मे कुछ समय तक स्त्रियो के प्रति दिन इकट्ठे होकर रोने और शोक मनाने की प्रथा।

वरातियों को खाने की चाह, दुलहे को दुल्हिन की चाह

हर आदमी अपने मतलब से ही मतलव रखता है।

वराती किनारे हो जायेंगे, काम दूल्हा दुल्हिन से पड़ेगा

वाहरवाले तो झगडा करा कर अलग हो जाते हैं, पर सुलझना तो उन लोगो को ही पडता है, जिनमे आपस मे झगडा होता है।

वरेली जाने का काम करते हो

पागलो जैसा काम करते हो। वरेली मे वड़ा पागलखाना है। आगरा का भी प्रयोग इसी अर्थ मे होता है।

वरेली रूपारेली

वरेली मे चादी वरसती है। जमीन इतनी उपजाऊ है।

वल जाय राज को, मोती लागें प्याज को

ऐसे राज्य की वलिहारी, जिसमे प्याज के लिए मोती खर्च करने पड़े।

वल तो अपना वल, नहीं तो जाय जल

अपना वल ही काम आता है, दूसरे का नही।

वल, वे जुम्मा तेरी धज

वलिहारी रे जुम्मा! तेरी धज की।

मै तेरी होशियारी (या सजधज) की वहुत-वहुत प्रशंसा करता हू। व्यग्य मे ही क०।

वलवान का हल भूत जोतें

जवर्दस्त का सब काम मुफ्त मे ही हो जाता है।

अथवा जवर्दस्त का काम लोग दौडकर करते है।

वसंत जाड़े का अंत

वसत मे जाड़ा खत्म हो जाता ह।

वस कर मियां वस कर, देखा तेरा लश्कर, (स्त्रि०)

शेखीवाज से व्यग्य मे क०।

वस हो चुकी नमाज; मुसल्ला वढाइए, (मु०)

काम हो चुका, अव आप तशरीफ ले जाइये; ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

मुसल्ला=वह छोटा विछावन, जिस पर वैठ कर नमाज पढ़ी जाती है।

वसाव शहर का, खेत नहर का

दोनों अपनी-अपनी जगह अच्छे होते हैं।

नहर का=नहर के किनारे का।

वहता पानी निर्मला, वधा गदीला होय।
साधू जन रजता भला, दाग न लागे कोय।
स्पष्ट।

वहते को बह जाने दे, मत वतलावे ठौर।
समझाये समझे नहीं, तो धक्का दे दे ओर।
जो समझाने से न माने, उससे तो फिर वात नही करनी चाहिए।

वहते दरिया मे जिसका जी चाहे हाथ धो ले
(१) अवसर से लाभ उठा लेना चाहिए।
(२) किसी का कोई उपकार करते वने, तो करके यश का भागी वन जाना चाहिए।

बह मरें बैल, बैठे खायें तुरंग
बैल तो जुत-जुत कर मरते है और घोडे आराम से बैठे खाते है। एक खट कर मरे और दूसरा मौज उडाए।

बहरा वहिपूर्ती, अधा दोजखी
वहरा अपने कानो से पराई निंदा नही सुनता, इसलिए स्वर्ग जाता है। अधा बेईमान होता है और दूसरे की बुराई सुनता है, इसलिए नरक मे जाता है।

वहरा सुने धर्म की कथा
एक हास्यजनक बात।

वहरा सो गहरा
क्योकि वह किसी की कोई वात न तो सुनता है, न जानता ही है।

बहरे आगे गावना, गूगे आगे गल्ल।
अंधे आगे नाचना, तीनों अल विलल्ल।
तीनो ही काम मूर्खतापूर्ण है, क्योकि वहरा गीत नही सुन सकता, गूगा वात का जवाव नही दे सकता और अधा नाच नही देख सकता।
गल्ल=वार्तालाप।

कहे मेरा वीर प्यारा, काल कहे मेरा है यह चारा
स्पष्ट।
चारा=भोजन। कौर।

बहिन के घर भाई कुत्ता, सासरे जवाई कुत्ता, कुत्ता पाले वह कुत्ता, सब कुत्तो का वह सरदार, जो बाप रहे बेटी के वार
दे०—कुत्ता पाले वह कुत्ता...।
वार=घर।

वहुत अतातायी जीऊ का काल हा, (ग्रा०)
वहुत उपद्रवी ज़िदगी के लिए एक विपत्ति है।

वहुत अतीत, मठ खरावा
किसी मठ मे अगर वहुत से साधु हो, तो मठ मैं खरावी आ जाती है। थोडे साधुओ से ही मठ पवित्र रह सकता है।

बहुत औलाद भी गजब है
वहुत सतान भी एक विपत्ति है।

बहुत कथनी, थोडी करनी
कहना वहुत, करना थोडा।

बहुत गई, थोड़ी रह गई
वहुत उम्र वीत गई, थोडी वाकी है, इसे ईश्वर इज्जत से काट दे, यही भाव प्रकट करने को क०।

बहुत सोना दलिद्दर की निशानी
वहुत सोना (अर्थात आलस्य करना) दरिद्रता का लक्षण है।

बहुरिया के बड़ दुलार, हाडी बसन छुआ ही ना पावस, (स्त्रि०)
वहू पर प्यार तो वहुत, पर हाडी-वर्तन (वह) छूने ही न पाए। दिखावटी प्रेम।

बहू-बेटी सव रखते हैं
जब कोई किसी को मा-वहिन की गाली दे अथवा दूसरे की स्त्री को बुरी नजर से देखे, तव उसे भर्त्सना करते हुए क०।

बहू लाली, धन घर घाली
टिमाक से रहनेवाली वहू धन और घर दोनो का नाश करती है।

वहू शरम की, वेटी करम की
वहू तो शरमदार और वेटी करमैत (अथवा भाग्यशील) अच्छी होती है।

वागा मे सियार गइले, का ओढ अइले, का पहल अइले
कपास के खेत मे अगर सियार जाए, तो वह वहा क्या तो ओढेगा और क्या पहिनेगा?
(सियार के लिए कपास किस काम का?)

बांज अच्छी, इकौंज बुरी, (स्त्रि०)
एक लडकेवाली से वाझ अच्छी, क्योकि एक लडके के मरने का जो दुख होता है, वाझ उससे वची रहती है।

बांज क्या जाने परसूत की पीड़ा
जिस पर बीतती है वह जानता है।
परसूत=प्रसूति । प्रसव।

बांज बंजौटी, शैतान की लंगोटी, (स्त्रि०)
गाली। एक स्त्री दूसरी से लडते समय क०।

बांज ब्यानी, सोठ उड़ानी, (स्त्रि०)
(१) वाझ के अगर लडका हो तो उसकी इज्जत वहुत वढ जाती है। अथवा
(२) जव कोई वात का वतगड वनाए, तव भी क०।
वाझ का व्याना एक गप्प ही हो सकती है। वच्चा होने पर प्रसूता को सोठ खिलाते हैं।
(भाव यह है कि वाझ के लडका हुआ, तो उसे सोठ पर सोठ खाने को मिलने लगी।)

बांटल भाई पड़ौसी बराबर
अलग रहनेवाला भाई पडोसी के समान है।

बांदी के आगे बादी आई, लोगों ने जाना आंधी आई, (स्त्रि०)
नौकर के नीचे जो नौकर होता है, वह वहुत काम करता है, अथवा उससे वहुत काम लिया जाता है, इसीलिए क०।

बांदी के आगे बांदी, मेह गिने न आंधी, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।

बाध खीसा, ले हींसा
किसी से व्यग्य मे कहा जा रहा है 'ले अपना हिस्सा और रख ले खीसे मे'। वास्तविकता यह है कि उसे कुछ मिलना नही है।

बाधे सकेला, फिरे अकेला
हथियारवद को किसी का डर नही।

बास की जड़ मे घमोय जामे हुए, (ग्रा०)
अच्छे घर मे कपूत पैदा हुआ।
घमोय पौधो की एक वीमारी होती है, जिससे वे विल्कुल नष्ट हो जाते हैं।

बांस के बांस मल्लाही की मल्लाही
नाव से पार होते समय जिन वासो से नाव खेई जाती है, अक्सर उनको चोटे खानी पडती है। इसीसे कहा गया है कि वास के धक्के भी खाए और मजदूरी भी देनी पडी।
(१) पूरा खर्च कर के भी जव परेशान होना पडे, तव क०।
(२) हर तरह से अपमानित होना।

बांस गुन बसाउर, चमार गुन अघाउर
जैसा वास होगा, वैसे ही उसके वासन भी वनेंगे; चमार जैसा होशियार होगा, उतना ही अच्छा चमडा भी पकेगा।
अघाउर=अघौरी, पका हुआ चमड़ा।

बांस चढ़ी गुड़ खाय
नटनी के लिए क०। जो प्रयत्न करता है, उसे फल मिलता हे।
(नटनी जव अपना खेल दिखाती है, तो उसके लिए लवे वास के सिरे पर गुड वाघ दिया जाता है, जिस पर चढ कर वह उसे तोड लाती है।)

बांस डूबें, बौरी था मागे
वास तो डूव जाते है और मूर्ख पानी की थाह लेना चाहता है।
दे०—ऊट वहे जाये. ।

बांस बढे झुक जाय, अरंड बढे टूट जाय
सज्जन पुरुप उच्च स्थान पर पहुचकर विनम्र वनते हैं, छोटे इतराने लगते हैं।

बांह गहे की लाज
सहारा दे कर अन्त तक निवाहना चाहिए।

बाह छुडाए जात हो, निवल जान के मोहि।
हिरदे मे से जाओगे तो मर्द वदूंगी तोहि।
स्पष्ट।
(कहा जाता है कि यह दोहा सूरदासजी ने उस समय कहा था, जव चोरो ने उन्हे कुए मे ढकेल दिया था और श्रीकृष्ण भगवान ने उन्हे वाहर निकाला था।)

बांह पकड़े की ओर निवाहना
दे०—वाह गहे की .।

बाकी का मारा गांव और चिलमों का मारा चूल्हा
ये फिर ठहरते नही।
(किसी गाव पर अगर सरकारी लगान बकाया हो, तो सरकारी कर्मचारी वसूली मे ज्यादती करते हैं, और लोगो को उससे नुकसान होता है। इसी तरह किसी चूल्हे से बार-बार चिलम के लिए आग ली जाए, तो वह चूल्हा बुझ जाता हे।)

बाकी नाम अल्लाह
प्रयत्न करना चाहिए, उसके बाद तो ईश्वर का नाम।

बाग लागल ना, मगता डेरा देल, (भो०)
बाग लगकर तैयार नही हुआ, भिक्षुको ने डेरा डाल दिया।
(भिक्षुक अक्सर बगीचो मे आकर ठहरते है।)

बाघ की मौसी बिलाई
बिल्ली बाघ से भी बढकर। अथवा बिल्ली भी बाघ जैसी।

बाघ बकरी एक घाट पानी पीते हैं
बहुत अमन-चैन है।

बाघ मार नदी मे डारा, बिलाई देख डरानी
किसी स्त्री ने बाघ मारकर नदी मे फेक दिया, पर बिल्ली देखकर डर गई।

बाघौ के मुंह केहू धोवल है ? (भो०)
शेरो का मुह किसने धोया ?
जो बच्चे अपना मुह नही धोते, अथवा नही धुलवाते, प्राय: उनसे हँसी मे क०।

बाजार उसका जो ले के दे, (व्य०)
(१) जो अपना देना चुका देता है, बाजार मे उसी को सब चीज मिल सकती है।
(२) बाजार मे उसी की साख रहती है, जो दूसरो का लेकर दे देता है।

बाजार का सत्तू बाप भी खाय, बेटा भी खाय
वेश्या के लिए क० कि उसके पास कोई भी जा सकता है।

बाजार की गाली किस की ? जो फिरके देखे उसकी?
कौन क्या कहता है, इसकी परवाह नही करनी चाहिए।

बाजार की मिठाई, जिसने चाही उसने खाई
दे०—बाजार का सत्तू।
ऐसी वस्तु जो सब के लिए सुलभ हो।

बाजार की मिठाई से निर्वाह नहीं होता
(१) वेश्याओ के लिए क०।
(२) साधारण अर्थ मे भी कह सकते है कि घर मे रोटी खाए बिना काम नही चलता।

बाज़ार के भाव
बाजार के दामो पर।

बाजार के भाव बेचना
बाजार मे जिस चीज़ के जो दाम हो, उन्ही दामो मे देना।

बाज़ारी आदमी का क्या इतबार ?
स्पष्ट।
बाज़ारी आदमी=चलता-फिरता आदमी, साधारण आदमी।

बाजारू चीज बोदी होती है
बाजार की घटिया चीजें जल्दी खराब होती हैं।

बाटे घाटे कुतिया मरी, नाथ कहे मेरी वाचा फरी, (पू०)
कुतिया तो दैवयोग से रास्ते मे या नदी किनारे मर गई। योगी ने कहा कि मेरा वचन सत्य हुआ। दैव-घटना के सबध मे जो लोग कहते है कि वह हमारे कहने से हुई, उन पर व्यग्य।

बाड़ ही जब खेत को खाय, तो रखवाली कौन करे ?
रक्षक ही जब भक्षक बन जाए, तो काम कैसे चले ?
भ्रष्टाचारी कर्मचारी, विशेषकर पुलिस के लिए क०।
(यह फैलन की टिप्पणी हे।)

बाड़ी में बारह आम, हट्टी मे अठारह आम, (पू०)
बगीचे मे तो (किसी एक मूल्य पर) बारह आम मिलते है और बाजार मे अठारह। उल्टी बात।
(बगीचे मे आम सस्ते मिलने चाहिए।)

बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजे अपने कर्मा
पिता के धर्म से पुत्र समृद्धिशाली हो सकता है, पर खेती अपने ही प्रयास से सफल होती है।

वात इन्सान जब तलक कहता नहीं।
नेक औ बद उसका कहीं खुलता नहीं।
स्पष्ट।

बात कहिये जगभाती, रोटी खाइये मन भाती
वात वह कहे जो दूसरो को अच्छी लगे। भोजन वह करे, जो अपने को अच्छा लगे।

बात कही और पराई हुई
मुह से बात निकली और सबको मालूम हुई।

वात कहे की लाज
जो वात कहे, उसे पूरा करना चाहिए।

बात का चूका आदमी और डाल का चूका बंदर संभलता नहीं
ये फिर हानि उठाकर रहते है।

बात का बतक्कड़ करना
तिल का ताड वना देना।

बात की बात, खुराफात की खुराफात
वात ठीक भी है और हँसी की भी।

वात की वात खुराफात की खुराफात।
बकरी के सींगो को चर गये वेरी के पात।
वात सही भी और हँसी की भी, वकरी के सीगो को वेरी के पत्ते चर गए। वात असल मे यह हुई कि वकरी वेरी के पत्तो को चरने के लिए उचकी तो उसके सीग पेड की काटेदार टहनियो मे फसकर टूट गए। शिक्षा यह कि जो दूसरो को हानि पहुचाना चाहता है, उसकी स्वय हानि होती है।

वात की वात मे
फौरन।

वात गई फिर हाथ नहीं आती
(१) मुह से निकली वात फिर हाथ नही आती।
(२) इज्ज़त एक दफे चली जाने पर फिर जल्दी नही मिलती।

वात छीले रूखड़ी, और काठ छीले चीकना
वात छीलने से रूखी, और काठ छीलने से चिकना होता है। किसी बात को बार-बार उकमाना ठीक नही।
वात छीलना=वहम करना।

बात जो चाहे आपनी, तो पानी मांग न पी
अगर अपनी बात (या इज्ज़त) रखना चाहता है, तो पानी भी मागकर मत पी। अर्थात किसी से कोई चीज़ मत माग।

बात पूछे, बात की जड़ पूछे
वहुत खोद-विनोद करनेवाले से क०।

बात में बात ऐब है
किसी की वात के वीच मे वोलना वुरा है।

वात रह जाती है, वक़्त निकल जाता है
जव कोई व्यक्ति किसी से उचित सहायता की आशा करे, और वह उसे न मिले, तव वह क०।

बात लाख की, करनी ख़ाक की
(१) वाते लंबी-चौडी करना, पर काम कुछ न करना।
(२) जव कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति कोई निन्दनीय कार्य कर वैठे, तव भी क०।

बातें अगली करती हैं ख़्वार
पुरानी वातो की याद मनुष्य को दुखी वनाती है।

बातें करे मैना की-सी, आँखें बदले तोता की-सी
(१) ख़तरनाक औरत।
(२) वेश्या से भी क०।

बातें हाथी पाये और बातें हाथी पायें
वातो से ही (इनाम मे) हाथी मिलता हे और वातो के ही कारण आदमी हाथी के पैर के नीचे कुचलवा दिया जाता है।
पाये=पाता है। पाये=पैरो के नीचे।

बातों चिकना, कामो ख़्वार
बातें तो मीठी करे, पर काम कुछ न करे।

बातों-चीतों में बड़ी, करतब बड़ी जिठानी
वातचीत मे तो मैं, और काम करने मे जिठानी वडी हे।
देवरानी पर कटाक्ष।

बातो बूढा, करतब ख़्वार
वाते वड़े-बूढे जैसी करे, पर काम मे निकम्मा।

बातो से काम नहीं चलता
जव काम करने के समय अथवा किसी का पावना देने के समय कोई कोरी वातो से टाले, तव क०।

बादला मढ़े से नीम नहीं छिपता

अर्थात उसकी कड़ुवाहट नही जाती।

(१) बुरी आदत आसानी से दूर नही होती। अथवा (२) बुरा काम छिपाने से नही छिपता। (बादला एक प्रकार का बढिया रेशमी कपडा होता है, जिस पर सोने या चादी के तारो का काम कढा होता है।)

बादशाही रिआया से है

प्रजा से ही राज्य टिकता है।

बादशाहो की बातें बादशाह ही जानें

बडो की बाते बडे ही जान सकते है।

बान जल गया, पर बल न गये

रस्सी जल गई, ऐंठन न गई।

बरबाद हो गये, पर शेखी न छूटी।

बानवाले की बान न जाय, कुत्ता मूते टांग उठाय

जिसे जो आदत पड जाती है, वह नही छूटती।

बाप ओझा, मां डायन

दोनो एक से। ऐसे मा-बाप का लडका भयकर तो होगा ही, यह भाव छिपा है।

ओझा=झाडफूक करनेवाला ऐसा व्यक्ति, जिसके वश मे भूत-प्रेत माने जाते है।

बाप कटक, पूत हातिम

बाप तो बेहद कजूस, और लडका उदार या खर्चीला।

कटक=विपत्ति, मुसीबत।

बाप करे बाप के आगे आये, बेटा करे बेटे के आगे आये

जो जैसा करता है, उसे उसका वैसा फल मिलता है।

बाप का नाम उआ-पुआ, पूत का नाम जीते खां

साधारण हैसियत का आदमी शेखी बघारे, तब क०।

बाप का नाम दमड़ी, बेटा का नाम छकौड़िया, नाती का नाम पचकौड़िया, तीन पुरसा बीती, छदाम न पूरा भया, (स्त्रि०)

अभिप्राय यह कि तीन पीढी के बाद भी परिवार अपनी कोई इज्जत नही बना सका। या अपने खर्चे पूरे नही कर सका।

दमडी=१२ कौडी, और छदाम=२४ कौड़ी, इस प्रकार तीन पीढी का हिसाब २३ कौड़ी हुआ; अर्थात एक कौडी फिर भी कम।

बाप का नाम सागपात, पूत का नाम परोर

स्पष्ट।

दे०—बाप का नाम उआ-पुआ ।

परोर=पडौरा, एक बेल का फल, जिसका साग बनता है।

बाप की टांग तले आई, और मां कहलाई

बाप की रखैल को भी मा कहना पडता है।

सम्मान के योग्य न होते हुए, विवश होकर जिसका सम्मान करना पडे, उसके लिए व्यग्य मे क०।

बाप की बरात बेटा जाये!

(१) सतान के रहते हुए जब कोई दूसरा विवाह कर लेता है, तब क०।

(२) असगत बात या काम के लिए भी क०।

बाप कुंजड़ा, बेटा शेख़!

स्पष्ट।

बाप के गले में मोंगरे, पूत के गले मे रुद्राक्ष

बाप तो ऐयाश, और लडका साधु!

मोगरे=मोगरे के फूलो का हार।

बाप को आटा न मिले, जो ईंधन को भेजे

बदमाश और कामचोर लडके का कहना (बाप को आटा (रसोई के लिए) न मिले, जिससे वह मुझे ईधन लाने के लिए न भेजे।)

बाप चुपचुप, पूत लपझप

बाप तो चुप्पा या सीधा, लडका शरारती।

बाप दिखा, या गोर बता

या तो बाप बताओ कहा गया, या फिर उसकी कब्र बताओ, (जिसमे अगर वह मर गया है, तो उसका मुझे विश्वास हो जाए।)

या तो मैं जो चीज़ माग रहा हू वह दो या फिर यदि वह नही है तो उसका सबूत दो। जब कोई (विशेषकर कोई छोटा लडका) इस तरह की ज़िद करता है, तब उससे क०।

बाप देवता, पूत राक्षस

बाप बहुत अच्छा, लडका उसके विपरीत।

बाप न दादे, मार खां जादे
झूठी शेख़ी मारनेवाला।

बाप न दादे, सात पुश्त हरामजादे
गाली।
दे० ऊ० भी।

बाप न मारी पीदड़ी, बेटा तीरंदाज़
लम्बी-चौडी हाकनेवाला।
पीदडी=एक छोटा पक्षी, पिद्दी।

बाप नरकटिया, पूत भगतिया
बाप तो धूर्त या हत्यारा, लडका भगत। व्यग्य मे क०।
नरकटिया=गर्दन काटनेवाला।

बाप पंडित, पूत छिनरा
स्पष्ट। व्यग्य मे० ।

बाप पेट मे, पूत ब्याहने चला
असभव या हास्यजनक व्यापार।

बाप बनिया, पूत नवाब
बाप तो कजूस, लडका ख़र्चीला।

बाप-बेटों की लड़ाई क्या ?
बाप-बेटो मे झगडा होता ही रहता है, फिर शान्ति भी हो जाती हे।

बाप भला न भैया, सब से भला रुपैया
रुपए के लिए सब नाते टूट जाते है।

बाप भिखारी, पूत भंडारी
स्पष्ट। व्यग्य मे क०। अथवा अपना-अपना भाग्य यह सहज अर्थ भी हो सकता है।

बाप मरले कुंअर, माय मरले तुअर, (पू०)
बाप के मरने पर (गरीब घर का) लडका कुआरा रहता है, और मा के मरने पर अनाथ हो जाता है; क्योकि बाप उसकी देखभाल नही कर सकता।

बाप मरा घर बेटा भया, इसका टोटा उसमे गया
जितना घाटा हुआ उतना मुनाफा हो गया। प्राय व्यग्य मे ही क०।

बाप मरिहें तब पूत राज करिहे, (पू०)
बाप के मरने पर लड़को की मालिकी हो जाती है; उसके रहते उनकी नही चलती।

बाप मरे पर बैल बटेंगे
किसी काम के करने का लबे समय का वादा करना।

बाप मारे का बैर है
जानी दुश्मनी है।

बाप से बैर, पूत से सगाई
बाप से तो दुश्मनी और लडके से मित्रता। (जो उचित नही, अथवा जो अस्वाभाविक है।)

बापै पूत, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-ही-थोड़ा
पुत्र मे पिता के और घोडे मे भी अपने पिता के कुछ-न-कुछ गुण अवश्य आते है।
यह कहावत साधारणत इस प्रकार प्रचलित है.
बापै पूत सिपाह पै घोडा, बहुत नही तो थोडा-थोडा।

बाबा आवें ना घंटा बजे
किसी के बिना कोई काम रुका पडा हो, और उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो, तब क०।

बाबा आये न ताली बजे
बहुत कुछ ऊपर की कहावत जैसा ही भाव है। (ठाकुर जी की पूजा के समय ताली बजाई जाती है, उसी से अभिप्राय है कि न बाबा आए और न पूजा हो।)

बाबा कमावे, बेटा उड़ावे
ख़र्चीले लडके को क०।

बाबा के राजे सतुआ मेंहगल, सैंया के राजे सब सहतल
पिता के घर मे सत्तू भी महगा था, खाने को नही मिलता था, पर स्वामी के घर मे सब चीज़ सुलभ है, क्योकि वहा वह घर की मालकिन है।

बाबाजी का ठेंवस बड
बाबा जी का अगूठा बडा है, अर्थात सबको ठेगा दिखाते है। हर चीज़ के लिए इन्कार कर देते है।

बाबा जी के बाबा जी, बजत्री के बजत्री
(१) बहुत से साधु इकतारे पर भजन गाकर भीख़ मागा करते हैं, उन पर व्यग्य।
(२) ऐसी चीज़ जिनसे दो काम निकलते हों।

बाबा जी चेले बहुत हो गये हैं, बच्चा भूखों मरेंगे तो आप चले जावेंगे
मुफ्तख़ोर के लिए क०।

बाबा मरे, निहालू जायें, वही तीन के तीन
बावा (पितामह) मरे तो नाती जन्मा, फिर वही तीन के तीन रहे, जिनका पेट भरना है।

बामन का बेटा, बावन बरस तक बौंगा
व्यग्य से पडिताई करनेवाले उन ब्राह्मणो के लिए क०, जो केवल दान और भिक्षा पर निर्भर रहते है। बौंगा की जगह आमतोर से पोगा ही कहते है।

बामन की बेटी कलमा पढ़े
(१) एक दुखजनक वात, अथवा असमव वात।
(२) किसी वस्तु की प्रशसा करने के लिए भी कह सकते है कि वह इतनी बढिया या सुस्वादु है कि उसे पाने के लिए ब्राह्मण की लडकी अपना धर्म छोड सकती हे।

बामन के बबुआ कहले, नान जात लतयावले, (भो०)
ब्राह्मण तो सम्मान पाने से और छोटी जाति के लोग पिटने से ठीक रहते है। यह कहावत ब्राह्मणो की वनाई होगी।

बामन जीमे ही पतयाय
(१) ब्राह्मण भोजन के बाद ही कोई दूसरी बात सुनता है।
(२) ब्राह्मण जब भोजन कर ले, तभी उसकी बात सुननी चाहिए, क्योकि तब वह बहुत प्रसन्न हो जाता है।

बामन नाचें, धोबी देखे
एक फज़ीहत की वात।
यहा नाचने से मतलब है निर्लज्जतापूर्ण काम करना।

बामन वचन परमान
ब्राह्मण की बात ही प्रामाणिक मानी जानी चाहिए। प्रायः व्यग्य मे ही क०।

बामन बेटा लोटे-पोटे, मूल ब्याज दोनों घोंटे
(१) ब्राह्मण चिकनी-चुपड़ी वाते करके मूल भी हजम कर लेता है और व्याज भी, अर्थात दोनो नही देता। अथवा
(२) ब्राह्मण जब तक अपना पावना मय व्याज के वसूल नही कर लेता, तब तक नही छोड़ता।

बामन मंत्री, भाट खवास, उस राजा का होवे ना
जिस राजा का ब्राह्मण तो मत्री और भाट निज सेवक हो, उसका नाश होता है।

बामन से दान मांगते हैं
उल्टी रीति वरतते है, ब्राह्मण का काम तो दान लेन है न कि देना, क्योकि ब्राह्मणो ने ऐसा नियम वनाया।

बामन हुए तो क्या हुए, गले लपेटा सूत
केवल जनेऊ गले मे डाल लेने से कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता, उसे वैसे कर्म भी तो करने चाहिए।

बारह गाव का चौधरी, अस्सी गांव का राव।
अपने काम न आये तो, ऐसी तैसी मे जाव।
कोई कितना ही वडा आदमी क्यो न हो, पर उससे अगर कोई अपना मतलव न निकले, तो उसका वह वडप्पन किस काम का ?

बारह वफात की खिचड़ी, आज है तो कल नहीं
ऐसी वस्तु, जो आज तो बहुतायत से मिल रही हो, फिर न मिले।
(वारावफात मुहम्मद साहब के जीवन के उन अतिम बारह दिनो को कहते है, जब वे बहुत बीमार रहे। इसके अगले दिन उनकी मृत्यु हो गई। इस दिन उनकी यादगार मे खिचडी का फातिहा दिया जाता है, और वह लोगो मे बाटी भी जाती है। उसी से कहा० वनी।)

बारह बरस का कोढ़ी, एक ही इतवार पाक
कोई पुराना रोग एक दिन मे दूर नही होता।
(इतवार सूर्य का दिन माना जाता हे। लोगो का विश्वास है कि इस दिन व्रत रखने से चर्म रोग दूर होते हैं।)

बारह बरस काठ मे रहे, चलती दफा पांव से गये
छूटने की खुशी मे जल्दी के मारे गिर पड़े और पैर टूट गया। दुर्भाग्य की वात।
(प्राचीन काल मे अपराधी को दड देने के लिए उसका पैर लकडी के कुदे मे फसा दिया जाता था, इसी को 'काठ मे देना' कहते थे।)

बारह बरस की कन्या, और छठी रात का वर, मन माने सो कर
बालविवाह पर क०।

छठी रात का=छ दिन का।

बारह बरस की पठिया, बीस बरस की टटिया

भारत मे स्त्रिया जल्दी बूढी हो जाती है। उसी सदर्भ मे कहा गया है कि बारह वर्ष की अवस्था मे वह युवती थी, पर बीस की होते-होते ठाठ हो गई।

बारह बरस दिल्ली मे रहे, भाड़ ही झोंका

व्यर्थ समय खोया। एक अच्छे स्थान मे रह कर भी उससे कोई लाभ नही उठा सके।

बारह बरस दिल्ली मे रहे, महसूल नही दिया, 'क्या करते थे' ? 'भाड़ झोंकते थे'।

दे० ऊ०।

बारह बरस पीछे कूडी के भी दिन फिरते है

समय सदा एक-सा नही रहता। कभी-न-कभी अवश्य अच्छे दिन आते है।

कूडी=घूरा।

बारह बरस सेई कासी, मरने को मग्गह की माटी

अन्त बुरा होना।

(हिन्दुओ का विश्वास है कि काशी मे मरने से मोक्ष मिलता है, और कोई अगर मगहर मे जाकर मरे तो वह नरक मे जाता है।)

बारह बाट, अठारह पैंड़े

बारह रास्ते और अठारह पगडडिया, कौन-सा मार्ग ग्रहण किया जाए?

बहुत उलझा हुआ मामला।

बारह बानी का हो गया

फिर नौजवान हो गया।

(बारह बानी विशेषण का प्रयोग खरे सोने के लिए करते है। बारह बानी याने द्वादशवर्ण अर्थात सूर्य जैसी चमक-दमकवाला। उसीसे उक्त मुहावरा लिया गया।

बारह मे तीन गये तो रहो खाक

बारह मे से अगर बरसात के तीन महीने सूखे ही निकल जाए, तो फिर कुछ बचता नही, क्योकि फिर अन्न पैदा नही होगा।

बारू जैसी भुरभुरी, धौली जैसी धूप।
मीठी ऐसी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप।

स्पष्ट।

धौली=स्वच्छ।

बालक जाने हिया, मानस जाने किया

बालक प्रेम चाहता है, और उम्र मे बडा काम।

बालकों को सिखाना बालकपन ही से चाहिए

स्पष्ट।

बाल का कंबल करना

बात का बतगड बनाना।

बाल की खाल, हिन्दी की चिंदी

व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना।

बाल जंजाल, पलै तो पाल, नहीं तो मूंछो को टाल

बाल एक मुसीबत हैं, रखे जा सकें तो रखो, नही तो मूछो को भी हटाओ।

(मूछे साफ रखनेवालो पर व्यग्य।)

बाल जंजाल, बाल सिंगार

बाल एक विपत्ति हैं और बाल शोभा की वस्तु भी हैं। एक ही चीज़ कभी सुखकर, कभी कष्टकर होती है।

बाल बाधा गुलाम है

पूरा गुलाम है।

बाल बाधा चोर

बहुत चालाक चोर।

बाल बांध कौड़ी मारता है

अच्छा निशानेबाज़।

बाल-बाल गुनहगार, (स्त्रि०)

बहुत विनीत भाव से अपना दोष स्वीकार करना।

बाल हठ, तिरिया हठ, राज हठ

ये तीन हठ प्रसिद्ध है।

बालू की भीत, ओछे का संग,
पतुरिया की प्रीत, तितली का रग

ये स्थायी नही होते।

बालो हाथ छिनाला, और कागो हाथ संदेसा, (स्त्रि०)

ये दोनो ही काम सिद्ध नही होते।

बालो हाथ=बच्चो की सहायता से।

बावन तोले पाव रत्ती

बिल्कुल ठीक बात।

बाबा मरे, निहालू जायें, वही तीन के तीन
बाबा (पितामह) मरे तो नाती जन्मा, फिर वही तीन के तीन रहे, जिनका पेट भरना है।

बामन का बेटा, बावन बरस तक बौंगा
व्यग्य से पडिताई करनेवाले उन ब्राह्मणो के लिए क०, जो केवल दान और भिक्षा पर निर्भर रहते है। बौंगा की जगह आमतौर से पोगा ही कहते है।

बामन की बेटी कलमा पढ़े
(१) एक दुखजनक बात, अथवा असभव बात।
(२) किसी वस्तु की प्रशसा करने के लिए भी कह सकते है कि वह इतनी बढिया या सुस्वादु है कि उसे पाने के लिए ब्राह्मण की लडकी अपना धर्म छोड सकती हे।

बामन के बबुआ कहले, नान जात लतयावले, (भो०)
ब्राह्मण तो सम्मान पाने से और छोटी जाति के लोग पिटने से ठीक रहते हे। यह कहावत ब्राह्मणो की बनाई होगी।

बामन जीमे ही पतयाय
(१) ब्राह्मण भोजन के बाद ही कोई दूसरी बात सुनता है।
(२) ब्राह्मण जब भोजन कर ले, तभी उसकी बात सुननी चाहिए, क्योकि तब वह बहुत प्रसन्न हो जाता है।

बामन नाचें, धोबी देखे
एक फज़ीहत की बात।
यहा नाचने से मतलब है निर्लज्जतापूर्ण काम करना।

बामन वचन परमान
ब्राह्मण की बात ही प्रामाणिक मानी जानी चाहिए। प्राय: व्यग्य मे ही क०।

बामन बेटा लोटे-पोटे, मूल ब्याज दोनो घोटे
(१) ब्राह्मण चिकनी-चुपड़ी बाते करके मूल भी हजम कर लेता है और ब्याज भी, अर्थात दोनो नही देता। अथवा
(२) ब्राह्मण जब तक अपना पावना मय ब्याज के वसूल नही कर लेता, तब तक नही छोड़ता।

बामन मत्री, भाट खवास, उस राजा का होवे नास
जिस राजा का ब्राह्मण तो मत्री और भाट निजी सेवक हो, उसका नाश होता है।

बामन से दान मागते है
उल्टी रीति बरतते है, ब्राह्मण का काम तो दान लेना है न कि देना, क्योकि ब्राह्मणो ने ऐसा नियम बनाया।

बामन हुए तो क्या हुए, गले लपेटा सूत
केवल जनेऊ गले मे डाल लेने से कोई ब्राह्मण नही हो जाता, उसे वैसे कर्म भी तो करने चाहिए।

बारह गाव का चौधरी, अस्सी गांव का राव।
अपने काम न आये तो, ऐसी तैसी मे जाव।
कोई कितना ही बडा आदमी क्यो न हो, पर उससे अगर कोई अपना मतलब न निकले, तो उसका वह बडप्पन किस काम का?

बारह वफात की खिचड़ी, आज है तो कल नहीं
ऐसी वस्तु, जो आज तो बहुतायत से मिल रही हो, फिर न मिले।
(बारावफात मुहम्मद साहब के जीवन के उन अतिम बारह दिनो को कहते है, जब वे बहुत बीमार रहे। इसके अगले दिन उनकी मृत्यु हो गई। इस दिन उनकी यादगार मे खिचडी का फातिहा दिया जाता है, और वह लोगो मे बाटी भी जाती है। उसी से कहा० बनी।)

बारह बरस का कोढ़ी, एक ही इतवार पाक
कोई पुराना रोग एक दिन मे दूर नही होता।
(इतवार सूर्य का दिन माना जाता हे। लोगो का विश्वास है कि इस दिन व्रत रखने से चर्म रोग दूर होते हैं।)

बारह बरस काठ मे रहे, चलती दफा पांव से गये
छूटने की खुशी मे जल्दी के मारे गिर पड़े और पैर टूट गया। दुर्भाग्य की बात।
(प्राचीन काल मे अपराधी को दड देने के लिए उसका पैर लकडी के कुदे मे फसा दिया जाता था, इसी को 'काठ मे देना' कहते थे।)

बारह बरस की कन्या, और छठी रात का वर, मन माने सो कर
बालविवाह पर क०।

छठी रात का=छ. दिन का।

बारह बरस की पठिया, बीस बरस की टटिया

भारत मे स्त्रिया जल्दी बूढी हो जाती है। उसी सदर्भ मे कहा गया है कि बारह वर्ष की अवस्था मे वह युवती थी, पर वीस की होते-होते ठाठ हो गई।

बारह बरस दिल्ली मे रहे, भाड ही झोंका

व्यर्थ समय खोया। एक अच्छे स्थान मे रह कर भी उससे कोई लाभ नही उठा सके।

बारह बरस दिल्ली मे रहे, महसूल नहीं दिया, 'क्या करते थे' ? 'भाड़ झोकते थे'।

दे० ऊ०।

बारह बरस पीछे कूड़ी के भी दिन फिरते है

समय सदा एक-सा नही रहता। कभी-न-कभी अवश्य अच्छे दिन आते है।

कूडी=घूरा।

बारह बरस सेई कासी, मरने को मग्गह की माटी

अन्त बुरा होना।

(हिन्दुओ का विश्वास है कि काशी मे मरने से मोक्ष मिलता है, और कोई अगर मगहर मे जाकर मरे तो वह नरक मे जाता है।)

बारह बाट, अठारह पैंड़े

बारह रास्ते और अठारह पगडडिया, कौन-सा मार्ग ग्रहण किया जाए ?

बहुत उलझा हुआ मामला।

बारह बानी का हो गया

फिर नौजवान हो गया।

(बारह बानी विशेषण का प्रयोग खरे सोने के लिए करते है। बारह बानी याने द्वादशवर्ण अर्थात सूर्य जैसी चमक-दमकवाला। उसीसे उक्त मुहावरा लिया गया।

बारह मे तीन गये तो रही खाक

बारह मे से अगर बरसात के तीन महीने सूखे ही [illegible]कल जाए, तो फिर कुछ बचता नही, क्योकि [illegible]र अन्न पैदा नही होगा।

[illegible]रू जैसी भुरभुरी, धौली जैसी धूप। मीठा ऐसा-कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप।

स्पष्ट।

धौली=स्वच्छ।

बालक जाने हिया, मानस जाने किया

बालक प्रेम चाहता है, और उम्र मे बडा काम।

बालकों को सिखाना बालकपन ही से चाहिए

स्पष्ट।

बाल का कंबल करना

बात का बतगड बनाना।

बाल की खाल, हिन्दी की चिंदी

व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना।

बाल जंजाल, पलै तो पाल, नहीं तो मूंछों को टाल

बाल एक मुसीबत हैं, रखे जा सके तो रखो, नही तो मूछो को भी हटाओ।

(मूछे साफ रखनेवालो पर व्यग्य।)

बाल जंजाल, बाल सिंगार

बाल एक विपत्ति हैं और बाल शोभा की वस्तु भी है। एक ही चीज कभी सुखकर, कभी कष्टकर होती है।

बाल बांधा गुलाम है

पूरा गुलाम है।

बाल बांधा चोर

बहुत चालाक चोर।

बाल बांध कौडी मारता है

अच्छा निशानेबाज।

बाल-बाल गुनहगार, (स्त्रि०)

बहुत विनीत भाव से अपना दोष स्वीकार करना।

बाल हठ, तिरिया हठ, राज हठ

ये तीन हठ प्रसिद्ध हैं।

बालू की भीत, ओछे का संग, पतुरिया की प्रीत, तितली का रंग

ये स्थायी नही होते।

बालो हाथ छिनाला, और कागो हाथ संदेसा, (स्त्रि०)

ये दोनो ही काम सिद्ध नही होते।

बालो हाथ=बच्चो की सहायता से।

बावन तोले पाव रत्ती

बिल्कुल ठीक बात।

बाव न बतास, तेरा आचल क्यों कर डोला।
पूत न भतार, तेरा टेंटा क्यों कर फूला।
कुलटा के लिए क०।
टेटा=स्तन की वोडी।

बावली को आग बताई, उसने ले घर मे लगाई
मूर्ख को कोई खतरे का काम नही सौपना चाहिए। वह उसका जोखिम नही जानता।

बावली खाट के बावले पाये; बावली रांड़ के बावले जाये
जैसो के तैसे होते है।
बावली=पागल, मूर्ख। खाट के सवध मे टेढी-मेढी से मतलव है।
जाये=लडके।

बावले की ब्याही गाय, सब मेटी ले धाके धाय, (पू०)
मूर्ख की गाय व्याई, तो सब उसके यहा मटकी लेकर दौड़े, (दूध लेने के लिए।)

बावले कुत्ते ने काटा है
मूर्खता की बाते करना।

बासी कढ़ी को उबाल आया
(१) समय बीतने पर किसी विषय की चर्चा करना।
(२) अकस्मात क्रोध के लिए भी क०।

बासी फूलों मे बास नहीं, परदेसी बालम तेरी आस नहीं, (स्त्रि०)
स्पष्ट।

बासी बचे न कुत्ता खाय
(१) गरीबी हालत के लिए क०। (२) जो मनुष्य बहुत मितव्ययिता से काम ले रहा हो, वह भी कहता है।

बासी भात मे अल्ला मिया का कौन निहोरा ? (पू०)
जो वस्तु अपने-आप अथवा स्वय के प्रयत्न से मिल गई हो उसमे किसी का क्या एहसान ?

बासी मुह फोका पानी औगुन करे है, (स्त्रि०)
सवेरे खाली पानी पीना नुकसान करता है।

बाहर के खायें, घर के गीत गायें, (स्त्रि०)
वाहवाही के लिए जो फिजूल खर्च करता है, उससे क०।

बाहर त्याग, भीतर सुहाग
पाखडी।

बाहर मिया अलल्ले तलल्ले, घरमे चहे पकें, (स्त्रि०)
ऊपरी शान बघारना, या ऊपरी दिखावट।

बाहर मिया छैल चिकनिया, घर मे लिवडी जोय, (पू०, स्त्रि०)
दे० ऊ०।
लिवडी=सिलबिल्ली।

बाहर मिया झग-झंगाले, घर में नगी जोय, (स्त्रि०)

बाहर मिया पज हजारी, घर में बीबी करमो मारी (स्त्रि०)

बाहर मियां सूबेदार, घर मे बीवी झोके भाड, (स्त्रि०)

बाहर लम्बी धोती, भीतर मड़वे की रोटी, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
मडवा कोदो की तरह का एक हल्का अनाज।

बिंध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर
जो काम हो जाए, वही सार्थक है। जो नही हुआ, वह व्यर्थ है।

बिख को ओखद क्या ?
विप की कोई दवा नही।

बिख सोने के बर्तन मे रखने से अमृत नहीं होता
किसी का स्वाभाविक गुण नही बदलता।

बिगडी लडाई बख्तरपोशों के सिर
लडाई की हार के लिए सिपाहियो को जिम्मेदार ठहराया जाता है, (अफसर के द्वारा)।

बिगाड सवार खुदा के हाथ
बनना-बिगडना ईश्वर के आधीन है।

बिच्छू का मतर न जाने, साप के बिल मे हाथ डाले
जिस काम को बिल्कुल ही नही करना जानते, उसे करने का साहस करना।

बिजया पीवे, सेज्या सोवे, ताके वैद पिछाडी रोवे
भग पी के जो सो जाता है, उसके लिए वैद्य रोता है, अर्थात वह ऐसा बीमार पड़ता है कि फिर अच्छा नही होता।

बिजली कासी पर गिरती है
स्पष्ट।
दुख वडो पर ही पडता है।
कासी=कासा धातु।

बिजली चमके मेहा बरसे
जब विजली चमकती है, तो पानी वरसता है।

बिजली मेहमान, घर मे नहीं तिनका
गरीब के घर किसी वडे आदमी का (भोजन आदि के लिए) आना।

बिजुलिक मारल, लुआठ देख भागे, (पू०)
विजली का मारा सुलगती लकड़ी देखकर भागता है। (एक वार किसी काम मे वहुत हानि हो जाने पर मनुष्य भविष्य मे साधारण मामलो मे भी वहुत सावधान रहता है।)

बिद्या मे बिवाद वसे
जो जितना जानता है, उतना ही तर्क करता है।

बिद्या लोहे के चने है
ज्ञान कठिनाई से प्राप्त होता है।

बिन कुटनापे छिनाला नहीं
कोई भी चोरी, व्यभिचार आदि का काम विचोइए के विना नही होता।

बिन गा—का वधना
विना तली का लोटा।
(१) ऐसा मनुष्य जिसका कोई सिद्धान्त न हो।
(२) दुर्वल चरित्र का आदमी।

बिन घरनी घर पादत है, है घरनी घर गाजत है
स्त्री से घर हरा-भरा लगता है।

बिन घरनी घर भूत का डेरा
विना स्त्री के घर भयावना लगता है।

बिन चूची वारह वरस लड़के को रखता है
झूठा वादा करने वाले से क०।
विन चूची=विना दूध पिलाए।

बिन जने का थनैला हुआ है
वच्चा जने विना ही स्तन का फोडा हो गया।
(१) वेमतलव की झझट सिर आ जाना।
(२) अकारण ही वदनाम होना।

बिन जाने कोन माने ?
स्पष्ट।

बिन जुलाहे ईद
नही होती, क्योकि वह नमाज पढने की दरिया (मुसल्ला) वनाता है।

बिन जुलाहे नमाज नहीं, बिन ढोलक तजीर नहीं
विना जुलाहे के नमाज नही होती, और विना मुनादी के कोई वडी सजा नही दी जाती।

बिन ताल पखावज नाचे है
विना तवला और मृदग के ही नाचता है। व्यर्थ की उछल-कूद मचाता है।

बिन दामो के नौकर हैं
(१) विनम्रता दिखा कर कहना कि हम आपके सेवक हैं।
(२) मुफ्त मे किसी की गुलामी करना।

बिन देखा चोर बाप बराबर
जिस मनुष्य को चोरी करते नही देखा, उससे कुछ कहा नही जा सकता।

बिन परचय परतीत नहीं, (हि०)
विना प्रमाण के विश्वास नही होता।

बिन पैसा-कोड़ी के तेली साहू, टूटी हांड़ी काटू साहू
देहातो मे तेली और कादू (भडभूजा) इन दोनो को अक्सर साहू कहते हे। साहू इन लोगो का एक गोत्र भी होता है, इसीलिए कहा गया है। (तेली और भडभूजा, इन दोनो का धधा ऐसा है कि उसके लिए उन्हे किसी प्रकार की पूजी की आवश्यकता नही पडती, इसलिए भी क०। फूटी हाडी से अभिप्राय उन फूटे घडो से है जो भडभूजे के भाड मे लगे रहते है और जिनमे वह अनाज भूनता है।)

बिन बहू प्रीत नहीं
ससुर अपने जमाई को तभी तक प्यार करता है, जब तक उसकी लडकी जीवित रहती है।

बिन विद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार
विना पढे-लिखे स्त्री-पुरुष वैसे ही है, जैसा कुम्हार का गधा।

बिन बुलाई डोमनी लड़के-वाले समेत आये, (स्त्रि०)
निर्लज्ज, जो बिना बुलाए किसी जगह पहुच जाए।

बिन बुलाये अहमक, ले दौड़े सहनक, (स्त्रि०)
(१) बिना बुलाये न्योते मे आ जाना।
(२) बे मतलब दूसरे के काम मे हस्तक्षेप करना।
सहनक=भोजन करने का थाल।

बिन मांगे मोती मिले, और मागी मिले न भीख
जो मिलनेवाला होता है वह आप ही मिलता है, मागने से भीख भी नही मिलती।

बिन मागे मिले सो दूध, और मागे मिले सो पानी
बिना मागे जो वस्तु मिले, वही अच्छी होती है।

बिन मारे की तोबा करना
(१) व्यर्थ हाय-हाय करना।
(२) मारने से पहले ही रोना।

बिन रुके वैद की घोडी न चले
वह उस स्थान पर अवश्य रुक जाती है, जहा वह रोज खडी की जाती है, अर्थात जहा वैद्य रोगी को देखने जाता है। भाव यह है कि वैद्य बिना बुलाए ही अपने हर रोगी के यहा जाता है, जिसमे उसे मेहनताना मिले या दवा बिके।

बिन रोये तो मा भी दूध नहीं पिलाती
बिना मागे अपनी इच्छा से कोई कुछ नही देता।

बिन लाग खेले जुआ, आज न मुआ कल मुआ
जो बिना युक्ति के जुआ खेलता है, वह हानि उठाता है।
(लाग वास्तव मे ऐसी चालाकी को कहते है, जो पकड मे न आ सके अथवा जिसे चालाकी न समझा जाए।)

बिन होनी होती नहीं, और होनी होवनहार
जो होना होता है, वह होकर रहता है, जो नही होना होता, वह नही होता।

बिन ठगे काम नहीं निकलता
बिना धोखे के व्यापार नही होता।

बिना वसीले चाकरी, बिना बुद्ध की देह।
बिना गुरु का बालका, सिर मे डाले खेह।
स्पष्ट।
वसीला=सहारा, जरिया।
खेह=धूल, मल।

बिनौलों की लूट मे बर्छी का घाव
(१) लाभ थोडा, हानि बहुत।
(२) सामान्य अपराध के लिए कडा दड, यह अर्थ भी हो सकता है।

बिपत पड़ी जब भेंट मनाई, मुकर गया जब देने आई
सुख का अवसर आ जाने पर मनुष्य दुख की सब बात भूल जाता है।
भेट मनाई=देवता को भेंट चढाने का सकल्प किया।
मुकर गया=बदल गया।

बिपत बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय।
क्योकि उसमे मनुष्य को बहुत अनुभव होते है।

बिपत संघाती तीन जने, जोरू, बेटा, आप
विपत्ति मे तीन ही जने साथ देते है स्त्री, लडका और स्वय।

बिफरे रिजाले और भूखे भलेमानस से डरिये
असतुष्ट नीच और भूखे भले आदमी से डरना चाहिए। (वे हानि पहुचा सकते है)।

बिरादर ए हकीकी,
दुश्मन-ए मादरजाद है
सगा भाई ही सबसे बडा दुश्मन होता है।

बिरछ की माया और पुरुष की छाया, (स्त्रि०)
दे० पुरुष की छाया . ।

बिरादरी को न खिलाया, चार कांधी ही जिमा दिये (हिं०)
किसी व्यक्ति की कजूसी के लिए शिकायत की जा रही है कि उसने मृतक के क्रिया-कर्म मे बिरादरीवालो को भोजन नही कराया, केवल अर्थी मे कधा देने-वालो को ही न्योत लिया।

बिल्ली और दूध की रखवाली
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। बिल्ली दूध की रक्षा करेगी, या उसे पी जाएगी।

बिल्ली के ख्वाब मे चूहे कूदें
जिसे जिस चीज की आवश्यकता होती है, चौबीसो घटे उसके दिमाग मे वही चीज रहती है।

जब कोई मनुष्य हर मौके पर अपनी ही माग सामने रखता है, तब क० ।

बिल्ली के ख्वाब में छीछड़े

दे० ऊ० ।

गदे आदमी को गदा काम ही सूझता है, यह भाव भी है।

बिल्ली के भागों छींका टूटा, (स्त्रि०)

(१) अचानक कोई ऐसा लाभ हो जाना जिसकी आशा नही की गई थी।

(२) अयोग्य को परिस्थितियो के कारण यकायक ऊचा ओहदा मिल जाना।

बिल्ली खायेगी नहीं, पर फैला तो भी जायेगी

दुष्ट व्यर्थ की हानि करता है।

बिल्ली चूहा खुदा के वास्ते नहीं मारती

लोग दूसरो का भला भी अपने मतलब के लिए ही करते है।

बिल्ली भी दबकर हरबा करती है

चीते की तरह, वह पहले ज़मीन पर झुक जाती है, फिर हमला करती है।

(दूसरो पर काबू पाने के लिए विनम्र बनने की आवश्यकता होती है।)

हरबा=चोट। आक्रमण।

बिल्ली भी मारती है चूहा पेट के लिये

मनुष्य बुरे कर्म करता है, ज़िंदा रहने के लिए।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुंह पर पजा रख लेती है

(१) अपनी रक्षा सब करते है। अथवा

(२) दूसरो पर हमला करने के पहले अपनी रक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

बिसमिल्लाह के गुम्बद मे बैठे है, (मु०)

(१) साधु-सन्यासियो जैसा जीवन व्यतीत करते हैं।

(२) स्वर्गलोक चले गए, यह अर्थ भी होता है।

(बिसमिल्लाह का अर्थ हे, ईश्वर के नाम पर।)

बिसमिल्लाह ही ग़लत है, (मु०)

काम के शुरू मे ही भूल होने पर क०।

(मुसलमानो मे कोई कार्य आरभ करते समय श्रीगणेशायनम' की तरह प्राय 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पद का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ है उस दयालु ईश्वर के नाम से। बिस्मिल्लाह उसी का पूर्वार्द्ध और सक्षिप्त रूप है।)

बिसयर पकड़, जहर को चाट।
पर नारी संग चालन बाट।

विषधर (सर्प) को भले ही पकडे और भले ही उसका जहर चाटे, पर पराई स्त्री के साथ कभी रास्ता न चले।

बिसवा बिस की गाठ

(१) वेश्या जहर की पुडिया होती है, उससे बचना चाहिए। अथवा

(२) बिस्वा, अर्थात जमीन लडाई की जड है।

(बिस्वा बीघा के बीसवे हिस्से को कहते हैं।)

बिसुनी बिलार, डबरी मे डेरा, (पू०)

लपकी हुई बिल्ली भोजन के बर्तन मे आकर बैठती है, अर्थात चुपचाप आकर बैठ जाती है। बिना बुलाए मेहमान के लिए क०।

डबरी=(१) मिट्टी का बर्तन, (२) सूखे महुओ को उबालकर बनाया गया एक विशेष प्रकार का व्यजन।

बीच के चले जाएंगे, काम दूल्हा दुल्हिन से पडेगा

दे०—बराती किनारे हो जाएंगे . ।

बीज बोया नहीं, खेत का दुख

काम तो किया ही नही और वह सफल होगा या नही, इसकी चिंता लग गई।

बी दोलती, अपने तेहे मे आप ही खोलती, (स्त्रि०)

जो अपने धन के घमड मे चूर हो, उसके लिए क०।

तेहे मे=ताव मे, आच मे।

बीबी को बांदी कहा हँस दी, बांदी को बादी कहा रो दी, (स्त्रि०)

नौकर को नौकर कहने मे बुरा मानता है।

बीबी खैला, दो चिट्टे, एक मैला, (स्त्रि०)

बीबी खैला के पास दो सफेद और एक मैला (लहगा) है। ऊपरी दिखावे पर क०।

बीबी खैला, दो जट्टो, एक मला, (स्त्रि०)

जहां बीबी खैला और जाटनी मिल जाती हैं, वहां मेला हो जाता है।

(जहा दो स्त्रिया इकट्ठी होती हे वहा या तो बहुत बात करती है या लडती है, इसी से कहा गया है।)

बीबी नेकवक्त, दमडी की दाल तीन वक्त, (स्त्रि०)
कजूस औरत।

बीबी बकरी नाव मे खाक उडाती हो
अपना कोई मतलव पूरा करने के लिए बहाना खोजकर जबर्दस्ती दूसरो मे लडना।
(प्रसिद्ध कथा हे कि एक भेडिए ने बकरी पर यह झूठा अपराध लगाकर कि तुम नाव मे धूल उडा रही हो, उसे खा लिया था। उसी से कहावत चली।)

'बीबी बीबी ईद आई', 'चल हरामजादी तुझे क्या'? (स्त्री०)
मालकिन और नौकरानी का वार्तालाप। खर्च की बात बताने से कजूस चिढ जाता है।

'बीबी बीबी ईद आई', 'चल मुरदार, तुझे टिकिये से काम' (स्त्रि०)
अपने स्वार्थ की दृष्टि से कोई बात करना।
दे०—ऊ० भी।
टिकिया=रोटी का टुकडा।

बीवी मक्के न गई, लाड़ली हो आई, (स्त्रि०)
बीवी ने कभी कोई अच्छा काम नही किया, फिर भी उन्हे लोग प्यार करते है। व्यग्य मे क०।

बीबी वारे, बादी खाय, घर की बला कहीं न जाय
बच्चो की नजर उतारने या उनकी बीमारी को दूर करने के लिए पकवान या आटे की लोई को सिर पर से घुमाकर बाहर फेक देते है, जहा उसे कुत्ता खा लेता है। (इसी को 'वारना' कहते है। कहा० का अर्थ यह है कि मालकिन ने बला को दूर करने के लिए पकवान 'वारा' और उसे बादी को ही खिला दिया। इस तरह घर की मुसीबत बाहर न जाकर घर मे ही रही। जब कोई व्यक्ति कोई अच्छा कार्य करते समय केवल परिवार के लोगो का ही ध्यान रखता है तथा दूसरो को नही पूछता, तब क०।)

बीबी हे भरभोली, कान पीतर की वाली, (स्त्रि०)
बीवी अपनी पीतल की बालियो मे ही भूली फिरती है। अर्थात उनका उन्हे बडा नाज है।

बीमार की रात पहाड़ बराबर
बीमार की रात मुश्किल से कटती है, इसलिए कि रात मे बीमारी प्राय बढ जाती है।

बीस पचीस के अदर मे, जो पूत सपूत हुआ, सो हुआ, मात पिता कुल तारन को, जो गया न गया, सो कहीं न गया।
जो गया जाकर अपने माता-पिता को पिंड नही देता, उसका अन्य (तीर्थ) स्थानो मे जाना व्यथ होता है। (प्राय तीर्थ स्थानो के पडे यह कहा करते है।)

बीसी खीसी
बीस वर्ष के बाद स्त्री प्राय बूढी लगने लगती है। भारत के लिए यह बहुत कुछ सत्य हे।

बुड़बक एक गये बड़ गाव, डेरा पायन ऊचे ठाव। बहे बयार आड़ नहि पावें, फाटे गाड़ मलार गावें। (भो०)
गवार के लिए क०।

बुड़बक की जोरू, सब की भौजाई
सब उसकी स्त्री से मजाक करना चाहते हैं।

बुड़बक के धन, फहीम मार खायें
मूर्ख का धन समझदार खाते है।

बुड़बक गइले मछली मारे, ताप अइले गवाय, (भो०)
मूर्ख कोई रोजगार करता है तो गाठ की पूजी ही खो बैठता है।
ताप=बसी, जिससे मछली फसाते हे।

बुडबकदास गये हरवाई, दुई बल मे एको नाई, (भो०)
मूर्खराज खेत जोतने गए, और दो बैलो में से दोनो खो बैठे। (अपनी मूर्खता के कारण)।

बुड़बक देवी के कुल्थी के अच्छत, (भो०)
जैसी देवी वैसी पूजा।
कुल्थी=कोदो की तरह का एक बहुत हलकी जाति का चावल।

बुडबक धनई का रहे का बास, कोठी मे चावर घर मे उपास, (भो०)
मूर्ख को धन का क्या सुख? कुठले मे चावल रखे है फिर भी घर के लोग भूखे है। मूर्ख धन का उपयोग नही जानता।

बुडबक वर के साझे बिछौना, (भो०)
मूर्ख दूल्हा के विस्तरे शाम से ही लग जाते हैं।

बुडभस लगी है
(१) वुढापे मे जवान वनने का शौक चर्राया है।
(२) दूसरा लडकपन सवार है।

बुड्ढा ब्याह करे, पडौसियो को सुख हो गया
हँसी मे ही क०।

बुड्ढा हुआ ऊंट, पर मूतना न आया
सयाने आदमी को काम का शऊर न होना।

बुड्ढी घोडी लाल लगाम
वेतुका काम।

बुड्ढी वकरी ओर हुडार से ठट्ठा
कमजोर होकर भी अपने से अधिक ताकतवर से छेडखानी करना।

बुड्ढी भैंस का दूध शक्कर का घोलना
बुड्ढे मर्द की जोरू गले का ढोलना
बुड्ढा अपनी औरत को वहुत सहेजकर रखता है।
ढोलना=तावीज। हार।

बुड्ढी हुई नायका इस हाल को पहुंची।
सिर हिलने लगा छातिया पत्ताल को पहुची।
(नज़ीर)
वुढापा आने पर अग शिथिल हो जाते हैं।

बुड्ढे की न मरे जोरू, बारे की न मरे मां
क्योकि वुढापे मे स्त्री के मरने से वडा कष्ट होता है और वालक भी मा के मरने से अनाथ हो जाता है।

बुड्ढे की सीख, करे काम को ठीक
वडे वूढे की सीख काम आती है।

वुड्ढो ने जो काम सिखाया, धोक। भूल न उसमे पाया
स्पष्ट।

वुढापे मे अक्ल मारी गई है
मूर्खता के काम करते हे।

बुढापे मे मिट्टी खराव
वूढा कष्ट पाता हे और लोग उसकी हँसी उडाते हैं।

वुढिया को पैठ विना कल परे ?
वुढिया को वाजार गए विना चैन कहा? जव कोई अपनी आदत नही छोडता तव क०।

बुढ़िया गजब की पुड़िया
लडाकू वुढिया के लिए क०।

बुढिया दीवानी हुई, पराये बरतन उठाने लगी
सयाना मूर्ख।

बुढिया मर गई तो कुछ गम नहीं, पर फरिश्तो ने घर देख लिया
अव वे फिर आ सकते है।
फरिश्ते=मृत्यु के दूत।

वुरा कहनेवाले पर तीन हर्फ़, (मु०)
फारसी के लाम, ऐन और नून इन तीन अक्षरो से वने 'लान' शव्द से मतलव हे जिसका अर्थ होता है 'धिक्कार' या 'थू'।

बुरा बेटा, खोटा पैसा, वक्त पर काम आ जाता है
वुरी चीज भी कभी-न-कभी काम आ ही जाती है, उसका तिरस्कार करना टीक नही।

बुरा हाकिम, खुदा का गजब
वुरा अफसर ईश्वरीय कोप हे।

बुरी घडी न आवे
किसी पर कभी विपत्ति न पडे।

बुरे का साथ दे सो भी बुरा
स्पष्ट।

वुरे का साथी कोई नहीं
स्पष्ट।

वुरे की वुराई से डरिये
वुरे के वुरे कामो से डरना चाहिए।

वुरे तुझ से डरिये या तेरी वुराई से ?
वुरा स्वय भी दुष्ट होता है।

वुरे भले मे चार अगुल का फर्क हे
वुरे भले मे वहुत अतर नहीं, वही काम थोडी सी सावधानी से सुधरता है, और वही असावधानी से विगड भी जाता है।

वुरे वक्त का अल्लाह बेली
दुख के समय ईश्वर के सिवा कोई सहायता नहीं करता।

वुरे वक्त का कौन है कुछ टूटा
दे० ऊ०।

जुज=सिवा।

बुरे से खुदा भी डरता है

अत उससे बचना चाहिए।

बुरे से देव डरायें

दे० ऊ०।

बुलबुल का-सा चोंडा, (स्त्रि०)

बुलबुल की कलगी की तरह सजाए गए बाल। (ऐसे बाल, जिन्हे गृहस्थ परिवार की स्त्रिया नही सजाती।)

बुलावै, न चलावै, मोर तीन बखरे, (पू०)

किसी ने उसे न बुलाया, न चलाया, फिर भी वह आकर अपने तीन हिस्से मागती है।

बिना बुलाए निमत्रण मे पहुच जाना, अथवा बिना पूछे-ताछे बीच मे बोलना।

बुलावै न चलावै, मै तो दुल्हन की चाची

जबर्दस्ती अपना अधिकार बनाना।

बुवद हम पेशा, बाहम पेशा दुश्मन, (फा०)

एक ही पेशे के दो आदमियो मे कभी समझौता नही हो सकता, क्योकि वे एक दूसरे से ईर्ष्या करते है।

बूंट बड़ा होय तो भनसार न फोड़े

एक चना, कितना ही बडा हो, भाड नही फोड सकता।

दे०—अकेला चना...।

बूंद का चूका घड़े ढलकावे

जब कोई मनुष्य मौके पर किसी साधारण मामले मे चूक जाए और बाद मे अपनी उस भूल को मिटाने का प्रयत्न करता फिरे, तब क०।

(कथा है कि एक गधी बहुत-सा इत्र लेकर किसी राजा के पास बेचने गया। इत्र दिखाते समय उसकी एक बूद फर्श पर गिर पडी। राजा ने तुरत उसे उगली से पोछा और मूछो से लगा लिया। राजा का यह क्षुद्र कार्य देख गधी मुस्करा कर रह गया। राजा का मत्री उसके चेहरे को देख इस बात को ताड गया। उसने गधी का सब इत्र खरीदकर मुह मागा दाम दे दिया। राजा को लोभी समझकर गधी कही दूसरे दरबार मे जाकर उसकी हसी न उडाए, इस विचार से उसने फिर वह सब इत्र उस गधी पर ही डलवा दिया। गधी भी सब बात समझ गया, और यह कहता हुआ चला गया कि 'बूद का चूका घडे ढलकावे, पर उस बूद से भेट कहा ?' अर्थात राजा का जो हलकापन उस गिरी हुई बूद को उठाकर सूघने से प्रकट हो चुका है, वह अब मेरे ऊपर घडा भर इत्र लुढकाने से छिप नही सकती।

'बूद से बिगडी हौज से नही सुधरती'—इस प्रकार भी उक्त कहावत प्रचलित है।)

बूंद-बूंद कर के तालाब भरता है

थोडा-थोडा सचय करने से बहुत इकट्ठा हो जाता है।

बूंद से गई फिर हौज से नहीं आती

दे०—बूद का चूका . ।

बू गई, बूदार गई, रही खाल की खाल

शरीर की नश्वरता पर क०।

बूचा सबसे ऊंचा

ऐसा मनुष्य (या ऐसी वस्तु) जो सबसे अलग दिखाई पडे।

बूचा=जिसका कान कटा हो। प्राय कान कटे कुत्ते को ही बूचा कहते हैं।

बूड़ा बस कबीर का उपजे पूत कमाल

दे०—डूबा बस .।

बूढ़ न सवाद घीव खिचड़ी, (स्त्रि०)

बूढा अच्छी चीज खाना नही जानता।

बूढ भइलन, नाक लगे रहिलन, (पू०)

बूढे तो हो गए, पर नाक लगी हुई है।

जो सयाना होकर भी लडको जैसा काम करे, उससे क०।

बूढ भइल, बुढघौस न छूटल, (स्त्रि०)

बूढे हो गए पर लडकपन नही छूटा।

बूढ़ भई गुइया दिमाग मोर वैसे

बूढी हो गई, पर दिमाग वैसे ही है, (जैसे जवानी मे थे।)

बूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम

रूप-गुण के विरुद्ध नाम।

बूढा चोचला जनाजे के साथ, (स्त्रि०)

वूढी औरत के नखरे मरने पर ही छूटते है ।

बूढा जाने किया, बालक जाने हिया

दे०—बालक जाने ।

बूढ़ा वनिया और बेर चुनने जाये !

एक असभव बात । वनिया ऐसा काम नही करेगा, जिसमे उसे कोई लाभ न हो ।

बूढ़ा बाला बराबर होता है

बूढे और लडको की कुछ आदते एक-सी होती है ।

बूढ़ी जुरवा, नाम खतीजा

रूपगुण के विरुद्ध नाम ।

(खतीजा का अर्थ रूपवती होता है ।)

बूढ़े कलावंत की कौन सुने

बूढे गवैये का गाना कोई नही सुनता ।

बूढ़े तोते भी कहीं पढ़ते हैं ?

बढे आदमी को कोई काम नये सिरे से नही सिखाया जा सकता।

बूढ़े मुंह मुहासे, लोग आये तमाशे

बूढा आदमी अगर जवानो का-सा आचरण करे तो वह एक हँसी की बात हो जाती है ।

(मुहासे चेहरे की फुन्सिया होती है जो जवान लडको को ही निकलती हे। बूढो को निकले तो लोग निस्सदेह तमाशा देखने आएगे ।)

बूर के लड्डू खाय सो पछिताय, न खाय वह भी पछताय

दे०—खाए तो पछताए ।

वेअदव वेनसीव, बाअदव बानसीव, (फा०)

वडो का सम्मान न करनेवाला अभागा होता है, सम्मान करनेवाला भाग्यवान ।

वे ऐब जात खुदा की

केवल ईश्वर ही निष्कलक ह ।

बेकार मवास कुछ किया कर, कपड़े ही उधेड़ कर सीया कर

वैठे रहने से कुछ-न-कुछ करना अच्छा ह ।

मवास=(मवास), मत रह ।

वेकारी विकारी

खाली वैठे रहने से स्वास्थ्य खराब होता है ।

विकारी=(विकारी) विकार उत्पन्न करनेवाला ।

बेकारी से बेगारी भली

बैठे रहने की अपेक्षा मुफ्त मे ही दूसरो का काम कर देना अच्छा ।

बेखर्ची में आटा गीला

अव्वल तो पैसा पास मे नही, फिर आटा गीला हो गया । अव उसे ठीक करने के लिए आटा कहां से आए। जव कोई ऐसा काम सामने आ जाए, जिस पर पैसा खर्च करना वहुत जरूरी है, पर गाठ मे कुछ न हो, तव क० ।

बेखार गुल नहीं

सुख के साथ दुख लगा है।

खार=काटा ।

गुल=फूल ।

वेगाना सिर कद्दू वरावर

दे०—पराया सिर कद्दू .।

वेगाना सिर पसेरी वरावर

दे०—पराया सिर पसेरी ।

वेगानी आस नित उपास

दे०—पर आसा ..।

वेगानी थैली का मुंह सकरा

दे०—पराई थैली . ।

वेगाने कारन लूली तोड़ना

दूसरे के खाने के लिए मिठाई वनाना। व्यर्थ का परिश्रम करना।

(लूली जलेवी की तरह की एक मिठाई होती है ।)

वेगाने कारन लूली तोडे टाग. (स्त्रि०)

दूसरे के लिए लगडी अपनी टाग तोडती है ।

दे०—ऊ० ।

वेगाने खत्ते पर झींगुर नाचे

दूसरे की वस्तु पर घमड करना ।

खत्ता=अनाज की खेती ।

वेघरनी घर पावत है है घरनी घर गाजत है, (पू०)

दे०—विन घरनी. ।

वेघरनी घर भूत का डेरा

दे०—विन घरनी.. ।

वेच-वेच मेरी पखनी का व्याह, (स्त्रि०)
लडकी के व्याहे में प्राय' वहुत खर्च करना पडता है। उसी पर क० कि वेचो घर की सपत्ति और करो लडकी की शादी।

वेचे के साग, करे मोतियो के दाम, (पू०)
अपनी हैसियत से वाहर वात करना।

बेचे सो बंजारा, रक्खे सो हत्यारा, (हिं०)
माल को वेचना ही अच्छा है, रख छोडना अच्छा नही।

वेजड़ा के पीसनहारी, गेहूं के गीत गावे, (स्त्रि०)
(१) असंगत काम।
(२) हेसियत से वढकर वात करना।

वेजर बिसनी भड़वे बराबर
(१) विना पैसे का व्यसनी भडुवे के समान है।
(२) विना पैसे की रडी भडुवे के समान हे। व्यसनी=किसी भी तरह का नशा करनेवाला, पान, तमाखू आदि भी उसमे शामिल है।

वेटा खाय, वाप लखाय; कलयुग अपना बल दिखलाय
पुत्र जव पिता की सुख-सुविधा को कोई ध्यान न रखे, तव क०।

बेटा बन के सब ने खाया है, बाप बन के कोई नही खाता
प्रेम से बोलनेवाले को सब चाहते है, रोव जमानेवाले को कोई नही।

बेटा बेटी बस का अच्छा
आज्ञाकारी लडका या लडकी ही प्रशसनीय हे।

बेटा मरियो, पर तिस्सर न पड़ियो, (स्त्रि०)
तीसरे लडके का जीने की अपेक्षा मर जाना अच्छा। लोक-विश्वास।
(एक के वाद एक तीसरे लडके का होना वहुत अशुभ मानते है।)

वेटा लायगा चमारी, वह भी बहू कहलायेगी हमारी, (स्त्रि०)
(१) जव कोई अपनी खराव चीज को अच्छी वताए, तव क०।
(२) लडके के हर काम की सराहना करनी पडती है, यह अर्थ भी निलकता है।
(३) वहू देखने मे कितनी ही वुरी क्यो न हो, फिर भी वह हमारे घर की लक्ष्मी ही कहलाएगी।

वेटा हुआ जव जानिए, जब पोता खेले बार
पुत्र का होना तभी सार्थक है, जव घर मे पोता खेलता फिरे, क्योकि पोता हो जाने से वश के आगे वढने की आशा हो जाती है।

वेटी और ककड़ी की वेल बराबर होती है
दोनो जल्दी वढती हैं।

वेटी का धन निभाना है, आते भी रुलाये, जाते भी रुलाये
लडकी का होना अच्छा नही, उसके पैदा होने पर भी दुख होता है और व्याह के बाद जब वह ससुराल जाती है, तव भी दुख होता है।

वेटी ने किया कुम्हार, और मा ने किया लुहार। न तुम चलाओ हमार, न हम चलाएं तुम्हार।
जहां दोनो एक-सी वुरे हो, वहा कौन किसकी कहे?

वेटी ससुरा न जाती, मन-मन गाजती, (स्त्रि०)
लडकी (किसी वजह से) ससुराल नही जाती, मन-ही-मन क्रोध से उफनती रहती है।
किसी से अपनी वात न कह पाना।

बेटे से नाम चलता है
वश वढता है।

वे थांग चोरी नहीं होती
विना भेद के चोरी नही होती।

वेदर्द क़साई, क्या जाने पीर पराई? (स्त्रि०)
हृदयहीन व्यक्ति।

वेदिल नौकर, दुश्मन बरावर
मन लगाकर काम न करनेवाला नौकर अच्छा नही।

वेधर्मा भई ओर वेहना के साथ मे, (पू०, स्त्रि०)
वुरा काम किया और कुछ मजा भी नही आया।
गुनाह वेलज्ज़त।
वेधर्म = धर्मभ्रष्ट।
(वेहना हलकी जाति का मुसलमान होता है और उक्त वात कहनेवाली हिन्दू है।)

वे फिक्री अजव चीज है
वहुत वढिया चीज़ है।

बे बूझ नगरी, बे बूझ राजा; टके सेर भाजी, टके सेर खाजा

घोर कुप्रबध और अराजकता।

(कथा है कि किसी समय एक साधु अपने चेले के साथ देशाटन करता एक नगर मे पहुचा। वहा उसने चेले को आटा लेने के लिए वाजार भेजा। चेले ने सभी चीजे एक ही भाव विकती देखकर मगद, मालपुए खरीद लिए, और प्रसन्न होता हुआ गुरु के पास आया। परतु साधु ने जब यह देखा तो उसने ऐसे स्थान मे रहना पसद नही किया, जहा सब वस्तुए एक भाव मिल रही हो, और चेले को वही छोडकर वह अन्यत्र चला गया। यहा चेला उस नगर मे मौज से रहने लगा और मालटाल खाकर कुछ दिनो मे काफी मोटा हो गया। सयोगवश नगर मे एक खून हो गया। वहुत तलाश करने पर भी हत्यारे का पता नही लग सका। राजा इस पर वडा क्रुद्ध हुआ और उसने आज्ञा दी कि नगर मे जो भी सबसे मोटा आदमी मिले, उसे पकड कर फासी दे दी जाए। सिपाहियो ने उसी चेले को सवसे मोटा ताजा जानकर पकड लिया और फासी के लिए राजा के सामने ले गए। साधु को जव इसका पता चला तो चेले को वचाने के लिए दौडे आए। राजा के पास आकर वोले—खून मैने किया है। फासी मुझे मिलनी चाहिए। यह आदमी निरपराघ है, इसे छोड दीजिए। इस पर सिपाहियो ने चेले को छोडकर गुरु को पकड लिया। पर जव वे उसे फासी की टिकटी के पास ले गए तो चेला चिल्ला उठा खून तो मैंने किया है। इन्हे छोड दीजिए। इस तरह दोनो मे विवाद छिड गया। एक कहता मैंने खून किया है। दूसरा कहता—नही मैने किया है। इस पर राजा वडे चक्कर मे पड गए और उन्होंने दोनो को छोड दिया। साराश कथा का यह है कि जहा सब चीज एक भाव मिलती हो, वहा कभी न्याय और सुप्रवघ नही हो सकता। इस कथा पर आघारित भारतेन्दु हरिश्चद्र का 'अंधेर नगरी' नामक एक सुदर प्रहसन है।)

बे ब्याही खाये रोटियां, और ब्याही खाये बोटियां

ब्याह हो जाने के बाद लडकी जब ससुराल चली जाती है, तो हमेशा उसे कुछ-न-कुछ भेंट-सौगात देते रहना पडती है। इसी से क०।

बोटिया=हड्डिया। खाये बोटिया का भाव यह है कि ब्याह के बाद उस पर और भी अधिक खर्च करना पडता है।

बे माघे घी खिचड़ी खाये, बे मेहरी ससुरारे जाये, बे भादों पेन्हाई पव्वा, कहैं घाघ ये तीनों कव्वा।

जो माघ को छोडकर दूसरे महीनो मे घी खिचडी खाए, स्त्री के मर जाने पर ससुराल जाए और भादो के सिवा दूसरी ऋतु मे झूला झूले' घाघ कहते हैं, ये तीनो ही मूर्ख है।

बे मीर बाजी अबतर

फ़र्जी के पिट जाने पर शतरज की वाजी कमजोर पड जाती है। बिना मालिक या अफसर के काम गडवड हो जाता है।

बे मेह की डांवरी, घोड़ा बिना लगाम। बे माथ के लश्कर, तीनों भइल निकाम। (ग्रा०)

बिना वर्षा के खेत जोतना, बिना लगाम का घोड़ा और बिना नायक की फौज; ये तीनो व्यर्थ हैं।

बेर खासी का घर है

स्पष्ट।

बेरों में गुठलियों का मिलाना

अच्छी वस्तु मे निकम्मी का मेल करना।

बेल के मारे बबूल तले, बबूल के मारे बेल तले

बेल के नीचे गए तो उसका फल सिर पर गिरा, बबूल के नीचे गए तो उसके काटे शरीर मे छिद गए।

कही भी आश्रय न मिलना। अभागा मनुष्य।

बे-लज्जी बहुरिया पर घर नाचै, (स्त्रि०)

निर्लज्ज वह दूसरे के घर घूमती-फिरती है।

बेल पक्का तो कौवों के बाप को क्या ?

माना कि कोई वस्तु बहुत बढ़िया है, पर वह यदि हमे सुलभ नही, तो उससे हमे लाभ क्या ?

(बेल के ऊपर का छिलका इतना कडा होता है कि

कौवा उसे अपनी चोच से तोड नही सकता और उसका गूदा नही खा सकता।)

वेल फूटा राई-राई हो गया

वेल (नीचे गिरकर) फूटा तो टुकडे-टुकडे हो गया। आपस की फूट से वहुत हानि होती है।
(राई या सरसो का दाना वहुत छोटा होता है। उसी से मुहावरा राई-राई वना, जिसका ठीक अर्थ छार-छार है।)

वेल वढ़ावे और जड़ काटे

मूर्ख आदमी ।
(जो वेल को सीचता और उसकी जड भी काटता है। धूर्त या कपटी के लिए भी क०।)

वेल, ववूल, खाक और धूल

दोनो ही एक से हानिकारी। एक के नीचे जाने से सिर फूटता है, दूसरे के पास जाने से काटे छिदते है।

वेल मढ़े चढ़ते नहीं दिखाई देती

काम पूरा होते नही दिखाई देता।
मढे=मडप पर।

वेवक्त की शहनाई, मुए कूढ़ ने वजाई, (स्त्रि०)

कोई जव विल्कुल ही वेमौके की वात करे, तव क०।

वेवारिसी नाव डावांडोल

जहा कोई देखभाल करनेवाला नही होता, वहा सब काम गड़वड़ हो जाता है।
(प्राय: अनाथ लड़के के लिए क०।)

वेसवा सती, न कागा जती

वेश्या चरित्रवान नही होती, और कौवा भी निरामिष-भोजी नही होता।

वेसिरी फौज

वेमालिक या विना अफसर के कार्यकर्ता।

वेहयाई का बुरका, मुंह पर डाल लिया है

शर्म लाद ली है।

वेहया के नीचे रूख जमा, उसने जाना छाह हुई

ऐसा निर्लज्ज आदमी, जिसे किसी भी वात की शर्म न हो।

वंगनो का नौकर नहीं हूं, आपका नौकर हूं

ठकुर-सुहाती कहना।
(कथा है कि एक दिन किसी अमीर ने अपने मुसाहिव से कहा कि वैंगन की तरकारी वहुत अच्छी होती है, वैद्यक मे इसकी वडी प्रशसा लिखी है। उसके खाने से भूख वढती है। मुसाहिव ने कहा—जी हा हुजूर, तभी तो उसके सिर पर मुकुट भी वना हुआ है। इसके वाद एक दिन फिर अमीर ने कहा—भाई वैंगन तो वडी खराव चीज़ हैं। भूख मारता है, और कफ भी पैदा करता है। मुसाहिव ने कहा—जी हा हुजूर, तभी तो उसके सिर पर कांटे है। अमीर वोला—उस दिन तो तुम वैंगनो की प्रशसा कर रहे थे, और आज मेरे निंदा करने पर तुम भी निंदा करने लगे, क्या वात हे? इस पर मुसाहिव ने जवाव दिया—हुजूर, मैं आपका नौकर हू, न कि वैंगनो का।)

वैठा वनिया क्या करे? इस कोठे का धान उस कोठी मे धरे?

कोई खाली वैठा आदमी व्यर्थ का काम करे, तव क०।

वैठी वुढ़िया मंगल गाय

वूढी औरत को कुछ काम नही तो वह गाना ही गाती हे। करनेवाला कुछ-न कुछ करता ही हे।

वैठे-वैठे तो कारूं का खजाना भी खाली हो जाता है

जव कोई उद्योग न करे, और वैठके ही खाए, तव क०।
कारूं=प्राचीन काल का एक वहुत अधिक धनवान जो हज़रत मूसा का वडा भाई और वहुत वडा कजूस माना जाता हे।

वैठे से वेगार भली

खाली वैठने की अपेक्षा मुफ्त मे दूसरो का काम करना अच्छा।

वैद करे वैदाई, चंगा करे खुदाई

(१) वैद्य अपनी वैद्यकी का पैसा लेता है, आराम तो ईश्वर करता है।
(२) वैद्य का तो केवल नाम होता है, आराम ईश्वर ही करता है।

वैद की वैदाई गई, कानी की आंख गई

दोनो ओर नुकसान का होना—एक को मज़दूरी नही मिली, दूसरे का काम विगड गया।

वैरी का बोल, बसूले का छोल

दुश्मन की फब्तिया बसूली की तरह कलेजे को छीलती है।

बैरी बोल घिनावने, मरिए अपने बोल

मृत्यु तो अपने समय पर ही होती है, पर वैरी के बोल सहे नही जाते, कोसने से किसी का कुछ नही बिगडता, पर कोसना सहा नही जाता।

बैरी से बच, प्यारे से रच

दुश्मन से बचकर, और शुभेच्छु से मिलकर रहना चाहिए।

बैल का बैल गया, नौ हाथ का पगहा गया

पूरी हानि हुई।

पगहा=रस्सी, जिससे ढोर बाधे जाते है।

बैल न कूदी, कूदी गौन, यह तमाशा देखे कौन?

बैल के ऊपर अनाज से भरी बोरी लादी गई, तो बैल ने तो कोई आपत्ति नही की, पर बोरी उछल-कूद मचाने लगी।

जब किसी से कोई (चुभती हुई) बात कही जाए और वह तो उसका कोई उत्तर न दे, पर दूसरा आदमी चिढ कर बोल उठे, तब क०। बिना मतलब बीच मे बोल उठना।

बैल, बधिया; साझे अधिया, (कृ०)

साझे की खेती मे बैल भी आधे रहते हैं, अर्थात दोनो पक्षो को अपने-अपने बैल देने पडते है।

बैल सरकारी, यारों की टिटकारी

मुफ्त की चीज का मजा लूटना।

बैसाख, जेठ द्वितीयायाम, उत्तर ऊंचो चांद।
यह निहचे कर जानिए, पृथ्वी मेह सुलाभ। (कृ०)

यदि बैसाख और जेठ की शुक्लपक्ष की द्वितीया को उत्तर की ओर चद्रमा ऊचा दिखाई दे, तो निश्चित रूप से बहुत वर्षा होती है।

बोटी दे कर बकरा लेते हैं

खूब नफे का सौदा करते हैं।

बोटी नहीं तो शोरबा ही सही

जो मिले वही बहुत।

बोया गेहूं उपजा जौ

(१) भलाई के बदले बुराई मिली।

(२) काम कुछ किया, परिणाम कुछ निकला।

बोया न जोता, अल्लाह मियां ने दिया पोता (मु०, स्त्रि०)

अचानक भाग्य खुल जाने पर क०।

बोये आम, फले भाटा

दे०—बोया गेहू....।

बोये पेड़ बबूल के, आम कहां से होय?

जैसा किया वैसा पाया।

बोलता चाकर मुनीब के आगे गूंगा

बातूनी नौकर मालिक के आगे घबरा जाता है।

बोलता है जब तलक है बोलता

सास रुकी और खत्म।

बोलती पर सदमा है

इतना गहरा दुख है कि बोल नही पाता।

बोलती बंद हो गई

(१) मर गया।

(२) किसी बात का जवाब देते न बने, तब भी क०।

बोलते की आशनाई है

(१) जब तक जीवन है तभी तक मित्रता है। इसलिए उसे क्यो थोडे समय के लिए तोडा जाए; ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

(२) मित्र के मरने पर दुख प्रकट करते हुए भी क०।

बोली बोली तो ये बोली 'मेरी जूती बोले' (स्त्रि०)

एक औरत दूसरी से लड़ते समय ताना मार कर कह रही है।

बोले के न चाले के, मैं तो सूते के भली, (स्त्रि०)

सुस्त और आलसी औरत के लिए क०।

सूते के भली=सोते हुए ही अच्छी।

बोले तो बीबी मेरी, नहीं तो दरकार नहीं तेरी

स्पष्ट।

बीबी=औरत।

बोलो तो बोलो, नहीं तो पिंजडा खाली करो

या तो अच्छी तरह रहो, या फिर यहा से जाओ।

वोहनी ठोनी, रद वला, (व्य०)
वोहनी होने से वला टलती है, विक्री अच्छी होती है।
वौना जोरू का खिलौना
स्पष्ट।
ठिगने आदमी को चिढाने के लिए क०।
वौहरे की राम-राम, जम का संदेशा, (हिं०)
क्योकि आकर तकाज़ा करेगा।
वौहरा=साहूकार।
व्याज बढ़ावे धन घना, राड़ बढ़ावे छोय।
जैसे गंधक आग में, गिरे तो दूनी होय।
स्पष्ट।
राड=झगडा ।
छोय=क्षोभ। क्रोध।
व्याज मोटा, मूल का टोटा, (व्य०)
अधिक व्याज पर रुपया देने से असल भी डूवने का डर रहता है।
व्याह का असगुन मालूम भये, जब लहकौरे मे आये भट्टा, (पू०)
लहकौर मे जव (दूल्हा के लिए) आये तो पता चल गया कि व्याह कैसा होगा, अर्थात वरातियो को क्या खाने को मिलेगा।
लहकौर=एक रस्म, जिसमे कन्यापक्ष की स्त्रिया वर के लिए जनवासे मे भोजन लेकर आती है।
व्याह न कराव, झूठ-मूठ का चाव
(१) जानवूझकर किसी को धोखे मे रखना।
(२) झूठी वात करना।
व्याह नहीं किया, वरातें तो देखी हैं
हमने स्वय कोई एक काम नही किया, तो क्या हुआ, दूसरो को करते तो देखा है।
(जव कोई किसी से ताना मारकर कहे कि तुम इस काम को करना क्या जानो, तव वह जवाव मे कहता है।)
व्याह पीछे पत्तल भारी, (हिं०)
व्याह हो चुकने पर एक पत्तल का खर्च भी अखरता हे। जव उत्सव समाप्त हो जाता है, तव फिर उस सवध मे सामान्य खर्च करना भी एक वोझ मालूम पड़ता है।

व्याह में खाई वूर, फिर क्या खायगी धूर ?
साधनो के रहते भी अगर कष्ट उठाया तो सुख तो फिर कभी मिल ही नही सकता।
वूर=लकड़ी का वुरादा निकम्मी वस्तु।
व्याह में बीद का लेखा
वेमौके की वात। हर काम का एक समय होता है।
वीद=चरागाह।
(फैलन ने यही अर्थ किया हे, पर वह समझ मे नही आता।)
व्याह हुआ नहीं, गौने का झगडा
व्याह हुआ नही, और वहू की विदा के लिए झगड रहे है।
गौना=व्याह के वाद भी एक रस्म, जिसमे वर-वधू को अपने साथ घर ले जाता है।
व्याही न वरात चढ़ी, डोली मे बैठी, न चूं-चूं हुई
किसी विना व्याही से ताना मारकर कहा जा रहा है।
व्याही वेटी का घर रखना और हाथी पालना बराबर है
(जमाई सहित) लडकी को घर मे रखने से वहुत खर्च उठाना पडता है।
व्याही वेटी पड़ौसन दाखल
क्योकि फिर वह पराये घर की हो जाती हे, और वहुत कम मायके आती है।

भंग कहे 'मैं रगी जंगी', पोस्त कहे, 'मैं शाहेजहां' अफीम कहे 'मैं चुन्नी वेगम'
नशेवाजो की ओर से नशो की प्रशसा।
भंग, गाजा जिन देह गंवारन के, हडिया भर भात संहारन के, (पू०)
भग और गाजा गवारो को नही देना चाहिए, अन्यथा वे भोजन का नाश मारेंगे।
(भग और गाजा दोनो ही भूख वढानेवाले माने जाते है। नशे मे आदमी यो भी ज्यादा खाता है।)

भंग पीना आसान है, मौजें जान मारती है

बिना जाने-बूझे किसी काम को कर डालना आसान है, पर उसका परिणाम भोगना कठिन है।

मौजें=तरगे, नशे के झोके।

भंगी की जात क्या, झूठे की बात क्या ?

झूठे का विश्वास नही करना चाहिए।

भइल ब्याह मोर करवा का, (भो०)

(१) काम निकल जाने पर दूसरो को ठेगा वता देना। अथवा (२) वक्ता कह रहा हे कि अब तो मेरा काम वन गया, मेरा कोई क्या कर सकता है ?

भई अंधियारी, फूली छाती, चीन्ह पड़ई राड अहबाती

भ्रष्ट विधवा के लिए क०।

भई छछूंदरी सर्प गति, उगलत बने न खात

कठिन असमजस मे पड जाना। किसी काम को करते वने न छोडते, तब क०।

(लोक प्रवाद है कि साप अगर छछूदर को पकडकर निगल ले, तो कोढी हो जाता हे और अगर उगल दे तो अघा।)

भकुआ भींगे गाव के गेंवड़े, (पू०)

मूर्ख आदमी गाव के वाहर ही खडा भीगता है, उसमे इतनी वुद्धि नही कि जल्दी से गाव मे चला जाए और किसी घर की छाया मे बैठे।

गेवडा=गाव के वाहर का हिस्सा, सीमात।

भगले चोर कठरिया हाथ (भो०)

भागते चोर को जो भी चीज मिलती हे, वह उसी को ले जाता हे।

कठरिया=कठौती। लकडी का छोटा वर्तन। यहा मतलव किसी भी रद्दी चीज से है।

भजन और भोजन एकान्त भला

ये दोनो एकान्त मे करना चाहिए।

भट पड़े वह जमाना, ननती को घूरे नाना

जमाने की खूबी पर क०।

भट पड़े वह सोना, जिससे टूटे काना, (स्त्रि०)

जिस वस्तु मे हानि हो, उसे अलग कर देना चाहिए, फिर वह कितनी ही अच्छी क्यो न हो।

ऐसे लडके या सवधी के लिए क०, जिससे बहुत कष्ट पहुच रहा हो, अथवा जो एक बोझ वन गया हो। जिस धन के उपार्जन मे बहुत परिश्रम करना पड रहा हो, अथवा जिसके कारण कोई विपत्ति आ सकती हो, उसके लिए भी क०।

भट, भटियारी, वेस्वा, तीनो जात कुजात।
आते का आदर करें, जात न पूछें बात।

स्पष्ट।

भट=भाट, याचक ब्राह्मण।

भड़क भारी, खीसा खाली

कोरी शानशौकत।

खीसा=जेब।

भड़भड़िया अच्छा, पेट पापी बुरा

जो तुरत अपने विचारो को प्रकट कर दे, वह अच्छा, पर जो किसी बात को मन मे रखे (और वाद मे वदला लेवे) वह बुरा।

भड़भूजन की लड़की, केसर का टीका

अपनी मर्यादा के भीतर न रहना।

भड़वे को भी मुंह पर भड़वा नहीं कहते

किसी के मुह पर उसे बुरा भला नही कहना चाहिए।

भर दे भर पावे, काल कंटक पास न आवे

जितना देगा उतना ही पाएगा और सुखी रहेगा। भिखारियो की टेर।

भरम मारे भरम जिआवे

भ्रम से ही आदमी मारा जाता है, भ्रम उसे जीवित भी रखता है।

भरमा भूत, शंका डायन, (हिं०)

भ्रम और शका दोनो ही हानिकारक हैं।

(इसलिए साहस और समझदारी से काम लेना चाहिए।)

भर हाथ चूड़ी, पट सूं रांड, (स्त्रि०)

सुहागिन है, पर तुरंत रांड भी हो गई।

(१) वदचलन औरत के लिए क०।

(२) मक्कार से भी कहा०।

भरा कहार, खाली कुम्हार, तेज जाता है

पानी से भरी बेंगी लेकर धीरे-धीरे चलने मे कहार

भागलिये=भागलपुर निवासी, । यहा व्यापारियो से मतलब है।

भागे हुए लश्कर का मर्द पीछा नहीं करता

जो हार मान लेता है वहादुर आदमी उसे नही मारता।

भाजी की भाजी, क्या दूसरे की मुहताजी, (ग्रा०)

जितना दिया था उतना मिल गया, इससे अधिक और क्या चाहिए?

भाड़ लीपती जायं, हाथ काले का काला

भाड लीपने से हाथ काला ही रहता है।

वुरे के साथ अच्छाई करने पर भी वुराई ही मिलती है।

भाडा ब्याज, दच्छना; पीछे पड़े कुच्छना

इन तीनो को वकाया नही रखना चाहिए, वाद मे वे वसूल नही होते।

दच्छना=दक्षिणा । शुभकार्य आदि के समय ब्राह्मण को दिया जानेवाला दान।

भात खाते हाथ पिराय, (स्त्रि०)

इतनी सुकुमार है।

पिराय=दर्द करता है।

भात खाने वहुतेरे, काम दुल्हा दुल्हन से

मुफ्तखोरो के लिए क०।

भात छोडा जाता है साथ नहीं छोडा जाता

भोजन भले ही छोड दे पर (यात्रा मे) किसी का साथ मिल रहा हो, तो वह नही छोड़ना चाहिए।

भात विन रह जावे, पिया विन रहा न जावे, (स्त्रि०)

भोजन के विना तो (वह) रह सकती है, पर प्रियतम के विना चैन नही पडता।

भात होगा तो कौवे वहुत आ रहेगे

खाने को मिलने पर मुफ्तखोरे वहुत इकट्ठा हो जाते है।

भादो का घाम और साझे का काम

ये दोनो वुरे होते हैं।

भादो का झल्ला, एक सींग गीला एक सूखा, (कृ०)

भादो मे वर्षा कम हो जाती है।

भादो की छाछ भूतो को, कातक की छाछ पूतो को, (स्त्रि०)

भादो मे छाछ हानिकारक और कार्तिक मे गुणकारी मानी जाती है इसीलिए क०।

भादों की धूप में हिरन काले पडते हैं

भादो मे जव कभी भी धूप निकलती है, तो वह वहुत तेज होती है।

(वास्तव मे भादो की जगह क्वार के महीने की ही धूप तेज होती है।)

भादो के मेह से दोनों साख की जड़ बंधती है, (कृ०)

भादो मे वर्षा होने से ख़रीफ और रवी, दोनो फसलो को लाभ होता है।

(ख़रीफ की फसल मे ज्वार, मक्का मूग आदि होती है और रवी मे गेहू, मटर अरहर चना, आदि।)

भादो दोनो साख का राजा है, (कृ०)

भादो मे पानी वरसने से दोनो फसले वनती हैं इसीलिए क०।

भादों मे वरखा होय, काल पंछोकर जाकर रोय, (कृ०)

भादो मे वर्षा होने से अकाल का भय नही रहता।

भादों से बचे तो फिर मिलेंगे

भादो मे अधिक बीमारिया फैलती हैं और मौते भी भी वहुत होती हैं, इसीलिए क०।

भार डाल सब भार में सम्मन उतरे पार

जिस झझट मे फसे थे, उससे किसी तरह छुट्टी पाई।

भारी पत्थर देखा, चूम कर छोड़ दिया

किसी मनुष्य से जव कोई भारी पत्थर नही उठा, तो उसे चूमकर छोड दिया, यह प्रकट करने के लिए कि हम तो उसे उठा ही नही रहे थे, केवल चूम रहे थे।

(जव कोई काम अपने करने योग्य न जचे, तो होशियारी के साथ उससे अपना हाथ खींच लेना चाहिए।)

भारी ब्याज मूल को खाय, (व्य०)

अधिक सूद पर रुपया देने से असल भी वसूल नही होता।

भाव न जाने राव

(१) राजा मुरव्वत नही जानता। अथवा

(२) राजा-बाज़ार भाव क्या जाने ?

भाव राव की ख़बर नहीं

(१) बाजार भाव और राजा के बारे मे (कि वह क्या करेगा) कोई कुछ नही कह सकता। अथवा (२) इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि तुम्हे किसी बात की कोई खबर नही।

भाव राव ख़ुदा के हाथ

बाजार भाव और राजा ये दोनों ईश्वर के हाथ होते है, अर्थात उन पर किसी का क़ाबू नही होता।

भावी के बस संसार है

स्पष्ट।

भावी=होनहार।

भिड़ का छत्ता

कोई ऐसा मज़बूत या खतरनाक गिरोह या परिवार कि जिसमे अगर किसी एक आदमी को छेड दिया जाए तो सब-के-सब हमला कर बैठे।

भीख और पिछोर

भीख तो जैसी मिले वैसी ले लेनी चाहिए।

(मुफ्त की चीज मे दोष नही निकालना चाहिए। अनुचित माग करने पर भी क०।)

पिछोर=सूप से फटककर, । साफ करके।

भीख के टुकड़े बाज़ार में डकार

झूठी अकड दिखाना।

भीख मागे और आंख दिखावे

जब कोई आदमी जबर्दस्ती करके कोई चीज़ मागे, तब क०।

कोई नीच आदमी रोब दिखाए तब उससे भी क०।

(बहुत से फकीरो की आदत होती है कि अगर उन्हे भीख देने से इन्कार कर दिया जाए तो, मुडचिरापन करने लगते है। कहावत उनको लेकर ही बनी ।)

भीख मागे और पूछे गांव की जमा

जब कोई छोटी हैसियत का आदमी ऐसी बातें करे, जिनसे उसे कोई मतलब नही हो सकता तब क०।

जमा=मालगुजारी।

भीगा चूहा

ऐसे आदमी के लिए क०, जिसकी केवल ठुड्ढी पर दाढी हो और जो स्वभाव का भी अच्छा न हो

भीगी बिल्ली

सयाने या धूर्त्त आदमी के लिए क० ।

भीगी बिल्ली बताना

आलस्यवश काम को टालना और बहाना बनाना। (उक्त वाक्य एक ऐसे आलसी नौकर की कथा पर आधारित है, जो अपने मालिक के हुक्म को कोई-न-कोई बहाना बनाकर हमेशा टाल दिया करता था। एक दिन उसके मालिक ने चिराग बुझाने के लिए कहा, तो उसने जवाब दिया, 'आख बद कर लीजिए सब तरफ अधेरा हो जाएगा।' इसी तरह एक बार रात के समय मालिक ने कहा, 'देखो, बाहर पानी तो नही बरस रहा है।' नौकर ने कहा, 'हा, बरस तो रहा है।' मालिक ने फिर पूछा, 'तुम्हे मालूम कैसे हुआ ?' नौकर बोला, 'एक बिल्ली अभी मेरे पास से निकली थी। उसका बदन मैंने टटोला तो भीगा था।' इसी से उक्त प्रवाद का जन्म हुआ।)

भीत के भी कान होते हैं

मुह से बाहर बात निकली नही कि वह फैल जाती है।

भीत टले पर बान न टले

बुरी आदत किसी तरह नही छूटती ।

भीतर का घाव रानी जाने या राव

मन की व्यथा तो जो पीडित है, वही जान सकता है।

भीत होगी तो लेव बहुतेरे चढ रहेंगे, (स्त्रि०)

(१) हड्डी रहेगी तो मास भी बढ जाएगा।

(२) पूजी रहेगी तो धधा भी बहुत मिल जाएगा।

(३) जड रहेगी तो फल-ही-फल हो जाएगे ।

इस तरह का भाव प्रकट करने को क० ।

भुई बिस्वा भर नहीं, नाम पृथ्वीपालक

कोरा नाम-ही-नाम ।

भुजदड ही आपके कहे देते हैं

कि आप कितने ताकतवर हैं। कमजोर और निखट्टू से व्यग्य मे क०।

भुस के मोल मलीदा

जब बढिया चीज़ सस्ते दामो मे मारी-मारी फिरे तब क०।

भुस पर लीपना

ऐसा काम जो बहुत दिनो टिके नही।

भुट्टा का भगवा मूजक डोरी, बीबी दुसोई छत नई हाँ मोर (स्त्रि०)

टाट का लंहगा और मूज की डोरी, बीवी समझती है कि मेरे समान कोई है ही नही। कोई एक और दूसरी को बुरा भला कह रही है।

भुस में चिनगी डाल जमालो दूर खड़ी, (स्त्रि०)

लडाई-झगडा करानेवाला, शरारती, चुगलखोर, इनके लिए क०।

भूआ की नदी से कौन बहे ?

व्यर्थ की शका मे पडना। सुख सब चाहते है, दुख कोई नही चाहता, यह अर्थ भी हो सकता है। (कथा है कि किसी जुलाहे को रास्ते मे समल का बहुत सा भूआ पडा दिखाई दिया। भूआ को नदी समझ कर उसने पार नही किया और लोट आया। उसी से कहावत का जन्म हुआ।)

भूआ=(१) रुई जैसा मुलायम टुकडा, सेमलवृक्ष की रुई। (२) मैल, फेन

भूख को भोजन क्या और नींद को विछौना क्या ?

भूखे की तृप्ति जैसा भी भोजन मिले, उससे हो जाती है। जिसे नीद आ रही हो, वह भी जैसा विछौना मिले, उस पर सो जाता है।

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये कबाय।
जोबन गये तिरिया मिले, तीनो देव बहाय।

समय निकल जाने पर कोई चीज मिले, तो वह किस काम की ?

कबाय=गर्म कपडा

भूख मे किवाड पापड़

भूख मे जो भी चीज़ मिले, वह अच्छी लगती है।

भूख मे गूलर पकवान

दे० ऊ०।

भूख लगी तो घर की सूझी

भूख लगने पर घर याद आता है। प्राय लडको से क० जो बाहर घमते रहते हैं, और भोजन के समय आ जाते हैं।

भूख सब से मीठी

भूख लगने पर सब चीज मीठी लगती है।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं

ईश्वर सबको खाने को देता है। जितने जीव है, उन सबको सुबह से शाम तक खाने को मिल ही जाता है।

भूखा गया जोय वेचने, अघाना कहे बधक रखो

कोई भूखा धनी के पास अपनी औरत वेचने गया, तो उसने कहा—'गिरवी रखो।'

विपद्ग्रस्त से अनुचित लाभ उठाना।

अघाना=जिसका पेट भरा हो। पैसेवाला।

भूखा जोरू वेचे, राजा कहे उधार लूं

दे० ऊ०।

भूखा तुरक न छेडिए हो जाय जी का झाड़

भूखे मुसलमान को नही छेडना चाहिए।

भूखा बगाली भात ही भात पुकारे

क्योंकि भात उसका मुख्य भोजन है। आदत आसानी से नही छूटती।

भूखा मरता, क्या न करता

भूखा पेट के लिए नीच-से-नीच कर्म करता है।

भूखा मरे कि सतुआ खाने

भूखा मरने की अपेक्षा सत्तू ही खाना अच्छा। भूख मे जो मिले, वही खा लेना चाहिए।

भूखा सो रूखा

भूखे को जल्दी क्रोध आता है।

भूखे को अन्न अन्न, प्यासे को पानी, जगल जगल अबादानी

जो भूखे को अन्न और प्यासे को पानी देता है, उसे हर जगह आराम मिलता है।

अबादानी=आवदाना। अन्नजल।

भूखे को कुछ दीजिए, यथाशक्ति जो होय, (हि०)

स्पष्ट।

भूखे को क्या रूखा, और नींद को क्या तकिया

स्पष्ट।

दे० भूखे को भोजन क्या...।

भूखे को खिला और नगे को पहना

स्पष्ट।

भूखे घर मे नोन निहारी

भूखे के लिए नमक ही नाश्ते की तरह है। उसे जो मिले वही बहुत है।

भूखे ने भूखे को मारा, दोनों को गश आ गया

क्योकि दोनो एक से कमजोर है। दो गरीब या साधनहीन आदमी आपस मे लडे, तो दोनो ही मारे जाते है।

भूखे बेर, अघाने गाडा, (ग्रा०)

भोजन के पहले बेर और बाद मे गन्ना लाभदायक होता है।

भूखे भजन न होय, साधो !

भूख मे ईश्वर का भजन भी नही होता।

(पाठा०—भूखे भजन न होय गोपाला।)

भूखे भलेमानस से डरिये

क्योकि नाराज हो जाने पर वह परेशान कर सकता है।

भूखे से कहा, 'दो और दो क्या ?' कहा, 'चार रोटिया'

जो जिस चीज की तलाश मे होता है, उसे वही सूझती है।

भूखे हो तो हरे हरे रूख देखो

हृदयहीन कजूस का मगतो से क०।

भूड़ के हूड होते हैं

देहाती मूर्ख होते है।

(यह देहातियो की पिछडी हुई हालत व्यक्त करता है न कि उनकी वास्तविक सामर्थ्य।)

भूत का पकवान

निस्सार वस्तु।

भूत के पत्थ र की चोट नही लगती

क्योकि उसका भौतिक अस्तित्व नही होता।

बहुत धूर्त्त या चालाक के लिए क०।

भूत जान न मारे, सता मारे

दुष्ट के लिए क०।

भून बोया, उपट गया

भूना हुआ अन्न नही जमता।

मूर्खतापूर्ण कार्य।

भूनी भाग न कडुवा तेल

ऐसा मनुष्य जिसके पास कुछ न हो।

भूभल मे रोटी दाब कर तो नही आई है ?

कोई स्त्री किसी के यहा जाकर जल्दी आना चाहती है, तब उससे कहा जा रहा है कि आग मे रोटी दबाकर तो नही आई है, जो जाने की इतनी जल्दी मचा रही है।

भूमियां तो भूमि पै मरी, तू क्यो मरी बटेर ?

किसान तो जमीन के पीछे लडते है, हे बटेर, तू क्यो लडती है।

जब साधारण मनुष्य वडो के झगडे मे पडे तब क०।

भूरा भैंसा, चंदली जोय, पूस महावट विरले होय,

भूरा भैंसा, गजी औरत, और पूस मे वर्षा बहुत कम देखने को मिलती है।

भूल गई दिन दहाड़ा, मुडों ने सिहरा बाधा

घमड से फूल उठी।

जब कोई उन्नति होने पर गरीबी के पुराने दिन भूल जाए तब क०।

भूल गई नार, हींग डाल दई भात मे, (स्त्रि०)

जल्दी मे या घबराहट मे कुछ-का-कुछ कर जाना।

भूल गये राग रग भूल गये छकड़ी।

तीन चीज याद रही नोन तेल लकड़ी।

गृहस्थी का चक्कर।

भूल-चूक का डर नहीं

कमी भी ठीक की जा सकती है।

भूल-चूक लेनी-देनी, (व्य०)

हिसाब चुकाए जाने पर क०।

भूलल भांड़ दिवारी गावे, (भो०)

भूला भाड दिवारी गाता है, जब कि उसे गाना चाहिए होली। घबराया हुआ आदमी।

भूला जोगी दूनी लाभ

भुलक्कड जोगी एक ही घर मे दो बार भीख मागता है; इस प्रकार लाभ मे रहता है।

भूला फिरे किसान जो कातिक मागे मेह, (कृ०)

वर्षा पूष या माघ की अच्छी होती है, कार्तिक की वर्षा से खेती को कोई लाभ नही होता, बल्कि गेहू आदि की बुवाई मे बाधा पडती है।

भूली, रे रघुआ, तेरी लाल पगिया पर, (स्त्रि०)
जब कोई किसी के ऊपरी ठाटबाट से प्रभावित हो जाए या बाहरी रूप देखकर धोखे मे आ जाए, तब क० ।

भूले-चूके दंड नहीं
अनजान मे हुई भूल क्षमा की जाती है।

भूले बामन गाय खाई, अब खाऊ तो राम दुहाई, (हिं०)
किसी ब्राह्मण ने भूल से गाय का मांस खा लिया, तब वह सौगंध खाकर कहता है कि किया-सो-किया, अब ऐसा नही करूगा।
एक बार कोई भूल करके जब आदमी दुबारा वैसी भूल न करने की प्रतिज्ञा करे तब क०।

भूले बिसरे राम सहाई
भूले-चूके का ईश्वर मालिक है।

भेख से भीख है
(१) दुनिया मे दिखावट से ही काम चलता है।
(२) वेशभूषा से ही आदमी की कद्र होती है।

भेजा खायें, जेर सहलायें
खुशामद भी करे और खोपडी भी खाए। फालतू आदमी।

भेड़ की लात घुटने तक
(१) किसी छोटे लेन-देन मे थोडी ही हानि होती है। (२) कमजोर की चोट का अधिक असर नही होता। ज्यादा-से-ज्यादा इतना कर सकेगा, ऐसा भाव।

भेड़ चाल है
भेडो की तरह एक दूसरे के पीछे चलना। आख मूदकर दूसरे का अनुकरण करना।

भेड़ तो जहां जायेगी मुडेगी
(१) धनी जहां जाता है वही लूटा जाता है।
(२) गरीब को हर जगह सताया जाता है।

भेड़ पै ऊन किसने छोड़ी ?
कोई नही छोडता। सब कोई उस के बाल कतर लेते है, क्योकि वे बहुत कामो मे आते है।

भेड़िया धसान
धांधली।

भैंस का गोबर भैंस के चूतड़ों को लग जाता है
सब दूसरो के काम नही आता। बडे आदमियो के अपने ही खर्चे बहुत होते है। कहावत का यह मतलब है।

भैंस का दूध, नली का गूदा
भैंस का दूध हड्डी के गूदे की तरह होता है, यानी बहुत ताकत देता है।

भैंस के आगे बीन बजे वह बैठी पगुराय, (पू०)
(१) मूर्ख किसी अच्छी वस्तु का महत्व क्या समझे ?
(२) मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है।

भैंस को अपने सींग भारी नहीं
अपने घर के लोगो का पालन-पोषण किसी को कष्ट-कर मालूम नही देता।

भैंस दूध जो कढ़वा पीवे, हांगा घटे न जब लग जीवे (ग्रा०)
जो भैंस का थन-दुहा दूध पीता है, उसका बल कभी नही घटता।

भैंस पकोड़े हग गई
किसी मनुष्य के यकायक बहुत समृद्ध हो जाने पर व्यग्य मे क०।

भैंस पै दूध किसने छोडा?
किसी ने नही। सब उसे पूरा दुह लेते हैं।

भैंसा भैंसो मे या कसाई के खूटे मे
दे० या भैंसा भैंसो मे ।

भैय्या जी बहुतेरे डड मलवायें, बंदा पहलवान नहीं बनने का
माई माहब मुझे चाहे जितना कुश्ती लडना सिखाए, पर मै पहलवान नही बनने का।
(मै अपने दूसरे साथियो की बराबरी नही कर सकूगा। वाक्य से वक्ता का यह भाव प्रकट होता है।)

भोग बिलास, जब तक सास
मरे पीछे सब समाप्त।

भोग भाग, छत्तीसो राग
जितना भी हो सके, जीवन का आनद लूट लो।

भोगी सो रोगी
स्पष्ट।

भोगी=भोगो मे लिप्त रहनेवाला। विषयासक्त।

भोजन न भात, नैहर का समाद, (स्त्रि०)

विघवा के लिए कहा है कि उसका कही आदर नही होता, न मायके मे न ससुराल मे।

समाद=समधी का घर ससुराल।

भोजपुर में जइहा मत, जइहा तो खइहा मत, खइहा तो सोइहा मत, सोइहा तो टोइहा मत, टोइहा तो रोइहा मत, (भो०)

भोजपुर कभी जाओ नही, जाओ तो खाओ नही, खाओ तो सोओ नही, सोओ तो (अपना बसना-बोरिया) टटोले नही, टटोलो तो रोओ नही। (भोजपुरियो की चोरी और ठगी की प्रवृत्ति पर फब्ती।)

भोंदू भाव न जाने, पेट भरन से काम

मूर्ख आदमी को किसी चीज का सवाद नही होता, उसे तो पेट भरने से काम।

भोर का मुरगा बोला, पंछी ने मुंह खोला

सवेरा होते ही चिडिया बोलने लगती है, अथवा दाना चुगने के लिए उतावली हो उठती है।

भोर भया जब जानिये, जब पीले बादल होयं

जब बादल पीले हो उठे, तो समझो सवेरा हो गया।

भोरे भुलाये साझ घर आये, ऊ भुलाइल न कहावे

सवेरे का भूला साझ को घर आ जाए, तो वह भूला हुआ नही कहलाता।

भौं का गिला आख के सामने

(१) किसी मनुष्य के निकट सम्बन्धी से ही उसकी शिकायत की जा सकती है। अथवा

(२) किसी के निकट सम्बन्धी से उसकी शिकायत व्यर्थ है, क्योंकि वह तो पहले से उसका सब हाल जानता है।

मंगनी की चादर, तापर पचास का आदर, (स्त्रि०)

मगनी की चादर, वह पचास (लोगो को) भेंट कर रही है।

दूसरे की चीज अपनी करके बताना। अथवा दूसरे की वस्तु पर घमड करना।

मंगनी के बैल के दांत नहीं देखते हैं

मुफ्त मे जो चीज मिले वही अच्छी। उसमे कोई मीन-मेख नही निकालनी चाहिए।

(गाय-बैल आदि ढोरो की उम्र उनके दातो से ही जानी जाती है। उम्र के लिए दातो की परीक्षा करते है।)

मंगनी के सतुआ, सास के पिंडा, (स्त्रि०)

सास का श्राद्ध सत्तू से कर रही है, सो भी मागे का सत्तू।

(अनिच्छा से दूसरे का सम्मान करना।)

मंगाई छींट, लाया ईंट

(१) इच्छा के विरुद्ध काम करना। अथवा

(२) सुनी अनसुनी करना।

मंगाई हींग, लाया अदरक

दे० ऊ०।

मंडवे के आटे मे शर्त क्या ?

सस्ती चीज के अच्छे होने की दूकानदार क्या शर्त करे? वह तो जान-मानकर खराब होगी ही।

मड़वा=एक बहुत हल्की किस्म का आनाज।

मंत्री बिना राज सूना

मत्री के बिना राजकाज नही चलता।

मकदूर की मां कौडी ही रगड़ती है

आदमी एक-एक कौडी का हिसाब रखने से ही धनी बनता है।

मकदूर=समर्थ धनवान।

मकर चकर की घानी, आधा तेल और आधा पानी

धूर्त और चालबाज़ व्यापारियो के लिए क०।

मक्के गये, न मदीने गये, बीच-ही-बीच मे हाजी भये, (मु०)

अनायास ही जब किसी का अभीष्ट सिद्ध हो जाए तब क०।

मक्के मे रहते हैं, पर हज नहीं करते, (मु०)

सुलभ चीज की कद्र नहीं होती, अथवा उसे पाने की कोई इच्छा नही करना।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना
धूर्त के लिए क० जो ऊचा हाथ मारे ।

मक्खी बैठी शहद पर पंख गये लपटाय ।
हाथ मले और सिर धुने, लालच बुरी बलाय ।
लालची ।

मक्खीमार बडा चमार
कजूस के लिए क० ।

मग्गह देश कंचन पुरी, देस अच्छा, भाखा बुरी
मगध देश बहुत अच्छा है, पर वहा की भाषा बहुत बुरी है।
(मगध की कर्णकटु बोलियो पर कटाक्ष।)

मग्गह में मरना, अगले जनम मे गदहा बनना
मगध मे मरने से अगले जन्म मे आदमी गधा होता है। हिन्दू अन्धविश्वास।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाये ?
जिसका जो पैतृक गुण है, वह अपने-आप आ जाता है, सिखाना नही पडता।

मछली तो नहीं कि सड जायेगी, (स्त्रि०)
आखिर ऐसी जल्दी क्या ?—इस तरह का भाव प्रकट करने को क० ।

मजनूं को लैली का कुत्ता भी प्यारा
प्रेमी को अपनी प्रेमिका की खराब-से-खराब चीज भी अच्छी लगती है।

मजा मा मज़ा, (अ०)
बीती बात को भूल जाओ।

मट्टी का घड़ा भी ठोक बजाकर लेते हैं, (व्य०)
(१) हर चीज देखभाल कर खरीदनी चाहिए ।
(२) बिना सोचे-विचारे कोई काम नही करना चाहिए।

मट्टी मे हाथ डाले सोना होय है
भाग्यवान पुरुष।

मट्ठा मांगन चली और मलैया पीछे लुकाई, (स्त्रि०)
ज़रूरत पडने पर किसी से कोई चीज मागनी पडे तो उसमे शर्म की क्या बात ?
मलैया=छोटी मटकी। चपिया।

मत कर सास बुराई, तेरे भी आगे जाई, (स्त्रि०)
बहू का कहना सास के प्रति।
(अभिप्राय यह है कि हे सास ! तू मुझे तग मत कर, क्योकि तेरे भी लडकिया हैं, जो ससुराल जाएगी। तू अगर मुझे कष्ट देगी, तो वे भी इसी प्रकार वहा कष्ट पाएगी ।)

मत बो चापड़, उजड़े टाबर, (कृ०)
पथरीली ज़मीन मे खेती मत करो, परिवार उजडता है, अर्थात पैदावार नही होती ।

मतला साफ हुआ
बात समझ मे आ गई। शका दूर हुई।
मतला=(१) पूर्व दिशा, (२) गज़ल के आरभ के दो चरण, जिनमे अनुप्रास होता है।

मथरा दे बुंदा, लुभावे दस गुंडा, (पू०, स्त्रि०)
दुराचारिणी के लिए क० ।
मथरा=माथे पर।

मथवा मदारी का क्या साथ ? (ग्रा०)
हिन्दू मुसलमान का क्या साथ ? यह भी विद्वेषमूलक है।
मथवा=हिन्दू नाम विशेष।

मधुरे आचे रोटी मीठ, (भो०)
धीमी आच की सिकी रोटी स्वादिष्ट होती है। जो काम धीरे-धीरे और सावधानी से किया जाता है वह अच्छा होता है।

मन उमराव, करम दलिद्री
इच्छाए तो वडी, पर भाग्य खोटा ।

मन करबे मोटा, खैबे सोटा, मन करबे मोंही सगरे तोहीं, (भो०)
उदार पुरुष को सब चाहते है ।
मोटा=सकीर्ण, स्वार्थपूर्ण
मोंही=(१) मेरी ओर। अथवा (२) मोहित करनेवाला।

मन करे पहिरन चौतार, करम लिखे मेही के वार, (स्त्रि०)
दे० मन उमराव ।
चौतार=एक प्रकार की बढ़िया मलमल।

मन का अंकुस ज्ञान
ज्ञान से मन वश मे रहता है।

मनका फेरत जनम गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका छोडके, तू मन का मनका फेर।
(कबीर)

हाथ की माला को अलग रखकर ईश्वर का भजन तो सच्चे मन से ही करना चाहिए।

मन की मारी कासे कहूं, पेट मसोसा दे दे रहूं, (स्त्रि०)

किसी दुखिया का क०। अत्यन्त दीनता दिखाना। मसोसा देना=मन-ही-मन रज करना ।

मन के लड्डुओ से भूख नहीं मिटती

केवल विचारने से काम नही चलता।

मन के लड्डू फोड़ना

हवाई महल बनाना।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
पारब्रह्म को पाइये, मन ही की परतीत।

स्पष्ट। निराश कभी नही होना चाहिए।
परतीत=प्रतीत । विश्वास।

मन चगा तो कठौती मे गगा

अगर मन शुद्ध है (अथवा अगर शरीर स्वस्थ है) तो घर मे ही गगा है।

(कहते है कि एक बार सत रैदास ने कुछ यात्रियो को गगास्नान के लिए जाते देख, उन्हे कुछ कौडिया देकर कहा कि उन्हे गगा जी की भेट कर देना, परतु देना तभी जब गगा जी साक्षात प्रकट होकर उन्हे ग्रहण करे। यात्रियों ने गगा के समीप पहुचकर कहा कि ये कौडिया सत रैदास ने दी हैं, आप इन्हे स्वीकार कीजिए। गगा ने हाथ बढाकर कौडिया ले ली और उनके बदले मे एक सोने का कगन रैदास जी को देने के लिए दे दिया। यात्री वह कगन रैदास जी के पास न ले जाकर राजा के पास ले गए और उन्हे भेंट कर दिया। रानी उस कगन को देखकर इतनी विमुग्ध हुई कि उसकी जोड का दूसरा कगन मगाने का हठ कर बैठी। पर जब बहुत प्रयत्न करने पर भी उस तरह का कगन नही बन सका, तो राजा हारकर रैदास के पास गए और उन्हे सब वृत्तान्त सुनाया। रैदास जी ने तब गगा का स्मरण करके अपनी कठौती मे से, जिसमे चमडा भिगोने के लिए पानी भरा रहता था, उस कडे की जोडी निकालकर दे दी। इसी कथा से उक्त कहावत का निकास है।)

मन चंचल, करम दलिद्री

भाग्यहीन।

मन चलता है, पर टट्टू नही चलता

इच्छाए तो बहुत, पर शरीर काम नही देता।

मन चाहे, मुड़िया हिलावे

झूठमूठ ही इन्कार करना। स्त्रियो की ना भी हा होती है।

मन जाने, घर जाने

बिल्कुल स्वतत्रता ।

मन जाने पाप, माई न बाप

अपने किये पाप को अपना मन ही जानता है, मा-बाप नही जान सकते।

मन भर का सिर हिलाते है, पैसे भर की जबान नहीं हिलाते

जब कोई मनुष्य किसी बात का उत्तर मुह से न दे, विशेष कर प्रणाम आदि का उत्तर न दे और केवल सिर हिला दे, तब क०।

मन भाय तो ढेला सुपारी

जिस वस्तु पर मन जाए, वह बुरी होने पर भी अच्छी लगती है।

(स्त्रिया और लडके प्राय सोंधेपन के लिए मिट्टी के टुकडे सुपारी की तरह मुह मे रख लेते हैं। कहावत उसी पर आधारित है।)

ढेला=मिट्टी का टुकडा।

मन भावे, मूड़ हिलावे

दे०—मन चाहे ।

मन भोगी, करम दलिद्री

दरिद्री होकर भी भोगविलास की इच्छा रखना।

मन मलीन तन सुन्दर कैसे,
विष रस भरा कनक घट जैसे। (तुलसी)

कपटी।

मनमानी, अनजानी

मनमानी करना।

मनमाने घर जाने
दे० ऊ०।

मन मिले का मेला, चित्त मिले का चेला
स्पष्ट।

मन में गाती टसटस रोवे; चूहा खसमकर सुख से सोवे
कोई सयानी लडकी छोटे लड़के से व्याही गई है। उसी पर कहा गया है। लडकी ऊपर से तो रोती है, पर मन मे प्रसन्न है कि वह स्वतन्त्र रहेगी।

मन मे बसे, सो सपने दसे
जो वात मन मे रहती है, वही स्वप्न मे दिखाई देती है।

मन में मूरख, जून मे दुखी कोई नही
कोई अपने को मूर्ख नही समझता, और किसी को अपना जीवन भारी नही होता।
जून=योनि। शरीर। जीवन।

मन मे शेख फरीद, बगल मे ईंट
कपटी मनुष्य।
(इसकी कथा है कि कोई चोर शेख फरीद नामक एक फकीर का चेला हो गया था, और उसने कभी किसी की चीज न छूने की शपथ खा ली थी, पर एक बार ज्योही उसने रास्ते मे एक सोने की ईंट पडी देखी, त्योही उसे उठाकर बगल मे छिपा लिया।)

मन मोतियो व्याह, मन चावलों व्याह, (स्त्रि०)
व्याह तो सब एक से ही होते हैं, चाहे मन भर मोतियो से किया जाए, चाहे मन भर चावलो से।

मन मौजी, करम दलिद्री
मन तो मौज़ करना चाहता है, पर भाग्य साथ नही देता।

मन मौजी, जोरू को कहे "भौजी"
मन मे आया तो स्त्री से ही भौजी कहने लगे।

मनवां मर गया, खेल विगड़ गया
हिम्मत हारने से काम विगड जाता है।

मन हमरा पास, धन उनका पास, (स्त्रि०)
दूसरे के पास धन है, तो हमारे पास मन है। उदार पुरुष का कहना।

मन हुलासा, गावे गीत
चित्त प्रसन्न होने पर गाना सूझता है।

मर गये मरदूद, जिनकी फातिहा न दरूद, (मु०)
दुष्ट मर गया, मरने पर जिसका कोई क्रिया-कर्म नही हुआ। एक प्रकार की गाली।

मरजीए मौला, अज हमद ओला, (फा०)
ईश्वर की इच्छा ही वलवान है।

मरता क्या न करता
जो मरने को तैयार है, वह सब कुछ कर सकता है।

मरते के साथ मरा नहीं जाता
मरे हुए के लिए जब कोई बहुत विलाप करे, तब क०।

मरते को मारे शामत जदा
जिसकी स्वय मौत आई हो, वही मरते हुए को छेडता है।

मरते को मारें शाह मदार
दुखिया को भगवान और भी दुख देता है।
(स०—दैवो दुर्वल घातक।)

मरन चली और शुक्र सामने, (स्त्रि०)
मरने मे शकुन-अपशकुन का विचार क्या?
(हिन्दुओ के ज्योतिप के अनुसार शुक्र सामने रहने पर यात्रा वर्जित है।)

मरना जीना सबके साथ लगा है
स्पष्ट।

मरना भला विदेस का, जहा न अपना कोय
भक्त या त्यागियो का कहना। यह पूरा दोहा इस प्रकार है—
मरना भला विदेस मे, जहा न अपना कोय।
माटी खाय जनावरा, महा महोत्सव होय।

मरने को क्या हाथी-घोडे जुडते हैं
जब चाहे तब मर जाए। उपेक्षापूर्वक कहते हैं। जब कोई मरने की धमकी दे, तब भी क०।

मरने को जी चाहे, कफन का टोटा
दे० ऊ०।

मरने जाय, मल्हार गावें
अवसर के विपरीत काम।

(मल्हार आनन्द का राग है और वर्षा ऋतु मे ही गाया जाता है।)

मरने पै डोम राजा

इसलिए कि श्मशान मे डोम ही कर लेता है। बाद मे कुछ होता रहे।

मर-मर न जाते तो भर घर होते, (स्त्रि०)

घर के लोग मरते नही तो घर भरा रहता है।

मरल बछिया, बामन को दान, (पू०)

निकम्मी चीज जब किसी के मत्थे मढी जाए, तब क०।

मरा रावन फजीहत हो

बुरे आदमी के मरने पर भी लोग उसे कोसते है।

मरिहों, पर टरिहो नाहीं, (पू०)

जिद्दी।

मरी क्यों? सास न आया, (स्त्रि०)

व्यर्थ का प्रश्न करना।

मरीजे इश्क को दीदार काफी है

प्रेम के रोगी के लिए अपने प्रिय को देख लेना काफी है।

मरे का कोई नहीं, जीते-जी के सब लागू है

स्पष्ट।

लागू=साथी। मित्र।

मरे को मर जाने दे, हलवा पूड़ी खाने दे

बच्चोकी तुकबदी, जिसका प्रयोग वे कबड्डी के खेल मे करते हैं।

मरे तो शहीद, मारे तो गाजी, (मु०)

धर्म की रक्षा के लिए मरने मे भी कीर्ति मिलती है और दूसरो को मारने मे भी। मुसलमानो की उक्ति।

(मुसलमानो मे जो धर्म के शत्रुओ पर विजय प्राप्त करता है, वह गाजी कहलाता है।)

मरे न जीये, हुकुर-हुकुर करे

बूढे रोगी के लिए कहते है, जिसकी सेवा करते-करते घर के लोग थक जाते हैं।

मरे न, पीछा छोडे

किसी व्यक्ति से बहुत परेशान होने पर क०।

मरे न माझा ले

न मरता है, न आराम से चारपाई पर ही लेटता है। बहुत तग आ जाने पर क०। दे० ऊ०।

(खाट पर मरना हिन्दुओ मे अच्छा नही समझा जाता, इसलिए मरते हुए रोगी को नीचे लिटा देते है।)

मरे पै बैद

काम के नष्ट हो जाने पर उपाय।

मर्द औरत राजी तो क्या करेगा काजी?

किसी मामले मे दो आदमियो मे अगर समझौता हो जाए, तो उसमे फिर कोई क्या कर सकता है?

मर्द का क्या है? एक जूती पहनी एक जूती उतारी, (स्त्रि०)

एक स्त्री के मर जाने पर पुरुष दूसरी स्त्री से व्याह कर लेता है। उसी पर टि०।

मर्द का दिखाया न खाइये, मर्द का लाये खाइए, (स्त्रि०)

स्त्री को पुरुष के सामने नही खाना चाहिए, पुरुष जो लाए, वही खाना चाहिए।

मर्द का नहाना, औरत का खाना बराबर है

पुरुष जल्दी नहाते है, और स्त्रियां जल्दी भोजन करती है, इसीलिए क०।

(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है मर्द का नहाना औरत का खाना, किसी ने जाना किसी ने न जाना।)

मर्द का नौकर मरे वर्ष भर मे, रडी का नौकर मरे छ महीने मे

क्योकि उने काम बहुत करना पड़ता है।

मर्द का हाथ फिरा, और औरत उभडी

व्याह के बाद लडकी शीघ्र बढती है।

मर्द की बात और गाड़ी का पहिया आगे को चलता है

भले आदमी अपनी बात नही बदलते।

मर्द के चार निकाह दुरुस्त हैं

स्पष्ट।

(हिन्दुओ का ताना मुसल्मानो के धार्मिक विधान पर?)

निकाह्=व्याह।

मर्द को गर्द जरूर है

मनुष्य को मेहनत अवश्य करनी चाहिए।

मर्द जेकरा गांठ रुपैया, (पू०)

आदमी वही, जिसके पास रुपया हो।

मर्द मरे नाम को, नामर्द मरे नान को

वीर पुरुष को नाम प्यारा होता है, और कायर को रोटी।

मर्दों का एक कौल होता है

मर्द अपनी वात से नही हटते।

मल्लाह का लंगोटा ही भीगता है

क्योकि वह कोई और कपडा ही नही पहिनता।

मल्लाही की मल्लाही दी, वांस के बास खाये

पैसा भी खर्च करना पडे और अपमान भी हो, अथवा आराम भी न मिले, तब क०।

(नाव मे बैठने पर यात्री को प्राय उन वासो या पतवारो की ठोकरे लगती है, जिनसे नाव खेई जाती है।)

मल्लाही=नाव से नदी पार होने का किराया।

मशालची अंधा होता है

क्योकि उसे अपने पैरो तले का नही दिखाई देता।

मशालची मरे तो पट-बीजना हो, यहां भी चमके, वहां भी चमके

हँसी मे कहते है।

पटवीजना=जुगनू।

मसखरी के चूडा, भर-भर गाल, (पू०)

केवल वातो मे वहलाना, देना कुछ नही।

चूडा=विशेष प्रकार के भुने चावल, जो दही या दूध के साथ खाए जाते हे।

मसजिद ढह गई, मेहराव रह गई

मरने पर केवल नाम रह जाता है।

मस्ताई बकरी वोक का मुह चूमती हे

मस्ती चढने पर हिताहित का ज्ञान नही रहता।

महद से लहद तक

जन्म से मरण तक।

मह्ल्ले मे आई वरात, पड़ोसन को लगी घवराट

व्यर्थ परेशान होना, जव कि कोई मतलव नही।

महावट वरसी, साढी सरसी, (कृ०)

जाडे मे वर्षा होने से रवी की फसल अच्छी होती है।

महिमा घटी समुद्र की, जो रावन बसा पडोस

वुरे की सगति करने से अच्छे को भी कलकित होना पडता है।

(लका-विजय के समय राम ने समुद्र को वाधा था, यहा उसी से अभिप्राय है।)

महीना पुराया और कमेरा अघाया

महीना पूरा होते ही मजदूर को तनख्वाह मिलती हे, इसलिए वह प्रसन्न होता है।

मां एली, वाप तेली, वेटा शाखे जाफरान

जव कोई छोटा आदमी वहुत दिखावा करता हे, तव व्यग्य मे क०।

एली=इधर-उधर की।

शाखे जाफरान=केसर की टहनी।

मां का पेट, कुम्हार का आवा, कोई गोरा, कोई काला।

एक ही मा के लड़के अलग-अलग रूप-रग के होते है, उस पर क०।

मां का मान भला

मा का आदर करना चाहिए।

मां की सौक, न वाप से यारी, किस नाते तोन्ह महतारी, (स्त्रि०)

झूठा रिश्ता जोडना।

सौक=सौत।

मां के पेट से कोई सीखकर नही निकलता

काम करने से ही आता है।

मां खेत मे पूत जनेत मे

(पहेली) कुसुम को कहते ह, जिसके रग से पगडी रगी जाती ह और विवाह मे पहनी जाती है।

(कहावत के रूप मे उक्त वाक्य का अर्थ यही हो सकता है कि कोई कही, कोई कही।)

जनेत=विवाह।

मांग-जाच के गये झाझा, मांग लें तो लागे लाजा

झगडकर मागना, पर अच्छी तरह मागने मे शर्माना।

झाझा=झगडा। इज्जत।

मागन गये सो मरि गये, मरे जो मांगन जाहिं।
वे नर पहिले ही मरे, जो होते कह दे नाहिं।
स्पष्ट। जो पास मे होते हुए भी न दे, उस पर क०।

मांगे के मंगनी, गुड़िया का सिंगार
मागे की चीज से शौक करना।

मांगे-तांगे काम चले तो ब्याह क्यो करे ?
हँसी मे क०।

मांगे पर तांगा, बुढ़िया की बरात
भिखारी से भीख मागना और बूढी औरत से विवाह करना, दोनो बराबर है।

मांगे भीख, पूछें गांव की जमा
साधारण हैसियत का होते हुए भी जो वडी-बडी बाते करता है, या वडी बातो का भेद जानना चाहता है, उससे क०।
जमा=मालगुजारी।

मांगे मे तागा
मागकर लाई गई चीज मे से दान देना।

मांगे हड़, दे बहेड़ा
(१) कुछ कहना, कुछ सुनना।
(२) आज्ञा के विरुद्ध काम करना।

मां चाहे बेटी को, और बेटी चाहे मोटे धींग को, (स्त्रि०)
अभिप्राय यह कि लडकी मा की परवाह नही करती।

मां छोड मौसी से मजाक, (मु०)
मुसलमानो मे मौसी से भी हँसी-दिल्लगी करते हैं। जाति-विद्वेषमूलक।

मां टेनी बाप कुलंग, बच्चे निकले रंग-विरंग
निकम्मे मा-बाप के निकम्मे लडके।

मां डायन हो तो क्या बच्चे ही को खायगी, (स्त्रि०)
अपनी हानि आप कोई नही करता।

मा तेलिन बाप पठान, बेटा शाखे जाफरान
शेखीबाज से क०। जाति-विद्वेषमूलक कहावत।

मा धोबन, पूत बजाज
दे० ऊ०।

मा न मा का जाया, सभी लोक पराया
ऐसी जगह जहा अपना कोई न हो, विदेश।

मां नारंगी, बाप कोयला, बेटा रौशनउद्दौला
दे०—मां तेलिन..।

मां पनहारी, बाप कंजर, बेटा मिर्जा संजर, (स्त्रि०)
दे०—मा तेलिन...।

मां पिसनहारी अच्छी और बाप हफ्तहजारी कुछ नहीं
क्योकि बाप की अपेक्षा मा का स्नेह लडके पर अधिक रहता है।

मां पिसनहारी पूत छैला, चूनड पर बांधे बूर का थैला, (स्त्रि०)
मा पिसनहारी है, इसलिए लडका भूसी के सिवा और किस चीज से अपना शौक पूरा करेगा ?

मां पै पूत पिता पै घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़म थोड़ा, (स्त्रि०)
लडके मे अपनी मा के और घोडे मे अपने पिता के थोडे-बहुत गुण अवश्य आते है।
(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है बापै पूत सिपाह पै घोडा, बहुत नही तो थोडा थोडा।)

मां बाप जीते कोई हराम का नहीं कहलाता
अपने किसी दावे का प्रमाण देने के लिए क०।

मां बेटियों में लड़ाई हुई, लोगों ने जाना बैर पड़ा, (स्त्रि०)
घर के लोगो की लड़ाई लड़ाई नही कहलाती।

मां बेटी गानेवाली, बाप पूत बराती, (स्त्रि०)
जब कोई व्यक्ति किसी खुशी के मौके पर अपने इष्टमित्रो और सगे-सबंधियो को न पूछे, और सब काम अकेले ही कर ले, तब क०।

मां भटियारी, पूत फतेहखां, (स्त्रि०)
पल्ले कुछ न होते हुए भी शेखी बघारना।

मा भटियारी, बेटा तीरंदाज, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।

मा मरे, मौसी जीवे
मौसी के प्रति उचित प्यार दिखाने को क०।

मा मारे और मा' ही मा' पुकारे
लडके का अपनापन मा के प्रति। मा के मारने पर

भी वह मां को बुलाता है।

मां रोवे तलवार के घाव से, बाप रोवे तीर के घाव से

(१) पिता की अपेक्षा मा अपने लडके के अनाचारो को अधिक धैर्य के साथ सहन करती है।

(२) मा-बाप अपने लडके के दोषो को विभिन्न दृष्टियो से देखते है।

माई बाप के लातन मारे, मेहरी देख जुड़ाय।
चारों धामें जो फिर आवे, तबहुं पाप ना जाय।

स्पष्ट।

मेहरी=स्त्री।

माघ का जाड़ा, जेठ की धूप, बड़े कष्ट से उपजे ऊख (कृ०)

ऊख की खेती मे बहुत मेहनत करनी पडती है, माघ का जाडा सहना पडता है और जेठ की गर्मी भी, तब ऊख उपजती है।

माघ तिलातिल बाढ़े, फागुन गोड़े काढ़े

माघ मे दिन थोडा-थोडा बढने लगता है, फागुन मे प्रत्यक्ष हो जाता है।

माघ नंगे, बैसाख भूखे

गरीब या अभागे के लिए क०।

माघे जाड़ न पूसे जाड़, बतासे जाड़, (कृ०)

माघ पूस के महीने मे जब हवा चलती है, तभी जाडा पड़ता है।

माट का माट ही बिगड़ा है

सबके सब एक से खराब हैं। घर या समाज के लोगो के लिए क०।

(माट मिट्टी के उस बर्तन को कहते है, जिसमे रगरेज रग तैयार करते हैं। रासायनिक रगो के आविष्कार के पहले नील, आल या टेसू के फूलो अथवा टहनियो आदि को मिट्टी के बर्तन मे डालकर सडाते थे। अगर उनके सडने अर्थात खमीर उठने मे कोई त्रुटि हो जाती थी, तो रग नही उतरता था। इसे ही 'माट बिगडना' कहते थे, जो अब एक मुहावरा बन गया है, कुल का कुल काम बिगड जाना।)

माटी मे माटी मिली, मिली पौन मे पौन।
मै तोय पूंछूं ऐ सखि, दोनों में मुआ कौन।

स्पष्ट। शरीर पर कहा गया है।

मुआ=मरा।

माड न जुरे, मांगे ताडी, (पू०)

हैसियत से अधिक शौक।

ताडी=ताड के वृक्ष से निकाला हुआ नशीला रस, जिसका व्यवहार मद्य के रूप मे करते है।

माता का हाथ, भाई का साथ

दोनो अमूल्य है।

माता के परसे, भादों के बरसे पेट भरता है, (कृ०)

स्पष्ट।

पाठा०—माता न परसे भरे न पेट, भादो न बरसे भरे न खेत। वर्षा भादो मे ही अधिक होती है, इसीलिए कहा गया है।

माता बर्गी मामता, सौकन बर्गी वैर।
दूजा को राखे नहीं, देखा सांझ सबेर। (ग्रा०)

मा से अधिक ममता और सूरत से अधिक वैर रखनेवाला ससार मे कोई नही। इसे अच्छी तरह खोज कर देख लिया गया है।

माथ पर मोटरी, बसंत के गीत (पू०)

असगत काम। भाव यह है कि बोझ तो ढो रहे हैं और बसत के गीत गाने का शौक चर्राया है।

मोटरी=गठरी।

माथ मुड़ा के फजीहत भये, जात-पांत दोनो से गये

ऐसा काम करना, जिससे न इधर के रहे न उधर के। दोनो दीन से जाना।

(कथा है कि कोई मनुष्य इस विचार से फकीर हो गया कि भीख मागकर जीवन बिताना अधिक सुविधाजनक है। किन्तु थोडे दिनो बाद यह रास्ता उसे अच्छा नही लगा, और उसने फिर अपनी जाति मे मिलना चाहा, पर जातिवालो ने उसे नही लिया। इस प्रकार वह दोनो ओर से गया।)

माथे का मुडौना, बेल का खिसकना, (पू०)

सिर मुडाते ही बेल गिरा। किसी कार्य का आरम्भ करते ही विघ्न आ जाना।

माथे गठरी मधुरी चाल, आज न पहुंचब, पहुचब काल, (पू०)

(१) बेफिक्र आदमी का कहना।

(२) काम धैर्यपूर्वक करना चाहिए, देर लगे कोई परवाह नही।

मान का पान भी बहुत होता है

सम्मान से दी गई थोडी वस्तु भी बहुत होती है।

मान का पान, हीरा समान

दे० ऊ०।

मान का माहुर और अपमान का लड्डू

मान का ज़हर भी अच्छा होता है।

मान घटे नित के घर जायें, ज्ञान घटे कुसंगत पाये।
भाव घटे कुछ मुख के मांगे, रोग घटे कुछ औषध खाये।

रोज़-रोज (किसी के) घर जाने से इज्ज़त घटती है, बुरी सगत मे बैठने से ज्ञान घटता है, किसी से कुछ मुह से मागने मे कद्र घटती है, और दवा के खाने से रोग दूर होता है।

मान न मान, मै तेरा मेहमान

जबर्दस्ती किसी के गले पडना।

मान न मान, मै दूल्हा की चाची, (स्त्रि०)

दे० ऊ०।

मानस कसने को मुआमला कसौटी है

आदमी की परख काम पडने पर होती है।

माने तो देव, नहीं भीत का लेव, (स्त्रि०)

विश्वास से ही सब होता है। पूरा वचन यो है
भाव भाव मे सिद्धि, भाव भाव मे भेव।
जो मानो तो देव हे, नही भीत का लेव।
लेव=पलस्तर।

माने न जाने, 'मै भी नौशा की खाला', (स्त्रि०)

दे०—मान-न-मान मैं तेरा मेहमान।

मामू के कान मे बालिया, भानजा ऐंड़ा-ऐंड़ा फिरे

दूसरे की दौलत पर घमड या शेखी करना।

माया का क्या जोडना, खल खाना कंबल ओढ़ना

(१) किसी फक्कड का कहना।

(२) ऐसे धनी कजूस के लिए भी व्यग्य मे कहते है, जो धन-सचय मे ही सुख मानता है।

माया के भी पांव होते है, आज मेरे कल तेरे

लक्ष्मी एक जगह नही ठहरती।

माया गंठ और विद्या कंठ

पैसा पास रहने और विद्या कठस्थ रहने से ही काम आती है।

माया तेरे तीन नाम, परसू, परसा, परसराम

आर्थिक स्थिति के हिसाब से ही मनुष्य का सम्मान होता है। किसी एक गरीब को लोग, परशुराम नाम होने पर भी, परसू ही कहते है,। वही व्यक्ति कुछ हालत सुधर जाने पर 'परसा' और फिर धनी हो जाने पर परशुराम कहलाने लगता है। मतलब, पैसे की ही इज्ज़त होती हे।

माया मरी न मन मरे, मर-मर गये शरीर।
आशा तृष्णा ना मरे, कह गये दास कबीर।

माया, इच्छा, आशा और तृष्णा का नाश नही होता, शरीर ही का नाश होता ह।
(स—भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता
स्तपो न तप्त वयमेव तप्ता।
कालो न यातोवयमेव यात,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा। (भर्तृहरि)

माया मेरे राम की, धरनीधर की देह।
पूजी साहूकार ही, यश कोई कर लेय।

स्पष्ट।
दान के लिए प्रेरित किया गया है।

माया से माया मिले, कर कर लबे हाथ।
तुलसीदास गरीब की, कोई न पूछे बात।

धनी के पास ही और अधिक धन आता ह अथवा धनवान की सब इज्ज़त करते है। गरीब को कोई नही पूछता।

माया से माया मिले, मिले नीच से नीच।
पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।

जो जैसा होता है, वह वैसे ही से मेल करता है।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ कठोर।
नौ नेजे पानी चढ़ा, तऊ न भीजी कोर।

हृदय मे यदि उदारता नहीं, तो पैसा होने मे क्या लाभ? पत्थर यद्यपि पानी मे भीगा रहता है,

किन्तु फिर भी उस पर पानी का कोई असर नही होता।
नेजा=वास।
कोर=किनार।

मार के आगे भूत नाचे
मार से सब भय खाते है।
पाठा०—मार के आगे भूत भागे।

मार खाता जाय, और कहे 'मारो तो सही'
कायर और निर्लज्ज के लिए क०।

मार खाना, मसजिद मे सो रहना
ठग और उठाईगीरो के लिए क०।
(जिसका कोई घरवार नही होता, वही मसजिद मे जाकर सोता है।)

मार गुसैया, तेरी आस
वहुत सताए जाने पर नौकर का मालिक से या स्त्री का पति से कहना।

मारते का हाथ पकड़ा जाता है, कहते की जबान नहीं पकड़ी जाती
किसी को कोई झूठ या सच वात कहने से रोका नही जा सकता।

मारते के पीछे और भागते के आगे
कायर के लिए क०।

मारतेखां से सब डरते है, (मु०)
ज़बर्दस्त से भय खाते हैं।

मारनेवाले से जिलानेवाला बडा दाता है
जब किसी सकट से किसी के प्राण बच जाए, तब क०।

मार पीछे संवार
मारने के वाद माफी मागना। अथवा लडाई मे पहले तो बढकर हाथ जमाना चाहिए, फिर वाद मे जो हो सो देखे।

मार-मार किये जाय, फतह दाद इलाही है
भरपूर प्रयत्न तो करना ही चाहिए, सफलता तो ईश्वर के अधीन है।

मार-मार के सती करना
इच्छा के विरुद्ध काम लेना।

मार मुए मार, तेरी हथड़ियां पिरायं, मेरी आदत न जाय, (स्त्रि०)
वहुत हठीली और वेशर्म स्त्री से क०।

मारा चे अज़ी किस्सा कि गाव आमद ख़र रफ़्त, (फा०)
गाय आई और गधा चला गया मुझे इस किस्से से क्या मतलव? भाव यह कि अप्रयोजनीय विषय की चर्चा मत करो।

मारा मुंह तवाक, आगे धरा न खाय
पिटा हुआ आदमी भोजन करने से डरता है, यद्यपि थाली आगे रखी है।
तवाक=एक प्रकार की वडी तश्तरी।

मारे न चूहा, नाम फतेहखा
डीग हाकनेवाले से क०।

मारे मेहर और भागे पड़ौसन, (पू०)
कोई औरत पिट रही है और पडोसिन भागती है, कि कही मैं भी न पिट जाऊ।

मारे सिपाही, नाम सरदार का।
काटे वार, नाम तलवार का।
असली काम तो नीचे के छोटे आदमी ही करते है, पर यश मिलता है वडो को।

माल का मुह करते है, जान का मुह नही करते
पैसे का ख्याल करते है, जान का नही करते। कजूस के लिए क०, जो धन को प्राणो से अधिक चाहता है।

माल के नुकसान मे जान की खैर
पैसा गया, पर जान तो बची। किसी का धन तो जाए, तो धैर्य बधाने को कहते हैं।

माल का जकात है
हैसियत के मुताविक हर आदमी को दान पुण्य करना चाहिए।
जकात=वार्षिक आय का चालीसवा हिस्सा, जो दान-पुण्य मे खर्च करने के लिए मुसलमानी धर्म मे कहा गया है।

मालवाला हार, गालवाला जीते
जिसका असली हक है, वह तो हार जाता है और वातूनी जीत जाता है।

(अदालतो के मामले-मुकद्दमो के सम्बन्ध मे कहा गया है, जहा पावनेदार तो हार जाता है और वकीलो की पैरवी से देनदार जीतता है।)

माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप।
साधू चाहे बोलना, चोर चाहे चूप।

स्पष्ट।

साहू=साहूकार।

चुप=चुप्पी।

मालूम होगा हश्र को पीना शराब का, (मु०)

शराबियो के लिए मुस्लिम क०।

जब कयामत के दिन ईश्वर के यहा विचार होगा, तब शराब पीने का मजा मालूम पडेगा।

माले मुफ़्त दिले बेरहम

दूसरे का माल लोग बेरहमी से खर्च करते है।

माशूक की जात बेवफा है

स्पष्ट।

बेवफा=बेमुरव्वत, कृतघ्न।

मास खाये मास बढ़े, घी खाये बल होय।
साग खाये ओझ बढ़े, बूता कहां से होय।

स्पष्ट।

ओझ=पेट

मास बिना सब साग रसोई, (मु०)

मास के बिना सब भोजन साग-भाजी की तरह है। मासाहारियो का कहना।

मासे भर की चार कचौडी, खुरमा मासे ढाई का।
घर मे रोवें बहिन भानजी, बाहर रोवे नाई का।
धीरे-धीरे जीमो पंचो, देखो गजब खुदाई का।
लालाजी ने व्याह रचाया, लहंगा बेच लुगाई का।

दे० तोले भर की ।

मित्र वह मर जाये जो अडी मे काम न आया

जो मौके पर काम न आए, वह मित्र ही किस काम का ?

मिजाज क्या है कि एक तमाशा,
घडी मे तोला, घडी में माशा

अव्यवस्थित चित्त।

मिट्टी पकडे सोना हो

भाग्यवान पुरुष।

मियां का दम और किवाड़ की जोड़ी

किसी ऐसे भले आदमी की बात जिसके पास कुछ नही, और जो किसी बात की फिक्र भी नही करता।

मियां की दाढ़ी वाहवाही मे गई

झूठी प्रशसा के लाभ मे जब कोई अपनी सब संपत्ति उडा दे तब क०।

(कहानी के लिए दे० मुल्ला की ।)

मियां के मियां गये, बुरे-बुरे सुपने आये (पू० स्त्रि०)

किसी स्त्री का पति मर गया है, या शायद विदेश चला गया है, उसका कथन। एक के बाद दूसरी मुसीबत।

मियां गये रौंद, बीबी गई पटरौंद

मिया का हाल बिगडा हुआ है, तो बीबी का हाल उनसे भी अधिक बिगडा हुआ।

मियांन मे से निकला ही पड़े है

आपे से बाहर हुआ जा रहा है। अकारण क्रोध करने पर क०।

मियां नाक काटने को फिरे, बीबी कहें नय गढ़ा दो, (मु०, स्त्रि०)

(१) एक दूसरे की इच्छा के बिल्कुल विरुद्ध काम।

(२) परस्पर मेल न होना।

मियां ने टोही, सब काम से खोई, (स्त्रि०)

मिया ने कुछ गडबड करना चाहा, और वह (नौकरानी) भाग गई।

अपनी बेवकूफी से अडचन पैदा कर लेना।

मियां फिरें लाल गुलाल, बीबी के हैं बुरे हवाल (स्त्रि०)

आप तो छैल चिकनिया बने फिरना, और घर की खबर न लेना।

मिया बीबी राजी तो क्या करेगा काजी

दो पक्ष एक हो जाएं, तो बीच मे हस्तक्षेप करना व्यर्थ है।

मियां हाथ अंगूठी बीबी के कनपात।
लौंडी के दांत मिस्सी, तीनों की एक बात।(पू०)

सब एक से शौकीन। जैसा मालिक वैसा नौकर।

कनपात=पान के पत्ते। कान का एक आभूषण।

मिरग की सी आंखें, चीते की सी कमर
रूपवती स्त्री।

मिरग, बादरा, तीतर, मोर; ये चारो खेती के चोर, (कृ०)
स्पष्ट। इनसे खेती नष्ट होती है।
बादरा=बदर।

मिरजा फोया
बहुत सुकुमार आदमी।
फोया=रूई का टुकडा।

मिलकी क्या जाने पराये दिल की
कौन आदमी किस प्रकार जीवन बिता रहा है, यह धनी पुरुष नही जान सकता।

मिलकी ना कहे दिल की; पैठें दरवाजे, निकलें खिड़की, (पू०)
धनी पुरुप कब, कौन-सा काम, किस तरह करते है, कोई जान नही सकता।

मिल गये की सलाम आलेक हे
झूठे मित्र के लिए क०।

मिस्सी काजल किसको, मिया चले भुस को, (स्त्रि०)
गरीबी की हालत पर क०। मिस्सी काजल किस पर लगाऊ? मिया तो जा रहे हैं भुस भरने।

मीजान ज्यो-का-त्यो, कुनबा डूबा क्यो?
दे० हिसाब ज्यो का त्यो ।

मीठा और कठौती भर
(१) अच्छी चीज़ कम ही मिलती हे।
(२) दुहरा लाभ होने पर भी क०।

मीठा मीठा हप हप, कडुवा कडुवा थू थू
अच्छी चीज चुन-चुन कर लेना और बुरी दूसरो के लिए छोड देना।

मीठी छुरी
कपटी मनुष्य।

मीठी बातो मे दिन रात कटे मालूम नहीं होते
स्पष्ट।

मीठे से मरे तो माहुर क्यो दीजे
दे० गुड दिये मरे.. ।
माहुर=ज़हर।

मीर साहब की जात आली है
मुंह चिकना और पेट खाली है
स्पष्ट। शौकीनो पर व्यग्य।

मीर साहब ज़माना नाज़ुक है, दोनों हाथों से थामिये दस्तार
खूब सम्हलकर रहने के लिए कहा जा रहा है। अपनी इज्ज़त बचाइए।
दस्तार=पगडी।

मीरा की बोटी है, (मु०)
बडा हिस्सा तो बडे आदमी को ही मिलेगा। (दरगाहो के मुजाविर या मदिरो के पुजारी चढावे या प्रसाद का हिस्सा पीर या देवता के नाम से अलग रख लेते है, शेप सबको बाट देते हैं। उसी से मतलब है।)

मीरा गोर बराबर
जितने बडे मिया उतनी ही बडी उनकी कब्र। आमदनी खर्च बराबर।

मुडा जोगी और पिसी दवा
पहचानी नही जाती।

मुड़े सिर पर पानी पड़ा, ढल गया
बेशर्म।

मुह कहे 'खाया खाया', हलक कहे 'सवाद न आया'
कोई चीज़ इतनी थोडी मिलनी कि उसमे कोई मजा ही न आए।

मुह का निवाला तो नहीं है
जो जल्दी निगल लिया जाए। अर्थात अपने हाथ का काम नही है।

मुह काला, वक्त उजाला
दुष्ट भाग्यवान के लिए क०।

मुंह की मीठी, हाथ की झूठी, (स्त्रि०)
मुंह से मीठी बात करे, पर हाथ मे कभी कोई चीज़ उठाकर न दे।

मुंह के आगे खंदक नहीं
खाने या बात करने की एक सीमा होनी है।

मुह को कालख लग गई
बदनामी हो गई।

मुंह खाय, आंख लजाय
जिसका खाय उसका एहसानमद होना ही पडता है।

मुह गैल तमाचे हैं
आदमी को देखकर उसका सम्मान होता है।

मुंह चिकना, पेट खाली
कोरी, साफ शौकीनी।

मुंह देख के बीडा और चूतड देख के पीडा
आदमी की हैसियत देखकर ही लोग उसका आदर-सत्कार करते है। धनवान की अधिक खातिर की जाती है और गरीब की कम।
बीडा=पान।
पीडा=बैठने के लिए आसन।

मुंह देखी सब कहते हैं, खुदा लगती कोई नहीं कहता
मुलाहिज़े मे आकर पक्षपात की बात सब करते है, सच कोई नही कहना चाहता।

मुंह देखे की मुहब्बत है
दिखावटी प्रेम सब करते हैं।

मुंह धो रक्खो
अर्थात जो तुम चाहते हो, वह नही होने का।

मुंह न तूह, नाम चांद खां
नाम के अनुसार रूप नही।

मुह नूर, न पेट सबूर
अभागा मनुष्य।
नूर=रौनक।
सबूर=धैर्य, अर्थात पेट खाली।

मुह पर कहना खुशामद है
मुह देखकर बात करना ठीक नही।

मुंह पर कहे सो मूंछ का बाल, पीछे कहे सो झाट का बाल
पीठ पीछे किसी की निंदा अच्छी नही, जो कहे सो मुह पर ही कहना चाहिए।

मुंह पर हवाइयां लगीं
होश गुम हो गए। बुरी तरह घबरा गए।

मुंह पर पूत, पीछे हरामी भूत, (स्त्रि०)
सामने तो मीठी बात, पर पीछे निंदा।

मुंह पर फिटकार बरसने लगी
सभी धिक्कारने लगे।

मुंह पर मुमानी, पीठ पीछे सुअर खानी, (स्त्रि०)
दे० मुह पर पूत...।
मुमानी=मामा की स्त्री। माई।

मुंह मांगी मुराद मिले
भीख मागते समय भिक्षुक कहा करते हैं कि भगवान तुम्हारी इच्छाए पूरी करे।

मुंह मांगी मौत तो मिलती ही नहीं
(१) मनुष्य जो चाहता है वह नही होता।
(२) मागने से कुछ नही मिलता।

मुंह मागे दाम नहीं मिलते, (व्य०)
मनचाहा कोई काम नही होता।

मुंह मे आया सो बक दिया
बिना सोचे बात करना।

मुंह में दांत, न पेट में आंत
बहुत बूढा मनुष्य।

मुंह रहते नाक से पानी पिये
असगत काम। मूर्ख से क०।

मुंह लगाई डोमनी, गावे ताल बेताल
किसी को बहुत मुह नही लगाना चाहिए।
(कहावत का भाव यह है कि डोमनी को यदि सिर पर चढा लिया जाए, तो फिर वह किसी की बात नही सुनेगी, जैसा मन मे आएगा वैसा गाएगी।)
डोमनी=डोम की स्त्री, एक गाने बजानेवाली भिक्षुक जाति की स्त्री।

मुंह लगाई डोमनी बाल-बच्चों समेत आये
किसी के साथ थोड़ा भी अच्छा व्यवहार करो, तो वह फिर उसका अनुचित लाभ उठाता है। डोमनी से अच्छी तरह बात करो, तो वह पूरे परिवार को लेकर भोजन के लिए आती है।

मुंह लगी और फ़ैल मेरे पेट मे
शराब के लिए क० कि एक बार जहा पीने की आदत पड़ गई कि बुरे कामो के सिवा आदमी को और कुछ नहीं सूझता।

मुंह सुई पेट कुई
(१) जो थोड़ा-थोड़ा करके बहुत खा जाए।

(२) जो देखने मे तो भला, पर वास्तव मे बहुत शरारती हो।

मुंह से निकली हुई पराई बात
बात मुह से बाहर निकली नही कि वह फिर सबको मालूम हो जाती है।

मुंह से बोलो, सिर से खेलो
हा-हू कुछ तो करो। जब किसी के सिर देवता आते है, तो वह बहुत देर तक सिर हिलाकर हू-हू करता है। उसी से 'सिर से खेलना, मुहावरा बना, जिसका अर्थ है सिर हिलाकर बात का जवाब देना।

मुंह से महाबा
सामने मौजूद रहने से भय होता है। नजर रखने से काम ठीक होता है।

मुंह से राल टपकी पडती है
किसी चीज को देखकर उसे खाने अथवा पाने की बहुत लालसा होना।

मुंह से 'लाम' 'काफ' मत निकालो
बदज़बानी मत करो।

मुंह से हज़ार चाउर खाय, नाके से एक ना, (पू०, स्त्रि०)
चावल मुह से ही खाए जाते है, नाक से नही। ठीक ढग से जितना काम बन सके, उतना ही करना चाहिए।

मुंह हाले सत्तर बला टाले
(१) रोगी के लिए क० कि यदि वह खाने लगे, तो समझ लो रोग चला गया। (२) आलसी के लिए भी कह सकते है जो केवल हा-हू करके काम करने की मुसीबत से बचना चाहता हे।

मुंह-ही-मुंह मारे और तोबा-तोबा पुकारे
लडको के सम्बन्ध मे क० कि उनकी रिआयत नही करनी चाहिए। उन्हे ताडना करते रहना चाहिए।

मुई क्यो ? सास न आया, (स्त्रि०)
दे० मरी क्यो....। बेतुका प्रश्न।

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है ?
(१) पितरो का श्राद्ध करने पर किसी अन्य धर्मी का व्यग्य। (२) जब कोई बुढापे मे जवानी का मजा लूटना चाहे तब भी क०।

मुई बछिया बामन को दान, (हि०)
निकम्मी चीज़ दूसरे के मत्थे मढकर एहसान करना।

मुई माई, टूटी सगाई
मा के मरने पर नैहर का नाता टूट जाता है। क्योकि मा ही लडकी को सबसे अधिक प्यार करती है।

मुई लोलो आंडो पर
कमज़ोर अपना गुस्सा बेकसूर पर उतारता है। लोलो=पुरुषेन्द्रिय।

मुएंगे और सो रहेगे
मरने पर सब झगडो से छुट्टी मिल जाती है।

मुए पर सौ दुर्रे, (मु०)
मरे को सब मारते है।

मुए बैल की बडी-बडी आखें
मरने के बाद आदमी की सब प्रशसा करते है, जीते-जी कोई नही पूछता।

मुए शेर से जीती बिल्ली भली
साहस बडी चीज़ है।

मुकतमाल बानर लिये, वेद लिए अज्ञान।
परम सुंदरी जोगी लिये, कायर हाथ कमान।
बदर के हाथ मे मोतियो की माला, मूर्ख के हाथ मे वेद, जोगी के साथ परम सुदरी स्त्री, और कायर के हाथ मे धनुष– ये सब हास्यजनक कार्य है।

मुख में 'राम राम' बगल में छुरी
पाखडी।

मुख़ादिम खा के साले
वह जो दूसरो के बल पर लबी-चौडी बातें करे।

मुजर्रद सब से आला, जिसके लडका न बाला
बिना ब्याह का आदमी सब मे अच्छा, उसे किसी बात की फिक्र नही होती।
मुजर्रद=क्वारा।

मुझको न मारे तो सारे जहान को मार आऊं
कोरी डींग हाकनेवाले मे क०।

मुझे और न तुझे ठौर
ऐसे दो व्यक्ति, जिनका एक-दूसरे के बिना काम न चले, पर जो एक-दूसरे से सन्तुष्ट भी न रहते हो।

मुझे दे सूप तू हाथों फूंक
स्वार्थी व्यक्ति।

मुद्दई मुद्दालेह नाव में, शाहद तैरते जायें
दे० नाव चढे....।

मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त
(१) जिसका असली काम है, वह तो लापरवाही करे, दूसरे आवश्यकता से अधिक दिलचस्पी दिखाए तब क०। (२) रिश्वत लेकर जो हमेशा झूठी गवाही देने को तैयार रहते है उन्हे भी क०।

मुफलिस का चिराग रोशन नहीं होता
गरीब आदमी का कोई काम सफल नही होता।

मुफलिस की जोरू सदा नंगी
पैसा न होने से गहना-कपडा नही मिलता।

मुफलिस से सवाल हराम है, (मु०)
गरीब से कुछ मागना बुरा है।

मुफलिस हमेशा ख्वार
गरीब हमेशा नीचा देखता है।

मुफलिसी और फालसे का शर्बत
हैसियत से बाहर जाना।

मुफलिसी और हाट की सैर
दे० ऊ०।

मुफलिसी मे आटा गीला
विपत्ति मे विपत्ति।

मुफलिसी सब बहार खोती है, मर्द का एतबार खोती है
गरीबी बुरी चीज हे। जिंदगी का सब मजा चला जाता हे, और मनुष्य अपना विश्वास भी खो बैठता हे।

मुफ़्त का करना और दूर ले जाना
वृथा परिश्रम।

मुफ़्त का चदन घिसे जा बिलल्ली, (स्त्रि०)
(१) मुफ्त का माल सबको अच्छा लगता है। (२) दूसरे की वस्तु का दुरुपयोग करने पर भी क०।

मुफ़्त का माल किसको बुरा लगता है?
सबको अच्छा लगता है।

मुफ्त का सिरका शहद से मीठा
मुफ्त की बुरी-से-बुरी चीज भी अच्छी होती है। सिरका खट्टा होता है।

मुफ्त की दावत में फकत रोटी ही गोश्त है, (मु०)
मुफ्त का रूखा भी खाने को मिले, तो वह भी अच्छा।

मुफ्त की शराब काज़ी को भी हलाल, (मु०)
मुसलमानो मे शराब पीना मना है। विशेषकर काजियो के लिए, पर मुफ्त की मिले, तो फिर पीने मे दोष क्या?

मुफ्त के खानेवाले हम और हमारा भाई, (स्त्रि०)
स्त्रिया प्राय अपने पति का धन अपने भाई-भतीजो को दे दिया करती हैं। उसी पर कहा गया है।

मुफ्त के चिड़वा भर-भर फंके
हराम का खानेवालो के लिए क०।
चिडवा=चिऊडा, हरे या उबले हुए चावलो को भूनकर बनाया गया विशेष प्रकार का चिपटा दाना।

मुफ्त मे निकले काम तो काहे को दीजे दाम
मुफ्त मे काम करानेवालो को क०।

मुफ़्त राचे गुफ़्त, (फा०)
मुफ्त की चीज मे दोष नही निकालना चाहिए।

मुरगा पशम, भेड भसम, (मु०)
जो भेड को पचा सकता है उसके लिए मुर्गा क्या चीज है? धूर्त के लिए क०।

मुरगा बांग न देगा, तो क्या सुबह न होगी? (मु०)
किसी एक आदमी के न होने से दुनिया के काम नही रुकते।

मुरगा हज़म, बकरी पर दम, (मु०)
मुर्गा हज़म कर लिया, अब बकरी पर नजर। लालची या धूर्त आदमी।

मुरगी अपनी जान से गई, खानेवाले को मज़ा न आया, (मु०, स्त्रि०)
किसी के त्याग, परिश्रम या आत्मबलिदान की उचित प्रशसा न करना।

मुरगी की अज़ान कौन सुनता है? (मु०)
(१) गरीब की कोई सुनवाई नही करता।
(२) स्त्रियो की बात का कोई विश्वास नही होता।
अजान=आवाज।

मुरगी की बांग का क्या इतवार? (मु०)
किसी छोटे आदमी की बात का क्या विश्वास?

मुरगी के ख्वाब में दाना-ही-दाना
जिसे जिसकी चिंता रहती है, सपने मे भी उसे वही चीज़ दिखाई देती है।

मुरगी को तकले का ही घाव बस है, (स्त्रि०)
गरीब के लिए थोड़ी हानि भी असह्य हो जाती है।

मुरगे की एक ही टांग होती है, (मु०)
जब कोई आदमी सरासर झूठ बोलकर उसे सही साबित करने की कोशिश करे तब क०।
(इसकी कथा है कि कोई बावर्ची अपने मालिक के लिए खाना पकाकर लाया। उसमे मुर्गे की एक ही टाग थी। एक टाग बावर्ची ने चुपचाप खा ली थी। मालिक ने पूछा—इसकी दूसरी टाग कहा गई? बावर्ची ने जवाब दिया—हुजूर, मुर्गे के सिर्फ एक ही टाग होती है। सयोगवश किसी दिन एक मुर्गा कूडे के ढेर पर एक टाग से खडा था। बावर्ची ने मुर्गे की ओर इशारा करके कहा—हुजूर, एक टाग के मुर्गे को देखिए। जब मालिक ने ताली बजाई, तो मुर्गे ने झट दूसरा पैर जमीन पर रख दिया, और बावर्ची से कहा—देख, इसके दोनो पैर है कि एक? इस पर उसने जवाब दिया—हुजूर, ताली बजाने से दो पैर दीख पडे। अगर उस समय भी आपने ऐसा किया होता, तो दूसरा पैर जरूर सामने आ जाता।)

मुरदा ब-दस्ते जिंदा, (फा०)
मुरदा जिन्दे के हाथ मे है, उसका चाहे जो करो।
लाशे को दफन कीजे मेरे याके फेंक दीजे।
मुर्दा बदस्त जिंदा, जो चाहिये सो कीजे। (जौक)

मुरदा बहिश्त मे जाय या दोजख मे, यहां तो हलवे मांडे से काम, (मु०)
जो केवल अपना मतलब देखे उसके लिए क०। (मुसलमानो मे मुर्दे के सामने जो मुल्ला कुरान पढता है, उसे मिठाई आदि मिलती है। उसी के मुह से उक्त वाक्य कहलवाया गया है।) मुल्लों और पंडों का दृष्टिकोण।

मुरदे को बैठकर रोते हैं और रोजगार को खड़े होकर
मुर्दे के लिए तो आदमी (आराम से) बैठकर रोता है, पर जीविका के चले जाने पर परेशान घूमता है। मतलब जीव से जीविका प्यारी होती है।

मुरदे पर सौ मन मिट्टी तो एक मन और सही, (मु०)
जब इतना नुकसान हुआ तो थोडा और सही, पर काम तो करके छोडेंगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

मुरदो से शर्त बांध कर सोता है
बेखबर सोनेवाला।

मुरब्बी बियार—वो मुरब्बा बिखूर, (फा०)
मुरब्बी बिना मुरब्बा नही पकता। आशय यह कि किसी धनी आदमी को अपने काबू मे किए बिना बढिया मालटाल खाने को नही मिलते।

मुलाजिमे नौ तेज रौ, (फा०)
नया नौकर काम मे फुर्ती दिखाता है।

मुल्के खुदा तंग नेस्त, पाये मरा लंग नेस्त, (फा०)
ईश्वर का मुल्क थोडा नही है और मैं भी पैरो से लगडा नही हू। किसी उद्योगी पुरुष का कहना, जिसे काम से जवाब दे दिया गया है।

मुल्ला की दाढ़ी तबर्रुक मे गई, (मु०)
वाहवाही मे सब धन लुट गया।
(कथा है कि कोई मुल्ला यादगार के तौर पर चेलो को चीजें बाट रहे थे। यह देखकर एक ममखरे ने कहा कि मुल्ला जी आपकी दाढी हमेशा मुझे आपकी याद दिलाती रहेगी। यह कहकर उनकी दाढी मे से उसने एक बाल उखाड लिया। यह देखकर सभी चेले आगे बढे और मुल्ला के बहुत मना करते रहने पर भी उन्होने एक-एक बाल करके उनकी सारी दाढी नोच डाली।)

मुल्ला जी क्या कहें, आखून जी आगे ही समझे हुए हैं, (मु०)
तुम क्या कहोगे, हम पहले से ही सब जानते हैं।
आखून जी=शिक्षक। उस्ताद।

मुल्ला न होगा तो क्या मसजिद में अजान न होगी (मु०)
किसी एक आदमी के विना दुनिया का काम नही रुकता।

मुश्क आं अस्त कि खुदवोयद, न कि अत्तर गोयद, (फा०)
कस्तूरी तो (अपनी गध से) स्वय अपना परिचय दे देती है, गधी को कुछ कहने की आवश्यकता नही पडती।

मुश्किले नेस्त कि आसां न शवद, मर्द वायद कि हिरासां न शवद, (फा०)
ऐसा कोई मुश्किल काम नही जो (प्रयत्न करने से) आसान न हो जाए, मनुष्य को हिम्मत नही हारनी चाहिए।

मुसलमानां दर गोर, मुसलमानी दर किताव, (फा०)
मुसलमान सव कब्र मे है, और उनका मजहव किताबो मे। अर्थात सच्चे मुसलमान अव नही रह गए।

मुसलमानी अवादानी, (मु०)
जहा भी मुसलमान होते हैं, वे सव इकट्ठे रहते है।

मुसलमानी मे आनाकानी क्या ? (मु०)
जो काम करना ही है उसमे हीले-हवाले की जरूरत क्या ?
मुसलमानी=मुसलमानो की वह रस्म, जिसमे छोटे वालक की इन्द्रिय पर का कुछ चमडा काट डाला जाता हे। सुन्नत।

मुसल्ला पसार, वगल में यार, (मु०)
नमाज पढने जा रहे हैं, फिर भी वगल मे माशूक दवाए हे। पाखडी।
मुसल्ला=वह दरी, जिस पर नमाज पढी जाती है।

मुसाफिर चले ही जाते हैं, कुत्ते भौंकते ही रहते है
काम करनेवाले काम करते है, वकनेवाले वकते रहते हैं।

मुहर्रम की पैदाइश, (मु०)
मनहूस आदमी।
(मुहर्रम के दिनो मे मुसलमान हसन-हुसैन की यादगार मे शोक मनाते है। इसीलिए क०।)

मुहरें लुटी जायें, कोयलों पर मुहर
दे० अशर्फिया लुटे ।

मूंग मोठ में वडा कौन ?
विरादरी मे कोई छोटा वडा नही होता, सव वरावर।

मूछ मरोड़ा रोटा तोड़ा
आलसी आदमी।

मूंज की टट्टी और गुजराती ताला
असगत या हास्यजनक काम।
(१) घास की टट्टी मे गुजराती ताला (जो कीमती होता है) शोभा नही देता।
(२) मूज की टट्टी, जो स्वय कमजोर होती है, उसमे (गुजराती) मजवूत ताला लगाना मूर्खता है। (पजाव का गुजरात नामक स्थान किसी समय तालो के लिए प्रसिद्ध था।)

मूंड़ दिया, माग खाओ
योगियो का अपने-अपने चेलो से क० कि हमने चेला वना लिया अव अपना काम तुम करो।

मूड़ मुड़ाये, जटा रखाये, नगन फिरैं ज्यों भैंसा।
खलड़ी ऊपर राख लगाये, मन जैसे का तैसा।
पाखडी साधुओ के प्रति क०।

मूड मुड़ाये तीन गुन, गई टाट की खाज।
वावा हो जग मे फिरैं, खाय पेट भर नाज।
मूड मुडाने (साधु होने) मे तीन लाभ हैं—सिर की खुजली जाती रहती है, दुनिया मे मान होता है और पेट भर खाने को मिलता है। दिखावटी साधुओ पर व्यग्य।

मूजी का चंगुल
वुरा होता है।
मूजी=(१) कजूस (२) अत्याचारी।
चगुल=पजा। फदा।

मूजी का माल निकले फूट के खाल
मूजी का माल हजम नही होता।

मूजी को नमाज छोड़ के मारे, (मु०)
दुष्ट जीव को जव देखे तभी मारे।

मूत का चुल्लू हाथ मे

ऐसा आदमी जो दूसरो पर गदगी उछालता फिरे।

मूरख की सारी रैन, चातुर की एक घड़ी

(१) मूरख के साथ सारी रात रहने की अपेक्षा चतुर के साथ घडी भर रहना अच्छा।

(२) जिस काम के करने मे मूरख घटो लगा देता है, चतुर उसे जरा देर मे (बहुत सुघराई के साथ) निपटा देता है।

मूरख को समझाइए, ज्ञान गांठ को जाय

मूरख को उपदेश देना व्यर्थ है।

मूरख को समझावना सरस बीज चलि जाय।
ज्यों पत्थर के मारने, चोखो तीर नसाय।

मूर्ख को उपदेश देने से सपूर्ण अच्छे उद्देश्यो की हानि हो जाती है, जैसे पत्थर पर चोखा तीर मारने से वह नष्ट हो जाता है।

मूरख मूढ़ गंवार को सीख न दीजो कोय।
कूकड़ वर्गी पूंछड़ी कभी न सीधी होय।

मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है। चाहे जितना प्रयत्न करो कुत्ते की पूछ कभी सीधी नही होती।

मूरख से क्या कहिये, जा से क्या बिसाइये ?

मूर्ख से वात क्यो की जाए ? उससे कोई लाभ नही।

मूल से ब्याज प्यारा होता है, (व्य०)

मूल तो अपना ही है ब्याज नफे मे मिलता है, इसलिए अधिक प्यारा होता है।

मूली अपने ही पातो भारी है

जो स्वय अपनी ही विपत्ति मे फंसा हो वह दूसरो की विपत्ति कैसे दूर कर सकता है ?

मूली और मूली के पत्तो पर नोन की डली, (पू०)

जव कोई अपनी अत्यंत साधारण वस्तुओ को ही वडी करके वताए तव क०।

मूली हाय पराइयां, जिस चाहे तिस दे, (पं०)

दूसरे के हाथ की वात है, वह चाहे जो करे हम क्या कर सकते है ? ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

मेढकी को भी जुकाम हुआ

जव कोई साधारण आदमी अपने को वहुत महत्व दे तब क०।

मेंह बरसेगा तो बौछार आ ही जायेगी

किसी ऐसे मनुष्य का कहना जो यह आशा करता है कि कोई उदार हृदय घनी पुरुष यदि खर्च करेगा, तो उसे भी कुछ-न-कुछ मिल ही जाएगा।

मेंह, लड़का और नौकरी घड़ी-घड़ी नहीं हुआ करती

स्पष्ट।

मेरा था सो तेरा हुआ, बराये खुदा टुक देखने दे, (स्त्रि०)

दे० तेरा है सो मेरा था ।

बराये खुदा=ईश्वर के लिए।

मेरा दिल बेदिल हुआ देख जगत की रीत

ऐसे मनुष्य का कहना जो दुनिया के हालचाल देखकर विरक्त हो रहा है।

मेरा बैल मनतिक़ नहीं पढ़ा है

जव कोई आदमी व्यर्थ की हुज्जत करे तव उससे पिंड छुडाने के लिए क०।

(कथा है कि किसी तर्कशास्त्री ने एक तेली से पूछा कि तुम लोग अपने वैल के गले मे घटी क्यो वाघते हो ? तेली ने जवाव दिया कि जव हम वैल के पास नही भी होते है, तो हमे घटी के शब्द से मालूम हो जाता है कि वैल खडा नही है और काम कर रहा है। इस पर उन्होने कहा कि यदि वह वैल यो ही खडा होकर अपना सिर हिलाए और घटी वजाता रहे, तो तुम्हे कैसे पता चलेगा कि वैल काम करता है। इस पर तेली ने हँसकर ऊपर लिखा जवाव दिया।)

मनतिक=न्याय। तर्कशास्त्र।

मेरा माया उसी वक़्त ठनका था, (स्त्रि०)

मुझे तभी आशका हुई थी (कि कोई विपत्ति आने-वाली है।)

मेरी एक बोली, दो बोली, मेरी नकटी सटासट बोली, (स्त्रि०)

एक लडाकू स्त्री का दूसरी से कहना कि मैने तो एक गाली दी, दो गालिया दी, लेकिन यह नकटी तो वरावर गाली दिए जा रही है।

मेरी तेरे आगे और तेरी मेरे आगे कहना अच्छा नहीं

चुगलखोरी अच्छा काम नही।

मेरी ही बिल्ली और मुझसे ही म्याऊँ
मेरा ही खाए और मुझे ही आख दिखाए?

मेरे गांव का कूडिया, नाम रक्खा इन्दर जौ
जब कोई मनुष्य अपने निवासस्थान मे तो बहुत साधारण हैसियत रखता हो, पर बाहर जाकर लबी- चौडी बाते करे, तब क०।
(कूडिया और इन्द्र जौ एक ही पौधे के दो नाम हैं।)

मेरे ब्याह, जीजी के ठिक-ठिक, (स्त्रि०)
बिना प्रयोजन दूसरे के सिर मे दर्द।
जीजी=जिठानी, अथवा बड़ी बहिन।

मेरे मियां के दो कपड़े, सुथना, नाडा बस, (स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने अकर्मण्य पति का मज़ाक उडा रही है कि उसके पास पैजामा और नाडा, बस ये ही दो कपडे है। वास्तव मे कपडा तो एक ही है। नाडा कोई वस्त्र नही।

मेरे, मेरे मुंह की-सी; तेरे, तेरे मुंह की-सी करता फिरता है
चापलूस।

मेरे यहां आज गुर्रा है
मेरे यहा आज चूल्हा नही जला।
गुर्रा=उपवास।

मेरे लाल के सौ-सौ यार, धुनिये, जुलाहे और मनिहार, (स्त्रि०)
बुरी सगत मे पडे लडके को लक्ष्य करके मा कह रही है।
मनिहार=बिसाती।

मेरे लाला की उल्टी रीत, सावन मास चुनावें भीत, (स्त्रि०)
जो काम जब न करना चाहिए तब करना।

मेरे ही से आग लाई, नाम धरा बैसादुर, (स्त्रि०)
दूसरे के यहा से चीज़ लाकर उस पर घमड करना और किये का एहसान न मानना।
बैसादुर=वैश्वानर, यज्ञ की पवित्र अग्नि का नाम।

मेरे है सो राजा के नहीं, और राजा मेरा मंगता, (स्त्रि०)
जब कोई अपनी चीज़ पर बहुत घमड करे या किसी को मागे से न दे, तब उसके प्रति क०।

मेले में झमेला हुआ ही करता है
मेले-ठेले मे कुछ-न-कुछ दगा-फसाद हो ही जाता है।

मेव का पूत बारह बरस मे बदला लेता है
स्पष्ट।
(मेव कथित हलकी श्रेणी के मुसलमान मछुए होते है, जो बड़े प्रतिहिंसक माने जाते है।)

मेव बेटी जब दे, जब ओखली भर रुपैया रखवा ले
मेवो के ब्याह मे लडकी बेचते है।

मेव मरा जब जानिए, जब तीजा हो जाय
मेव बडे तगडे, हट्टे-कट्टे और हठीले भी होते है। इसी से उनके सम्बन्ध मे यह कहावत बनी। (कथा है कि किसी मेवाती को एक बनिए का कर्ज चुकाना था। जब उसे कर्ज अदा करने का कोई और रास्ता नही सूझा, तो उसने अपने मरने की खबर फैला दी। उसके मित्र जब उसे कब्रिस्तान मे दफनाने के लिए ले गए, तो बनिया भी यह जानने के लिए कि वह सचमुच मरा है या नही, उसके पीछे-पीछे गया। उसके सामने ही मेवाती के मित्रो ने उसे दफना दिया। पर ज्यो ही बनिया वहा से वापस आया, उन लोगो ने फिर जाकर उसे बाहर निकाल लिया। दूसरे दिन बनिए ने जब मेवाती को जिन्दा देखा, तब उसने उक्त वाक्य कहा। मुसलमानो मे मरने के तीसरे दिन जो सस्कार होता है, वह तीजा कहलाता है।)

मेहनत आराम की कुंजी है
परिश्रम से ही सुख मिलता है।

मेहर करे तो मेह बरसावे
ईश्वर की कृपा से ही सब कुछ होता है।

मेहर गई, मुहब्बत गई, गई नान और पान।
हुक्के से मुंह झुलस के, विदा किया मेहमान।
कजूस की मेहमानदारी।
मेहर=कृपा।
नान=रोटी।

मेहर है पर दूध नहीं
झूठी आवभगत।

मेहरिया के आगे सगुन असगुन
स्त्रियो के लिए शकुन भी अशकुन होता है। उन्हे हर बात मे सदेह रहता है।

मेहरी की रोक, जान की शोक
स्त्री का हठ एक मुसीबत है।

मैं और मेरा मानुस, तीसरे का मुंह झुलस, (स्त्रि०)
स्वार्थी स्त्री. जो अपने सिवा किसी और की चिता नही करती।

मै कब कहूं 'तेरे बेटे को मिरगी आवे है', (स्त्रि०)
जिस बात के लिए वह कह रही है कि मैंने नही कहा, उसी का जान-बूझकर वह प्रचार भी कर रही है। अपनी सफाई देनाओर दूसरे की निदा भी करते जाना।

मै करूं तेरी भलाई, तू करे मेरी आंख में सलाई, (स्त्रि०)
भलाई के बदले बुराई करना।

मै की गर्दन पर छुरी
बहुत 'मैं-मैं' करता है अर्थात अपनापन दिखाता है, इसीलिए वह मारा जाता है। अहकारी को नीचा देखना पड़ता है।

मैं के गले पर छुरी
दे० ऊ०।

मै क्या तेरी पट्टी तले हूं, (स्त्रि०)
मै क्या किसी बात मे तुझ से कम हू? अथवा क्या मैं तेरी दबैल हू?
पट्टी=चारपाई से मतलब है।

मै तुम्हे चाहूं और तू काले धींग को, (स्त्रि०)
हम जिसे चाहते है, वह दूसरे को चाहती है।

मैं तो तेरी लाल पगिया पै भूली रे, रघुआ
किसी बनठन कर रहनेवाले पर व्यग्य।

मैंने क्या उसकी खीर खाई है?
क्या मै उससे दबा हुआ हू?

मै भली कि पनेठा?
मैं ही अच्छी हू।
पनेठा=फेरीवाला।

मैं भली, तू शाबाश, (स्त्रि०)
एक दूसरे की प्रशसा करना।
(स०—अहो रूपमहोध्वनि।)

मैं भी हूं पांचवें सवारों में
अपने को अनुचित महत्व देना।
(कथा के लिए दे०—पाचो सवार ।)

मै मरूं तेरे लिये, तू मरे वाके लिये
कोई दूसरे के लिए अपने प्राण दे, पर वह उसकी परवाह न करे, तब क०।

मैं ही पाल करा मुस्तंडा, मोय ही मारे लेके डडा, (स्त्रि०)
अयोग्य और दुष्ट लडके से मा का कहना।

मैदे और शहाब की-सी लोई
आधा चेहरा सफेद, आधा लाल।
शहाब=एक प्रकार का गहरा लाल रग।
लोई=आटे की गोली।

मैना जो 'मैं ना' कहे, दूध भात नित खाय।
बकरी जो 'मैं मैं' करे, उल्टी खाल खिचाय।
जो मैना 'मैं ना' कहती है, उसका आदर होता है और जो बकरी 'मै मैं' करती है, उसकी खाल खीची जाती है। आशय यह कि विनम्र और मधुरभाषी की इज्ज़त होती है और दभी मारा जाता है।
मैना=एक पक्षी।
मै ना=मै नही हू, मेरा कोई अस्तित्व नही।
मैं मैं=(१) बकरे की बोली (२) मैं हू, अर्थात अहकार।

मैल का बैल बनाते हैं
बात का बतगड़ बनाना।

मैला कपडा पातर देह, कुत्ता काटे कौन सदेह
हलके तबके के सरकारी कर्मचारी प्राय अनपढ़ ग्रामीणो और गरीबो को सताया करते है, उन्ही पर कही गई है।

मोको न तोको, ले चूल्हे मे झोको, (स्त्रि०)
दो आदमी किसी चीज के लिए लड रहे हैं। उनमे से किसी एक का कहना कि 'अच्छा, यह न मेरे लिए, न तुम्हारे लिए, इसे फेंको चूल्हे मे।'

मोजे का घाव, मियां जाने या पाव
जूता कहां काट रहा है, इसे तो मियां जानते हैं या

(ब्राह्मण पूजा कराते समय बात-बात मे दक्षिणा मागते है। कहावत मे उसी ओर सकेत है।)

यह बात शराफत से बईद है

यह बात या काम शिष्टता से बाहर है, मतलब, ऐसा मत करो।

यह बातें मत कीजियो, कधी न तू अय यार।
जिन बातों में रूस जायं, साईं और संसार।

स्पष्ट।

रूस जाय=अप्रसन्न हो जाए।

यह बिस की गांठ है

बडा फितरती है।

यह बेल मढ़े चढ़ती नजर नहीं आती

जब कोई काम पूरा होते न दिखाई दे, अथवा उसकी सफलता मे सदेह हो।

मढे=मडप पर।

यह भी अपने वक़्त के हातिमताई है

बडे परोपकारी हैं। (हातिम अरब के एक बहुत प्रसिद्ध दाता और परोपकारी हो गये हैं।)

यह भी किसी ने न पूछा कि तेरे मुंह मे कै दांत हैं?

किसी ने मुझे टोका तक नही। राज्य के ऐसे सुप्रबध के लिए, जहा जान-माल का खतरा न हो।

यह भी दाम गुलामो खाये, यह भी बैंगन काट पकाये

सब तरह से बरबाद होना।

यह भी मेरी बात तु, जिऊ विच धर ले।
गज्जा दे गजवाल को, पर जिऊ भेद मत दे।

धन भले ही दे दे, पर मन का भेद किसी को न बताए।

गज्जा=गज। हाथी।

गजवाल को=हाथीवाले को। महावत को।

यह भी शिक्षा नाथ जी, कह गये ठोकम-ठीक।
खोवें आदर मान को, दगा, लोभ अरु भीक।

स्पष्ट।

यह मुह और गाजरें?

योग्यता से अधिक पाने की इच्छा रखना।

(गाजर यद्यपि एक सस्ती वस्तु है, पर यहा व्यग्य मे ही कहा गया है।)

यह मुंह और मसूर की दाल?

दे० ऊ०।

यह मुंह पान जोगा?

जब किसी ऐसे मनुष्य को पान दिया जा रहा हो, जिसने किसी की निंदा की हो, तब उसके प्रति तिरस्कार दिखाते हुए क०।

दे० ऊपर की दोनो कहावते भी।

यह मेरी शिक्षा निपट है आछी, रोटी भूल न खा अधकाची

कच्ची रोटी नही खानी चाहिए।

यह मेरी शिक्षा पिया चित लाओ, पर नारी को दूर से ताहो

पर स्त्री से दूर रहना चाहिए।

यह मेरी शिक्षा मान प्यारे, सौदा कभी न बेच उधारे, (व्य०)

सौदा कभी उधार न दे।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेला, कभी बाट मत चाल अकेला

अकेले दूर की यात्रा नही करनी चाहिए।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेले, वासूं मत मिल जुआ जो खेले

जुआरी की सगत न करे।

यह मेरी सिख मान रे बीरा, कपटी सग न राखो सीरा

कपटी के साथ कोई साझा या व्यवहार न करे।

यह मेरी सिख मान रे मीता, भीड़ समे मत रह हत रीता

भीड मे खाली हाथ न रहे, अर्थात कुछ लाठी वगैरह साथ रक्खे।

यह मेरी शिक्षा मान सहेली, पर नर सग न बैठ अकेली (स्त्रि०)

स्त्री को पराए पुरुष के साथ अकेला नही बैठना चाहिए।

यह वह गुड़ नहीं जो चिउटी खाये

बहुत कंजूस या मक्खीचूस आदमी की चीज, जिसे हर कोई आसानी से नही ले सकता।

यह वह फ़कीर नहीं, जो खा कर दुआ दे

ऐसा व्यक्ति, जो एहसान न माने।

यह आपके फरमाने की बात है
आप जो कुछ कहते है, वह ठीक है। मैं क्या कहू ?

यह किसी का भी सगा नहीं
धोखेबाज आदमी।

यह कुत्ता नही मानता
छिछोरे के लिए क०।

यह कै फाको मे सीखे थे
आपने जो यह लाजवाब बात कही, वह कितने उपवास करने के बाद सीखी थी ?
जब कोई लेखक अपनी कही हुई कोई ऐसी सुनाए, जिसका उसे बडा गर्व हो, तब व्यग्य मे क०।

यह कौवा फसने की चाल है
जब कोई गहरी चालाकी करे, तब क०।
(कौवो के बारे मे प्रसिद्ध है कि वे मुश्किल से जाल मे फसते है।)

यह गगा किसकी खुदाई है ?
जब कोई अपने माल-मत्ता का बहुत घमड करे, तब उससे ताने मे क०। और दो अर्थो मे कहावत का प्रयोग होता है (१) उसके पास जो कुछ है, वह ईश्वर का दिया हुआ है। अथवा (२) उस सबके लिए वह ववता के निकट ऋणी है।

यह घोड़ा किसका ? जिसका मै नौकर; तू नौकर किसका ? जिसका यह घोड़ा
किसी बात का सीधा उत्तर न देना; घुमा-फिराकर बात कहना।

यह जवानी मुझे न भाव, सीग डलाव हँसी आव
कोई मनुष्य किसी जानवर को सीग हिलाते देखकर हँसने लगा, तब किसी दूसरे ने उससे उक्त बात कही। व्यर्थ दात निपोरने पर क०।

यह तीन काने, और यह पौ-बारह
चौसर खेलते समय दो आदमियो मे से एक के तीन काने (अर्थात एक-एक करके तीन) पडे, तब दूसरे ने पासे फेककर उक्त बात कही कि लो, ये मेरे पौ बारह। अर्थात मैं ऐसा खिलाडी नही, जो मेरे तीन काने पडे।
(चौसर के खेल मे तीन काने पडना बहुत व्यर्थ और असुविधाजनक माना जाता है, जब कि पौ बारह पडना बहुत अच्छा।)

यह तू शिक्षा साध की, निहचे चित मे ला।
भेद न अपने जीउ का, औरन को बतला।
स्पष्ट।
निहचे=निश्चित रूप से।
जीउ=हृदय।

यह तो अच्छे थे, ऊपरवालो ने बिगाड़ दिया
कुसग मे पडकर कोई आदमी बिगड गया। उसका कोई मित्र उसका पक्ष लेकर उक्त बात कह रहा है।

यह दाढ़ी धोखे की टट्टी है
दाढी देखकर इसे भला आदमी मत समझो। धूर्त्त के लिए क०।

यह दिन सब के वास्ते हैं
मृत्यु के दिन से अभि०।

यह दीदे नदीदे हैं दीदार के
ये आखें दर्शन की प्यासी है।
नदीदे=लोलुप।
दीदार=दर्शन।

यह दुनिया दिन चार है, सग न तेरे जाय।
साईं का रख आसरा, अरु वासेहि नेह लगा।
यह ससार नश्वर है, किसी के साथ नही जाएगा, ईश्वर पर भरोसा करके उससे प्रीति करनी चाहिए।

यह पट्टी नही पढ़े
हम तुम्हारी बातो मे नही आने के। अथवा हम ऐसा अनुचित काम नही करने के।

यह वचन मेरा ठीक है, सोच इसे तू जान।
मरे बिना छूटे नहीं, जैसे भोंड़ी बान।
स्पष्ट।
भोडी बान=बुरी आदत।

यह वड़ मिट्ठा, यह वड़ खट्टा
मन की अस्थिरता।

यह वात, वह वात, टका धर मोरे हाथ
बार-बार अपने ही मतलब की बात करनेवाले के लिए क०।

(ब्राह्मण पूजा कराते समय बात-बात मे दक्षिणा मागते है। कहावत मे उसी ओर सकेत है।)

यह बात शराफत से बईद है

यह बात या काम शिष्टता से बाहर है, मतलब, ऐसा मत करो।

यह बातें मत कीजियो, कधी न तू अय यार।
जिन बातों में रूस जाय, साईं और संसार।

स्पष्ट।

रूस जाय=अप्रसन्न हो जाए।

यह बिस की गांठ है

बडा फितरती है।

यह बेल मढ़े चढ़ती नजर नहीं आती

जब कोई काम पूरा होते न दिखाई दे, अथवा उसकी सफलता मे सदेह हो।

मढे=मडप पर।

यह भी अपने वक्त के हातिमताई है

बडे परोपकारी हैं। (हातिम अरब के एक बहुत प्रसिद्ध दाता और परोपकारी हो गये हैं।)

यह भी किसी ने न पूछा कि तेरे मुह मे कै दांत हैं ?

किसी ने मुझे टोका तक नही। राज्य के ऐसे सुप्रबध के लिए, जहा जान-माल का खतरा न हो।

यह भी दाम गुलामो खाये, यह भी बैंगन काट पकाये

सब तरह से बरबाद होना।

यह भी मेरी बात तू, जिऊ बिच धर ले।
गज्जा दे गजवाल को, पर जिऊ भेद मत दे।

धन भले ही दे दे, पर मन का भेद किसी को न बताए।

गज्जा=गज। हाथी।

गजवाल को=हाथीवाले को। महावत को।

यह भी शिक्षा नाथ जी, कह गये ठीकम-ठीक।
खोवें आदर मान को, दगा, लोभ अरु भीक।

स्पष्ट।

यह मुह और गाजरें ?

योग्यता से अधिक पाने की इच्छा रखना।

(गाजर यद्यपि एक सस्ती वस्तु है, पर यहा व्यग्य मे ही कहा गया है।)

यह मुह और मसूर की दाल ?

दे० ऊ०।

यह मुंह पान जोगा ?

जब किसी ऐसे मनुष्य को पान दिया जा रहा हो, जिसने किसी की निंदा की हो, तब उसके प्रति तिरस्कार दिखाते हुए क०।

दे० ऊपर की दोनो कहावते भी।

यह मेरी शिक्षा निपट हे आछो, रोटी भूल न खा अधकाची

कच्ची रोटी नही खानी चाहिए।

यह मेरी शिक्षा पिया चित लाओ, पर नारी को दूर से ताहो

पर स्त्री से दूर रहना चाहिए।

यह मेरी शिक्षा मान प्यारे, सौदा कभी न बेच उधारे, (व्य०)

सौदा कभी उधार न दे।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेला, कभी बाट मत चाल अकेला

अकेले दूर की यात्रा नही करनी चाहिए।

यह मेरी शिक्षा मान रे चेले, वासू मत मिल जुआ जो खेले

जुआरी की सगत न करे।

यह मेरी सिख मान रे बीरा, कपटी सग न राखो सीरा

कपटी के साथ कोई साझा या व्यवहार न करे।

यह मेरी सिख मान रे मीता, भीड़ सभे मत रह हत रीता

भीड मे खाली हाथ न रहे, अर्थात कुछ लाठी वगैरह साथ रक्खे।

यह मेरी शिक्षा मान सहेली, पर नर सग न बैठ अकेली (स्त्रि०)

स्त्री को पराए पुरुष के साथ अकेला नही बैठना चाहिए।

यह वह गुड़ नहीं जो चिउटी खाये

बहुत सजग या सतर्क आदमी की [illegible], [illegible] कोई आसानी से नही [illegible] [illegible]।

यह वह फ़क़ीर नहीं, जो [illegible] पर दुआ दे

ऐसा व्यक्ति, जो एहसान न माने।

यहां अच्छों के पर जलते है
यहा फरिश्ते भी घबराते है। कडे अफसर के वारे मे क०। कठिन काम के लिए भी क०।

यहां उल्टी गंगा बहती है
यहा सव काम उल्टे होते हैं।

यहा के वावा आदम हो निराले हैं
जहा सनकीपन से काम लिया जा रहा हो, वहा क०।

यहां क्या तेरी नाल गड़ी है ?
यहा क्या तेरी वपौती है ? जव कोई मनुष्य किसी जगह को न छोडना चाहे, तव क०।
(हिन्दुओ मे प्रथा है कि बच्चे के पैदा होने पर उसकी नाल वही सौरी घर मे गाड देते है। कहावत मे उसी की ओर सकेत है।)

यहां जरूर कुछ दाल में काला है
कुछ गडवड है।

यहा तुम्हारी टिक्की नहीं लगेगी
यहा तुम्हारा काम नही वनने का, अथवा हम तुम्हारी वातो मे नही आने के।

यहां तुम्हारी दाल नहीं गलेगी
दे० ऊ०।

यहा तो हम भी हैरान हैं
फिर तुम्हे क्या सलाह दें ?

यहा परिन्दा पर नहीं मार सकता
कोई पास नही फटक सकता।

यहां फरिश्तो के पर जलते है, (मु०)
दे०—यहा अच्छो के पर. .।

यहां फिक्र मैशत है वहां दगदगे हश्र,
आसूदगी हरफेस्त न यहां है, न वहां है।
इस लोक मे खाने की चिंता है, और उस लोक मे ईश्वरीय न्याय का डर, मनुष्य को सुख, न यहा है न वहा ?

यहा सव कान पकड़ते है
(१) यहा कोई उस्ताद नही, सव चेले वनकर रहते हैं।
(२) यहा काम करने मे सव घवराते हैं।

यहां हजरत्त जिब्राईल के भी पर जलते हैं, (मु०)
यहा वे भी घवराते हैं।
दे०—यहा अच्छो के पर . .।
(हजरत जिब्राईल एक फरिश्ते है।)

यही गौर, यही मैदान
अर्थात घटना यही घटित हुई।

यही गौना, वहुरि नहिं औना
मृत्यु पर।

यही भरोसा ठीक है कि दाता दे तो लू।
औरत का कर आसरा, जी तरसावे क्यूं।
ईश्वर के देने ही से काम चलता है।

यही भला है मीत जो, झूठ कथे ना बोल।
बंग न सोना हो सके, फिरत सुनहरी झोल।
झूठ कभी नही बोलना चाहिए, (क्योंकि) रागे पर सोने का मुलम्मा करने से सोना नही होता।

यही मुंह, यही मसाला
आप इसी मुह से यही मसाला खाएगे ? तात्पर्य यह कि आप पहले अपने को इस योग्य वनाए तो !

यही लच्छन मार खाने के हैं
प्राय: बच्चो से कहते हैं, जव वे वडो का कहना नही मानते।

या इधर हो, या उधर हो
बहुत आगा-पीछा सोचना ठीक नही। जल्दी निश्चय करो।

या करे दर्दमद, या करे गर्जमद
या तो दुखिया खुशामद करता है या गरजवाला।

या किसी को कर रहे, या किसी का हो रहे
दुनिया मे दो तरह से ही काम चलता है, या तो किसी को अपना एहमानमद वना ले, या किसी का एहसानमद होकर रहे।

या खाय घोड़ा, या खाय रोडा
घोडे के रखने और मकान की मरम्मत मे नित्य खर्च होता रहता है, इसीलिए क०।
रोडा=ईट-चूना।

या खुदा खैर कर, खैर का वेड़ा पार कर
हे ईश्वर, हमारी रक्षा कर, और सबों का भला कर। फकीर भीख मागने समय क०।

या खुदा खैर, वचा हाथ-पैर
स्पष्ट।

या खुदा तू दे, न मैं दूं

कजूस को क०।

या तो भर मांग सेंदुर, या निपट ही रांड

किसी चीज के दिए जाने पर उसे अधिक मागना, या फिर उसके बिना ही रहना। जो मिल रहा है, उसमे सतोष न करना।

(हिन्दुओ मे सेंदुर सौभाग्य का चिह्न माना जाता है, और व्याह के समय कन्या की माग सेंदुर से भरने की प्रथा है।)

भर माग सेंदुर=माग मे खूब सेंदुर।

याद करी भगवान की, तो हो गये भगत कबीर।
झूठे वाकी याद बिन, सब है पीर फकीर।

स्पष्ट।

(कबीर १५ वी शताब्दी मे एक बडे सत और कवि हो गए हैं।)

याद भली भगवान की और भली ना कोय।
राजा की कर चाकरी, जो परजा तावे होय।

ईश्वर का ध्यान सबसे अच्छा है। जो राजा की सेवा करता है, सब उसके वश मे रहते हैं।

याद रक्खो इस बात को, जो है तुम मे ज्ञान।
साईं जाकी हो गया, वाका सगर जहान।

स्पष्ट।

साईं=ईश्वर।

सगर=सकल। समस्त।

या बसे गूजर, या रहे ऊजर

यह कहा० निम्नलिखित किंवदती पर आधारित है—(कहा जाता है कि दिल्ली का बादशाह मुहम्मद तुगलक (१३२४-१३५१) जब दिल्ली के नजदीक तुगलकाबाद का किला बनवा रहा था, तो उसी के पास ही प्रसिद्ध सूफी सत हजरत निजामुद्दीन औलिया एक कुआ खुदवा रहा थे। किले के काम मे इससे बडी बाधा पडने लगी, क्योकि सभी मजदूर और राज निजामुद्दीन साहब के कुए पर ही काम करने चले जाते थे। बादशाह को जब यह बात मालूम हुई, तो उसने इस बात का कडा हुक्म दिया कि एक मजदूर भी कुए पर काम करने न जाए। बेचारे मजदूर तब दिन भर बादशाह के यहा और रात को सत साहब के यहा काम करने लगे। एक दिन बादशाह जब किले का काम देखने आया, तो उसने बहुत से मजदूरो को अपने काम पर ऊघते पाया। पूरा किस्सा मालूम होने पर बादशाह ने तेल बेचनेवालो को निजामुद्दीन साहब के हाथ तेल बेचने से मना कर दिया। बादशाह ने सोचा था कि ऐसा करने से उनका रात का काम बद हो जाएगा। दैव योग से उसी दिन कुए मे पानी का एक सोता निकला। तब निजामुद्दीन साहब ने मजदूरो से कहा कि तुम लोग नित्य प्रति रात को काम करने आया करो। इसी कुए का पानी तेल का काम करेगा। जैसा उन्होंने कहा था, वैसा ही हुआ। बादशाह को जब यह बात मालूम हुई तो उसने उन्हे एक जादूगर समझा और उनका सिर मागा। दूसरे दिन जब निजामुद्दीन साहब को इसका पता चला, तो उन्होने गुस्से मे आकर बादशाह को शाप दिया कि तेरे ऊपर वज्रपात हो और उस किले मे गूजरो का वास हो या खाली ही पडा रहे। उसी समय आसमान मे काली घनघोर घटाए घिर आईं और किले पर बिजली टूटी, जिससे तुगलक की मृत्यु हो गई। अब भी यह किला ध्वसावस्था मे पडा है, और इसके एक भाग मे बहुत दिनो तक गूजर लोग रहते रहे। इसी से कहावत चली।)

या बेईमानी, तेरा ही आसरा

जब कोई बेईमानी करे तब क०।

या बेहयाई (मु०, स्त्रि०)

बेशर्म से क०।

या भैंसा भैंसों मे, या कसाई के खूंटे पर

भैंसे को या तो भैंसो के झुड मे देखा जा सकता है, और यदि वह कसाई के हाथ बेच दिया गया है, तो उसके खूटे से बधा मिलेगा।

(कुसग मे पडे ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसके उठने-बैठने के कुछ निश्चित अड्डे बन गए हो।)

या मारे साझे का काम, या मारे भादों का घाम

साझे का काम और भादो की धूप, ये दोनो कष्टदायक होते है।

यारे शातिर हूं न बारे खातिर, (फा०)
मित्र वही जो सुख पहुचाए, न कि दुख।

यार करूं, प्यार करूं ? चूतड़ तले अंगार धरूं, जल जाय तो क्या करूं ?
कपटी मित्र, जो ऊपर से प्रेम दिखाए, पर भीतर से हानि पहुचाने की चेष्टा करता रहे।

यार का गुस्सा भतार के ऊपर
दुराचारिणी स्त्री के लिए क०। किसी वजह से वह अपने प्रेमी से नाराज हो गई है, तो उसका गुस्सा अपने पति पर उतारती है।

यार का दिल यार रक्खे तो यार का भी रखिये।
यार के घर खीर पक्के तो तनिक सी चखिये।
यार के घर आग लगी तो पड़े पड़े तकिये।
स्वार्थी मित्र।

यार की यारी से काम, या यार के फेलों से
अपने मतलब से मतलव।

यार को करू प्यार, खसम को करूं भसम, लड़के को करू चटनी
बुरी औरत के लिए क०।

यार जिन्दा, सोहबत बाकी
जव तक यार जिंदा है, तव तक उससे मिलने की उम्मीद भी रहती है।

यार डोम ने किया जुलाहा, तन ढाकन को कपड़ा पाया
डोम ने जुलाहे को अपना मित्र वनाया, तो पहिनने को कपड़ा मिल गया।

यार डोम ने किया रंघड़िया और न देखा वैसा हड़िया
स्पष्ट।
हडिया=चोर।
(राघड एक छोटी जाति के राजपूत होते हैं, जो चोरी के लिए बदनाम है।)

यार डोम ने किया सिपाही, वात-वात मे करे लडाई
स्पष्ट।

यार डोम ने कीना कंजर, हर लिया पला पलाया कूकुर
स्पष्ट।

यार डोम ने कीना गूजर, चुरा-चुरा कर घर कर दिया ऊजड
स्पष्ट।

यार डोम ने कीना नाई, कौडी दे ना बाल मुडाई
स्पष्ट।

यार डोम ने जाट बनाया, सीत, दूध इन मुक्ता पाया
स्पष्ट
सीत=मठा।
मुक्ता=बहुत-सा।

यार डोम ने वनिया कीना, दस ले कर्ज सैकडा दीना
डोम ने वनिए को अपना मित्र बनाया, तो दस रुपए उधार लेकर सौ दिए।
(ऊपर की इन आठो कहावतो का तात्पर्य यह है कि जैसे का सग करोगे, वैसा ही फल मिलेगा।)

या रव मेरी आवरू, वा दिन रखियो सोय।
जा दिन सब संसार का, निर्मल लेखा होय।
स्पष्ट।
रव=ईश्वर।

यार वही, जो भीड़ में काम आवे
स्पष्ट।
भीड=विपत्ति।

यार वही है पक्का, जिसने मन यार का रक्खा
सच्चा मित्र वही है, जो मित्र के मन को प्रसन्न रखे।

यारां चोरी न पीरां दगावाजी, (मु०)
मित्रो से मन की वात छिपाना और सतो को ठगना ठीक नही।

या रिन्द रिन्दे, या फतहचंदे
या तो फकीर की तरह गरीब ही बने या फिर खूब अमीर।

यारी करें सो बावरे और कर के छोड़ें कूर।
या तो ओर निवाहिये, या फिर रहिये दूर।
जो प्रेम करते हैं, वे पागल हैं; जो करके छोड देते हैं वे मूर्ख हैं या तो अन्त तक अपना कर्त्तव्य पूरा करे या फिर उस रास्ते से दूर ही रहे।

या संसार में करम प्रधान
कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है, उसे वैसा फल

मिलता है।

या सुख नींद सो, या माला जपो

एक समय मे एक काम, दो काम एक साथ नही किए जा सकते।

या हसा मोती चुगें या लघन कर जायँ

स्वाभिमानी पुरुष मान के साथ ही जीवन व्यतीत करते है।

कवि-कल्पना है कि हस केवल मोती ही चुगते है। लघन=उपवास।

यूं मत जाने बावरे, कि पाप न पूछे कोय।
साईं के दरबार में, इक दिन लेखा होय।

स्पष्ट। लेखा=हिसाब-किताब।

यू मत जी मे जान तू कि मनुख बड़ा जग बीच।
याद बिना करतार की, है नीचन का नीच।

स्पष्ट।

यूं मत मान गुमान कर कि मै हूं शेर जवान।
तुझ से इस संसार में लाखों हैं बलवान।

स्पष्ट।

मान-गुमान=अभिमान।

रंग की खुशी, मन का सौदा

मनमौजी आदमी।

रग कौवे सा और मेहताब नाम

नाम तो बडा अच्छा, पर रगरूप बिल्कुल उसके विपरीत।

मेहताब=चाद।

रग रूप देख कर न भूलिये

ऊपरी तडक-भडक से धोखे मे नही आना चाहिए।

रंगरेज होते, तो अपनी दाढ़ी रगते

मन की एक मौज।

(रगरेज के काम को देखकर कोई खुश हो गया और वह मजे मे आकर कहता है।)

रंडियो की खरची और वकीलो का खरचा पेशगी ही दिया जाता है

क्योंकि बाद मे फिर कोई जल्दी नही देता।

रडी का जोबन रकाबी में

(१) जो पैसा दे, वह उसका उपयोग कर सकता है।

(२) बढिया चीजे खाने से रडी का यौवन बना रहता है।

रडी किसकी जोरू और भड़वे किसके साले

ये अपने मतलब के होते हैं।

रडी की कमाई या खाय ढाढी या खाय गाड़ी

रडी का पैसा गायको को खिलाने और गाडी-भाडा देने मे बहुत खर्च होता है।

रंडी की गाली और भूत के पत्थर की चोट नहीं लगती

रडी की गालियो का कोई बुरा नही मानता।

रडी के घर माड़े और आशको के घर कड़ाके

रडी जब बढिया माल-टाल उडाएगी, तो उसके चाहनेवाले तो भूखो मरेंगे ही, क्योकि उनका ही पैसा उसके यहा जाता है।

माडे=एक प्रकार की बहुत पतली बढिया रोटी।

रंडी के नाक न होती तो गू खाती फिरती

इसके दो अर्थ हैं—(१) रडी को अगर नाक से बदबू न आती, तो वह गदी-से-गदी चीज खा लेती। (२) उसे अगर अपनी नाक कटने (अर्थात बदनामी) का डर न होता तो वह गदे-से-गदा काम करने मे भी न हिचकती।

रंडी के सैकड़ों यार

स्पष्ट।

'रडी तेरा यार मर गया' कहा, 'कौन सी गली का?'

रडी के सैकडो यार होते है। कोई मर जाए, उसे क्या परवाह?

रडी पैसे की आशना है

रडी को पैसे से मतलब।

रडी फकीर कर दे दम मे शाहेजमा को।
बदकार करे पल मे ईमान नेकनाम को।

स्पष्ट।

शाहेजमा=दुनिया का बादशाह।

वदफन=दुर्गुणी।

रंडी मांगे रुपया 'ले ले मेरी मैया'।
फक्कड़ मांगे पैसा 'चल बे साले कैसा।'

रंडी को लोग खुशी से पैसा दे देते है, गरीब को नही देते।

रंडी मोम की नाक होती है

पैसा देकर चाहे जिधर मोड दो।

रंड़ुआ गया सगाई को, आपको लाभ या भाई को

स्त्री की उसे भी जरूरत है, इसलिए वह पहले अपना मतलब पूरा करेगा या दूसरे का? उसे भेजा ही नही जाना चाहिए था।

रकत ले गैलो सौतिन के घर (पू०, स्त्रि०)

किसी स्त्री से किसी ने पूछा—कहा गई थी? तो वह खीझकर जवाब देती है—रक्त लेने गई थी सौत के घर। मन का तीव्र क्षोभ प्रकट करने के लिए क०।

रक्खा तो चश्मों से, उड़ा दिया तो पश्मों से

(१) नौकर का कहना। मुझे रखते है तो अच्छी बात है, नही रखते तो उसकी परवाह नही।

(२) किसी को पहले तो बहुत आदर से रखना, बाद मे अनादर करके भगा देना, यह अर्थ भी कहावत का हो सकता है।

रक्खे तो पीत नही तो पलीत

निवाहा जा सके तो प्रेम, नही तो एक फजीहत है।

रक्खो इस मकूले पै दारो मदार,
कि नौ नगद अच्छे न तेरह उधार (व्य०)

कम मुनाफे पर नकद सौदा देना अच्छा, अधिक मुनाफे पर भी उधार देना अच्छा नही।

रख पछतावा कुछ नहीं, बेच पछतावा अच्छा (व्य०)

माल बेचकर पछताना अच्छा, रखकर पछताना अच्छा नही।

रख पत, रखा पत

दूसरे की इज्जत रखो, तो तुम्हारी भी इज्जत रहेगी।

रजा व क़जा

ईश्वर का किया मजूर है।

रजील की दो, न असराफ की सौ

नीच की दो गालिया भी भले आदमी की सौ गालियो के बराबर हैं।

रत्तियों जोड़े, तोलो खोवे; वाको लाभ कहा से होवे

थोडा कमाए और बहुत खर्च करे, तो उसके पास कुछ बच कैसे सकता है?

रत्ती दान न धी को दिया, देखो री समधन का हिया (स्त्रि०)

शिकायत कर रही है कि दहेज मे कुछ नही दिया। समधिन बडी कजूस है।

रत्ती दे कर मागे तोला, वाको कौन बतावे भोला

स्पष्ट।

रत्ती भर की तीन चपाती, खाने बैठे सात सगाती (स्त्रि०)

कजूस पर क०।

रत्ती भर धन साथ न जावे, जब तू मर कर जीव गवावे

स्पष्ट।

रत्ती भर सगाई, न गाड़ी भर आशनाई

(१) न किसी से हमे थोडा भी रिश्ता जोडना है, और न बहुत सी आशनाई, अर्थात हमे किसी से कुछ मतलब नही।

(२) मित्रता की अपेक्षा साधारण रिश्तेदारी अच्छी चीज है, यह अर्थ भी।

रन फतह हो गया

लडाई जीत गए। काम बन गया।

रपट परे की 'हर गगा'

कोई आदमी गगा के किनारे खडा था। नहाना नहीं चाहता था। पर पैर फिसला और पानी मे गिर पडा, तो लोगो को यह बताने के लिए वह स्नान करने ही आया था, बोल उठा 'हर गगा'। अनायास कोई अच्छा काम बन जाना।

रमज़ान के नमाज़ी मुहर्रम के सिपाही (मु०)

बाकी साल भर कुछ न करना। धूर्त या पाखडी के लिए क०।

(रमजान के महीने मे मुसलमान रोज़े रखते है। मुहर्रम मुसलमानी वर्ष का पहला महीना है, जिसमे

हसन साहव शहीद हुए थे। उनकी यादगार मे इस महीने मे ताज़िए निकलते है, जिनके साथ हसन की फौज के सिपाही वनकर लोग चलते हैं। यहा उन्ही सिपाहियो से मतलव है।)

रुले-मिले पंचो रहिये, जान जाये पर सच न कहिये

फितरती और झूठ वोलनेवाले पचो पर व्यग्य।

रस दिये मरे तो विष क्यों दीजे

सहज मे काम वने, तो कठोरता का आश्रय क्यो ले।

रस मारे रसायन हो

(१) पारे को भस्म करने से चादी व सोना वनता है।

(२) इच्छाओ का दमन करने से मनुष्य को सिद्धि मिलती है।

रस में विष

रग मे भग। आनद मे विघ्न।

रसोई और रसायन वरावर

दोनो का वनाना मुश्किल है। सवको नही आता।

रस्सी का सांप वन गया

छोटी-सी वात व्यर्थ वहुत वढ गई।

रस्सी जल गई पर वल नहीं गये

वर्वाद हो जाने पर भी अकड नही गई।

रस्सो जकडे अव नहीं ठैरते

(१) ससार के वधनो मे जकडे रहने पर भी अव ठहरना मुश्किल है, मौत नजदीक है।

(२) यद्यपि हम वधनो मे जकडे है, पर अव हमसे नही रहा जाता। जो करना चाहते है वह करेंगे।

रहना भला विदेस का, जहा न अपना कोई

किसी वीतराग का कहना।

रहव भुखले, चलव टिहुकले, (पू०)

भले ही भूखे रहे पर छाती तानकर चलेंगे।

रहमान को रहमान, शैतान को शैतान

(१) अच्छे के लिए अच्छा और वुरे के लिए वुरा।

(२) अच्छे को अच्छा ही मिलता है और वुरे को वुरा।

रहमान जोडे पली-पली, शैतान लुढ़काये कुप्पे

(१) घर मे स्त्री जव कोई चीज इकट्ठी करके रखे और कुत्ता-विल्ली खा जाए तव क०।

(२) घर का एक आदमी सचय करे और दूसरा उडाए तव भी क०।

रहम दिली वडाई की निशानी है

स्पष्ट।

रह रह वेंगना होने दे विहान, तुझ पर साजेंगे तीर कमान

झूठी डीग मारने वाले मे क०।

वेगना=मेढक।

विहान=सवेरा।

रहा करीमना तऊ घर गया, गया करीमना तऊ घर गया, (स्त्रि०)

स्त्री का (शायद) अपने निखट्टू पति के प्रति कहना कि करीम रहा, तो भी घर नष्ट होगा, न रहा तो भी नष्ट होगा।

जव किसी आदमी के विना काम न चले और उसके रहने से हानि भी हो तव क०।

रही वात थोडी, जीन, लगाम, घोडी

किसी को रास्ते मे एक चावुक पडी मिल गई, तव उसने कहा कि वस अव क्या है, ज़ीन, लगाम और घोडी खरीदना ही वाकी रहा। वहुत थोडे काम से ही जव आदमी यह समझ ले कि वस अव तो पूरा काम वन गया तव क०।

रहे अत मोची के मोची

फिर जैसे को तैसा हो जाना। वहुत कष्ट उठाने के वाद भी हालत न सुधरना।

रहे के भुसहुल, नाव लेवे के धरोहर, (पू०)

रहते है झोपडी मे और नाम है धरोहर।

झूठी शान वघारने पर क० धरोहर से मतलव है जो दूसरो का माल गिरवी रखे अर्थात साहूकार।

रहे झोंपड़ी मे, ख्वाब देखे महलो का

उच्चाकाक्षा रखना।

रहे तो टेक से, जाय तो [illegible] मे

(१) इज्जत से रहे, या फिर विल्कुल खतम हो जाए।

(२) जिद्दी के लिए भी यह कहते है कि मर भले

वदफन=दुर्गुणी।

रंडी मागे रुपया 'ले ले मेरी मैया'।
फक्कड़ मांगे पैसा 'चल वे साले कैसा।'

रंडी को लोग खुशी से पैसा दे देते है, गरीव को नही देते।

रंडी मोम की नाक होती है

पैसा देकर चाहे जिधर मोड दो।

रड़ुआ गया सगाई को, आपको लाभ या भाई को

स्त्री की उसे भी ज़रूरत है, इसलिए वह पहले अपना मतलव पूरा करेगा या दूसरे का? उसे भेजा ही नही जाना चाहिए था।

रकत ले गैलो सौतिन के घर (पू०, स्त्रि०)

किसी स्त्री से किसी ने पूछा—कहा गई थी? तो वह खीझकर जवाव देती हे—रक्त लेने गई थी सौत के घर। मन का तीव्र क्षोभ प्रकट करने के लिए क०।

रक्खा तो चश्मो से, उड़ा दिया तो पश्मों से

(१) नौकर का कहना। मुझे रखते हैं तो अच्छी वात है, नही रखते तो उसकी परवाह नही।

(२) किसी को पहले तो वहुत आदर से रखना, वाद मे अनादर करके भगा देना, यह अर्थ भी कहावत का हो सकता हे।

रक्खे तो पीत नहीं तो पलीत

निबाहा जा सके तो प्रेम, नही तो एक फजीहत है।

रक्खो इस मकूले पै दारो मदार,
कि नौ नगद अच्छे न तेरह उधार (व्य०)

कम मुनाफे पर नकद सौदा देना अच्छा, अधिक मुनाफे पर भी उधार देना अच्छा नही।

रख पछतावा कुछ नहीं, वेच पछतावा अच्छा (व्य०)

माल वेचकर पछताना अच्छा, रखकर पछताना अच्छा नही।

रख पत, रखा पत

दूसरे की इज्ज़त रखो, तो तुम्हारी भी इज्ज़त रहेगी।

रज़ा व कज़ा

ईश्वर का किया मजूर है।

रजील की दो, न असराफ की सौ

नीच की दो गालिया भी भले आदमी की सौ गालियो के वरावर हैं।

रत्तियों जोड़े, तोलो खोवे; वाको लाभ कहा से होवे

थोडा कमाए और वहुत खर्च करे, तो उसके पास कुछ वच कैसे सकता है?

रत्तो दान न धी को दिया, देखो री समधन का हिया (स्त्रि०)

शिकायत कर रही है कि दहेज मे कुछ नही दिया। समधिन वडी कजूस है।

रत्ती दे कर मागे तोला, वाको कोन वतावे भोला

स्पष्ट।

रत्ती भर की तीन चपाती, खाने वैठे सात सगाती (स्त्रि०)

कजूस पर क०।

रत्ती भर धन साथ न जावे, जव तू मर कर जीव गंवावे

स्पष्ट।

रत्ती भर सगाई, न गाड़ी भर आशनाई

(१) न किसी से हमे थोडा भी रिश्ता जोडना है और न वहुत सी आशनाई, अर्थात हमे किसी से कुछ मतलव नही।

(२) मित्रता की अपेक्षा साधारण रिश्तेदारी अच्छी चीज है, यह अर्थ भी।

रन फतह हो गया

लडाई जीत गए। काम वन गया।

रपट परे की 'हर गगा'

कोई आदमी गगा के किनारे खडा था। नहाना नहीं चाहता था। पर पैर फिसला और पानी मे गिर पडा, तो लोगो को यह वताने के लिए वह स्नान करने ही आया था, वोल उठा 'हर गगा'। अनायास कोई अच्छा काम वन जाना।

रमज़ान के नमाज़ी मुहर्रम के सिपाही (मु०)

वाकी साल भर कुछ न करना। धूर्त या पाखडी के लिए क०।

(रमजान के महीने मे मुसलमान रोज़े रखते है। मुहर्रम मुसलमानी वर्ष का पहला महीना है, जिसमे

हसन साहव शहीद हुए थे। उनकी यादगार मे इस महीने मे ताज़िए निकलते है, जिनके साथ हसन की फौज के सिपाही वनकर लोग चलते हैं। यहा उन्ही सिपाहियो से मतलव है।)

रले-मिले पंचो रहिये, जान जाये पर सच न कहिये

फितरती और झूठ बोलनेवाले पचो पर व्यग्य।

रस दिये मरे तो विष क्यों दीजे

सहज मे काम वने, तो कठोरता का आश्रय क्यो ले।

रस मारे रसायन हो

(१) पारे को भस्म करने से चादी व सोना वनता है।

(२) इच्छाओ का दमन करने से मनुष्य को सिद्धि मिलती है।

रस में विष

रग मे भग। आनद मे विघ्न।

रसोई और रसायन वरावर

दोनो का वनाना मुश्किल है। सवको नही आता।

रस्सी का सांप वन गया

छोटी-सी वात व्यर्थ वहुत वढ गई।

रस्सी जल गई पर वल नहीं गये

वर्वाद हो जाने पर भी अकड़ नही गई।

रस्सो जकडे अव नहीं ठैरते

(१) ससार के वधनो मे जकडे रहने पर भी अव ठहरना मुश्किल है, मौत नजदीक है।

(२) यद्यपि हम वधनो मे जकडे हैं, पर अव हमसे नही रहा जाता। जो करना चाहते है वह करेंगे।

रहना भला विदेस का, जहा न अपना कोई

किसी वीतराग का कहना।

रहव भूखले, चलव टिहुकले, (पू०)

भले ही भूखे रहे पर छाती तानकर चलेंगे।

रहमान को रहमान, शैतान को शैतान

(१) अच्छे के लिए अच्छा और वुरे के लिए वुरा।

(२) अच्छे को अच्छा ही मिलता है और वुरे को वुरा।

रहमान जोडे पली-पली, शैतान लुडकाये कुप्पे

(१) घर मे स्त्री जव कोई चीज इकट्ठी करके रखे और कुत्ता-विल्ली खा जाए तव क०।

(२) घर का एक आदमी सचय करे और दूसरा उड़ाए तव भी क०।

रहम दिली वडाई की निशानी है

स्पष्ट।

रह रह वेंगना होने दे विहान, तुझ पर साजेंगे तीर कमान

झूठी डींग मारने वाले से क०।

वेंगना=मेढक।

विहान=सवेरा।

रहा करीमना तऊ घर गया, गया करीमना तऊ घर गया, (स्त्रि०)

स्त्री का (शायद) अपने निखट्टू पति के प्रति कहना कि करीम रहा, तो भी घर नष्ट होगा, न रहा तो भी नष्ट होगा।

जव किसी आदमी के विना काम न चले और उसके रहने से हानि भी हो तव क०।

रही वात थोडी, जीन, लगाम, घोड़ी

किसी को रास्ते मे एक चावुक पडी मिल गई, तव उसने कहा कि वस अव क्या है, ज़ीन, लगाम और घोडी खरीदना ही वाकी रहा। वहुत थोड़े काम से ही जव आदमी यह समझ ले कि वस अव तो पूरा काम वन गया तव क०।

रहे अंत मोची के मोची

फिर जैसे को तैसा हो जाना। वहुत कष्ट उठाने के वाद भी हालत न सुधरना।

रहे के भुसहुल, नाव लेवे के धरोहर, (पू०)

रहते है झोपड़ी मे और नाम है धरोहर।

झूठी शान वघारने पर क० धरोहर से मतलव है जो दूसरो का माल गिरवी रखे अर्थात साहूकार।

रहे झोंपडी मे, ख्वाव देखे महलो का

ऊंचा ख्याल रखना।

रहे तो टेक से, जाय तो [illegible]

(१) इज्जत से रहे, या फिर विल्कुल खतम हो जाए।

(२) [illegible]

ही जाए, पर अपनी हठ को पूरा करके रहेगा।
जड बेख से=जड़ वृक्ष से।

रहे नाम अल्लाह का
ईश्वर ही रहता है, नित्य है, और सब नष्ट हो जाता है।

रहे महसूद के, अंडे देवे मसूद के
किसी का खाना और काम किसी का करना।

रहो री कुतिया, मेरी आस; मै आऊं कातिक मास, (स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने निकम्मे और झूठा दिलासा देनेवाले पति से कह रही है।

रांघड़, गूजर दो, कुत्ता बिल्ली दो; ये चारों न हों, तो खुले किवाडों सो
स्पष्ट।
(राघड और गूजर चोरी के लिए वदनाम है। कुत्ता और बिल्ली तो रात मे तग करते ही है।)

रांड़ और खांड़ का जोबन रात को
स्पष्ट।
खाड़=मिठाई।

रांड़ का सांड़, छिनाल का छिनरा
विधवा का लडका आवारा होता है, और छिनाल का शोहदा।

रांड़ का सांड़, सौदागर का घोड़ा, खाय बहुत चले थोड़ा
गरीव विधवा का लडका और सौदागर के पास से खरीदा गया घोडा, ये अच्छे नहीं निकलते।

रांड़ की गांठ में माल का टूक
(१) विधवा के पास चर्खे की माल का टुकडा ही रहता है। अर्थात वह वहुत असहाय और गरीव होती है।
(२) किसी विधवा को कही से वहुत-सी सपत्ति मिल गई। तव उस पर भी कह सकते हैं कि वह अव मौज से रहेगी।

रांड के आगे गाली क्या? (स्त्रि०)
सघवा के लिए 'राड' से बढकर गाली और क्या हो सकती है?

रांड के चरखे की तरह चला ही जाता है
जो काम कभी रुके ही नही, अथवा जो आदमी हमेशा चलता-फिरता ही रहे उसे क०।

रांड़ को बेटी का बल, रंडए को रुपये का बल
स्पष्ट।
(राड को बेटी का बल इसलिए है कि रडुए के साथ उसका विवाह करके अधिक-से-अधिक पैसा ले सकती है, रडुए को इस बात का बल है कि वह अधिक-से-अधिक पैसा देकर कही भी शादी कर सकता है।)

रांड़ भइल के सुख कौन जो निचिंत सूतल ना, (पू०, स्त्रि०)
राड होने का सुख ही क्या अगर आराम से नही सो पाए?

रांड़, भांड़ और साड़ बिगडे बुरे
ये तीनो ही अगर नाराज हो जाए तो विकट रूप धारण कर लेते हैं।

रांड मुई, घर संपत नासी, मूंड मुडाये भये संन्यासी
स्त्री मर गई, घर की सपत्ति भी नष्ट हो गई, तो सिर मुडाकर सन्यासी बन गए।
(जो किसी धार्मिक भावना के वश होकर साधु नही बनते, उन पर कटाक्ष।)

रांड रोवे, कुंआरी रोवे, साथ लगी सतखसमी रोवे
राड का रोना ठीक है, पर उसके साथ यदि कुआरी और सतखसमी भी रोवे, तो यह हँसी की बात है। झूठे रोने पर क०।

रांड़, सांड, सीढ़ी, संन्यासी, इनसे बचे तो सेवे काशी
स्पष्ट।
(काशी की गलियों मे सीढिया बहुत बनी हैं, साड भी बहुत घूमते रहते हैं और सन्यासियों तथा सन्यासिनियों की सख्या तो अधिक है ही।)

राड़ से बढ़ कर कोसना नहीं
सधवा के लिए 'राड हो जा' इससे बढकर कोई शाप नहीं हो सकता।

रांड तो बहुतेरी रहें, जो रंडुए रहने दें
विधवाएं तो सच्चरित्र बनी रहना चाहती हैं, पर जब रडुए रहने दें तब तो।

(दूसरो की इच्छा की खातिर जव विवश होकर कोई काम करना पड़े तव क० । प्राय हँसी मे ही क०।)

रांधो न सिझाओ, मुझे बैठ खिलाओ

स्पष्ट।

स्त्री का अपने लडके या पति से कहना जो खाने के लिए जल्दी मचा रहा है।

सिझाना=पकाना ।

राई को पर्वत करे, पर्वत राई मांह

ईश्वर की लीला के लिए क० ।

राई भर नाता, न गाड़ी भर आशनाई

दे० रत्ती भर नाता...।

राई भर सगाई, न पेटहा भर प्रीत

दे० रत्ती भर नाता .।

पेटहा भर=पेट भर अथवा सदूक भर।

राखन हार भये भुज चार तो क्या विगडे भुज दो के विगाडे

ईश्वर जिसका सहायक है, मनुष्य उसका कुछ नही, विगाड सकता ।

भुजचार=चार भुजावाले विष्णु भगवान।

राचे का पान, विराचे की मेंहदी

(१) मुह रचे तो पान है, नही तो मेहदी के समान है।

(२) यदि सम्मान से दिया जाए तो पान, नही तो मेंहदी।

(स्त्रियो का विश्वास है कि प्रेम से दिए गए पान से ही मुह रचता हे । कहावत मे यही भाव छिपा है।)

राज का दूजा, वकरी का तीजा, दोनो खराव

राजा के दो लडके हो तो वे राज्य के लिए आपस मे लडते है। वकरी के तीन वच्चे हो, तो भरपेट दूध नही पी सकते, क्योकि उसके दो ही थन होते है।

राज का राज मे, व्याज का व्याज मे, नाज का नाज मे

जहा का पैसा वही खर्च हो जाता है। राजा का राज मे, साहूकार का कर्ज देने मे और गल्लेवाले का गल्ले मे लग जाता है।

राजपूत, जाट, मूसल के धनुही, टूट जात, नवे नहीं कव ही

राजपूत और जाट मूसल के उस धनुष के समान है जो झुकाने से झुकता नही, टूट भले ही जाए।

(ये दोनो ही अपनी हठ और कट्टरपन के लिए प्रसिद्ध है।)

राजा आगे राज, पीछे सलनी न छाज, (स्त्रि०)

विधवा का कहना है ।

राजा से मतलव पति से है ।

राजा करे सो न्याव, पांसा पड़े सो दाव

दे० पासा पडे सो दाव...।

राजा का दान, प्रजा का असनान

दोनो वरावर है। सवको अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार धर्मकार्य करना चाहिए।

असनान=तीर्थ-स्नान।

राजा का परचाना और साप का खिलाना वरावर है

दोनो खतरनाक है।

परचाना=परिचय। हिलना। मिलना।

राजा किसके पाहने और जोगी किसके मीत

राजा और जोगी किसी के मीत नही होते।

राजा की वेटी, करमो की हेटी

भाग्य के लिए क०।

राजा की सभा नरक को जाय

क्योकि सव खुशामद की वाते करते है।

राजा के घर गई और रानी कहलाई, (स्त्रि०)

राजा की कृपा जिस पर हो जाती है, उसी पर वड़प्पन लद जाता है।

राजा के घर काज, हमारे घर [illegible]

राजा के घर विवाह हमारे घर फाकामस्ती ।

(प्रजा से धन खींचकर राजा मौज-मजा करते है, उसी से मतलव है।)

राजा के घर मोतियों का [illegible]

एक आश्चर्य की वात।

राजा को मोती का [illegible]

दे० ऊ०।

राजा छुये और रानी होय

राजा की कृपा हुई नही कि आदमी को रुतबा मिला नही।

राजा छोड़े नगरी, जो आवे सो लेवे

जिस वस्तु से अपना कोई सबध नही रहा उसे कोई भी ले ले।

राजा, जोगी, अगन, जल, इनकी उल्टी रीत।
डरते रहिये परसराम, ये थोड़ी पालें प्रीत।

स्पष्ट।

राजा जोगी किसके मीत

किसी के नही।

राजा नल पर विपदा पडी, भूनी मछली जल मे तिरी

बुरे दिन आने पर सभी बाते उल्टी हो जाती है। विपत्ति अकेले नही आती।

(कथा है कि जब राजा नल जुए मे अपना राजपाट हार गए, तो दमयती को लेकर जगल मे चले गए। वहा एक दिन उन्हे कुछ खाने को नही मिला, तब भूख से व्याकुल होकर उन्होने तालाब मे से मछली पकडी और उसे आग मे भूना। यह देखकर कि उसमे बहुत राख लगी है, रानी जब उसे पानी मे धोने ले गई, तो वह जिदा हो गई और तैर कर चली गई।)

राजा न्याव न करेगा तो घर तो जाने देगा

(१) अपनी स्पष्ट बात कहने मे सकोच नही करना चाहिए।

(२) काम चाहे हो अथवा न हो, पर प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

राजा बुलावे, ठांढे आवें

राजा का सदेशा पाते ही दौडकर आते है। जिसके हाथ मे शक्ति है, उसका सब कहना मानते है।

राजा भीम की कजा, राम की रजा

भीम भी ईश्वर की इच्छा से ही मरे।

राजा रक्खे रानी खावे

पुरुष कमाता है, स्त्री खर्च करती है।

राजा राज, परजा चैन

जब न्यायी राजा होता है, तो प्रजा सुख से रहती है।

राजा रूठेगा तो अपना सुहाग लेगा, क्या किसी का भाग लेगा, (स्त्रि०)

कोई आदमी अगर हमसे नाराज होता है तो हो जाए, हमे इसकी बिल्कुल परवाह नही है, वह हमे जो कुछ देता है न दे, हम स्वय अपना बहुत कर लेंगे—इस तरह की स्वाधीन भावना प्रकट करने के लिए कहते हैं।

सुहाग=सौभाग्य। यहा कृपा अथवा भेंट मे दी गई वस्तु से मतलब है।

राजा रूठे अपनी नगरी लेगा

दे० ऊ०।

राजी हैं हम उसी मे जिसमे तेरी रजा है।
यहा यों भी वाह वाह है और वों भी वाह वाह है।
(नजीर)

जिसमे तू प्रसन्न रहे हम हर तरह से वही करने को तैयार है।

(ईश्वर के प्रति कथन।)

रात की नीयत हराम, (लो०-वि०)

रात मे सोचा गया काम सफल नही होता। लोक-विश्वास।

रात की मालजादी, दिन की खूजादी

रात को वेश्या और दिन को भलीमानसिन।

रात को झाड़ू देनी मनहूस है, (लो०-वि०)

रात मे झाड़ू देना बुरा है।

रात को साप का नाम नहीं लेते, (लो०-वि०)

लोगो का विश्वास है कि रात मे साप का नाम लेने से वह आकर मौजूद हो जाता है।

रात गई, बात गई

(१) समय भी नष्ट हुआ और काम भी नही हुआ।

(२) रात की बात रात के साथ गई, अब उसकी चर्चा छोड़ो।

रात थोडी, कहानी बडी

हमारे दुख की कहानी इतनी बडी है कि वह इतने थोडे समय मे पूरी नहीं होगी।

रात थोडी, स्वाग बहुत

समय थोडा है, पर काम बहुत करना है।

रात नर्वदा उतरी, सुबह कुआ देख डरी, (स्त्रि०)
रात मे तो नर्मदा तैर कर उतर गई, और सुबह कुआ देखकर डरती है।
स्त्री-चरित्र पर क०।
(स०—दिवा काकरुताद्भीता, रात्रौ स्तरतिनर्मदाम्।)

रात पड़ी बूद, नाम रखा महमूद, (स्त्रि०)
रात मे ही गर्भ रहा, लडके के होने मे नौ महीने की देर, पर उसका नामकरण कर दिया। काम होने के पहले ही अपनी इच्छानुसार उसके नतीजे भी निकाल लेना।

रात पड़े उपासी, दिन को खोजे बासी, (स्त्रि०)
बहुत गरीबी।

रात भर गाई बजाई लड़के के नूनी ही नहीं
जिस काम के लिए आडवर किया जाए, वह व्यर्थ सिद्ध हो तब क०।
लडका होने की खुशी मनाई गई, पर उसमे पुरुषत्व के कोई चिह्न ही नही।

रात मां का पेट
रात मा के पेट की तरह है। सब कष्टो को भुला देती है, अथवा सब बुरे कामो को ढक लेती है।

रात रात का पड़ रहना, भोरे भए चल देना
राहगीर या फकीर का कहना।

रात हटाई, तड़के ही आई, भूख वेदना बुरी रे भाई
भूख के लिए क०, रात को किसी तरह मिटाई, सुबह फिर लग आई।

रातो काता कातना, सिर पर नहीं नातना, (स्त्रि०)
रात भर सूत काता, फिर भी सिर ढकने को कपडा नही। व्यर्थ परिश्रम।

रातो रोई, एक ही मूआ, (स्त्रि०)
रात भर रोती रही (अथवा कोसती रही) पर मरा एक ही।
(प्रयास बहुत, लाभ थोड़ा।)

राधे राधे रटत है, आक ढाक अरु कैर।
तुलसी या ब्रजभूमि मे कहा राम से बैर।
स्पष्ट।
(कहा जाता है, एक बार गोस्वामी तुलसीदास जी मथुरा गए। वहा उन्होने प्रत्येक व्यक्ति को राधे-कृष्ण का नाम लेते ही देखा, राम की चर्चा कोई नही कर रहा था, तब उन्होने उक्त दोहा कहा।)

रानी को कौन कहे 'आगा ढक', (स्त्रि०)
बडे आदमी को कौन उपदेश दे?

रानी को राना प्यारा, कानी को काना प्यारा
(१) अपनी-अपनी वस्तु सबको प्यारी होती है, फिर वह कैसी ही हो।
(२) जो जैसा होता है वह वैसे ही आदमी को पसद करता है।

रानी गई हाट, लाई रीझ कर चक्की के पाट
क्योकि उन्होने चक्की का पाट कभी नही देखा था। बडे आदमियो की सनक।

रानी दीवानी हुई, औरो को पत्थर, अपनो को लड्डू मार कर
होशियार पागल। देखने मे सिडी पर बडा चतुर।

रानी रूठगी अपना सुहाग लेगी क्या किसी का भाग लेगी?
दे० राजा रूठेगा ।
मालिक नाराज होगा, अपनी नौकरी लेगा।

राम की माया, कही धूप, कही छाया
ईश्वर की विचित्र लीला; कही सुख है तो कही दुख।

राम के भक्त काठ के गुड़िया, दिन भर ठक ठक, रात के घुसकुरिया, (भो०)
उन वैष्णव पुजारियो पर व्यग्य जो दिन मे भगवान के नाम की माला जपते है और रात मे दुष्कर्म करते है।

राम छोड़ो अयोध्या, मन भावे सो लेय
दे० राजा छोडे नगरी ।

राम जी का आसरा है,
असहाय दुखिया का क०।

राम झरोखे बैठ के सब का मुजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी, वैसा वाको देय।
जो जैसी सेवा करता है, वैसा फल पाता है।

राम न मारे, आपई मरे, देय कुमति चढ़ाये, (पू०)
मनुष्य अपने दुष्कर्मो का ही फल भोगता है, ईश्वर को व्यर्थ दोष देता है।

राम नाम की लूट है, लूटी जाय सो लूट।
अन्त काल पछतायगा, प्रान जायेंगे छूट।
स्पष्ट।

राम नाम के कारने सब धन डारो खोय।
मूरख जाने गिर पड़ा, दिन दिन दूना होय।
परोपकार मे खर्च किया गया पैसा व्यर्थ नही जाता।

राम नाम को आलसी भोजन को तैय्यार
अकर्मण्य आदमी।

राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी।
हर को नाम मिश्री, तू घोल घोल पी।
स्पष्ट।

राम नाम ले सो धक्का पावे, चूतड़ हिलावे सो टक्का पावे, (स्त्रि०)
दुश्चरित्रो को धन मिलता है, सच्चरित्रो को कोई नही पूछता।
कहावत मे वेश्या से मतलव हे।

राम नाम सुमरन करो, यही नाम है तत।
तीन लोक चौदह भुवन, छाय रहे भगवत।
स्पष्ट।
तत=सार।

राम नाम शमशेर पकड ली, कृष्ण कटारा वाध लिया।
दया धरम की ढाल बनाले, जम का द्वारा जीत लिया।
स्पष्ट।

राम बढ़ाये सो बढ़े वल कर बढा न कोय।
वल करके रावन वढ़ा छिन मे डारा खोय।
जिस पर राम की कृपा होती है, वही वढता है, या उन्नति करता है। अपना वल दिखाकर कोई नही वढा, रावण ने वल दिखाया, जिससे उसका तुरत नाश हो गया।

राम बिना दुख कौन हरे?
वरखा विन सागर कौन भरे?
लक्ष्मी विन आदर कौन करे?
माता विन भोजन कौन धरे?
राम के विना दुख कौन दूर कर सकता है? वर्षा के विना समुद्र कौन भर सकता है? लक्ष्मी (पति-व्रता स्त्री) के विना आदर कौन कर सकता है, और मा के विना कौन भरपेट खिला सकता है?

राम भरोसा भारी है
राम सबकी सुध लेते हैं।

राम भरोसे जे रहे पर्वत पर हरियाय।
तुलसी बिरवा-बाग के सींचत ही कुम्हलायं।
स्पष्ट।
विरवा=वृक्ष।

राम मिलाई जोड़ी, एक अघा, एक कोढ़ी
दो एक से (दुष्ट) आदमियो का मिलना।

राम नाम कहते रहो, जब लग घट मे प्रान।
कबहु तो दीन दयाल के भनक परेगी कान।
राम का नाम लिये जाओ, कभी-न-कभी तो सुनवाई होगी ही।

राम नाम जपना, पराया माल अपना
धूर्त्त साधुओ या पाखडियो के लिए क०।

राम राम तू कहो मन मेरे, पाप कटेंगे छिन म तेरे
स्पष्ट।

राम नाम लिख दे, सिला तिर जायेगी।
भज ले सीताराम, मुक्त हो जायेगी।
स्पष्ट।
(कहावत मे अहिल्योद्धार की घटना की ओर सकेत हे।)
सिला=शिला।

राम ही राम सत हे
ईश्वर जिसका सहायक है, उसका कोई क्या बिगाड सकता है?
सत=सत्य।

राम सहाय करे तो कोई क्या कर सके
स्पष्ट।

रावन का साला
ऐसा दुष्ट व्यक्ति जिसका कोई बडा आदमी हिमायती हो।

रावन ने जब जनम लिया, थीं बीस भुजा, दस सीस।
माय अचंभे हो रही, किस मुंह मे दूं सीस।
स्पष्ट।
माय=माता।

खीस=खाना।

राव न रावड़ी, ले उठे खावडी

न कोई लडाई न झगडा, फिर भी तलवार खीच ली। कोई अकारण लडने को तैयार हो जाए तब क०। राव=रार, टटा, वातचीत।

रास्तगो मुफलिस मजलिस मे झूठा

गरीब आदमी सच भी वोले, तो भी वह अदालत मे झूठा ठहरता हे।

(जो लोग रिश्वत देकर विपक्ष मे झूठी गवाही दिलाते है, उनकी आलोचना।)

राह की वात हे

हित की वात हे।

राह छोड़ कुराह चले

उचित नही किया।

राह पड़े जानिये, या वाह पड़े जानिये, (प०)

सग होने से या काम पडने से ही आदमी पहिचाना जाता है।

रिकाव पर पांव रक्खे हुए हो

वहुत जल्दी मे हो, जाने को तैयार हो।

रिजक न पल्ले बांधते, पंछी औ' दरवेश।
जिनका तकिया रब्व है, उनको रिजक हमेश।

जो ईश्वर पर निर्भर रहते है, उन्हे रोजी की फिक्र नही करनी पडती।

रिजक=(रिज्क अ०) नित्य का भोजन। जीविका।
तकिया=आश्रय, सहारा।
रब्व=ईश्वर।

रिजक है न मौत

वदनसीव के लिए क०।

रिजाला मस्त हुआ, खुदा को भूल गया, (मु०)

नीच के पास पैसा हो जाए, तो ईश्वर को भूल जाता है।

रिजाले का लट्ठ

(१) नीच का लडका (२) वदश ल और वेहूदा आदमी।

रिजाले की जोरू को सदा तलाक़

कमीने की औरत को हमेशा ही छुट्टी।

रिजाले की दोस्ती पानी की लकीर।
शरीफों की दोस्ती पत्थर की लकीर।

कमीने की मित्रता पानी की लकीर की तरह तुरत मिट जाती हे, भले आदमी की मित्रता पत्थर की लकीर की तरह स्थायी होती हे।

रिजाले के नाखून हुए

सताने का सावन उसे मिल गया।

रियासत बगैर सियासत नही होती

विना रीवदाव के शासन नही चलता।

रिश्वतखोर जहन्नुमी है

रिश्वत लेनेवाला नर्क मे जाता हे। मत० रिश्वत लेना बुरा काम है।

रीछ का एक बाल भी बहुत है, (लो० वि०)

अपनी करामात दिखाता है। रीछ का वाल लडको को नजर से वचाने के लिए तावीज मे रखकर वाधते हे।

रीझेंगे तो पत्थर ही मारेंगे

खुश होगे तो भी नुकसान पहुचाएगे।

(ऐसे ओछे और नीच प्रकृति के आदमी के लिए जिससे प्रसन्न-से-प्रसन्न अवस्था मे भी कभी भलाई की आशा न की जाए।)

रीत की कौंड़ी, न ऊत विलाव की ढेरी

ईमान की एक कौडी अच्छी, पर मूर्ख की रुपयो की ढेरी अच्छी नही।

रीत न सतवांसा, मेरा लाड़ला नवासा, (स्त्रि०)

न तो कोई नेग-दस्तूर हुआ, न सतवासा हुआ, फिर भी मेरे लाडला नाती हो ही गया। कोई जवर्दस्ती का सम्वन्ध जोडता फिरे तव क०।

सतवासा=वह दस्तूर जो गर्भवती स्त्री के सातवे महीने मे होता है।

नवासा=लड़की का लड़का।

रीता हाथ मुंह तक नहीं पहुंचता

खाली हाथ काम नही चलता।

रीते भरै, भरे ढुलकावै, मेहर करे तो फिर भर जावे

ईश्वर की इच्छा के लिए क०।

मेहर=दया। कृपा।

रीस न कर धनवंत की, निर्धन हो कर यार।
रीस करते सैंकड़ों, देखे होते ख्वार।

गरीब होकर धनवान से स्पर्द्धा नही करनी चाहिए।

रीस भली, हौंस बुरी

स्पर्द्धा अच्छी, पर द्वेष बुरा।

रुपया आनी जानी शय है

एक जगह नही टिकता।

शय=चीज।

रुपया तो शेख, नही तो जुलाहा, (मु०)

रुपये से ही आदमी छोटा या बडा बनता है।

रुपयावाले को रुपये की आस, मोको राम की आस

गरीब का आत्मसंतोष।

रुपया हाथ का मैल है

दान-पुण्य मे खर्च करना चाहिए, भिखारी कहा करते है।

रुपये का काम रुपये से चलता है, (व्य०)

कोरी बातो से नही चलता।

रुपये की खीर है

रुपया है तो खीर खाओ।

रुपये को रुपया कमाता है, (व्यं०)

रुपया से रुपया आता है। रुपये मे ही रोजगार होता है।

रुपये वाले की हमेशा पूछ है

रुपयेवाले के पास सब जाते है, सब उसे तलाश करते है।

रूख बिना ना नगरी सोहे, बिन बरगन ना कड़िया।
पूत बिना ना माता सोहे, लख सोने मे जड़ियां।

स्पष्ट।

बरगा=लकडी के वे छोटे पटिए जो छत को पाटने के लिए कडियो पर रखे जाते है।

कडी=छत को पाटने के लिए रखी जानेवाली लबी चौपहली लकडी, धरन।

रूखा खाना धरती सोना, नाह सुहेला फक्कड होना

फक्कड (या फकीर) होना आसान नही है, क्योकि फक्कड को रूखा खाने को मिलता है और धरती पर सोना पडता है।

सुहेला=सहज।

रूखा सो भूखा

(१) जो रुखाई से बात करे, समझ लो वह भूखा है।

(२) रूखा (बिना घी का) खाने से भूख जल्दी लगती है, क्योकि वैसा अन्न जल्दी हजम होता है।

रूठे को मनाय नहीं, फटे को सिलाय नहीं, तो काम कैसे चले ?

रूठे को न मनाया जाए, तो नाराज होकर ही बैठा रहेगा, फटे कपडे को न सिया जाए, तो और फट जाएगा।

रूठे बाबा, दाढी हाथ

बूढा आदमी नाराज होता है, तो अपनी दाढी नोचता है, बेचारा करे क्या ?

रूप न सिंगार, खतरानी की साध, (स्त्रि०)

न तो रूप है, न बनाव-ठनाव है, फिर भी खतरानी बनने की साध।

(खत्रियो की स्त्रिया अपने सौन्दर्य और शृगार के लिए प्रसिद्ध है।)

रूप निरूप जाय नहि बोली।
हलुका गरू जाय नहि तोली।

(१) ईश्वर के लिए क०, वह साकार है या निराकार, हलका है या भारी, कुछ कहा नही जा सकता।

(२) एक दूसरा अर्थ भी हो सकता है, अच्छे-बुरे सौन्दर्य के विषय मे कुछ कहा नही जा सकता। वह अपनी-अपनी रुचि पर निर्भर करता है।

रूप रोये, भाग खाये

रूपवान लडकी रोती है (गरीब घर मे विवाह होने पर), भाग्यवान खाती है, (अच्छे घर मे जाने पर), भाग्य ही बडी चीज है।

रूसल बहुरिया, उद्गारल आग, दोनों ठहरें बडे हैं भाग

रूठी हुई स्त्री और जलती हुई आग अगर ठहर जाए, तो बडे भाग्य समझिए। अर्थात स्त्री घर छोड कर चली जाएगी और आग भी बिना फैले नहीं रहेगी।

रेवडी के फेर मे आ गये

चक्कर में पड गए।

(रेवडी वहुत परिश्रम से वनती है। उसकी गाढी चाशनी को कीली से लटकाकर खीचते है और लपेटते जाते है, जिससे उसमे कई वल पड जाते है।)

रो के पूछ ले, हँस के उड़ा दे

ऐसे धूर्त्त व्यक्ति के लिए क० जो सहानुभूति दिखाकर किसी के मन का भेद जान ले और वाद मे उसकी हँसी उड़ाता फिरे।

रोग का घर खासी, लड़ाई का घर हांसी

खासी वीमारी का लक्षण है, वहुत हँसी-दिल्लगी करने से लड़ाई हो जाने का डर रहता है।

रोगिया भावे सो वैद वतावे

रोगी को जो अच्छा लगता है, वैद्य भी वही खाने को वतलाता है।

(रोगी कोई वड़ा आदमी हो तव क०।)

रोगी को रोगी मिला, कहा 'नीम पी'

जिसे जिस वात का अनुभव होता है, वही दूसरे को भी वतलाता है।

रोज कुआं खोदना और रोज पानी पीना

किसी ऐसे गरीव का कहना जो रोज़ मजदूरी करके खाता है, कठिनाई मे रहना।

रोजगार और दुश्मन वार-वार नहीं मिलता

इनको पाकर छोडना नही चाहिए।

रोज रोज की दवा भी गिजा हो जाती है, (मु०)

जो दवा नित्य खाई जाए, वह फिर लाभ नही करती। गिजा=खुराक, भोजन।

रोजी का मारा दर दर रोवे, पूत का मारा बैठ के रोवे

(१) जिसकी रोजी छूट जाती है, वह घर-घर जाकर अपना दुखडा रोता है, पर जिसका पुत्र मर जाता है, वह किसके पास जाकर अपना दुख कहे?

रोजे को गये, नमाज गले पड़ी, (मु०)

दे० गये थे रोजा छुडाने ।

मुसीवत हलकी करने गए, पर और वढ गई।

रोजे खोर, खुदा का चोर, (मु०)

जो रोजे मे खाना खाता हे, वह ईश्वर को धोखा देता है।

(रमजान के महीने मे मुसलमान रोजे रखते है, जिसमे वे दिन भर उपवास करके अर्द्ध रात्रि के अन्त मे खाते है।)

रोटिया चाकर, घसहा घोड़, खाय बहुत चले थोड़ा, (पू०)

जिस नौकर को वेतन नही मिलता, और केवल खाने पर रखा जाता है, और जिस घोडे को केवल घास ही खाने को मिलती है, दाना नही मिलता, वह वहुत कम काम करता है।

रोटी करो, सत्तू करो, भात बरोबर नाहीं।
मौसी करो, फूफी करो, माय बरोबर नाहीं।

चाहे रोटी वनाओ, चाहे सत्तू वनाओ, पर वह भात की वरावरी नही कर सकता, चाहे मौसी रखो, चाहे फूफी रखो, वह मा के तुल्य नही हो सकती।

रोटी कारन छोड़ कर, कुटम देस घरबार।
लाख कोस जाकर बसें, रोटी ढूंढ़नहार।

पेट के लिए सभी तरह के कष्ट सहने पडते है।

रोटी कारन जाल में, फंसे पखेरू आय।
रोटी कारन आदमी, लाखों पाप कमाय।

दे० ऊ०।

रोटी कारन लश्करी, रन मे सीस कटाय।
रोटी कारन रैन दिन, गीत गवेसर गाय।

दे० ऊ०

लश्करी=सिपाही।

गवेसर=गवैया।

रोटी कारन सीखते, विद्या है सब लोग।
जिस घर में रोटी नहीं, उस घर पूरा सोग।

ऊपर के चारो दोहे एक ही भाव को व्यक्त करते हैं, जो स्पष्ट है।

रोटी किस्मतकी, हुक्का पांव दौड़ी का

रोटी भाग्य से ही मिलती है, पर हुक्का चलने-फिरने से मिल जाता है।

(किसी के यहा जाओ तो वह चिलम तमाखू से खातिर करता है।)

रोटी की खाक झाड़ना

रोटी पर मक्खन लगाना। खुशामद करना। घी चुपडी खाना।

रोटी की जगह उपला खाना
बेहूदगी दिखाना।

रोटी को टोटी, पानी को बिल्ला, खसम को दादा
(१) फूहड औरत के लिए क०।
(२) जो जानबूझकर नासमझ बने उससे भी०।

रोटी को रोवे, खपड़ी को टोवे, (स्त्रि०)
बहुत गरीबी हालत।

रोटी को रोवे, चूल्हे पीछे सोवे, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
(वास्तव मे ये केवल तुकबदिया है।)

रोटी खाइए शक्कर से, दुनिया ठगिए मक्कर से
जो लोग धूर्त्तता और खुशामद से दुनिया को ठगते है, वे ही मजे मे रहते है, सीधे और सच्चे दुख पाते है।

रोटी गई मुंह में, जात गई गुह मे, (स्त्रि०)
पेट के लिए आदमी जात को भी छोड देता है। विधर्मी बन जाते है।
गुह=गू, मल।

रोटी न कपड़ा, सेंत का भतरा, (स्त्रि०)
खाना दे न कपडा, केवल नाम का भतार है। जो दिखावटी प्रेम करे उसके लिए क०।
भतार=पति, स्वामी।

रोटी पड़ी जो पेट में, तो हो गया मस्त शरीर।
सूझन लगे जीव को, लाख जतन तदबीर।
पेट भरा होने पर ही आदमी को काम सूझते है।

रोटी पर का घी गिर पड़ा, मुझे रूखी ही भाती है
किसी वस्तु के हाथ से निकल जाने, गिर जाने या टूट फूट जाने पर मन को समझाना, झेप मिटाना।

रोटी पै रोटी रख कर खा
तुम्हे खूब रोटिया खाने को मिले, खूब आराम से रहो। एक प्रकार का आशीर्वाद।

रोटी बिन भोंड़े लगें, सकल कुटुम के लोग।
रोटी ही को जान लो ठेठ मिलन का जोग।
स्पष्ट।

रोटी वहां खाओ तो पानी यहां पीओ
बहुत जल्दी आओ। विदेश से किसी को जल्दी बुलाना हो तब लिखते है। किसी जरूरी काम की खबर लाने के लिए किसी को भेजा जाए तो उससे भी क०।

रोटी ही का व्याह है, रोटी ही का काज।
सांच भलों ने है कहा 'सब से भला अनाज।'
स्पष्ट।

रोटी ही के कारने, दर दर मांगे भीख।
रोटी ही के वास्ते, करें कार सब ठीक।
स्पष्ट।

रोते क्यों हो? कहा, शकल ही ऐसी है
मनहूस या मुहफल्ले आदमी के लिए क०।

रोते गये, मुए की ख़बर लाये
जब कोई आदमी बेमन से काम करे तब क०। भाव यह है कि वह अपनी इच्छा के विरुद्ध तो गया, और फिर लौटकर आया, तो बुरी खबर सुना दी, जिसमे फिर कभी न जाना पडे।

रोते रिजक है
रोने से ही नौकरी मिलती है। अथवा नौकरी मे रोना पडता है।

रो दे, बनिया गुड देगा
स्त्रिया बच्चो से कहा करती है।

रोने को तो थी ही, इतने में आ गए भइया, (स्त्रि०)
मनचाहा काम करने के लिए बहाना मिल जाना। कोई औरत रुआसी बैठी थी। पर सास के डर से रो नही पाती थी। इतने मे भाई आ गया, तब खुल कर रोने लगी।
(ससुराल मे मायके से जब कोई मिलने आता है, तो उसेदेखकर स्त्री रो उठती हे, यह कुछ रिवाज सा है।)

रोने से रोजी नहीं बढ़ती
रोजी परिश्रम से बढती हे।

रोया सो मुंह धोया
(१) प्राय बच्चो से कहते है कि रोओगे तो तुम्हे फिर चीज नही मिलेगी।
(२) रोने से आदमी की शर्म मिट जाती है। यह अर्थ भी हो सकता है।

रोये से दान नहीं मिलता
ज़बर्दस्ती किसी से कुछ नही लिया जा सकता।

रो-रो के दान मागते हो
दे० ऊ०।

रौ बन्दे, ख़रीददार ख़ुदा
चले चलो दोस्त, खुदा तुम्हारा माल ख़रीदेगा। अर्थात तुम्हारी मदद करेगा। (बूढ़ो का कहना।)

रौ मे सब रवा है
धुन मे जो काम किया जाए, वह सब ठीक है।

लंका मे से जो निकले, सो बावन गज का
किसी जगह के सभी लोग शरारती हो, तब क०।

लंगट पड़ले उधार के पाले, (भो०)
वेशर्म नगे के पाले पड गया, अब अक्ल दुरुस्त हो जाएगी।

लंगड़ी कट्टो, आसमान मे घोंसला
किसी का दिमाग न मिलना।
कट्टो=गिलहरी।

लंगड़ी घोडी, मसूर का दाना
अयोग्य पर खर्च करना। जो सम्मानयोग्य नही, उसका सम्मान करना।

लंगड़े ने चोर पकड़ा, दौडियो मियां अन्धे
वेतुकी वात के लिए क०।

लंगडे-लूले गये वरात, दो-दो जूते दो-दो लात
निकम्मो की हर जगह यही हालत होती है।

लगड़े-लूले गए वरात, भात की विरियां खइलन लात
दे० ऊ०।
(दोनो ही वच्चो की तुकवदिया है।)

लगोटी मे फाग खेलते हैं
(१) विना पैसे कौडी के ही उत्सव मनाते है।
(२) चुपचाप ही कोई काम कर लेना चाहते है।

लंवे घूंघटवाली से डरिए
किसी ऐसे व्यक्ति का कहना जो स्त्रियो का सम्मान नही करता।

लकड़ी के वल वंदरी नाचे
भय दिखाने से ही काम होता है।

लकड़ी पर फकीर
लकडी लेकर ही वह फकीर वन गया है। कोरा दिखावा।

लकीर पर फकीर
पुराने ढर्रे पर चलनेवाला।
पाठा०—लकीर के फकीर।

लग गई जूती उड़ गई खेह, फूल पान-सी हो गई देह
निर्लज्ज के लिए क०।
खेह=धूल।

लगा तो तीर, नहीं तुक्का ही सही
प्रयत्न करना चाहिए, कुछ-न-कुछ नतीजा तो निकलेगा ही।

लगा सो भगा
(१) शरीर क्षण-भगुर है।
(२) जो काम आरभ किया, वह समाप्त हुआ।

लगी मे और लगती है
चोट मे ही और चोट लगती है।

लगे आग तो वुझे जल से,
जल मे लगे तो वुझे कहो कैसे ?
अनहोनी का कोई उपाय नही।

लगे को विड़ारिये ना, विन लगे को हिलाइये ना
मित्र को त्यागना नही चाहिए, और अपरिचित को मुह नही लगाना चाहिए।
हिलाना=अनुकूल वनाना, परचाना।
जैसे ढोरो को हिलाना, वच्चे को हिलाना।

लगे तोते भीतों वोलने
अर्थात वात फैल गई है।

लगे दम, मिटे गम
अफीमचियो की उक्ति।

लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा
भगेडी कहा करते है।

लक्ष्मी विन आदर कौन करे ?
(१) अच्छी स्त्री के विना आदर कौन कर सकता है ?
(२) पैसे के विना कोई नही पूछता।

लच्छमी से भेंट ना, दरिद्दर से वैर, (भो०)
घर मे पैसा नही, फिर भी दरिद्रता से लडते है

लाठी मारे पानी जुदा नहीं होता
रिश्तेदारो मे कितनी ही लडाई हो, पर उनके आपसी सम्बन्ध नही टूटते।

लाठी लिये पांव पर खाक
लाटी लेकर चलने से पैर खराव होते ही हैं। लाठी के टेकने से घूल उडती है।

लाठी हाथ की, भाई साथ का
लाठी हाथ की ही काम आती है, भाई नजदीक हो तव काम आता है।

लाड़ का नांव भनभार खातून
लाड का नाम 'लडाकू विटिया'।
(प्रेम मे आकर लोग वच्चो के अजीव-अजीव नाम रखते है उसी पर क०।)

लाड़ मे आवे कुकड़ी, वल वल जावे कौवा
मुर्गी जव अपने नखरे दिखाती है, तो कौआ भी उस पर न्योछावर हो जाता हे।

लाड़ला लड़का जुआरी और लाड़ली लड़की छिनाल
वहुत लाड करने से वच्चे वर्वाद होते हैं।

लात मारी झोंपड़ी, चूल्हे मियां सलाम
जिसका रहने का कोई ठिकाना नही होता, उसके लिए क०।

लातो का देव वातो से नहीं मानता
नीच समझाने से नही मानता। अर्थात विना पिटे राहरास्ते पर नही आता।

लाद दे, लदा दे, हांकनेवाला साथ दे
अनुचित मांग पर क०।
(जब किसी को कोई वस्तु दी जाए और वह कहे कि हमारे घर पहुचा दीजिए, अथवा किसी को कोई लाभ का काम वताया जाए और वह कहे कि साथ चलकर करवा दीजिए। प्राय तव क०।)

लाभे लोहा ढोइये बिन लाभ न ढोइय रुई
लाभ के काम मे ही परिश्रम किया जाता है।

लायगा दारा तो खायगी दारी, न लायगा दारा तो पड़ेगी ख्वारी
पुरुष कमाकर लाएगा तो स्त्री खाएगी, नही तो झगडा होगा। गृहस्थी के वखेडो पर क०।

लाये दाम, वने काम
पैसे से ही सव काम होते हे।

लारा लीरी का यार, कभी न उतरे पार
जरूरत से ज्यादा सोच-विचार करनेवाले का काम कभी पूरा नही होता।

लाल किताव उठ वोली यो, तेली बैल लड़ाया क्यो ? खेल खिला कर किया मुसंड, वैल का वैल और डंड का डड ।
(किस्सा है कि किसी तेली के वैल ने एक काज़ी के वैल को मार डाला। इस पर काजी ने तेली से कहा कि तुम ने अपने वैल को खिला-पिलाकर मुसड वनाया, जिससे मेरा बैल मारा गया। अव तुम्हे मेरा वैल और जुर्माना दोनो देना होगा। वाद मे जव काजी को पता चला कि उसके ही वैल ने तेली के वैल को मार डाला है, तो उसने यह कहकर मामले को ख'म कर दिया कि जानवर ही तो था, अर्थात वेचारा क्या जाने। भाव यह कि लोग दूसरो का हीदोष देखते हें, अपना दोष हमेशा छिपाते हैं।)
लाल किताव से मतलव काजी से ही है।

लाल खा की चादर बड़ी होगी तो अपना बदन ढकेगा, हमको क्या ?
किसी के पास अगर वहुत धन है तो हमे उससे क्या लाभ ?
वह उसीके काम आएगा, न कि हमारे।

लालच गुन घर बिनास
वहुत लालच से घर वर्वाद हो जाता है।

लालच पशेमान है
बहुत लालच से आदमी को शर्मिन्दगी उठानी पडती है।

लालच वस परलोक नसाय
लालची को मुक्ति नही मिलती।

लालच वुरी वला है
लालच सवसे वड़ा दुर्गुण है।

लालची को जहान तंग
(१) लालची के लिए दुनिया मे रहना मुश्किल हो जाता हे।

(२) लालची को दुनिया वहुत छोटी मालूम होती है, वह चाहता है कि दुनिया की सव चीज़ उसे मिल जाए।

लाल, नीच निर्बचन कह, बाह देत सो बार।
भेड़ पूँछ भादो नदी, को गह उतरे पार।

नीच आदमी की सहायता पर कभी निर्भर नही करना चाहिए, भेड की पूछ पकड कर भला भादो की गहरी नदी कौन पार उतरना चाहेगा ?

लाल प्यारा है तो उसका ख्याल भी प्यारा है

लडका अगर प्यारा है, तो उसकी हर वात मान ली जाती हे।

लाल बुझक्कड बूझिया और न बूझा कोय।
कड़ी वरगा टार के ऊपर ही को लेय।

मूर्खतापूर्ण सलाह के लिए।

(कथा है कि किसी जगह एक लडका अपने दोनो हाथ खभे के दोनो ओर फैलाए खडा था। उसी समय उसके वाप ने उसके दोनो हाथो मे भुने चने दे दिए। अव लोगो के सामने यह समस्या उपस्थित हो गई कि किस तरह लडका चना नीचे गिराए वगैर अपने हाथ खभे से अलग करे। उसी समय लाल वुझक्कड वहा पहुच गए। उन्होने सलाह दी कि खभे पर से कडी वरगा हटाकर लडके को निकाल लिया जाए, इसके सिवा और कोई उपाय नही।)

लाल बुझक्कड बूझिया और न बूझा कोय।
पैरो चक्की बांध के हिरना कूदा होय।

दे० ऊ० ।

(किसी गाव मे होकर एक हाथी निकल गया था, जिससे उसके पैरो के चिह्न धूल मे वन गए थे। गाव वाले उन लवे-चौडे गोल चिह्नो को देखकर चकित हुए। अपनी शका दूर करने के लिए उन्होने लाल बुझक्कड को बुलाया। उन चिह्नो को देखकर उन्होने बताया कि भयभीत होने की कोई वात नही, यह तो हिरन अपने पैरो मे चक्की वाधकर कूद गया है।

ये लाल वुझक्कड हिन्दी लोक साहित्य मे एक ऐसे सयाने आदमी के प्रतीक वने हुए है, जो अपनी विलक्षण बुद्धि से काम लेकर ऐन मौके पर लोगो की सहायता करते हे और उनकी शकाओ का समाधान भी किया करते है। जन प्रवाद है कि ये बीरबल के पुत्र थे और उनका असली नाम लाल था।)

लाला का घोड़ा, खाय वहुत चले थोड़ा

इसलिए कि लाला जी उसे रखना नही जानते। वडे आदमियो के नौकर चाकरो पर व्यग्य।

लालो के लाल बन रहे हें

वडे आदमी के पुत्र से व्यंग्य मे क०।

लिखतम के आगे बकतम नहीं चलती

लिखित के आगे जवानी (वात या प्रमाण) की कोई वुकत नही होती।

लिखना आवे नहीं, मिटावे दोनो हाथ

नालायक के लिए क०।

लिखे ईसा, पढ़े मूसा, (मु०)

मूसा ही ईसा के लिखे को पढ सकते है।
बुरी हस्तलिपि के लिए क०।

लिखे न पढ़े, दूध मारे कढ़े

पढा-लिखा कुछ नही, वस, मालटाल उडाते रहे।
व्यग्य मे मूर्ख लडके से क०।

लिखे न पढ़े, नाम मुहम्मद फाज़िल

मूर्ख के लिए क०।

लिखे मूसा पढे खुदा, (मु०)

(१) खुदा ही मूसा के लिखे को पढ सकता है।
(२) ऐसा खराव लिखा है कि जिसने लिखा, उसके सिवा कोई आकर पढ नही सकता। मूसा और खुदा मे श्लेष है।
मूसा=(१) पैगम्बर। (२) वाल जैसा महीन (मू+सा)।
खुदा=(१)ईश्वर। (२)खुद आकर(खुद+आ)।

लिहाज़ की आंख जहाज़ से भारी, (स्त्रि०)

दे० लाज की आख। सकोच की वजह से जव कोई किसी से कुछ कह न पाए, अथवा किसी वस्तु के लिए इन्कार न कर पाए।

लीक लीक गाड़ी चले, लीकहिं चले कपूत।
लीक छोड़ि तीनहिं चलें, शायर, सूर, सपूत।
गाडी ही बधी हुई लकीर (मार्ग) पर चलती है, या फिर अकर्मण्य लडका चलता है। कवि, वीर और पुरुषार्थी लडका लकीर छोडकर चलते है, अर्थात अपना नया मार्ग बनाते है।

लीप बहू दिवाली आई, पोत बहू दिवाली आई,
छेद-छिदाली माथमारी, क्यों सासू यही दिवाली आई?
सास ने दिवाली के अवसर पर बहू से कस कर काम लिया, उसके बाद किसी बात पर नाराज होकर लीपने से बचा हुआ गोबर उठाकर उसके सिर से मार दिया, तब बहू ने ताना मारकर उक्त बात कही कि क्यो सासू जी, क्या दिवाली के उपलक्ष्य मे यही पुरस्कार तुमने मुझे दिया ?

लीपूं ओटा, मरे मोटा
हे ओटा देव! कोई मोटा (धनी) आदमी मरे, तो मैं तुम्हे पूजा चढाऊंगा।
(किसी महापात्र ब्राह्मण का कहना। महापात्रो के घर मे 'ओटा' नाम के देवता की एक प्रतिमा रहती है और वे सदैव उसकी पूजा इसलिए किया करते हैं कि किसी धनी की मृत्यु हो जाए और उन्हे बहुत-सा धन मिले।)

लुगाई रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे बाप से
दे० औरत रहे तो . ।

लुटाया बिगाना माल, बन्दी का दिल दरियाव, (स्त्रि०)
जो नौकर अपने मालिक का पैसा बेरहमी से खर्च करते हैं, उनके लिए क०। कृतघ्न या नमक-हराम के लिए क०।

लुहार की कूंची, कभी आग मे, कभी पानी मे
एक-सी स्थिति न रहना।

लूट का मूसल भी बहुत
मुफ्त का जो मिले सो अच्छा।

लूट कोयलों की मार बर्छी की
कोयलो की लूट मे बर्छी का घाव।
परिश्रम बहुत, लाभ थोडा।

लूट में चरखा नफा
दे० लूट का मूसल ।

लूट लाए, कूट खाया
सफल चोर या ठग के लिए क०।

लूर न ऊर, चला मियां जगदीशपुर, (पू०)
अक्ल न शऊर और चले जगदीशपुर।

लेके दिया, काम के खाया, ऐसी तैसी जग मे आया
जो दूसरो का पैसा लेकर न दे उसके लिए क०।

लेता मरे कि देता!
जो अपना कर्ज नही चुकाना चाहता, उसका कथन कि देखे मुझसे कौन लेता है और देता है तो कौन ?

ले दे आटा कठौती मे
किसी चीज को घुमा फिराकर अपने पास ही रख लेना, देने का केवल नाम करना।

लेना एक न देना दो
(१) न किसी से एक लो न दो देना पडे।
(२) न हमे किसी से कुछ लेना है, न देना है, किसी से कुछ सरोकार नही।

लेना देना काम डोम दाढियों का, मुहब्बत अजब चीज है
जो लेकर नही देते उन पर व्यग्य।

लेना देना साढ़े बाईस
(१) सौदा पक्का करके भी फिर न खरीदना।
(२) कोरी बात करना, खरीदना कुछ नही।

लेने के देने पड़ गये
(१) लाभ की जगह उल्टी हानि हो गई।
(२) उल्टे मुसीबत मे पड गए।

लेने देने के मुंह मे खाक, मुहब्बत बड़ी चीज है
(१) किसी का लेकर देने के वक्त टरकाना।
(२) कजूस की उक्ति भी हो सकती है।

लेना न देना, काटे न मसले
व्यर्थ समय नष्ट करना, न सौदा करना, न खरीदना।

लेना न देना 'गाड़ी भरे चना'
कुछ खरीदना है नही, फिर भी कहते है 'एक गाडी चना तोल दो।' व्यर्थ की बात करना।

लेना न देना, झूठो मुंह छुटव्वल
कोरी बात करना, खरीदना कुछ नही।

लेना न देना, बातों का जमा खर्च
दे० ऊ०।
(ऊपर की चारो कहावतो का लगभग एक-सा भाव है और दूकानदार उस समय उनका प्रयोग करते है, जब कोई ग्राहक बातचीत करके भी सौदा नही खरीदता।)

ले लिया पल्ला और बीनन लागी सिल्ला, (कृ०)
जो बिना पूछे किसी चीज़ मे हाथ लगाता है या कोई काम करता है, उससे क०।
(फसल कट जाने के बाद खेत मे अनाज की जो फलिया या बाले पडी रहती है, उन्हे सिला कहते है। खेत कटते ही गरीब मजदूर उन्हे बीनने को दौड पडते है, तब मालिक उक्त प्रकार की बात कह कर प्राय: उन्हे मना करता है।)

ले लुंगड़ी, चल गुदड़ी, (स्त्रि०)
पुराने कपडे उठा और जा गुदडी मे। जो तेरा काम है सो कर।

लोमड़ी के शिकार को जाय, तो शेर का सामान कर लीजिए
किसी छोटी सी-मुसीबत का सामना करने के लिए भी इस तरह की पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए, जिसमे मौके पर अगर कोई नई बात सामने आ जाए, तो उससे भी निपटा जा सके।
(लडते वक्त एक स्त्री दूसरी से कह रही है।)

लोहा करे अपनी बड़ाई, हम भी है महादेव के भाई
जब कोई फाल्तू आदमी किसी बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति से अपना सम्बन्ध जोडता फिरे, तब क०।
(यहा महादेव के त्रिशूल से मतलब है, जिसकी स्वय भी पूजा होती है।)

लोहा जाने लुहार जाने, धौंकनेवाले की बला जाने
अपने काम से काम रखना।
(धौकनी चलाने के लिए लुहार प्राय मजदूर नौकर रखते हैं। कहावत का भाव यह है कि लोहा गरम हुआ है या नही, अथवा कैसा क्या गरम होगा यह देखना तो लूहार का काम है और उसी को उससे मतलब भी है, धौंकनेवाले को उससे क्या? उसे तो जो काम सौंपा गया सो किए जा रहा है।)

लोहे की मंडी में मार ही मार
लोहे की मडी मे तो दनादन हथौडे ही चलते नज़र आते है।

लौंडी की ज़ात क्या? रंडी का साथ क्या?
भेड़ की लात क्या? औरत की बात क्या?
नौकरानी की ज़ात का कोई ठिकाना नही होता, रडी का साथ तो किसी हालत में नही करना चाहिए, भेड की लात इतनी कमज़ोर होती कि उससे चोट नही लग सकती, और औरत की बात का तो कभी विश्वास करना ही नही चाहिए।

लौंडी बन कर कमाना और बीबी बन कर खाना
परिश्रम करके कमाओ, और इज्जत से खाओ।

वकीलो का हाथ पराई जेब मे
वकील हमेशा किसी-न किसी की जेब टटोलते रहते है।

वक़्त का गुलाम और वक़्त ही का बादशाह
(१) जब जैसा वक्त तब तैसा बन जाना, अवसरवादी। अथवा (२) वक्त ही कभी किसी को गुलाम और कभी बादशाह बनाता है।

वक़्त का रोना बेवक़्त के हँसने से बेहतर है
हर काम अपने समय पर ही अच्छा लगता है।

वक्त की खूबी है
समय का प्रभाव है। व्यग्य मे क०।

वक़्त को गनीमत जानिये
समय का सदुपयोग कर लेना चाहिए।

वक़्त निकल जाता है, बात रह जाती है
जब कोई किसी की सहायता करने से इन्कार कर दे, या किसी की शिकायत दूर न करे, तब क०।

वक़्त पड़े पर जानिए, को बैरी, को मीत?
विपद् पड़ने पर ही शत्रु-मित्र की पहिचान होती

वक़्त पर कुछ वन नहीं आती
विपत्ति मे अक़्ल काम नही करती।
वक्त पर कोई काम नहीं आता
जरूरत पडने पर किसी से सहायता नही मिलती।
वक्त पर गधे को वाप वनाते हैं
अपने मतलव के लिए छोटे आदमी की ख़ुशामद करनी पडती है।
वक़्त पर गांठ का पैसा ही काम आता है
ज़रूरत पर कोई देता नही, इसलिए।
वक्त पर जो हो जाय सो ठीक है
न हो सके, तो फिर परेशान नही होना चाहिए।
वक़्त पर भाग जाना मर्दानगी नहीं है
जव लडना चाहिए, तव भाग जाना वहादुरी नही।
वक़्त पर सव कुछ करना पड़ता है
छोटे-से-छोटा काम भी समय पडने पर करना पड़ता है।
वक़्त पीरी शबाव की वातें, ऐसी हैं जैसे ख्वाव की वातें
बुढापे मे जवानी की वाते ऐसी जान पडती है, मानो स्वप्न की वाते हो।
वक्त वक्त की रागनी है
(१) समय-समय की वात है।
(२) हर काम का एक समय होता है।
वक्त सब कुछ करा लेता है
समय पडने पर सव करना पडता है।
वजीरे चुनी शहर यारे चुनां, (फा०)
जैसा वजीर होता है वैसा ही वादशाह।
वलायत में क्या गधे नहीं होते ?
मूर्खो की कही कमी नही होती। अच्छे बूरे सव जगह होते है।
वली का बेटा शैतान
सत के घर मे वुरा लड़का।
वली के घर शैतान
दे० ऊ०।
वली को वली ही पहचानता है
सत की कद्र सत ही करता है।

वली सव का अल्लाह, हम तो रखवाली हैं
मालिक सव (चीज) का ईश्वर है, हम तो रखवाली करनेवाले है।
वसीला बड़ी चीज़ है
किसी कंजूस का क०।
स्पष्ट।
वसीला=सहायता। जरिया। काम का रास्ता। हीला।
वसीले बिना रोजगार नहीं मिलता
विना हीले या जरिये रोजी नही मिलती।
वह अपने दम से अच्छा है
वह स्वय अच्छा है, (पर उसका परिवार नही)।
वह कमली ही जाती रही, जिसमे तिल बधे थे
अवसर निकल जाने पर जव कोई किसी चीज की माग करे, तव क०।
वहू की विदा के समय उसके दुपट्टे के छोर मे तिल-चावल वाध देने का रिवाज है। उसी से कहावत वनी।
वह कीमियागर कैसा, जो मांगे पैसा
स्पष्ट।
(प्राचीन काल मे यह शब्द उन लोगो के लिए प्रयुक्त होता था, जो पारा, सीसा आदि धातुओ से सोना वनाने की फिक्र मे रहते थे। उसी से कहावत का भाव यह है कि वह रसायन शास्त्री ही कैसा, जिसे पैसे की जरूरत पडे, वह तो स्वय सोना वना सकता है।)
कीमियागर=रसायन विद्या जाननेवाला।
वह कुछ नाहर तो नहीं, जो खा जायेगा
जव कोई किसी के सामने जाने से डरे, तो उसका भय छुडाने को क०।
वह कौन-सी किशमिश है, जिसमें तिनका नहीं
कुछ-न-कुछ दोष हर चीज मे होता है।
वह कौन-सी टपरी, जो हम से छपरी
वह कौन-सा घर है जो हमसे छिपा है? तात्पर्य यह कि तुम हमे क्या सिखाते हो, हम सव जानते हैं।

वह क्या मेरी खाला की खलबच्ची है ?

अर्थात उससे मुझे क्या मतलब ? वह मेरी कोई नही।

वह गुड़ नहीं जो च्यूंटियां खायं

हम तुम्हारी बातो मे नही आने के। यहा तुम्हे कुछ नही मिलने का। प्राय कजूस के लिए क०।

वह गुड नहीं जो मक्खी बैठे

दे० ऊ०।

वह डूबें मझधार, जिन पर भारी बोझ

दुष्कर्मी के लिए क०।

वह तिरिया तो नित सुख पावे, जाका पुरखाव को चावे

जिस स्त्री का पति, उसे चाहता है, वह हमेशा सुख पाती है।

वह तिरिया पत नाह गवावे, जाकी वर वर आख लजावे

जिस स्त्री की आखो मे लज्जा होती हे, उसका धर्म नष्ट नही होता।

वर वर=बार बार।

वह तो शैतान से भी एक दर्जा ज्यादा है

वहुत शैतान है।

वह दफ्तर गाव खुर्द हो गए

उन दफ्तरो को गायो ने चर लिया। अर्थात वहा अव कुछ नही, केवल घास पैदा होती है।

वह दरबा ही जल गया

वह जगह ही अव नष्ट हो गई, वहा से अब कोई आशा नही।

दरवा=मुर्गो या कबूतरो के रहने का खानेदार घर।

वह दिन गये जो खलील खां फाख्ता मारते थे

वे मजेमौज के दिन निकल गए। अब तो फटेहाल हैं।

वह दिन गये जो भैंस पकौड़े हगती थी

अव न वैसी आमदनी है, और न वैसा खर्च किया जा सकता है।

वह दिन डुब्बे, जब घोड़ी चढे कुब्बे

(१) वह दिन निकल गए, जब कुवडा घोड़ी पर चढता था, अर्थात अव पहले जैसी धाधलीवाजी नही रही, या अब वैसा सुयोग नही मिलने का। (२) अभिशाप के रूप मे भी कहावत का प्रयोग हो सकता है कि वह दिन गारत हो, जव कुवडा भी घोडी पर चढे।

वह नारी भी दिन दिन रोवे,
जाका पुरख निखट्टू होवे।

जिस स्त्री का पुरुष अकर्मण्य होता है, वह हमेशा रोती है।

वह पानी मुलतान गया

(१) अब तो वह वात बहुत दूर चली गई। (२) तुम जो चाहते थे, वह अब नही होने का। (कथा है कि एक समय गुरु गोरखनाथ भक्त रैदास से मिलने आए। प्यास लगने पर उन्होने पानी मागा, जो रैदास जी ने उनके खप्पर मे भर दिया। जब उन्हे ध्यान आया कि रैदास तो जाति के चमार है, तो उन्होने पानी नही पिया और उसे खप्पर मे ही रहने दिया। वहा से वे कबीर से मिलने गए। जब कबीर ने पूछा कि खप्पर मे क्या है, तो उन्होने असली किस्सा वता दिया। कबीर की लडकी कमाली, जो उस समय वहा बैठी हुई थी और रैदास की ख्याति से भली-भाति परिचित थी, उस पानी को पी गई। पानी पीते ही उसे दिव्य ज्ञान उत्पन्न हो गया। ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन होते देख गोरखनाथ को होश हुआ और फिर रैदास जी के पास आकर उन्होने पानी मागा। इसी बीच मे कमाली अपने पति के साथ मुलतान चली गई। रैदास ने अपने योगवल से सव हाल जानकर गोरखनाथ जी से कहा—प्यावत थे जव पिया नही, तव तुमने वह अभिमान किया, भूला योगी फिरे दिवाना, वह पानी मुलतान गया।)

वह पुरखा इक दिन पछतावे, दया, धरम जो जी से ताहवे

जो मनुष्य दया धर्म हृदय से त्याग देता है, उसे एक दिन पछताना पडता है।

वह पुरखा तो फले और फूले; जो दाता को मूल न भूले

जो ईश्वर को (अथवा अपने उपकारी को) नही भूलता, वह सदैव फलता-फूलता है।

वह पुरखा दिन-दिन पछतावे, जो आमद से दुगना खावे

जो आमदनी से खर्च अधिक करता है, वह हमेशा पछताता है।

वह पुरखा भी अति दुख पावे, सीख बड़ों से जो फिर जावे

जो बडे-बूढो का कहना नही मानता, वह भी बहुत दुख पाता है।

वह पुरखा भी मूल है खोटा, पावे लाभ बतावे टोटा

वह मनुष्य भी बिल्कुल बुरा है, जो लाभ होने पर भी हानि बतावे।

वह पुरखा ले निपट भलाई, जिसको होवे खौफ इलाही

जो ईश्वर से डरता है, उसकी हमेशा प्रशसा होती है।

वह बात कोसो गई

वह मौका दूर निकल गया, अब नही आने का।

वह बिल्ली पूज के चलते हैं

अर्थात शकुन-अपशकुन बहुत मानते है।

(हिन्दुओ मे बिल्ली को पवित्र माना जाता है, और उसे मारते नही।)

वह बूद मुलतान गई

अब तो वह मौका निकल गया।

दे०—वह पानी मुलतान गया ।

(वाक्य का यह साधारण अर्थ भी हो सकता है कि वर्षा की वह बूद जो पजाब की पाच नदियो मे से किसी एक मे गिरी मुलतान पहुच गई है और अब हाथ नही आने की।)

वह बूंद वलायत गई

दे० ऊ०।

वह भला मानस कैसा, जिसके पास नहीं पैसा

पैसे से ही भला मानस बनता है।

वह भी ऐसे गये जैसे गधे के सिर से सींग

चुपचाप उठकर चले जाने पर क०। पता ही नहीं चला कब गए।

(गधे के सिर पर सीगो का निशान भी नही होता। कुछ जातियो के लोगो मे यह विश्वास प्रचलित है कि पहले गधो के सीग और घोडो के पर होते थे। सभव है कहावत उसी आधार पर बनी हो।)

वह भी कन्या जिसके अबलख बाल

जिसके बाल सफेद हो जाए, क्या वह भी कन्या ही है। किसी अनहोनी या आश्चर्यजनक बात के लिए क०। (हिन्दुओ मे इतनी बडी उम्र तक स्त्री अनब्याही नही रह सकती।)

अबलख=आधा सफेद आधा काला।

वह भी कुछ ऐसा तो न था

इतना बुरा नही था, (जितना सुनने मे आ रहा है।)

वहम की दारू तो लुकमान के पास भी नहीं

शक्की को कोई नही समझा सकता।

दारू=दवा।

लुकमान=अरब के प्रसिद्ध हकीम और दार्शनिक। मुसलमानो मे उनका वही स्थान है जो हिन्दुओ मे धन्वन्तरि का।

वहम की दारू ही नहीं

स्पष्ट। दे० ऊ०।

वह मढी ही जाती रही जहा अतीत रहते थे

(१) वह आदमी ही अब नही। अथवा

(२) वह समय ही अब जाता रहा। ऐसे मृत पुरुष की याद मे कहते है, जो अपने जीवन काल मे बहुत उदार रहा हो, और जिसके निकट अनेक लोगो को बराबर आश्रय मिलता रहता हो।

वह मर गये, हमें मरना है

हम व्यर्थ झूठ नही बोलगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

वह मानस तो नित सुख पावे; सीख बड़ो की जो चित लावे

जो बडे-बूढो का कहना मानता है, वह हमेशा सुखी रहता है।

वह राजा मरता भला, जिसमे न्याव न होय।
मरी भली वह इस्तरी, लाज न राखे जोय।

वह राजा मर जाए सो अच्छा, जो न्याय न करे;

वह स्त्री भी मर जाए सो, अच्छा जो अपनी और दूसरो की लज्जा न रक्खे।

वह शराब पानी की तरह पीता है, (मु०)
वहुत शरावी है।

वह शैतान से ज्यादा मशहूर है, (मु०)
उसे हर कोई जानता है।

वह समय ही नहीं रहे
बीते दिनो की याद मे क०।

वहां उसके घर वसंत है, यहां मेरे घर वसत हे
इसलिए मैं क्यो उसके यहा जाऊ?

वहां तलक हंसिये जो न रोइये
हँसी-दिल्लगी या खुशी को सीमा के भीतर ही रखना काहिए।

वहां फरिश्तो के भी पर जलते है
दे०—यहा फरिश्तो के ।

वही अपना जो अपने काम आवे
जो वक़्त पर मदद करे, वही अपना।

वही ढाक के तीन पात
अर्थात (आर्थिक) अवस्था ज्यो की त्यो है, पहले से विल्कुल नही सुधरी।
(ढाक की एक टहनी मे तीन ही पत्ते होते हैं।)

वही तीन बीसी, वही साठ, वही चारपाई वही खाट
वात वही है, कोई अतर नही, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

वही फूल जो महेश चढ़े
जिस वस्तु का सदुपयोग हो, उसी का होना सार्थक है।

वही वड़ा जग वीच है, जिन पूजा करतार।
विन पूजा तो मनुष से, आछे माटी राख।
संसार मे वही वडा है, जो ईश्वर की पूजा करता है। जो नही करता, उस मनुष्य से तो मिट्टी और राख अच्छी।

वही वड़ा है जगत मे, जिन करनी के तान।
कर लीना है आपना महाराज भगवान।
ससार मे वही वडा है जिसने अपने सत्कर्मो के द्वारा परमपिता ईश्वर को अपना वना लिया है।

वही भला है मेरे लेखे, हक़ नाहक को जो देखे
जिसे कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान न हो, मेरी समझ मे वही मनुष्य अच्छा है।

वही मन, वही चालीस सेर
एक ही वात। किसी तरह कहो।
(एक मन मे चालीस सेर होते है।)

वही मनुष धनवंत है, वही मनुष बलवंत।
जो साईं के नाम पर, बैठा होय निचंत।
सतवाणी।
(वही मनुष्य (सच्च) धनवान ओर वही (सच्च) वलवान है जो भगवान के नाम पर निश्चिन्त वैठा हो।)

वही मनुष तो दे सके, राजन को सिख ज्ञान।
जो ना राखे लोभ धन, और धरे हाथ पर जान।
वही मनुष्य राजाओ को ज्ञान और उपदेश दे सकता है, जिसे धन का लोम न हो और जो प्राणो को हथेली पर लिए रहे, अर्थात निडर हो।

वही रहेगा चैन मे, लाभ किया जिन दूर।
साईं का कर आसरा, राखा जी भरपूर।
जिसने लोम को दूर कर दिया है, और जो पूरी तरह भगवान पर निर्भर है, वही सुख से रहेगा।

वही राड की राड़, वही बाबा पीटी
दोनो एक सी गालिया है। कुछ भी कहो, वात वही है। राड की राड एक वुरी गाली हे, और वावा पीटी, अर्थात पिता के द्वारा पीटी गई, यह भी गाली है।

वही राग गाना
वही दुखडा रोना। वही वात वार-वार कहना।

वाकी गति वाही जाने
(१) उसके मन की वही जाने।
(२) ईश्वर के लिए भी क० कि उसकी लीला वही जान सकता।

वाको आछा मत कहे, जो तेरे धोरे आय।
करे बुराई और की, अपने तईं वघाय।
उस मनुष्य को अच्छा नही समझना चाहिए, जो तुम्हारे पास आकर अपनी तो वडाई करे, और दूसरो के दोप दिखाए।

घोरे=द्वारे, दरवाजे पर, घर पर।

वाको सीख न दीजिये, जो हो मूढ़ गवार।
गाली मठ पर डाल दो, पकड़े नाहिं करार।

मूर्ख और गवार को उपदेश देना व्यर्थ है। मंदिर के गुंबद पर अगर गोली डाल दो, तो वह कही रुकेगी नही, (लुढक कर नीचे आ जाएगी।)
करार=किनारा।

वा तिरिया तो एक दिन भाजै; जाकी आंख कभी ना लाजै

वह स्त्री, जिसकी आख मे शर्म नही होती, कभी-न-कभी भाग जाती है।

वा तिरिया संग बैठ न भाई; जा को जगत कहे हरजाई

जिस स्त्री को दुनिया व्यभिचारिणी कहे, उस के पास नही बैठना चाहिए।

वादाखिलाफी बुरी बात है

स्पष्ट।
वादाखिलाफी=कथन के विरुद्ध काम करना। वचन देकर पूरा न करना।

वा दिन देखे जायेंगे, भले बुरे सब कार।
जा दिन लेखा लेगा, वो कादिर करतार।

परमपिता परमात्मा जिस दिन हिसाब लेगा, उस दिन सबके भले-बुरे काम देखे जाएगे।
फकीरो की उक्ति।

वा नर से मत मिल रे मीता, जो कभी मिरग कभी हो चीता

ऐसे मित्र से कभी मित्रता नही करनी चाहिए जो कभी तो हिरन और कभी चीता बन जाए, अर्थात कभी तो बहुत सीधा जान पडे और कभी धूर्त बन जाय।

वा नारी को मत कूढ़ बताव, जासूं दिन दिन लाभा पाव

जिस स्त्री से तुम्हे सुख मिल रहा हो, उसे कूढ (बेवकूफ) नही समझना चाहिए।

वा पुरखा की दिन दिन ख्वारी; जाकी तिरिया हो कलहारी

जिसकी स्त्री कलहकारिणी (झगड़ालू) होती है, उसकी दिन-प्रति-दिन खराबी आती है।

वा पुरखा को जगत सराहवे; जो हरी नाम के बल बल जावे

उस मनुष्य की संसार प्रशसा करता है, जो अपने को भगवान के नाम पर न्यौछावर कर देता है।

वार करत पिय जात है, फेर न आवत हाथ।
वेग चरन पिय के गहो, जो भूल न छूटे साथ।

विलब करने से पिय चले जाएगे, फिर हाथ नही आएगे, जल्दी उनके चरण पकडो, जिसमे फिर बिल्कुल साथ न छूटे।
पिय=(१) प्रियतम। ईश्वर से अभिप्राय है।

वार कहे उत पार है, पार कहे इत वार।
पकड़ किनारा बैठ रहो, यही पार यही वार।

इस पार को उस पार कहते है, और उस पार को इस पार। (सबसे अच्छा तो यह है कि) किनारा पकड कर बैठ रहो, और उसी को इस पार, उस पार समझ लो। तात्पर्य यह कि शब्दो के भ्रम मे मत पडो। एक दृढ विचार के वशीभूत होकर काम करो।

वार न पूर, अधम मंझैया, खेवा कहे कि 'उतरो भैया'

न तो यह किनारा न वह किनारा, मंझधार मे नाव है, और मल्लाह कहता है कि 'उतरो भाई।' चक्कर मे पडना।

वार वार पानी पीते हैं, (स्त्रि०)

वार-वार न्यौछावर हो रहे है।
(कुछ जातियो मे यह प्रथा है कि व्याह के अवसर पर वर के सिर पर पानी घुमाकर मा पीती है। इसे पानी वारना कहते हैं। उसी से कहावत बनी। भाव यह है कि बडे खुश है।)

वार वाले कहे पार वाले अच्छे, पार वाले कहे वार वाले अच्छे

हर आदमी दूसरे को अपनी अपेक्षा अधिक सुखी समझता है, अपनी अवस्था मे किसी को सतोष नही मिलता।

वारी गई, फेरी गई, जलवे के वक्त टल गई, (स्त्रि०)

ऊपरी लाड-प्यार दिखाना, पर जरूरत के वक्त खिसक जाना।

वारी फेरी जब गई, जब नेव धराई; (और) मुह मोड़े बातें करे जब ताखों आई, बाध मुडेरी उतरा, जम दिये दिखाई

मकान वनने का रूपक है, जो स्त्री पर घटित किया गया है। जब नीव रक्खी जा रही थी (अर्थात जब व्याह हुआ) तब वडी खुशामद करती रही, (कारीगर की) मकान वनने मे कोई बाधा न आ जाए, अर्थात पति नाराज न हो जाए। जब मकान वनकर मेहराव तक पहुचा (अर्थात जब अधेड हो गई) तो मुह मोडकर बाते करने लगी, और जब मकान मुडर तक पहुच गया तो कारीगर यम की तरह दिखाई देने लगा, अर्थात पति जब वृद्ध हो गया तो उसकी बिल्कुल उपेक्षा करने लगी।

वारी सोवे उठे सवेरे; वाको नांह् दलिद्दर घेरे

जो देर से सोता ओर जल्दी उठता है उसे कभी दारिद्र्य नही घेरता।

वाह पीर अलिया, पकाई थी खीर, हो गया दलिया

अच्छा काम करने गए, पर बुरा हो गया।

(अलिया एक पहुचे हुए फकीर थे, जो हासी के निवासी थे। एक वार जब वे भीख मागते हुए घूम रहे थे, तो उन्होने एक औरत को कुछ पकाते हुए देखा। उन्होने पूछा 'क्या पकाती है?' औरत ने जवाव दिया 'दलिया।' जब कि वास्तव मे वह खीर पका रही थी। 'अच्छा, ऐसा ही सही।' कहकर अलिया साहव चल दिए। उनके जाने के बाद औरत ने वर्तन खोल कर देखा, तो उसमे खीर की जगह दलिया मिला। तब उसने कहावत के उपरोक्त शब्द कहे।)

वाह पुरखा, तेरी चतुराई; चून वेच कर गाजर खाई

घोर मूर्खता।

(गाजर एक वहुत सस्ती चीज़ है और उसे ढोर ही खाते है। आटे के वदले मे उसे लेना और खाना एक अहमकपन है। पुरखा का अर्थ सयाना है जो व्यग्य मे प्रयुक्त हुआ है।)

वाह पुरखा, तेरी चतुराई, मांगा गुड़च, लादी खटाई

कुछ करने को कहा और किया कुछ।

वाह पुरखा, मेरे चातुर ज्ञानी; मांगी आग, उठा लाया पानी

दे० ऊ०।

चातुर=चतुर।

वाह वहू, तेरी चतुराई, देखा मूसा, कहे विलाई

असली वात न वताना।

वाह मियां काले, खूब रंग निकाले

'अपनी शकल ही वदल ली। पहिचाने ही नही जाते।' इस तरह का भाव छिपा है।

वाह मियां नाक वाले

व्यग्य मे कहा गया है।

नाक वाले=इज्ज़त वाले।

वाह मियां बांके, तेरे दगले में सौ-सौ टांके

किसी छैल-चिकनिया के लिए व्यग्य मे कथित।

दगला=अगरखा, कुर्ती।

वाही नर को जान तू, पूरा अपना मीत।
जो राखे बिन लाभ के, तुझसे पीत परीत।

उसी मनुष्य को अपना सच्चा मित्र समझो, जो विना स्वार्थ के प्रीत करे।

वैसा ही तोको फल मिले, जैसा वीज वुवाय।
नीम बोय के वाल के, गांडा कोई न खाय।

जैसा बीज वोओगे, वैसा ही फल मिलेगा, नीम वोकर ईख कोई नही खाता।

वोई नर भरपूर कहावे; अपने आप को जो विसरावे

वही मनुष्य पूर्ण ज्ञानी है, जो अपने अहम् को—घमड को भूल जाता है।

शंका डायन, मनसा भूत, (हिं०)

शका ही डायन और मनसा (इच्छा) ही भूत है। अर्थात ये मनुष्य के शत्रु है।

शकल चुड़ैल की, मिजाज परियो का

जब कोई वदशकल (औरत) वहुत टिमाक से रहे, तब क०।

शकल भूत की-सी, नाम अलबेलेलाल
रूप तो बुरा, नाम अच्छा।

शक्करखोरे को खुदा शक्कर ही देता है, (मु०)
जो जिस योग्य होता है, ईश्वर उसे वैसा ही देता है।

शक्करखोरे को शक्कर ही मिलती है
स्पष्ट। दे० ऊ०।

शक्कर दिये मरे तो जहर क्यों दीजे
दे० गुड दिये मरे ।

शतरंज नहीं सदरंज है
शतरज मे सौ परेशानिया हैं। इसमे दिमाग वहुत लगाना पडता हे, इसीलिए क०।
सद=सौ।

शब्द भेद को लखा नहीं तो क्या हो पुस्तक चीन्ह लिये, जो दिल दिलवर से मिला नहीं तो क्या हो करवा कोपीन लिये
संतवाणी। शव्दो के अर्थ को यदि नही समझा, तो केवल पुस्तक पढ लेने से क्या लाभ हुआ? दिल अगर दिलवर (प्रेमी यानी ईश्वर) से नही मिला, तो भिक्षापात्र लेना और साधुओ के कपडे पहिनना व्यर्थ है।

शमला व मिकदारे इल्म, (फा०)
उसकी पगडी उतनी ही ऊंची जितना उसका ज्ञान। अर्थात् वडा दभी है।

शमा का पुश्त और रू बराबर है, (मु०)
मोमवत्ती का आगा-पीछा एक-सा होता है। सज्जन के लिए क०, जिसके मन मे कोई छल-कपट नही होता।
(दुर्जन की उपमा चिराग से देते है,जिसके पीछे के हिस्से की छाया पडती हे।)

शमा की रोशनी जलते तलक और दीये की रोशनी महशर तक, (मु०)
मोमवत्ती की रोशनी तो जव तक वह जलती रहती है, तभी तक रहती हे, पर दीये (१ दीपक तथा २ दान) की रोशनी कयामत के दिन तक रहती है। अर्थात दान-पुण्य स्वर्ग तक साथ देता है।

शमा के सामने चिराग की क्या जरूरत?
चिराग की रोशनी मोमवत्ती से कम होती है, इसलिए क०।

शरन गुरू की आय के, जो सुमरे सियाराम।
यहां रहे आनद से, अन्त बसे हरिधाम। (हिं०)
जो गुरु की शरण मे जाके भगवान का भजन करता है, वह इस लोक मे आनद से रहता है, और अन्त मे स्वर्ग पाता है।

शरम की बहू नित भूखी मरे, (स्त्रि०)
जो वहू खाने-पीने मे शर्म करती है, वह भूखो मरती है।

शरमाई बिल्ली खंभा नोंचे
अपनी शर्म छिपाने के लिए। चेहरे पर मूर्खता छा जाना।

शरह में शरम क्या? (मु०)
व्यवहार मे सकोच की जरूरत नही।

शराब कायथों की घुट्टी मे पड़ती है
कायस्थ आमतौर से शराव पीते थे, इसीलिए कहावत वनी।

शराबख्वार हमेशा ख्वार
शरावी हमेशा दुर्दशा मे रहते हे।

शराब से सब नशे नीचे है
शराव से अच्छा और कोई नशा नही।

शराबियों से दूर ही भले
उनका सग न हो तो अच्छा।

शर्म चे कुत्तीस्त कि पेश मरदां वि आयद, (फा०)
शर्म क्या कुतिया है जो मर्दों के पास आएगी? वेशर्म के लिए व्यग्य मे क०।

शहद की छुरी
चिकनी-चुपडी वाते करनेवाला, धोखेवाज।

शहद लगा कर चाटो
ऐसे कागज या दस्तावेज के लिए, जिसके सम्वन्ध मे कोई कार्यवाही न की जा सके। मियाद से वाहर हुआ कागज।

शहद, सुहागा, घी, भरी धात का जी
इन तीनो के सेवन से शरीर पुष्ट होता है।

धात=(धातु) शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ।

शहर का गुंडा है

गाली।

शहर का सलाम, देहात का दाल-भात

शहर मे (कोरी) सलाम से खातिर करते है और तमे देहा भोजन से।

शहर में ऊंट बदनाम

जब कोई आदमी व्यर्थ ही बदनाम हो जाता है, तब क०।

शाकिर को शक्कर, मूजी को टक्कर, (मु०)

एहसान माननेवाले को मिठाई और कृतघ्न को थप्पड़ें, (मिलती है।)

शागिर्द कहर, उस्ताद गजब

जैसा मालिक अत्याचारी वैसा ही नौकर भी जालिम।

शादी, खाना आबादी

व्याह से घर बसता है।

शादी ग़मी सब के साथ है

सुख-दुख सब को लगा है।

शादी है, कुछ गुड़ियों का व्याह थोड़ा ही है

शादी मे बहुत खच होता है। यह मत समझिए कि आप सस्ते निपट जाएगे, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।

शान में क्या जुफ्ते पड़ेंगे ? (मु०)

शान मे क्या बट्टा लग जाएगा, (अगर तुम जैसा मैं कहता हू वैसा करोगे तो) ?

जुफ्ते=शिकने, सिकुडने।

शाबाश मियां तुझको, तूने मोह लिया मुझको

बेतुका या मूर्खतापूर्ण काम करने पर व्यंग्य मे क०।

शाम के मुद को कब तक रोये ?

इस तरह कैसे पूरा पडेगा ? सारी रात कोई रो नही सकता।

शाम भई दिन ढल गया, चकवी दीनी रोय।
चल चकवे वा देश में, जहं शाम कभी न होय।

स्पष्ट।

(लोगो की कल्पना है कि सध्या होते ही चकवा और चकवी बिछुड जाते है। एक नदी या तालाब के इस किनारे होता है तो दूसरा उस किनारे। वे फिर सारी रात इस प्रकार सभापण करते रहते है "चकवा मै आऊ?" "नही चकवी।" "चकवी मै आऊ?" "नही चकवा।")

शाह का माल मुइं पड़े दूना

साहूकार का माल नीचे गिर जाए, तो भी दुगना हो जाता है। वह हर सौदे मे मुनाफा करता है।

शाह के दूने

स्पष्ट। दे० ऊ०।

शाह के सवाये कमबख्त के दूने

जो कम मुनाफे से माल बेचे, वही (सच्चा) साहूकार है, जो अधिक मुनाफा खाता है उसका व्यापार नष्ट हो जाता है।

शाह खानम की आंखें दुखती है, शहर के दिये गुल कर दो, (स्त्रि०)

पुराने जमाने मे राजा या जमीदार अपने आराम के लिए जनता के सुख-दुख की ओर परवाह नही करते थे, उसी पर गहरा व्यग्य।

(जब कोई झूठी नजाकत दिखाए, प्राय तब क०।)

शाह खानम=बेगम।

शाहजहां बूढ़े, बगल में छड़ी, खाते-पीते बिपत पड़ी

बुढापे मे कष्ट होना।

(भारत का मुगल सम्राट शाहजहा जब बूढा हुआ, तो उसके पुत्र औरगजेब ने उसे कैद कर लिया था। उसी पर कहावत बनी।)

शाह जी की अमलदारी है

किसी राजा, ज़मीदार या हाकिम की अमलदारी (शासन) मे कोई अनोखी बात होना।

(यहा 'शाह जी' शब्द व्यक्ति विशेप के नाम के रूप मे ही प्रयुक्त हुआ समझा जाना चाहिए, पर हो सकता है कि शिवाजी के पिता शाह जी भोसला के नाम पर कहावत बनी हो।)

शाहिद वार-वार, मुकद्दमे वाले पार-पार

गवाह तो इस पार हैं, और मुकदमेवाले उस पार।

(१) उद्देश्यो की विभिन्नता, एक कुछ कहे, दूसरा कुछ।

(२) घुमा फिरा कर जवाब देना।

कार के वक्त कुतिया हगासी

ाम के वक़्त (वहाना वनाकर) गायव हो जाना।

कार को गये और खुद शिकार हो गये

ूसरे को मारने गए, और स्वय ही मौत के घाट ुतर गए।

कारी शिकार खेलें, चूतिया साथ फिरें

ो दूसरो के साथ (जो काम मे लगे है) अपना क्त खराव करे, उसे क०।

व जपें, न राम जपें, ना हरि से लावें हेत।
नर ऐसे जायेंगे, ज्यों मूली के खेत।

ो ईश्वर का भजन नही करते, वे मूली के खेत ी तरह है।

न के शटक्के (या शड़प्पे)

ो 'स' की जगह तालव्य 'श' का उच्चारण रते है, उनका मजाक उडाकर क०।

क सारी राखें सबै, काक न राखै कोय।
न होत है गुनन ते, गुन विन मान न होय।
(वृन्द)

ोता मैना सभी पालते है, कौवा कोई नही पालता ुणो से ही इज्जत होती है, विना गुणो के नही ोती।

ुक्रवार की बादली, रहै शनीचर छाय।
ा वोले भड्डरी, बिन बरसे ना जाय। (कृ०)

ुक्रवार के दिन बदली हो, और शनिवार तक ्राई रहे, तो भड्डरी कहते है जल अवश्य वरसेगा। (भड्डरी के समय और जन्मस्थान आदि का ठीक ता नही चलता। पर वह उत्तर प्रदेश के वताए ाते हैं। उनकी वर्षा और शकुन सवधी कहावते न-साधारण मे वहुत प्रसिद्ध है।)

ल वेहतर है इश्कवाजी का, क्या हकीकी और ा मजाजी का

्श्कवाज़ी (प्रेम) का वधा ही अच्छी चीज़ है, फिर चाहे वह आध्यात्मिक हो या लौकिक। ुग्ल=(शगल), कामधघा। मनोविनोद।

ुर गमज़े करते हैं

ऊँट जैसी नजरो से देखते है। अर्थात
(१) चालाकी करते है।
(२) अवज्ञा की दृष्टि से देखते है।
(शुतुर गमजा करना, एक मुहावरा है जिसका अर्थ 'छल करना' है।)

शुनीदा कये बवद मानिदे दीदा, (फा०)

सुनना देखने जैसा नही होता। दोनो मे अंतर है।

शेख़ क्या जाने साबुन का भाव ?

जिसका जिस काम से सवध नही, वह उसका भेद-भाव क्या जाने।

शेख़ चंडाल, न छोड़े मक्खी, न छोड़े वाल

वहुत खाऊ के लिए तिरस्कारपूर्वक क०।

शेख़ ने कछुए को भी दग़ा दी है

कछुआ वहुत सीधा जानवर होता है। शेख ने उसे भी नही छोडा। घोखेवाज आदमी।

शेख़ ने कौवे को भी दगा दी

कौवा वहुत चतुर होता है। पर शेख़ उससे भी वढकर निकल गए।
(इसकी कथा है कि किसी शेख़ ने एक कौवे को पकडना चाहा। इसके लिए वह अपने मुह मे रोटी का एक टुकडा लेकर मृतवत जमीन पर पडा रहा। एक कौवे ने ज्यो ही उसके शरीर पर वैठकर उस टुकडे को लेना चाहा त्यो ही उसने उसकी चोच अपने मुह से पकड ली। कौवे ने छुटकारा पाने का कोई उपाय न देख उसकी जात पूछी, यह सोचकर कि ज्यो ही यह मुह खोलेगा, मैं उड जाऊगा। पर शेख उससे भी अधिक चालाक निकला। उसने और भी मजवूती से उसकी चोच अपने दातो के वीच दवाकर कहा—'शेख़')

शेख़ सद्दो का वकरा है

दुष्ट के लिए क०।
(शेख सद्दो एक जिन यानी भूत है, जिनके नाम से औरते वहुत डरती है।)

शेख़सादी शीराजी, आशिको के बादशाह, माशूको के काज़ी, (मु०)

फारसी के प्रसिद्ध कवि शेख़सादी के सबध मे किसी

मनचले की उक्ति।

शेखी और तीन काने

(पासे के) तीन काने आपने फेंके और उस पर भी इतनी शेखी!

(चौसर के खेल मे तीन काने विल्कुल व्यर्थ माने जाते है। काना पासे पर की विंदी या चिह्न को कहते है। एक विदी की एक सख्या गिनते है।)

शेखी का मुंह काला

शेखीवाज को नीचा देखना पडता है।

शेखीखोरे से कहा—"तेरा घर जलता है" कहा—"बला से, मेरी शेखी तो मेरे पास है"

(१) शेखी के मारे घर की आग भी नही बुझाना चाहते। अथवा

(२) हज़रत का घर जल गया हे, फिर भी अकड ज्यो-की-त्यो।

शेखी सेठ की, धोती भाड़े की

किराये की धोती पर सेठ जी शेखी वघारते है। झूठी शान।

शेखो की शेखी, पठानो की टर,
'यहां न धोवेंगे, धोवेंगे घर'

शेख और पठान अपनी शेखी और घमड को घर जाकर ही धोते हैं। अर्थात वाहर हमेशा वडी अकड दिखाते है।

शेर का एक ही भला

लड़का सपूत हो तो एक ही अच्छा।

शेर का खाजा वकरी

शेर की खुराक वकरी हे। सवल का भोजन निवल।

शेर का जूठा गीदड़ खाय

(१) आलसी और अकर्मण्य ही दूसरो पर निर्भर रहते है।

(२) वडो से छोटो का बहुत काम चलता हे।

शेर के बुरके मे छीछड़े खाते हैं

जो घृणित उपायो से जीवन व्यतीत करते है, उन पर क०।

शेर वकरी एक घाट पानी पीते हैं

अच्छे शासन और प्रवध के लिए क०।

शेरशाह की दाढी वडी या सलीमशाह की?

मूर्खतापूर्ण वातो को लेकर जव कोई झगडे और वहस करे, तव भर्त्सना करते हुए क०।

शेरो का मुंह किसने धोया?

उन छोटे वच्चो से हँसी मे कहते है जो साफ-सुथरे नही रहते।

शेरो के शेर ही होते है

यगस्वी पिता के लडके भी यशस्वी होते है।

शैतान की आत, (मु०)

वहुत लवी चीज के लिए क०।

शैतान की खाला, (स्त्रि०)

दुष्ट और लडाकू औरत।

शैतान के कान काटे, (मु०)

ऐसा आदमी जो चालाकी (या दुष्टता) मे शैतान से भी वढकर हो।

शैतान के कान वहरे, (मु०)

शैतान वहरा हो जाय, अर्थात कोई एक वात ऐसे लोगो तक न पहुच जाए, जो उसका अनुचित लाभ उठा ले।

शैतान जान न मारे, हैरान तो जरूर करे, (मु०)

दुष्ट आदमी प्राण न ले, तो परेशान तो जरूर करता है।

शैतान तूफान से खुदा निगहवान, (स्त्रि०)

ईश्वर हमे शैतान और उसकी शरारतो से वचाए। वहुत वड़े शरारती के लिए क०।

शैतान ने भी लडको से पनाह मांगी है, (मु०)

लडको से शैतान भी घवराता है।

(इस पर कथा है कि किसी शैतान को लडको के साथ खेलने मे वडा आनद मिलता था। एक दिन वह गदहे के रूप मे उनके वीच खेलने आया। लडको ने उसे देखते ही उस पर सवारी गाठनी शुरू कर दी। चार लडके तो आसानी से उसकी पीठ पर वैठ गए, पर जव पाचवे को कही जगह नही, मिली, तो वह उसकी दुम मे वास वाघ कर वैठ गया। शैतान के लिए यह असह्य हो गया। वह फौरन वहा से रफूचक्कर हुआ ओर फिर कभी लड़को के पास नही आया।)

शैतान सिरपर चढ़ रहा है, (मु०)
क्रोध के आवेश मे होना।
शैतान से ज्यादा मशहूर
जिसे सभी लोग जानते हो, ऐसे के लिए व्यग्य मे क० ।
शौक दाद इलाही है
(काव्य कला आदि जैसी अच्छी चीजो का शौक स्वाभाविक होता है।
दादइलाही=ईश्वर का दिया हुआ।
शौकीन बहुरिया, चटाई का लहगा, (मु०, स्त्रि०)
वेतुका शौक।
बहुरिया=वहू।
पा०-शौकीन वुढिया . ।
शौकीन बीवी, कम्मल की चोली;
चोली में आग लगल, तहलल फिरी, (मु०, स्त्रि०)
शौकीन वीवी ने कवल की चोली पहिनी, चोली मे आग लग गई, तो तलफती (हाय ! हाय ! करती) फिरी। किसी छैल छबीली औरत का मजाक।

संख बजाओ, सोवो साधू, जो सुख पावे काया
ढोगी साधुओ पर कटाक्ष ।
काया=शरीर।
संख बाजे, सत्तर बला टाले, (लो० वि०)
घर मे शख वजते रहने से विपत्तिया दूर होती हे।
संग आमद-ओ सख्त आमद, (फा०)
पत्थर की चोट जव लगती है, तव कडी लगती है।
(१) विपत्ति पर विपत्ति आती है ।
(२) कठिन समय मे धैर्य और तत्परता से काम लेना चाहिए ।
संगत अच्छी बैठिये, खैये नागर पान।
खोटी संगत बैठ के, कटे नाक और कान।
स्पष्ट ।
नागर=पान की एक जाति, नागौरी।
संगत का प्रभाव है
स्पष्ट। जव कोई वुरी सगत मे पड जाता हे, प्रायः तव क० ।
संगत की फूट का अल्लाह बेली
भगवान आपस के झगडो से वचाए ।
संगत से फल होत है, वही तिली वहि तेल।
जात-पांत सब छोड़ के, पाया नाम फुलेल।
सगत का फल मिलता हे। तिलो का वही तेल (फूलो की महक मे वसकर) फुलेल कहलाने लगता हे।
संग सोई तो लाज क्या? (स्त्रि०)
पास सोई तो फिर शरम किस वात की?
संतन की बानी सुने, प्रेम सहित जो कोय।
गगादिक सब तीर्थ फल, बिन अस्नाने होय।
जो सतो की वाणी को प्रेमपूर्वक सुनता है, उसे गगा जैसी पवित्र नदियो मे स्नान करने का फल मिलता है।
संतोख कड़ुवा, पर फल मीठा
स्पष्ट।
सदल के छापे मुह को लगे
तुम्हारी प्रतिष्ठा वढे। आशीर्वाद।
सदल के छापे=चदन के तिलक।
सपत की जोरू, विपत का यार, (हिं०)
स्त्री धन की साथी हे और सच्चा मित्र विपत्ति का साथी है।
सपत से भेंटा नहीं, दलिद्दर से टूं-टां, (पू०)
धन का तो अभाव हे और दरिद्रता मे लड़ते हैं, अर्थात ऐसा काम करते हैं जिससे हानि हो। मूर्ख मनुष्य।
सखी करीम पड़े एड़ियां रगड़ते हैं।
बखील मूसलो से मोतियो को फोडते हैं।
दाता और उदार तो दुख पाते हैं, कजूस मौज करते है।
वखील=कृपण।
सखी का खजाना कभी खाली नहीं होता
दाता के पास पैसे की कभी कमी नही रहती।

सखी का वेड़ा पार और सूम की मट्टी ख्वार
दाता के सब काम बनते है, कजूस कष्ट भोगता है।

सखी का वेड़ा पार है
स्पष्ट। दे० ऊ०।

सखी का सर बुलद, मूजी की गोर तग, (मु०)
दाता का सर ऊँचा रहता है, कृपण की कब्र तग रहती है। (वह वहा भी दुख पाता है) भिखारियो की टेर।

सखी की कमाई मे सवका साझा
क्योकि वह दूसरो को बाटकर खाता है।

सखी की नाव पहाड़ चढ़े
दाता के कठिन-से-कठिन काम सफल होते है।

सखी के माल पर पड़े, सूम की जान पर पड़े
दाता का तो केवल धन खर्च होता है, (दान करने मे) पर कजूस के प्राणो पर आ वनती है, (चोर, डाकू उसे मार डालते है।)

सखी देवे और शरमावे, वादल वरसे और रमावेग
दाता दान देकर शरमाता है कि मैंने थोडा ही दिया, पर वादल पानी वरसाकर गर्मी पकडता है, घमड करता है कि मैंने वहुत दिया।

सखी न सहेली, भली अकेली, (स्त्रि०)
ऐसी स्त्री जो अकेले रहना पसन्द करे।

सखी सखावत फलता है, अदू अदावत से जलता है
दानी दान से सुख पाता हे, ईर्ष्यालु ईर्ष्या करके मरता है।

सखी सूम का लेखा वरस दिन मे वरावर हो जाता है
इसलिए कि कजूस का धन चोर-डाकू इकट्ठा ले जाते है।

सखी से भेंटा नहीं तो सूम से क्यो विगाड़े ?
मित्रता तो हरेक से रखनी चाहिए।

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाव
दाता से तो कृपण अच्छा, जो तुरत नही कर देता हे। देने मे जो वहुत टालमटोल करे, उससे क०।

सखी हो, हम हूं राजकुमारि!
ताना मार कर क०। हम भी वडे आदमी है।

सगरी उमर मे पाप कमाई, जनम न कीना पुन्न।
लेवनहारा आ गया, तो तन-मन हो गया सुन्न।
स्पष्ट। सत वचन।

सगरी रैन बन-बन फिरी, भोर भये कुएं से डरी, (स्त्रि०)
दिखावटी लज्जा। दुश्चरित्रा के लिए क०।

सगरे गाव घूर अइली, कही न देखो लवदा।
पटना सहर अइसन देखलिन, कांख तरे लवदा।
सब नगर और गाव मैंने घूमे, पर कही लाभ नही दिखाई दिया, पर पटना नगर ऐसा है जहा वगल मे लाभ मौजूद है। (इससे जान पडता है पटना कभी व्यवसाय का वडा केन्द्र रहा होगा।)
लवदा=लब्धि, प्राप्ति।

सगरे घर में रेंग के मुसरी सिर पटक के मर जा
(१) किसी को कोसना।
(२) विपत्ति मे पडे से भी कह सकते है।
मुसरी=मूसल।

सगो बिन सगाई कैसी ? भलो बिन भलाई कैसी ?
सम्वन्ध तो सगे-सबधियो से ही रहते हैं, और भलाई भलो से ही होती है।

सच और झूठ में चार अंगुल का फरक है
आख से देखी वात सच और कान से सुनी वात झूठ होती है, और आख तथा कान मे चार अगुल का अतर होता है। उसी से सच और झूठ का अतर चार अगुल वताया गया है।

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है
क्योकि सच बात किसी को अच्छी नही लगती।

सच कहे सो मारा जाय
दे० ऊ०।

सच की संसी वुरी होती है
सच की पकड वुरी होती है; लोग सच से घवराते है।
ससी=लोहे का एक औजार जिससे कोई चीज़ पकडते है; सडासी, जबूरा।

सच वरावर पुन्न नहीं, झूठ वरावर पाप
स्पष्ट।

सच बात आधी लड़ाई होती है

दे०—सच कहना . ।

सच बात कड़वी लगती है

स्पष्ट।

सच बोलना ओर लड़ाई मोल लेना बराबर है

दे०—सच कहना . ।

सच बोलना और सुखी रहना

स्पष्टवादी का कथन।

सच बोल, पूरा तौल, (व्य०)

व्यापार का सूत्र।

सच सबको कड़वा लगता है

स्पष्ट।

सच है, हरामजादे की रस्सी दराज है

दुष्ट का अत मुश्किल से आता है।

दराज=वडी।

सचाई मे खुदा की सूरत है, (मु०)

स्पष्ट। सत्य ही परमेश्वर है।

सच्चा जाय, रोता आय; झूठा जाय, हँसता आय

अदालतो के न्याय पर क०, जहा झूठो की ही जीत होती है।

सच्चे की बहुरे, झूठे की न बहुरे

(१) सच्चे का समय आता है, झूठे का नही आता।

(२) सच्चे की बात सच साबित होकर रहती है।

सच्चे के आगे झूठा रो मरे

सच्चे के आगे झूठे की नही चल पाती।

सच्चे राम को छोड़ कें, पूजें देवी भूत।
आप विचारे मर गये, उनसे मागे पूत।

स्पष्ट।

सच्चे लोग कसम नही खाते

झूठी बात को सच साबित करने को ही कसम खाई जाती है।

सजन चले परदेस को, धर घोड़े पै जीन।
जो मैं ऐसा जानती, चावुक लेती छीन।

स्त्री का क०, जिसका पति विदेश चला गया है।

सजन तुम झूठ मत बोलो, खुदा को सांच प्यारा है।
कहावत है बड़ो की यूं, कधी साचा न हारा है।
(स्त्रि०)

स्पष्ट।

सजन बिन ईद कैसी ? (स्त्रि०)

पति के विना उत्सव कैसा ?

सजन सकारे जायेंगे, ओर नैन भरेंगे रोय।
विधना ऐसी रैन कर, कि भोर कधी ना होय।

स्पष्ट।

किसी स्त्री का पति विदेश जा रहा है। वह कहती है 'हे भगवान् तू ऐसी (लवी) रात कर कि कभी सवेरा ही न हो, जिसमे मेरे पति जा न सक।

सज्जन चित कधू न धरें, दुर्जन जन के बोल।
पाहन मारे आम को, तऊ फल देत अमोल।

स्पष्ट।

पाहन=पत्थर।

सड़ी साहिवी और गच का सोना

झोपडी मे रहकर महलो के ख्वाब देखना।

गच=चूने का फर्श।

सत मत छाड़े हे पिया, सत छाड़े पत जाय।
सत की बांधी लच्छमी, फेर मिलेगी आय। (स्त्रि०)

हे प्रियतम्! सत्य नही छोडना चाहिए। सत्य छोडने से सम्मान जाता है, सत्य के वश मे हुई लक्ष्मी फिर आकर मिलती हे (चले जाने पर भी)।

सतरा वहतरा

फालतू आदमी। ऐरे गैरे।

सतवती का लाज वड़, छिनाली के वल वड़, (स्त्रि०)

पतिव्रता लज्जाशील होती हे, और दुश्चरित्रा वहुत वातूनी अर्थात् निर्लज्ज।

सत हारा, गया मारा

जो सत्य छोड देता है, वह मारा जाता है।

सती कुच, भुजगमणि, केसरि केस, गजदत।
सूर कटारी, विप्र धन, हाथ लगे जब अंत।

पतिव्रता स्त्री के स्तन (सतीत्व), सर्प की मणि, सिंह के वाल, हाथी के दात, शूरवीर की तलवार

और ब्राह्मण का धन, ये उनके मरने पर ही हाथ लगते है।

सत्त मान के बकरा लाये, कान पकड़ सिर काटा।
पूजा थी सो मालिन ले गई, मूरत को घर चाटा। (कबीर)

मूर्तिपूजा पर व्यग्य।

सत्तर कीने सात के, और सोलह के किए सौ।
व्याज बुरा रे बालके, यासूं राखौ भौ।

सूदखोर और कर्ज पर क०।

सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली

बुरे कर्म करते हुए भी धर्मात्मा बनने का ढोंग करना। (बिल्ली की कथा बहुत पुरानी है। वह जातक और महाभारत मे मिलती है। एक बिल्ली चूहों से यह झूठी बात कह कर कि अब तो मैने सन्यास ले लिया है और मास खाना भी छोड दिया है, एक-एक करके उन सबको खा जाती है।)

सत्तू खाके शुक्र क्या? (मु०)

सत्तू खाकर क्या धन्यवाद देना?
तुच्छ वस्तु पाकर प्रशसा क्या?

सत्तू बांध कर पीछे पड़ना

दृढता के साथ उद्देश्य को पूरा करने मे लगे रहना।

सत्तू मनभत्तू, जब घुलवा जब खइबा, जब जइबा, धान बिचारे भल्ले, कूटे खाये चल्ले; (पू०)

दो और दो पाच बताना, या काले को सफेद कहना। सत्तू को घोलने और खाने मे थोडा समय लगता है, जब कि धान को कूटना और चावल पकाना एक श्रमसाध्य कार्य है।

दे० पूरी कथा के लिए धान बिचारे. ।

सत्य रहेगा, सब मरेगा

सत्य ही जीवित रहता है।

सदका दिये रद्द बला, (लो० वि०)

दान-पुण्य करने से विपत्तियां दूर होती हैं।

सदा ईद नहीं जो हलुवा खाये, (मु०)

आनद के दिन सदा नही रहते।

सदा किसी की नहीं रही

हमेशा किसी के अच्छे दिन नही रहे।

सदा की पदनी, उरदों दोष, (स्त्रि०)

अपने किसी बुरे ऐब के लिए दूसरे को जिम्मेवार ठहराना।

पदनी=पादने वाली। उर्द पेट मे वायु पैदा करते है।

सदा के उजडे, नाम बस्तोराम

शेखीबाज।

सदा के दानी, मूसल के नौ टके!

व्यग्य मे कृपण के लिए क० कि वह एक टके की चीज के नौ टके देता है।

सदा के दुखिया, नाम चगे रा.

हैसियत के प्रतिकूल नाम।

सदा दिन एक से नहीं रहते

दुख और सुख आदमी को लगे ही रहते है।

सदा दिवाला सत के, जो घर गेहू होय

घर मे खूब खाने-पीने को हो तो नित्य त्योहार है।

सदा दौर दौरा यह रहता नहीं, गया वक्त फिर हाथ आता नहीं

स्पष्ट।

दौरदौरा=प्रभाव, प्रताप, दबदबा।

सदा न काहू की रही, पीतम के गल बांह।
ढलते ढलते ढल गई, तरवर की-सी छाह!!

स्पष्ट।

सदा न फूले केतकी, सदा न सावन होय।
सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीवे कोय।

सदा दिन एक से नही रहते।
(सावन आनद, उत्सव की ऋतु मानी जाती है।)

सदा नाम साईं का

ईश्वर का नाम ही सदा रहता है।

सदा नाव कागज की बहती नहीं

(१) कच्चा काम स्थायी नही होता।
(२) धोखा हमेशा नही दिया जा सकता।

सदा फूली फूली चुनी है

हमेशा फूली कलिया ही चुनी है, अर्थात मुरझाई कली कभी उसके हाथ नही आई।

भाग्यवान् के लिए क०।

सदा भवानी दाहने, सम्मुख रहे गनेश।
पाच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
आशीर्वाद।

सदा मियां घोड़े ही तो रखते थे
किसी को व्यग्य मे क०।

सदा रहे नाम अल्लाह का
फकीरो की टेर।

सदा सुहागन
(१) व्यग्य मे वेश्या से क०।
(२) एक प्रकार के फकीर जो सधवाओ की तरह वस्त्राभूषण पहनते है।

सपूती रोवे टूकों को, निपूती रोवे पूतो को, (स्त्रि०)
जिसके वाल-बच्चे है उसके धन नही, जिसके धन है उसके बाल-बच्चे नही।

सपूतों के कपूत और कपूतो के सपूत होते आए है
अच्छो के बुरे और बुरो के अच्छे होते ही है।

सफर और सकर बराबर
यात्रा और नरक दोनो बराबर है, अर्थात यात्रा मे वहुत कष्ट होता है।

सफर और सकर मे एक नुक्ते का फर्क है
सफर (यात्रा) और सकर (नरक) मे वहुत थोडा अतर है।
(फारसी के फे अक्षर मे—जिससे सफर लिखा जाता है एक नुक्ता होता है, दो नुक्ता रखने से वही काफ वन जाता है, जिससे सकर लिखते है।)

सफर कर्द : बिसयार गोयद दरोग, (फा०)
(दूर देशो के) यात्री तरह-तरह की गप्प-हाकते है।

सफर, वसील-अये-जफर
यात्रा से ही प्राप्ति होती हे, (ज्ञान या धन की)।

सब उस्तरे बाधो, कोई तलवार न बांधो।
कर दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधो।
(१) कायरो पर व्यग्य।
(२) अग्रेज़ो के जमाने के आर्म्स ऐक्ट पर भी ताना है।
दस्तार=पगड़ी।

सब एक ही थैली के वट्टे है
जहा सबके स्वार्थ एक से हो, अथवा सब एक-सी ही वात कहते हो, वहा क०।

सब एक ही माथे
(१) सब काम एक के ही जिम्मे। अथवा
(२) एक के माथे ही तिलक।

सबक और तवक दोनो मौजूद हैं, (मु०)
पाठ और भोजन दोनो।
(१) पुराने जमाने मे मकतव मे जो लडके पढने जाते थे, उनसे मौलवी साहव घर का सब काम भी करवाते थे। उसी से अभिप्राय है कि लडको को पढाओ और उनसे भोजन भी वनवाओ।
(२) विद्यार्थियो को मिलनेवाली आर्थिक सहायता से भी मतलव हो सकता है।

सब काम थक्का, तो वुरा काम तक्का
जब कोई मनुष्य पेट के लिए ओछा काम करने लगता है, तव क०।

सब कामो मे पूरी, कोई न कहे अधूरी, (स्त्रि०)
जो अपने को बहुत होशियार समझें, उससे व्यग्य मे क०।

सब की मैया साझ
सध्या सवकी माता है। वह सबको अपनी गोद मे विश्राम देती है।

सब कुछ गई, मिया, तेरी चुलबुल न गई, (स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने बूढे पति से कह रही है।

सबकुछ गया, मियां की टखटख न गई, (स्त्रि०)
दे० ऊ०।
टखटख=बहुत वात करना। ऐब निकालना। खीझना।

सब के दांव अंडे-बच्चे, हमारे दांव कुडक
सबको तो जहा कोई वस्तु मिल रही हो, पर स्वय को न मिले, तव क०।
कुडक=ऐसी मुर्गी जिसने अडा देना वद कर दिया हो।
कुडक हो जाना=अडा देना वद कर देना।

सब के दाता राम
भगवान सब को देते हैं।

सब केहू बोले तो नीक लागला, कपूर बहू बोले टिहुक बडेला, (स्त्रि०)
सास अपनी बहू के बारे मे कह रही है जिससे वह बहुत अप्रसन्न रहती है—कोई और बोलता है तो मुझे अच्छा लगता है, पर जब कपूर बहू बोलती है तो मेरा बदन जल उठता है। बहू का पक्ष लेकर सास से भी कोई उक्त बात कह सकता है कि कोई और बोलता है, तो तुम कुछ नही कहती पर कपूर बहू के बोलने से तिनक उठती हो।

सब कोई झूमर पैरे, लंगडी कहे 'हमहू', (स्त्रि०)
सब झूमर पहिनते है, तो लगडी भी पहिनना चाहती है।
किसी वस्तु के उपयोग करने के योग्य न होने पर भी उसके पाने की इच्छा करना।
झूमर=पैरो मे पहिनने का एक गहना।

सब कोई मिलियो, लंगोटिया न मिलियो
क्योकि वह बचपन की सब बाते जानता है।
लगोटिया=छुटपन का साथी।

सब को ठेल, मै अकेल
स्वार्थी मनुष्य, जो सब चीज अपने लिए ही चाहे।

सब गहनो में चन्दनहार
(१) चद्रहार सब गहनो मे अच्छा होता है।
(२) सब मे अच्छा मनुष्य।

सब गुड़ मट्टी हुआ
बना-बनाया काम बिगड गया।

सब गुन को आगर धीया, नाक बिना बेहाल, (पू०, स्त्री०)
एक दुर्गुण होने से सब गुण नष्ट हो जाते है।
धीया=धी, लडकी।

सब गुन की आगर, फूटल गागर, (स्त्रि०)
गगरी मे और तो सब गुण है, पर वह फूटी है।
दे० ऊ० ।

सब गुन पूरी, कौन कहे अधूरी, (स्त्रि०)
बेशऊर स्त्री को व्यग्य मे क०।

सब गुन भरी, बैतरा सोठ
व्यग्य मे भ्रष्ट स्त्री या धूर्त के लिए क०।
(बैतरा सोठ बहुत गुणकारी मानी जाती है, इसमे रेशा नही होता।)

सब घटा देते है मुफलिस के गरज माल का मोल
गरीब आदमी जब गरज पडने पर अपनी कोई चीज बेचता है, तो सब उसके कम दाम लगाते है। अर्थात गरीबो की सब उपेक्षा करते है।

सब घर मटियाले चूल्हे
(१) सब घरो का एक-सा ही हाल है।
(२) सब घरो मे कोई-न-कोई बुराई मौजूद है।

सब जग रूठा, रूठन दे, एक वह न रूठा चाहिए
ईश्वर के प्रति किसी ऐसे मनुष्य का कहना है जिसका समय खराब आ गया है, और जिससे सभी ने मुह मोड लिया है।

सब जीते-जी के झगड़े है, यह तेरा, यह मेरा है।
जब चल बसे इस दुनिया से, ना तेरा है ना मेरा है।
(नज़ीर)
स्पष्ट।

सबज़ी मत देव गंवारन को,
हंडिया भर भात बिगारन को, (पू०)
गवारो को भग मत दो, व्यर्थ भोजन का सत्यानाश मारेगे ।
जो मनुष्य जिस वस्तु की कद्र नही जानता, वह उसे नही देनी चाहिए ।
(भग खाने से भूख खूब लगती है, पर हज़म नही होता।)

सबज़ी में सुरखी, खबर लाये धुर की
भग का नशा जब चढता है तो वह दूर-दूर की खबर लाता है। भगेडियो का कहना।

सब तोड़ें, मेरा एक रब न तोड़े, (स्त्रि०)
दे०—सब जग रूठा ।
रब=ईश्वर।

सब दिन चंगे, तिहवार के दिन नंगे, (स्त्रि०)
खुशी के दिन खुशी न मनाना। स्त्रिया प्राय. बच्चो से कहा करती है।

सब धान बाईस पसेरी
(१) जहा सबको एक डडे से हाका जाय, वहा क०।)

(२) बहुत सस्ती चीज़ के लिए भी क०।

सब पीर छूटे, पकड़ी गई बीबी नूर, (मु०)

व्यग्य मे कहा गया है। मतलब है कि जो असली बदमाश थे, वे तो बच गए, पर एक गरीब पकड़ा गया।

सब पेड़ो में बड़ा जो बड़, आकाश वाकी चोटी पाताल, वाकी जड़, हरे हरे पत्ते, लाल लाल फर, अकब्बर बादशाह गीदी खर

कविता का मज़ाक उड़ाया गया है।

(कथा इस प्रकार है—यह जानकर कि अकबर बादशाह कविता के बडे प्रेमी है और कवियो का विशेष सम्मान करते है चार देहातियो ने कोई कविता बनाकर उन्हे प्रसन्न करने का इरादा किया। तीन ने तो उपर्युक्त तुकवदी के तीन चरण बना लिए, पर चौथे से कुछ न बन सका। इतने मे एक भाड वहा से जा निकला। उसने उन चारो को कविता वनाने मे व्यस्त देखकर चौथे चरण की पूर्ति कर दी। चारो देहाती खबर भेजकर दरबार मे पहुचे और वादशाह के हुक्म से अपनी-अपनी रचना सुनाने लगे। तीन तो बारी-बारी से अपने पद सुना गये, पर चौथे ने जब अपना पद सुनाया, तो सब दरबारी सन्नाटे मे आ गए और वादशाह भी वहुत नाराज हुए। उस देहाती की समझ मे जब यह आया कि उससे कोई वडी भूल हुई है, तो उसने उस व्यक्ति को वता दिया जो वही वैठा हुआ था और जिसने वह चौथा चरण वनाया था। यह देखकर कि वह तो दरवार का ही मशहूर भाड है, बादशाह ने हँसकर मामले को टाल दिया।)

सब बातों में है यारो, यही सखुन दुरुस्त। अल्लाह आबरू से रक्खे और तन्दुरुस्त।

सब वातो मे वस यही वात ठीक है कि ईश्वर इज्जत से रक्खे और तन्दुरुस्त रक्खे।

सब मद मदई हैं, विद्या मद उन्माद

सब नशो मे विद्या का नशा अधिक है, वह मनुष्य को पागल बना देती है।

सब शकल लगूर की, एक दुम की कसर है

सिलबिल्ले लडके से क०।

सब सदके, मै अलग, (स्त्रि०)

अपने को छोडकर (तुम पर) सब न्यौछावार। दिखावटी प्रेम।

सब संसै मिट जायगा, जब होगा राम सहाय। रानी उस भगवान से लीजे ध्यान लगाय।

स्पष्ट।

राजा नल का दमयती के प्रति कथन।

सस=सशय।

सब से बडी भूख, जो पावे सो चूख

भूख मे जो मिलता है, वही खा लिया जाता है।

सब से बेहतर है, मिया, साहब सलामत दूर की

किसी से बहुत घनिष्ठता बढानी ठीक नही।

सब से भला किसान, खेती करे और घर रहे

जीविका के लिए जो बाहर जाते है, उन पर क०।

सब से भली चुप

स्पष्ट।

(स०—मौनम् सर्वार्थ साधकम्।)

सब से भले मूसलचंद, करें न खेती, भरें न दंड

किसानो को जो सरकारी लगान देना पडता है, उस पर कहा गया है कि मूर्ख अच्छा जो खेती नही करता, ओर किसी परेशानी मे नही पडता।

सब से मीठी भूख

भूख मे सब चीज़ अच्छी लगती है।

सब से रलमिल चालिये, जब लग पार बसाय। मिष्ट बचन मुख बोलिये (जो) नेकी ही रह जाय।

स्पष्ट।

रलमिल=हिलमिलकर।

सब से हिलिये, सब से मिलिये, सब से कीजे चाव। हां जी, हां जी सब से कहिये, वसिये अपने गाव।

सबको प्रसन्न रखकर चलना चाहिए।

सब ही कूकर जो काशी जायें, तो पातर चाटन कौन आयें? (स्त्रि०)

सब कुत्ते अगर (तीर्थ यात्रा के लिए) काशी जाए, तो पत्तल चाटने कौन आए?

मूर्ख यदि समझदारी का काम करने लगे, तो फिर समझ-दारो को कौन पूछे।

सब ही जात चमार की, बिना चाम नहिं कोय।
बिना चाम वह आप है, जिसको लखे न कोय।

स्पष्ट।

सब ही बात खोटी, सिरे दाल रोटी

(१) दाल रोटी सबसे अच्छी होती है। अथवा

(२) दुनिया मे दाल रोटी ही मुख्य है।

सवेरे का टहलना, दिन भर की खुशी

सुबह घूमने से दिन भर चित्त प्रसन्न रहता है।

सवेरे का भूला सांझ को भी आवे, तो भूला नहीं कहलाता

अपनी भूल को जब कोई स्वय ही जल्दी सुधार ले, तब क०।

सब्र का अजर खुदा देगा, (मु०)

सतोष का फल ईश्वर देता है।

सब्र कर मन में, तो सुख लहे मन मे

सतोष से सुख मिलता है।

सब्र की डाल में मेवा लगता है

सतोप का फल अच्छा होता है।

सब्र की दाद खुदा के हाथ है

सतोषी की ईश्वर सहायता करता है।

सब्र की दाद खुदा देगा

दे० ऊ०।

सब्र तल्ख अस्त, व लेकिन बरे शीरीं दारद, (फ़ा०)

सतोप कडुवा है, पर उसका फल मीठा होता है।

सभा की चूकी डोमनी और डाल का चूका बंदर बराबर

डोमनी अगर किसी के यहा मौके पर गाने-बजाने न जा पाए, तो हानि उठाती है, इसी तरह डाल का चूका बदर भी हानि उठाता है।

सभा बिगारें तीन जनें, चुगल, चूतिया, चोर

जिस सभा मे चुगल, चूतिया (फालतू आदमी) और चोर ये तीन मौजूद हो, उस सभा का सब आनद जाता रहता है।

सभी पदारथ पान है, एक ही औगुन आह।
जाके कर पै धरत हैं, बिदा करत हैं ताह।

पान बहुत अच्छी चीज़ है, पर उसमे एक ही अवगुण है कि जिसे देते है, उसे विदा करने के लिए ही देते है।

(राज-दरबारो मे यह नियम था कि जब कोई राजा से मिलने जाता था, तो विदा करते समय राजा उसे अपने हाथ से पान देते थे। उसका अर्थ यह होता था कि 'भेट समाप्त हो गई, अब आप जाइए।' उक्त दोहे मे उसी पर कटाक्ष है।)

सभी मिसरी की है डलियां

(वे) सभी भले मालुम हैं।

सभी सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपक देत बुझाय।

(वृन्द)

बलवान के सब सहायक होते है, निर्बल का कोई नही। हवा आग को प्रज्वलित करती है, और दीपक को बुझा देती हैं।

समझ का घर दूर है

समझदारी एक मुश्किल चीज़ है।

समझनेवाले की मौत है

(१) समझदार पर ही सब काम की जिम्मेवारी आकर पडती है, इसलिए कोई काम अगर बिगड जाए, तो उसकी बुराई भी उसी को भुगतनी पडती है।

(२) समझदार चुप नही रह पाता, और अगर वह अपनी कोई स्पष्ट राय जाहिर कर देता है, तो उसकी मुसीबत आ जाती है।

(इसकी कथा है कि एक बार अकबर बादशाह के दरबार मे किसी अच्छे गवैये का गाना हो रहा था। उसे सुनकर सब अपना सिर हिला रहे थे। बादशाह ने अचभे मे आकर बीरबल से पूछा क्यो 'ये सब लोग गाना समझते है?' बीरबल ने उत्तर दिया 'इसका पता मैं अभी लगाए देता हू।' और उन्होने दरबारियो को सबोधन करके कहा कि 'आप लोगो का जहापनाह के सामने इस तरह सिर हिलाना अच्छा नही मालूम देता। अब अगर कोई ऐसी गुस्ताखी करेगा, तो उसका सिर कलम कर दिया जाएगा।' इस पर सब सभलकर बैठ गए, और गाना चलता

रहा। थोड़ी देर मे एक बूढे दरबारी के मुह मे निकल पड़ा—'हे भगवान समझदार की मौत है।' बीरबल ने पूछा—'क्यो भाई, क्या बात है?' तब उस दरबारी ने जवाब दिया—'क्या बताऊ, गाना सुनकर मैं सिर हिलाए बिना नही रह सकता और आपने उसके लिए मना कर दिया है।' तब बीरबल ने बादशाह से कहा कि 'जहापनाह' यही एक साहब है जो गाना समझते है। बाकी तो सब यो ही सिर हिला रहे है।')

समझा और पत्थर हुआ
समझदार अपने विचारो को आसानी से नही बदलता।

समझाये समझे नहीं, मन नहिं धरता धीर।
प्रालब्ध पहले बनी, पीछे बना शरीर।
स्पष्ट।
प्रालब्ध=प्रारब्ध, भाग्य।

समझे सो गया, अनाड़ी की जाने बला
समझदार की मुसीबत है।

समझो न बूझो, लठा ले के जूझो
बिना समझे हठ करना। दुराग्रही।

समय चूक पुन का पछताने
अवसर निकल जाने पर पछताना व्यर्थ है।

समय न बारबार, (हिं०)
अच्छा अवसर बार-बार नही आता।

समय समय की बात है
कभी सबल को भी दुर्बल के आगे दबना पड़ता है।

समय समय की बात, बाज पर झपटे बगुला
दे० ऊ०।

समय समय के दाता राम, (हिं०)
समय पर भगवान सहायक होते हैं।

समय समय सुन्दर सभी, रूप कुरूप न कोय
अपने-अपने समय पर सभी अच्छे लगते हैं, स्वय कोई न रूपवान होता है, न कुरूप।

समा करे (नर क्या करे) समय समय की बात।
किसी समय के दिन बड़े, किसी समय की रात।
मनुष्य कुछ नही करता। परिस्थितिया ही सब करवाती हैं। समा=समय।

समुन्दर क्या जाने दोजख का अज़ाब, (मु०)
समुद्र नरक के कष्टो को क्या जाने?
(क्योंकि नरक मे तो हमेशा आग धधकती रहती है और समुद्र पानी का ढेर है। पानी क्या समझे कि आग क्या चीज़ है?)

समुन्दर सोख को दरया क्या?
जो समुद्र को सोख सकता है, उसके लिए नदी कोई बड़ी चीज़ नही।
(अगस्त्य ऋषि ने समुद्र सोख लिया था। उसी ओर सकेत है)

सम्मन ऐसी प्रीत कर जैसी करे कपास।
जीते तो हुरमत रखे, मुए चलेगी साथ।
प्रेम तो कपास की तरह करना चाहिए, जो जीते-जी शरीर को ढक कर इज्ज़त रखती है और मरने पर कफन बनकर साथ जाती है।

सम्मान ऐसी प्रीत कर, जैसे शक्कर घीउ।
जात पांत पूछे नहीं, जिससे मिल जाय जीउ।
प्रेम तो शक्कर और घी की तरह करना चाहिए, (सब उनकी दृष्टि मे बराबर हैं।) जिससे प्रेम हो जाए, उसकी जात-पात नही पूछनी चाहिए।

सम्मान ऐसी प्रीत कर, ज्यो हिन्दू की जोय।
जीते-जी तो संग रहे, मरै पै सत्ती होय।
स्पष्ट।

सम्मन चडी काच की, कौड़ी कौडी देख।
जब गल लागी पीऊ के, लाख टके की एक। (स्त्रि०)
काच की चूडी एक बहुत सस्ती चीज़ है, पर वही जब सधवा के हाथ मे पहिनी जाकर (उसके) प्रियतम के गले से लगती है, तो उसका मूल्य लाखो रुपए हो जाता है।

सम्मन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे पर जो जोड़ हो, बीच गाठ पड़ जाय।
स्पष्ट।

सम्मन वह दिन कौन से, जो सुख से लाए पीत।
अब दुख दे न्यारे भये, कौन गाव की रीत।
स्पष्ट।

सम्मन वह फल कौन से, जो पक्के पै कड़वास।
कच्चे लगें सुहावने, गद्दर करें मिठास।
मनुष्य की तीन अवस्थाओ पर०।
पक्के पै=वृद्ध होने पर। कच्चे=वचपन मे
गद्दर=युवावस्था मे।

सम्मन साझ अधेर मा, भूल बाट मत चाल।
जान गवावे एक दिन, सग गवावे माल।
सध्या के वाद अधरे मे यात्रा नही करनी चाहिए। जान-माल का ख़तरा रहता हे।

सम्मन सांसा मत करो, सिर पर हे साईं।
जो कुछ लिखा लिलाट मे, भेजेंगे याहि।
स्पप्ट।
सासा=सशय।

सयाना कौवा खे खाय
अपने को वहुत होशियार समझनेवाला मनुष्य जब कोई स्पष्ट भूल कर बैठे, तव क०।
खे=मल, विष्ठा।

सयाने का गू तीन जगह
जो वहुत होशियार वनता है, वही हमेशा धोखा खाता है।
(दो मित्र एक साथ कही जा रहे थे। रास्ते मे कही उनके पैरो मे विष्ठा लग गई। एक ने तो तुरत अपना पैर धो डाला। पर दूसरे ने सोचा कि यह विष्ठा है या नही, इसका क्या सवूत ? इसलिए उसे हाथ लगाकर देखा। जव इस पर भी उसे निश्चय न हुआ तव, उसने हाथ को सूघा, जिससे विष्ठा उसकी नाक मे लग गई। इस प्रकार वह तीन जगह गदा हुआ।)

सयाने तो हैं वहुत से, सव से सयाना छोह।
हीना देख हो चौगुना, ठाडे पर कम होय।
क्रोध सवसे समझदार है, वह ताकतवर पर तो कम, और कमज़ोर पर अधिक वल दिखलाता है।

सरकार से मिला तेल, पल्ले ही मे मेल
सरकार से छोटी-से-छोटी वस्तु भी मिले, तो उसे प्रसन्नतापूर्वक लेना चाहिए।

सरदारी का डंडा अटका है
जो अपनी बीती हुई प्रतिष्ठा के अभिमान मे रहकर कोई छोटा पद स्वीकार नही करना चाहता, उसे क०।

सरदी का मारा पनपता है, अन्न का मारा नहीं पनपता
सरदी से आदमी वच सकता है, पर भूख से मर जाता है।

सरधा ढाल जो पहने खावे, वाके टोटा कभी न आवे
जो अपनी हैसियत के अनुसार चलता हे, उसे कभी किसी वात की कमी नही रहती।
सरधा=श्रद्धा, सामर्थ्य।

सरधा लागल, कइलो भतार, ओहू निकसल जात के चमार, (स्त्रि०)
वडे चाव से तो खसम किया और वह भी निकला जात का चमार! (अभिलाषा का पूरा न होना।)

सरफियां रा मग्ज़ वायद चूं सगां; नहवियां रा मग्ज़ वायद चूं शहां, (फा०)
विभक्ति या प्रत्यय के प्रयोग के लिए वहुत समझदारी की आवश्यकता नही पडती। पर पदयोजना के लिए विशेष योग्यता चाहिए। (अरबी भाषा के सवध मे कहते है।)

सरसों फूले फाग मे, और सांझी फूले सांझ।
नाह कभी फूले फले, जो तिरिया हो वांझ।
फागुन के महीने मे सरसो और सूर्यास्त के समय साझ फूलती है, पर वाझ स्त्री कभी नही फलती-फूलती अर्थात कभी पुत्रवती नही होती।
(सध्या समय आकाश मे जो लाली फैलती है उसे साझ फूलना कहते है।)

सराय का कुत्ता हर मुसाफिर का भार
मुफ्तखोर।

सराहल वहुरिया डोम घर जाय, (स्त्रि०)
सराही वहू भंगी के साथ निकल जाती है।
जो व्यक्ति हमारी दृष्टि मे वहुत योग्य होता है, उससे ही कभी-कभी हमे वहुत निराशा भी होती है।

सरेसे का टट्टू वना फिरता है
इन्द्र का घोडा वना फिरता है।
निकम्मे आदमी से व्यग्य मे क०।
सरेस=सुरेश, इन्द्र।

सला न शुद, वला शुद, (फा०)
निमंत्रण क्या, एक मुसीबत थी।

सलामत रहे वहू, जिसका वड़ा भरोसा है, (स्त्रि०)
किसी का लड़का मर जाने पर उसे दिलासा देते हुए क०।

सलाम विसर मियां जी क्यों रुसाये ?
(१) सलाम न करके मियां जी तुमने (उसे) नाराज क्या कर दिया ? अथवा
(२) मियां जी तुम इतने नाराज क्यों हो गए जो (हमने) सलाम नहीं किया ?
भाव यह है कि अपने अशिष्ट व्यवहार से किसी को अप्रसन्न करना ठीक नहीं।

सलीते मे मेख लश्कर मे शेख न रक्खे
वोरे मे कील-काटा न रक्खे और फौज मे शेख को भर्ती न करे।
(मुसलमानो के चार फिरके है सैय्यद, मुगल, पठान और शेख। उनमे शेख लड़ने मे वोदे माने जाते थे।)

सलेमो विन ईद कैसे ? (स्त्रि०)
सलेमो के विना भला ईद कैसे हो सकती है ? उनके विना तो मजलिस सूनी ही रहेगी।
(सलेमो किसी छैल-छबीली औरत का काल्पनिक नाम है।)

सवाव न अजाव, कमर टूटी मुफ़्त मे
निष्फल परिश्रम।
सवाव=पुण्य।
अज़ाव=पाप।

सवाल दीगर, जवाव दीगर
पूछा जाय कुछ, जवाव मिले कुछ।

ससुरार सुख की सार, जो रहे दिना दो-चार
ससुराल वहुत अच्छी चीज है, पर वहा अधिक न रहे।
(इस पर कथा है कि एक कायस्थ अपनी ससुराल गए। वहा अपना विशेष आदर सत्कार देखकर उन्होने पहला वाक्य कहा। जव उनके साले ने देखा कि ये तो यहा जमकर रहना चाहते है, तो उसने दूसरा वाक्य उनमे जोड दिया। पूरी कहावत इस प्रकार है ससुरार सुख की सार, जो रहे दिना दो चार। रहे मास पखवारा, हाथ मे खुर्पा वगल मे सारा।)

सस्ता ऊंट, मंहगा पट्टा
उल्टी वात। ऊंट मंहगा और पट्टा सस्ता मिलना चाहिए।

सस्ता गेहूं, घर-घर पूजा, (पू०)
अच्छी और सस्ती चीज का लोग खूब उपभोग करते हैं।

सस्ता रोवे वार-वार, महगा रोवे एक वार
सस्ती वस्तु खराव होने के कारण रोज-रोज विगड़ती है, पर महगी चीज़ का एक वार दाम अधिक जरूर लग जाता है, पर वह टिकाऊ होती है।

सस्ता हँसावे, महगा रुलावे, (कृ०)
सस्ता अन्न होने पर लोग प्रसन्न रहते हैं, महगा होने पर कष्ट पाते हैं।

सस्ती भेड़ की टांग उठा कर देखते हैं
सस्ती चीज को वार-वार देखते हैं, इसलिए कि उसके अच्छे होने मे सदेह रहता है।

सस्ते को देखभाल कर लेना चाहिए
कि कही खराव न हो।

सहता सहे, न सहता छाती दहे
(१) सहने योग्य वात ही सही जाती है, जो असह्य है, उससे छाती जलती है।
(२) जो सहनशील है, वह सव सह लेता है, असहनशील से वडा कष्ट पहुचता है।

सहरी खाये सो रोजा रक्खे, (मु०)
रोजे के दिनो मे मुसलमान सूर्योदय के पहले ही कुछ खाना खा लेते है। फिर दिन भर कुछ नही खाते। सुवह का वह भोजन ही सहरी कहलाता है ?
(कथा है कि एक मिया साहव के पास एक कुत्ता था। एक दिन उस कुत्ते ने उनकी सहरी खा डाली। इस पर मिया साहव ने नाराज़ होकर उसे एक खंभे से वाध दिया और कहा कि वस अव आज मेरे वदले यह कुत्ता ही रोज़ा रक्खेगा, क्योकि

इसने ही सहरी खाई हे। इस प्रकार मिया साहव ने उस कुत्ते की ओट लेकर स्वय अपने को रोजा रखने की मुसीवत से वचा लिया और दोपहर मे मजे से खाना खाया।)

सहरी भी न खाऊं तो काफिर न हो जाऊं, (मु०)
सहरी के लिए दे० ऊ०।
(इसकी भी कथा है कि एक समय वहुत से मुसलमान इकट्ठे होकर सहरी खा रहे थे। उनमे एक मुसलमान ऐसा भी था, जो रोजा नही रक्खे हुए था। उसे अपनी पंक्ति मे देखकर सवके सव कह उठे कि तुम क्यो सहरी खा रहे हो? तुम क्या रोजा रख रहे हो? इस पर उसने जवाव दिया—मै तो नमाज भी नही पढता, न रोजा ही रखता हू, अव अगर सहरी भी न खाऊ तो क्या काफिर हो जाऊ? मतलव की वात तुरत ढूढ लेना।)

सहस्सर गोपी एक कन्हैया
एक वस्तु के अनेक चाहक।

सहस्सर डुबकी मैं लई, मोती लगा न हाथ।
सागर का क्या दोष हे, हीन हमारे भाग।
भाग्यहीन पुरुप।

सही गए, सलामत आए, (स्त्रि०)
जो किसी काम से कही जाकर असफल लौटे, उससे व्यग्य मे क०।

साईं अंखियां फेरिया, वैरी मुलक जहान।
टुक इक झांकी मिहर दी, लक्खा करें सलाम। (प०)
ईश्वर जिससे विमुख होता है, संसार उसका वैरी हो जाता है, और जिस पर उसकी कृपा होती है, सब उसे सिर झुकाते है।

साईं अपने चित्त की, भूल न कहिये कोय।
तब लग मन मे राखिये, जव लग कारज होय।
जव तक काम न हो जाए, तव तक अपना मनोविचार किसी पर प्रकट नही करना चाहिए।

साईं इस संसार में, भात भांत के लोग।
सव से मिल के वठिये, नदी-नाव सजोग।
जैसे नदी पार होते समय एक नाव मे सभी तरह के लोग इकट्ठे हो जाते हैं, वैसे ही इस ससार मे भी सभी प्रकार के लोगो से काम पडता है, इस कारण सवसे मिलकर रहना चाहिए।

साईं का घर दूर है, जैसे लंव खजूर।
चढे तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना-चूर।
ईश्वर का घर वहुत ऊंचा है, जैसे खजूर का पेड। यदि वहा तक पहुच सके, तो (प्रेम) रस पीने को मिलता हे, और यदि (फिसलकर) गिर जाए, तो नष्ट हो जाता है।

साईं का रख आसरा और वाही का ले नाम।
दो जग मे भरपूर हों (तो) तेरे सगरे काम।
ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उसी का नाम लेना चाहिए, तो दोनो लोको मे (मनुष्य के) सव काम सफल होते है।

साईं का सुमरन करो, जो होय संपूरन कार।
साईं भी सन्मुख मिले और भगत करे संसार।
ईश्वर का स्मरण करने से सव कार्य सफल होते हैं। ईश्वर भी मिलता हे और ससार भक्त के रूप मे याद करता है।

साईं के दरावर में, वड़े वड़े है ढेर।
अपना दाना वीन ले, जिसमे हेर न फेर।
ईश्वर के यहां किसी वात की कमी नही है, मगर तुम्हारे भाग्य मे जो वदा है, वही तुम्हे मिलेगा। आशय यह कि जो तुम्हे मिले, उसी मे सतोष करो, किसी से ईर्ष्या मत करो।

सांईं के सौ खेल है
ईश्वर की लीला अद्भुत है, वह क्या किया चाहता है, पता नही चलता।

सांईं को सांच प्यारा, झूठे का मालिक न्यारा
ईश्वर सच्चे को प्यार करता हे, झूठे का कोई ईश्वर ही दूसरा है।

सांईं घोड़ मर गये, गदहन आयो राज।
काग हाथ पै लेत हैं, दूर कियो है वाज।
योग्य का सम्मान न होना।

साईं जिसके साथ हो, उसको सांसा क्या?
छिन मे उसके कार सब, दे भगवान वना।
ईश्वर जिसका सहायक हो, उसे किस वात का

डर ? भगवान उसके सब काम पल भर मे बनाता है।

साईं जिसको राख ले, म रन हारा कौन ?
भूत, देव, क्या आग हो, क्या पानी क्या पौन ?

भगवान जिसकी रक्षा करता है, उसे कोई मार नही सकता।

पौन=पवन, हवा।

साईं तेरा आसरा, छोडे जो अनजान।
दर-दर हांडे मांगता, कौडी मिले न दान।

जो ईश्वर पर निर्भर नही करता, उसे मागे से भीख भी नही मिलती।

हांडे=फिरता है।

साईं तेरी याद मे, जिन तन कीन खाक।
सोना उसके रूबरू, चूल्हे की राख।

ईश्वर के ध्यान मे जिसने अपना शरीर धूल बना डाला उसके लिए सोना चूल्हे की राख के समान है।

साईं तेरी सोहलो और आदर करे न कोय।
दुर-दुर करें सहेलिया, मैं मुड़-मुड देखूं तोय।
(स्त्रि०)

हे स्वामी ! मै तो तुम्हारी ही दासी हू, (फिर भी) कोई मेरा आदर नही करता। सब सखिया मुझे अपने से दूर भगाती है, और मै मुड-मुड कर तेरी ओर देखती हू। भक्त का ईश्वर को उलाहना।

साईं तेरे आसरे, आन परे जो लोग।
उनके पूरे भाग हैं, उनके पूरे जोग।

जो ईश्वर की शरण मे जाता है, वही भाग्यवान और योगी है।

साईं तेरे कारने, छोड़ा बलख बुखार।
नौ लख घोड़े पालकी, और नौ लख असवार।

हे प्रियतम ! मैंने तेरे लिए बलखबुखारा छोडा, लाखो घोडे पालकी और लाखो सवार छोड दिए है—(मुझे तुम अपनी शरण मे लो। भक्त का ईश्वर के प्रति निवेदन।)

सांईं तेरे कारने, जिन तज दिया जहान।
ठेठ किया वैकुंठ मे, उसने जहा मकान।

हे ईश्वर ! तेरे लिए जो ससार को छोड देता है, उसे स्वर्ग मिलता है।

साईं तेरे नेह का, जिन तन लागा तीर।
वो ही पूरा साधु है, वोही पीर फकीर।

जिसे ईश्वर से सच्चा स्नेह है, वही पूरा साधु और सत है।

साईं ते सच्चा रहो, बदे ते सत भाव।
भावें लबे केश रख, भावें घोंट मुड़ाव।

चाहे सिक्खो की तरह लबे बाल रक्खो, चाहे हिन्दुओ की तरह उन्हे कटवा डालो, पर ईश्वर के प्रति सच्चे रहो, और सबसे सद्भाव रक्खो।

साईं तो बिन कौन है जो करे नवड़िया पार।
तू ही आवत है नजर, चहूं ओर करतार।

स्पष्ट।

नवडिया=नाव।

साईं मोर आप बिरुझल, लोग दिहल पोचारा।
लात, मूका हम सहलौं, और सहलौं दू गारा।
(स्त्रि०)

स्त्री का कहना—मेरा पति स्वय मुझसे नाराज था, लोगो ने उसे शह दे दी। मैंने मार सही और गालिया भी सही। बलती आग मे घी डालना।

पोचारा (पुचारा)=भीगे कपडे से पोछने का काम। पतला लेप करने का काम।

पोचारा (पुचारा) देना=(मु०) खुशामद करना, बढावा देना।

सांईं राज बुलद राज, पूत राज दूत राज

विधवा का कथन, क्योकि पति के समय मे उसे जो सुख प्राप्त था, वह अब पुत्र के समय मे नही है।

बुलद=ऊचा।

दूत राज=निकृष्ट राज।

साईं सांईं जीभ पर, (और) गरब, कपट मन बीच।
वह नर डाले जायेंगे, पकड नरक मे खींच।

जो मन के कपटी और अहंकारी हैं, और ऊपर से ईश्वर का नाम लेते है, वे नरक मे जाते है।

साईं सासा मेट दे, और न मेटे कोय।
वाको सांसा क्या रहा, जा सिर सांईं होय।

जिसका ईश्वर सहायक है, उसे किसी बात का भय नही।

सासा=सशय।

साईं से जो फिर गया, उसको लाभ न होय।
वह तो यूं ही जायगा, जनम अकारथ खोय।

जो ईश्वर से विमुख है, उसका जीवन वृथा हे।

सांईं से सांची कहूं, वाज वाज रे ढोल।
पंचन मेरी पत रहे, सखियो में रहे वोल।

हे प्रियतम! मैं तेरे प्रति सच्ची रहू (ढोल इसकी घोपणा करे या साक्षी दे), पचो मे मेरी इज्जत रहे और सखियो मे भी मेरी बात।

सांच को आंच नहीं

सच्चे को आग नही जलाती, अर्थात उसे किसी बात का भय नही होता।

(प्राचीन काल मे किसी व्यक्ति के दोष या निर्दोष होने की परीक्षा उसे अग्नि पर चला कर अथवा जलता हुआ तेल, पानी या लोहा उसके वदन से छुआकर करते थे। कहावत उसी सदर्भ मे कही गई है।)

साच वरावर तप नहीं, झूठ बरावर पाप।
जाके मन मे सांच है, ताके मन में आप।

जिसके मन मे सत्य है, उसके मन मे ईश्वर का वास होता हे।

सांची वात गोपालै भावे

ईश्वर को सत्य प्रिय है।

सांची वात सादुल्ला कहे, सव के मन से उतरा रहे

सच वात किसी को अच्छी नही लगती।

सांचे गुरु का बालका, मरे न मारा जाय

जो सच्चे गुरु का चेला है, वह किसी से डरता नही।

सांचों कोई न मानें, झूठों जग पतयाय

सच वात कोई नही मानता, झूठ सव मान लेते हैं।

सांझ जाये और भोर आये, वह कैसे न छिनाल कहाये

भ्रष्टाचारिणी के लिए क०।

साझी चली साझ से, साथ बसंता पूत।
माधो भी तो जात है, वांध कमर के सूत।

स्पष्ट।

(किस्सा है कि किसी गाव मे माधो नाम का एक गडरिया रहता था। उसकी स्त्री का नाम साझी और लडके का नाम वसता था। जब उस पर बहुत कर्जा हो गया और लोगो ने कडा तकाजा किया, तो उसने कहा—'मैं भागूगा नही और जो जाऊगा तो कहकर जाऊँगा।' एक दिन होली के दिनो मे स्वाग वन कर और उक्त दोहा सबको सुनाकर, वह चपत हो गया।)

बाध कमर के सूत=कमर से फेटा बाध कर।

साटे की सगाई और ब्याजू रुपए का एहसान क्या? (व्य०)

वदले का ब्याह और व्याज पर लिये गये रुपए मे किसी का क्या एहसान?

(साटे की सगाई या ब्याह उसे कहते है, जिसमे किसी के लडके के साथ अपनी लडकी का ब्याह करते समय बदले मे अपने लड़के का ब्याह उसकी या उसके किसी रिश्तेदार की लडकी से कर देते है।)

साटे की सगाई सेघे, तेल की मिठाई सेघे

वदले का ब्याह और तेल की मिठाई, दोनो ही खराव होती है।

सांप और चोर की धाक बडी होती है

दोनो से डर लगता है, (फिर चाहे वे कोई हानि न करे)।

सांप और चोर दबे पर चोट करते हैं

दोनो से डर लगता है, फिर चाहे वे कोई हानि न करे।

इन्हे जव अपने ऊपर आक्रमण का कोई भय होता है, तभी वे आक्रमण करते हैं।

सांप का काटा पानी नहीं मागता

क्योकि उसके काटने से जल्दी मौत आ जाती है।

धूर्त जिसे अपने चक्कर मे फसा लेता है, वह फिर पनपता नही।

सांप का काटा रस्सी से डरता है

एक वार कोई कटु अनुभव हो जाने पर मनुष्य

उस प्रकार के सामान्य मामले मे भी फिर बहुत सावधान रहता है।

साप का काटा सोवे, बिच्छू का काटा रोवे

साप के काटने से आदमी बेहोश हो जाता है और मर भी जाता है; पर बिच्छू का जहर तेज जलन पैदा करता है, जिससे रुलाई आती है।

सांप का बच्चा संपोलिया

साप का बच्चा भी साप जैसा ही जहरीला होता है। जब किसी दुष्ट का लडका भी दुष्टता करे, तब क०।

सांप का सिर भी कभी काम आता है

किसी वस्तु को निकम्मी समझकर फेक नही देना चाहिए।

सांप का सिर ही कुचलते हैं

इसलिए कि फन मे ही जहर होता है और फन के कुचलने से ही वह मरता है।

सांप की तो भाप भी बुरी, (लो० वि०)

उसकी हवा भी बुरी।

दुष्ट से दूर रहना चाहिए।

सांप की-सी केंचली झाड़ दी

लघन के बाद रोगी को जब आराम हो जाता है, तब कहते है कि उसका नया शरीर बन गया।

सांप के मुंह मे छछूंदर, निगले तो अंधा, उगले तो कोढ़ी

दोनो तरह मे मसीबत। कोई काम करो तो भी आफत, न करो तो भी आफत।

(कहा जाता है कि छछूदर अगर सर्प के मुह मे फस जाय और सर्प यदि उसे निगल ले, तो वह अधा हो जाता है और छोड दे तो कोढी।)

सांप निकल गया, लकीर पीटा करो

अवसर पर काम न करके बाद मे करने से कोई लाभ नही होता।

सांप मरे, ना लाठी टूटे

(१) साप तो मर जाए, पर लाठी न टूटे। अपना काम भी बन जाए और कोई हानि भी न हो।

(२) साप भी न मरे और लाठी भी न टूटे, अर्थात दो मनुष्यो के बीच का झगडा आसानी से निपट जाए।

(३) युक्ति पूर्वक काम करने के लिए भी क०।

साप, सतावा, धोकिया, तीनो जीउ निकास।
जब लग पार बसाय तो, बैठ न इनके पास।

साप, शत्रु और ठग, इनसे जहा तक बन सके; दूर ही रहना चाहिए।

जीउ निकास=प्राण लेनेवाले।

सांप सब जगह टेढ़ा चलता है, पर अपने बिल मे सीधा जाता है

जहा जैसा अवसर हो, वहा वैसा ही वर्ताव करना चाहिए।

सांप, सिंह, जित देह पखालें,
ढोर, मनुख हालन ज्यो हालें, (ग्रा०)

सर्प और सिंह जहा होते है, वहा सब जीव भय से कापते रहते है।

हालन=डोलन, भूकप।

सांपो की सभा मे जीभों की लपालप

वहा और होगा क्या ?

जहा बहुत से गप्पी आदमी इकट्ठे हो गये हो और कोरी बकवास हो रही हो, वहा क०।

सांभर जाय, अलोना खाय

इससे बढकर मूर्खता और आलस्य की बात कुछ हो नही सकती।

दे०—तेली खसम किया ।

साभर=प्रसिद्ध झील, जहा के खारे पानी से नमक बनता है।

सांभर मे नोन का टोटा

जिस वस्तु की जहा प्रचुरता है, वहा के लोग उसी के अभाव से कष्ट पाए, तब क०।

सांभर मे पड़ा सो साभर हुआ

साभर झील का पानी इतना खारी है कि उसमे जो वस्तु गिरती है, वह भी गलकर नमक बन जाती है। आशय यह है कि किसी वस्तु (या समाज) के प्रबल प्रभाव से अपने को बचाना बडा कठिन होता है।

सांस सांस मे जीतब घटे, बाधा मूल न होय।
इस जीतब पर फूल कर, मत भूलो हरि कोय।

हरेक सास के साथ जीवन घट रहा है, इसमे कोई

वाधा नही पडती, इस जीवन पर घमड करके ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए।

सांसा भला न सांस का, और वान भला ना कांस का

कास की रस्सी जिस तरह अच्छी नही होती, उसी तरह एक क्षण के लिए भी भय (या चिन्ता) करना अच्छा नही।

सांसा मत कर मूरखा, सिर पर है करतार।
वोही है सव जगत का, सांसा मेटनहार।

जव ईश्वर जैसा सहायक मौजूद है, तव चिंता किस वात की ? वही ससार के सव कष्टो को दूर करनेवाला है।

सासा सांई मेट दे, और न मेटे कोय।
जव हो काम संदेह का, तो नाम उसी का लेय।

ईश्वर ही मन के सशय को दूर करता है। जव कोई दुविधा की वात हो, तव उसी का स्मरण करना चाहिए।

सांसा सुध-बुध सभी घटावे, सासा सुख का खोज मिटावे

सशय (या डर) बुरी चीज है। सशय मे पडे मनुष्य को सुख नही मिलता।

साईसी इल्म दरयाव है

साईसी करने के लिए भी अक्ल चाहिए। सभी पेशो मे कुछ-न-कुछ रहस्य की वात होती हे। मूर्ख से व्यग्य मे क०।

साईसो का काल मुंशियो की बहुतात

साईस कम और मुशी वहुत मिलते है। पढे-लिखो मे वेकारी।

साख गये फिर हाथ न आये

लेन-देन के वारे मे एक वार विश्वास उठ जाने पर फिर नही लौटता।

साख लाख से भली, (व्य०)

लाखो रुपयो की अपेक्षा साख वडी चीज है।

साग मे शोरवा, अंडे मे पानी, क्यो बीबी पठानी, (स्त्रि०)

फूहडपन से काम करना।

साजन आवत हू सुनो, कुछ नीरे कुछ दूर।
पलकन ही से झाड़ लूं उन पावन की धूर। (स्त्रि०)

सुना है प्रियतम आ रहे है, नजदीक ही हैं, या दूर हो, आने पर पलको से उनके पैरो की धूल साफ करूगी। प्रेम की अधिकता।

साजन दुखिया कर गये, और सुख को ले गये साथ।
अव दुख दे न्यारे भये, वहुर न पूछी वात। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

वहुर=फिर।

साजन पीत लगाय के, दूर देस जिन जाव।
वसों हमारी नागरी, हम मागे तुम खाव। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

साजन! यो मत जानियो, तोहि विछरत मोहि चैन।
आले वन की लाकड़ी, सुलगत हूं दिन रैन। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

आले वन की=हरे जगल की।

साजन वह दिन कौन थे, जो सुख से लाये पीत।
अव दुख दे न्यारे भये, कौन गाव की रीत। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

साजन साजन मिल गये, झूठे पड़े वसीठ, (स्त्रि०)

लडाई-झगडे के वाद दो मित्र या सगे-सबधी तो आपस मे मिल जाते है, पर उनका पक्ष लेने-वाले व्यर्थ मे मूर्ख वनते है।

साजन हम तुम एक है, देखत ही के दोय।
मन से मन को तौल ले, दो मन कभी न होय।

स्पष्ट।

मन शब्द के दो अर्थ है

(१) सुहृदय। (२) चालीस सेर की तौल।

साझा जोरू खसम ही का भला

साझा अच्छी चीज नही।

साझा भला न वाप का, ताव भला न ताप का (व्य०)

साझे का काम वाप के साथ भी अच्छा नही।

साझा सधे न वाप का, (व्य०)

साझा वाप के साथ भी नही निभता।

साझा सधे न वाप का, है रासे की खान।
घर न्यारा कर वालमा, वात मेरी तू मान। (स्त्रि०)

स्त्री पति से कह रही है कि वाप के साथ हम लोगो

की नही बन सकती। अच्छा है, हम लोग अलग ही रहे।

साझे का काम, उखाड़े चाम

साझे के काम मे हमेशा झगडा हुआ करता है।

साझे की मां गंगा न पावे, (हिं०)

लडके साझे की मा के अतिम सस्कार की भी परवाह नही करते। जब बाप मरा तो सारी सपत्ति बट गई, केवल मा साझे मे रही। जब वह मरी तो उसे गगा नही मिली।

साझे की सुई सांग में चले

साझे की सुई लट्ठे पर चलती है। अर्थात इस बात का झगडा होने पर कि उसे कौन ले चले, लट्ठे से बाधकर ले जाते है।

साझे की हाडी चौराहे मे फूटे

साझे के काम की बडी दुर्गति होती है।

साझे की होली सब से भली, (हिं०)

मिलजुलकर जो उत्सव मनाया जाता है, वही अच्छा होता है।

(भाव यह है कि उत्सव मनाने का काम ही ऐसा है जो मिलजुलकर किया जा सकता है।)

साठ गाव बकरी चर गई

कोई बडा नुकसान हो जाने पर क०।

(कथा है कि किसी समय कोई एक राजा शिकार से बहुत थका हुआ लौट रहा था और रात हो जाने के कारण किसी गरीब आदमी की झोपडी मे आ टिका। उस गरीब ने राजा की यथाशक्ति आवभगत की। प्रात काल चलते समय उसकी सेवा से सतुष्ट होकर साठ गाव का दान एक पत्ते पर लिखकर उसे दे दिया। दुर्भाग्यवश उसकी एक बकरी ने उस पत्ते को खा डाला। दूसरे दिन वह बेचारा रोता-कलपता राज-दरबार मे पहुचा और उसने वहा चिल्लाकर उक्त वाक्य कहा। राजा ने उसे पहचान लिया। और उसके नाम दूसरा दानपत्र लिख दिया।)

साठ सास, ननद हो सौ; मां की होड़ न इन सूं हो, (स्त्रि०)

मा की बराबरी न तो सास ही कर सकती है और न ननद ही।

(फिर वे चाहे जितनी अच्छी क्यो न हो।)

साठा नाठा

(१) गाली।

(२) ऐसा आदमी जिसके आगे-पीछे कोई न हो।

नाठा=(स० नष्ट) भाग्यहीन पुरुष।

साठा सो पाठा, बीसी सो खीसी

साठ वर्ष का होने पर भी पुरुष जवान रहता है और स्त्री बीस वर्ष मे ही बुड्ढी दिखाई देने लगती है।

साढ़ा टिढ़ गड़बड़ाया, हगन दा वेला आया (पं०)

पेट गडबड हो तो पाखाने हो आना चाहिए।

साढी की साख और पीपल की लाख, (कु०)

स्त्री की फसल और पीपल की लाह ये दोनो अच्छी होती है।

सात तवो से मुह काला करना, (स्त्रि०)

सात घरो मे जाकर बैठना, (सात खसम करना।)

(१) भ्रष्ट स्त्री के लिए क०।

(२) कोई बहुत बुरा निंदनीय काम करनेवाले से भी।

सात पांच की लाकड़ी, एक जने का बोझ

कई एक आदमियो के हाथ की एक-एक लकडी मिलकर एक आदमी के लिए बोझ हो जाती है। सबकी सहायता से जो काम आसानी से हो जाता है, वही एक आदमी के लिए मुश्किल पड जाता है।

सात पांच पकुआ न, एक गूलर, (पू०)

कई पकुओ से एक गूलर अच्छा।

एक लडका अगर सपूत निकले, तो वही बहुत।

(पकुआ एक बहुत बेस्वाद जगली फल होता है।)

सात पाच मिल कीजे काज, हारे जीते न आवे लाज

कोई भी (शुभ) कार्य दस-पाच लोगो के साथ मिलकर अथवा उनसे सलाह लेकर करना चाहिए।

वैसा होने से काम अगर बिगड भी जाए, तो शर्मिन्दगी नही उठानी पडती।

सात मामा का भानजा, न्यौता ही न्यौता फिरे; (हिं०)
उसे फिर कोई भोजन नही कराता, हरेक का यह ख्याल रहता है कि वह किसी दूसरे के यहा खा आया होगा, इसलिए वह भूखा ही रह जाता हे। जिस काम के वहुत से लोग जिम्मेवार होते हैं, वह फिर अधूरा ही पडा रहता हे। सवका काम किसी का भी काम नही समझा जाता।

सात मामा का भानजा, भूखा ही भूखा पुकारे
दे० ऊ०।

सात सो चूहे खाके बिल्ली हज्ज को चली
दे०--सत्तर चूहे ।

सात हाथ हाथी से रहिये, पाच हाथ सिंगहारे से।
बीस हाथ नारी से रहिये, तीस हाथ मतवारे से।
हाथी से सात हाथ, सीग वाले जानवर (वैल आदि) से पाच हाथ, स्त्री से वीस हाथ ओर शरावी से तीस हाथ दूर रहना चाहिए।

साथ के लिए भात छोडा जाता है
(यात्रा मे) किसी का साथ मिल रहा हो, तो उसके लिए भोजन भी छोड देना चाहिए।

साथ कोई आया, न कोई जाये
मनुष्य अकेला जन्म लेकर आता है और मरने पर अकेला ही जाता है।

साथ कौन किसी के जाता है
मरने पर कोई किसी के साथ नही जाता।

साथ जोरू खसम का
किसी का जीवन पर्यन्त सच्चा साथ यदि होता है तो वह पति और पत्नी का ही।

साथ तो हाथ का दिया ही चलता है
मरने पर तो जो दान दिया जाता है वही, साथ जाता है।

साथ सोओ, पेट का दुख, (स्त्रि०)
साथ सोने का दुख यह है कि गर्भ रह जाता है।

साथ सोई बात खोई, (स्त्रि०)
स्पष्ट।

साथ सोन और मुह छिपाना, (स्त्रि०)
जिससे कोई बात छिपी न हो, उससे पर्दा करना।

साथी ऐसा चाहिए, जो सारा साथ निभाय।
साथ न उसका लीजिए, जो दुख बिच काम न आय।
जो दुख मे काम आए, वही सच्चा साथी है।

साथी तो वोही भला, जो धुर दे तुझा पहुचाय।
वाको साथी मत कहो, जो छोड अधम मा जाय।
साथी तो वही सच्चा है जो ठिकाने तक पहुचा दे जो बीच मे ही छोडकर चला जाए, उसे साथी नही समझना चाहिए।

साध खुटाई ना करे, ना मूरख से पीत।
चातुर तो वैरी भला, मूरख भला न मीत।
सज्जन कभी किसी की बुराई नही करते वे मूर्ख से मित्रता भी नही करते। समझदार तो शत्रु अच्छा, मूर्ख मित्र अच्छा नही।

साध चले बैकुठ को, बैठ पालकी माँहि।
रस्ते मे से आये फिर, भाग तमाखू नाँहि।
(१) जो साधु गाजा, चरस आदि वहुत पीते है, उन पर व्यग्य।
(२) तमाखू की तारीफ मे भी क०।

साधन पीई, सतन पीई, पीई कुवर कन्हाई।
जो बिजया की निदा करे, उसे खाय कालिका माई।
भाग पीने वाले कहा करते हैं।

साध भगत की करे जो सेवा, पार तुरत हो वाका खेवा
जो साधु-सतो की सेवा करते है, उनका जल्दी बेडा पार होता है।

साध भगत दें जिन्हा असीस; सुखी रहे वे बिस्वे-बीस, (ग्रा०)
साधु-सत जिन्हे आशीर्वाद देते है, वे पूर्ण सुखी रहते हैं।

साध भगत हो जिस पर छो, भूल भला न उसका हो
साधु जिस पर कुपित हो जाते है, उसका भला नही होता।

साध भये तो क्या हुआ, गत मत जानें नाँहि।
तुलसी पेट के कारने, साध भये जग माँहि।
ऐसे साधु किस काम के, जिन्हे किसी विषय का कोई

ज्ञान ही न हो, और जो केवल पेट के लिए साधु हो।

साध संत की टहल कर, कर लीजे कछु धर्म।
तुलसी फेर न मिलेगा, वार-वार यह जन्म।

स्पष्ट।

साध सत की टहल को, उठो न वैठो जाय।
तुलसी लालच लेन को, दौड़ा-दौड़ा जाय।

साधु सतो की सेवा न करके जो दिनरात लोभ मे पड़े रहते हैं, उन पर क०।

साधु मिलन अरु हरि भजन, दया, धरम, उपकार।
तुलसी या ससार मे, पाच रतन है सार।

साधुओ का सत्सग, ईश्वर का भजन, दया, धर्म और उपकार, ससार मे ये पाच वस्तुए ही मुख्य है।

साधू कहिये सूप को, पाया फेंके हिलोर।
ओछी कहिये चालनी, भूसी राखे बटोर।

सज्जन सूप की तरह होते है जो भूसी को फेककर सार रख लेता है, दुर्जन चलनी की तरह होते हैं जो भूसी वटोरकर सार फेंक देते हैं।

साधू की जिन संगत कीनी, उन्ही कमाई पूरी कीन्हीं

जो साधुओ का सत्सग करते है, उन्ही का जीवन सफल है।

साधू जन रमते भले दाग न लागे कोय

साधु को हमेशा चलते-फिरते रहना चाहिए। उससे चित्त निर्मल रहता है।

साधू तो वोही भला, जो भर साधू का भेस।
पूजा करता रव्व की, हाडे देस विदेस। (पं०)

स्पष्ट।

रव्व=ईश्वर।

हाडे=फिरे।

साधू बच्चे, वहुते झूठे थोडे सच्चे

साधुओ मे झूठे वहुत और सच्चे थोडे ही होते है।

साधू, दुखिया सव संसारा, जो सुखिया सो राम अधारा

जो ईश्वर के भरोसे रहता है, वही इस ससार मे सुखी है।

साधू वही जो साधन करे; क्रोध, लोभ और मोह को हरे

स्पष्ट।

साधू वही सराहिये, जाके हिरदे गाठ।
लड्डू ले भीतर धरे, चरनामृत दे वाट।

साधु तो वही प्रशसा के योग्य है, जो सार की वस्तु को हृदय की गाठ मे वाधकर रक्खे और जो वाटने योग्य है, वह दूसरो को भी वाटे।

साधू वही सराहिय, जो दुखें दुखावें नाहिं।
फल फूलहिं छेडे नहीं, रहे वगीचे माहिं।

स्पष्ट।

साधू सत कर वैठ जा, वही साधु है ठीक।
वाको साधू मत कहो, जो घर-घर मागे भीक।

स्पष्ट।

साधू हो कर कपट जो राखे, वह तो मजा नरक का चाखे

स्पष्ट।

साधू हो कर करे जो चोरी, उसका घर है नरक की मोरी

स्पष्ट।

मोरी=नाबदान।

साधू हो कर करे जो जारी, उसकी हो दो जग मे ख्वारी

साधु होकर जो दुराचार करता है, वह दोनो लोको मे कष्ट पाता है।

जारी=परस्त्रीगमन।

साधू हो कर देवे वुत्ता, उसको जानो पेट का कुत्ता

स्पष्ट।

वुत्ता=धोखा।

साधो को क्या सवाद गुड नहीं बताशे ही सही

किसी साधू ने एक स्त्री से थोडा गुड मागा। स्त्री बोली—महाराज, गुड तो नही है, बताशे है। तव साधु ने उक्त वात कही। ढोगी साधुओ पर व्यग्य।

साधो ने काम साधपन से, कुत्तन ने काम कुत्तापन से

सज्जन सज्जनता से काम लेते है, और दुर्जन दुर्जनता से।

साबन काटे मैल को, जस तन को काटे तेग

स्पष्ट।

तेग=तलवार।

साबन थोडा, पानी गदला, क्या मलमल कर धोता है।
अंदर दाग लगा कुदरत का, जब देखो जब रोता है।
मनुष्य की स्वाभाविक बुराइया आसानी से दूर नही होती।

साबन दिये मैल कटे, गगा नहाये पाप, (हि०)
साबुन से जैसे मैल दूर होता है, वैसे ही गगा-स्नान से पापो का क्षय होता है।

साबास तेरे सऊर को! सुरवा पका लिया।
सक्कर को घोलघाल के, सरबत बना लिया।
जो तालव्य 'श' का प्राय 'स' उच्चारण करते है, उनका मजाक।

साबित कदम को सब जगह ठांव
दृढता से काम लेनेवाले के लिए हर जगह आश्रय है।

साबित नहीं कान, बालियो का अरमान, (स्त्रि०)
किसी वस्तु का उपयोग करने के योग्य न होते हुए भी उसकी इच्छा करना।

साबिर व शाकिर दोनो जन्नती हैं, (मु०)
धैर्यवान और उपकार माननेवाला, ये दोनो पुण्यात्मा होते है।

सामने पानी भरा कलसा आ जाय तो अच्छा सगुन होता है, (लो० वि०)
स्पष्ट।

सारंग ने सारंग गहो, सारंग बोलो आय।
जो सारग सारंग कहे, सारंग मुंह से जाय।
पहेली। सारग शब्द के यहा मोर, सर्प, बादल, मोर की ध्वनि, आदि कई अर्थ है। उनके अनुसार दोहे का अर्थ यह है—एक मोर ने सर्प को पकड लिया। इतने मे बादल गरज उठा। अब अगर मोर बादलो की आवाज सुनकर (हर्ष से) कूकता है, तो सर्प उसके मुह से निकल जाएगा।
(सारग का एक अर्थ मेढक भी है, जिससे दोहे का इस तरह एक दूसरा अर्थ भी लगाया जा सकता है कि एक सर्प ने मेढक को पकड लिया। इतने मे मोर बोल उठा। अब अगर सर्प (घबराकर) अपना मुह खोलता है, तो मेटक भाग जाएगा।)

सार पराई पीर की क्या जाने अनजान ?
अनुभवहीन आदमी दूसरे के कष्ट की गहराई को नही समझ सकता।

सारस की-सी जोडी
दो घनिष्ठ मित्र, या दो सगे भाई, जिनमे आपस मे बहुत प्रेम हो।
(कहते है सारस पक्षी का जोडा एक साथ रहता है और कभी बिछुड़ता नही।)

सारस की-सी जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी
दो बुरे आदमी, जो हमेशा साथ रहे।

सार सरावत ना करें, ब्याह काज के बीच।
इसमे धन को यो समझ, जैसे कंकर कीच।
ब्याह के काम मे कजूसी नही करनी चाहिए। उस तरह के काम मे पैसे को तुच्छ समझे।
(ब्राह्मणो का उपदेश अपने जजमानो को, जिसमे उन्हे खूब दान-दक्षिणा मिले।)

सारा खेल तकदीर का है
सुख या दुख भाग्य से होता है।
(स०—भाग्य फलति सर्वत्र।)

सारा गाव जल गया, काले मेघा पानी दे
गाव जल जाने पर बादलो से पानी मागना। हानि हो जाने पर उपाय सोचना।

सारा घर जल गया जब चूड़ियां पूंछीं, (स्त्रि०)
दे०—घर जल गया, तब . ।

सारा जाता देखिये तो आधा दीजे बांट
सारी सपत्ति नष्ट हो रही हो, तो उसमे से आधी बाटकर यश लूट लेना चाहिए।

सारा धड़ देख नाचे मोरवा, पाव देख लजाय
स्पष्ट। मोर के पैर भद्दे होते है।

सारा नरबदा फिरदी, कुआं देख डरदी, (पं०)
कोई स्त्री अपने प्रेमी से मिलने के लिए नर्मदा तो पार कर गई, पर कुआ देखकर भयभीत हो गई। स्त्री-चरित्र पर क०।

सारा शहर जल गया, बीबी फातमा को खबर ही नहीं, (स्त्रि०)
अडोस-पडोस की कोई खबर न रखना।

रग मे ही मस्त रहना।

सारी उमर काठ मे रहे, चलते वक्त पांव से गए।

कोई आदमी जिंदगी भर लकडी के कुंदे मे पडा रहा, पर जब छोडा गया तो फिसल कर गिरने से उसका पैर टूट गया, जिससे वह फिर चल ही नही सका। भाग्यहीन के लिए क०।

(प्राचीन काल मे अपराधी को जब सजा दी जाती थी, तो उसका पैर लकडी के कुंदे मे फसा दिया जाता था, जिसे 'काठ मे देना' कहते थे।)

सारी उम्र भाड ही झोंका

(१) बेशऊर से व्यग्य मे क०।

(२) बदकिस्मत से भी क०।

सारी कुड़िया मर गईं, नानी से राह चले?

क्या जवान औरते मर गईं, जो नानी के पीछे दौडते हो?

सारी खुदाई एक तरफ, जोरू का भाई एक तरफ

साले की लोग बडी इज्जत करते है, इसीलिए व्यग्य मे क०।

सारी सृष्टि एक ओर, ईश्वर की महिमा एक ओर।

सारी चोट निहाई के सिर

घर के बडे या जिम्मेदार के सिर ही सारी मुसीबत आती है।

निहाई=सोनारो और लोहारो का लोहे का वह चौकोर औजार, जिस पर वे धातु को रखकर हथौडे से कूटते या पीटते हे।

सारी देग मे एक ही चावल देखते हैं, (मु०)

हाडी का एक चावल देखकर ही पता लगा लिया जाता हे कि सब चावल गल गए अथवा नही।

(१) नमूना देखकर ही माल का पता चल जाता है कि वह कसा होगा।

(२) एक छोटी-सी बात से मन का सारा भेद मालूम हो जाता है।

सारी रात कहानी सुनी, सुबह को पूछे : 'जुलेखा औरत थी या मर्द', (मु०)

ध्यान से किसी की बात न सुनना या सुनकर भूल जाना अथवा समझाने से न समझना।

(जुलेखा फारस की एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा की नायिका है।)

सारी रात मिमियानी और एक ही बच्चा ब्यानी, (स्त्रि०)

चिल्ल-पों बहुत, पर काम कुछ नही।

सारी रात रोई और एक ही मरा

बहुत परिश्रम का भी कुछ फल न निकलना।

सारी रात सोये अब सुबह को भी न जागें

स्पष्ट।

सारी रामायन सुन के पूछा : 'सीता किसकी जोरू थी?' (हिं०)

स्पष्ट। दे०—सारी रात कहानी ।

सारे डील मे जबान ही हलाल रे

सारे शरीर मे जीभ ही पवित्र है।

(इसलिए हमे झूठ नही बोलना चाहिए।)

हलाल=धर्मसगत। जायज।

सारे दिन ऊनी ऊनी, रात को चरखा पूनी

बे-समय का काम करना।

ऊनी ऊनी=उनींदी, आलस्य मे भरी हुई।

(चर्खा दिन मे ही कातते हे, रात मे कातना अशुभ माना जाता हे।)

सारे दिन पीसा पीसा, चपनी भर भी न उठाया, (स्त्रि०)

परिश्रम का कोई विशेष फल नही।

निकम्मापन।

सारे घड़ की सुई निकाले, सो कोई नहीं, आंख की सुई निकाले सो सब कोई, (स्त्रि०)

दे०—आख की सुइया. ।

सारे नगर मे दो ही, धुनक्कर या भुनक्कर

कोई जब ओछे लोगो मे ही बैठे, तब क०। जाति-विद्वेष टपकता है।

धुनक्कर=धुनाई करनेवाला।

भुनक्कर=भडभूजा।

सारे शहर मे ऊंट बदनाम

बदनाम आदमी का हर काम मे नाम लिया जाता है।

साली आधी निहाली, सलहज पूरी जोय, (मु०)
साली (पत्नी की बहिन) और सलहज (साले की स्त्री) इनसे हँसी-दिल्लगी का रिवाज है, इसीलिए क०। निहाली=निहाल करनेवाली, आनद देनेवाली।

साली निहाली, चहिए ओढ़ी, चहिये बिछा ली
दे० ऊ०।

साव का साथ भला, और रात का घात भला
मित्रता धनी की अच्छी होती है और दावपेंच का या भेद का काम रात मे अच्छा होता है।

सावन को न सीत भली, जातक को न पीत भली
सावन के महीने मे दही खाना और छोटे लडके से प्रेम करना अच्छा नही।

सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझे
जो सावन मे अधा हो जाता है, उसे हरे रग की ही स्मृति रह जाती है।
हर आदमी दूसरो का हाल अपना जैसा ही समझता है।
व्यग्य मे उन लोगो के लिए, जो अनुचित उपाय से बहुत-सा पैसा पैदा कर लेते हैं और यह समझते है कि दूसरो के पास भी उसी तरह का मुफ्त का पैसा होगा।

सावन के रपटे और हाकिम के डपटे का कुछ डर नहीं
सावन मे वर्षा के कारण फिसलन हो जाती है और लोग अक्सर फिसलकर गिर पडते है। इससे सावन मे फिसलकर गिरने मे कोई लज्जा की बात न होनी चाहिए। इसी तरह हाकिम के डपटने का भी बुरा नही मानना चाहिए, क्योकि हाकिम सबको डपटते रहते हैं।

सावन कैसा साँथरा ? पूह मास कैसा पाँखडा
सावन के महीने मे चटाई और पूस के महीने मे पखा बेकार है।
(जिन लोगो के कच्चे घर होते है, वे वर्षा ऋतु मे चारपाई पर ही लेटते है, नीचे नही लेटते।)

सावन खीर जो खाये सकारे, मिरग ढाल कुर चालें मारे, (ग्रा०)
सावन मे जो (नित्य) सुबह खीर खाता है, वह हरिन की तरह उछलता फिरता है। (ख़ूब तन्दुरुस्त रहता है।)

सावन घोड़ी, भादों गाय, माघ मास मे भैंस बियाय; जी से जाय, या खसमैं खाय
लोगो का विश्वास है कि अगर सावन मे घोडी, भादो मे गाय और माघ के महीने मे भैंस बियावे तो वह या तो स्वय मर जाती है या उसके मालिक का अनिष्ट होता है।

सावन मास चले पुरवैया, खेले पूत बला ले मैया, (कृ०)
सावन मे पुरवैया चलने से सूखा पडता है, इसलिए किसान का लडका बेकार रहता है और उसकी मा (ईश्वर से) कुशल मनाती है, क्योकि अन्न पैदा नही होता।
(पुरवाई क्वार-कार्तिक मे ही चलती है। सावन मे नही चलती।)

सावन मास बहे पुरवैया, बेचे बरदा कीनो गैया, (कृ०)
सावन मे पुरवैया चलने से वर्षा नही होती, इसलिए किसान को चाहिए कि वह बैल बेचकर गाय ख़रीद ले, जिसमे उसकी गुज़र हो सके।

सावन में करेला फूला, नानी देख नवासा भूला
कोरी तुकबदी। नानी नवासे को बहुत प्यार करती है, इसीलिए क०।

सावन में हुए सियार, भादो मे आई बाढ़, 'ऐसी बाढ़ कभी नहीं देखी थी'
जब कोई छोटी उम्र का आदमी बडे-बूढो जैसी बाते करे या दून की हाके तब क०। महीने भर की उम्र मे सियार दूसरी बाढ कहा से देखेगा ?

सावन शुक्ला सप्तमी, छिपके ऊगे भान।
कहे घाघ सुन घाघनी, बरखा देव उठान।
श्रावण शुक्ला सप्तमी को यदि बादल फटकर सूर्य निकले अर्थात रात मे बादल रहे, तो देवोत्थान तक वर्षा होती है।

सावन साग, न भादों दही; क्वार मीन न कातिक मही
सावन मे हरा साग, भादो मे दही, क्वार मे मछली और कार्तिक मे मठा नही खाना चाहिए।

सावन सिवा उपास

सावन का महीना शिवजी के उपवास का है। (हिन्दुओ मे सावन का महीना शिव के व्रत के लिए पुनीत मानते है। विशेषकर सोमवार को व्रत रखते है।)

सावन सोवे सांथरे, माह सुरेंरी खाट।
आपहि वह मर जायेंगे, जो जेठ चलेंगे वाट।

सावन मे सील के कारण नीचे चटाई पर न सोवे, माघ मे सरदी के कारण सुरेंरी (खाली) चारपाई पर न सोवे, और जेठ मे लू के कारण रास्ता न चले।

सावन हरे न भादो सूखे

सदा एक-सी हालत मे।

सास उठलिया, वहू छिनलिया, ससुरा भाड़ झुकावे।
फिर भी दूल्हा सास-वहू को, सीता सती वतावे।

सास पराए पुरुष के साथ भाग गई है, वहू छिनाल है, ससुर भाड झोकता है, फिर भी दूल्हा अपनी मा और पत्नी को सीता जैसी सती बताता है। अपने घर के लोगो की कोई बुराई नही करना चाहता।

सास का ओढ़ना, वहू का विछौना, (स्त्रि०)

सास जो कपडे ओढती है, वहू उन्हे विछाती है। अर्थात वहू अपने को सास से वडा मानती है। (जो होना नही चाहिए।)

सास की चेरी, सब की जिठेरी, (स्त्रि०)

सास की नौकरानी सबकी जिठानी। सब वहुए उससे डरती है।

सास की रीसी पतोह के माथे, (स्त्रि०)

सास का गुस्सा वहू पर उतरता है।

सास के आगे वहू को क्या वड़ाई ?

सास के आगे वहू को (किसी काम के लिए) कैसे शावाशी दी जा सकती है ?

सास केओढ़ना, पतोह के विछौना, (पू०, स्त्रि०)

दे०—सास का ओढना···।

सास, कोठे पर की घास, (स्त्रि०)

कोई स्त्री सास के प्रति अवज्ञापूर्वक कह रही है।

सास कोठे, वहू चबूतरे, (स्त्रि०)

सास कोई काम छिपकर करती है, तो वहू खुल्लम-खुल्ला। वहू सास से वढकर है।

सास को नहीं पायंचे, वहू चाहे तंवू और सरांचे, (स्त्रि०)

सास के पास तो घाघरा नही है, और वहू तवू और परदा चाहती है।
(इतना दिमाग उसका।)

सास गई गाव, वहू कहे 'मै क्या-क्या खाऊ' ? (स्त्रि०)

सास के जाने पर वहू की मौज रहती है। मनचाहे सो करती है।

सास झाके टुईं-टुईं, वहू चली वैकुठ, (स्त्रि०)

सास चुपचाप खडी देख रही है और वहू तीर्थयात्रा को चल दी है। उस वहू के लिए ताने मे कहा गया है, जो सास की जरा भी परवाह नही करती, और जहा भी जी चाहता है, वहा सैर-सपाटे के लिए चली जाती है।

सासड़ कारन वैद वुलाया, सौक कहे तेरा पगड़ी आया, (स्त्रि०)

सास के लिए वैद्य वुलाया, सौतिन कहती है, तेरा यार आया।
(सौतियाडाह ऐसा ही होता है।)

सासड़ सांसा मत करै, देख थुड़ेरा काम।
थोड़े को वहुता करे, देन लगे जव राम। (स्त्रि०)

कोई स्त्री सास से कह रही है कि रोजगार मदा है, तू इसकी चिंता मत कर। भगवान को जब देना होगा, तो (इसी) थोडे मे वहुत देंगे।

सास न नदी, आप ही आनंदी, (स्त्रि०)

घर मे न सास है न ननद। अकेली मौज मे है। (सास की तरह ननद भी वहू के लिए एक विपत्ति होती है।)

सास वहू की हुई लड़ाई, करै पड़ौसिन हाथापाई, (स्त्रि०)

सास और वहू की लडाई होने पर पडोस की औरते वीच मे आ कूदती है।
(झगडे मे मजा लेती है।)

सास वहू की हुई लडाई, सिर को फोड़ मरी हमसाई (स्त्रि०)
सास वहू की लडाई मे पडोसिन का सिर फूटता है। वह जिसका भी पक्ष लेती है, वही उससे अप्रसन्न हो जाता है। दूसरे के झगडे मे नही पडना चाहिए।

सास बिन कैसी ससराल ? लाभ बिन कैसा माल ? (स्त्रि०)
सास के विना (जमाई के लिए) ससुराल व्यर्थ है और लाभ के विना रोज़गार।

सास मर गई अपनी अखाह तूंवे में छोड़ गई, (स्त्रि०)
मर जाने पर भी सास की आत्मा वहू को कष्ट देती है।
(कथा है कि कोई वूढी औरत अपनी वहू को वहुत तग किया करती थी । जव वह मरने लगी तो वहू से वोली कि देखो, मरने के वाद मै अपनी आत्मा घर मे रखे तूवे मे वन्द कर जाऊगी । तुम उस तूवे को ही सास समझना और हर काम उससे पूछकर किया करना। उसके मर जाने पर वहू ऐसा ही करने लगी। रोज सुवह तूवे के पास जाती और उससे सलाह लेती। एक दिन जव वह तूवे के पास खडी होकर कुछ पूछ रही थी, तव उसकी पडोसिन सयोग से वहा आ गई। उसने जो यह तमाशा देखा, तो तूवे को लेकर जमीन पर पटक चकनाचूर कर दिया। उस दिन के वाद से वहू फिर आनदपूर्वक रहने लगी।)

सास मुई, बहू बेटा जाया; वाका पल्टा यामे आया, (स्त्रि०)
हिसाव-किताव ज्यो-का त्यो ।
दे०—वाप मरा घर वेटा . . ।

'सास मोरी मरे, ससुर मोरा जीये', नई बहुरिया के राज भये, (स्त्रि०)
सास के मर जाने पर वहू स्वतत्रतापूर्वक दिन व्यतीत करती है।

सासरा, सुख वासरा, (स्त्रि०)
(१) लडकी का ससुराल मे रहना ही अच्छा। ससुराल मे रहने से सुख मिलता है।
(२) जो लोग ससुराल मे रहना पसद करते है, उन पर व्यग्य।

सास-री सास, तुझे पेट का दुख, पहले चूल्हा ही याद आया, (स्त्रि०)
वहू का सास से कथन। स्पष्ट।

सास-रे तेरे साग, माये तेरे भाग; बाप के तेरे राज, तू बैठी-बैठी झाक, (स्त्रि०)
सास का कहना वहू के प्रति जो हमेशा मायके की वडाई किया करती है—ससुराल मे तुझे सव तरह का सुख हे, तू भाग्यशालिनी है, तेरे वाप के घर अगर राज्य है, तो तू बैठी-बैठी ताका कर (उससे तुझे क्या लाभ ?) ।

सास लुक्का लुक्का, बहू बुक्का बुक्का, (स्त्रि०)
सास जो काम छिपकर करती है, वहू उसे खुलकर करती है।

सास से तोड, बहू से नाता, (स्त्रि०)
(१) एक मूर्खता का काम, क्योकि घर मे तो सास का ही राज्य रहता है, वहू का नही। जिसकी चलती हो, उसी से प्रेम रखना चाहिए।
(२) ऐसे व्यक्ति के लिए भी कह सकते है, जो आपस मे तोड-फोड कराए।

सास से बैर, पड़ौसन से नाता, (स्त्रि०)
एक अनुचित काम। वहू को सास से प्रेम रखना चाहिए, न कि पडोसिन से।

सासू छोटी, बहू बड़ी
जवान लडका और वहू के रहते हुए जव कोई मनुष्य एक छोटी लडकी से दूसरी शादी करता है, तव क०।

साह के सवाये, कमवख्त के दूने, (व्य०)
समझदार व्यापारी कम मुनाफे पर ही माल वेचता है। अथवा कम व्याज पर रुपया उधार देता है, पर नासमझ दूने करता है (जिससे उसका व्यापार चौपट हो जाता है) ।

साहिव मेरा वानिया, सहज करे व्यापार।
बिन डंडी विन पालड़े, तोले जग संसार।
ईश्वर के लिए कहा गया है कि वह सच्चा वनिया है, विना तराजू के ही वह (न्याय की तराज़ू पर)

सारे ससार को तोला करता है।

साहूकार को किसान, वालक को मसान, (व्य०)

साहूकार के पीछे किसान (रुपया उधार लेने के लिए) उसी तरह लगा रहता है, जैसे वालक के पीछे श्मशान का भूत।

साहू वट्टे, वह भी साहू, (व्य०)

जो घाटे से सौदा वेच देता हो, वह भी साहूकार है। वहुत दिनो तक व्यर्थ माल को रखे रहने से व्याज का नुकसान होता है, इसलिए उसे निकाल देना अच्छा।

साहू वहे न जायें, गो से जायें

दूकानदार जो भी काम करता है, वह अपने मतलव से।

(उस पर एक चुटकुला है कि किसी समय एक वनिया नदी मे वहा जा रहा था। वह तैरना विल्कुल नही जानता था, इसलिए सहायता के लिए चिल्ला उठा। एक मसखरे ने, जो नदी किनारे खडा था, उसकी चिल्लाहट सुनकर हँसी मे जवाव दिया—साहू जी, वहे नही जा रहे है, वल्कि अपने मतलव से कही जा रहे है।)

सिंह चढ़ी देवी मिलें, गरुड़ चढ़े भगवान।
वैल चढ़े शिव जी मिलें, अड़े सवारें काम।

स्पष्ट। आशीर्वाद।

सिंह पराये देश मे, नित मारे नित खाय

चोर-डकैत दूर देश मे जाकर ही उपद्रव मचाते है।

सिंह सांप से हेत कर, भूतों के गल लाग।
रांगड़ उठे नमाज को, कोस पचासे भाग।

सिंह, साप, और भूतो से भले ही प्रेम करे, पर रागड से वचना चाहिए।

(रागड एक हलकी श्रेणी के मुसलमान है, जो वडे उद्धत माने जाते है। उन पर ही व्यग्य है।)

सिंह से सरवर करे सियार

सियार सिह का मुकावला करे।

एक अनहोनी वात।

सिखाये पूत दरबार नहीं जाते

जिस लडके को सिखाना पडे, उसे दरवार नही जाना चाहिए।

(झूठे सिखे-पढाये गवाहो से मुकदमा नही जीता जाता।)

सिड़ी है तो क्या? पर वात ठिकाने की कहता है

मूर्ख भी कभी-कभी समझदारी की वात करता है।

सिपहगरी के छत्तीस फन हैं

सिपाही के काम मे भी उद्द कलाओ की जरूरत पडती है, अर्थात वह भी एक मुश्किल काम है।

सिपाही का माल, झाट का वाल

सिपाही के पास कुछ नही होता। वह फक्कड होता है।

सिपाही की जोरू हमेशा राड

क्योकि वह हमेशा वाहर रहता है और लडाई मे कभी-भी मारा जा सकता है।

सिपाही की रोटी सिर वेचे की

उसके सदा मरने का खतरा रहता है।

सिपाही को ढाल रखने की जगह चाहिए

फिर तो वह अपने लायक जगह स्वय वना लेता है। अथवा उसका कोई घर नही होता। जहा लेट रहता है, वही उसका घर है।

सिफत भी हो, मुफत भी हो, बड़े पने का भी हो

जो कम दाम देकर वढिया चीज खरीदता है उससे व्यग्य मे क०।

सिफत=खूवी, विशेषता।

वडे पने का=चौडाई मे वडा (प्राय धोती जोडे के लिए कहते है।)

सिफले की मौत माघ

माघ मे गरीव की मौत आती है, क्योकि जाडे के कपडे वनवाने के लिए उसके पास पैसे नही होते।

सिफारिश बगैर रोजगार नहीं मिलता

स्पष्ट।

रोजगार=नौकरी।

सियार औरो को शगुन दे, आप कुत्तों से डरे

सियार दूसरो के लिए तो शुभ होता है, पर स्वय कुत्तो से डरता है। अर्थात अपना वचाव नही कर सकता।

(यात्रा मे सियार का मिलना अच्छा माना जाता है।)

सियार के मंत्री कौवा, छोड़ दहले हाड़ चाम, खाइले मसवा, (भो०)

मक्खन तो स्वय रख लेना और छाछ दूसरो के लिए छोड देना ।

(कहा जाता है कि अकवर के मत्री टोडरमल ने जव कागडा घाटी पर कब्जा किया, तव उन्होने वढिया उपजाऊ जमीन तो वादशाह के लिए रख छोडी और खराव वहा के जमीदारो को दे दी। तव टोडरमल ने उक्त वात कही कि मैंने मास तो ले लिया है और हड्डी तथा चमडाँ जागीरदारो के लिए छोड दिया है।)

सियालकोटी, हराम वोटी

पजाव के सियालकोट के लोगो को व्यग्य मे क०।

सियाह करो या सफेद

(१) कुछ तो करो। अथवा

(२) जो चाहे सो करो, सव तुम पर ही निर्भर है।

सियाही वालों की गई, दिल की आरजू न गई

वृढे लपट के लिए क०।

आरजू=इच्छाए ।

सिर का नहाया पाक

सवसे ऊचा हाकिम जो फैसला सुना दे, वह ठीक ही होता है ।

(मुसलमान प्राय नहाने के समय सिर भिगो लेते हैं, और उसे पर्याप्त मानते है।)

सिर का पसीना एडी को आना

(१) वहुत अधिक परिश्रम का काम करना।

(२) कठिन परिस्थिति से सामना पडना ।

सिर का पांव और पांव का सिर

उल्टी-सीधी वात करना ।

सिर का वाल घर की खेती है

कटवाने पर फिर वढ जाते हैं।

सिर गाड़ी, पैर पहिया करे तो रोटी मिलती है

चलने-फिरने (उद्यम करने) से ही पैसा मिलता है।

सिर गाला, मुंह वाला

वृढे होकर भी लडको जैसी वात करना ।

गाला=रुई के गाले की तरह (सफेद) ।

वाला=वच्चो जैसा।

सिर गैल सिरवाहा है

जैसा सिर वैसी पगडी चाहिए ।

नेता या अगुआ के विना काम नही चलता, ऐसा भाव प्रकट करने को क० ।

सिर झाड़, मुंह पहाड़

वहुत भद्दी शक्ल का आदमी ।

सिर तो नहीं खुजलाया है

मार खाने की इच्छा तो नही है ?

सिर तो नहीं फिरा है ?

जो व्यर्थ की वात वकते हो ।

सिर दिया ओखली में तो मूसलो से क्या डरना ?

जव किसी खतरनाक काम को करने का वीडा ही उठाया, तो फिर उसकी कठिनाइयो से नही डरना चाहिए।

सिर नकद, नौकरी उधार

काम तो तुरत करा लेना, पर मजदूरी के लिए टरकाना।

सिर नहीं, या सिरोही नहीं

मरने-मारने पर उतारू हो जाना ।

(राजपूताने के सिरोही नामक स्थान की वनी तलवार किसी ज़माने मे वहुत प्रसिद्ध रही है। उसी मे यह शव्द तलवार के लिए रूढ हो गया है।)

सिरोही=तलवार ।

सिर पर आरे चल गये, तौ भी 'मदार ही मदार; (स्त्रि०)

कठिन सकट मे पडकर भी 'मदार' ही 'मदार' पुकारना, अर्थात केवल ईश्वर का ही नाम लेना, वचने का कोई उपाय न सोचना। घोर आलसी और अकर्मण्य के लिए क० ।

सिर पर जूती, हाथ में रोटी, (स्त्रि०)

वहुत अपमान सह कर भी रोटी कमाना ।

सिर वड़ा सरदारों का, पैर वड़ा पलदारों का

सरदारो का सिर वडा होता है और मज़दूरो (या गवारो) का पैर वडा ।

पलदार= पल्लेदार, वोझ ढोनेवाला ।

सिर मुंडा के क्या घुटना मुंडाओगे ?

जो कुछ कर चुके हो, उससे अधिक अब और क्या करोगे ?

सिर मुंडा के फजीहत हुए

अपना वना काम छोडकर दूसरा काम करना और उसमे भी सफल न होना ।

दे०—मूड मुडाये ।

सिर मुंड़ाते ही ओले पडे

(१) काम करते ही मुसीवत आई ।

(२) शुरू मे ही काम खराब हो गया ।

सिर मे वाल नहीं, भाल से लडाई, (स्त्रि०)

कमजोर होते हुए भी अपने से वलवान से झगडा करना ।

(वालो के न होने के कारण भालू खोपडी ही नोच डालेगा। वैसे कुछ रक्षा भी हो जाती।)

सिर सलामत, तो पगडी पचास

सिर रहेगा तो पगडी वहुत मिल जाएगी; जैसे मूल रहेगा तो व्याज वहुत आ जाएगा, लडका रहेगा तो वहुए वहुत आ जाएगी, पेड रहेगा तो फल भी लग जाएगे, इत्यादि ।

सिर सहलावें, भेजा खावें

ऊपर से मीठी-मीठी वाते करे, भीतर से जड काटे । धूर्त या कपटी मित्र ।

सिर सिजदे से, मन वड़ियो मे

वगुला भगत ।

सिजदा=ईश्वर की प्रार्थना ।

सिर सिर अक्कल, गुर गुर विद्या

सवकी अलग-अलग वुद्धि, और सवकी सिखावन भी अलग-अलग होती है ।

सिर से उतरे वाल, गू में जाओ या मूत में

जिस वस्तु या मनुष्य को त्याग ही दिया, उससे फिर क्या मतलव ?

सिर से कफन वांधे फिरते है

जो हथेली पर जान लिये फिरे, या मरने-मारने पर उतारू हो, उसे क० ।

सिर से खाया भारी

(१) असगत काम। अथवा

(२) कोई वेडौल चीज ।

खाया=अडकोश।

सिरे ही को भेज कानी

शुरू मे ही गलती या विघ्न।

सिवैंयों विन ईद कैसी ? (स्त्रि०)

पकवान के विना उत्सव किस काम का ?

(मुसलमानो के यहा ईद मे मीठी सिवैंया विशे[ष] रूप से वनती हैं ।)

सिसकते गये, विलखते गये

वे-मन से काम करना ।

सिहबदी के प्यादे का आगा पीछा वरावर

जिस आदमी को तीन आने रोज़ मिलते हो, उसक[ा] भूत, भविष्य दोनो वरावर है ।

सिहवदी=सरकारी लगान वसूल करनेवाल[ा] कर्मचारी । अमीन ।

प्यादा=चपरासी।

सींख सड़प्पे तो लाला जी के साथ गये, अब तो देख[ो] और खाओ

कजूसो पर क० । जब किसी कृपण का लडक[ा] उससे भी वढकर कृपण हो, तव व्यग्य मे क० ।

(कथा है कि किसी कजूस ने अपने घर मे यह निय[म] वना रखा था कि घी के वर्तन मे सीक डुवाने [से] जितना घी निकले, उतना ही हर आदमी ले लिय[ा] करे । जब वह मर गया, तो उसका लडका उससे भ[ी] वढकर निकला। उसने घी के वर्तन का मुह वद करक[े] उस पर पक्की डाट लगा दी और घरवालो [से] उक्त वात कही कि देखो, लाला जी के जमाने [मे] तुम लोगो ने सीक डुवो-डुवो कर खूव घी खाया[,] अव तो देखो और खाओ । इसी प्रकार एक वगाल[ी] कजूस की भी कथा है कि वह नदी किनारे वैठक[र] भात खाया करता था और प्रत्येक कौर के सा[थ] नदी की ओर हाथ वढाकर कहता था—'[ई] मशली, ई भात' । इस प्रकार वह मछली खा[ने] का आनद उठा लिया करता था।)

सींग कटा बछड़ों में मिलना

(१) लडकपन का काम करना।

(२) बडी उम्र के होते हुए भी लडको मे उठना-बैठना।

सींग की के हूक ? और अरंड का के रूख

सीग का आकडा क्या और अरड का वृक्ष क्या ? दोनो हं। बेकार।

हूक=अग्रेजी 'हुक'।

सींचो हम हित जानके, इन न करी कछु कान।
छाती पै पैंड़ा किया, ओछे की पहचान।

जल काठ से कहता हे कि वृक्ष के रूप मे इसे मैंने सींचा और जब यह बडा और मजबूत हुआ, तो यह मेरी ही छाती पर नाव (या जहाज) बनकर चलने लगा। कृतघ्नता।

सीख उसी को देनी आछी, जो तेरी शिक्षा मानें सांची

सीख तो उसी को देनी चाहिए, जो उसे सुने और माने।

सीख तो वाको दीजिये, जाको सीख सुहाय।
बंदर को क्या दीजिये, बये का घर ही जाय।

दे० ऊ०।

(कथा हे कि एक बया पक्षी ने वर्षा ऋतु मे एक बदर को पानी मे भीगते देखकर कहा—
मानस के-से हाथ पाव, मानस की-सी काया,
चार महीने बरखा बीती, छप्पर क्यो नही छाया।
जब बदर ने कहा— मुझे तो घर बनाना आता ही नही। तो बये ने उसे अपने जैसा घोसला बनाना सिखा दिया। इसका फल यह हुआ कि बदर ने अपना घर बनाने के लिए बया का घोसला ही तोड डाला, और अपना तो वह बना ही नही सका। बदर और बया पक्षी की यह कथा जातक मे है और पचतत्र मे भी।)

सीख देत औरों को पाड़ा; आप भरें पापो का भांड़ा

स्वयं न करना, दूसरो को सीख देना।

(स०—परोपदेशे पाडित्य।)

सीखना न सिखाना, नाहक सिर फोड़ना

ऐसे लडके से क०, जो कुछ पढे-लिखे नहीं।

(सीखना-सिखाना का अर्थ केवल सीखना ही है। रोटी-ओटी की तरह ही उसका प्रयोग हुआ है।)

सीखी सीख पड़ौसन को, घर मे सीख जिठानी को, (स्त्रि०)

सीखी हुई सीख वह पडोसन को देती है, और घर मे जिठानी को भी।

दूसरो के पास से सीखी हुई विद्या ओरो को सिखाना।

सीखेगा नाऊ का, कटेगा बटाऊ का

दे० —करेगा बटाऊ का।

सीखो बेटा सोई, जामें हंड़िया खुदबुद होई

ऐसी विद्या पढो, जिसमे खाने को मिलता रहे। स्कूल मे पढनेवाले लडके से पिता का कहना।

सीढ़ी-सीढी छत पर चढ़ते हैं

क्रम-क्रम से ही काम होता है।

सीत दूध जिसने दे साईं, वाको तो बैकुंठ यहां ईं

ईश्वर जिसे दूध-भात खाने दे, उसे यही वैकुंठ है। (सीत का अर्थ मठा भी होता है।)

सीतल रख संसार को, जो तू भी सीतल होय।
तनक सी आग रे बालके, फूक देत जग कोय।

सब को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसमे तुम भी प्रसन्न रहो, थोडी-सी भी आग ससार को भस्म कर सकती है।

सीतला का खाजा

ऐसा मनुष्य जिसके मुह मे शीतला के दाग बहुत हो।

सीतला का थड़ा

दे० ऊ०।

थडा=स्थान।

सीतला का पुजापा

(१) निकम्मी वस्तु।

(२) बहुत बदशक्ल आदमी।

(शीतला चेचक की देवी हैं और उन्हे पुजापे मे अत्यत साधारण वस्तुए ही चढाई जाती हैं।)

सीधा घर खुदा का

अदालत से अभिप्राय है। किसी को वहा जाने से रोक-टोक नहीं।

सीधी उंगलियो घी नहीं निकलता, (व्य०)
कमाई के विना काम नही चलता।
(जाडे के दिनो मे जब घी जम जाता है, तब उगलिया टेढी करके ही निकालना पडता है।)

सीधी उंगलियो घी निकले तो टेढी क्यो कीजे ?
अगर आसानी से मामला तै हो जाए, तो कोई और (सख्त) कार्यवाही क्यो की जाए?

सीधी राह छोड के टेढ़ी राह मत चलो
स्पष्ट।

सीपी से समुद्र खाली करना
मूर्खतापूर्ण कार्य।

सीमाब की खासियत रखती है
पारे की तरह (चचल) है।

सीलवंत गुन न तजे, औगुन तजे न गुलाम।
हरदी जरदी ना तजे, खटरस तजे न आम।
सज्जन अपनी सज्जनता नही छोडता, दुष्ट भी अपनी दुष्टता नही त्यागता, उसी तरह जैसे कि हल्दी अपना पीलापन नही छोडती और आम खटाई नही छोडता।

सीस काटे, बालो की रक्षा
सिर काट कर बालो की रक्षा, असभव है।

सुई, कतरनी, गज, उगलेटा, रखे सो दर्जी का बेटा
आदमी के पेशे की पहचान उसके साज-सामान से हो जाती है।
उगलेटा=लोहे या पीतल की वह टोपी, जिसे दर्जी सीते समय एक उगली मे पहन लेते हैं, अगुश्ताना।

सुई कहे 'मैं छेदूं छेदूं', पहले छेद कराये
सुई कपडे को छेदना चाहती है, पर वह स्वय छिदी हुई होती है।
मनुष्य दूसरो के दोष देखना चाहता है, पर अपने दोष नही देखता।

सुई का भाला हो गया
तिल का ताड हो गया। साधारण बात बढकर बडी हो गई।

सुई के नाके से सब को निकाला है
(१) जो दूसरो के प्रति उचित सम्मान न दिखाए और सबके साथ एक-सा नासमझी का वर्ताव करे, उसके लिए क०।
(२) होशियार आदमी के लिए भी क०, जो सबको एक रास्ते पर चलाए।
नाका=छेद।

सुई चोर सो, वज्जुर चोर
चोरी हर हालत मे चोरी ही कहलाएगी, चाहे थोडी करे चाहे बहुत।
वज्जुर=वज्र, फौलाद, यहा लोहे के टुकडे से मतलब है।

सुई जहां न जाय, वहा सूआ घुसेड़ते हैं
जो काम हो नही सकता, उसे जबर्दस्ती करना।
सूआ=बडी मोटी सुई। सूजा।

सुख कारन सागर तजो, आन विधायों अंग।
मोती नर यू कंपिया, तू हँसी और के संग।
सुख के लिए मोती ने समुद्र (अर्थात अपना घर) छोडा और अपना शरीर छिदवाया, अर्थात कष्ट उठाया, पर जब स्त्री पर-पुरुष के साथ हँसी, तो वह काप उठा।
(उक्त दोहा मोती और पुरुष दोनो पर घटित होता है, जैसा स्पष्ट है। स्त्री के हँसने से बेसर का मोती कापता (अर्थात हिलता) है। और पर-पुरुष के साथ उसे हँसते देख कर मोती रूपी नर (मनुष्य) काप उठा।)

सुख के बड़े जोधा रखवाले है
सुख वीर पुरुष ही भोग सकते है। साधारण मनुष्यो को मुश्किल से मिलता है।

सुख के सब साथी हैं
सुख मे सभी मित्र बनते है, दुख मे कोई नही पूछता।

सुख दुख मे जो रहे सहाई; सज्जन वाको बोलें भाई
जो सुख दुख मे सहायक हो, वही सज्जन है।

सुखन उन्हो पर डारिये जो हँस हँस राखे मान (स्त्रि०)
उन्ही से कुछ मागो, जो तुम्हारी बात रखे।
सुखन (सखुन)=(१) वचन। (२) कौल, वादा। (३) कविता। (४) सूक्ति।

सुखन-गोई मुश्किल नहीं, सुखन फहमी मुश्किल है
बढ़िया बात कहना मुश्किल नही, पर दूसरो की बढ़िया बात समझना मुश्किल हे।
सुखन=दे० ऊ०।

सुख बढ़े मुटापा चढ़े
सुख मिलने से ही आदमी मोटा होता है।

सुख मानो तो सुख है, दुख मानो तो दुक्ख।
सच्चा सुखिया वह है, जो सुख माने ना दुक्ख।
स्पष्ट।

सुख मे आये करमचंद, लगे मुड़ावन गज
कोई मनुष्य बहुत सुख मे तो आया और अपनी गजी खोपडी मुडवाने लगा। बैठे-ठाले मुसीबत मोल ले लेना। (गजी खोपडी मुडवाना एक महा-मूर्खता का काम है, उस से तो खून निकल आएगा।)

सुख में सांई को भजो, जो दुख मूल न होय।
साध कहे रे बालके, सीख मान जस लेय।
सुख मे ईश्वर का भजन करने से फिर दुख बिल्कुल नही होता।

सुख संपत का सब कोई है
दे०—सुख के सब . ।

सुख से दुख भला जो थोड़े दिन का होय
अनेक नए अनुभव होते हैं।

सुख सोवै कुम्हार, जाकी चोर न लेवे मटिया
जिस आदमी के पास जितनी कम चिन्ताए होती हैं, वह उतने ही आराम से होता है।

सुख सोवें शेख और चोर न भाडे लेय
शेख एक जाति के भाट होते हैं, जो पीरो का यश गाते फिरते है। वे बहुत गरीब होते हैं, और उनके पास चुराने लायक कोई बर्तन-भाडा नही होता।

सुख सोवै शेख, जिनके टट्टू न भेख
दे०—ऊ०।

सुख सोवै होरू, जिनके गाय न गोरू
दे० सुख सोवै कुम्हार ।
होरु=नाम विशेष।

सुखार दुहार आसमानी फरमानी है, (पू०, कृ०)
अनावृष्टि और अतिवृष्टि ईश्वर के हाथ है

सुखी रहेगा वह सदा, जिन छो दीना मार।
जग मा भला कहत है, छो का मारनहार।
जो क्रोध को जीत लेता है, वह सुखी रहता है।

सुगंध लगाऊं तो ऊभ मरूं, ऊभ मरूं पहने तन सारी।
हार चमेली का भारी लगत, तुम जनत हौ तन की सुकवारी।
रूपगर्विता का कथन। झूठी सुकुमारता दिखाना।
ऊभ=गर्मी। घबराहट।

सुघड़ बलैयां ससुरा ले, बैल मांग बहू को दे, (कृ०)
होशियार बहू को ससुर भी प्यार करता है। घर मे बैल न हो, तो भी उसे उधार लाकर देता है (खेती के लिए)।

सुघड़ सुघड़ हँस गई, फूहड़ों को आया हाँसा, (स्त्रि०)
हँसी की कोई बात होने पर समझदार केवल मुस्करा देते हैं, पर मूर्ख ठठाकर हँसते हैं।

सुता जो राखै चोरी पर, तो पगड़ी पत रख मोरी पर
जो चोरी की नीयत रखता है, उसे अपनी इज्ज़त को भी एक ओर रख देना चाहिए।
सुता=सुध।
मोरी=नाबदान।

सुध और छो का वैर है, छो आवत सुध जाय।
वो ही नर भरपूर है, जो सुध न देत गवाय।
वही सच्चा मनुष्य है, जो क्रोध मे अपनी बुद्धि नही खो देता।

सुध बुध अपनी ठीक रख, जब आवे तुझको छो।
छो है भूत बिगाड़वा, इसका मीत न हो।
क्रोध आने पर अपनी विवेक-बुद्धि को ठीक रखना चाहिए। क्रोध भूत की तरह बिगाड करनेवाला है।

सुध बुध ना खो आपनी, बात ले मेरी मान।
इस दुनिया रहना नहीं, होवे मत अनजान।
स्पष्ट।

सुध सूं सुधरें कार सब, सुध बिन होन बिगाड़।
ऐसा सुध बिन हे मनुज, जैसा पत्थर झाड।
बुद्धि से ही सब काम बनते हैं। बुद्धि के बिना मनुष्य पत्थर-पेड सरीखा है।

सुन कोई हजार कुछ सुनावे
कीजे वही जो समझ में आवे
काबू हो तो कीजै न ग़फलत
आजिज हो तो हारिये न हिम्मत
आता हो तो हाथ से न दीजे,
जाता हो तो उसका गम न कीजे ।

स्पष्ट।

सुन रे ढोल, बहू के बोल, (स्त्रि०)

किसी को सचेत करने के लिए क०।

(इसकी कथा है कि कोई बूढी औरत अपने लडके से उसकी स्त्री की हमेशा शिकायत किया करती थी। स्त्री वदचलन थी। पर लडके ने कभी उस पर ध्यान नही दिया। कुछ दिनो वाद वह स्त्री वीमार पडी। कुल पुरोहित ने आकर उससे कहा कि तुम्हारा अतिम समय निकट है। तुमने अव तक जितने अपराध किये हैं, उन्हे स्वीकार कर लो। स्त्री जव ऐसा करने को तैयार हो रही थी, तव बुढिया ने अपने लडके को एक वडे ढोल मे छिपा दिया, जो वही रोगी के पास रखा हुआ था। इधर जव स्त्री अपने किए सभी दुष्कर्मो को एक-एक करके पुरोहित के सामने स्वीकार कर रही थी, तव उधर उसकी सास उक्त वाक्य कहकर ढोल वजाती जाती थी, जिसमे उसका लडका अपनी दुराचारिणी स्त्री के सभी कर्मो को ध्यान से सुन ले।)

सुन सुन के तेरी वात सहेली, सोच हुआ मेरे मन को।
करके व्याह घरों नहीं रखते, वावुल अपनी धी को।
(स्त्रि०)

किसी कुआरी लडकी का कहना कि ऐ मेरी सखी, तेरी यह वात सुन कर मुझे वडी चिंता हो रही है कि विवाह के वाद मा-वाप लडकियो को घरो मे नही रखते।

(तव फिर पीहर जैसा सुख मुझे कहा मिलेगा।) ?

सुन सुन मीठी बोल गत, बैठ न वैरी पास।
दही भुलावे वावरे, खाये कधी कापस।

दुश्मन की मीठी वातो मे नही आना चाहिए । नही तो कभी दही के धोखे कपास खानी पडती है ।

सुनाड़ी वेचे कांतू, अनाड़ी वेचें भाछू, (पू०)

होशियार आदमी हड्डी भी वेच लेता है, मूर्ख मछली वेचता है।

(वह किसी काम मे लाभ नही उठा पाता।)

सुनार अपनी मा की नथ मे से भी चुराता है

सुनार अपनी मा को भी ठग लेता है, फिर औरो की तो वात क्या ?

सुनार की खटाई और दरजी के वंद

प्रसिद्ध है।

टालमटोल करने पर क०।

सुनार, दर्जी आदि कभी वादे पर काम करके नही देते।

इनसे जव कोई अपनी चीज मागने जाता है, तव सुनार 'सव तैयार हे, केवल खटाई मे डालना है' और दर्जी 'केवल वद लगाना है'—यह कहकर ग्राहक को टाल देता है ।)

सुनिये सव की, कीजिये मन की

वात सवकी सुननी चाहिए, पर अपने को जो ठीक जचे, वही करना चाहिए।

सुनी सुनाई वात की, गठरी वांधे खूंट।
वरछिन की मार पडी, ककड़िन की भई लूट।

सुनी-सुनाई वातो को सच मान लेना, फिर चाहे वे सभव हो या असभव।

(ककडी एक वहुत सस्ती चीज़ है। उनकी लूट और लूट मे फिर वरछियो की मार का सवाल ही नही।)

सुन्नी ना शिया, जी में आया सो किया

(१) स्वतत्र विचारो का व्यक्ति। अथवा

(२) मनमाना करनेवाले के लिए भी क०।

(सुन्नी और शिया मुसलमानो के दो फिर्के हैं, जिनमे हमेशा विरोध रहता हे ।)

सुपने की-सी माया, जिसको अपनी वतलावे

धन-संपत्ति किसी के पास हमेशा नही रहती, वह सपने जैसी चीज है।

सुपने मे राजा भए, दिन को वही हवाल

सपने की वात सच नही होती।

मन के लड्डू खानेवाले के लिए क० ।

सुपने मे स्वामी मिले, कर न सकी दो बात।
सोवत थी, रोवत उठी, मलती रह गई हात।

स्पष्ट।

सुपुरदम व तू मायये खेशरा,
तू दानी हिसाबे कम-ओ-वेशरा

मैंने अपनी वस्तु (रचना) तुम्हारे सुपुर्द कर दी। अब उसके गुण-दोषो की विवेचना आप करे। (पुस्तक की भूमिका मे लिखते है।)

सुफल होत मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीत।
अपनो ऐपन लायके, तिरिया पूजत भीत।

प्रेम और विश्वास से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं। स्त्रिया अपना लेप लाकर दीवार पर चित्र बनाती है (प्रेम और विश्वास के वश होकर ही)। ऐपन=पिसे हुए चावल ओर हल्दी का घोल।

सुफेद बाल, जवानी का जवाल

बाल सफेद होने पर बुढापा माना जाता है।

सुफेद बाल, मौत का पैगाम

स्पष्ट।

पैगाम=सदेश।

सुबह का भूला शाम को आवे तो भूला नहीं कहलाता

दे०—सवेरे का भूला ।

सुबह की नांह अच्छी नहीं, (व्य०, लो० वि०)

सुबह-सुबह जब कोई ग्राहक दूकान पर जाकर सौदा लेने की बात करके फिर लेने से इन्कार कर देता है,तब दूकानदार कहा करता है।

सुबह की बोहनी, और अल्लाह मियां की आस

स्पष्ट। दे० ऊ०।

(सुबह की पहली बिक्री को दूकानदार शुभ मानते है, और उसके आधार पर ही दिन भर की बिक्री का अनुमान लगाते है इसीलिए क०।)

सुबह ही सुबह खुदा का नाम लो

स्पष्ट।

सुबह होती है, शाम होती है।
उम्र यूं ही तमाम होती है।

जीवन की क्षण-भगुरता।

सुमरन कर में, सुरत न हरि मे, कहो भेख यह कैसा है।
ऊपर से तो सिद्ध बन बैठा, भीतर पैसा पैसा है।

स्पष्ट।

सुमरन=सुमरिनी। माला।

सुरत=ध्यान।

सुरतीला सो फुरतीला

जो सब बातो का ध्यान रखता है, वह काम मे भी तेज होता है।

सुरतीला=सुर्त रखनेवाला। ऐसा व्यक्ति जो किसी बात को भूले नही।

सुर, नर, मुनि की है यह रीती।
स्वारथ लाग करहिं सब प्रीती। (तुलसी)

ससार मे सब लोग अपने मतलब से ही प्रेम करते हैं।

सुरमा सब लगाते है, पर चितवन भांत भांत, (स्त्रि०)

काम सब करते है, पर काम करने की विशेषता सब की अलग-अलग होती है।

सुर में इस्सर बसे

सगीत मे ईश्वर का वास है।

सुस्त मनुख का कोई न लागू, फुर्तीले के सब ले भागू

आलसी को कोई पसद नही करता, तेज़ काम करनेवाले को सब चाहते है।

सुस्ती बुरी रे बालके, याकूं जी से टार।
रत्ती बोझा सुस्त को, लागे बोझ पहाड़। (ग्रा०)

आलस्य बुरी चीज है। आलसी को एक बहुत छोटा काम भी पहाड जैसा बडा लगता है।

सुस्सा, गादड़, लोमड़ी, डरपोक तू इनको जान।
मानस, कूकर देख कर, तजने लगें पिरान।

स्पष्ट।

सुस्सा=खरगोश।

गादड=गीदड

सुस्सों जाऊं या गुस्सो जाऊं

खरगोश के लिए जाऊ, या उपले बीनने जाऊ ?

(एक औरत जगल मे ढोरो का सूखा गोबर बीनने जाया करती थी। सयोग से एक दिन एक खर-

गोश उसके हाथ आ गया। तब उसने सोचा कि उसे रोज इसी तरह खरगोश मिल जाया करेगा और उसने उक्त वाक्य कहा।)

सुहागन का पूत पिछवाड़े खेले है

सुहागिन का अगर लडका मर जाए, तो यह समझना चाहिए कि वह कही गया नही, बल्कि पिछवाड़े ही खेल रहा है। तात्पर्य यह कि उसे फिर भी पुत्र उत्पन्न होने की उम्मीद रहती है।

किसी बडे रोजगारी या अच्छी आमदनीवाले का जब कोई नुकसान हो जाता है, तब इस तरह का भाव प्रकट करने के लिए कि 'चिन्ता की कोई बात नही, घाटा शीघ्र पूरा हो जाएगा—वाक्य का प्रयोग करते है।

सुहाग भाग अरजानी, चूल्हे आग न घड़े पानी, (स्त्रि०)

सौभाग्य तो सस्ता मिल गया, पर चूल्हे मे न आग है, न घडे मे पानी।

बहुत गरीब या अभागे के विवाह पर क०।

सुहाते की लात, न सुहाते की बात

(१) प्रियजन की लात भी सही जा सकती है, जो प्रिय नही हैं, उसकी बात भी बुरी लगती है।

(२) जहा कुछ मिलने की आशा हो वहा गाली भी सह ले? पर जहा कुछ प्राप्ति न हो, वहा साधारण बात से भी नाराज हो उठे, तब भी क०।

सूआ सेमल देख के, सभी गंवाई बुद्ध।
फल देख के रम रहे, फल की रही न सुद्ध।

सेमल के फूल से आकृष्ट हो कर तोता अपनी सुध-बुध खो बैठा। फूल पर इतना मोहित हुआ कि फल का उसे ध्यान ही नही आया।

(वह यह नही सोच सका कि सेमल मे फल होता ही नही और मैं यहा व्यर्थ आया हू।)

सूखा ढाक, बढ़ई का बाप

ढाक की लकडी सूखने पर बहुत कडी हो जाती है।

सूखा-साखा बामन हो गया फूलफाल चुगत्ता

गरीबी हालत से जो एकदम बहुत पैसेवाला बन जाए, उसके लिए क०

सूखी चिनाई करते हैं

सूखे मसाले भीत उठाते है।

(१) बुरे ढग से व्यवसाय करना।

(२) ब्राह्मणो व चौबो पर ताना, जो खाते समय पानी नही पीते, जिसमे ज्यादा खाया जाए।

सूखे धानो पानी पड़ा

धान जब सूख रहे थे, तब पानी बरस गया।

ऐन मौके पर सहायता मिल गई।

सूखे मां झड़बेर घने हो, सम्मत मां अन ढेर घने हो, (कृ०)

अकाल मे झडबेरी बहुत होती है, और सुकाल मे अन्न बहुत होता है।

सम्मत=सवत, अच्छे वर्ष से अभिप्राय है।

सूखे लकड़ी की तरह, खाय बकरी की तरह

खाए तो बहुत, फिर भी दुर्बल।

(बच्चो के सूखा रोग मे प्राय ऐसा ही होता है।)

सूखे सावन, रूखे भादो, (कृ०)

सावन सूखा जाने पर भदई फसल अच्छी नही होती।

सूज सटका, कपड़ा फटका

सुई के घुसते ही कपडे मे छेद हो जाता है।

दुष्ट आदमी के लिए क०। जहा जाता है कुछ-न-कुछ उपद्रव करता है।

सूजो फूली, जैसे घी का कुप्पा

मोटी औरत के लिए क०।

सूझे न बिटौरा, चांद से राम-राम

बिटौरा (उपलो का टीला) तो दिखाई न पडे, चले दूज का चाद देखने।

सूझे नहीं और गुलेल का शौक

जिस काम के योग्य ही नही, उसे करने का चाव।

गुलेल=वह कमान जिससे मिट्टी या पत्थर की गोलिया चलाई जाती है।

सूत की अंटी और यूसुफ की खरीददारी

थोडी-सी पूजी से बहुमूल्य चीज खरीदने की इच्छा करना।

(यूसुफ हज़रत याकूब के पुत्र थे, जिन्हे उनके भाइयो

ने ईर्ष्यावश वेच डाला था। कहते है कि जव मिस्र के वाजार मे वह वेचे जा रहे थे, तव एक वूढिया ने एक अटी सूत मे उन्हे खरीदना चाहा था। उसी से कहावत वनी।)

सूत के बिनौले हो गए

सव काम चौपट हो गया। गुड गोवर हो गया।

सूत न कपास, कोली से लट्ठमलट्ठा

विना कारण ही लडना।

कोली=उत्तर प्रदेश की एक वुनकर जाति, हिन्दू, जुलाहा।

सूधे का मुंह कुत्ता चाटे

वहुत सीधापन भी अच्छा नही होता।

सूना खेत कुलच्छना, हिरना ही चुग जाय।
खेत बिराना बोय के, बीज अकारथ जाय। (कृ०)

जिस खेत की रखवाली नही होती, वह किसी काम का नही। उसे हिरन ही चर जाते है। खेत का लगान तो देना ही पडता है, वीज भी व्यर्थ जाता है, (अर्थात कुछ लाभ नही होता)।

सूना घर, भिडो का राज

खाली घर मे वर्रें मौज करती है, अर्थात कुछ दिनो मे वह नष्ट हो जाता है।

सूनी सेज से मरखना बैल भी भला, (स्त्रि०)

रंडापे से तो बुरे स्वभाववाला पति ही अच्छा। कुछ न होने से तो कुछ होना हजार दर्जे अच्छा। (यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है कि 'सूनी-सार से मरखना वैल भी भला' और यही ठीक भी है। पर फैलन ने इसे उक्त प्रकार से ही लिखा है।)

सूने मां मत चीज रख, ले जाय चोर चकार।
खाऊ है धन औ जीव का, सूना और उजार।

स्पष्ट।

सूना=सुनसान, निर्जन स्थान।

सूप बोले सो बोले, चलनी भी बोले, जिसमे बहत्तर छेद

स्वय अपने अवगुणो को न देखकर जव कोई दूसरो की बुराई करता है, तव क०।

सूम की थाती

(१) ऐसे कजूस के धन के लिए कहते है, जो किसी काम मे कुछ भी खर्च नही किया चाहता। (२) वहुत यत्न से रखी जानेवाली वस्तु के लिए भी।

सूम के घर कुत्ता जाय, न जाने दे

धनवान कृपण के नीच नौकर पर व्यग्य।

सूमन पूछे सूम से, 'काहे बदन मलीन?
का गांठी से गिर पड़ा, का काहू को दीन?'
'ना गांठी से कुछ गिरा, ना काहू को दीन।
देते देखा और को, ताते बदन मलीन।'

सूम की स्त्री सूम से पूछती है कि 'आज आपका चेहरा उदास क्यो है? क्या आपके पास से कुछ गिर गया है या किसी को आपने कुछ दिया है?' सूम उत्तर देता है—'न तो मेरा कुछ गिरा है, न किसी को कुछ दिया है, पर मैने दूसरे को देते देखा है, इसी से मै उदास हू।' (कजूसो पर करारा व्यग्य। वे स्वय तो किसी को कुछ देते ही नही, दूसरे को देते देखकर भी उन्हे दुख होता है।)

सूरज को क्या आरसी लेके देखते हैं?

वह तो स्वयं ही दिखाई पडता है।

सूरज धूल डालने से नहीं छुपता

(१) वडो की वुराई करने से वे बुरे नही वन जाते। (२) तेजस्वी पुरुष किसी के छिपाने से नही छिपता।

सूरज ने भान उभारी, रैन घर को सिधारी

सूर्य निकलने पर रात चली जाती है।

सूरज बैरी ग्रहन है, (और) दीपक बैरी पौन।
जीका बैरी काल है, आवत रोके कौन?

स्पष्ट।

पौन=पवन। हवा।

सूरत चुडैल की-सी, मिजाज परियो का-सा

वदशक्ल होते हुए दिमाक से रहना।

सूरत न शकल, भाड़ मे से निकल

कालाकलूटा, वदशक्ल आदमी।

सूरत में ऐसे, सीरत मे ऐसे

न देखने मे अच्छे, न करनी के अच्छे, सव तरह से वुरा आदमी।

सूरत मेरे मित्र की, मन मे रही समाय।
ज्यूं मेंहदी के पात मे, लाली लखी न जाय।
अपने मित्र (या प्रियतम) की छवि मेरे हृदय मे इस प्रकार बसी हुई है, जिस प्रकार मेहदी के पत्ते मे उसका लाल रग छिपा रहता है, और उसे कोई देख नही पाता।

सूरदास जनम के नहीं आंधर
सूरदास जन्म के अन्धे नही थे।
अमुक व्यक्ति बिल्कुल मूर्ख नहीं, उसने दुनिया देखी है, ऐसा भाव प्रकट करने को क०।
(हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और भक्त सूरदास अकबर के समय मे हुए है। कहा जाता है कि किसी स्त्री के रूप पर मोहित हो जाने के कारण उन्होंने अपने नेत्र फोड लिये थे।)

सूरमा चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
चने का मजबूत-से-मजबूत दाना भी भाड नही फोड सकता।
(कमजोर आदमी के लिए अपने से अधिक ताकत-वर का मुकाबला करना ठीक नही।)

सूरा काटे और बिल मे घुस जाय
वीर पुरुष अपना रास्ता आप बना लेता है।

सूरा रन मे जाय के, लोहा करो निसंक।
ना मोहिं चढ़े रंड़ापडो, ना तोहि चढ़ै कलंक। (स्त्रि०)
वीर पत्नी का अपने स्वामी से कहना कि युद्ध-क्षेत्र मे जाकर तुम इस तरह अपने जौहर दिखाओ कि न तो मुझे वैधव्य ही भोगना पडे, और न तुम्हारे माथे कलक का टीका ही लगे।

सूरा सो पूरा
(१) अधा बहुत होशियार होता है।
(२) जो वीर है, वह सब कुछ कर सकता है, यह अर्थ भी है।

सूली पर की रोटी खाता है
ऐसे काम करके अपना जीवन-निर्वाह करता है, जिसमे मौत की सजा हो सकती है।

सूली पर भी नींद आती है
नीद ऐसी चीज़ है, जो कठिन-से-कठिन परिस्थिति मे भी आ जाती है।

सूहा जोग सुहाग का और कूप जोग है नीर।
गुरु विद्या का जोग है, सोच समझ रे वीर।
लाल रग (यानी सेंदुर) सुहाग को, पानी कुए को, और विद्या गुरु को शोभा देती है।

सूहेकी रीति नहीं, मशरूकी तौफीक नहीं, (स्त्रि०)
लाल रंग के कपडे पहनने का चलन नही, और रेशम खरीदने की ताकत नही।
जो सभव है उसे न करना और जो असभव है उसे करने को मन चलना।
मशरू=एक प्रकार का बढिया रेशमी कपडा।
तौफीक=सामर्थ्य। शक्ति।

सेंत का चूना, दादा की क़ब्र, (पू०, मु०)
मुफ्त की चीज का उपयोग करने के लिए हर आदमी तैयार रहता है।

सेंत का माल, हिरदा निर्दयी, (पू०)
मुफ्त का माल खर्च करने मे दर्द नही होता।

सेंदुर टिकुली जरल, तो पेटो भा बज्जर पडल, (स्त्रि०)
किसी स्त्री का कहना जो ससुराल मे कष्ट पा रही है—
शौक की चीज नही मिलती, तो क्या पेट भर खाने को भी नही मिलेगा? जब किसी नौकर को पूरी तनख्वाह न मिले तब वह भी कहता है।

सेंदुर न लगाए तो भतार का मन कैसे रखें?
कुछ काम ऐसे होते हैं जो दूसरो को प्रसन्न करने के लिए करने ही पडते है।

सेजकी मक्खी भी बुरी, (स्त्रि०)
फिर सौत के सबध मे तो कहा ही क्या जाए?

सेठ क्या जाने साबुन का भाव?
जिसका जिस काम से कोई सबध नही, वह उसका भेदभाव क्या जाने?

सेर की हांड़ी मे सवा सेर पड़ा और उफनी
छोटे आदमी को किसी काम मे थोडी भी सफलता मिल जाए, तो उसका दिमाग फिर जाता है।

सेर को दूध, अधौन कौ पानी; घम्मर घम्मर फिरे
बच्चो की तुकबदी।

यह बुदेलखड मे इस प्रकार प्रचलित है—
सेरक दूध, पसेर पानी, घम्मर घम्मर दूध मथानी।
(प्राय दूध मे पानी मिलाने वाले अहीरो के लिए क० ।)
अर्धान=वर्तनो को धोने से वचा हुआ पानी, धोवन।

सेर को सवा सेर
(१) जवर्दस्त को भी कोई-न-कोई दवानेवाला होता है।
(२) चालाक को भी उससे अधिक चालाक मिल जाता है।

सेर मे पसेरी का धोखा, (व्य०)
(१) एक असगत वात। सेर भर माल की तौल मे पसेरी की गडवडी कैसे हो सकती है ?
(२) वहुत अधिक नुकसान हो जाने पर भी क०।

सेर में पूनी भी नही कती
अभी कुछ भी काम नही हुआ।
पूनी=धुनी हुई रूई की वह छोटी वत्ती, जो सूत कातने के लिए वनाई जाती है।

सेवक सठ, नृप कृपन, कुनारी।
कपटी मित्र शत्रु सम चारी। (तुलसी)
धूर्त नौकर, कजूस राजा, दुराचारिणी स्त्री और कपटी मित्र—ये चारो शत्रु के समान है।

सेवक सोई जानिये, रहे विपत मे संग।
तन छाया ज्यो धूप मे, रहै साथ इक रंग।
सेवक तो वही है, जो विपत्ति मे साथ दे, जैसे धूप मे छाया शरीर का साथ नही छोडती।

सेवा ऐसी लाभ दे, ज्यो गाडा दे रस।
सेवा की थी डोम ने, हुए एक के दस।
सेवा से उसी तरह लाभ होता है, जैसे गन्ने के रस से मिलता है। एक वार किसी डोम ने (भगवान की) सेवा की थी, उसका दस गुना फल उसे मिला।
(पता नही किस डोम की सेवा की चर्चा यहा है।)

सेवा करे सो मेवा पावे
सेवा का फल अच्छा मिलता है।

सेह का काटा घर मे मत रक्खो, लडाई होगी, (लो० वि०)
लोगो का विश्वास है कि सेही का काटा घर मे रखने से लडाई होती है।

सैया के अरजन, भैया के नाउ, पहिन ओढ मे सासुर जाऊं, (स्त्रि०)
खरीदे हुए मेरे पति के है, नाम भाई का है, उन्ही (वस्त्रो) को पहिनकर मैं ससुराल जा रही हू।
मागकर लाई हुई चीज से शौक करना।
(स्त्रिया प्राय पति के द्वारा खरीदकर लाई गई वस्तु को मायके का वता कर ससुराल लाती है। कहावत मे उसी का वर्णन है। भाव यह है कि कपडो के खरीदने मे भाई का कुछ खर्च नही हुआ और ससुराल के लोगो के सामने उसके वडप्पन की रक्षा भी हो गई।)

सैयां गये विदेस, मै तो कात कात मुई।
आगरे का चरखा, बुरहानपुर की रुई। (स्त्रि०)
किसी स्त्री का पति विदेश चला गया है। वही कह रही है।
(कठपुतली का नाच दिखानेवाले प्राय इस तरह के गीत गाया करते है।)

सैयां गये लदनी लदाइन झड़ाझड़।
सौ के पचास किये, चले आये घर। (स्त्रि०)
व्यापार मे किसी को नुकसान हुआ। उसी को स्त्री व्यग्य मे कहती है।
लदनी=माल लादना।

सैयां जामत विदेस को, कया हाट मत खोल।
हुनर देख मेरे हाथ का, कातं सूत अनमोल।
(स्त्रि०)
कोई स्त्री अपने पति को विदेश जाने से रोकती हुई कह रही है कि 'हे प्रियतम! आप (व्यापार के लिए) दूर देश न जाए, और आप कोई दूकान भी न खोले, आप मेरे हाथ का कौशल देखें, मैं कितना वढिया सूत कातती हू। उससे मज मे

जीवन निर्वाह हो जाएगा।
(इस कहावत से यह वात वहुत अच्छी तरह प्रकट होती है कि आज से सौ साल पहले जिस समय यह कहावत वनी होगी, भारत की स्त्रिया सूत कातने मे विशेप निपुण ही नही थी, वल्कि इस कार्य के द्वारा वे मजे मे जीवन-यापन भी कर सकती थी।)

सैंया तेरे कारने, जल वल हो गई राख।
पत से मै वेपत भई, पचन मे गई साख।
(स्त्रि०)
पर-पुरुप से प्रेम करनेवाली विरहिणी स्त्री का कहना।

सैंया ने इस दुनिया मे लाखों पये वट्टे।
कघी न लाये लड्डू पेड़े, वेर खिलाये खट्टे। (स्त्रि०)
किसी धनाढ्य और सूम पति के प्रति उसकी स्त्री का उलहना।
वट्टे=इकट्ठे किए।

सैंया भये कोतवाल, अव डर काहे का ? (स्त्रि०)
घर का आदमी ही जव किसी रोव-दाववाली जगह पर पहुच गया, तो अव किस वात का डर ? (चाहे जो करो।)
(फैलन की इस पर टिप्पणी है कि कोतवाल यद्यपि पुलिस का एक साधारण कर्मचारी होता है, पर साधारण जनता के लिए वह जोर-जुल्म का प्रतीक है।)

सैकड़ो के वारे-न्यारे हो गये
काफी खर्च हो गया।

सोटा वल विन काम न आवे, वैरी छीन तुझे गुदकावे
शक्ति के विना लाठी भी काम नही आती, दुश्मन छीनकर उल्टी मार लगा सकता है।

सोटा हाथ, देह मे हांगा, उसने भेंटे सव कुछ मांगा
जिसके हाथ मे लाठी और शरीर मे वल है, उसके लिए सव कुछ सुलभ है।

सोटे अव चल तेरी वारी
सव तरह से हारकर अतिम उपाय काम मे लाना।
(इसकी कथा है कि एक वार शेखचिल्ली ने—जो अपने नाम के प्रसिद्ध मूर्ख हुए है—अपनी मा से कहा कि मैं देश-भ्रमण के लिए जाऊगा, मेरे लिए रास्ते मे खाने के लिए कुछ वना दे। उसकी मा ने चार रोटिया वना कर दी, जिन्हे लेकर वह यात्रा पर चल पडा। पहले मुकाम पर ही एक पेड के नीचे जाकर वैठा और रोटिया निकालकर कहने लगा—एक खाऊ, दो खाऊ, तीन खाऊ या चारो को ही खाऊ। सयोग की वात कि उस पेड पर चार परिया रहती थी। शेखचिल्ली की वात सुनकर उन्होने समझा कि अवश्य यह कोई वडा दैत्य है, जो हम चारो को ही खाना चाहता है। इसलिए वे उसके सामने आकर वोली कि अगर आप हमे प्राणदान दे, तो हम आपको एक वहुत अनोखी वस्तु भेंट करेंगी। शेखचिल्ली इसके लिए राजी हो गया। तव परियो ने उसे एक जादू की कडाही दी और कहा कि आप इससे जितनी भी पूडिया मागेंगे, यह आपको देगी। शेखचिल्ली कडाही पाकर वडा प्रसन्न हुआ और उसे लेकर घर की तरफ लौट पडा। चलते-चलते एक जगह रात हो गई और एक सराय मे ठहर गया। वहा उसने वडे चाव से कडाही की सव विशेषता भटियारे को वता दी। वह वडा चालाक था। उसने चुपचाप उस कडाही को उठाकर उसके स्थान पर एक दूसरी कडाही रख दी। शेखचिल्ली को इसका कुछ पता नही चला। वह जव घर पहुचा, तो वही वदली हुई कडाही मा को देकर वोला—इसकी परीक्षा करो, यह मागने से पूडिया देगी पर जव कडाही चूल्हे पर चढाई गई और पूडिया मांगी गई तो कुछ भी न मिला। शेखचिल्ली वडा दुखी और निराश हुआ। दूसरे दिन वह फिर चार रोटिया साथ ले उसी पेड के नीचे आकर वैठ गया और फिर अपनी उसी वात को दुहराया कि 'एक खाऊ, दो खाऊ, तीन खाऊ या चारो खाऊ।' सुनकर परिया वडी हैरान हुई कि आखिर क्या वात है। अत मे जव उन्हे सारा किस्सा मालूम हुआ, तो इस वार उनको एक रस्सी और सोटा देकर उन्होंने कहा कि इसकी सहायता

से तुम्हारी कडाही मिल जायेगी। शेखचिल्ली उन दोनो चीजो को लेकर फिर उसी सराय मे गया और रस्सी को जमीन पर बिछा कर बोला—बाध ले सबको। रस्सी ने उन सब लोगो को जो वहा मौजूद थे, तुरत बाध लिया। फिर सोटे को जमीन पर पटक कर उसने कहा—सौंटे, अब चल तेरी बारी। उसके इतना कहते ही सोटा सबको पीटने लगा। मार से घबराकर भटियारे ने तब उसकी कडाही वापिस कर दी, जिसे लेकर वह खुशी-खुशी घर आया।)

सोच के चलना मुसाफिर यह ठगो का गांव है।

(१) ससार मे काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि जो शत्रु है, उनसे बचे रहना चाहिए।

(२) ससार मे सभी अपने स्वार्थ के लिए दूसरो को ठगने के लिए तत्पर रहते हैं, उनसे खूब सावधान रहना चाहिए।

सोचना, जी मोचना

चिंता करना मन को कष्ट देना है।

सो जाये सुपने मे प्रानी धन दौलत को पावे।
जाग पड़े जैसे को तैसो, हाथ कछू नहिं आवे।
सुपने की-सी माया, जिसको अपनी बतलावे।

स्पष्ट।

सोत का पानी पाक

झरने का पानी स्वच्छ और पवित्र होता है।

सोता नाग जगाना

(१) किसी दुष्ट को छेड़ना।

(२) जानबूझकर कोई उपद्रव मोल लेना।

सोती थी पर काता नहीं, जो काता तो पांच पाव, (स्त्रि०)

(मैं) सो रही थी इसलिए नही काता, पर जब कातने बैठी, तो सवा सेर कात डाला। आलसी पर व्यग्य।

सोती भिड़ जगाना

सोती हुई बरो के छत्ते को छेडना, अर्थात जानकर मुसीबत बुलाना।

सोती रार जगाना

रुके-रुकाए झगड़े को फिर उभाडना।

सोते का कटड़ा, जागते की कटिया

सचेत रहनेवाला मुनाफे मे रहता है।

दे०—जागते की कटिया...।

सोते का मुंह कुत्ता चाटे

असावधान को हर आदमी ठगता है।

सोते को सोता कब जगाता है?

अज्ञानी को अज्ञानी नही सुधार सकता।

सोते लड़के का मुह चूमा, न मां खुश, न बाप खुश

किसी मनुष्य के साथ एसा उपकार करने से कोई लाभ नही होता, जिसका उसे पता ही न चले।

सोना उछालते चले जाओ

राज्य के अच्छे प्रबन्ध के लिए क०।

सोना कहे सुनार से, उत्तम मेरी जात।
काले मुंह की चिरमिटी, तुली हमारे साथ।
मै लालो की लाड़ली, लाल ही मेरा रंग।
काला मुंह जब से हुआ, तुली नीच के संग।

यह सोना और रत्ती, अर्थात सोना और घुघुची की बातचीत है। सोना सुनार से कहता है—मैं ऊची श्रेणी का हूं और यह काले मुह की (अर्थात नीच जाति की) घुघुची मेरे साथ तुलने की धृष्टता करती है।

घुघची जवाब देती है—मैं लालो की (रत्नो की) प्यारी हू, (अर्थात मेरे साथ रत्न तुलते हैं) मेरा रग भी लाल है। पर नीच के साथ (अर्थात तुम्हारे साथ) तुलने से मेरा मुह काला हो गया है; मैं बदनाम हो गई हू।

(घुघची, जिससे सोना आदि तोला जाता है, लाल रग की होती है, और उस पर काला दाग होता है। यहा 'काला' और 'लाल' दोनो ही शब्दो मे श्लेष है।)

सोना-चांदी आग ही में परखे जाते हैं

मनुष्य की परीक्षा विपत्ति पडने पर ही होती है।

सोना छुए मिट्टी हो

अभागे, कर्महीन मनुष्य के लिए क०।

सोना जाने कसे, और मानस जाने बसे

सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से और मनुष्य की परीक्षा उसके निकट रहने से होती है।

सोना-सोना कुछ जात नही, (स्त्रि०)
रुपए-पैसे से जाति नही पहचानी जाती।

सोना नीक तो कान फराये के ? (स्त्रि०)
सोना अच्छा है तो क्या कान फडवाने के लिए ? अच्छी वस्तु से हानि हो, तो उसे त्यागना ही चाहिए।

सोना पाना और खोना दोनो बुरा, (लो० वि०)
लोगो की ऐसी धारणा है कि सोना अगर पडा मिले या पास का खो जाए, तो दोनो से ही अनिष्ट होता है।

सोना ले के मिट्टी भी नहीं देता, (व्य०)
लेकर न देनेवाले के लिए क०।

सोना लेने पी गये, (और) सूना कर गये देश।
सोना मिला, न पी मिले, रूपा हो गये केश।
ऐसा काम जिसमे गाठ की पूजी भी चली गई, और परेशानी हो रही है अलग।
रूपा=चादी, चादी के रग के, सफेद।

सोना सुगध है
बहुत ही अच्छी वस्तु। (सोने मे सुगध नही होती, यदि होती, तो वह बहुत अनमोल हो जाता।)

सोना सुनार का, आभरण ससार का
गहना पहिननेवालो का, पर सोना सुनार का ही होता है।
(इसकी कथा है कि एक बार किसी बादशाह ने सुनार से पूछा कि तुम रुपए मे कितना खा सकते हो ? सुनार ने जवाब दिया—'सोहलो आना।' बादशाह ने इसकी परीक्षा करनी चाही और एक सोने की मूर्ति राजमहल मे बैठकर ही बनाने को कहा। साथ ही उस पर कडा पहरा बिठला दिया। राजमहल मे जाकर काम शुरु करने के पहले सुनार ने अपने घर पर ही एक पीतल की मूर्ति बना ली और उसे अपनी स्त्री के पास दही की मटकी मे डालकर छोड दिया। राजमहल मे जब सब के सामने स्वर्णमूर्ति बनकर तैयार हो गई तो उसने कहा कि इसे अब खटाई मे साफ करना होगा। उसी समय उसकी स्त्री, जिसे उसने पहले से सिखा-पढा रखा था, 'दही लो, दही लो' की आवाज करती हुई निकली। सुनार ने यह कहकर कि खटाई के लिए इसका दही खरीद लिया जाए, उसे बुला लिया, और उसकी मटकी लेकर उसमे सोने की मूर्ति डाल दी और उसके स्थान पर पीतल की मूर्ति, जो उसमे पडी हुई थी, निकाल ली। इस प्रकार सोने की मूर्ति उसके घर पहुच गई और बादशाह के सामने उसने अपनी बात रख ली।)

सोने का गडुवा और पीतल की पेंदी
(१) अशोभन कार्य।
(२) ऐसी वस्तु या मनुष्य, जिसमे सब अच्छाइयो के होते हुए भी कोई बडा दोष हो।

सोने का निवाला खिलाइए और शेर की नजरो से देखिये
लडको के लालन-पालन के सम्बन्ध मे क० कि उन्हे प्यार तो करे, पर उन पर कडी नजर भी रखे, जिससे वे बिगडने न पाए।

सोने की अगूठी, पीतल का टाका, मा छिनाल, पूत बाका
किसी अच्छी वस्तु मे एक ऐब होने से ही वह सब-की-सब वस्तु बुरी बन जाती है।

सोने की कटारी को कोई पेट मे नहीं मारता
बडे-से-बडे लाभ के लिए कोई अपने प्राण नही दे देता।

सोने की कटोरी मे कौन भीख न देगा ?
(१) सुदर कन्या को वर मिलने मे देर नही लगती।
(२) धनी मनुष्य को जल्दी ही कर्ज मिल जाता है।

सोने की चिडिया हाथ लगी है
(१) जब किसी लुच्चे व लफगे धनवान को अपना आसामी बना लेते है, अथवा जब किसी उदार पुरुष की किसी पर विशेष कृपा हो जाती है, तब क०।
(२) वकीलो व अदालत के मामलो के पजे मे जब कोई धनी मुवक्किल फस जाता है, प्राय तब क०।
(३) धनी जजमान के मरने पर उसके पुरोहित का कथन।

सोने की चिडिया हाथ से उड़ गई
दे० ऊ०। यह उसका उलटा है।

जब कोई अच्छा ग्राहक हाथ से निकल जाता है, तब प्रायः दूकानदार कहा करता है।

सोने की बडेरी, फूस का छप्पर

(१) बिल्कुल ही विवेकहीनता का काम।

(२) असगत काम।

बडेरी=वह लबा लट्ठा जिस पर छप्पर रखते है।

सोने को सलाम, रूपे को आलेक, भूखे को न देख

सब लोग धनी मनुष्य की ही इज्जत करते है, गरीब को कोई नही पूछता।

सलाम + आलेक=सलामालेक, सलाम-अलैकुम का विकृत रूप मुसलमानो मे वह प्रणाम या वदगी के लिए प्रयुक्त होता है।)

सोने से पीली, मोतियो से धौली, (स्त्रि०)

सोने-मोती के गहनो से लदी हुई स्त्री।

धौली=उज्ज्वल। सफेद।

सोने से गढ़ाई मंहगी

वस्तु के मोल से बनवाने की मजदूरी अधिक। अथवा कम लाभ के लिए बहुत परिश्रम।

सोभा रन की सूरमा, घर की सोभा वीर।
रज की सोभा चादनी, भोजन सोभा खीर।

वीर पुरुष से युद्ध की, गृहिणी से घर की, चादनी से रात की और खीर से भोजन की शोभा बढती है।

सोभा लावें मनुख को, फुरत फुरत औ ज्ञान।
जिसमे यह तीनो नहीं, वे नर ढोर समान।

बुद्धि, चातुर्य और ज्ञान—ये मनुष्य की शोभा हैं, जिसमे ये तीनो नही, वह पशु के समान है।

सोया और मुआ बराबर

जो सचेत नही, वह मरे के समान है।

सोया सो चूका

आलस किया और गए।

सोरठ मीठी रागनी, रन मीठी तलवार।
जाडे मीठी कामली, सेजो मीठी नार।

मीठी होती है सोरठ रागिनी, मीठी होती है युद्ध मे तलवार, मीठी होती है जाडे मे कमली, मीठी होती है शैया पर रमणी।

कमली=कबल।

सोवेगा सो खोवेगा, जागेगा सो पावेगा

जो सावधान रहता है, उद्योग करता है, वह पाता है।

सोवे भाड़ पर सपना देखे धरोहर का

साधारण मनुष्य के बडी-बडी इच्छाएँ करने अथवा डीग हाकने पर क०।

सोवे राजा का पूत या जोगी अवधूत

क्योकि इन्हे किसी बात की चिंता नही होती।

सोहनी बुआ और चटाई का लहगा

बेतुका शौक।

दे०—शौकीन बुढिया ।

सोहबत का असर है

सगत का प्रभाव होता है।

जब कोई बुरी सोहबत मे पड जाता है प्राय तब क०।

सौ ऐबो का एक ऐब नादारी

गरीबी स्वय ही एक बडा ऐब है।

सौकन गई और आंख छोड़ गई, (स्त्रि०)

कोई स्त्री सौत के लडके को क०।

सौकन चून की भी बुरी है, (स्त्रि०)

सौत आटे की भी बुरी होती है।

सौकन बुरी चून की और साझे का काम।
कांटा बुरा करील का और बदरी का घाम।
(स्त्रि०)

स्पष्ट। दे०—काटा बुरा ।

सौ कपूत से एक सपूत भला, (स्त्रि०)

स्पष्ट।

सौ कालियो मे एक काला

बहुत धूर्त।

कालियो मे=काले आदमियो मे।

सौ की हानी, सहस्सर बखानी

बात बढाकर कहना।

सौ के रह गये साठ, आधे गये नाठ, दस देंगे, दस दिला देंगे, दस का देना क्या?

कोई कर्जदार साहकार से कह रहा है कि हमने तुमसे जो सौ रुपये लिये थे, उनमे से साठ ही तो

देना वाकी है, आधे छूट गए, दस रुपया दे देंगे, दस (किसी) से दिला देंगे, वाकी रहे दस, सो उनका देना क्या? जव कोई अपना देना चुकाने मे वहुत हीला-वहाना करता है, तव उससे भर्त्सना मे क०। झूठा-सच्चा हिसाव वताकर रकम को वरावर कर देने पर भी क०।

सौ कोसा और एक भरोसा वरावर, (स्त्रि०)
एक गमखोरी सौ गालिया देने के वरावर है। गालियाँ देने से सहनशीलता अच्छी।

सौ कौवों मे एक वगला भी नरेस
धूर्तो का राजा भी धूर्त होता हे।
(कौवे की तरह वगुला भी चालाकी का प्रतीक माना जाता है।)

सौ खोटों का वह सरदार, जिसकी छाती एक न वार
स्पष्ट।
(सामुद्रिक दृष्टि मे ऐसा व्यक्ति, जिसकी छाती मे वाल न हो, वुरा माना जाता है।)

सौ गज वारूं और गज भर न फाड़ूं
(१) देना कुछ नही, झूठ-मूठ ही मन वहलाना।
(२) कहना वहुत, काम कुछ न करना।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ सोते न एक मचला
सौ गाडिया एक छकडे के वरावर है और सौ सोते हुए आदमी एक ऊघते के वरावर। भाव यह कि जो जान-वूझकर भी न देखे, वह अधो से भी वुरा है।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ हरामजादे न एक मगरा
मगरा या घुन्ना आदमी वहुत वुरा होता है। वह सौ हरामजादो से भी बढकर होता है।
मगरा=ऐसा मनुष्य जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भाव को मन मे ही छिपाकर रखे, चुप्पा, घुन्ना।

सौ गालियो का एक गाला वनाया और उड़ा दिया
सहनशीलो का क०।
गाला=धुनी हुई रुई का टुकडा।

सौ गुंडा न एक मुछमुंडा
एक मुछमुडा सौ गुडो से भी अधिक वदमाश होता है।
(यह कहावत उस समय चली होगी, जव लोगो ने मूछे साफ रखना शुरू किया ही होगा। मूछे मुड-वाना विशेपकर पिता के जीवित रहते हुए किसी समय वहुत वुरी दृष्टि से देखा जाता था।)

सौ गुलामों घर सूना, (स्त्रि०)
सौ नौकरो के रहते हुए भी घर सूना लगता है। (मालिक के विना।)

सौ जीवों का एक वचावा
जहा एक कमानेवाला और वहुत खानेवाले हो, वहा क०।

सौ डंडी न एक वुदेलखडी
एक वुदेलखडी सौ लठैतो के वरावर होता है।
(वुदेला राजपूत अपनी वीरता के लिए किसी समय प्रसिद्ध रहे है।)

सौत की मूरत भी वुरी, (स्त्रि०)
दे० सौकन चून ।

सौत चून की भी वुरी, (स्त्रि०)
दे० सौकन चून . ।

सौत जाय, सौत का नाडा न जाय, (स्त्रि०)
सौत चली जाए, पर उसका पति न जाये।
नाडा=इज़ारवंद।

सौत पर सौत और जलापा, (स्त्रि०)
सौत की सौत मौजूद है, और जलन अलग।

सौत भली, सौतेला वुरा, (स्त्रि०)
सौतेले लडके से सौत भली। (वह सौत से वुरा होता है।)

सौतिया डाह मशहूर है
वडा विकट होता है।

सौदा अच्छा लाभ का, और राजा अच्छा दाव का
सौदा वही अच्छा, जिसमे मुनाफा हो, राजा वही अच्छा, जिसका रोव-दवदवा हो।

सौदा कर नफा होगा
माल खरीदो और वेचो, जरूर नफा होगा। भाव यह कि उद्योग करो। फल मिलेगा।

सौदा विक गया, दूकान रह गई
जवानी निकल गई, पजर रह गया।

रस निकल गया, फोकट रह गया।

सौदा लीजे देख कर, और रोटी खाइए सेंक कर

सौदा देखभाल कर लेना चाहिए, और रोटी सेंक-कर खानी चाहिए।

सौदा सौदाइयो बात नफे मे

सौदा तो सौदा करनेवालो के लिए है, बाते नफे मे (सुनने को मिली)।

दूकानदार ग्राहक पटाने के लिए जो तरह-तरह की लच्छेदार बाते करते है, उनसे ही अभिप्राय है।

सौ दिन चोर के तो एक दिन साह का

कोई बदमाश आदमी कई बार शरारत करके भले ही बचता रहे, पर कभी-न-कभी पकडा ही जाता है।

सौ दिल्ली उजड़ गई, तौ भी सवा लाख हाथी

सब कुछ दिल्ली उजड गई हो, पर उसकी शान वैसी ही बनी है।

दे०—लटा हाथी ।

सौ नकटों में एक नाकवाला नक्कू

बुरे आदमियो के समाज मे भला आदमी निभ नही पाता। वह अपनी भलमनसाहत के लिए ही बदनाम हो जाता है।

नक्कू शब्द के यहा दो अर्थ हैं (१) बडी नाक वाला। (२) ऐसा व्यक्ति जो सबसे अलग हो।

सौ बात की एक बात यह है

साराश यह है।

सौ बार तेरी, एक बार मेरी

चालाक के लिए क०। कभी-न-कभी चक्कर मे फसोगे ही।

सौ वैरी कटवा कहे, मस्तक लिखा सो होय।
लेख लिखे को बालके, मेट न सक्के कोय।

शत्रुओ के कोसने से किसी का कुछ बिगडता नही। जो भाग्य मे लिखा होता है, वही होता है।

कटवा कहे=कडुवी बात कहे।

सौ भड़वे मरें तो एक चम्मचचोर पैदा हो,
सौ रंडी मरें तो एक आया

सौ भडुवो के मरने पर एक चम्मचचोर पैदा होता है और सौ रडियो के मरने पर एक आया।

(चम्मच-चोर से यहा मतलब उन खानसामो व खिमदतगारो से है, जो अग्रेजो के ज़माने मे उनके यहा काम किया करते थे। फैलन की उक्त कहा० पर टिप्पणी है कि अग्रेज़ो के खानसामा और आया ये दोनो ही अपनी दुश्चरित्रता के लिए अत्यत बदनाम है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।)

सौ मारे और एक न गिने

अर्थात बराबर पीटता ही जाए।

निकम्मे या बदमाश के लिए क०।

भाव यह है कि यह पीटे जाने के सिवा और किसी योग्य नही।

सौ मारे और निन्नानबे से भूल जाय

अर्थात मारता ही जाए, हाथ बद न होने पाए।

ऊ० भी दे०।

सौ में फूला, हज़ार मे काना, सवा लाख में ऐंचाताना

(आख मे) फुलीवाला सौ के मुकाबले मे, काना हजार के मुकाबले मे और ऐचकताना सवा लाख के मुकाबले मे बुरा होता है।

फूला=जिसकी आख मे चोट आ जाने की वजह से सफेद दाग पड गया हो।

ऐचकताना=भेंडी आख वाला।

सौ लगी तो क्या? हज़ार लगी तो क्या?

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो कई बार पिट चुका हो या अपमानित हुआ हो।

('सौ लगी' से मतलब जूतियो के लगने से है।)

सौ लठैत न एक पटैत

एक पटेबाज़ सौ लठैतो को हरा सकता है।

(पटा लोहे की एक पट्टी होती है, जिससे तलवार के काट और बचाव सीखे जाते है। उसी से पटैत या पटेबाज़ शब्द बना है।)

सौ हाथी लट गया तौ भी सवा लाख रुपये का

दे०—हाथी हज़ार लटा ।

स्याम न छोड़ो, छोड़ो न सेत; दोनो मारो एक ही खेत

दे०—काली भली न सेत. ।

स्वर्ग से उतरा, बबूल मे अटका

जब किसी पूरे होते हुए काम मे यकायक फिर कोई बाधा आ जाए, तब क०। (फैलन की टिप्पणी है कि यह कहावत उन सरकारी कर्मचारियो के लिए प्रयुक्त होती है, जो अक्सर लोगो का रुपया रोक रखते है, और समय पर देते पर नही।)

स्वात बूंद सीपी मुकत, कदली भयो कपूर।
कारे के मुख बिख भयो, सगत सोभा सूर।

स्वाति की बूद सीपी मे पडने से मोती, कदली मे पडने से कपूर, और सर्प के मुख मे पडने से विप बन जाती है। सूरदास कहते हे यह सब सगत का फल है।

(स्वाति नक्षत्र मे जो जल बरसता है, उसके विपय मे लोगो का ऐसा ही विश्वास हे, और वही कहावत मे व्यक्त हुआ हे।)

स्वास स्वास मे कृष्ण रट, स्वांस बिरथा मत खोय।
ना जानूं या स्वास का, यही अंत ना होय।

जीवन का कुछ ठिकाना नही, न जाने कब अत आ जाए, इसलिए प्रतिक्षण कृष्ण का नाम लेते रहो।

ह

हँसते ठाकुर, खसते चोर, इन दोनों का आया ओर

हँसने से ठाकुर का रोब जाता रहता है और खासने से चोर पकडा जाता है।

ठाकुर=गाव का जमीदार या मुखिया।

ओर=अत।

हँसते ही घर बसता है

हँसी मजाक करते-करते घर बस जाता हे, अर्थात प्रेम सबध हो जाता है।

हँसते हो, कुछ पडा पाया है?

जब कोई व्यर्थ हँसता दिखाई दे, तब क०।

हँसना बामन, खसना चोर, कुपढ कायथ, कुल का बोर

हँसोड ब्राह्मण, खासनेवाला चोर, और अनपढ कायस्थ—ये तीनो कुल का नाश करते है।

हँस गुन पावे, तेवर लागे, (पू०)

प्रसन्नतापूर्वक उसे जो चीज दी जाती है, उसे वह भौहे सिकोड कर लेता है, अर्थात कोई एहसान नही मानता। कृतघ्न के लिए क०।

हँस हँस खइये फूहड़ का माल, (स्त्रि०)

मूर्ख का माल उसे बेवकूफ बना कर खाना चाहिए।

हसा चलल भाग, केओ न सगे लाग, (पू०)

मरने पर कोई साथ नही जाता।

हसा=आत्मा से अभिप्राय है।

हसा थे सो उड गये (ओर) कागा भये दिवान।
जा बम्मन घर आपने, सिंह काके जजमान।

जब किसी सज्जन के स्थान पर दुर्जन का आधिपत्य हो जाए, तब क०।

(कथा हे कि कोई लोभी ब्राह्मण सिंह की माद मे गया। उसने सोचा था कि सिंह ने जिन मनुष्यो को मार डाला है, उनका गहना और धन वहा पडा मिल जाएगा। पर सिंह ने उसे देखते ही उसे पकड लिया। उस समय सिंह का मत्री एक हस था। उसने ब्राह्मण देवता के प्राण बचाने के उद्देश्य से सिंह को समझाया कि आपके पुरोहित है और आप इनके जजमान, इनको मारना ठीक नही। सिंह ने हस की बात मान ली औरजो धन पडा था, उसे भी ले जाने दिया। कुछ दिन बाद ब्राह्मण फिर उसी स्थान पर पहुचा। उस समय एक कौवा सिंह का मत्री हो गया था। उसने ब्राह्मण को मार डालने की सलाह दी। किन्तु सिंह को यह पसद नही आया और उसने हस की बात याद करके ऊपर की पक्तिया ब्राह्मण से कही।)

हँसिये दूर, पड़ौसी से ना

दूरवालो से हँसी-मजाक करे पर पडौसी से कभी नही।

हँसी और फसी

स्त्री अगर हँसकर जवाब दे, तो समझ लो कि वह काबू मे आ गई। हँसना सम्मति का लक्षण है।

हँसी वैरी बइयर की, खांसी वैरी चोर की

हँसी स्त्री की शत्रु है और खासी चोर की।

हँसी मे खसी
(१) वहुत हँसने से बुराई पैदा होती है।
(२) वहुत हँसने से खासी आती है।

हँसी मे बिखेली भेल, (पू०)
हँसी मे विप पैदा हो गया।
हँसी-हँसी मे बिगाड हो गया।

हँसुवा के व्याह, खुरपा के गीत, (पू०)
असंगत काम।
हँसुवा=हँसिया, घास वगैरह काटने का एक औजार।

हँसुवा चोख न, खुरपा भोतर, (पू०)
दोनो निकम्मे। हँसिया भी तेज नही, और खुरपा भी मोथरा।

हँसुवा दूर की पड़ोसिन की नाक, (स्त्रि०)
पडोस की एक स्त्री दूसरी स्त्री से हमेशा लडने को तैयार रहती है, उसी से अभिप्राय मे क०।

'हँसुवा रे! तू टेढ़ काहे?' 'आ तो अपना गो से' (पू० स्त्रि०)
'क्यो रे हसिया! तू टेढा क्यो?' जवाव मिला—'अपने मतलव से।' हसिया टेढा न हो, तो घास नही काट सकता। मनुष्य को अपना काम वनाने के लिए टेढा वनना पडता है।

हँसे तो औरों को, रोवे तो अपनो को
मनुष्य अगर प्रसन्न रहे, तो दूसरे भी उसे देखकर प्रसन्न होते है, अथवा उसके साथ हँसते है और यदि वह रोने वैठ जाए, तो उसे अकेला ही रोना पडेगा, मतलव कोई उसके साथ रोने नही आएगा।

हँसे तो हँसिये, अड़े तो अडिये
जो जैसा करे,उसके साथ वैसा ही वर्ताव करना चाहिए।
अडना=झगडा करना।

हक अल्ला, पाक जात अल्ला, (मु०)
ईश्वर सत्य है, पवित्र है।

हक कड़वा है
सत्य कडवा होता है।

हककर, हलालकर, दिन मे सौ वार कर, (मु०)
सही और उचित काम कर, धर्म का काम कर, दिन मे सौ वार कर।

हक कहने से अहमक बेजार
बेचारा मूर्ख सच नही बोल पाता। अथवा मूर्ख को सच से चिढ होती है।

हक कहे से मारा जाय
सच कहनेवाले को जान से हाथ धोना पडता है।

हक कहे सो दाढ़ीजार, (स्त्रि०)
सच कहनेवाले को गालिया सुननी पडती है।
दाढीजार=एक गाली।

हक का राजी खुदा है, (मु०)
ईश्वर को सच पसद है।

हक का साथी खुदा, (मु०)
ईश्वर सच बोलनेवाले की मदद करता है।

हकदार तरसें, अगार बरसें
जो हकदार का हक छीनता है, उस पर अगारे वरसते हे।

हक न पावे, इनाम, (पू०)
नियमानुसार जो मिलना चाहिए, वह तो उसे कोई देता नही, इनाम चाहता है।

हक नाम अल्ला का, (मु०)
सत्य नाम परमात्मा का है।

हक सब को प्यारा
सत्य सब को प्रिय है।

हक हक हे और ना-हक ना-हक
सही सही है और गलत गलत।

हकीम को कारूरे से लाज
कोई मनुष्य व्यवसाय से सम्बन्ध रखनेवाली चीज से घृणा करे, तो काम कैसे चल सकता है?
कारूरा=पेशाव।

हग न सकें पेट को पीटें
स्वय काम न कर सकें, दूसरो को दोष दे।

हगा, न घर रक्खा
दोनो दीन से गए, न इधर के रहे न उधर के। (कथा है कि एक वार किसी राजा ने शास्त्रार्थ मे एक जाट से हार मान ली और उसे वचन दिया कि जो तुम मागोगे, वही देगे। इस पर जाट ने कहा कि मैं आपके विछौने पर हगूगा। राजा उससे चकि

[illegible]

हमारे [illegible] आते है. (स्त्रि०)

[illegible]

हज का हज, [illegible]ज का [illegible]ज. (मु०)

[illegible] और [illegible] काम में भी [illegible]।

([illegible])

पाठा०—हज का हज, वणिज का वणिज।

हजामत हो गई

ठगे गए, मूर्ख बना लिए गए।

हजार आफतों है एक दिल लगाने में

प्रेम करना एक मुसीबत की चीज है।

हजार इलाज और एक परहेज

रोगी के लिए नियम-संयम से रहना, हजारों इलाज से कहीं अच्छा है।

हजार कहो इसके कान पर एक जूं नहीं चलती

कोई जब किसी की बात पर ध्यान न दे, तब क०।

हजार जूतियां मारूं और एक न गिनूं

बहुत पीटने के लिए क०।

हजार जूतियां लगीं और इज्जत न गई

बेशर्म के लिए क०।

हजार दवा और एक दुवा

हजार दवाओं से उतना लाभ नही होता, जितना ईश्वर की एक प्रार्थना से।

हजार नियामत और एक तन्दुरुस्ती

तन्दुरुस्ती हजार नियामतों के बराबर है। [illegible]।

हजार मन का रेला और नन्हीं नांव

[illegible] आदमी आगे को धकेल और [illegible], तब०।

रेला [illegible]। बोलचाल की भाषा में [illegible] छोटे [illegible]।

हजार भडुए मरें तो एक खिदमतगार हो

व्यंग्य। (अंग्रेजों के जमाने में जो नौकर उनकी मेज पर खाना लगाते थे, वे खिदमतगार कहलाते थे और [illegible] के लिए बदनाम थे।)

हजार रंडियां मरें तो एक आया हो

व्यंग्य।

(यह कहावत भी ऊपर की कहावत की तरह ही है। अंग्रेजों के यहा जो नौकरानी उनके बच्चो को खिलाया करती थी, वह आया कहलाती थी और प्रायः दुश्चरित्रा होती थी।)

हजार लाठी टूटी, तो भी घर-बार के बासन तोड़ने को बहुत है

भले ही बूढ़े हो गए हो, पर दम तो अब भी है।

हजारो घड़े पानी के पड़ गये

बहुत शर्मिन्दा हुए।

हज्जाम का उस्तरा मेरे सिर पर भी फिरता है, तुम्हारे सिर पर भी।

जैसा मैं हू वैसे ही आप। एक आदमी उतना ही अच्छा हो सकता है, जितना दूसरा, बल्कि उससे भी अच्छा हो सकता है।

हज्जाम का टका

कही नही जाता। चाहे जैसे बाल बनाये पर एक टका उसे मिलेगा ही। ऐसा मुनाफा जिसमे कोई खतरा नही।

हज्जाम का लडका पहले उस्ताद का ही सिर मूंड़ता है

स्पष्ट। जब कोई अपने गुरु को ही चूना लगाए, तब क०।

हज्जाम के आगे सबका सिर झुकता है
वक्त पर सबको सिर झुकाना पडता है।

हड़काया कुत्ता
भडकाया हुआ कुत्ता। ऐसा व्यक्ति जिसे किसी की शह मिल गई हो।

हडकाया वन गया
दूसरो की वातो मे आ गया, भडक गया। पागल हो गया।

हड़काया भला, परकाया न भला, (पू०)
पागल अच्छा, दुतकारा अच्छा नही।

हड़ खायें, उगलें बहेड़ा
कहे कुछ, करे कुछ।

हड्डी खाना आसान, पर पचाना मुश्किल
रिश्वतखोर के लिए क०।

हथिया चले न पैयां, बैठे दे गुसैयां, (पू०)
आलसी के लिए क०।

हथिया वरसे, चित्रा मंडराय, घर बैठे किसान रिरियाय, (कृ०)
हस्त नक्षत्र मे वर्षा होने और चित्रा मे केवल वादलो के घिरने से फसल को हानि होती है।
(हस्त नक्षत्र अक्टूबर मे और चित्रा नववर मे लगता है।)

हथिया वरसे तीन होत हैं, शक्कर, शाली माश।
हथिया वरसे तीन जात हैं, तिल्ली कोदो, कपास। (कृ०)
हस्त नक्षत्र मे वर्षा होने से ईख, धान और उर्द की दाल, इन तीन की फसल को लाभ और तिली, कोदो तथा कपास को हानि पहुचती हे।

हथियों से गन्ने खाने
हाथी से गन्ना छीन कर खाना।
जानवूझकर वडे आदमी की दुश्मनी मोल लेना।

हयेली का फफोला
चौवीसो घटे की मुसीवत। कष्टदायक मनुष्य।

हथेली पर जहर रक्खा रहो, खायेगा सो मरेगा
जो खतरनाक काम करेगा, वही हानि उठायेगा।

हथेली पर जान लिये फिरता है
मरने से नही डरता।

हथेली पर सरसों जमाते हैं
काम करते ही तुरत उसका लाभ उठाना चाहते हैं। मुह से वात निकालते ही काम हो जाए, ऐसा चाहते हैं।
(सरसो बहुत शीघ्र जमती है, इसी से कहावत की सार्थकता है।)

हनोज दिल्ली दूर है
अभी दिल्ली दूर है। अभी वहुत काम वाकी पडा हे। अयोग्य या मूर्ख का काम जल्दी पूरा नही होता।
हनोज=अब भी, अभी तक।

हनोज रोज अव्वल
अभी तो पहला ही दिन है। उन्नति की अव भी आशा है। अव भी चीज को सुधारा जा सकता है।

हप, हप, झप, झप खाते, हां, धंधा करते तजते प्रान
कामचोर के लिए क०।

हम क्या राड़ के जंवाई हैं?
क्या लावारिस है?

हम खुरमा ओ हम सवाव, (फा०)
खाने का खाना और उसका पुण्य भी।
खुरमा अर्थात छुहारा मुसलमानों में वहुत पवित्र माना जाता हे।

हम घोडे, वाजार सकरा
अहकारी के प्रति क०, जो अपने को वड़ा और दूसरो को छोटा समझता हे।

हमने क्या गधे चराये हैं?
क्या हम मूर्ख है?

हमने क्या घास खोदी है?
क्या हम कुछ जानते नही?

हमने भी तुम्हारी आखें देखी हैं
हम भी तुम्हारी तरह ही हैं। हमें धौंस मत दिखाओगे।

हमने लिया, तुम लीजियो, राह राह जाने दीजियो
साधारण वाक्य है। कोई आदमी सदेश लेकर जा रहा है। उसके सम्वन्ध मे कहते हैं कि उसे छेड़ना नही, अपनी राह जाने देना।

हर के भजे सो हर का होय, जात पांत पूछे नहिं कोय

जो ईश्वर का स्मरण करता है, वही उसे प्रिय होता है।

हरखे पितर तिलंजल पाये

पुरखो का श्राद्ध करने से वे प्रसन्न होते है।

हर जैसे को तैसा

(१) जो जैसा करता है, भगवान उसे वैसा ही फल देता है।

(२) जिसकी जैसी भावना होती है, ईश्वर उसे वैसा ही फल देता है।

हर देगी चमचा, (स्त्रि०)

हर देग के लिए चमचा।

(१) हरफन मौला।

(२) अविश्वासी पति के लिए भी क०।

हर निवाले विस्मिल्ला, (मु०)

जो हमेशा खाने को तैयार रहे, पर काम कुछ न करे, उसे क०।

हर वार गुड मीठा ?

जव कोई हमेशा ही अपनी सफलता चाहता हो, तव क०।

(कथा है कि एक लडका किसी वनिए की दूकान पर नौकर था। उसे रोज घडे मे से गुड चुराकर खाने की आदत पड गई थी। एक दिन उस वनिए ने अनुभव किया कि गुड कोई अवश्य चुरा कर खा लेता है क्योकि घडा वहुत खाली था। चोर को पकड़ने की गरज़ से उसने गुड के घडे को उठाकर अलग रख दिया और उसके स्थान पर विरोजे से भरा एक दूसरा घडा रख दिया। दूसरे दिन रोज़ की तरह लड़का वहा पहुचा और गुड के धोखे विरोजा निकाल कर खा गया, जिससे उसका मुह चिपक गया। इस तरह वनिये को चोर का पता चल गया और लडके की उसने खूव मरम्मत की। इसी से कहावत चली।)

हर भूम का राज

अत्याचारी शासन के लिए क०।

(हर भूमि इलाहावाद के निकट एक छोटा गाव है, जहा का जमीदार वडा अत्याचारी था। इलियट ने अपनी Glossory (अभिधान) मे इस कहावत की की यही व्याख्या की है।)

हर रोज ईद नेस्त कि हलवा खुर्द कसे, (फा०)

हर रोज ईद नही होती कि हलवा खाने को मिले। हर एक चीज़ का समय होता है।

हर रोज कुआ खोदना और नया पानी पीना

रोज़ कमाना, रोज़ खाना। कठिनाई मे जीवन विताना।

हर शव शवे वरात है, हर रोज रोजे ईद

(१) (मन अगर चगा है तो) रोज़ शव-वरात और रोज़ ईद है।

(२) वहुत शान-शौकत से रहनेवाले व्यक्ति के लिए भी कह सकते है।

शवे-वरात=मुसलमानो का एक त्योहार, जिसमे आतिशवाजी छोड़ी और मिठाई वाटी जाती है।

ईद=मुसलमानो का प्रसिद्ध त्योहार।

हराम का वोल उठता है, हलाल का झुक जाता है

असल जहा विनम्रता से सिर झुका लेते हैं, वहा कम असल वेधड़क वोल उठता है।

हराम की कमाई, हराम में गंवाई

वुरी कमाई वुरे काम मे खर्च होती है।

हराम कोठे चढ़ के पुकारता है

वुरा काम छिपा नही रहता, अपने आप प्रकट हो जाता है।

हराम खाना औ शलजम, (मु०)

अन्याय का (अथवा मुफ्त का) खाना, सो भी शलजम (तात्पर्य यह कि जव ईमान ही विगाडा तो शलजम क्यो खाए, फिर तो हलवा-पूडी खाना ही अच्छा।)

हरामखोरी मुश्किल से छूटती है

रिश्वतखोरी (या कामचोरी) मुश्किल से छूटती है।

हराम चालीस घर ले कर डूवता है

दुश्चरित्र आदमी अपने साथ दूसरो को भी वदनाम करता है।

हरामजादे की रस्सी दराज है

वदमाशो से कोई कुछ नही कह पाता।

[illegible] है।

हरामजादे से खुदा भी डरता है

[illegible]।

हराम से बड़ा गया है

हरामखोरों [illegible] पर व्यंग्य।

हरिपुर [illegible], [illegible] [illegible], (हि०)

[illegible] है।
([illegible] है।)

हरिया हाथी [illegible] पीर, दोनों के बिगड़े और न मिले

[illegible]
[illegible]।

हरि सेवा सोलह बरस, गुरु सेवा पल चार।
तो भी नहीं बराबरी, वेदों किया विचार।

[illegible] गुरुओं ने इस प्रकार अपने गुरुपने का [illegible] किया।

हरी की माया, छिन में धूप, छिन में छाया, (हि०)

ईश्वर की लीला पर क०।

हरी खेती, गाभन गाय, मुंह पड़े तब जानी जाय, (कृ०)

जब तक खेत का अनाज घर में न आ जाय, और गाय भी न बियाए, तब तक क्या पता क्या हो?

हरे रूख पर सब परिंद बैठते हैं, ठूंठ पर कोई नहीं बैठता

जहां से कुछ मिलने की आशा होती है, सब वहीं जाते हैं। धनी का सब आश्रय लेते हैं।

परिंद = पक्षी।

हलक का न तालू का, यह माल मियां लालू का

(१) बुरी चीज या अन्याय से उपार्जित धन के लिए क०।

(२) कंजूस की चीज के लिए भी कह सकते हैं, उसे आसानी से कोई नहीं पा सकता।

हलक़ के कोतवाल

बच्चों के लिए क०, जो भोजन की सामग्री में से स्वयं कुछ खाए बिना बड़ों को नहीं खाने देते।

हलक न तालू, खायें मियां लालू

किसी पेटू आदमी का मजाक उड़ाया गया है।

हलक रोवे जीभ टोवे

किसी को बड़ा शौकीन चीज खाने को मिली। तब यह क०।

हलक से निकली खलक में पड़ी

बात मुंह से निकली और दुनिया में फैली।

हलके पिछोड़े, उड़ उड़ जावें, (स्त्रि०)

ओछा अनाज पछोरो तो उड़ जाता है।

(१) ओछा आदमी घमंडी होता है।

(२) ओछे से किसी बात की आशा नहीं करनी चाहिए।

(३) ओछे में गंभीरता नहीं होती।

हलवाई की जाई और सोवे साथ कसाई

धर्म भ्रष्ट करना। हलवाई हिन्दू होते हैं और कसाई मुसलमान।

जाई = बेटी।

हलवाई की दूकान और दादा जी का फातिहा, (मु०)

हलवाई की दूकान पर जाकर (अर्थात उनके मत्थे) दादा जी का फातिहा मनाना।

दूसरे के पैसे पर वाहवाही लूटना।

(मरे हुए आदमी के नाम पर जो चढ़ावा बांटा जाता है, वह फातिहा कहलाता है।)

हलवा खाने को मुंह चाहिए, अथवा
हलवा-खुरदन राअए बायदा, (फा०)

(१) अच्छी वस्तु पाने के लिए वैसी योग्यता भी चाहिए।

(२) हलुवे में पैसा बहुत लगता है। हर आदमी नहीं खा सकता, इसलिए भी क०।

हलवा पूरी बांदी खाय, पोता फेरने बीवी जाए

निकम्मे नौकरों के लिए क०।

हलवा-पूरी बीवी खाय, पुड़ा पिटावन बांदी जाय

हलवा-पूरी खाने के लिए तो बीवी, और पिटने के लिए बांदी।

हलवाही चरवाहे को!

चरवाहे को हल चलाने का काम सौंपना।

जिसका जो काम नही, उससे वह काम लेना।

हलाल मे हरकत, हराम में बरकत

सज्जन दुख पाते है, और बुरे मौज करते है, दुनिया की रीति।

हल्दी की गांठ हाथ लगी, चूहा पसारी ही बन बैठा

जब कोई थोडा धन या थोडी विद्या पाकर ही अपने को बडा समझ बैठे, तब क०।

हल्दी जर्दी ना तजे, खटरस तजे न आम।
जो हल्दी जर्दी तजे, तो ओगुन तजे गुलाम।

हल्दी भले ही अपना पीलापन और आम अपनी खटाई छोड दे, पर नीच अपनी नीचता नही छोडता।

हल्दी लगी न फिटकरी, पटाक बहू आन पड़ी

जब कोई मुफ्त मे ही अपना काम बना ले, तब क०।

हल्दी लगे न फिटकरी, रग चोखा ही आवे

मनुष्य जब बिना खर्च किए ही काम अच्छा चाहता है, तब क०।

(हल्दी फिटकरी, कपडा रगने के काम आती है।)

हवाई दीदा

शोहदे के लिए क०, जो हमेशा इधर-उधर नजर फेकता रहता है। दीदा=आख।

हवा के घोड़े पर सवार है

(१) लब-तडगी हाकनेवाले के लिए क०।

(२) बहुत जल्दबाज के लिए भी क०।

हस्त ओ नेस्त बराबर है

उसका होना न होना (मेरे लिए) बराबर है।

हस्ती का क्या भरोसा?

जिंदगी का भरोसा क्या?

हां करो या ना करो

आखिर, कुछ तो कहो। जो कुछ कहना हो स्पष्ट कहो।

'हांजी हांजी' सब से कीजे, करिए अपने मन की

सबको खुश रखकर जो अपने को ठीक लगे, वही करना चाहिए।

हाड़ी का भात छुपे, मुह की बात न छुपे

भात हाडी मे छिप सकता हे, पर मुह पर आई बात नही छिपती, वह प्रकट होकर रहती है।

हाडी न डोई, सब पत खोई, (स्त्रि०)

स्त्री की पति से शिकायत कि घर मे कुछ नही है, सब इज्जत बर्बाद कर दी।

हांड़ी मे अच्छत ना 'चला समधी जेंवे', (पू०)

कोरी शान बघारना।

हाड़ी में होगा सो डोई मे आप ही आवेगा

मन मे जो बात होगी, वह अपने आप सामने आएगी।

हाड़े से दांड़ा भला

बेकार घूमने की अपेक्षा तो बद होकर बैठना अच्छा।

हांसी बैरी बइयर की, खासी बैरी चोर की

हँसी-दिल्लगी से औरत बिगडती हे ओर खासने से चोर पकडा जाता है।

हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाडी न खड़ा हो

हाकिम के आगे खडे होने से वह मन मे नाराज हो सकता है, घोडे के पीछे खडे होने से उसकी दुलत्ती लग सकती है।

हाकिम के आंख नही होती, कान होते हैं

अफसर सुनी हुई बात मान लेते है, स्वय आख से नही देखते कि वह कितनी सच या झूठ है।

हाकिम के तीन, शहना के नौ

हाकिम के तीन और कर्मचारी के नौ हिस्से होते है। हाकिम के पास (रिश्वत मे) जो कुछ पहुचता है, उससे अधिक नीचे के क्लर्क ओर चपरासी खा जाते है।

शहना=चौकीदार, चपरासी।

हाकिम के मारे ओर कीचड़ के फिसले का किसने बुरा माना है?

हाकिम के हाथ से पिटने और कीचड मे रिपट कर गिरने का बुरा नही मानना चाहिए। व्यग्य मे ही कहा गया है।

हाकिम, दो जाननेवालो मे एक अनजान

वादी और प्रतिवादी दो ही सच्चा हाल जानते है, न्यायाधीश कुछ नही जानता।

हाकिम महकूम की लड़ाई क्या?

अधीनस्थ अपने अफसर से लड ही कैसे सकता है?

हाथी का बंधा [illegible] नहीं रहता
[illegible] है, क्योंकि उस पर [illegible] है।

हाथी पर चढ़ साईं, कौड़ी [illegible]
[illegible] है, [illegible] कोई नहीं।
[illegible] है, और [illegible] है।

हाथी का दांत, गैंडे की खाल, मुर्गी का अंकुर
(१) [illegible]।
(२) हाथी के [illegible] है, तू हाथी के दांत [illegible] मुर्गी के [illegible]।

हाथी का दांत निकला [illegible] निकला
(१) कोई बात मुंह [illegible] गई सो [illegible] गई।
(२) [illegible] (वापिस) [illegible] गया, [illegible] गया।

हाथी का बोझ हाथी ही उठाता है
(१) बड़ों का भार बड़े ही [illegible] है।
(२) बड़े कठिन काम को वही कर सकता है, जो उसे करने की क्षमता रखता हो।

हाथी का पीर आंकुस
हाथी अंकुश से ही डरता है।
पीर - महात्मा, सिद्ध, ऐसा व्यक्ति जिसके वश में देवी-देवता रहते हों।

हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और
कोई आदमी जब कहे कुछ और करे कुछ, तब क०।

हाथी के पाव मे सब का पांव
बड़ों के साथ बहुत-से छोटे लोगों की गुजर होती है।

हाथी घोड़ा बहा जाए, गदहा कहे 'कितना पानी'
जिस काम को बड़े भी न कर सकें, छोटे उसे करने का दुस्साहस दिखाए।

हाथी चढ़े कुत्ता काटे
हाथी पर सवार आदमी को कुत्ते ने काट खाया। होनी को कोई रोक नही सकता।

हाथी निकल गया, दुम रह गई
(१) जब किसी बड़े काम का बहुत भाग [illegible] जाने को बाकी रह जाए, तब क०।
(२) काम का एक बड़ा हिस्सा हो जाए, पर थोड़े मे अगमजग रह जाए, तब भी क०।

हाथी फिरे गांव गांव, जिसका हाथी उसका नांव
(१) किसी बड़ी या मूल्यवान वस्तु के असली मालिक का नाम छिपा नही रहता।
(२) किसी बड़े काम को करने वाले का नाम भी नही छिपता।

हाथी हजार लुटा, तो भी सवा लाख टके का
(१) बड़ा आदमी कितना भी गरीब हो जाए, तो भी साधारण आदमी से तो उसकी स्थिति अच्छी रहती ही है।
(२) मरा हाथी भी दांत और हड्डियों के लिए बहुत दाम मे बिकता है, इसलिए भी क०।

हाथों मेंहदी पावों मेंहदी, अपने लच्छन औरां दें दी, (स्त्रि०)
किसी विधवा के हाथ-पैरो मे मेंहदी लगाई, तब उससे कहा जा रहा है कि तू अपने मे (बुरे) लक्षण औरो को भी सिखा रही है।
(मेंहदी लगाना सुहागिन का ही काम है, विधवा लगाए, तो उसे गई-बीती समझना चाहिए।)

हाथों हाथ बिक गया, (व्य०)
तुरन्त बिक गए माल के लिए क० ।

हान, लाभ, जीवन, मरन, जस, अपजस, विध हाथ
ये सब ईश्वर के हाथ है।

हानी को हनिये, पाप-दोष ना गिनिये
पापी को मारने मे कोई पाप नही लगता।
पाठा०—हते को हनिए .।

हाय री जवानी !
जवानी की मूर्खताओ पर क०।

हाय रे बुढ़ापे !
जवानी के दिनो की याद करके कोई अपने बुढापे पर दुख प्रकट कर रहा है।

हार का न्याव क्या ?
हारी हुई बाजी के लिए क्या किया जा सकता है ?

हार जीत किस्मत के हाथ
हानि-लाभ भाग्य के अधीन है।

हार जीत सब में रहे, हारे नहिं दातार
परमात्मा को छोडकर सभी के साथ हार-जीत लगी है, अर्थात सभी दुख भोगते है ।

हार मानी, झगड़ा जीता
जो हार मान लेता है, झगडे मे वही जीतता है । दो मे से एक व्यक्ति यदि अपना हठ छोड दे, तो झगडा मिट जाता है।

हार मे हार, न घर मे खेती
गरीबी हालत के लिए क०। न तो खेती होती है और न घर मे कोई धधा।
हार=(१) जगल, मैदान। (२) खेत।
खेती=(१) कृषि। (२) काम-धधा।

हारू तो हूरू, जीतूं तो हूरूं
हारने पर भी (मैं तुम्हे) नोचूगा, जीतने पर भी नोचूगा।
(१) जब हरहालत मे कोई अपनी ही जीत चाहे, तब क० ।
(२) इच्छा के विरुद्ध किसी से कोई काम नही कराया जा सकता ।

हारे के हर नाम
मनुष्य जब शरीर से शिथिल हो जाता है अथवा असहाय बन जाता है, तब उसे भगवान का नाम सूझता है ।

हारे जुआरो को कब कल पड़ती है ?
हारे जुआरी को चैन नही पडता, वह फिर जुआ खेलने की फिक्र करता है ।

हारे भी हरावे, जीते भी हरावे
जो सब तरह से अपनी ही जीत चाहे, उसके लिए क० ।

हारे भी हार, जीते भी हार
अदालत के मुकदमो पर क० । बहुत से मुकदमो मे इतना खर्च पडता है कि जीतने पर भी हानि ही रहती है।

हालका, न कालका; टुकड़ा रोटी, चमचा दाल का, (स्त्रि०)
ऐसा आदमी, जो किसी काम का न हो ।

हाल का, न रोजगार का
निकम्मा आदमी।

हाल गया, अहवाल गया, दिल का ख्याल न गया
स्वास्थ्य गया, पैसा गया, पर बुरी आदत न गई।

हाल में फाल, दही मे मूसल
जब चैन से गुजर रही हो, तब ज्योतिषी के पास जाकर भाग्य पूछना बिल्कुल ही मूर्खता है। दही के लिए मूसल की जरूरत नही पडती। अथवा हलवाहा हाकनेवाला अच्छा, और बैल चलनेवाला अच्छा।

हाली का पेट सुहाली से नहीं भरता, (कृ०)
हलवाहे का पेट सुहाली से नही भरता, उस जैसे परिश्रमी के लिए तो अधिक भोजन चाहिए।
सुहाली=मोमन दी हुई बढिया किस्म की पूडी होती है।

हासिद का मुंह काला
ईर्ष्या करनेवाले की फजीहत होती है ।

हा हा खाये बूढ़े नहीं व्याहे जाते
(१) कोई असगत काम हाथ-पैर जोडकर नही कराया जा सकता ।
(२) बूढे विनती करके नही व्याहे जा सकते, हा,यदि रुपया खर्च किया जाए, तो भले ही काम बन जाए ।

हिंदी न फारसी, लाला जी बनारसी
पढा-लिखा मनुष्य जब कोई मूर्खता दिखाए, तब व्यग्य मे।
(बनारस सस्कृत के विद्वानो का केन्द्र स्थल है ।)

हिंदू मुसलमान का चोली दामन का साथ है
दोनों का घनिष्ठ सबध है, एक के बिना दूसरा रह नही सकता।
(अचकन या अगरखे के ऊपर का हिस्सा जो कमर तक बदन से चिपका रहता है, चोली और नीचे का ढीला-ढाला हिस्सा दामन कहलाता है।)

हिकमते चीन, हुज्जते बंगाला, (फा०)
चीन की हिकमत (कारीगरी) और बंगाल की हुज्जत (झगड़ालू) [illegible] है।

हिमायती की घोड़ी इराकों को लात मारे
(१) [illegible]
(२) [illegible] आदमी की घोड़ी [illegible]

हिम्मते मरदाँ, मददे खुदा, (फा०)
जो (काम करने में) हिम्मत करता है, ईश्वर उसकी सहायता करता है। अतः मनुष्य को उद्योग करना चाहिए, ईश्वर सहायता करता है।

हिरनी टट्टू
ईर्ष्यालु आदमी।

हिरी फिरी [illegible], जलवे के वक्त टल गई, (मु०)
नव-विवाहिता [illegible] ससुराल आई है, कोई [illegible] बार-बार उस [illegible] पर [illegible] जलवा-दिखाई करने का वक्त आया तो [illegible] गई। इसी से कहा० का प्रयोग तब करते है, जब कोई मनुष्य किसी काम में उत्साह तो बहुत दिखाए, पर जब कुछ खर्च करने का मौका आए तो गायब हो जाए। (मुसलमानों में जलवा का दस्तूर होता है, जिसमें बहू पहले-पहल ससुराल आने पर लोगों के सामने अपना मुह खोलती है। इस अवसर पर बहू को भेंट देने का रिवाज है।)

हिरे फिरे खेत में को राह
सब कुछ देख रहा है, फिर भी खेत में होकर ही जाता है। जानबूझकर गलत काम करना।

हिल न सकू, मेरे सौ बखरे, (स्त्रि०)
(१) हिल नही सकता, फिर भी कहता है कि मेरे सौ बखर (हल) चलते है। [illegible] शेखी मारना।
(२) [illegible] अर्थ [illegible] हो सकता है। तब कहा० का अर्थ हो जाएगा—काम कुछ न करे, पर [illegible] पूरा मांगे। आलसी के लिए कहते है।

हिसाब न मुलाहजा, मजे बैठे ही निलाय
चोर आलसी और कामचोर के लिए क०।

हिसाब-ए-दोस्ताँ दर दिल, (फा०)
दोस्तों का हिसाब दिल में रहता है।

हिसाब जौ जौ, बख्शीश सौ सौ, (फा०)
हिसाब एक एक पाई का करना चाहिए, इनाम में चाहे सैकड़ों दे दे।

हिसाब-ज्यों का त्यों, कुनबा डूबा क्यों ?
बार-बार हिसाब लगाने या नाप-जोख करने पर भी जब किसी भूल या कारण समझ में न आए, तब क०। (कथा है कि कोई सेठ जी सपरिवार बैलगाड़ी पर यात्रा कर रहे थे। रास्ते में उन्हे एक नदी मिली। वे तुरन्त गाड़ी पर से उतरे और नदी के भिन्न-भिन्न स्थानों के जल को नाप डाला। औसत मे पानी गाड़ी के पहिए के बराबर साबित हुआ। तब अपने उस हिसाब के अनुसार यह सोचकर कि खतरे की कोई बात नही और गाड़ी मजे में पार हो जाएगी। उन्होंने गाड़ीवान से गाड़ी को नदी में होकर ले चलने के लिए कहा। पर आगे पानी गहरा था और गाड़ी जब वहा पहुची, तो डूबने लगी, साथ ही सेठ जी के बच्चे गुड़ुर-गुड़ुर करने लगे। वे इस पर बड़े परेशान हुए। उन्होने फिर अपना हिसाब लगाया और उसे ठीक पाया। तब उपरोक्त बात कही। अल्पविद्या हानिकर होती है।)

हिसाब नित नया
(१) हिसाब का नित नया खाता खोलना चाहिए, तात्पर्य पुरानी बातो को भूल जाना चाहिए।
(२) रोज पिछला हिसाब देख लेना चाहिए, जिसमें उसे भुलाया न जा सके।

हिसाब लेब, कि बनिया डाड़ब ? (भो०)
हिसाब लोगे या मुझे बनिया समझकर धीगा-मुश्ती करते हो ?

वनिया डाडव=वनिया का-सा दड दोगे।

हींग हगते फिरोगे

अपने कर्मों का दड भोगोगे, पडे-पडे रोओगे।

हीजड़े की कमाई मुड़ानी मे गई

क्योकि अपने चेहरे को सुन्दर और ओरतो जैसा बनाये रखने के लिए वह रोज-रोज हजामत वनवाता है।

हीजड़े के घर बेटा हुआ

जव कोई मनुष्य किसी ऐसे काम को करने का दावा करता है, जो उसके लिए असभव हो, तव क०।

हीनी पुड़िया, छत्तीस रोग

(१) घटिया दवा से छत्तीस रोग पैदा होते है। अथवा (२) छत्तीस रोगो से ग्रस्त है और घटिया दवा का आश्रय लेते है।

हीरे की कदर जौहरी जाने

गुण की परख गुणी ही कर सकता है।

हीले रिजक, बहाने मौत

हीले से ही रोजी मिलती है, और बहाने से मौत होती है। आशय यह है कि ईश्वर ही रोजी देता है और वही मारता है। मनुष्य का प्रयास या रोग तो केवल एक उपलक्ष है।

हुड़रा रे ! वकरी चरँवे पठरू समेत ? (पू०)

क्यो रे भेडिये! क्या बकरी चरायेगा, बुकरेलू समेत ? वह तो इस काम के लिए तैयार ही वैठा है, पर उससे इस तरह की वात कहना महान मूर्खता है।

हुड़ार चीन्हे बामन का पूत ? (पू०)

भेडिया ब्राह्मण के लडके को क्या पहचाने ? वह तो उसे भी खा जाएगा।

कोई दुष्ट भले आदमी को सताए, तव क०।

अदालत के रिश्वतखोर कर्मचारियो के लिए क०, जो किसी की रू-रियायत नही करते।

हुकूमत की घोड़ी और छः पसेरी दाना

हाकिम की घोडी छ पसेरी दाना खाती है। वास्तव मे वह खाती तो एक पसेरी ही होगी, वाकी नौकर-चाकर उड़ाते हैं।

हुक्का अफीमी का

अफीमची ही हुक्का पीना जानता है।

हुक्का चार वक्त अच्छा; सोके, मुह धो के, खाके, नहाके और चार वक्त बुरा—आंधी में, अंधेरे में, भूक मे ओर धूप मे

स्पष्ट।

हुक्का पैर दौड़ी का, रोटी किस्मत की

(१) हुक्का चलने-फिरने से मिल जाता है, जहा जाओ वहा लोग पिला देते है, पर रोटी भाग्य से ही मिलती है। (२) हुक्का के लिए आग लाने जाना पड़ता है।

हुक्का भर बड़ो को दीजे, जव सुलगे तब आप ही लीजे

स्पष्ट।

हुक्के का शिष्टाचार।

हुक्का यकदम, दो दम, सिह दम बाशद, न कि मीरासे-जद्दो-आम बाशद, (फा०)

हुक्का एक फूक, दो फूक, वा तीन फूक पीना चाहिए, उसे अपनी मीरास या बपौती नही समझ लेना चाहिए। जहा चार आदमी वैठे हो, वहा बारी-बारी से सवको हुक्का देना चाहिए, यह नही कि उसे स्वय ही गुड-गुड पीते रहें।

हुक्का, सुक्का, हुरकनी, गूजर और जाट;
इनमें अटक कहा, बाबा जगन्नाथ का भात।

इनमे छूतछात नही मानी जाती।

सुक्का=सुघनी।

हुरकनी=वेश्या।

हुक्का हर का लाड़ला, रक्खे सब का मान।
भरी सभा मे यू फिरे, ज्यूं गोपिन में कान।

हुक्के की प्रशसा मे।

हुक्का हुक्म खुदा का, चिलम बहिश्त का फूल।
पीवें मर्द खुदा के, घूरें नामाकूल।

यह भी धूम्रपान की प्रशसा मे।

हुक्के ओर वातों मे वैर है

हुक्का पीते समय वात नही की जा सकती।

हुक्के का मजा जिसने जमाने में न जाना।
वह मर्द मुखन्नस है, न औरत, न जनाना।

हुक्का पीनेवालो की उक्ति।

हुक्के पानी का सुख

सब तरह का आराम।

हुक्के से हुरमत गई, नेम गया सब छूट।
पगड़ी बेच तमाखू लिया, गई हिये की फूट।

स्पष्ट। धूम्रपान की निदा।

हुरमत=इज्जत।

नेम=नियम, धर्म।

हुक्म के साथ सब कुछ मौजूद है

अधिकार होने पर सब चीज सुलभ रहती है।

हुक्म निशानी बहिश्त की, जो मांगे से पाए

हुकूमत वहिश्त है, उससे सब कुछ मिल सकता है।

हुक्मी बंदा जन्नत मे

बडो की आज्ञा माननेवाला स्वर्ग जाता है।

हुक्मे हाकिम मर्गे मफाजात, (फा०)

हाकिम का हुक्म आकस्मिक मृत्यु के समान है; एक मुसीबत है।

हुजूरी की मजदूरी भली

मालिक की नजर के सामने ही काम करना अच्छा होता है, क्योकि तब वह उसकी कद्र कर सकेगा।

हुज्जती ला उम्मती, (मु०)

तर्क करनेवाला सशयवादी होता है, वह यकायक किसी बात मे विश्वास नही करता।

हुनरमंद भूखा नहीं रहता

स्पष्ट।

हूं सजनी जानत नही, पिय बिछुडन को सार।
जिय बिछुड़न से कठिन है, पिय बिछुड़न की बार।

स्पष्ट।

सार=तत्व, परिणाम।

हूर भी सौकन को डायन से बुरी है, (स्त्रि०)

सौत परी के समान भी सुदर हो, तो भी डायन से भी बुरी होती है। सौतिया डाह पर क०।

हेर फेर आवे तो काकड़ी मटकावे, (ग्रा०)

यदि वह फिर मेरे पास आ जाए, तो ककडी खाने को मिले।

(कथा है कि किसी ग्रामीण को एक मोहर मिल गई। उसका वास्तविक मूल्य न जानकर उसने उसे एक शरीफ के हाथ इस शर्त पर बेच दिया कि वह उसे नित्य प्रति एक पैसा ककडी खाने को दिया करेगा। बहुत दिनो तक उस ग्रामीण को एक पैसा रोज मिलता रहा। अत मे एक दिन शरीफ ने उसे टरका दिया, तब उसने उक्त वाक्य कहा।)

है मर्द वही पूरे जो हर हाल मे खुश है

साहसी मनुष्य वही है, जो हर परिस्थिति मे प्रसन्न रहे।

हैं घट मे, सूझे नही, कर से गहा न जाय।
मिला रहे और ना मिले, तासे कहा बसाय।

स्पष्ट। ईश्वर के लिए कहा गया।

है आदमी, है काम, नहीं आदमी, नही काम

(१) जब तक मनुष्य जीवित रहता है, उसे हजार काम लगे रहते हैं, मरने पर सब काम भी खतम हो जाते है। अथवा

(२) तुम अगर मनुष्य हो, तो तुम्हारे लिए काम की कमी नही। नही हो, तो काम भी नही है।

है घरनी घर गाजत है, नहि घरनी, घर पादत है, (पू०)

स्त्री के बिना घर की शोभा नही होती।

होठ चाटने से प्यास नहीं बुझती

जहां बहुत की आवश्यकता हो, वहा थोडे मे काम नही चलता।

होठ से निकली हुई पराई बात

मुह से बाहर निकलते ही बात फैल जाती है, सबको मालूम हो जाती है।

होठ हिले न जिभिया खोलीं, फिर भी सास कहे बड़-बोली, (ग्रा०)

सास ने किसी बात पर बहू को डाटा, तब बहू कहती है कि मैंने तो मुह से कुछ कहा भी नहीं, फिर भी सास मुझे ढीठ बताती है।

होठो निकली कोठों चढी

मुह से निकली हुई बात धीरे-धीरे सब जगह फैल जाती है।

होठो से अभी दूध की बू नहीं गई

अभी तुम निरे बच्चे हो।

हो गई ढड्ढो, ठुमुक चाल कैसी ?
बुढिया हो गई, अब ठसक से चलना क्या ?

होड का कार, जी का भार
स्पर्द्धा का काम बडा कठिन होता है, चिन्ता रहती है।

होत का बाप, अनहोत की मां
सम्पत्ति मे ही पिता काम आता है, विपत्ति मे मा काम आती है।

होत की जोत है
जब तक तेल रहता है, तभी तक दीया जलता है, जब तक धन रहता है, तभी तक सब कुछ है।

होती आई है
परपरा से चली आई है।

होती आई है कि अच्छो के बुरे होते हैं
हमेशा से होता आया है कि ।

होती आई है कि अच्छो को बुरा कहते हैं
हमेशा से होता आया है कि ।

होते ही ना मर गये, जो कफन भी थोड़ा लगता
नालायक के लिए क०। मजाक मे भी प्रयुक्त करते है।

होनहार बिरवा के चिकने-चिकने पात
होनहार लडके के लिए क०, जो बचपन से ही अपनी योग्यता और प्रतिभा का परिचय देने लगता है।

होनहार मिटती नहीं, होवे बिस्वे बीस
जो होना है, वह अवश्य होकर रहता है।
बिस्वे बीस=बीस बिस्वा, (मु०) निस्सदेह।

होनहार हिरदै बसै, बिसर जाय सब बुद्ध
स्पष्ट। पूरा शुद्ध दोहा इस प्रकार है
होनहार हिरदै बसै, बिसर जाय सब सुद्ध ।
जैसी हो होतव्यता, तैसी उपजै बुद्ध ।

होनहार होके टले
दे०—होनहार मिटती नही. ।

होना नहोना खुदा के हाथ है, मार मार तो किये जाय
किसी काम का होना न होना तो ईश्वर के हाथ है, पर प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

होनी बलवान है
दे०—होनहार मिटती नही ।

होम करत हाथ जले, (हिं०)
भला करते बुरा हुआ। प्राय उस समय कहते है जब किसी के साथ कोई उपकार किया जाए और उसका नतीजा उल्टा हो।

होय भले के अनभला, होय दानी के सूम।
होय कपूत सपूत के, ज्यो पावक में धूम।
स्पष्ट।
अनभला=बुरा।

होला खाये मुंह हाथ दोनों काले
स्पष्ट।
होला=आग मे भुने हरे चने या मटर की फलिया।

होली का भडुआ है
फालतू आदमी। जिसका सब मजाक उडाये।

होश की (दवा) बनवाओ
अपने होश को ठिकाने करो।

हौसनाक बुढिया, चटाई का लंहगा, (पू०)
बेतुका शौक।
होसनाक=स्पर्द्धा करनेवाली।
पाठा०—शौकीन बुढिया. ।"

हौंस से रिस भली
स्पर्द्धा (या द्वेष) से शत्रुता अच्छी।

हौज भरे तो फव्वारे छूटें
जब खूब पैसा हो, तो खर्च भी खूब किया जाता है।

परिशिष्ट

अतिरिक्त कहावते

अधूरे काम और जनती लुगाई को कभी न देखे

अरुचि पैदा होती है।

जनती लुगाई=ऐसी स्त्री, जिसके वच्चा हो रहा हो।

असौज मे जो बरसे दाता, नाज नियार का रहे न घाटा, (कृ०)

क्वार के महीने मे पानी वरसने से फसल अच्छी होती है।

आँख, नाक, मुख मूंद के, नाम निरंजन लेय।
भीतर के पट जब खुलें, जब बाहर के पट देय।

एकाग्र चित्त होकर जो निरजन अर्थात कल्मष-शून्य भगवान है, उसका ध्यान करना चाहिए। भीतर के पट (द्वार) तभी खुलते है, अर्थात सच्चा ज्ञान तभी प्राप्त होता है, जब बाहर के पट बद कर दिए जाए, अर्थात काम, क्रोध आदि का रास्ता रोक दिया जाए।

आग, जवासा, आगरी, चौथा गाड़ीवान।
ज्यों-ज्यो चमके बीजरी, त्यों-त्यो तजें प्रान।

ज्यो-ज्यो विजली चमकती है, त्यो-त्यो आग, जवासा, आगरी और गाडीवान ये चारो घवराते है, अर्थात पानी वरसने से इन्हें हानि पहुचती है।

जवासा=एक प्रकार की काटेदार झाडी जो प्रथम वृष्टि होते ही मर जाती है,

आगरी=नोनिया नामक साग।

आता है हाथी के मुंह, जाता है च्यूंटी के मुंह

रोग के लिए क०।

आता वहुत जल्दी है, जाता मुश्किल से है।

आदमी चने का मारा मरता है

(मौत आने पर) चने की चोट से भी आदमी मर जाता है। जीवन की क्षणभगुरता पर क०।

आप डूबा सो डूबा, और को भी ले डूबा

अपने साथ दूसरो को भी हानि पहुचाई।

आप मिले सो दूध बराबर, मागे मिले सो पानी।
कहे कबीर वह रकत बराबर, जामे ऐंचातानी।

जो विना मागे मिले, वह दूध के वरावर (कीमती) है, जो मागने से मिले वह पानी है। कवीर कहते है, देनेवाले को जिसमे किसी तरह का कष्ट हो, वह रक्त के वरावर (घृणित और तुच्छ) है।

आपा तजे तो हरी को भजे

अहकार को छोडने से ही ईश्वर की उपासना होती है।

आसपास वरसे, दिल्ली पड़ी तरसे

जहा जिस चीज़ की वहुत जरूरत है, वहा तो वह न मिले पर और जगह सुलभ हो। एक दुख की वात। अथवा ईश्वर की विचित्र लीला।

आसमान की चील, जमीन की असील (मु०)

आसमान मे उडती हुई चील (जब तक किसी ने उसे देखा नही) अच्छे वश की ही चिडिया मानी जाएगी।

असील=उच्च कुल का।

उड़द कहे मैं सव से नीका,
सव पंचो मिल दीना टीका;
जब मेरे हों उड़दी वड़े,
तो गवरू खा जायं खड़े खड़े। (ग्रा०)

उडद की दाल की प्रशसा मे क०।

दे०—उडद कहे मेरे माथे टीका ..।

('सव पचो मिल दीना टीका' से अभिप्राय है कि मैं सव दालो मे प्रमुख हू। उडद पर सफेद छींटा तो होता ही है।)

ऊँट की बरसात मे कमबख्ती

क्योकि वह रेगिस्तान का जानवर है, कीचड मे चल नही पाता।

एक आसामी सौ अर्जियां

एक जगह, और उसके उम्मीदवार बहुत से।

एक झूठ के सबूत मे सत्तर झूठ बोलने पड़ते है

स्पष्ट।

एक आम अनुभव की बात।

एक पापी सारी नाव को डुबोता है

एक के बुरे काम का दड सारे समाज को भोगना पड़ता है।

एक बोटी, सौ कुत्ते

चीज़ तो एक और ग्राहक बहुत से।

एक शेर मारता है, सौ लोमड़िया खाती है

एक बडे की कमाई से दस छोटे लाभ उठाते है।

कट मर जायेंगे एक दिन, जो नर राखें बैर।
बकरे की मां कब तलक, रहे मनाती खैर।

जो मनुष्य दूसरो से वैर-भाव रखते है, वे एक दिन नष्ट हो जाएगे, बकरे की मा कब तक कुशल मनाएगी? (एक न एक दिन उसकी गर्दन पर छुरी फिरेगी ही)।

करना है सो आज कर, 'कल कल' मत ना कर।
चलता फिरता आदमी, छिन मां जावे मर।

जो भी (अच्छा) काम करना हो, सो कल के लिए न छोडकर आज ही कर लेना चाहिए, क्योकि ज़िदगी का कुछ ठिकाना नही।

करनी ही सग जात हे, जब जाय छूट सरीर।
कोई साथ न दे सके, मात, पिता, सुत, बीर।

मनुष्य के मरने पर उसके अच्छे कर्म ही साथ जाते है, मा-बाप, पुत्र या भाई--कोई साथ नही जाता।

कल्लर खेत रहे जिस पास;
वाके होय नाज न घास, (कृ०)

जिसके पास ऊसर खेत होता हे, उसके न तो अनाज ही पैदा होत. है, न घास।

कां काशी, कां काश्मीर, कां खुरासान, गुजरात।
तुलसी यां तो जीव को, परालब्ध लै जात।

भाग्य मनुष्य को न जाने कहा-कहा ले जाता है।

काजल की कजलौटी और फूलों का हार

रग कजलौटी जैसा काला और पहिनने को चाहिए फूलो का हार।

किसी वदसूरत का टिमाक से रहना।

कजलौटी=काजल रखने की डिबिया।

क़ाजी के मरने से क्या शहर सूना हो जाएगा?

किसी एक मनुष्य के मरने से--फिर वह कितना ही बडा क्यो न हो--दुनिया के काम नही रुकते।

काजी जी अपना आगा तो ढाको, पीछे किसी को नसीहत करना, (मु०)

पहले अपने दोष तो ढको, फिर दूसरो को उपदेश देना। (आप तो खुद नगे है।)

आगा=सामने का हिस्सा।

क़ाजी जी बहुतेरे हर ये, मै हारता ही नहीं

कोई कुछ कहे, मैं मानता ही नही। जिद्दी आदमी।

क़ाज़ी ब-दो गवाह राज़ी, (मु०)

दो गवाहो से अदालत को सतोष हो जाता है।

कातक मां जो सीत को, पिये सो लाभा पाय।
भादों मां जो कोई पिये, देवे ताप चढाय।

कार्तिक मे मठा पीने से लाभ और भादो मे पीने से हानि होती है।

काना, याना, लाड़ला, तीनों हट की खान।
अंधा गूंगा कॅयड़ा, हैं पूरे शैतान।

काना, अयाना (छोटा लडका) और लाडला (दुलारा) ये तो हठी होते ही है, पर अवे, गूगे और तिरछी आखवाले भी पूरे शैतान होते हैं।

कानूनगो की खोपड़ी मरी भी दगा दे

कानूनगो और पटवारी, माल विभाग के ये दो कर्मचारी किसानो को हमेशा बडा तग करते रहे है, इसी से क०।

कामन तो वो ही भली, जो पर घर कभी न जाय।
भय राखे यो नाह का, ज्यों गलकट से गाय।

स्त्री तो वही अच्छी जो कभी दूसरे के घर न जाए

और स्वामी से इस प्रकार डरे, जैसे कसाई से गाय डरती है।

कामन=कामिनी स्त्री।

काल करंते आज कर, आज करंते अब्ब।
पल में परले होत है, फेर करेगा कब्ब।

स्पष्ट।

दे०—करना है सो आज कर ।

परले=प्रलय।

काल का मारा सब जग हारा

मौत से सब हारे है।

काला हिरन मत मारियो रे सत्तर हो जायेंगी रांड

हिरनियो के एक पूरे झुण्ड मे एक ही नर होता है, जो उनका स्वामी माना जाता है। अब यदि वह मर जाए, तो निस्सदेह सभी हिरनियो को दुख होगा, इसी से कहा गया है। भाव यह है कि कभी ऐसे मनुष्य का घात नही करना चाहिए, जिसके आश्रित बहुत से लोग हो।

कुल्ला करे न दातुन फेरे
फिर कैसे हो दात निखेरे

दातो को साफ रखने के लिए नित्य कुल्ला-दातुन करना चाहिए।

खात सवारे खेत को और सीख संवारे पीत को, (कृ०)

खाद से खेत अच्छा बनता है, और दूसरो की बात मानने से मित्रता दृढ होती है।

खेत जो तन्ने भेंटे न हरी; वाके मिलते मत ले डहरी (कृ०)

यदि नहर के किनारे का खेत मिले, तो उसकी जगह फिर नीची जमीनवाला न ले।

खेत भला ना झील का, और घर आछा नहिं सील का, (कृ०)

नीची ज़मीन का खेत और सीलदार (नम) घर अच्छा नही होता।

गधा मरा कुम्हार का और धोबिन सत्ती होय

किसी का कोई मरे और कोई रोने जाए। जिससे कोई संबध नही, उसके लिए अनावश्यक सिर-दर्द।

गाड़ी तो चलती भली, ना तो जान कबाड़

जो वस्तु काम मे आए, उसी का होना सार्थक है

कबाड=टूटे-फूटे सामान।

गाली मत दे किसी को, गाली करे फसाद।
गाली सूं लाखो हुए, लड़भिड़ कर बरबाद।

गाली देना अच्छा नही।

गुरबा कुश्तन रोजे अव्वल, (फा०)

बिल्ली को पहले ही दिन मारो।

(कथा प्रसिद्ध है कि एक पहलवान ने अपनी नव-विवाहिता स्त्री पर रोब जमाने के लिए सुहागरात के दिन एक बिल्ली को मार डाला, जो उसके शयनकक्ष मे घुस आई थी। कहावत का भाव यह है कि किसी नए आदमी पर अपना प्रभाव जमाने के लिए शुरू से ही कडा रुख दिखाना चाहिए।)

गेहूं आछा नहर का और चावल आछा डहर का, (कृ०)

गेहू नहर के किनारे का और चावल नीची ज़मीन का अच्छा होता है।

(डहर मिट्टी के बडे बर्तन को भी कहते है, जिसमे चावल आदि भर कर रख दिया जाता है। इसलिए चावल पुराना अच्छा होता है, यह अर्थ भी हो सकता है।)

गेहूं कहे सुनो रे बीर; मै हूं सब नाजन का मीर

सब अन्नो मे गेहू श्रेष्ठ है।

घर का खेत, न खेती बारी, कहे मिया मेरी नबर-दारी, (कृ०)

झूठी शेखी बघारना।

घर को खाड़ किरकिरी, चोरी का गुड़ मीठा

घर की किसी अच्छी चीज़ को पसद न करना और उस तरह की बाहर की बुरी चीज़ के लिए भी ललचाना। प्राय. उन लोगो के लिए कहते है जो पत्नियो की उपेक्षा करके वेश्या के यहा जाते है। जिन्हें बाजार की मिठाई खाने की आदत पड जाती है, उनके लिए भी क०।

घर की जोरू की चौकसी कहां तक?

घर के आदमी पर कहा तक नज़र रखी जा सकती है?

(यदि वह कुछ गडवड करता हो तो।)

घर की शोभा घरवाली के साथ

स्पष्ट।

घी खावत बल तन मे आवे, घी आखो की जोत बढ़ावे

घी खाने से शरीर मे बल आता है और आखो की ज्योति वढती है।

घूघटवाली देखकर भली बीर मत जान

किसी स्त्री को घूघट घाले देखकर उसे सच्चरित्र मत समझ लो।

चना पकत है चैत में और गेहूं वैसाख विचार।
कातिक पाके बाजरा और मगसिर पाके ज्वार।

चैत मे चना, वैसाख मे गेहू, कार्तिक मे वाजरा और अगहन मे ज्वार की फसल आ जाती है।

चप्पे जितनी कोठरी और मियां मुहल्लेदार

झूठी शान दिखाना।

चप्पे जितनी=चार अगुल जगह; थोडी जगह।

चाक कुनम, गिरह कुनम, देखो मेरा हुनर

मेरा हुनर देखिए। मैं काट भी सकता हू, और सी भी सकता हू। वहुत चालाक को व्यग्य मे क०।

चिराग़ से चिराग़ जलता है

ज्ञान से ज्ञान की ज्योति फैलती है, सतान से सतान वढती है, एक समर्थ से दूसरे को सहायता मिलती है, इस प्रकार का भाव प्रकट करने को क०।

(कहावत उस समय का स्मरण कराती है, जव दियासलाई का आविष्कार नही हुआ था और दीये से दीया जलाकर काम चलाते थे।)

जने जने से मत कहो कार भेद की बात

अपने रोजगार का (या मन का) भेद हरेक को नही वताना चाहिए।

जल की मछली जल ही मे भली

जहा का जीव वही सुख पाता है।

जल से अगनी बुझत है, जल वरसत ठंड होय।
जल से धोवी मैल को, दूर करत है धोय।

स्पष्ट।

जल्दी काम शैतान का, ओर देर काम रहमान का

(१) जल्दवाजी मे किया गया काम शैतान के लिए होता है, और धीरज से किया गया काम ईश्वर, के लिए अथवा (२) शैतान ही हर काम मे जल्दवाज़ी करता है, ईश्वर सोच-समझकर काम करता है।

जहां गाय, वहां गाय का बच्छा

जहा मा, वहा वेटा।

जहां गुल होगा वहां खार भी जरूर होगा

गुलाव मे काटा अवश्य होता है।

सुख के साथ दुख लगा है।

जाप के बिरते पाप

यह सोचकर कि अच्छे कर्मो से वुरे कर्म ढके जा सकते है, दुष्कर्म करना।

जिन मोलों आई उनही मोलों गंवाई

जिस तरह कोई चीज़ आई, उसी तरह वह हाथ से निकल भी गई, उसे खरीदने मे कोई लाभ नही हुआ।

जिसका घोड़ा उसके वार

जिसकी वस्तु है, उससे सवधित सामग्री भी उसी की मानी जाएगी।

जिस घर वड़े न बूझिये, दीपक जले न सांझ।
वह घर ऊजड़ जानिये, जिनकी तिरिया वांझ।

जिस घर मे वडे-वूढो से सलाह न ली जाए, जहां सध्या को दीपक न जले और जिस घर की स्त्री वाझ हो, उसे नष्ट हुआ समझना चाहिए।

जिस बहुअर की वैरन सास।
वाका कभी न हो घर वास। (स्त्रि०)

जिस वहू की सास लड़ाकू होती है, वह कभी सुख नही पाती।

जीऊ किसी का मत सता, जव लग पार वसाय।
काटे हैं इस राह मे, इस वटिया मत जाय।

जव तक वश चले, किसी को सताना नही चाहिए। यह रास्ता कटीला है। इस पर मत चल।

जी जलाने से हाथ जलाना वेहतर

(किसी का) हाथ भले ही जलाए, पर हृदय न जलाए।

जेठ, जिठानी, देवरा, सव मतलव के मीत।
मतलव विन तो कोई भी राखे नाहि प्रीत।
(ग्रा०, स्त्रि०)

सव सगे सम्वन्धी मतलव के ही यार होते हैं, मतलव

के विना कोई प्रेम नही करता।

जेठ तपत हो बरखा गहरी, हसै बांगरू, रोवे नहरी, (कृ०)

जेठ मे गरमी पडने से वर्षा खूब होती है, (तव) ऊची जमीनवाले हँसते और नीची जमीनवाले रोते है। (क्योकि जमीन वहुत गीली हो जाती है।)

जैसी लक्खो वदरिया, वैसे मनवा भाड़

दोनो एक से (चालाक)।

मनवा=नाम विशेष।

जैसी सरधा हो तेरी, वैसा ही बोझ उठाय।
हाथी बोझा च्यूंटी ठावत दब मर जाय।

अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही काम करना चाहिए; चीटी अगर हाथी का बोझ उठाए तो दब कर मर जाएगी।

जैसी सेवा करे वैसा मेवा पाये

स्पष्ट।

मेवा=फल।

जैसे के संग तैसा करे, आछा नाहीं काम।
बुरे के संग नेकी करे, नेकी को परन म।

जैसे के साथ तैसा करना अच्छा नही। बुरे के साथ नेकी करना चाहिए। नेकी का फल मिलता है।

जो ईश्वर किरपा करें तो खड़े हिलावें कान अरहर के खेत मे

ईश्वर जब देता है तब अनायास देता है।

(कथा है कि एक वार राज्य का खजाना गधो पर लदकर जा रहा था। सयोगवश उनमे से एक गधा अरहर के खेत मे घुस गया और चरने लगा। किसी ने उस ओर ध्यान नही दिया। दूसरे दिन खेत के मालिक ने आकर देखा कि एक गधा खेत मे खडा कान हिला-रहा है। पास जा कर देखा तो उस पर रुपए लदे पाए। उसने सब रुपए तो लेकर घर मे रखे और गधे को मारकर भगा दिया। तव कहावत का उक्त वाक्य उसने कहा।)

जो कोसत वैरी मरे और मन चितवे धन होय।
जल मे घी निकसन लगे तो रूखा खाय न कोय।

न तो कोसने (शाप देने) से शत्रु ही मरता है, और न इच्छा करने मात्र से धन ही मिल जाता है। यदि जल मे से घी निकलने लगे तो फिर रूखा कोई नही खाएगा।

जोगी किसके मीत और पातर किसकी नार

योगी किसी के मित्र नही होते और न वेश्या किसी की पत्नी।

जो जल 'साढ़ लगत ही बरसे, नाज नियार विन कोई न तरसे, (कृ०)

यदि आषाढ के शुरू होते ही पानी बरस जाए, तो फसल बहुत अच्छी होती है।

असाढ=अग्रेजी का जून का महीना।

जो तू ही राजा हुआ, अपना सुख मत ठान।
फक्कड़ और फकीर के, दुख सुख पर कर ध्यान।

स्पष्ट।

जोते हल तो होवे फल, (कृ०)

परिश्रम का फल मिलता है।

जो वैरी हों बहुत से और तू होवे एक।
मीठा बन कर निकस जा, यही जतन है नेक।

दुश्मनो मे अगर अकेले फस जाओ, तो भी मीठे बनकर निकल जाओ, झगडा मत करो।

जो मै ऐसा जानती, प्रीत किये दुख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती, प्रीत न कीजो कोय। (स्त्रि०)

अगर मै ऐसा जानती कि प्रेम करने से दुख होता है तो मै मुनादी करवा देती—'कोई प्रेम मत करो।'

जो साईं के हुक्म से मुंह न फेरे तोई।
तेरे भी फिर हुक्म से मुंह न फेरे कोई।

तू यदि ईश्वर की आज्ञा माने, तो सब लोग तेरी भी आज्ञा मानेगे।

जो सावन मे बरसा होवे, खोज काल का बिल्कुल खोवे, (कृ०)

सावन मे वर्षा होने से फसल अच्छी होती है।

ज्यों ज्यो वाव वहै पुरवाई।
त्यो त्यों अति दुख घायल पाई।

पूरब की हवा चलने से चोट का दर्द बढ़ जाता है।

झांसी गले की फांसी, दतिया गले का हार।
ललितपुर ना छाडिये, जब लग मिले उधार।
(इस कहावत का ठीक अर्थ लगाना कठिन है। इतना अवश्य है कि दतिया एक सुरम्य स्थान है। राज्यो के विलीनीकरण के पहले यह मध्य भारत का एक छोटा, परन्तु प्रतिष्ठित देशी राज्य था। अब मध्य प्रदेश का एक जिला है। झासी मे गर्मी बहुत पडती है। किसी के लिए कोई आकर्षण नही। खुश्क जगह है। ललितपुर दतिया की तरह ही आकर्षक है। किसी समय रुपए का लेन-देन वहा बहुत होता और जैन साहूकारो की वजह से लोगो को आसानी से रुपया मिल जाता था। अब वह बात नही। स्थानीय देशभक्ति की अभिव्यक्ति है।)

झूठ कहना और जूठ खाना बराबर है
स्पष्ट।

झूठी तो होती नहीं, कभी भी सांची बात।
जैसे टहनी ढाक मे, लगे न चौथा पात।
सच बात कभी झूठ नही हो सकती। ढाक की टहनी मे तीन ही पत्ते होते है, चार नही होते।

झूठे की क्या दोस्ती, लंगड़े का क्या साथ।
बहरे से क्या बोलना, गूंगे की क्या बात?
इन चारो से कोई लाभ नही।

तुझ घोरे जो चाकरा, देवे उमर गंवाय।
बूढा वाको जानकर, धोरे से मत ताह।
जिस नोकर ने जिदगी भर तुम्हारे यहा काम किया हो, उसे बुढापे मे भगा नही देना चाहिए।

दूर गये की आस क्या?
जो दूर देश गया, उसका क्या ठीक कब लौटे?

देख जगत मे औदसा, मत डर और मत रो।
बिना हुक्म भगवान के, बाल न बाका हो।
ससार की कठिनाइयो से मत घबराओ, भगवान की इच्छा के बिना किसी का कुछ नही बिगड सकता।

देवा को रिन मिले सुहेला, अनदेवा को मिले न धेला, (व्य०)
जो लेकर दे देता है, उसे बहुत उधार मिलता है, जो लेकर नही देता, उसे अधेला भी नही मिलता।

दोनों बैरी दीन के, रांगड़ और शैतान।
बुरा करावें और से, और आप बुरे से काम।
रागड और शैतान दोनो ही धर्म के शत्रु है। स्वय बुरे कर्म करते है, और दूसरो को भी बहकाते है।
(रागड छोटी श्रेणी के मुसलमान होते हैं, जो चोरी-चपाटी के लिए बदनाम है।)

धन जोडन के ध्यान में, यूं ही उमर न खो।
मोती बरगे मोल के, कभी न ठीकर हो।
धन जोडने की चिंता मे आयु वृथा मत खोओ। ककड़ कभी बेशकीमती मोती नही हो सकते।

धरम पाप सब मनुख के, धोवत हैं इस तौर।
जल साबुन ज्यो धोवत हैं, सब कपड़न का घोर।
धर्म से मनुष्य के सब पाप उसी तरह कट जाते है, जैसे साबुन से कपड़ो का मैल कटता है।

धान कहे मै हूं सुलतान, आये गये का राखूं मान, (ग्रा०)
धान की प्रशंसा मे।

धोबी के घर पड़े चोर, वह न लुटे, लुटे और
उसके ग्राहको के ही कपडे चोरी जाएगे, उसका क्या बिगडता है?

धौले भले हैं कापड़े, धौले भले न बार।
काली आछी कामली, काली भली न नार।
सफेद कपडे अच्छे होते है, पर सफेद बाल अच्छे नही, काला कंबल अच्छा होता है, पर काली स्त्री अच्छी नही।

नहा कर खाए और खाकर सोवे, उसके औसक्ल कभी न होवे
जो नहा के खाता है, और खाकर विश्राम करता है, वह कभी बीमार नही पड़ता।

निकसत हैं इक आंक से, धोई, धोबी, धान।
ओछे भोड़े हो गये, सब करतब के तान।
धोई, धोबी और धान, तीनो शब्द एक ही अक्षर से प्रारभ होते है, पर अपने गुण-धर्म के कारण अच्छे और बुरे माने जाते हैं।
धोई=ठग, धोखेबाज।

निन्नानवे घडे दूध मे एक घड़ा पानी क्या जाना जाय ?
सब सयाने एक ही जैसा सोचते है।
(कथा है कि एक वार अकवर वादशाह ने वीरवल से पूछा कि किस जाति के लोग सवसे अधिक चतुर होते है। बीरवल ने जवाब दिया 'ग्वाले'। और अपने इस कथन की सत्यता को सिद्ध करने के लिए उन्होने आगरे के सब ग्वालो को बुलवाया और उनसे एक वडे हौज को रात मे दूध से भरने के लिए कहा। हरेक ग्वाले ने अपने मन मे सोचा कि सब लोग तो दूध डालेंगे ही, यदि वह उसमे एक लोटा पानी डाल देगा तो किसी को पता नही चलेगा। यही समझ-कर सवने दूध की जगह पानी ही डाला और जव दूसरे दिन सुवह वादशाह और बीरवल हौज को देखने गए, तो उसे पानी से भरा पाया।)

निपट सबेरे खेत मां, जाकर हल को बाह।
जव सूरज हो सिखर मां, बैठ छांव मे जा। (कृ०)
किसान को उपदेश। स्पष्ट।
हल को बाह=हल चला। सिखर मा=सिर पर।

पंडित और मसालची दोनो उल्टी रीत।
और दिखावे चांदनी आप अंधेरे बीच।
पडित और मशालची इन दोनो का उल्टा तरीका है। दूसरो को प्रकाश दिखाते है, पर स्वय अघेरे मे रहते है। (पडित दूसरो को उपदेश देता है, पर स्वय उनके अनुसार काम नही करता।)

पढ़तम ते मरतम, ना पढ़तम ते मरतम
जो पढते हैं वे भी मरते है, नही पढते है वे भी मरते है, मरना हर हालत मे हे।

पढे के आगे टोकरा डाला, उसने कहा 'मुझे उपलो को भेजा'
पढे के आगे टोकरा डाला गया, तो उसने तुरत समझ लिया कि मुझसे उपले लाने के लिए कहा जा रहा है। पढा-लिखा इशारे मे वात समझ लेता हे।

पत चाहे तो वालके, पढ़ विद्या भरपूर।
बिन विद्या के आदमी, हेंगे जैसे बूर।
मान-सम्मान चाहते हो, तो विद्या पढो। विना विद्या के मनुष्य धूल की तरह है।

परजा जड़ है राज की, राजा है ज्यो रूख।
रूख सूख कर गिर पडे, जब जड जावे सूख।
प्रजा राज्य की जड है। राजा वृक्ष की तरह है, जड सूखने से वृक्ष भी सूखकर गिर पडता है।

परजा भाजे छोड़ के, कुन्यायी का गाम।
चहुं ओर जग ग्ां करे, फेर उसे वदनाम।
स्पष्ट। कुन्यायी=अन्यायी।

पराई वदशुगनी के वास्ते अपनी नाक कटाई
दूसरो को हानि पहुचाने के लिए अपनी हानि कर लेना। दुष्टो का काम।

पराया खाइये गा वजा, अपना खाइये टट्टी लगा
घर का भेद किसी को वताना नही चाहिए।

पाप डुबोवे धरम तिरावे, धरमी कभी नाह दुख पावे
स्पष्ट।

पाबंदी एक की भली
अधीनता एक की ही अच्छी।

पीर मियां वकरी, मुरीद मियां वागा; आ गई वकरी चब गई वांगा, (पू०)
पीर मिया तो वकरी है, और उनका चेला है कपास का खेत, वकरी आई और कपास चर गई। गुरु चेलो की ही कमाई खाते है।

पैर जो पछवा मां वरसावे; वो ही निरमल रास उठावे, (कृ०)
पश्चिम की हवा चलने पर उडावनी करने से अनाज की राशि शीघ्र प्राप्त हो जाती है।
(फसल कट जाने पर उसे खलिहान मे इकट्ठा करके थोडा-थोडा करके बैलो से कुचलवाते हैं; इसी कुचले हुए अश को पैर कहते हैं। इसे टोकनी मे भरकर धीरे-धीरे नीचे गिराते है, जिससे भूमा कुछ दूर जाकर गिरता है और दाना नीचे गिरता जाता है। पश्चिम की हवा चलने पर उडावनी की यह क्रिया शीघ्र सपन्न होती है। कहा० मे वही वात कही गई है।)

पैसे विन माता कहे 'जाया पूत कुपूत'।
भाई भी पैसे विना मारें लख सिर जूत।
स्पष्ट।

बंजी और बटाउआ, सुख पावें जिस गाम।
वाको तो चौखूंट मे, करें नेक सरनाम।

व्यापारी और राहगीर सब जगह उस गाव की प्रशसा करते है, जहा उन्हे सुख मिलता है।

बगल था सिपारा, तो पूत था हमारा।
जब कमर हुआ कटारा, तो कंत हुआ तुम्हारा।

जब उसकी बगल मे किताबे थी (अर्थात जब वह छोटा था) तब तो वह मेरा लडका था, और जब उसकी कमर मे कटारी बध गई है (अर्थात वह सिपाही बन गया है।) तब वह तेरा कत हो गया। (सास का बहू को उलाहना जो ईर्ष्यावश अपने पति को उसके पास जाने से मना करती है।)

बड़े आदमी ने दाल खाई, तो कहा सादा मिजाज है, गरीब ने दाल खाई, तो कहा कंगाल है

जिस काम के लिए बडे आदमी की प्रशसा होती है, उसी काम के लिए गरीब की निदा की जाती है।

बड़ो को होवे दुख बड़ा, छोटो से दुख दूर।
तारे सब न्यारे रहे, गहे राहु ससि सूर।

बडो के कष्ट भी बडे होते है। ग्रहण चद्र और सूर्य को ही लगता है, तारो को नही लगता।

बनते देर लगती है, बिगड़ते देर नहीं लगती

स्पष्ट।

बनी बनावे बानिया, बनी विगाड़े जाट।
मूंड़े सीस सराह कर, डोम, कबीसर, भाट।

बनिया बने काम को (और भी अच्छा) बनाता है, जाट बने काम को नष्ट कर देता है, डोम, कवि और भाट खुशामद करके पैसा खाते हैं।

बल सू नामी हो गये, रुस्तम, अर्जुन, भीम।
बल बिन कैसी हाकिमी, कह गये सांच हकीम।

बल के बिना हुकूमत नही होती।

बल से राजा राव है, बल बिन बड़ा न कोय।
सांच बड़े रे कह गये, बल बिन बड़ा न कोय।

स्पष्ट।

बहू नवेली और गऊ दुधेली, (ग्रा०)

बहू सुदर और गाय दुधार (होनी चाहिए।)

बाजरा कहे मै हूं अलेला
दो मूसल से लड़ूं अकेला
जो मेरी नांजो खिचड़ी खाय
तो तुरत बोलता खुश हो जाय, (कृ०)

बाजरा अपनी प्रशसा मे कहता है मैं सब अनाजो मे अलबेला हू, अकेला दो मूसलो से लडता हू (अर्थात मुझे साफ करने के लिए मूसल से कूटना पडता है) सुकुमारी यदि मेरी खिचडी खाए, तो तुरत खुश होकर बात करने लगे।

बाड़ लगाई खेत को, बाड़ खेत को खाय।
राजा हो चोरी करे, न्याव कोन चुकाय।

खेत की रक्षा के लिए बाड लगाई, (पर) बाड ही खेत को खाने लगी, कोई राजा होकर चोरी करे, तो न्याय कोन करेगा?

बात पर बात याद आती हे

स्पष्ट।

बातो हाथी पाय, बातो हाथी पाय

बातो से ही हाथी की सवारी या हाथी इनाम मे मिलता है, और बातो से ही हाथी के पैर तले कुचलवा दिया जाता है।

बाप डोम और डोम ही दादा; कहे मियां 'मै शरफा-जादा'

शेखी मारना।

शरफा जादा=शरीफ आदमी का लडका।

बारह बरस के को वेद क्या? और अठारह बरस के को कैद क्या?

बारह वर्ष के लडके को सिखाने की क्या जरूरत? वह स्वय समझता हे और अठारह वर्ष के लडके पर नियत्रण की भी क्या जरूरत।

(उसे स्वय अपना भला-बुरा समझना चाहिए।)

विद्या तो वह माल हे, जो खरचत दुगना होय;
राजा, राव, चोरटा, छीन न सक्के कोय।

विद्या ऐसा धन है जो खर्च करने मे बढता है, उसे न कोई चुरा सकता है न छीन सकता है।

बेटा जनकर निव चले; सोना पहनकर इक चले, (स्त्रि०)

लडके को जन्म देने के बाद (स्त्री को) विनम्र बन-

कर रहना चाहिए, और सोने के गहने पहनकर उन्हे ढक कर रखना चाहिए।

तात्पर्य यह कि सतान या धन का घमंड ठीक नही।

बैरी लागे हाथ तो, छोड़ न लेकर माल।
उसकी जड़ को मूल ही, बाहर फेंक निकाल।

दुश्मन अगर चगुल मे फस जाए, तो रुपए के लालच मे उसे छोड नही देना चाहिए, (वल्कि) उसे जड से नष्ट कर देना चाहिए।

बैरी संग ना बैठिए, पीकर मद और भंग।
जी खोवा है बैठना, जब बैरी के संग।

नशा करके बैरी के साथ नही बैठना चाहिए, प्राण सकट मे पड सकते है।

बैरी होना आपना, लाख जतनकर देख।
मेटे से मिट्टे नहीं, ज्यूं करमन की रेख।

भाग्य मे लिखा कभी मिटता नही, उसी तरह कितना ही प्रयत्न करो, दुश्मन कभी दोस्त नही वन सकता।

भाग्यवान तो जगत मे, बैस कोई न होय।
जो कोई राजा न्याव में, सगर उमर दे खोय।

जो राजा न्याय (करने) मे ही अपना सारा जीवन विता देता है, उसके बरावर कोई भाग्यवान नही।

भूखा चाहे रोटी दाल; 'घाया कहे 'मै जोडू माल'

भूखा तो भोजन चाहता है, पर जिसका पेट भरा है (जिसके पास पैसा है) वह रुपया इकट्ठा करना चाहता है।

घाया=अघाया, सतुष्ट।

भैस कहे गुन मेरा पूरा; मेरा दूध पी होवे सूरा।
जिसे के घर में बंध जाऊं, दूध दही का नाल बहाऊं। (ग्रा०)

भैस कहती है—मुझमे कोई कमी नही, मेरा दूध पीकर लोग वीर वनते हैं, मै जिस घर मे पहुच जाती हू, वहा दूध-दही की नालिया वहने लगती है।

मंदर मांस ही संझ से, राखो दीपक वाल।
सांझ अंधेरे बैठना, है अति भौंड़ी चाल।

सध्या होते ही घर मे दीपक जला लेना चाहिए, सध्या के अधेरे मे वैठना वुरा है।

मरना है बद नेक को जीना जीना नाह सदाय।
बेहतर है जो जगत मां नेक नाम रह जाय।

भले वुरे सबको मरना है। कोई हमेशा जीवित नही रहता। ऐसा काम करो, जिससे ससार मे तुम्हारी कीर्ति बनी रहे।

मापा कनिया और पटवारी; भेंट लिये बिन करें न यारी

खेत नापने वाला (अमीन), कानूनगो और पटवारी, ये तीनो रिश्वत लिए विना काम नही करते।

मितर से अतर नहीं, बैरी से नहिं नेह।
पीतम से परदा नहीं, जिन निरखी सब देह। (स्त्रि०)

स्पष्ट।

अतर=भेदभाव।

मिल्लत मां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल।
माखी जब हो एकठी, तो देवें शहद महाल।

सबसे मिलकर रहो, मिलकर रहने मे बडा लाभ है। मधुमक्खिया जब मिलकर एक होती है, तभी बहुत-सा मोम और शहद इकटठा कर पाती है।

मीत बनाये ना बनें, बैरी, सिंह औ नाग।
जैसे कधे न हो सकें, एक ठौर जल आग। (ग्रा०)

जैसे पानी और आग एक साथ नही रह सकते उसी तरह शत्रु, सिंह और सर्प ये किसी के मित्र नही वन सकते।

मूरख को मत सौंप तू, चतुराई का काम।
गधा विकत मिलती नहीं, बढ घोड़े के दाम।

मूर्ख को चतुराई का काम नही सिखाना चाहिए, गधा कभी कीमत मे घोडे की वरावरी नही कर सकता।

मूरख, मूढ़ गंवार को, सीख न दीजो कोय।
कूकर वरगी पूंछड़ी, कवो न सीधी होय। (ग्रा०)

मूर्ख या गंवार को उपदेश देना व्यर्थ है। कितना ही प्रयत्न करो, कुत्ते की जाति की पूछ को कभी सीधा नही किया जा सकता।

मूल न वा सूं भय करो, जो नर करे गरूर।
जो नर साईं से डरे, वा से डरो जरूर।
जो घमड दिखाए, उमसे विल्कुल मत डरो, पर जो ईश्वर से डरे, उससे अवश्य भय खाओ।

मेले मे जो जाय तू, तो नावा कर में टांक।
चोर, जुआरी, गठकटे, डाल सकें न आंख।
(ग्रा०)
मेले-ठेले मे जाने पर पैसा अपने हाथ मे रखना चाहिए, जिससे कोई चुरा न ले।

मैं हूं ऐसी चातुर सयानी; चातुर भरे मेरे आगे पानी
जो अपने को वहुत होशियार समझे, उससे व्यग्य मे क०।

मौत दीजो पर मदी न दीजो, (व्य०)
मौत अच्छी, पर वाजार की मंदी अच्छी नही। व्यापारियो की उक्ति।

मौत दीजो, पर मोर न दीजो
मौत अच्छी, पर व्याह अच्छा नही।
मौर=व्याह के समय का सिर पर पहनने का एक आभूपण, जो ताड़ या खजूर पत्र का वनता है।

राजी राख किसान को जो हाला भर धन दे;
राजी हुआ मजूर तो मुकता काम करे। (ग्रा०)
जो किसान हमे खाने को दे, उसे सतुष्ट रखना चाहिए, मजदूर यदि प्रसन्न रहे, तो वह अधिक काम करता है।

लाज भली है वालके, या मत जी से खोय।
लाज विना ऐसा मनुस; खसम विना ज्यूं जोय।
स्पष्ट।

लालच मत कर वावरे, लालच बुरी वलाय।
तुरत पखेरू जाल मां,लालच सूं फंस जाय।
लालच वुरी चीज़ है।

लावन विन ना सोहे रोटी; विन गूंधे ना सोहे चोटी
मिर्च-मसाले से रोटी अच्छी लगती है, और गूथने से चोटी।

सुख, संपत और औदसा, सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।
सुख-दुख सव को लगे हुए हैं, पर (दुख के दिनो को) समझदार समझदारी के साथ और मूर्ख रो-रोकर काटता है।

सूना खेत, जौंड़िया सोवे; क्यो न खेती ऊजड़ होवे
खेत यदि सूना हो, और रखवाली करनेवाला भी सोता हो, तो खेती तो उजड़ ही जाएगी।

सेज चढ़ते ही राड़
(१) जीत के समय ही किसी की मृत्यु हो जाना।
(२) जीती वाजी हार जाना।
(३) वना-वनाया काम विगड जाना। इत्यादि।

हाट भली ना सीर की, और संगत भली ना वीर की, (व्य०)
साझे की दुकान अच्छी नही, और स्त्री का साथ अच्छा नही।

हाली आछा हांगला, और वलदा आछा चांगला, (कृ०)
(१) हलवाला अगर वैलो को अच्छी तरह हाकता रहे, तो वैल भी अच्छी तरह चलेंगे। अथवा
(२) हलवाला हाकनेवाला अच्छा, और वैल चलनेवाला अच्छा।

होना वैरी जानकर, मत निडर हो यार।
कीड़ी वढ़कर सूड़ मां, दे हाथी को मार।
शत्रु को छोटा नही समझना चाहिए।
कीडी=चीटी।

हुए फेरे, चूमे मेरे
व्याह हो गया, औरत मेरी; अव मैं उसके मनमाने चूमे ले सकता हू। अर्थात काम हो गया, अव मुझे किसी की कोई परवाह नही। अथवा चीज मेरे हाथ मे आ गई, उसका मनचाहा उपयोग कर सकता हूं।

होड़ लीजे गोड, उधार दीजे छोड़
उधार दिया हुआ भले ही छोड़ दे, मगर जीता हुआ न छोडे।

होते को वहिन और वाप हैं, विन होते को जोय।
तुलसी रुपया पास का, सब से नीका होय।
वहिन और वाप समृद्धि मे ही काम आते हैं। स्त्री विपत्ति मे काम आती है।
तुलसीदास कहते हैं, अपने पास का पैसा ही सबसे अच्छा होता है।